विभंगा

तिपिटक >> अभिधम्म पिटक >> विभंग

पाली संस्करण : नीचे दिए गए प्रत्येक अध्याय में पाली-अंग्रेजी और पाली-देवनागरी संस्करण उपलब्ध कराए गए हैं।

अंतर्वस्तु

1विभंगा
1.11. विभाग पाठ
1.22. विभंगा स्कैंड संस्करण
1.33. अंग्रेजी अनुवाद डाउनलोड करें/देखें
1.44. मूल पाली संस्करण

विभंगा
(विश्लेषण की पुस्तक)

विभंग अभिधम्म का दूसरा ग्रंथ है। विभंग ध्यान में अनुभव किए गए व्यक्तिगत घटकों का विश्लेषण करके स्वयं का विभेदक विश्लेषण है। विभंग को बुद्ध की सभी शिक्षाओं का मूल माना जा सकता है।

एक सामान्य अध्याय तीन भागों में विभाजित होता है:
सूत्र विधि: इसमें अक्सर सूत्र पिटक के उद्धरण शामिल होते हैं।

अभिधम्म विधि: पर्यायवाची शब्दों की विभिन्न सूचियाँ, संख्यात्मक वर्गीकरण

प्रश्न विधि: धम्मसंगनी की मटिका (मैट्रिक्स) लागू करता है

---

1. विभाग पाठ

ओसीआर संस्करण, प्रूफरीडिंग नहीं की गई है, इसमें त्रुटियां हैं, पाठक इन्हें ठीक कर सकते हैं।

अध्याय 1 - स्कंधों का विश्लेषण (खंड-विभांगो)
अध्याय 2 - आधारों/द्वारों का विश्लेषण (आयतन-विभांगो)
अध्याय 3 - तत्वों का विश्लेषण (धातु-विभांगो)
अध्याय 4 - सत्य का विश्लेषण (सच्च-विभांगो)
अध्याय 5 - इंद्रियों/इंद्रियों का विश्लेषण (इंद्रिय-विभांगो)
अध्याय 6 - जीवन चक्र/आश्रित उत्पत्ति का विश्लेषण (पतीच्छासमुप्पदा-विभांगो)
अध्याय 7 - ध्यान विधि का विश्लेषण (सतिपट्ठाना-विभांगो)
अध्याय 8 - उचित प्रयास/प्रयास का विश्लेषण (समप्पद्धना-विभांगो)
अध्याय 9 - रहस्यवादी उपलब्धियों के आधार का विश्लेषण (इद्धिपाद-विभांगो)
अध्याय 10 - ज्ञानोदय कारकों का विश्लेषण (बोज्झंग-विभांगो)
अध्याय 11 - पथ का विश्लेषण घटक (मग्गंगा-विभंगो)
अध्याय 12 - ट्रान्स स्टेट्स का विश्लेषण (झाना-विभंगो)

अध्याय 13 - असीमित का विश्लेषण (अप्पमन्ना-विभंगो)
अध्याय 14 - प्रशिक्षण नियमों का विश्लेषण (सिक्खपाद-विभंगो)
अध्याय 15 - विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि का विश्लेषण (पतिसंभिदा-विभंगो)
अध्याय 16 - ज्ञान का विश्लेषण (नाना-विभंगो)
अध्याय 17 - छोटी वस्तुओं का विश्लेषण (खुद्दाकवत्थु-विभंगो)
अध्याय 18 - धम्म के हृदय का विश्लेषण (धम्म-हदय-विभंगो)

---

2. विभंगा स्कैन्ड संस्करण

अध्याय 1 - स्कंधों का विश्लेषण (खंड-विभांगो)
अध्याय 2 - आधारों/द्वारों का विश्लेषण (आयतन-विभांगो)
अध्याय 3 - तत्वों का विश्लेषण (धातु-विभांगो)
अध्याय 4 - सत्य का विश्लेषण (सच्च-विभांगो)
अध्याय 5 - इंद्रियों/इंद्रियों का विश्लेषण (इंद्रिय-विभांगो)
अध्याय 6 - जीवन चक्र/आश्रित उत्पत्ति का विश्लेषण (पतीच्छासमुप्पदा-विभांगो)
अध्याय 7 - ध्यान विधि का विश्लेषण (सतिपट्टाना-विभांगो)
अध्याय 8 - उचित प्रयास/प्रयास का विश्लेषण (समप्पद्धना-विभांगो)
अध्याय 9 - रहस्यवादी सिद्धि के आधार का विश्लेषण (इद्धिपाद-विभांगो)
अध्याय 10 - ज्ञानोदय कारकों का विश्लेषण (बोज्झंग-विभांगो)
अध्याय 11 - पथ का विश्लेषण घटक (मग्गंगा-विभंगो)
अध्याय 12 - ट्रान्स स्टेट्स का विश्लेषण (झाना-विभंगो)
अध्याय 13 - असीमित का विश्लेषण (अप्पमन्ना-विभंगो)
अध्याय 14 - प्रशिक्षण नियमों का विश्लेषण (सिक्खपाद-विभंगो)
अध्याय 15 - विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि का विश्लेषण (पतिसंभिदा-विभंगो)
अध्याय 16 - ज्ञान का विश्लेषण (नाना-विभंगो)
अध्याय 17 - छोटी वस्तुओं का विश्लेषण (खुद्दाकवत्थु-विभंगो)
अध्याय 18 - धम्म के हृदय का विश्लेषण (धम्म-हदय-विभंगो)

टिपिटक >> अभिधम्म पिटक >> विभंग >> अध्याय 1 पाठ- समुच्चय (खंड)
विभंग-विश्लेषण की पुस्तक-गोतम बुद्ध द्वारा बोली गई
पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण
विभंग-अध्याय 1-साइड बाय साइड संस्करण (रोमन-पाली)
पाली से अनुवादित यू. थिटिला, रंगून, बर्मा, 1969 द्वारा

ओसीआर संस्करण, प्रूफरीडिंग नहीं की गई है, इसमें त्रुटियां हैं
(पाठकों को दिए गए .pdf संस्करण की सहायता से पाठ को सही करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है)

अभिधम्मपिटक

विभंगा - विश्लेषण की पुस्तक

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासंबुद्धस्स

अंतर्वस्तु

11. समुच्चय का विश्लेषण (संस्कृत: स्कन्ध)
1.11. प्रवचनों के विश्लेषण के अनुसार
1.1.11.सामग्री की गुणवत्ता का कुल योग
1.1.22. भावनाओं का समूह
1.1.33. धारणाओं का समग्र योग
1.1.44. मानसिक सहशिक्षा का समूह
1.1.55. खुद का ग्रुप
1.22. अभिधम्म के अनुसार विश्लेषण
1.2.11.सामग्री की गुणवत्ता का कुल योग
1.2.22. भावनाओं का समूह
1.2.33. धारणाओं का समग्र योग
1.2.44. मानसिक सहशिक्षा का समूह
1.2.55. खुद का ग्रुप
1.33. पूछताछ
1.3.11. त्रिक
1.3.22.हे

1. समुच्चय का विश्लेषण (संस्कृत: स्कन्ध)

1. प्रवचनों के अनुसार विश्लेषण

1. पाँच समुच्चय हैं: भौतिक गुणों का समुच्चय, भावनाओं का समुच्चय, बोध का समुच्चय, मानसिक सहवर्ती तत्वों का समुच्चय, चेतना का समुच्चय।

1. सामग्री की गुणवत्ता का कुल योग

2. उसमें भौतिक गुणों का कुल योग क्या है? भूतकाल, भविष्यकाल या वर्तमान काल के, आंतरिक या बाह्य, स्थूल या सूक्ष्म, निम्न या उच्च, दूरस्थ या निकट, इन सभी को सामूहिक रूप से संक्षेप में लेते हुए, इसे भौतिक गुणों का कुल योग कहा जाता है।

3. उसमें भूतकाल का भौतिक गुण क्या है? वह भौतिक गुण जो बीत चुका है, समाप्त हो गया है, घुल गया है, बदल गया है, समाप्त हो गया है, गायब हो गया है, या जो उत्पन्न होकर घुल गया है, बीत चुका है और वर्गीकृत किया गया है।

2

अतीत की वस्तुओं में, अर्थात् चार प्रमुख आवश्यक तत्व और उनसे उत्पन्न भौतिक गुण। इसे अतीत का भौतिक गुण कहा जाता है।
इसमें भविष्य का भौतिक गुण क्या है? वह भौतिक गुण जो न तो जन्म लेता है, न बनता है, न उत्पन्न होता है, न अस्तित्वहीन है, न पूर्णतः अस्तित्वहीन है, न प्रकट होता है, न उदय हुआ है, न पूर्णतः उदय हुआ है, न उठा है, न पूर्णतः उदय हुआ है, जो भविष्य में है और भविष्य की चीजों में शुमार है, अर्थात् चार महान आवश्यक तत्व और उनसे व्युत्पन्न भौतिक गुण। इसे भविष्य का भौतिक गुण कहते हैं।
उसमें वर्तमान भौतिक गुण क्या है? वह भौतिक गुण जो जन्म लेता है, उत्पन्न होता है, विद्यमान होता है, पूर्णतः विद्यमान होता है, प्रकट होता है, उत्पन्न होता है, पूर्णतः उत्पन्न होता है, उत्पन्न होता है, पूर्णतः उत्पन्न होता है, जो विद्यमान है और विद्यमान वस्तुओं में वर्गीकृत है, [2] (अर्थात्) चार महान आवश्यक तत्व और चार महान आवश्यक तत्वों से व्युत्पन्न भौतिक गुण। इसे वर्तमान भौतिक गुण कहा जाता है।

4. इसमें आंतरिक भौतिक गुण क्या है? वह भौतिक गुण जो किसी प्राणी के लिए व्यक्तिगत, आत्म-संदर्भित, स्वयं का, निजी होता है और जिसे (लालसा और भ्रामक दृष्टि से) ग्रहण किया जाता है, (अर्थात्) चार महा तत्व और उनसे व्युत्पन्न भौतिक गुण। इसे आंतरिक भौतिक गुण कहा जाता है।

इसमें बाह्य भौतिक गुण क्या है? वह भौतिक गुण जो किसी अन्य प्राणी के लिए, किसी अन्य व्यक्ति के लिए, व्यक्तिगत, स्व-संदर्भित, स्वयं का, वैयक्तिक होता है और जिसे ग्रहण किया जा सकता है, अर्थात् चार महान आवश्यक तत्व और उनसे व्युत्पन्न भौतिक गुण। इसे बाह्य भौतिक गुण कहा जाता है।

5. इसमें स्थूल भौतिक गुणवत्ता क्या है? प्रत्यक्ष आधार, :P: मूर्त आधार। इसे ही स्थूल भौतिक गुणवत्ता कहते हैं।

P = अनुच्छेद 154 देखें।

इसमें सूक्ष्म भौतिक गुण क्या है? नारीत्व की नियंत्रक शक्ति, :P: भोजन का पोषक तत्व। इसे ही सूक्ष्म भौतिक गुण कहते हैं।

P = Dhs. पैरा 595 देखें। ^

6. उसमें निम्न भौतिक गुण क्या है? वह भौतिक गुण जो किसी प्राणी के लिए तुच्छ या तिरस्कृत हो।

3

बेकार, उपहासपूर्ण, अनादरित, निम्न, निम्न समझा जाने वाला, अवांछनीय, अनाकर्षक, अप्रिय, (अर्थात) दृश्य, श्रव्य, गंधयुक्त, स्वादयुक्त, स्पर्शनीय। इसे निम्न भौतिक गुणवत्ता कहा जाता है।

इसमें श्रेष्ठ भौतिक गुण क्या है? वह भौतिक गुण जो किसी प्राणी के लिए तुच्छ, तिरस्कृत, व्यर्थ, उपहास का पात्र न हो, बल्कि आदरणीय, श्रेष्ठ, श्रेष्ठ समझा जाने वाला, वांछनीय, आकर्षक, सुखद हो, अर्थात् दृश्य, श्रव्य, सुगंधित, स्वादिष्ट और स्पर्शनीय हो। इसे ही श्रेष्ठ भौतिक गुण कहते हैं। निम्न और श्रेष्ठ भौतिक गुणों को समझने के लिए, इस भौतिक गुण की तुलना दूसरे से करनी चाहिए।

7. उसमें दूरस्थ भौतिक गुण क्या है? स्त्रीत्व की नियंत्रक क्षमता, : P : भोजन का पोषक तत्व या कोई अन्य भौतिक गुण जो निकट नहीं, पास नहीं, दूर है, समीप नहीं है। इसे दूरस्थ भौतिक गुण कहा जाता है। [3]

पी = डीएचएस पैराग्राफ 595 देखें।

इसमें निकटवर्ती भौतिक गुणवत्ता क्या है? आँख का आधार,

P: मूर्त आधार या कोई अन्य भौतिक गुण जो निकट हो,

निकट, दूर नहीं, समीपस्थ। इसे समीपस्थ पदार्थ गुण कहते हैं। दूरस्थ और समीपस्थ पदार्थ गुणों को समझने के लिए, इस पदार्थ गुण की तुलना दूसरे पदार्थ गुण से करनी चाहिए।

P = अनुच्छेद 154 देखें।

2. भावनाओं का समूह

8. इसमें भावों का समूह क्या है? भूतकाल, भविष्यकाल या वर्तमानकाल, आंतरिक या बाह्य, स्थूल या सूक्ष्म, निम्न या उच्च, दूर या निकट, इन सभी भावों को सामूहिक रूप से संक्षेप में लें तो, यही भावों का समूह कहलाता है।

9. इसमें भूतकाल की भावना क्या है? वह भावना जो बीत चुकी है, समाप्त हो गई है, घुल गई है, बदल गई है, थम गई है, गायब हो गई है, या जो उत्पन्न होकर घुल गई है, बीत चुकी है और अतीत की चीजों में गिनी जाती है, (अर्थात) सुखद भावना, दुखदायी भावना, न दुखदायी न सुखद भावना। इसे भूतकाल की भावना कहते हैं।

उसमें भविष्य की भावना क्या है? वह भावना जो न तो जन्म लेती है, न बनती है, न उत्पन्न होती है, अस्तित्वहीन है, पूर्णतः अस्तित्वहीन है।

4

स्पष्ट, न उठा हुआ, ठीक से न उठा हुआ, न ऊपर उठा हुआ, ठीक से ऊपर न उठा हुआ, जो भविष्य का है और भविष्य की चीजों में गिना जाता है, (अर्थात) सुखद भावना, दुखदायी भावना, न दुखदायी न सुखद भावना। इसे भविष्य की भावना कहते हैं।

इसमें वर्तमान भावना क्या है? वह भावना जो जन्म लेती है, उत्पन्न होती है, विद्यमान होती है, पूर्णतः विद्यमान होती है, प्रकट होती है, उत्पन्न होती है, पूर्णतः उत्पन्न होती है, ऊपर उठती है, पूर्णतः उत्पन्न होती है, जो वर्तमान में मौजूद होती है और वर्तमान में मौजूद चीजों में गिनी जाती है, अर्थात् सुखद भावना, दुखदायी भावना, न दुखदायी न सुखद भावना। इसे ही वर्तमान भावना कहते हैं।

10. इसमें आंतरिक भावना क्या है? वह भावना जो किसी प्राणी के लिए व्यक्तिगत, आत्म-संदर्भित, स्वयं की, निजी होती है और जिसे (लालसा और भ्रामक दृष्टि से) ग्रहण किया जाता है, (अर्थात) सुखद भावना, दुखद भावना, न दुखद न सुखद भावना। इसे आंतरिक भावना कहते हैं।
इसमें बाह्य भावना क्या है? वह भावना जो किसी अन्य प्राणी के लिए, किसी अन्य व्यक्ति के लिए, व्यक्तिगत, स्व-संबंधित, स्वयं की, और अनुभव की जा सकती है, अर्थात् सुखद भावना, पीड़ादायक भावना, न पीड़ादायक न सुखद भावना। इसे बाह्य भावना कहते हैं।
11. इसमें स्थूल (और) सूक्ष्म भावना क्या है? बुरी भावना स्थूल है; अच्छी और न अच्छी न बुरी भावना सूक्ष्म है। अच्छी और बुरी भावना स्थूल है; न अच्छी न बुरी भावना सूक्ष्म है। [4] पीड़ादायक भावना स्थूल है; सुखदायक और न पीड़ादायक न सुखदायक भावना सूक्ष्म है। सुखदायक और पीड़ादायक भावना स्थूल है; न पीड़ादायक न सुखदायक भावना सूक्ष्म है। उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव न करने वाले की भावना स्थूल है; उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव करने वाले की भावना सूक्ष्म है। जो भावना दोषों का विषय है वह स्थूल है; जो भावना दोषों का विषय नहीं है वह सूक्ष्म है। स्थूल और सूक्ष्म भावना को समझने के लिए एक भावना की तुलना दूसरी भावना से करनी चाहिए।
12. उसमें हीन (भी) श्रेष्ठ भावना क्या है? बुरी
भावना निम्न है; अच्छी और न बुरी भावना श्रेष्ठ है। अच्छी और बुरी भावना निम्न है; न बुरी भावना श्रेष्ठ है। पीड़ादायक भावना निम्न है; सुखद भावना और न पीड़ादायक भावना श्रेष्ठ है। सुखद और पीड़ादायक भावना निम्न है; न पीड़ादायक भावना श्रेष्ठ है।

5

श्रेष्ठ। उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव न करने वाले व्यक्ति की अनुभूति निम्न होती है; उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव करने वाले व्यक्ति की अनुभूति श्रेष्ठ होती है। जो अनुभूति विकारों का विषय है वह निम्न होती है; जो अनुभूति विकारों का विषय नहीं है वह श्रेष्ठ होती है। निम्न और श्रेष्ठ अनुभूति को समझने के लिए एक अनुभूति की तुलना दूसरी अनुभूति से करनी चाहिए।
13. इसमें दूरी का भाव क्या है? बुरा भाव अच्छे और न अच्छे न बुरे भावों से दूर है; अच्छा और न अच्छे न बुरे भाव बुरे भावों से दूर हैं; अच्छा भाव बुरे और न अच्छे न बुरे भावों से दूर है; बुरा और न अच्छे न बुरे भाव अच्छे भावों से दूर हैं; न अच्छे न बुरे भाव अच्छे और बुरे भावों से दूर हैं; अच्छा और बुरा भाव न अच्छे और बुरे भावों से दूर हैं। पीड़ादायक भाव सुखद और न पीड़ादायक भावों से दूर है; सुखद और न पीड़ादायक भाव पीड़ादायक भावों से दूर हैं; सुखद भाव पीड़ादायक और न पीड़ादायक भावों से दूर हैं; पीड़ादायक और न पीड़ादायक भाव सुखद भावों से दूर हैं; न पीड़ादायक और पीड़ादायक भाव सुखद और पीड़ादायक भावों से दूर हैं; सुखद और पीड़ादायक भाव न पीड़ादायक और पीड़ादायक भावों से दूर हैं। उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव न करने का बोध, उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव करने वाले बोध से भिन्न होता है; उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव करने का बोध, उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव न करने वाले बोध से भिन्न होता है। जो बोध विकारों का विषय है, वह विकारों का विषय न होने वाले बोध से भिन्न होता है; जो बोध विकारों का विषय न हो, वह विकारों का विषय होने वाले बोध से भिन्न होता है। इसे ही दूरस्थ बोध कहते हैं।
इसमें निकटवर्ती भावना क्या है? बुरी भावना बुरी भावना के निकट है; अच्छी भावना अच्छी भावना के निकट है; न अच्छी न बुरी भावना न अच्छी न बुरी भावना के निकट है। पीड़ादायक भावना पीड़ादायक भावना के निकट है; सुखद भावना सुखद भावना के निकट है; न पीड़ादायक न सुखद भावना न पीड़ादायक न सुखद भावना के निकट है। [5] उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव न करने वाले व्यक्ति की भावना उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव न करने वाले व्यक्ति की भावना के निकट है; उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव करने वाले व्यक्ति की भावना उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव करने वाले व्यक्ति की भावना के निकट है। यह भावना कि

6

जो भावना अशुद्धियों का कारण है, वह उस भावना के निकट होती है; जो भावना अशुद्धियों का कारण नहीं है, वह उस भावना के निकट होती है जो अशुद्धियों का कारण नहीं है। इसे निकटवर्ती भावना कहते हैं। दूरवर्ती और निकटवर्ती भावना को समझने के लिए, इस भावना की तुलना उस भावना से करनी चाहिए।

3. धारणाओं का समग्र योग
14. इसमें बोध का समूह क्या है? भूतकाल, भविष्यकाल या वर्तमानकाल का, आंतरिक या बाह्य, स्थूल या सूक्ष्म, निम्न या उच्च, दूरस्थ या निकट का, जो भी बोध हो; इन सबको सामूहिक रूप से संक्षेप में लें तो, यही बोध का समूह कहलाता है।
15. इसमें भूतकाल की अनुभूति क्या है? वह अनुभूति जो बीत चुकी है, समाप्त हो चुकी है, विलीन हो चुकी है, परिवर्तित हो चुकी है, समाप्त हो गई है, लुप्त हो गई है, या जो उत्पन्न होकर विलीन हो गई है, बीत चुकी है और अतीत की वस्तुओं में गिनी जाती है, (अर्थात) नेत्र संपर्क से उत्पन्न अनुभूति, कान संपर्क से उत्पन्न अनुभूति, नाक संपर्क से उत्पन्न अनुभूति, जीभ संपर्क से उत्पन्न अनुभूति, शरीर संपर्क से उत्पन्न अनुभूति, मन संपर्क से उत्पन्न अनुभूति। इसे भूतकाल की अनुभूति कहते हैं।
तो भविष्य की अनुभूति क्या है? वह अनुभूति जो न तो उत्पन्न होती है, न पैदा होती है, न अस्तित्वहीन होती है, न पूर्णतः अस्तित्वहीन होती है, न प्रकट होती है, न उठी हुई होती है, न पूर्णतः उठी हुई होती है, न पूर्णतः उठी हुई होती है, जो भविष्य की होती है और भविष्य की चीजों में गिनी जाती है, अर्थात्, नेत्र संपर्क से उत्पन्न अनुभूति, कान संपर्क से उत्पन्न अनुभूति, नाक संपर्क से उत्पन्न अनुभूति, जीभ संपर्क से उत्पन्न अनुभूति, शरीर संपर्क से उत्पन्न अनुभूति, मन संपर्क से उत्पन्न अनुभूति। इसे ही भविष्य की अनुभूति कहते हैं।
इसमें वर्तमान बोध क्या है? वह बोध जो उत्पन्न होता है, बनता है, विद्यमान होता है, पूर्णतः विद्यमान होता है, प्रकट होता है, ऊपर उठता है, पूर्णतः ऊपर उठता है, जो वर्तमान में मौजूद होता है और वर्तमान वस्तुओं में शुमार होता है, अर्थात्, नेत्र संपर्क से उत्पन्न बोध, कान संपर्क से उत्पन्न बोध, नाक संपर्क से उत्पन्न बोध, जीभ संपर्क से उत्पन्न बोध, शरीर संपर्क से उत्पन्न बोध, मन संपर्क से उत्पन्न बोध। इसे वर्तमान बोध कहते हैं।

7

16. इसमें आंतरिक बोध क्या है? वह बोध जो किसी प्राणी के लिए व्यक्तिगत, आत्म-संदर्भित, स्वयं का, निजी होता है और जिसे (लालसा और भ्रामक दृष्टि से) ग्रहण किया जाता है, अर्थात्, नेत्र संपर्क से उत्पन्न बोध, कान संपर्क से उत्पन्न बोध, नाक संपर्क से उत्पन्न बोध, जीभ संपर्क से उत्पन्न बोध, शरीर संपर्क से उत्पन्न बोध, मन संपर्क से उत्पन्न बोध। इसे आंतरिक बोध कहते हैं।
इसमें बाह्य बोध क्या है? वह बोध जो किसी अन्य प्राणी के लिए, अन्य व्यक्तियों के लिए, व्यक्तिगत, स्व-संदर्भित, स्वयं का, व्यक्तिगत होता है और जिसे ग्रहण किया जाता है, (अर्थात) नेत्र संपर्क से उत्पन्न बोध, कान संपर्क से उत्पन्न बोध, नाक संपर्क से उत्पन्न बोध, जीभ संपर्क से उत्पन्न बोध, शरीर संपर्क से उत्पन्न बोध, मन संपर्क से उत्पन्न बोध। इसे बाह्य बोध कहा जाता है। [6]
17. इसमें स्थूल (और) सूक्ष्म बोध क्या है? परस्पर संपर्क से उत्पन्न बोध स्थूल है; सादृश्य संपर्क* से उत्पन्न बोध सूक्ष्म है। बुरा बोध स्थूल है; अच्छा और न बुरा बोध सूक्ष्म है। अच्छा और बुरा बोध स्थूल है; न बुरा बोध सूक्ष्म है। पीड़ादायक अनुभूति से जुड़ा बोध स्थूल है; सुखद और न पीड़ादायक अनुभूति से जुड़ा बोध सूक्ष्म है। सुखद और पीड़ादायक अनुभूति से जुड़ा बोध स्थूल है; न पीड़ादायक अनुभूति से जुड़ा बोध सूक्ष्म है। उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव न करने वाले व्यक्ति का बोध स्थूल है; उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव करने वाले व्यक्ति का बोध सूक्ष्म है। जो बोध दोषों का विषय है वह स्थूल है; जो बोध दोषों का विषय नहीं है वह सूक्ष्म है। स्थूल और सूक्ष्म बोध को एक बोध की दूसरे बोध से तुलना करके समझना चाहिए।
मन और मानसिक वस्तुएँ परस्पर परस्पर क्रिया नहीं करतीं, बल्कि सादृश्य द्वारा समझाई जाती हैं।
(आधिवचन) भौतिक अवस्थाओं का।
18. ई. उसमें निम्न (भी) श्रेष्ठ धारणा क्या है? बुरा
धारणा निम्न स्तर की होती है; अच्छी और न अच्छी न बुरी धारणा श्रेष्ठ होती है। अच्छी और बुरी धारणा निम्न स्तर की होती है; न अच्छी न बुरी धारणा श्रेष्ठ होती है। पीड़ादायक अनुभूति से जुड़ी धारणा निम्न स्तर की होती है; सुखद और न पीड़ादायक न सुखद अनुभूति से जुड़ी धारणा श्रेष्ठ होती है। धारणा

8

सुख और दुख दोनों से संबंधित अनुभूति निम्न स्तर की होती है; दुख और सुख दोनों से रहित अनुभूति श्रेष्ठ स्तर की होती है। उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव न करने वाले व्यक्ति की अनुभूति निम्न स्तर की होती है; उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव

करने वाले व्यक्ति की अनुभूति श्रेष्ठ स्तर की होती है। जो अनुभूति दोषों से प्रभावित होती है वह निम्न स्तर की होती है; जो अनुभूति दोषों से प्रभावित नहीं होती वह श्रेष्ठ स्तर की होती है। निम्न और श्रेष्ठ अनुभूति को समझने के लिए एक अनुभूति की दूसरे अनुभूति से तुलना करनी चाहिए।

19. इसमें दूरदर्शी धारणा क्या है? बुरी धारणा अच्छी और न अच्छी न बुरी धारणाओं से दूर होती है; अच्छी और न अच्छी न बुरी धारणा बुरी धारणा से दूर होती है; अच्छी धारणा बुरी और न अच्छी न बुरी धारणाओं से दूर होती है; बुरी और न अच्छी न बुरी धारणा अच्छी धारणा से दूर होती है। न अच्छी न बुरी धारणा अच्छी और बुरी धारणाओं से दूर होती है; अच्छी और बुरी धारणा न अच्छी न बुरी धारणा से दूर होती है। पीड़ादायक भावना से जुड़ी धारणा सुखद और न पीड़ादायक न सुखद भावनाओं से जुड़ी धारणाओं से दूर होती है; सुखद और न पीड़ादायक न सुखद भावनाओं से जुड़ी धारणा पीड़ादायक भावना से जुड़ी धारणा से दूर होती है; सुखद भावना से जुड़ी धारणा पीड़ादायक और न पीड़ादायक न सुखद भावनाओं से जुड़ी धारणाओं से दूर होती है; पीड़ादायक और न पीड़ादायक न सुखद भावनाओं से जुड़ी धारणा सुखद भावना से जुड़ी धारणा से दूर होती है; न तो पीड़ादायक और न ही सुखदायक अनुभूति से जुड़ी धारणा, सुखदायक और पीड़ादायक अनुभूतियों से जुड़ी धारणाओं से दूर होती है; सुखदायक और पीड़ादायक अनुभूतियों से जुड़ी धारणा, न तो पीड़ादायक और न ही सुखदायक अनुभूति से जुड़ी धारणा से दूर होती है। उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव न करने वाले व्यक्ति की धारणा, उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव करने वाले व्यक्ति की धारणा से दूर होती है; [7] उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव करने वाले व्यक्ति की धारणा, उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव न करने वाले व्यक्ति की धारणा से दूर होती है। जो धारणा दोषों का विषय है, वह उस धारणा से दूर होती है जो दोषों का विषय नहीं है; जो धारणा दोषों का विषय नहीं है, वह उस धारणा से दूर होती है जो दोषों का विषय है। इसे दूरदर्शी धारणा कहते हैं।

इसमें निकटवर्ती बोध क्या है? बुरा बोध क्या है?

9

बुरी धारणा के निकट; अच्छी धारणा अच्छी धारणा के निकट; न अच्छी न बुरी धारणा न अच्छी न बुरी धारणा के निकट; पीड़ादायक अनुभूति से जुड़ी धारणा पीड़ादायक अनुभूति से जुड़ी धारणा के निकट; सुखद अनुभूति से जुड़ी धारणा सुखद अनुभूति से जुड़ी धारणा के निकट; न पीड़ादायक न सुखद अनुभूति से जुड़ी धारणा पीड़ादायक अनुभूति से जुड़ी धारणा के निकट। उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव न करने वाले व्यक्ति की धारणा उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव न करने वाले व्यक्ति की धारणा के निकट; उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव करने वाले व्यक्ति की धारणा उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव करने वाले व्यक्ति की धारणा के निकट। जो धारणा दोषों का विषय है, वह दोषों का विषय है, वह दोषों का विषय नहीं है, वह दोषों का विषय नहीं है, यह धारणा निकट है। इसे निकटवर्ती धारणा कहते हैं। दूरवर्ती और निकटवर्ती धारणा को समझने के लिए इस धारणा की तुलना उस धारणा से करनी चाहिए।

4. मानसिक सहवर्तीताओं का समूह

20. उसमें मानसिक सहवर्तीताओं का कुल योग क्या है?

जो भी मानसिक सहवर्ती तत्व भूतकाल, भविष्यकाल या वर्तमान काल के हों, आंतरिक या बाह्य हों, स्थूल या सूक्ष्म हों, निम्न या उच्चतर हों, दूर या निकट हों; इन सभी को सामूहिक रूप से और संक्षेप में एक साथ लेने पर, इसे मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह कहा जाता है।

21. इसमें भूतकाल की मानसिक क्रियाएँ क्या हैं? वे मानसिक क्रियाएँ जो अतीत में घटित हो चुकी हैं, समाप्त हो चुकी हैं, विलीन हो चुकी हैं, परिवर्तित हो चुकी हैं, समाप्त हो चुकी हैं, लुप्त हो चुकी हैं, या जो उत्पन्न होकर विलीन हो चुकी हैं, बीत चुकी हैं और भूतकाल की वस्तुओं में वर्गीकृत की जाती हैं, (अर्थात) नेत्र संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति, कान संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति, नाक संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति, जीभ संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति, शरीर संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति, मन संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति। इन्हें भूतकाल की मानसिक क्रियाएँ कहा जाता है।

उसमें भविष्य के मानसिक सहवर्ती क्या हैं? वे मानसिक सहवर्ती जो न तो जन्म लेते हैं, न बनते हैं, न उत्पन्न होते हैं, न अस्तित्वहीन हैं, न पूर्णतः अस्तित्वहीन हैं, न स्पष्ट हैं, न उठे हैं, न पूर्णतः उठे हैं, न उठे हैं, न पूर्णतः उठे हैं, जो भविष्य के हैं और

10

भविष्य में घटित होने वाली चीजों में, जैसे कि नेत्र संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति, कान संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति, नाक संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति, जीभ संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति, शरीर संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति और मन संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति, ये सभी भविष्यकालीन मानसिक क्रियाविधियाँ कहलाती हैं।

इसमें वर्तमान मानसिक सहवर्ती क्या हैं? वे मानसिक सहवर्ती जो जन्म लेते हैं, बनते हैं, उत्पन्न होते हैं, विद्यमान होते हैं, पूर्णतः विद्यमान होते हैं, प्रकट होते हैं, उठे हुए होते हैं, पूर्णतः उठे हुए होते हैं, [8] पूर्णतः उठे हुए होते हैं, जो उपस्थित होते हैं और उपस्थित वस्तुओं में वर्गीकृत किए जाते हैं, (अर्थात) नेत्र संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति, कान संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति, नाक संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति, जीभ संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति, शरीर संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति, मन संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति। इन्हें वर्तमान मानसिक सहवर्ती कहा जाता है।

22. इसमें आंतरिक मानसिक सहवर्ती क्या हैं? वे मानसिक सहवर्ती जो किसी प्राणी के लिए व्यक्तिगत, आत्म-संदर्भित, स्वयं के, निजी होते हैं और जिन्हें (लालसा और भ्रामक दृष्टि से) ग्रहण किया जाता है, (अर्थात) नेत्र संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति, कान संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति, नाक संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति, जीभ संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति, शरीर संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति, मन संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति। इन्हें आंतरिक मानसिक सहवर्ती कहा जाता है।

इसमें बाह्य मानसिक सहवर्ती क्या हैं? वे मानसिक सहवर्ती जो किसी अन्य प्राणी, किसी अन्य व्यक्ति के लिए व्यक्तिगत, स्व-संदर्भित, स्वयं से संबंधित और अनुभव किए जा सकते हैं, अर्थात्, नेत्र संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति, कान संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति, नाक संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति, जीभ संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति, शरीर संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति, मन संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति। इन्हें बाह्य मानसिक सहवर्ती कहा जाता है।

23. उसमें स्थूल (और) सूक्ष्म मानसिक सहवर्ती क्या हैं?

बुरी मानसिक भावनाएँ स्थूल होती हैं; अच्छी और न अच्छी न बुरी मानसिक भावनाएँ सूक्ष्म होती हैं। अच्छी और बुरी मानसिक भावनाएँ स्थूल होती हैं; न अच्छी न बुरी मानसिक भावनाएँ सूक्ष्म होती हैं। पीड़ादायक भावनाओं से जुड़ी मानसिक भावनाएँ स्थूल होती हैं; सुखद और न पीड़ादायक न सुखद भावनाओं से जुड़ी मानसिक भावनाएँ सूक्ष्म होती हैं। सुखद और पीड़ादायक भावनाओं से जुड़ी मानसिक भावनाएँ स्थूल होती हैं; न पीड़ादायक न सुखद भावनाओं से जुड़ी मानसिक भावनाएँ सूक्ष्म होती हैं। उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव न करने वाले व्यक्ति की मानसिक भावनाएँ स्थूल होती हैं;

11

उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव करने वाले व्यक्ति के मानसिक सहवर्ती सूक्ष्म होते हैं। जो मानसिक सहवर्ती दोषों के विषय होते हैं वे स्थूल होते हैं; जो दोषों के विषय नहीं होते वे सूक्ष्म होते हैं। स्थूल और सूक्ष्म मानसिक सहवर्ती को समझने के लिए इनकी तुलना अन्य मानसिक सहवर्ती से करनी चाहिए।

24. इसमें निम्न (और) श्रेष्ठ मानसिक सहवर्ती क्या हैं? बुरे मानसिक सहवर्ती निम्न हैं; अच्छे और न अच्छे न बुरे मानसिक सहवर्ती श्रेष्ठ हैं। अच्छे और बुरे दोनों मानसिक सहवर्ती निम्न हैं; न अच्छे न बुरे मानसिक सहवर्ती श्रेष्ठ हैं। पीड़ादायक भावनाओं से जुड़े मानसिक सहवर्ती निम्न हैं; सुखद और न पीड़ादायक न सुखद भावनाओं से जुड़े मानसिक सहवर्ती श्रेष्ठ हैं। सुखद और पीड़ादायक भावनाओं से जुड़े मानसिक सहवर्ती निम्न हैं; न पीड़ादायक न सुखद भावनाओं से जुड़े मानसिक सहवर्ती श्रेष्ठ हैं। उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव न करने वाले व्यक्ति के मानसिक सहवर्ती निम्न हैं; उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव करने वाले व्यक्ति के मानसिक सहवर्ती श्रेष्ठ हैं। जो मानसिक सहवर्ती दोष के विषय हैं वे निम्न हैं; जो मानसिक सहवर्ती दोष के विषय नहीं हैं वे श्रेष्ठ हैं। निम्न और श्रेष्ठ मानसिक सहवर्ती को समझने के लिए इनकी तुलना अन्य मानसिक सहवर्ती से करनी चाहिए।

25. इसमें दूरस्थ मानसिक सहवर्ती क्या हैं? बुरे मानसिक सहवर्ती अच्छे और न अच्छे न बुरे मानसिक सहवर्ती से दूरस्थ होते हैं; अच्छे और न अच्छे न बुरे मानसिक सहवर्ती बुरे मानसिक सहवर्ती से दूरस्थ होते हैं; अच्छे मानसिक सहवर्ती बुरे और न अच्छे न बुरे मानसिक सहवर्ती से दूरस्थ होते हैं; बुरे और न अच्छे न बुरे मानसिक सहवर्ती अच्छे मानसिक सहवर्ती से दूरस्थ होते हैं; [9] न अच्छे न बुरे मानसिक सहवर्ती अच्छे और बुरे मानसिक सहवर्ती से दूरस्थ होते हैं; अच्छे और बुरे मानसिक सहवर्ती न अच्छे न बुरे मानसिक सहवर्ती से दूरस्थ होते हैं। पीड़ादायक भावना से जुड़े मानसिक सहवर्ती सुखद और न पीड़ादायक न सुखद भावनाओं से जुड़े मानसिक सहवर्ती से

दूरस्थ होते हैं; सुखद और न पीड़ादायक न सुखद भावनाओं से जुड़े मानसिक सहवर्ती पीड़ादायक भावना से जुड़े मानसिक सहवर्ती से दूरस्थ होते हैं; सुखद अनुभूति से जुड़े मानसिक लक्षण हैं

12

दर्द से जुड़े मानसिक सहवर्ती तत्वों से दूर, न दर्द से जुड़े और न ही सुखद भावनाओं से जुड़े मानसिक सहवर्ती तत्व; दर्द से जुड़े मानसिक सहवर्ती तत्व, न दर्द से जुड़े और न ही सुखद भावनाओं से जुड़े मानसिक सहवर्ती तत्व, सुखद भावनाओं से जुड़े मानसिक सहवर्ती तत्वों से दूर होते हैं; दर्द से जुड़े और न ही सुखद भावनाओं से जुड़े मानसिक सहवर्ती तत्व, सुखद और दर्द से जुड़े दोनों भावनाओं से जुड़े मानसिक सहवर्ती तत्वों से दूर होते हैं; सुखद और दर्द से जुड़े मानसिक सहवर्ती तत्व, दर्द से जुड़े और न ही सुखद भावनाओं से जुड़े मानसिक सहवर्ती तत्वों से दूर होते हैं। उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव न करने वाले व्यक्ति के मानसिक सहवर्ती तत्व, उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव करने वाले व्यक्ति के मानसिक सहवर्ती तत्वों से दूर होते हैं; उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव करने वाले व्यक्ति के मानसिक सहवर्ती तत्व, उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव न करने वाले व्यक्ति के मानसिक सहवर्ती तत्वों से दूर होते हैं। जो मानसिक सहवर्ती तत्व दोषों के विषय हैं, वे उन मानसिक सहवर्ती तत्वों से दूर होते हैं जो दोषों के विषय नहीं हैं। वे मानसिक सहवर्ती तत्व जो विकारों के विषय नहीं हैं, विकारों के विषय बनने वाले मानसिक सहवर्ती तत्वों से दूर होते हैं। इन्हें दूरस्थ मानसिक सहवर्ती तत्व कहा जाता है।

इसमें निकटवर्ती मानसिक सहवर्ती क्या हैं? बुरे मानसिक सहवर्ती बुरे मानसिक सहवर्ती के निकट होते हैं; अच्छे मानसिक सहवर्ती अच्छे मानसिक सहवर्ती के निकट होते हैं; न अच्छे न बुरे मानसिक सहवर्ती न अच्छे न बुरे मानसिक सहवर्ती के निकट होते हैं। पीड़ादायक भावनाओं से जुड़े मानसिक सहवर्ती पीड़ादायक भावनाओं से जुड़े मानसिक सहवर्ती के निकट होते हैं; सुखद भावनाओं से जुड़े मानसिक सहवर्ती सुखद भावनाओं से जुड़े मानसिक सहवर्ती के निकट होते हैं; न पीड़ादायक न सुखद भावनाओं से जुड़े मानसिक सहवर्ती पीड़ादायक न सुखद भावनाओं से जुड़े मानसिक सहवर्ती के निकट होते हैं। उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव न करने वाले व्यक्ति के मानसिक सहवर्ती उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव न करने वाले व्यक्ति के मानसिक सहवर्ती के निकट होते हैं; उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव करने वाले व्यक्ति के मानसिक सहवर्ती उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव करने वाले व्यक्ति के मानसिक सहवर्ती के निकट होते हैं। जो मानसिक सहवर्ती पदार्थ दोषों के विषय हैं, वे उन मानसिक सहवर्ती पदार्थों के निकट स्थित होते हैं जो दोषों के विषय हैं; जो मानसिक सहवर्ती पदार्थ दोषों के विषय नहीं हैं, वे उन मानसिक सहवर्ती पदार्थों के निकट स्थित होते हैं जो दोषों के विषय नहीं हैं। इन्हें कहा जाता है

13

निकटवर्ती मानसिक सहवर्ती। दूरस्थ और निकटवर्ती मानसिक सहवर्ती को इन मानसिक सहवर्ती की तुलना करके समझा जाना चाहिए।

5. चेतना का समूह

26. उसमें चेतना का समूह क्या है? भूतकाल, भविष्यकाल या वर्तमानकाल की, आंतरिक या बाह्य, स्थूल या सूक्ष्म, निम्न या उच्च, दूर या निकट की जो भी चेतना हो; इन सबको सामूहिक रूप से संक्षेप में कहें तो, यही चेतना का समूह कहलाता है।

27. उसमें भूतकाल चेतना क्या है? [10] वह चेतना जो बीत चुकी है, समाप्त हो चुकी है, विलीन हो चुकी है, परिवर्तित हो चुकी है, समाप्त हो चुकी है, लुप्त हो चुकी है, या जो उत्पन्न होकर विलीन हो गई है, बीत चुकी है और भूतकाल की वस्तुओं में गिनी जाती है, (अर्थात) नेत्र चेतना, कान चेतना, नाक चेतना, जीभ चेतना, शरीर चेतना, मन चेतना। इसे भूतकाल चेतना कहते हैं।

तो भविष्य की चेतना क्या है? वह चेतना जो न तो जन्म लेती है, न उत्पन्न होती है, न अस्तित्वहीन है, पूर्णतः अस्तित्वहीन है, न प्रकट होती है, न उत्पन्न है, न पूर्णतः उत्पन्न है, न उत्पन्न है, न पूर्णतः उत्पन्न है, जो भविष्य में है और भविष्य की चीजों में गिनी जाती है, जैसे आँख की चेतना, कान की चेतना, नाक की चेतना, जीभ की चेतना, शरीर की चेतना, मन की चेतना। इसे भविष्य की चेतना कहते हैं।

इसमें वर्तमान चेतना क्या है? वह चेतना जो जन्म लेती है, उत्पन्न होती है, विद्यमान होती है, पूर्णतः विद्यमान होती है, प्रकट होती है, ऊपर उठती है, पूर्णतः ऊपर उठ चुकी होती है, जो वर्तमान में विद्यमान होती है और वर्तमान वस्तुओं में शुमार होती है, जैसे कि नेत्र चेतना, कान चेतना, नाक चेतना, जीभ चेतना, शरीर चेतना, मन चेतना। इसे वर्तमान चेतना कहते हैं।

2§. इसमें आंतरिक चेतना क्या है? वह चेतना जो किसी प्राणी के लिए व्यक्तिगत, स्वयं-संदर्भित, स्वयं की, निजी होती है और जिसे (लालसा और भ्रामक दृष्टि द्वारा) ग्रहण किया जाता है, (अर्थात) नेत्र चेतना, कान चेतना, नाक चेतना, जीभ चेतना, शरीर चेतना, मन चेतना। इसे आंतरिक चेतना कहते हैं।

14

इसमें बाह्य चेतना क्या है? वह चेतना जो किसी प्राणी या अन्य व्यक्तियों के लिए व्यक्तिगत, आत्म-संदर्भित, स्वयं की, वैयक्तिक होती है और जिसे अनुभव किया जा सकता है, जैसे कि नेत्र चेतना, कान चेतना, नाक चेतना, जीभ चेतना, शरीर चेतना, मन चेतना। इसे बाह्य चेतना कहते हैं।

29. इसमें स्थूल (और) सूक्ष्म चेतना क्या है? बुरी चेतना स्थूल है; अच्छी और न बुरी चेतना सूक्ष्म है। अच्छी और बुरी चेतना स्थूल है; न बुरी चेतना सूक्ष्म है। पीड़ादायक संवेदनाओं से जुड़ी चेतना स्थूल है; सुखद और न पीड़ादायक संवेदनाओं से जुड़ी चेतना सूक्ष्म है। सुखद और पीड़ादायक संवेदनाओं से जुड़ी चेतना स्थूल है; न पीड़ादायक संवेदनाओं से जुड़ी चेतना सूक्ष्म है। उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव न करने वाले की चेतना स्थूल है; उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव करने वाले की चेतना सूक्ष्म है। जो चेतना दोषों का विषय है वह स्थूल है; जो चेतना दोषों का विषय नहीं है वह सूक्ष्म है। स्थूल और सूक्ष्म चेतना को समझने के लिए एक चेतना की तुलना दूसरी चेतना से करनी चाहिए।

30. इसमें निम्न [11] (भी) श्रेष्ठ चेतना क्या है? बुरी चेतना निम्न है; अच्छी और न अच्छी न बुरी चेतना श्रेष्ठ है। अच्छी और बुरी चेतना निम्न है; न अच्छी न बुरी चेतना श्रेष्ठ है। पीड़ादायक भावनाओं से जुड़ी चेतना निम्न है; सुखद और न पीड़ादायक न सुखद भावनाओं से जुड़ी चेतना श्रेष्ठ है। सुखद और पीड़ादायक भावनाओं से जुड़ी चेतना निम्न है; न पीड़ादायक न सुखद भावनाओं से जुड़ी चेतना श्रेष्ठ है। उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव न करने वाले की चेतना निम्न है; उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव करने वाले की चेतना श्रेष्ठ है। जो चेतना दोषों का विषय है वह निम्न है; जो चेतना दोषों का विषय नहीं है वह श्रेष्ठ है। निम्न और श्रेष्ठ चेतना को इस चेतना की तुलना उस चेतना से करके समझना चाहिए।

31. उसमें दूरस्थ चेतना क्या है? बुरी चेतना अच्छी चेतना से दूर है और न अच्छी न बुरी चेतना से भी दूर है;

15

अच्छी और न बुरी चेतना बुरी चेतना से दूर है; अच्छी चेतना बुरी और न बुरी चेतना से दूर है; बुरी और न बुरी चेतना अच्छी चेतना से दूर है; न बुरी चेतना अच्छी और बुरी चेतना से दूर है; अच्छी और बुरी चेतना न अच्छी और बुरी चेतना से दूर है। दर्दनाक भावनाओं से जुड़ी चेतना सुखद और न दर्दनाक भावनाओं से जुड़ी चेतना से दूर है; सुखद और न दर्दनाक भावनाओं से जुड़ी चेतना दर्दनाक भावनाओं से जुड़ी चेतना से दूर है; सुखद भावनाओं से जुड़ी चेतना दर्दनाक और न दर्दनाक भावनाओं से जुड़ी चेतना से दूर है; दर्दनाक और न दर्दनाक भावनाओं से जुड़ी चेतना सुखद भावनाओं से जुड़ी चेतना से दूर है। न दर्दनाक और न सुखद भावनाओं से जुड़ी चेतना सुखद और दर्दनाक भावनाओं से जुड़ी चेतना से दूर है। सुख और दुख से जुड़ी चेतना, न दुखदायी और न सुखदायी चेतना से दूर होती है। उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव न करने वाले व्यक्ति की चेतना, उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव करने वाले व्यक्ति की चेतना से दूर होती है; उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव करने वाले व्यक्ति की चेतना, उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव न करने वाले व्यक्ति की चेतना से दूर होती है। जो चेतना दोषों से ग्रस्त होती है, वह उन चेतनाओं से दूर होती है जो दोषों से ग्रस्त नहीं होती; और जो चेतना दोषों से ग्रस्त नहीं होती, वह उन चेतनाओं से दूर होती है जो दोषों से ग्रस्त होती हैं। इसे ही दूर की चेतना कहते हैं।

इसमें निकटवर्ती चेतना क्या है? बुरी चेतना बुरी चेतना के निकट है; [12] अच्छी चेतना अच्छी चेतना के निकट है; न अच्छी न बुरी चेतना न अच्छी न बुरी चेतना के निकट है। पीड़ादायक भावना से जुड़ी चेतना पीड़ादायक भावना से जुड़ी चेतना के निकट है; सुखद भावना से जुड़ी चेतना सुखद भावना से जुड़ी चेतना के निकट है; न पीड़ादायक न सुखद भावना से जुड़ी चेतना न पीड़ादायक न सुखद भावना से जुड़ी चेतना के निकट है।

16

उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव न करने वाले व्यक्ति की चेतना, उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव न करने वाले व्यक्ति की चेतना के निकट होती है; उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव करने वाले व्यक्ति की चेतना, उच्च मानसिक अवस्थाओं का अनुभव करने वाले व्यक्ति की चेतना के निकट होती है। जो चेतना विकारों से ग्रस्त है, वह विकारों से ग्रस्त चेतना के निकट होती है; जो चेतना विकारों से ग्रस्त नहीं है, वह विकारों से ग्रस्त चेतना के निकट होती है। इसे निकटवर्ती चेतना कहते हैं। दूर और निकटवर्ती चेतना को समझने के लिए, एक चेतना की तुलना दूसरी चेतना से करनी चाहिए।

(यहाँ समाप्त होता है) प्रवचनों के अनुसार विश्लेषण

2. अभिधम्म के अनुसार विश्लेषण

32. पाँच समूह हैं: भौतिक गुणों का समूह, भावनाओं का समूह, बोध का समूह, मानसिक सहवर्तीताओं का समूह, चेतना का समूह।

1. सामग्री की गुणवत्ता का कुल योग

33. उसमें भौतिक गुणों का कुल योग क्या है?

भौतिक गुणों का एकल विभाजन द्वारा समूह: सभी भौतिक गुण मूल नहीं हैं। मूल के साथ नहीं हैं। मूल से संबद्ध नहीं हैं। कारण से संबद्ध हैं। सशर्त हैं। भौतिक हैं। सांसारिक हैं। दोषों का विषय हैं। बंधनों का विषय हैं। बंधनों का विषय हैं। बाढ़ का विषय हैं। बंधनों का विषय हैं। बाधाओं का विषय हैं। विकृतियों का विषय हैं। आसक्ति का विषय हैं। भ्रष्टाचारों का विषय हैं। न अच्छे हैं न बुरे। इनका कोई विषय नहीं है। मानसिक सहवर्ती नहीं हैं। चेतना से संबद्ध नहीं हैं। न परिणाम उत्पन्न करते हैं न परिणाम उत्पन्न करते हैं। भ्रष्ट नहीं हैं, भ्रष्टाचारों का विषय हैं। 'प्रारंभिक अनुप्रयोग के साथ नहीं, निरंतर अनुप्रयोग के साथ' नहीं हैं। 'प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, केवल निरंतर अनुप्रयोग' नहीं हैं। प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, निरंतर अनुप्रयोग के बिना हैं। उत्साह के साथ नहीं हैं। आनंद के साथ नहीं हैं।

17

उदासीनता। न तो प्रथम मार्ग से और न ही पश्चात मार्गों से इसका त्याग किया जा सकता है। इसका कोई मूल नहीं है जिसे प्रथम मार्ग से या पश्चात मार्गों से त्यागा जा सके। यह न तो संचयी है और न ही विक्षेपी (लगातार पुनर्जन्म और मृत्यु का)। यह न तो सात अलौकिक अवस्थाओं में से है और न ही अंतिम अलौकिक अवस्था में से। यह निम्न है। यह इच्छा के तल की विशेषता है। यह रूप के तल की विशेषता नहीं है। यह निराकार तल की विशेषता नहीं है। यह समाहित है (अर्थात सांसारिक है)। यह 'समाहित नहीं' है (अर्थात अलौकिक नहीं)। इसका कोई निश्चित (परिणामी समय) नहीं है। यह मुक्त होने की प्रवृत्ति नहीं रखता। यह ऊपर उठा है। यह छह प्रकार की चेतनाओं द्वारा बोधगम्य है। यह स्थायी नहीं है। यह क्षय के अधीन है। इस प्रकार यह एकल विभाजन द्वारा भौतिक गुणों का समुच्चय है। [13]

भौतिक गुणों का द्विभाजन इस प्रकार है: कुछ भौतिक गुण व्युत्पन्न होते हैं; कुछ अव्युत्पन्न होते हैं। कुछ भौतिक गुण लालसा और भ्रामक दृष्टि से ग्रहण किए जाते हैं; कुछ भौतिक गुण ग्रहण नहीं किए जाते। कुछ भौतिक गुण ग्रहण किए जाते हैं और आसक्तियों का विषय होते हैं; कुछ भौतिक गुण ग्रहण नहीं किए जाते, फिर भी आसक्तियों का विषय होते हैं। कुछ भौतिक गुण दृश्य होते हैं; कुछ अदृश्य होते हैं। कुछ भौतिक गुण प्रभावकारी होते हैं; कुछ प्रभावकारी नहीं होते। कुछ भौतिक गुण नियंत्रणकारी होते हैं; कुछ नियंत्रणकारी नहीं होते। कुछ भौतिक गुण चार प्रमुख तत्वों में से एक होते हैं; कुछ चार प्रमुख तत्वों में से एक नहीं होते। कुछ भौतिक गुण अभिव्यंजक होते हैं; कुछ अभिव्यंजक नहीं होते। कुछ भौतिक गुण चेतना द्वारा उत्पन्न होते हैं; कुछ चेतना द्वारा उत्पन्न नहीं होते। कुछ भौतिक गुण चेतना के साथ विद्यमान होते हैं; कुछ चेतना के साथ विद्यमान नहीं होते। कुछ भौतिक गुण चेतना के साथ होते हैं; कुछ भौतिक गुण चेतना के साथ नहीं होते। कुछ भौतिक गुण आंतरिक होते हैं; कुछ भौतिक गुण बाह्य होते हैं। कुछ भौतिक गुण स्थूल होते हैं; कुछ भौतिक गुण सूक्ष्म होते हैं। कुछ भौतिक गुण दूर होते हैं; कुछ भौतिक गुण निकट होते हैं। कुछ भौतिक गुण भोजन का पोषक तत्व होते हैं; कुछ भौतिक गुण भोजन का पोषक तत्व नहीं होते। इस प्रकार, भौतिक गुणों का द्विभाजन करके उन्हें समेटा जाता है।

18

[सामग्री की गुणवत्ता (Dhs.) संबंधी अनुभाग में किए गए विश्लेषण के अनुसार, यहाँ भी उसी प्रकार विश्लेषण किया जाना चाहिए]।

P = चूक के लिए Dhs., सामग्री गुणवत्ता अनुभाग देखें।

भौतिक गुणों का त्रिविध विभाजन इस प्रकार है: आंतरिक गुण व्युत्पन्न होते हैं; बाह्य गुण व्युत्पन्न होते हैं; व्युत्पन्न नहीं होते। आंतरिक गुण ग्रहणशील होते हैं; बाह्य गुण ग्रहणशील होते हैं; ग्रहणशील नहीं होते। आंतरिक गुण ग्रहणशील होते हैं, वे आसक्तियों का विषय होते हैं; बाह्य गुण ग्रहणशील होते हैं, वे आसक्तियों का विषय होते हैं; ग्रहणशील नहीं होते, वे आसक्तियों का विषय होते हैं। आंतरिक गुण भोजन का पोषक तत्व नहीं होते; बाह्य गुण भोजन का पोषक तत्व होते हैं; भोजन का पोषक तत्व नहीं होते। इस प्रकार भौतिक गुणों का त्रिविध विभाजन है।

पी — चूक के लिए डीएचएस अनुभाग, सामग्री गुणवत्ता संबंधी अनुभाग देखें।

भौतिक गुणों का चार प्रकार से विभाजन इस प्रकार है: व्युत्पन्न भौतिक गुण बोधगम्य होते हैं; बोधगम्य नहीं होते; व्युत्पन्न न होने वाले भौतिक गुण बोधगम्य होते हैं; बोधगम्य नहीं होते। व्युत्पन्न भौतिक गुण बोधगम्य होते हैं, आसक्तियों का विषय होते हैं; बोधगम्य न होने वाले भौतिक गुण आसक्तियों का विषय होते हैं; व्युत्पन्न न होने वाले भौतिक गुण बोधगम्य होते हैं, आसक्तियों का विषय होते हैं; बोध न होने वाले भौतिक गुण आसक्तियों का विषय होते हैं। व्युत्पन्न भौतिक गुण आक्षेपकारी होते हैं; आक्षेपकारी नहीं होते: [14] व्युत्पन्न न होने वाले भौतिक गुण आक्षेपकारी होते हैं; आक्षेपकारी नहीं होते। व्युत्पन्न भौतिक गुण स्थूल होते हैं; सूक्ष्म होते हैं: व्युत्पन्न न होने वाले भौतिक गुण स्थूल होते हैं; सूक्ष्म होते हैं। व्युत्पन्न भौतिक गुण दूरस्थ होते हैं; निकटस्थ होते हैं: व्युत्पन्न न होने वाले भौतिक गुण दूरस्थ होते हैं; निकटस्थ होते हैं। :P: ऐसे भौतिक गुण होते हैं जो दृश्य, श्रव्य, बोधगम्य और ज्ञात होते हैं। इस प्रकार भौतिक गुणों का चार प्रकार से विभाजन किया गया है।

पी— चूक के लिए डीएचएस अनुभाग, सामग्री गुणवत्ता संबंधी अनुभाग देखें।

भौतिक गुणों का पंचांग विभाजन इस प्रकार है: विस्तार तत्व; संसंजन तत्व; ऊष्मा तत्व; गति तत्व; और इनसे व्युत्पन्न भौतिक गुण। इस प्रकार भौतिक गुणों का पंचांग विभाजन किया गया है।

19

भौतिक गुणों का छह भागों में विभाजन इस प्रकार है: आँखों से अनुभव किए जा सकने वाले भौतिक गुण; कानों से अनुभव किए जा सकने वाले भौतिक गुण; नाक से अनुभव किए जा सकने वाले भौतिक गुण; जीभ से अनुभव किए जा सकने वाले भौतिक गुण; शरीर से अनुभव किए जा सकने वाले भौतिक गुण; मन से अनुभव किए जा सकने वाले भौतिक गुण। इस प्रकार भौतिक गुणों का छह भागों में विभाजन किया गया है।

भौतिक गुणों का सात भागों में विभाजन इस प्रकार है: आँखों से अनुभव किए जाने वाले भौतिक गुण; कानों से अनुभव किए जाने वाले भौतिक गुण; नाक से अनुभव किए जाने वाले भौतिक गुण; जीभ से अनुभव किए जाने वाले भौतिक गुण; शरीर से अनुभव किए जाने वाले भौतिक गुण; मन से अनुभव किए जाने वाले भौतिक गुण; मन-चेतना से अनुभव किए जाने वाले भौतिक गुण। इस प्रकार भौतिक गुणों का सात भागों में विभाजन किया गया है।

भौतिक गुणों का आठ भागों में विभाजन इस प्रकार है: आँखों से अनुभव किए जा सकने वाले भौतिक गुण; कानों से अनुभव किए जा सकने वाले भौतिक गुण; नाक से अनुभव किए जा सकने वाले भौतिक गुण; जीभ से अनुभव किए जा सकने वाले भौतिक गुण (सुखद और पीड़ादायक स्पर्श सहित); मन से अनुभव किए जा सकने वाले भौतिक गुण; और चेतना से अनुभव किए जा सकने वाले भौतिक गुण। इस प्रकार भौतिक गुणों का आठ भागों में विभाजन किया गया है।

भौतिक गुणों का नौ भागों में विभाजन इस प्रकार है: आँख की क्रिया शक्ति; कान की क्रिया शक्ति; नाक की क्रिया शक्ति; जीभ की क्रिया शक्ति; शरीर की क्रिया शक्ति; स्त्रीत्व की क्रिया शक्ति; पुरुषत्व की क्रिया शक्ति; प्राण शक्ति की क्रिया शक्ति और वह भौतिक गुण जो क्रिया शक्ति नहीं है। इस प्रकार भौतिक गुणों का नौ भागों में विभाजन किया गया है।

भौतिक गुणों का दस गुना विभाजन इस प्रकार है: आँख की नियंत्रण शक्ति; कान की नियंत्रण शक्ति; नाक की नियंत्रण शक्ति; जीभ की नियंत्रण शक्ति; शरीर की नियंत्रण शक्ति; स्त्रीत्व की नियंत्रण शक्ति; पुरुषत्व की नियंत्रण शक्ति; प्राण शक्ति; जो भौतिक गुण नियंत्रण शक्ति नहीं हैं, वे अप्रभावी होते हैं। इस प्रकार भौतिक गुणों का दस गुना विभाजन किया गया है।

ग्यारह भागों में विभाजित भौतिक गुणों का समूह: नेत्र आधार; कान आधार; नाक आधार; जीभ आधार; शरीर आधार; दृश्य आधार; श्रव्य आधार; गंध आधार; स्वाद आधार; स्पर्शनीय आधार और वह भौतिक गुण जो अदृश्य है, प्रभावहीन है।

20

वैचारिक आधार में शामिल। इस प्रकार ग्यारह गुना विभाजन द्वारा भौतिक गुणवत्ता का कुल योग प्राप्त होता है।
इसे सामग्री गुणवत्ता का कुल योग कहा जाता है [15]
2. भावनाओं का समूह
34. उसमें भावना का समुच्चय क्या है? एकल विभाजन द्वारा भावना का समुच्चय: संपर्क से जुड़ा है।
दो भागों में विभाजित भावना का समूह: मूल के साथ होता है; मूल के साथ नहीं होता है।
तीन भागों में विभाजित करके भावनाओं का समूह: अच्छा है; बुरा है; न अच्छा है न बुरा।
भावों का समूह, चार भागों में विभाजित करके: इच्छा के तल की विशेषता है; रूप के तल की विशेषता है; निराकार तल की विशेषता है; इसमें शामिल नहीं है (अर्थात् यह अलौकिक है)।
पांच भागों में विभाजित करके भावनाओं का समूह इस प्रकार है: सुख (शारीरिक) की नियंत्रक शक्ति; दुख (शारीरिक) की नियंत्रक शक्ति; मानसिक सुख की नियंत्रक शक्ति; मानसिक दुख की नियंत्रक शक्ति; और उदासीनता की नियंत्रक शक्ति। इस प्रकार पांच भागों में विभाजित करके भावनाओं का समूह इस प्रकार है।
भावों का कुल योग छह भागों में विभाजित है: नेत्र संपर्क से उत्पन्न भाव; कान संपर्क से उत्पन्न भाव; नाक संपर्क से उत्पन्न भाव; जीभ संपर्क से उत्पन्न भाव; शरीर संपर्क से उत्पन्न भाव; मन संपर्क से उत्पन्न भाव। इस प्रकार भावों का कुल योग छह भागों में विभाजित है।
सात भागों में विभाजित करके भावों का सार इस प्रकार है: नेत्र संपर्क से उत्पन्न भाव; कान संपर्क से उत्पन्न भाव; नाक संपर्क से उत्पन्न भाव; जीभ संपर्क से उत्पन्न भाव; शरीर संपर्क से उत्पन्न भाव; मन-तत्व संपर्क से उत्पन्न भाव; मन-चेतना-तत्व संपर्क से उत्पन्न भाव। इस प्रकार भावों का सार सात भागों में विभाजित है।
आठ प्रकार से विभाजित करके भावों का सार प्रस्तुत किया जाता है: नेत्र संपर्क से उत्पन्न भाव; कान संपर्क से उत्पन्न भाव; नाक संपर्क से उत्पन्न भाव; जीभ संपर्क से उत्पन्न भाव; सुखद और पीड़ादायक शारीरिक संपर्क से उत्पन्न भाव; मन-तत्व संपर्क से उत्पन्न भाव; मन-चेतना-तत्व संपर्क से उत्पन्न भाव। इस प्रकार आठ प्रकार से विभाजित भावों का सार प्रस्तुत किया जाता है।

21

नौ भागों में विभाजित करके भावनाओं का सार प्रस्तुत किया जाता है: नेत्र संपर्क से उत्पन्न भावना; कान संपर्क से उत्पन्न भावना; नाक संपर्क से उत्पन्न भावना; जीभ संपर्क से उत्पन्न भावना; शरीर संपर्क से उत्पन्न भावना; मन-तत्व संपर्क से उत्पन्न भावना; मन-चेतना-तत्व संपर्क से उत्पन्न भावना - जो अच्छी है, जो बुरी है, जो न अच्छी है न बुरी। इस प्रकार नौ भागों में विभाजित करके भावनाओं का सार प्रस्तुत किया जाता है।
दस भागों में विभाजित करके भावों का समग्र रूप: नेत्र संपर्क से उत्पन्न भाव; कान संपर्क से उत्पन्न भाव; नाक संपर्क से उत्पन्न भाव; जीभ संपर्क से उत्पन्न भाव; सुखद और पीड़ादायक शारीरिक संपर्क से उत्पन्न भाव; मन-तत्व संपर्क से उत्पन्न भाव; मन-चेतना-तत्व संपर्क से उत्पन्न भाव, जो अच्छा, बुरा और न अच्छा न बुरा है। इस प्रकार, दस भागों में विभाजित करके भावों का समग्र रूप है। [16]
35. एकल विभाजन के माध्यम से भावना का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।
दो भागों में विभाजित भावना का समूह: मूल शब्द के साथ होता है; मूल शब्द के साथ नहीं होता है।
तीन प्रकार से विभाजित भावों का समूह: परिणामी है; परिणामी उत्पन्न करता है; न तो परिणामी है और न ही परिणामी उत्पन्न करता है। (लालसा और भ्रामक दृष्टि से) ग्रहण किया जाता है, आसक्तियों का विषय है; ग्रहण नहीं किया जाता है, आसक्तियों का विषय है; ग्रहण नहीं किया जाता है, आसक्तियों का विषय नहीं है। भ्रष्ट है, भ्रष्टताओं का विषय है; भ्रष्ट नहीं है, भ्रष्टताओं का विषय है; भ्रष्ट नहीं है, भ्रष्टताओं का विषय नहीं है। प्रारंभिक अभ्यास के साथ है, निरंतर अभ्यास के साथ है; प्रारंभिक अभ्यास के बिना है, केवल निरंतर अभ्यास के साथ है; प्रारंभिक अभ्यास के बिना है, निरंतर अभ्यास के बिना है। प्रथम मार्ग द्वारा त्यागा जाना है; अनुवर्ती मार्गों द्वारा त्यागा जाना है; न तो प्रथम मार्ग द्वारा और न ही अनुवर्ती मार्गों द्वारा त्यागा जाना है। प्रथम मार्ग द्वारा त्यागा जाने वाला मूल है; अनुवर्ती मार्गों द्वारा त्यागा जाने वाला मूल है; प्रथम मार्ग या अनुवर्ती मार्गों द्वारा त्यागा जाने वाला कोई मूल नहीं है। (लगातार पुनर्जन्म और मृत्यु का) संचयी है; विक्षेपी है। न तो संचयी है और न ही विक्षेपी। यह सात अलौकिक अवस्थाओं में से एक है; यह अंतिम अलौकिक अवस्था में से एक है; यह न तो सात अलौकिक अवस्थाओं में से एक है और न ही अंतिम अलौकिक अवस्था में से एक है। यह निम्न है; यह उदात्त है; यह अतुलनीय है। [17] इसका निम्न उद्देश्य है; इसका उदात्त उद्देश्य है; इसका अतुलनीय उद्देश्य है।

22

वस्तु। निम्न है; मध्यवर्ती है; श्रेष्ठ है। एक निश्चित (परिणामी समय) वाली झूठी (अवस्था) है; एक निश्चित (परिणामी समय) वाली सही (अवस्था) है; इसका कोई निश्चित (परिणामी समय) नहीं है। पथ इसका उद्देश्य है; पथ इसका कारण है; पथ इसका प्रमुख कारक है। उत्पन्न हुआ है; उत्पन्न नहीं हुआ है; उत्पन्न होना ही है। भूतकाल है; भविष्यकाल है; वर्तमानकाल है। भूतकाल की वस्तु है; भविष्यकाल की वस्तु है; वर्तमानकाल की वस्तु है। आंतरिक है; बाह्य है; आंतरिक और बाह्य दोनों है। आंतरिक वस्तु है; बाह्य वस्तु है; आंतरिक और बाह्य दोनों वस्तुएँ हैं। :P: इस प्रकार दस गुना विभाजन द्वारा भावना का समुच्चय है।

P = अनुच्छेद 34 देखें।

36. एकल विभाजन के माध्यम से भावना का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।

भावना का समग्र विभाजन इस प्रकार है: मूल से संबद्ध; मूल से संबद्ध नहीं। मूल नहीं, मूल के साथ; मूल नहीं, मूल के साथ नहीं। सांसारिक; अलौकिक। एक मार्ग से बोधगम्य; दूसरे मार्ग से बोधगम्य नहीं। [18] दोषों का विषय; दोषों का विषय नहीं। दोषों से संबद्ध; दोषों से संबद्ध नहीं। दोषों से संबद्ध नहीं, दोषों का विषय; दोषों से संबद्ध नहीं, दोषों का विषय नहीं। बंधनों का विषय; बंधनों का विषय नहीं। बंधनों से संबद्ध; बंधनों से संबद्ध नहीं। बंधनों से संबद्ध नहीं, बंधनों का विषय; बंधनों से संबद्ध नहीं, बंधनों का विषय नहीं। बंधनों का विषय; संबंधों का विषय नहीं है। संबंधों से जुड़ा है; संबंधों से जुड़ा नहीं है। संबंधों से जुड़ा नहीं है, संबंधों का विषय है; संबंधों से जुड़ा नहीं है, संबंधों का विषय नहीं है। बाढ़ का विषय है; बाढ़ का विषय नहीं है। बाढ़ से जुड़ा है; बाढ़ से जुड़ा नहीं है। बाढ़ से जुड़ा नहीं है, बाढ़ का विषय है; बाढ़ से जुड़ा नहीं है, बाढ़ का विषय नहीं है। बंधनों का विषय है; बंधनों का विषय नहीं है। बंधनों से जुड़ा है; बंधनों से जुड़ा नहीं है। बंधनों से जुड़ा नहीं है, बंधनों का विषय है; बंधनों से जुड़ा नहीं है, बंधनों का विषय नहीं है। बाधाओं का विषय है; बाधाओं का विषय नहीं है। बाधाओं से जुड़ा है; बाधाओं से जुड़ा नहीं है। बाधाओं से जुड़ा नहीं है, बाधाओं का विषय है;

23

बाधाओं से संबद्ध नहीं है, बाधाओं का विषय नहीं है। विकृतियों का विषय है; विकृतियों का विषय नहीं है। विकृतियों से संबद्ध है; विकृतियों से संबद्ध नहीं है। विकृतियों से संबद्ध नहीं है, विकृतियों का विषय है; विकृतियों से संबद्ध नहीं है, विकृतियों का विषय नहीं है। बोधित है; बोधित नहीं है। आसक्ति का विषय है; आसक्ति का विषय नहीं है। आसक्ति से संबद्ध है; आसक्ति से संबद्ध नहीं है। आसक्ति से संबद्ध नहीं है, आसक्ति का विषय है; आसक्ति से संबद्ध नहीं है, आसक्ति का विषय नहीं है। भ्रष्टाचार का विषय है; भ्रष्टाचार का विषय नहीं है। भ्रष्ट है; भ्रष्ट नहीं है। भ्रष्टाचार से संबद्ध है; भ्रष्टाचार से संबद्ध नहीं है। भ्रष्टाचार से संबद्ध नहीं है, भ्रष्टाचार का विषय है; भ्रष्टाचारों से संबद्ध नहीं है, भ्रष्टाचारों का विषय नहीं है। प्रथम मार्ग द्वारा त्यागा जाना है; प्रथम मार्ग द्वारा नहीं त्यागा जाना है। अनुवर्ती मार्गों द्वारा त्यागा जाना है; अनुवर्ती मार्गों द्वारा नहीं त्यागा जाना है। प्रथम मार्ग द्वारा त्यागे जाने योग्य मूल है; प्रथम मार्ग द्वारा त्यागे जाने योग्य मूल नहीं है। अनुवर्ती मार्गों द्वारा त्यागे जाने योग्य मूल है; अनुवर्ती मार्गों द्वारा त्यागे जाने योग्य मूल नहीं है। प्रारंभिक प्रयोग के साथ है; प्रारंभिक प्रयोग के बिना है। निरंतर प्रयोग के साथ है; निरंतर प्रयोग के बिना है। [19] उत्साह के साथ है; उत्साह के बिना है। उत्साह के साथ है; उत्साह के साथ नहीं है। इच्छा के तल की विशेषता है; इच्छा के तल की विशेषता नहीं है। रूप के तल की विशेषता है; रूप के तल की विशेषता नहीं है। निराकार तल की विशेषता है; निराकार तल की विशेषता नहीं है। समाहित है (अर्थात सांसारिक है); समाहित नहीं है (अर्थात अलौकिक है)। मुक्ति की ओर प्रवृत्त है; मुक्ति की ओर प्रवृत्त नहीं है। इसका (परिणामी समय) निश्चित है; इसका (परिणामी समय) निश्चित नहीं है। यह पार किया जा सकता है; यह पार नहीं किया जा सकता है। यह शोक का कारण है; यह शोक का कारण नहीं है।

तीन भागों में विभाजित करके भावनाओं का समूह: अच्छा है; बुरा है; न अच्छा है न बुरा। इसी प्रकार दस भागों में विभाजित करके भावनाओं का समूह बनता है।

P = अनुच्छेद 34 देखें।

37. एकल विभाजन के माध्यम से भावना का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।

24

दो भागों में विभाजित करके भावनाओं का समूह: शोक का कारण है; शोक का कारण नहीं है।

तीन भागों में विभाजित भावों का समूह: परिणामी होता है; परिणामी उत्पन्न करता है; न तो परिणामी होता है और न ही परिणामी उत्पन्न करता है। ग्रहण किया जाता है, और आसक्तियों का विषय होता है।

P 1 : इसमें आंतरिक वस्तु है; इसमें बाह्य वस्तु है; इसमें आंतरिक वस्तुएँ दोनों हैं

और बाह्य वस्तु। :P 2 : इस प्रकार दस गुना विभाजन द्वारा भावना का समुच्चय होता है।

पी* = पैरा देखें। 35. पी 2 =पैरा देखें। 34.

(यहाँ खंड समाप्त होता है) दोहे पर आधारित [20]

38. एकल विभाजन के माध्यम से भावना का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।

दो भागों में विभाजित भावना का समूह: मूल के साथ होता है; मूल के साथ नहीं होता है।

तीन भागों में विभाजित करके भावनाओं का समूह: अच्छा है; बुरा है; न अच्छा है न बुरा। :P इसी प्रकार दस भागों में विभाजित करके भावनाओं का समूह कहा जा सकता है।

P = अनुच्छेद 34 देखें।

39. एकल विभाजन के माध्यम से भावना का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।

दो भागों में विभाजित भावना का समूह: मूल से संबंधित है; मूल से संबंधित नहीं है।

तीन भागों में विभाजित करके भावनाओं का समूह: अच्छा है; बुरा है; न अच्छा है न बुरा। :P: इसी प्रकार दस भागों में विभाजित करके भावनाओं का समूह बनता है।

पी — पैराग्राफ 34 देखें।

40. एकल विभाजन के माध्यम से भावना का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।

दो प्रकार से विभाजित भावों का समूह: मूल नहीं है, मूल के साथ है; मूल नहीं है, मूल के साथ नहीं है। सांसारिक है; अलौकिक है। एक मार्ग से ज्ञात है; दूसरे मार्ग से ज्ञात नहीं है। दोषों का विषय है; दोषों का विषय नहीं है। दोषों से संबद्ध है; दोषों से संबद्ध नहीं है। दोषों से संबद्ध नहीं है, दोषों का विषय है; नहीं है।

25

जो अशुद्धियों से जुड़ा है, वह अशुद्धियों का विषय नहीं है।

पी : शोक का कारण है; शोक का कारण नहीं है।

P = अनुच्छेद 36 देखें।

तीन गुना विभाजन द्वारा भावना का कुल योग: अच्छा है; बुरा है; न अच्छा न बुरा। :P: इस प्रकार दस गुना विभाजन द्वारा भावना का कुल योग है। [21]

पी — पैराग्राफ 34 देखें।

41. एकल विभाजन के माध्यम से भावना का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।

दो भागों में विभाजित भावना का समूह: मूल के साथ है; मूल के साथ नहीं है।

तीन प्रकार से विभाजित भावों का समूह: परिणामी है; परिणामी उत्पन्न करता है; न तो परिणामी है और न ही परिणामी उत्पन्न करता है। ग्रहण किया जा सकता है, आसक्तियों का विषय है; ग्रहण नहीं किया जा सकता, आसक्तियों का विषय है; ग्रहण नहीं किया जा सकता, आसक्तियों का विषय नहीं है। भ्रष्ट है, भ्रष्टताओं का विषय है; भ्रष्ट नहीं है, भ्रष्टताओं का विषय है; भ्रष्ट नहीं है, भ्रष्टताओं का विषय नहीं है। प्रारंभिक अभ्यास के साथ है, निरंतर अभ्यास के साथ है; प्रारंभिक अभ्यास के बिना है, केवल निरंतर अभ्यास के साथ है; प्रारंभिक अभ्यास के बिना है, निरंतर अभ्यास के बिना है। प्रथम मार्ग द्वारा त्यागा जाना है; अनुवर्ती मार्गों द्वारा त्यागा जाना है; न तो प्रथम मार्ग द्वारा और न ही अनुवर्ती मार्गों द्वारा त्यागा जाना है। प्रथम मार्ग द्वारा त्यागा जाने वाला मूल है; अनुवर्ती मार्गों द्वारा त्यागा जाने वाला मूल है; प्रथम मार्ग या अनुवर्ती मार्गों द्वारा त्यागा जाने वाला कोई मूल नहीं है। संचयी है; विक्षेपी है; न तो संचयी है और न ही विक्षेपी है। सात अलौकिक अवस्थाओं में से एक है; अंतिम अलौकिक अवस्था में से एक है; न तो सात अलौकिक अवस्थाओं में से एक है और न ही अंतिम अलौकिक अवस्था में से एक है। निम्न है; उदात्त है; अतुलनीय है। निम्न उद्देश्य रखता है; उदात्त उद्देश्य रखता है; अतुलनीय

उद्देश्य रखता है। निम्न है; मध्यवर्ती है; श्रेष्ठ है। एक निश्चित (परिणामी समय) वाली झूठी (अवस्था) है; एक निश्चित (परिणामी समय) वाली सही (अवस्था) है; कोई निश्चित (परिणामी समय) नहीं है। पथ को अपना उद्देश्य मानता है; पथ को अपना कारण मानता है; पथ को अपना प्रमुख कारक मानता है। उत्पन्न हुआ है; उत्पन्न नहीं हुआ है; उत्पन्न होना ही है। भूतकाल है; भविष्यकाल है; वर्तमानकाल है। भूतकाल का उद्देश्य रखता है; भविष्यकाल का उद्देश्य रखता है; वर्तमानकाल का उद्देश्य रखता है। आंतरिक है; बाह्य है; आंतरिक और बाह्य दोनों है। आंतरिक उद्देश्य रखता है; बाह्य उद्देश्य रखता है;

26

आंतरिक और बाह्य दोनों वस्तुएँ। :P: इस प्रकार दस गुना विभाजन द्वारा भावना का समुच्चय होता है।
पी — पैराग्राफ 34 देखें।

42. एकल विभाजन के माध्यम से भावना का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।
भावना का द्विभाजन: मूल से संबंधित; मूल से संबंधित नहीं। मूल नहीं, मूल के साथ; मूल नहीं, मूल के साथ नहीं। सांसारिक; अलौकिक। एक मार्ग से ज्ञात; दूसरे मार्ग से ज्ञात नहीं। दोषों का विषय; दोषों का विषय नहीं। दोषों से संबंधित; दोषों से संबंधित नहीं। दोषों से संबंधित नहीं, दोषों का विषय; दोषों से संबंधित नहीं, दोषों का विषय नहीं। बंधनों का विषय; बंधनों का विषय नहीं। विलाप का कारण; विलाप का कारण नहीं।
पी — पैराग्राफ 36 देखें।
तीन प्रकार से विभाजित करने पर, भावना का सार इस प्रकार है: आंतरिक वस्तु; बाह्य वस्तु; आंतरिक और बाह्य दोनों वस्तुएँ। :P: इसी प्रकार दस प्रकार से विभाजित करने पर भावना का सार इस प्रकार है।
P = अनुच्छेद 34 देखें।
(यह खंड यहीं समाप्त होता है) त्रिक पर आधारित
43. एकल विभाजन के माध्यम से भावना का कुल योग; संपर्क से जुड़ा है।
दो भागों में विभाजित भावना का समूह: मूल के साथ है; मूल के साथ नहीं है।
तीन भागों में विभाजित करके भावनाओं का समूह: अच्छा है; बुरा है; न अच्छा है न बुरा। :P: इसी प्रकार दस भागों में विभाजित करके भावनाओं का समूह बनता है।
P = अनुच्छेद 34 देखें।

44. एकल विभाजन के माध्यम से भावना का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।
दो भागों में विभाजित भावना का समूह: मूल से जुड़ा है; मूल से जुड़ा नहीं है। [22]

27

तीन प्रकार से विभाजित करने पर, भावना का कुल योग इस प्रकार है: परिणामी; परिणामी उत्पन्न करता है; न तो परिणामी है और न ही परिणामी उत्पन्न करता है। :P: इसी प्रकार दस प्रकार से विभाजित करने पर भावना का कुल योग इस प्रकार है।
P = अनुच्छेद 34 देखें।
45. एकल विभाजन के माध्यम से भावना का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।
दो भागों में विभाजित करके भावनाओं का समूह: मूल नहीं है, मूल के साथ है; मूल नहीं है, मूल के साथ नहीं है।
तीन प्रकार से विभाजित करने पर, भावों का समूह इस प्रकार है: जो भाव ग्रहण किया जाता है, वह आसक्तियों का विषय होता है; जो भाव ग्रहण नहीं किया जाता, वह आसक्तियों का विषय होता है; जो भाव ग्रहण नहीं किया जाता, वह आसक्तियों का विषय नहीं होता। इसी प्रकार, दस प्रकार से विभाजित करने पर भावों का समूह इस प्रकार है।
P = अनुच्छेद 34 देखें।
46. एकल विभाजन के माध्यम से भावना का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।

दो भागों में विभाजित करके भावनाओं का समूह: सांसारिक; अलौकिक।
तीन प्रकार से विभाजित करने पर, भावना का सार यह है: भ्रष्ट है, भ्रष्टता का विषय है; भ्रष्ट नहीं है, भ्रष्टता का विषय है; भ्रष्ट नहीं है, भ्रष्टता का विषय नहीं है। इसी प्रकार, दस प्रकार से विभाजित करने पर भावना का सार यह है।
P = अनुच्छेद 34 देखें।
47. एकल विभाजन के माध्यम से भावना का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।
दो भागों में विभाजित भावना का समूह: एक तरीके से पहचाना जा सकता है; दूसरे तरीके से नहीं पहचाना जा सकता है।
भावना का समग्र रूप से तीन भागों में विभाजन: प्रारंभिक अनुप्रयोग के साथ, निरंतर अनुप्रयोग के साथ; प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, केवल निरंतर अनुप्रयोग के साथ; प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, निरंतर अनुप्रयोग के बिना।
पी: इस प्रकार दस गुना विभाजन के माध्यम से भावनाओं का कुल योग प्राप्त होता है।
P = अनुच्छेद 34 देखें।
48. एकल विभाजन के माध्यम से भावना का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।
4*

28

दो प्रकार से विभाजित भावों का समूह; दोषों का विषय है; दोषों का विषय नहीं है। [23] तीन प्रकार से विभाजित भावों का समूह: प्रथम मार्ग द्वारा त्यागा जाना है; पश्चात मार्गों द्वारा त्यागा जाना है; न तो प्रथम मार्ग द्वारा और न ही पश्चात मार्गों द्वारा त्यागा जाना है। : P : इस प्रकार दस प्रकार से विभाजित भावों का समूह है।
P = अनुच्छेद 34 देखें।

49. एकल विभाजन के माध्यम से भावना का कुल योग; संपर्क से जुड़ा है।
दो भागों में विभाजित भावना का समूह: दोषों से जुड़ा हुआ है; दोषों से जुड़ा हुआ नहीं है।
तीन प्रकार से विभाजित भावों का सार: प्रथम मार्ग द्वारा त्यागा जाने वाला मूल; पश्चात मार्गों द्वारा त्यागा जाने वाला मूल; और प्रथम या पश्चात मार्गों द्वारा त्यागा जाने वाला कोई मूल नहीं। : P : इसी प्रकार दस प्रकार से विभाजित भावों का सार है।
P = अनुच्छेद 34 देखें।

50. एकल विभाजन के माध्यम से भावना का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।
दो प्रकार से विभाजित भावना का समूह: दोषों से संबद्ध नहीं है, दोषों का विषय है; दोषों से संबद्ध नहीं है, दोषों का विषय नहीं है।
तीन प्रकार से विभाजित करने पर, भावनाओं का कुल योग: संचयी होता है; विक्षेपी होता है; न तो संचयी होता है और न ही विक्षेपी होता है।
पी: इस प्रकार दस गुना विभाजन के माध्यम से भावनाओं का कुल योग प्राप्त होता है।
P = अनुच्छेद 34 देखें।

51. एकल विभाजन के माध्यम से भावना का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।
दो भागों में विभाजित भावना का समूह: बेड़ियों का विषय है; बेड़ियों का विषय नहीं है।
तीन भागों में विभाजित भावना का समग्र रूप: सात अलौकिक अवस्थाओं का है; अंतिम अलौकिक अवस्था का है; न तो सात अलौकिक अवस्थाओं का है और न ही अंतिम अवस्था का।

कुल योगों का विश्लेषण 29
अलौकिक अवस्था। :P; इस प्रकार दस गुना विभाजन द्वारा भावना का समुच्चय होता है।
P = अनुच्छेद 34 देखें।

52. एकल विभाजन के माध्यम से भावना का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।
दोहरे विभाजन के माध्यम से भावना का कुल योग: बेड़ियों से जुड़ा है; बेड़ियों से जुड़ा नहीं है। [24]
तीन भागों में विभाजित करने पर भावों का कुल योग इस प्रकार है: निम्न; उदात्त; असीम। :P: इसी प्रकार दस भागों में विभाजित करने पर भावों का कुल योग इस प्रकार है।
P = अनुच्छेद 34 देखें।

53. एकल विभाजन के माध्यम से भावना का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।
दो भागों में विभाजित भावना का समूह: बंधनों से संबद्ध नहीं है, बंधनों का विषय है; बंधनों से संबद्ध नहीं है, बंधनों का विषय नहीं है।
तीन प्रकार से विभाजित करने पर, भावों का सार इस प्रकार है: निम्न विषय, उच्च विषय और असीम विषय। :P: इसी प्रकार दस प्रकार से विभाजित करने पर भावों का सार इस प्रकार है।
P = अनुच्छेद 34 देखें।

54. एकल विभाजन के माध्यम से भावना का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।
दो भागों में विभाजित भावना का समूह: संबंधों का विषय है; संबंधों का विषय नहीं है।
तीन भागों में विभाजित करके भावनाओं का समूह इस प्रकार है: निम्न; मध्य; श्रेष्ठ। :P: इसी प्रकार दस भागों में विभाजित करके भावनाओं का समूह इस प्रकार है।
पी — पैराग्राफ 34 देखें।

S^. एकल विभाजन के माध्यम से भावना का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।
दो भागों में विभाजित भावना का समग्र रूप: संबंधों से जुड़ा हुआ; संबंधों से जुड़ा हुआ नहीं।
तीन भागों में विभाजित भावना का कुल योग: एक निश्चित (परिणामी समय के साथ) झूठी (अवस्था) है; एक निश्चित (परिणामी समय के साथ) सही (अवस्था) है।
30
(परिणामी समय); इसका कोई निश्चित (परिणामी समय) नहीं है। :P: इस प्रकार दस गुना विभाजन द्वारा भावना का कुल योग होता है।
P = अनुच्छेद 34 देखें।

56. एकल विभाजन के माध्यम से भावना का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।
दो भागों में विभाजित भावना का कुल योग: संबंधों से जुड़ा नहीं है, संबंधों का विषय है; संबंधों से जुड़ा नहीं है, संबंधों का विषय नहीं है। [25].
तीन भागों में विभाजित भावों का समूह: पथ को अपना लक्ष्य मानता है; पथ को अपना कारण मानता है; पथ को अपना प्रमुख कारक मानता है। :P: इसी प्रकार दस भागों में विभाजित भावों का समूह है।
P = अनुच्छेद 34 देखें।

57. एकल विभाजन के माध्यम से भावना का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।
दो भागों में विभाजित भावना का समूह: क्या यह बाढ़ का विषय है; क्या यह बाढ़ का विषय नहीं है।
तीन प्रकार से विभाजित करने पर भावों का समूह: उत्पन्न हुआ है; उत्पन्न नहीं हुआ है; उत्पन्न होना ही है। इसी प्रकार दस प्रकार से विभाजित करने पर भावों का समूह बनता है।
P = अनुच्छेद 34 देखें।

58. एकल विभाजन के माध्यम से भावना का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।
दो भागों में विभाजित करके भावनाओं का समूह: बाढ़ से संबंधित है; बाढ़ से संबंधित नहीं है।

तीन भागों में विभाजित करके भावनाओं का समूह: भूतकाल; भविष्यकाल; वर्तमानकाल। इसी प्रकार दस भागों में विभाजित करके भावनाओं का समूह बनता है।
P = अनुच्छेद 34 देखें।
59. एकल विभाजन के माध्यम से भावना का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।
दो भागों में विभाजित भावना का समूह: बाढ़ से संबंधित नहीं है, बाढ़ का विषय है; बाढ़ से संबंधित नहीं है, बाढ़ का विषय नहीं है।

31

तीन भागों में विभाजित करके भावनाओं का समूह: भूतकाल का कर्म, भविष्यकाल का कर्म, वर्तमान काल का कर्म। :P: इसी प्रकार दस भागों में विभाजित करके भावनाओं का समूह बनता है।
P = अनुच्छेद 34 देखें।
60. एकल विभाजन के माध्यम से भावना का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।
दोहरे विभाजन के माध्यम से भावना का कुल योग: बंधनों का विषय है; बंधनों का विषय नहीं है। [26].
तीन भागों में विभाजित करके भावनाओं का समूह: आंतरिक; बाह्य; आंतरिक और बाह्य दोनों। :P: इसी प्रकार दस भागों में विभाजित करके भावनाओं का समूह कहा जा सकता है।
P = अनुच्छेद 34 देखें।
61. एकल विभाजन के माध्यम से भावना का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।
दो भागों में विभाजित भावना का समूह: बंधनों से जुड़ा है; बंधनों से जुड़ा नहीं है।
तीन प्रकार से विभाजित करने पर, भावना का सार इस प्रकार है: आंतरिक वस्तु; बाह्य वस्तु; आंतरिक और बाह्य दोनों वस्तुएँ। :P: इसी प्रकार दस प्रकार से विभाजित करने पर भावना का सार इस प्रकार है।
P = अनुच्छेद 34 देखें।
(यहाँ पारस्परिक वृद्धि का खंड समाप्त होता है)
भावों का सात भागों में विभाजन इस प्रकार है: अच्छा है; बुरा है; न अच्छा है न बुरा; इच्छा के तल का लक्षण है; रूप के तल का लक्षण है; निराकार तल का लक्षण है; और इसमें शामिल नहीं है (अर्थात् यह सांसारिक से परे है)। इस प्रकार भावों का सात भागों में विभाजन इस प्रकार है।
सात प्रकार के विभाजन द्वारा भावों का समग्र रूप: परिणामी है; इसमें आंतरिक वस्तु होती है; इसमें बाह्य वस्तु होती है; इसमें आंतरिक और बाह्य दोनों वस्तुएँ होती हैं; यह इच्छा के तल की विशेषता है; यह रूप के तल की विशेषता है; यह निराकार तल की विशेषता है; यह इसमें शामिल नहीं है (अर्थात् यह अलौकिक है)। इस प्रकार, सात प्रकार के विभाजन द्वारा भावों का समग्र रूप प्राप्त होता है।
P = अनुच्छेद 35 देखें।

32

भावनाओं का चौबीस भागों में विभाजन: आँखों के संपर्क से उत्पन्न भावनाएँ अच्छी होती हैं; बुरी होती हैं; न अच्छी होती हैं न बुरी। कानों के संपर्क से उत्पन्न भावनाएँ। नाक के संपर्क से उत्पन्न भावनाएँ। जीभ के संपर्क से उत्पन्न भावनाएँ। शरीर के संपर्क से उत्पन्न भावनाएँ। मन के संपर्क से उत्पन्न भावनाएँ अच्छी होती हैं; बुरी होती हैं; न अच्छी होती हैं न बुरी। इस प्रकार, भावनाओं का चौबीस भागों में विभाजन किया गया है।
P = प्रत्येक को पहले उदाहरण के अनुसार पूरा करें।
चौबीस गुना विभाजन के एक अन्य तरीके से भावना का कुल योग: [27]। आँख के संपर्क से उत्पन्न भावना का कुल योग परिणामी है; : P 1 : इसमें आंतरिक वस्तु है; इसमें बाहरी वस्तु है; इसमें आंतरिक और बाहरी दोनों वस्तुएँ हैं। कान के संपर्क से उत्पन्न भावना का कुल योग। :P 2 : नाक के संपर्क से उत्पन्न भावना का कुल योग।
पृष्ठ 2: जीभ के संपर्क से उत्पन्न संवेदनाओं का समूह। पृष्ठ 2:

शारीरिक संपर्क से उत्पन्न भावनाओं का समूह। :P 2 : मन के संपर्क से उत्पन्न भावनाओं का समूह परिणामी होता है; :P a : आंतरिक वस्तु होती है; बाह्य वस्तु होती है; आंतरिक और बाह्य दोनों वस्तुएँ होती हैं। नेत्र संपर्क से उत्पन्न भावना; :P 3 : मन के संपर्क से उत्पन्न भावना। इस प्रकार चौबीस भागों में विभाजित करके भावनाओं का समूह बनता है।
P^पैरा 35 देखें। P 2 = प्रत्येक को पहले उदाहरण के अनुसार पूरा करें।
P 3 = मध्यवर्ती इंद्रियां।
तीस भागों में विभाजित करके भावनाओं का समूह: नेत्र संपर्क से उत्पन्न भावनाओं का समूह इच्छा के तल की विशेषता है; रूप के तल की विशेषता है; निराकार तल की विशेषता है; इसमें शामिल नहीं है (अर्थात् यह सांसारिक से परे है)। कान के संपर्क से उत्पन्न भावनाएँ। नाक के संपर्क से उत्पन्न भावनाएँ। जीभ के संपर्क से उत्पन्न भावनाएँ। शरीर के संपर्क से उत्पन्न भावनाएँ। मन के संपर्क से उत्पन्न भावनाओं का समूह इच्छा के तल की विशेषता है; रूप के तल की विशेषता है; निराकार तल की विशेषता है; इसमें शामिल नहीं है (अर्थात् यह सांसारिक से परे है)। नेत्र संपर्क से उत्पन्न भावना; कान के संपर्क से उत्पन्न भावना; नाक के संपर्क से उत्पन्न भावना; जीभ के संपर्क से उत्पन्न भावना; शरीर के संपर्क से उत्पन्न भावना; मन के संपर्क से उत्पन्न भावना। इस प्रकार तीस भागों में विभाजित करके भावनाओं का समूह बनता है।
P = प्रत्येक को पहले उदाहरण के अनुसार पूरा करें।

33

अनेक प्रकार से विभाजित भावों का समूह: नेत्र संपर्क से उत्पन्न भाव अच्छे होते हैं; बुरे होते हैं; न अच्छे होते हैं न बुरे; इच्छा के तल के लक्षण होते हैं; रूप के तल के लक्षण होते हैं; निराकार तल के लक्षण होते हैं; इसमें शामिल नहीं होते (अर्थात् सांसारिक से परे होते हैं)। कान संपर्क से उत्पन्न भाव। नाक संपर्क से उत्पन्न भाव। जीभ संपर्क से उत्पन्न भाव। शरीर संपर्क से उत्पन्न भाव। मन संपर्क से उत्पन्न भाव अच्छे होते हैं; बुरे होते हैं; न अच्छे होते हैं न बुरे; इच्छा के तल के लक्षण होते हैं; रूप के तल के लक्षण होते हैं; निराकार तल के लक्षण होते हैं; इसमें शामिल नहीं होते (अर्थात् सांसारिक से परे होते हैं)। नेत्र संपर्क से उत्पन्न भाव; कान संपर्क से उत्पन्न भाव; नाक संपर्क से उत्पन्न भाव; जीभ संपर्क से उत्पन्न भाव; शरीर संपर्क से उत्पन्न भाव; मन संपर्क से उत्पन्न भाव। इस प्रकार अनेक प्रकार से विभाजित भावों का समूह है।
P = प्रत्येक को पहले उदाहरण के अनुसार पूरा करें।
अनेक प्रकार के विभाजन द्वारा भावनाओं का कुल योग: आंखों के संपर्क से उत्पन्न भावनाओं का कुल योग परिणामी होता है;
P*: इसमें आंतरिक वस्तु है; इसमें बाह्य वस्तु है; इसमें आंतरिक और बाह्य दोनों वस्तुएँ हैं
बाह्य वस्तु; इच्छा के तल की विशेषता है; रूप के तल की विशेषता है; निराकार तल की विशेषता है; इसमें शामिल नहीं है (अर्थात् यह अलौकिक है)। कान के संपर्क से उत्पन्न संवेदनाओं का समूह। :P 2 : नाक के संपर्क से उत्पन्न संवेदनाओं का समूह। :P 2 : जीभ के संपर्क से उत्पन्न संवेदनाओं का समूह। :P 2 : शरीर के संपर्क से उत्पन्न संवेदनाओं का समूह।
पृष्ठ 2: मन के संपर्क से उत्पन्न होने वाली भावनाओं का कुल योग परिणामी होता है;
P*: [28] में आंतरिक वस्तु है; बाह्य वस्तु है; आंतरिक वस्तु दोनों हैं
बाह्य वस्तु; इच्छा के तल की विशेषता; रूप के तल की विशेषता; निराकार तल की विशेषता; इसमें शामिल नहीं है (अर्थात् यह अलौकिक है)। नेत्र संपर्क से उत्पन्न भावना; कान संपर्क से उत्पन्न भावना; नाक संपर्क से उत्पन्न भावना; जीभ संपर्क से उत्पन्न भावना; शरीर संपर्क से उत्पन्न भावना; मन संपर्क से उत्पन्न भावना। इस प्रकार अनेक विभाजनों द्वारा भावना का समूह बनता है।
पृष्ठ 1 = पैराग्राफ 35 देखें। पृष्ठ 2 — प्रत्येक को पहले उदाहरण के अनुसार पूरा करें।

इसे भावनाओं का समूह कहा जाता है।

34

3. धारणाओं का समग्र योग
62. उसमें बोध का समुच्चय क्या है? एकल विभाजन द्वारा बोध का समुच्चय: संपर्क से जुड़ा है।

धारणा का समग्र विभाजन: मूल शब्द के साथ होता है; मूल शब्द के साथ नहीं होता है।

धारणा का समग्र रूप से तीन भागों में विभाजन: अच्छा है; बुरा है; न अच्छा है न बुरा।

चार प्रकार के विभाजन द्वारा बोध का समग्र रूप: इच्छा के तल की विशेषता है; रूप के तल की विशेषता है; निराकार तल की विशेषता है; इसमें शामिल नहीं है (अर्थात् यह अलौकिक है)।

पांच भागों में विभाजित करके बोध का समग्र रूप इस प्रकार है: यह सुख (शारीरिक) की नियंत्रक शक्ति से संबंधित है; यह दुख (शारीरिक) की नियंत्रक शक्ति से संबंधित है; यह मानसिक सुख की नियंत्रक शक्ति से संबंधित है; यह मानसिक दुख की नियंत्रक शक्ति से संबंधित है; और यह उदासीनता की नियंत्रक शक्ति से संबंधित है। इस प्रकार, पांच भागों में विभाजित करके बोध का समग्र रूप इस प्रकार है।

छह भागों में विभाजित करके बोध का सार प्रस्तुत किया जाता है: नेत्र संपर्क से उत्पन्न बोध; कान संपर्क से उत्पन्न बोध; नाक संपर्क से उत्पन्न बोध; जीभ संपर्क से उत्पन्न बोध; शरीर संपर्क से उत्पन्न बोध; मन संपर्क से उत्पन्न बोध। इस प्रकार, छह भागों में विभाजित करके बोध का सार प्रस्तुत किया जाता है।

सात भागों में विभाजित करके बोध का सार प्रस्तुत किया जाता है: नेत्र संपर्क से उत्पन्न बोध; कान संपर्क से उत्पन्न बोध; नाक संपर्क से उत्पन्न बोध; जीभ संपर्क से उत्पन्न बोध; शरीर संपर्क से उत्पन्न बोध; मन-तत्व संपर्क से उत्पन्न बोध; मन-चेतना-तत्व संपर्क से उत्पन्न बोध। इस प्रकार सात भागों में विभाजित बोध का सार प्रस्तुत किया जाता है।

आठ भागों में विभाजित करके बोध का सार प्रस्तुत किया जाता है: नेत्र संपर्क से उत्पन्न बोध; सुख और पीड़ा से ग्रस्त शारीरिक संपर्क से उत्पन्न बोध; मन-तत्व-संपर्क से उत्पन्न बोध; मन-चेतना-तत्व-संपर्क से उत्पन्न बोध। इस प्रकार आठ भागों में विभाजित करके बोध का सार प्रस्तुत किया जाता है।

P = मध्यवर्ती इंद्रियां।

35

नौ भागों में विभाजित करके बोध का सार प्रस्तुत किया जाता है: नेत्र संपर्क से उत्पन्न बोध; शारीरिक संपर्क से उत्पन्न बोध; मन-तत्व संपर्क से उत्पन्न बोध; मन-चेतना-तत्व संपर्क से उत्पन्न बोध, जो अच्छा है, जो बुरा है, जो न अच्छा है न बुरा। इस प्रकार नौ भागों में विभाजित करके बोध का सार प्रस्तुत किया जाता है।

P = मध्यवर्ती इंद्रियां।

दस गुना विभाजन द्वारा बोध का कुल योग: नेत्र संपर्क से उत्पन्न बोध; :पी: सुख के साथ शारीरिक संपर्क से उत्पन्न बोध, दर्द के साथ शारीरिक संपर्क से उत्पन्न बोध; मन-तत्व-संपर्क से उत्पन्न बोध; मन-चेतना-तत्व-संपर्क से उत्पन्न बोध जो अच्छा है, जो बुरा है, जो न अच्छा है न बुरा। इस प्रकार दस गुना विभाजन द्वारा बोध का कुल योग है। [29].

P = मध्यवर्ती इंद्रियां।

63. एकल विभाजन द्वारा बोध का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।

धारणा का समग्र विभाजन: मूल तत्व के साथ होता है; मूल तत्व के साथ नहीं होता है।

तीन भागों में विभाजित करके बोध का कुल योग: सुखद अनुभूति से संबंधित; पीड़ादायक अनुभूति से संबंधित; न पीड़ादायक और न ही सुखद अनुभूति से संबंधित। : P : इसी प्रकार दस भागों में विभाजित करके बोध का कुल योग प्राप्त होता है।

P = अनुच्छेद 62 देखें।

64. एकल विभाजन द्वारा बोध का समुच्चय: संपर्क से जुड़ा है।

धारणा का समग्र विभाजन: मूल तत्व के साथ होता है; मूल तत्व के साथ नहीं होता है।

तीन प्रकार से विभाजित करके बोध का समग्र रूप: परिणामी है; परिणामी उत्पन्न करता है; न तो परिणामी है और न ही परिणामी उत्पन्न करता है। (लालसा और भ्रामक दृष्टि से) ग्रहण किया जाता है, आसक्तियों का विषय होता है; ग्रहण नहीं किया जाता है, आसक्तियों का विषय होता है; ग्रहण नहीं किया जाता है, आसक्तियों का विषय नहीं होता है। भ्रष्ट है, भ्रष्टताओं का विषय होता है; भ्रष्ट नहीं है, भ्रष्टताओं का विषय होता है; भ्रष्ट नहीं है, भ्रष्टताओं का विषय नहीं होता है। प्रारंभिक अनुप्रयोग के साथ होता है,

36

निरंतर अभ्यास से; प्रारंभिक अभ्यास के बिना, केवल निरंतर अभ्यास से; प्रारंभिक अभ्यास के बिना, निरंतर अभ्यास के बिना। उत्साह से युक्त; आनंद से युक्त; उदासीनता से युक्त। प्रथम मार्ग द्वारा त्यागा जाना है; पश्चात मार्गों द्वारा त्यागा जाना है; न तो प्रथम मार्ग द्वारा और न ही पश्चात मार्गों द्वारा त्यागा जाना है। प्रथम मार्ग द्वारा त्यागा जाने वाला मूल है; पश्चात मार्गों द्वारा त्यागा जाने वाला मूल है; न तो प्रथम मार्ग द्वारा और न ही पश्चात मार्गों द्वारा त्यागा जाने वाला कोई मूल नहीं है। संचयी है (पुनर्जन्म और मृत्यु का निरंतर चक्र); विक्षेपी है; न तो संचयी है और न ही विक्षेपी। सात अलौकिक अवस्थाओं में से एक है; अंतिम अलौकिक अवस्था में से एक है; न तो सात अलौकिक अवस्थाओं में से एक है और न ही अंतिम अलौकिक अवस्था में से एक है। निम्न है; उदात्त है; अतुलनीय है। निम्न उद्देश्य है; उदात्त उद्देश्य है; अतुलनीय उद्देश्य है। निम्न है; मध्यवर्ती है; श्रेष्ठ है। एक निश्चित (परिणामी समय) के साथ एक झूठी (अवस्था) है; यह एक निश्चित (परिणामी समय) वाली सही (अवस्था) है; इसका कोई निश्चित (परिणामी समय) नहीं है। इसका लक्ष्य पथ है; इसका कारण पथ है; इसका प्रमुख कारक पथ है। यह उत्पन्न हुआ है; यह उत्पन्न नहीं हुआ है; यह उत्पन्न होने के लिए बाध्य है। यह भूतकाल है; यह भविष्यकाल है; यह वर्तमान काल है। इसका भूतकाल का लक्ष्य है; इसका भविष्यकाल का लक्ष्य है; इसका वर्तमान काल का लक्ष्य है। यह आंतरिक है; यह बाह्य है; यह आंतरिक और बाह्य दोनों है। इसका आंतरिक लक्ष्य है; इसका बाह्य लक्ष्य है; इसका आंतरिक और बाह्य दोनों लक्ष्य हैं। :P: इस प्रकार दस गुना विभाजन द्वारा बोध का समुच्चय है।
P = अनुच्छेद 62 देखें।
65. एकल विभाजन द्वारा बोध का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।
दो भागों में विभाजित करके बोध का समग्र रूप: मूल से संबंधित; मूल से संबंधित नहीं। मूल नहीं, मूल के साथ; मूल नहीं, मूल के साथ नहीं। सांसारिक; अलौकिक। एक मार्ग से बोधगम्य; दूसरे मार्ग से बोधगम्य नहीं। दोषों का विषय; दोषों का विषय नहीं। दोषों से संबंधित; दोषों से संबंधित नहीं। [30] दोषों से संबंधित नहीं, दोषों का विषय; दोषों से संबंधित नहीं, दोषों का विषय नहीं। बंधनों का विषय; बंधनों का विषय नहीं। बंधनों से संबंधित; बंधनों का विषय नहीं। बंधनों का विषय;

37

संबंधों का उद्देश्य। संबंधों से जुड़ा है, संबंधों से जुड़ा नहीं है। संबंधों से जुड़ा नहीं है, संबंधों का उद्देश्य है; संबंधों से जुड़ा नहीं है, संबंधों का उद्देश्य नहीं है। बाढ़ का उद्देश्य है; बाढ़ का उद्देश्य नहीं है। बाढ़ से जुड़ा है; बाढ़ से जुड़ा नहीं है। बाढ़ से जुड़ा नहीं है, बाढ़ का उद्देश्य है; बाढ़ से जुड़ा नहीं है, बाढ़ का उद्देश्य नहीं है। बंधनों का उद्देश्य है; बंधनों का उद्देश्य नहीं है। बंधनों से जुड़ा है; बंधनों से जुड़ा नहीं है। बंधनों से जुड़ा नहीं है, बंधनों का उद्देश्य है; बंधनों से जुड़ा नहीं है, बंधनों का उद्देश्य नहीं है। बाधाओं का उद्देश्य है; बाधाओं का उद्देश्य नहीं है। बाधाओं से जुड़ा है; बाधाओं से जुड़ा नहीं है। बाधाओं से जुड़ा नहीं है, बाधाओं का उद्देश्य है; बाधाओं से संबद्ध नहीं है, बाधाओं का विषय नहीं है। विकृतियों का विषय है; विकृतियों का विषय नहीं है। विकृतियों से संबद्ध है; विकृतियों से संबद्ध नहीं है। विकृतियों से संबद्ध नहीं है, विकृतियों का विषय है; विकृतियों से संबद्ध नहीं है, विकृतियों का विषय नहीं है। बोधित है; बोधित नहीं है। आसक्ति का विषय है; आसक्ति का विषय नहीं है। आसक्ति से संबद्ध है; आसक्ति से संबद्ध नहीं है। आसक्ति से संबद्ध नहीं है, आसक्ति का विषय है; आसक्ति से संबद्ध नहीं है, आसक्ति का विषय नहीं है। भ्रष्टाचार का विषय है; भ्रष्टाचार का विषय नहीं है। भ्रष्ट है; भ्रष्ट नहीं है। भ्रष्टाचार से संबद्ध है; भ्रष्टाचार से संबद्ध नहीं है। भ्रष्टाचार से संबद्ध नहीं है, भ्रष्टाचार का विषय है; भ्रष्टाचार से संबद्ध नहीं है, भ्रष्टाचार का विषय नहीं है। क्या इसे पहले मार्ग द्वारा त्यागा जाना है; क्या इसे पहले मार्ग द्वारा नहीं त्यागा जाना है। क्या इसे बाद के मार्गों द्वारा त्यागा जाना है; क्या इसे बाद के मार्गों द्वारा नहीं त्यागा जाना है। क्या इसका मूल पहले मार्ग द्वारा त्यागा जाना है; क्या इसका मूल पहले मार्ग द्वारा त्यागा जाना नहीं है। क्या इसका मूल बाद के मार्गों द्वारा त्यागा जाना है; क्या इसका मूल बाद के मार्गों द्वारा त्यागा जाना नहीं है। क्या यह प्रारंभिक प्रयास के साथ है; क्या यह प्रारंभिक प्रयास के बिना है। क्या यह निरंतर प्रयास के साथ है; क्या यह निरंतर प्रयास के बिना है। क्या इसमें उत्साह है; क्या इसमें उत्साह नहीं है। क्या यह उत्साह के साथ है; क्या इसमें उत्साह नहीं है। क्या यह आनंद के साथ है; क्या इसमें आनंद नहीं है। क्या यह उदासीनता के साथ है; क्या यह उदासीनता के साथ नहीं है।

38

उदासीनता के साथ। इच्छा के तल का लक्षण है; इच्छा के तल का लक्षण नहीं है। रूप के तल का लक्षण है; रूप के तल का लक्षण नहीं है। निराकार तल का लक्षण है; निराकार तल का लक्षण नहीं है। समाहित है (अर्थात सांसारिक है); समाहित नहीं है (अर्थात अलौकिक है) [31]। मुक्ति की ओर प्रवृत्त है; मुक्ति की ओर प्रवृत्त नहीं है। निश्चित (परिणामी समय) का है; निश्चित (परिणामी समय) का नहीं है। पार किया जा सकता है; पार नहीं किया जा सकता है। विलाप का कारण है; विलाप का कारण नहीं है।

तीन भागों में विभाजित करके बोध का कुल योग: अच्छा है; बुरा है; न अच्छा है न बुरा। इसी प्रकार दस भागों में विभाजित करके बोध का कुल योग प्राप्त होता है।

P = अनुच्छेद 62 देखें।

66. एकल विभाजन द्वारा बोध का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।

धारणा का समग्र विभाजन दो प्रकार से किया जाता है: शोक का कारण है; शोक का कारण नहीं है।

तीन प्रकार से विभाजित करके बोध का समग्र रूप: सुखद अनुभूति से संबंधित; पीड़ादायक अनुभूति से संबंधित; न पीड़ादायक और न ही सुखद अनुभूति से संबंधित। परिणामी; : P 1 : आंतरिक वस्तु है; बाह्य वस्तु है; आंतरिक और बाह्य दोनों वस्तुएँ हैं। :P 2 : इस प्रकार दस प्रकार से विभाजित करके बोध का समग्र रूप है।

पी 1 = पैरा देखें। 64. पी 2 = पैरा देखें। 62.

[जैसा कि अच्छे त्रिक (Dhs.) में समझाया गया है; वैसे ही सभी को भी करना चाहिए]

त्रिक के बारे में बताया जाए]।

(यह खंड यहीं समाप्त होता है) दोहों पर आधारित

67. एकल विभाजन द्वारा बोध का समुच्चय: संपर्क से जुड़ा है।

धारणा का समग्र विभाजन: मूल तत्व के साथ होता है; मूल तत्व के साथ नहीं होता है।

तीन गुना विभाजन द्वारा बोध का कुल योग: अच्छा है; बुरा है; न अच्छा है न बुरा। :P: इस प्रकार दस गुना विभाजन द्वारा बोध का कुल योग है। [32]

P = अनुच्छेद 62 देखें।

39

68. एकल विभाजन द्वारा बोध का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।

धारणा का समग्र विभाजन दो भागों में किया जा सकता है: मूल से संबंधित; मूल से संबंधित नहीं। विलाप का कारण है; विलाप का कारण नहीं है।

P = अनुच्छेद 65 देखें।

तीन भागों में विभाजित करके बोध का सार: अच्छा है; बुरा है; न अच्छा है न बुरा। :P दस भागों में विभाजित करके बोध का सार यही है।

P = अनुच्छेद 62 देखें।

69. एकल विभाजन द्वारा बोध का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।

धारणा का समग्र विभाजन: मूल तत्व के साथ होता है; मूल तत्व के साथ नहीं होता है।

तीन प्रकार से विभाजित करके बोध का समग्र रूप: सुखद अनुभूति से संबंधित; पीड़ादायक अनुभूति से संबंधित; न पीड़ादायक और न ही सुखद अनुभूति से संबंधित। परिणामी; rP 1: आंतरिक वस्तु है; बाह्य वस्तु है; आंतरिक और बाह्य दोनों वस्तुएँ हैं। :P 2: इस प्रकार दस प्रकार से विभाजित करके बोध का समग्र रूप है।

पी^पैरा देखें. 64. पी 2=पैरा देखें। 62.

7. एकल विभाजन के माध्यम से धारणा का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।

धारणा का समग्र विभाजन: मूल से जुड़ा है; मूल से जुड़ा नहीं है। :पी: विलाप के कारण के साथ है; विलाप के कारण के बिना है। [33]

P = अनुच्छेद 65 देखें।

तीन प्रकार से विभाजित करके बोध का समग्र रूप: rP 1 : इसमें आंतरिक वस्तु है; इसमें बाह्य वस्तु है; इसमें आंतरिक और बाह्य दोनों वस्तुएँ हैं। : P 2 : इसी प्रकार दस प्रकार से विभाजित करके बोध का समग्र रूप है।
P' = कुछ ग्रंथों में यह शामिल नहीं है :P: P 2 = पैराग्राफ 62 देखें।

(यह खंड यहीं समाप्त होता है) त्रिक पर आधारित

40

71. एकल विभाजन द्वारा बोध का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।
धारणा का समग्र विभाजन: मूल तत्व के साथ होता है; मूल तत्व के साथ नहीं होता है।
तीन भागों में विभाजित करके बोध का सार: अच्छा है; बुरा है; न अच्छा है न बुरा। :P दस भागों में विभाजित करके बोध का सार यही है।
P = अनुच्छेद 62 देखें।

72. एकल विभाजन द्वारा बोध का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।
धारणा का कुल योग दो भागों में विभाजित किया गया है: मूल से संबंधित है; मूल से संबंधित नहीं है।
तीन भागों में विभाजित करके बोध का कुल योग इस प्रकार है: सुखद अनुभूति से संबंधित; पीड़ादायक अनुभूति से संबंधित; न पीड़ादायक और न ही सुखद अनुभूति से संबंधित। :P: इसी प्रकार दस भागों में विभाजित करके बोध का कुल योग इस प्रकार है।
पी — पैराग्राफ 62 देखें।

73. एकल विभाजन द्वारा बोध का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।
धारणा का समग्र विभाजन इस प्रकार है: मूल नहीं है, मूल के साथ है; मूल नहीं है, मूल के साथ नहीं है।
तीन गुना विभाजन द्वारा बोध का कुल योग: परिणामी है; परिणामी का उत्पादक है; न तो परिणामी है और न ही परिणामी का उत्पादक है। :P: इस प्रकार दस गुना विभाजन द्वारा बोध का कुल योग है। [34]
पी — पैराग्राफ 62 देखें।

74. एकल विभाजन द्वारा बोध का समुच्चय: संपर्क से जुड़ा है।
धारणा का समग्र रूप से दो भागों में विभाजन: सांसारिक; अलौकिक।
तीन प्रकार से विभाजित करके बोध का सार: जो बोध किया जाता है, वह आसक्तियों का विषय होता है; जो बोध नहीं किया जाता, वह आसक्तियों का विषय होता है; जो बोध नहीं किया जाता, वह आसक्तियों का विषय नहीं होता। इसी प्रकार दस प्रकार से विभाजित करके बोध का सार प्रस्तुत किया जाता है।
P = अनुच्छेद 62 देखें।

41

75. एकल विभाजन द्वारा बोध का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।
दो भागों में विभाजित करके प्राप्त की गई धारणा का समग्र रूप: एक तरीके से बोधगम्य है; दूसरे तरीके से बोधगम्य नहीं है।
तीन प्रकार से विभाजित करके बोध का सार: भ्रष्ट है, तो भ्रष्टों का विषय है; भ्रष्ट नहीं है, तो भ्रष्टों का विषय है; भ्रष्ट नहीं है, तो भ्रष्टों का विषय नहीं है। :P: इसी प्रकार दस प्रकार से विभाजित करके बोध का सार है।
P = अनुच्छेद 62 देखें।

76. एकल विभाजन द्वारा बोध का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।

धारणा का समग्र विभाजन दो प्रकार से किया जाता है: यह विकारों का विषय है; यह विकारों का विषय नहीं है।
तीन प्रकार से विभाजित करके बोध का समग्र रूप: प्रारंभिक अनुप्रयोग के साथ, निरंतर अनुप्रयोग के साथ; प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, केवल निरंतर अनुप्रयोग के साथ; प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, निरंतर अनुप्रयोग के बिना।
पी: इस प्रकार दस गुना विभाजन द्वारा बोध का कुल योग प्राप्त होता है।
P = अनुच्छेद 62 देखें।

77. एकल विभाजन द्वारा बोध का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।
धारणा का समग्र विभाजन दो प्रकार से किया जा सकता है: यह दोषों से जुड़ा है; यह दोषों से जुड़ा नहीं है।
तीन भागों में विभाजित करके बोध का कुल योग: उत्साह से युक्त; आनंद से युक्त; उदासीनता से युक्त। :P: इस प्रकार दस भागों में विभाजित करके बोध का कुल योग है। [35]
P = अनुच्छेद 62 देखें।

78. एकल विभाजन द्वारा बोध का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।
धारणा का समग्र विभाजन दो प्रकार से किया जा सकता है: यह दोषों से संबंधित नहीं है, यह दोषों का विषय है; यह दोषों से संबंधित नहीं है, यह दोषों का विषय नहीं है।

42

तीन प्रकार से विभाजित करके प्राप्त बोध का सार: पहले मार्ग से त्यागा जाना है; बाद के मार्गों से त्यागा जाना है; न तो पहले मार्ग से और न ही बाद के मार्गों से त्यागा जाना है। :P: दस प्रकार से विभाजित करके प्राप्त बोध का सार यही है।
P = अनुच्छेद 62 देखें।

79. एकल विभाजन द्वारा बोध का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।
धारणा का समग्र विभाजन इस प्रकार है: बंधनों का विषय है; बंधनों का विषय नहीं है।
तीन भागों में विभाजित करके बोध का सार: प्रथम मार्ग द्वारा त्यागा जाने वाला मूल; अनुवर्ती मार्गों द्वारा त्यागा जाने वाला मूल; प्रथम मार्ग या अनुवर्ती मार्गों द्वारा त्यागा जाने वाला कोई मूल नहीं। :P:
इस प्रकार दस गुना विभाजन द्वारा बोध का कुल योग प्राप्त होता है।
P = अनुच्छेद 62 देखें।
80. एकल विभाजन द्वारा बोध का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।
धारणा का समग्र विभाजन दो प्रकार से किया जा सकता है: बंधनों से जुड़ा हुआ; बंधनों से जुड़ा हुआ नहीं।
तीन प्रकार से विभाजित करने पर प्राप्त बोध का कुल योग: संचयी होता है; विक्षेपी होता है; न संचयी होता है और न ही विक्षेपी। :P: इसी प्रकार दस प्रकार से विभाजित करने पर प्राप्त बोध का कुल योग होता है।
P = अनुच्छेद 62 देखें।
81. एकल विभाजन द्वारा बोध का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।
धारणा का समग्र विभाजन इस प्रकार है: बेड़ियों से जुड़ा नहीं है, बेड़ियों का विषय है; बेड़ियों से जुड़ा नहीं है, बेड़ियों का विषय नहीं है। [36]
तीन प्रकार से विभाजित करने पर प्राप्त बोध का सार: सात अलौकिक अवस्थाओं का है; अंतिम अलौकिक अवस्था का है; न तो सात अलौकिक अवस्थाओं का है और न ही अंतिम अलौकिक अवस्था का है। :P: इसी प्रकार दस प्रकार से विभाजित करने पर प्राप्त बोध का सार है।
P = अनुच्छेद 62 देखें।

43

82. एकल विभाजन द्वारा बोध का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।
धारणा का समग्र विभाजन दो प्रकार से किया जाता है: यह संबंधों का विषय है; यह संबंधों का विषय नहीं है।
तीन भागों में विभाजित करके प्राप्त बोध का सार: निम्न है; उदात्त है; असीम है। :P: इसी प्रकार दस भागों में विभाजित करके प्राप्त बोध का सार है।
P = अनुच्छेद 62 देखें।
83. एकल विभाजन द्वारा बोध का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।
धारणा का कुल योग दोहरे विभाजन के माध्यम से: संबंधों से जुड़ा है; संबंधों से जुड़ा नहीं है।
तीन प्रकार से विभाजित करके बोध का सार: निम्न विषय; उच्च विषय; असीम विषय। इसी प्रकार दस प्रकार से विभाजित करके बोध का सार है।
P = अनुच्छेद 62 देखें।

84. एकल विभाजन द्वारा बोध का समुच्चय: संपर्क से जुड़ा है।
धारणा का समग्र विभाजन दो प्रकार से किया जा सकता है: संबंधों से संबद्ध नहीं है, संबंधों का विषय है; संबंधों से संबद्ध नहीं है, संबंधों का विषय नहीं है।
तीन भागों में विभाजित करके बोध का समग्र रूप इस प्रकार है: निम्न; मध्य; श्रेष्ठ। :P : इसी प्रकार दस भागों में विभाजित करके बोध का समग्र रूप इस प्रकार है।
P = अनुच्छेद 62 देखें।
85. एकल विभाजन द्वारा बोध का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।
धारणा का समग्र विभाजन इस प्रकार है: क्या यह बाढ़ का विषय है; क्या यह बाढ़ का विषय नहीं है।
[37] त्रिगुण विभाजन द्वारा बोध का समुच्चय: एक निश्चित (परिणामी समय) के साथ एक झूठी (अवस्था) है; एक निश्चित (परिणामी समय) के साथ एक सही (अवस्था) है; कोई निश्चित (परिणामी समय) नहीं है। :P: इस प्रकार दसगुण विभाजन द्वारा बोध का समुच्चय है।
P = अनुच्छेद 62 देखें।

86. एकल विभाजन द्वारा बोध का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।

44

धारणा का कुल योग दो भागों में विभाजित किया जा सकता है: बाढ़ से संबंधित है; बाढ़ से संबंधित नहीं है।
तीन प्रकार से विभाजित करके प्राप्त की गई अनुभूति का सार: पथ को अपना विषय मानता है; पथ को अपना कारण मानता है; पथ को अपना प्रमुख कारक मानता है। :P: इसी प्रकार दस प्रकार से विभाजित करके प्राप्त की गई अनुभूति का सार है।
P = अनुच्छेद 62 देखें।
87. एकल विभाजन द्वारा बोध का समुच्चय: संपर्क से जुड़ा है।
धारणा का समग्र विभाजन दो प्रकार से किया जा सकता है: बाढ़ से संबंधित नहीं है, बाढ़ का विषय है; बाढ़ से संबंधित नहीं है, बाढ़ का विषय नहीं है।
तीन प्रकार से विभाजित करके बोध का सार: उत्पन्न हुआ है; उत्पन्न नहीं हुआ है; उत्पन्न होना ही है। :P: इसी प्रकार दस प्रकार से विभाजित करके बोध का सार है।
P = अनुच्छेद 62 देखें।

88. एकल विभाजन द्वारा बोध का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।
दोहरे विभाजन के माध्यम से बोध का कुल योग: बंधनों का विषय है; बंधनों का विषय नहीं है।

तीन भागों में विभाजित करके बोध का कुल योग इस प्रकार है: भूतकाल; भविष्यकाल; वर्तमानकाल। :P: इसी प्रकार दस भागों में विभाजित करके बोध का कुल योग इस प्रकार है।
पी — पैराग्राफ 62 देखें।

89. एकल विभाजन द्वारा बोध का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।
धारणा का कुल योग दोहरे विभाजन के माध्यम से: संबंधों से जुड़ा है; संबंधों से जुड़ा नहीं है।
[38] त्रिविध विभाजन द्वारा बोध का समुच्चय: भूतकाल का कर्ता है; भविष्य का कर्ता है; वर्तमान का कर्ता है। :P: इस प्रकार दसविध विभाजन द्वारा बोध का समुच्चय है।
P = अनुच्छेद 62 देखें।

90. एकल विभाजन द्वारा बोध का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।

45

धारणा का समग्र विभाजन दो प्रकार से किया जा सकता है: यह बंधनों से संबद्ध नहीं है, यह बंधनों का विषय है; यह बंधनों से संबद्ध नहीं है, यह बंधनों का विषय नहीं है।
तीन प्रकार से विभाजित करके बोध का कुल योग: आंतरिक है; बाह्य है; आंतरिक और बाह्य दोनों है। इसी प्रकार दस प्रकार से विभाजित करके बोध का कुल योग है।
P = अनुच्छेद 62 देखें।

91. एकल विभाजन द्वारा बोध का कुल योग: संपर्क से जुड़ा है।
धारणा का समग्र विभाजन इस प्रकार है: यह बाधाओं का विषय है; यह बाधाओं का विषय नहीं है।
तीन प्रकार से विभाजित करने पर प्राप्त बोध का सार यह है: आंतरिक विषय; बाह्य विषय; आंतरिक और बाह्य दोनों विषय। :P: इसी प्रकार दस प्रकार से विभाजित करने पर प्राप्त बोध का सार यह है।
पी — पैराग्राफ 62 देखें।
(यहाँ पारस्परिक वृद्धि का खंड समाप्त होता है)

सात भागों में विभाजित करके बोध का सार यह है: अच्छा है; बुरा है; न अच्छा है न बुरा; इच्छा के तल का लक्षण है; रूप के तल का लक्षण है; निराकार तल का लक्षण है; इसमें शामिल नहीं है (अर्थात् यह सांसारिक से परे है)। इस प्रकार सात भागों में विभाजित करके बोध का सार यह है।
सात गुना विभाजन के एक अन्य तरीके से बोध का कुल योग: सुखद भावना से जुड़ा है; पीड़ादायक भावना से जुड़ा है; न पीड़ादायक और न ही सुखद भावना से जुड़ा है; इच्छा के तल की विशेषता है; रूप के तल की विशेषता है; निराकार तल की विशेषता है; इसमें शामिल नहीं है (अर्थात् यह अलौकिक है)। :P: इसमें आंतरिक वस्तु है; इसमें बाहरी वस्तु है; इसमें आंतरिक और बाहरी दोनों वस्तुएँ हैं; इच्छा के तल की विशेषता है; रूप के तल की विशेषता है; निराकार तल की विशेषता है; इसमें शामिल नहीं है (अर्थात् यह अलौकिक है)। इस प्रकार सात गुना विभाजन द्वारा बोध का कुल योग है। [39]

P = अनुच्छेद 64 देखें।

46

चौबीस भागों में विभाजित करके बोध का कुल योग: नेत्र संपर्क से उत्पन्न बोध अच्छा है; बुरा है; न अच्छा है न बुरा। कान संपर्क से उत्पन्न बोध। नाक संपर्क से उत्पन्न बोध। जीभ संपर्क से उत्पन्न बोध। शरीर संपर्क से उत्पन्न बोध। मन संपर्क से उत्पन्न बोध अच्छा है; बुरा

है; न अच्छा है न बुरा। नेत्र संपर्क से उत्पन्न बोध; कान संपर्क से उत्पन्न बोध; नाक संपर्क से उत्पन्न बोध; जीभ संपर्क से उत्पन्न बोध; शरीर संपर्क से उत्पन्न बोध; मन संपर्क से उत्पन्न बोध। इस प्रकार चौबीस भागों में विभाजित करके बोध का कुल योग है।

P = प्रत्येक को पहले उदाहरण के अनुसार पूरा करें।

चौबीस गुना विभाजन के एक अन्य तरीके से बोध का कुल योग: नेत्र संपर्क से उत्पन्न बोध का कुल योग सुखद अनुभूति से जुड़ा होता है; :PX : इसमें आंतरिक वस्तु होती है; इसमें बाह्य वस्तु होती है; इसमें आंतरिक और बाह्य दोनों वस्तुएँ होती हैं। यह कान के संपर्क से उत्पन्न होता है। :P 2 : नाक के संपर्क से उत्पन्न होता है। :P 2 : जीभ के संपर्क से उत्पन्न होता है। :P 2 : शरीर के संपर्क से उत्पन्न होता है। :P 2 : मन के संपर्क से उत्पन्न बोध का कुल योग सुखद अनुभूति से जुड़ा होता है; :PX : इसमें आंतरिक वस्तु होती है; इसमें बाह्य वस्तु होती है; इसमें आंतरिक और बाह्य दोनों वस्तुएँ होती हैं। नेत्र संपर्क से उत्पन्न बोध; :P 3 : मन के संपर्क से उत्पन्न बोध। इस प्रकार चौबीस गुना विभाजन के माध्यम से बोध का कुल योग प्राप्त होता है।

P 1 = पैराग्राफ 64 देखें। P 2 = प्रत्येक को पहले उदाहरण के अनुसार पूरा करें।

P 3 = मध्यवर्ती इंद्रियां।

तीस भागों में विभाजित करके बोध का समग्र रूप: नेत्र संपर्क से उत्पन्न बोध इच्छा तल की विशेषता है; रूप तल की विशेषता है; निराकार तल की विशेषता है; इसमें शामिल नहीं है (अर्थात् यह अलौकिक है)। कान संपर्क से उत्पन्न बोध: पृष्ठ 1: नाक संपर्क से उत्पन्न बोध।

P 1 : जीभ के संपर्क से उत्पन्न। :PX : शरीर के संपर्क से उत्पन्न। :P 1 :

मन के संपर्क से उत्पन्न बोध का समूह इच्छा के तल की विशेषता है; रूप के तल की विशेषता है; निराकार तल की विशेषता है; इसमें शामिल नहीं है (अर्थात् यह अलौकिक है)। नेत्र संपर्क से उत्पन्न बोध; मन के संपर्क से उत्पन्न बोध। इस प्रकार, तीस गुना विभाजन द्वारा बोध का समूह प्राप्त होता है।

पृष्ठ 1 ^ प्रत्येक को पहले उदाहरण के रूप में पूरा करें। पृष्ठ 2 = मध्यवर्ती इंद्रियां।

अनेक विभाजनों द्वारा बोध का समग्र रूप: नेत्र संपर्क के कारण उत्पन्न बोध का समग्र रूप अच्छा है; बुरा है;

47

न अच्छा न बुरा; इच्छा के तल की विशेषता है; रूप के तल की विशेषता है; निराकार तल की विशेषता है; इसमें शामिल नहीं है (अर्थात् यह सांसारिक से परे है)। कान के संपर्क से उत्पन्न। : P 1 : नाक के संपर्क से उत्पन्न। cP 1 : जीभ के संपर्क से उत्पन्न। :PX : शरीर के संपर्क से उत्पन्न। : P 1 : मन के संपर्क से उत्पन्न बोध का समूह अच्छा है; बुरा है; न अच्छा न बुरा है; [40] इच्छा के तल की विशेषता है; रूप के तल की विशेषता है; निराकार तल की विशेषता है; इसमें शामिल नहीं है (अर्थात् यह सांसारिक से परे है)। आँख के संपर्क से उत्पन्न बोध; :P 2 : मन के संपर्क से उत्पन्न बोध। इस प्रकार अनेक विभाजनों द्वारा बोध का समूह है।

P 1 = प्रत्येक को पहले उदाहरण के रूप में पूरा करें। P 2 = मध्यवर्ती इंद्रियां।

अनेक प्रकार के विभाजन द्वारा बोध का समग्र रूप: नेत्र संपर्क से उत्पन्न बोध सुखद अनुभूति से जुड़ा होता है; :PX : इसमें आंतरिक वस्तु होती है; इसमें बाह्य वस्तु होती है; इसमें आंतरिक और बाह्य दोनों वस्तुएँ होती हैं; यह इच्छा के तल की विशेषता है; यह रूप के तल की विशेषता है; यह निराकार तल की विशेषता है; यह शामिल नहीं है (अर्थात् यह अलौकिक है)। कान के संपर्क से उत्पन्न। :P 2 : नाक के संपर्क से उत्पन्न। :P 2 : जीभ के संपर्क से उत्पन्न। : P 2 : शरीर के संपर्क से उत्पन्न। :P 2 : मन के संपर्क से उत्पन्न बोध (सुखद अनुभूति से जुड़ा होता है :PX :)* इसमें आंतरिक वस्तु होती है; इसमें बाह्य वस्तु होती है; इसमें आंतरिक और बाह्य दोनों वस्तुएँ होती हैं; यह इच्छा के तल की विशेषता है; यह रूप के तल की विशेषता है; यह निराकार तल की विशेषता है; यह शामिल नहीं है (अर्थात् यह अलौकिक है)। नेत्र संपर्क से उत्पन्न बोध; कान संपर्क से उत्पन्न बोध; नाक संपर्क से उत्पन्न बोध; जीभ संपर्क से उत्पन्न बोध; शरीर संपर्क से उत्पन्न बोध; मन के संपर्क से उत्पन्न बोध। इस प्रकार अनेक विभाजनों द्वारा बोध का समग्र रूप प्राप्त होता है।

P 1 = पैराग्राफ 64 देखें। P 2 = प्रत्येक को पहले उदाहरण के अनुसार पूरा करें।

चाफ्थासंगायण पाठ में छोड़ा गया।

इसे धारणाओं का समग्र रूप कहा जाता है।

(»

4. मानसिक सहवर्तीताओं का समूह

92. उसमें मानसिक सहवर्तीताओं का समुच्चय क्या है? एक प्रकार के विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्तीताओं का समुच्चय: चेतना से जुड़ा है।

48

मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह, दोहरे विभाजन के माध्यम से: मूल है; मूल नहीं है।
मानसिक सहवर्ती भावों का त्रिविध विभाजन: अच्छा है; बुरा है; न अच्छा है न बुरा।
मानसिक सहवर्तीताओं का समूह, चार भागों में विभाजित करके: इच्छा के तल की विशेषता है; रूप के तल की विशेषता है; निराकार तल की विशेषता है; इसमें शामिल नहीं है (अर्थात् यह अलौकिक है)।
मानसिक सहवर्ती भावों का पंचांग विभाजन इस प्रकार है: यह सुख (शारीरिक) की नियंत्रक शक्ति से संबंधित है; यह दुख (शारीरिक) की नियंत्रक शक्ति से संबंधित है; यह मानसिक सुख की नियंत्रक शक्ति से संबंधित है; यह मानसिक दुख की नियंत्रक शक्ति से संबंधित है; यह उदासीनता की नियंत्रक शक्ति से संबंधित है। इस प्रकार, यह पंचांग विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्ती भावों का समुच्चय है।
मानसिक क्रियाओं का समुच्चय छह भागों में विभाजित है: नेत्र संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति; कान संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति; नाक संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति; जीभ संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति; शरीर संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति; मन संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति। इस प्रकार मानसिक क्रियाओं का समुच्चय छह भागों में विभाजित है।
मानसिक सहवर्ती तत्वों का समुच्चय विभाजन इस प्रकार है: नेत्र संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति; कान संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति; नाक संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति; जीभ संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति; शरीर संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति; [41] मन-तत्व-संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति; मन-चेतना-तत्व-संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति। इस प्रकार मानसिक सहवर्ती तत्वों का समुच्चय सात प्रकार से विभाजित है।
मानसिक क्रियाओं का अष्टांग विभाजन इस प्रकार है: नेत्र संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति; सुख और पीड़ा से युक्त शारीरिक संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति; मन-तत्व-संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति; मन-चेतना-तत्व-संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति। इस प्रकार मानसिक क्रियाओं का अष्टांग विभाजन है।
P = मध्यवर्ती इंद्रियां।
मानसिक सहवर्ती तत्वों का नौ गुना विभाजन: नेत्र संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति; मन-तत्व-संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति; मन-चेतना-तत्व से उत्पन्न इच्छाशक्ति।

49

अच्छा, बुरा और न अच्छा न बुरा, ऐसा संपर्क। इस प्रकार मानसिक सहवर्ती भावों का समूह नौ भागों में विभाजित है।
P = मध्यवर्ती इंद्रियां।
मानसिक सहवर्ती तत्वों का दस गुना विभाजन इस प्रकार है: नेत्र संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति; सुख और पीड़ा से ग्रस्त शारीरिक संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति; मन-तत्व-संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति; मन-चेतना-तत्व-संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति जो अच्छी, बुरी और न अच्छी न बुरी होती है। इस प्रकार मानसिक सहवर्ती तत्वों का दस गुना विभाजन किया गया है।
P = मध्यवर्ती इंद्रियां।
93. एकल विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्तीताओं का समुच्चय: चेतना से जुड़ा है।
दो भागों में विभाजित मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह: मूल है; मूल नहीं है।
मानसिक सहवर्ती भावों का त्रिविध विभाजन इस प्रकार है: सुखद भाव से जुड़ा हुआ; दुखदायी भाव से जुड़ा हुआ; न दुखदायी और न ही सुखद भाव से जुड़ा हुआ। परिणामी; परिणामी उत्पन्न करने वाला; न तो परिणामी और न ही परिणामी उत्पन्न करने वाला। (लालसा और भ्रामक दृष्टि से) ग्रहण किया हुआ, आसक्तियों का विषय; ग्रहण न किया हुआ, आसक्तियों का विषय; ग्रहण न किया हुआ, आसक्तियों का विषय नहीं। भ्रष्ट, भ्रष्टताओं का विषय; भ्रष्ट न किया हुआ, भ्रष्टताओं का विषय; भ्रष्ट न किया हुआ, भ्रष्टताओं का विषय नहीं। प्रारंभिक अभ्यास के साथ, निरंतर अभ्यास के साथ; प्रारंभिक अभ्यास के बिना, केवल निरंतर अभ्यास के साथ; प्रारंभिक अभ्यास के बिना, निरंतर अभ्यास के बिना। उत्साह के साथ; सुख के साथ; उदासीनता के साथ। प्रथम मार्ग द्वारा त्यागा जाना है; अनुवर्ती मार्गों द्वारा त्यागा जाना है; न तो प्रथम मार्ग द्वारा और न ही अनुवर्ती मार्गों द्वारा त्यागा जाना है। प्रथम मार्ग द्वारा त्यागा जाना आवश्यक है। इसका

कोई मूल नहीं है जिसे बाद के मार्ग त्याग दें; इसका कोई मूल नहीं है जिसे न तो पहले मार्ग द्वारा और न ही बाद के मार्गों द्वारा त्यागा जा सके। यह संचयी है (लगातार पुनर्जन्म और मृत्यु का); यह विक्षेपी है; यह न तो संचयी है और न ही विक्षेपी है। यह सात अलौकिक अवस्थाओं में से एक है; यह अंतिम अलौकिक अवस्था में से एक है; यह सात अलौकिक अवस्थाओं में से कोई भी नहीं है।

50

न ही यह अंतिम अलौकिक अवस्था का है। यह निम्न है; यह उदात्त है; यह अमापनीय है। इसका निम्न उद्देश्य है; इसका उदात्त उद्देश्य है; इसका अमापनीय उद्देश्य है। यह निम्न है; यह मध्यवर्ती है; यह श्रेष्ठ है। यह एक निश्चित (परिणामी समय) वाली झूठी (अवस्था) है; यह एक निश्चित (परिणामी समय) वाली सही (अवस्था) है; इसका कोई निश्चित (परिणामी समय) नहीं है। इसका उद्देश्य पथ है; इसका कारण पथ है; इसका प्रमुख कारक पथ है। यह उत्पन्न हुआ है; यह उत्पन्न नहीं हुआ है; यह उत्पन्न होने के लिए बाध्य है। यह भूतकाल है; यह भविष्यकाल है; यह वर्तमानकाल है। इसका भूतकाल का उद्देश्य है; इसका भविष्यकाल का उद्देश्य है; इसका वर्तमानकाल का उद्देश्य है। यह आंतरिक है; यह बाह्य है; यह आंतरिक और बाह्य दोनों है। इसका आंतरिक उद्देश्य है; इसका बाह्य उद्देश्य है; इसका आंतरिक और बाह्य दोनों उद्देश्य हैं। इस प्रकार यह दस गुना विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्ती तत्वों का समुच्चय है।
P = अनुच्छेद 92 देखें।
94. एकल विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्तीताओं का समुच्चय: चेतना से जुड़ा है।
मानसिक सहवर्ती तत्वों का द्विभाजन इस प्रकार है: मूल तत्व के साथ है; मूल तत्व के साथ नहीं है। [42] मूल तत्व से संबद्ध है; मूल तत्व से संबद्ध नहीं है। क्या मूल तत्व भी मूल तत्व के साथ है; मूल तत्व के साथ है लेकिन मूल तत्व नहीं है। क्या मूल तत्व भी मूल तत्व से संबद्ध है; मूल तत्व से संबद्ध है लेकिन मूल तत्व नहीं है। मूल तत्व नहीं है, मूल तत्व के साथ है; मूल तत्व नहीं है, मूल तत्व के साथ नहीं है। सांसारिक है; अलौकिक है। एक मार्ग से बोधगम्य है; दूसरे मार्ग से बोधगम्य नहीं है। अपवित्रता है; अपवित्रता नहीं है। अपवित्रताओं का विषय है; अपवित्रताओं का विषय नहीं है। अपवित्रताओं से संबद्ध है; अपवित्रताओं से संबद्ध नहीं है। क्या अपवित्रता भी अपवित्रताओं का विषय है; अपवित्रताओं का विषय है लेकिन अपवित्रता नहीं है। क्या अपवित्रता भी अपवित्रताओं से संबद्ध है; अपवित्रताओं से संबद्ध है लेकिन अपवित्रता नहीं है। अपवित्रताओं से संबंधित नहीं है, अपवित्रताओं का विषय है; अपवित्रताओं से संबंधित नहीं है, अपवित्रताओं का विषय नहीं है। बंधन है; बंधन नहीं है। बंधनों का विषय है; बंधनों का विषय नहीं है। बंधनों से संबंधित है; बंधनों से संबंधित नहीं है। क्या बंधन भी बंधनों का विषय है; बंधनों का विषय है लेकिन बंधन नहीं है। क्या बंधन भी बंधनों से संबंधित है; बंधनों से संबंधित है लेकिन बंधन नहीं है। बंधनों से संबंधित नहीं है, बंधनों का विषय है; बंधनों से संबंधित नहीं है, बंधनों का विषय नहीं है।
क्या संबंध है; क्या संबंध नहीं है। क्या संबंधों का विषय है; क्या संबंधों का विषय नहीं है। क्या संबंधों से जुड़ा है; क्या संबंधों से जुड़ा नहीं है।

51

बंधन भी बंधनों का विषय है; बंधनों का विषय है लेकिन बंधन नहीं है। क्या बंधन भी बंधनों से जुड़ा है; बंधनों से जुड़ा है लेकिन बंधन नहीं है। [43] बंधनों से जुड़ा नहीं है, बंधनों का विषय है; बंधनों से जुड़ा नहीं है, बंधनों का विषय नहीं है। बाढ़ है; बाढ़ नहीं है। बाढ़ का विषय है; बाढ़ का विषय नहीं है। बाढ़ से जुड़ा है; बाढ़ से जुड़ा नहीं है। क्या बाढ़ भी बाढ़ का विषय है; बाढ़ का विषय है लेकिन बाढ़ नहीं है। क्या बाढ़ भी बाढ़ से जुड़ी है; बाढ़ से जुड़ी है लेकिन बाढ़ नहीं है। बाढ़ से जुड़ा नहीं है, बाढ़ का विषय है; बाढ़ से जुड़ा नहीं है, बाढ़ का विषय नहीं है। बंधन है; बंधन नहीं है। बंधनों का विषय है; बंधनों का विषय नहीं है। बंधनों से जुड़ा है; बंधनों से जुड़ा नहीं है। क्या बंधन भी बंधनों का विषय है; बंधनों का विषय है, लेकिन स्वयं बंधन नहीं है। क्या बंधन भी बंधनों से संबद्ध है; बंधनों से संबद्ध है, लेकिन स्वयं बंधन नहीं है। बंधनों से संबद्ध नहीं है, बंधनों का विषय है; बंधनों से संबद्ध नहीं है, बंधनों का विषय नहीं है। बाधा है; बाधा नहीं है। बाधाओं का विषय है; बाधाओं का विषय नहीं है। बाधाओं से संबद्ध है; बाधाओं से संबद्ध नहीं है। क्या बाधा भी बाधाओं का विषय है; बाधाओं का विषय है, लेकिन स्वयं बाधा नहीं है। क्या बाधा भी बाधाओं से संबद्ध है; बाधाओं से संबद्ध है, लेकिन स्वयं बाधा नहीं है। बाधाओं से संबद्ध नहीं है, बाधाओं का विषय है; बाधाओं से संबद्ध नहीं है, बाधाओं का विषय नहीं है।

क्या यह विकृति है; क्या यह विकृति नहीं है। क्या यह विकृतियों का विषय है; क्या यह विकृतियों का विषय नहीं है। क्या यह विकृतियों से जुड़ा है; क्या यह विकृतियों से जुड़ा नहीं है। क्या विकृति भी विकृतियों का विषय है; क्या यह विकृतियों का विषय है लेकिन विकृति नहीं है। [44] विकृतियों से जुड़ा नहीं है, विकृतियों का विषय है; विकृतियों से जुड़ा नहीं है, विकृतियों का विषय नहीं है। पकड़ा गया है; पकड़ा नहीं गया है। क्या यह आसक्ति है; क्या यह आसक्ति नहीं है। क्या यह आसक्ति का विषय है; क्या यह आसक्ति का विषय नहीं है। क्या यह आसक्ति से जुड़ा है; क्या यह आसक्ति का विषय है लेकिन आसक्ति नहीं है। क्या आसक्ति भी आसक्ति से जुड़ी है; क्या यह आसक्ति से जुड़ी है लेकिन आसक्ति नहीं है। क्या यह आसक्ति से जुड़ा नहीं है, क्या यह आसक्ति का विषय है?
5 +

52
यह आसक्तियों से संबद्ध नहीं है, न ही यह आसक्तियों का विषय है।
क्या भ्रष्टाचार है; क्या भ्रष्टाचार नहीं है। क्या भ्रष्टाचारों का लक्ष्य है; क्या भ्रष्टाचारों का लक्ष्य नहीं है। क्या भ्रष्ट है; क्या भ्रष्ट नहीं है। क्या भ्रष्टाचारों से जुड़ा है; क्या भ्रष्टाचारों से जुड़ा नहीं है। क्या भ्रष्टाचार भी भ्रष्टाचारों का लक्ष्य है; क्या भ्रष्टाचारों का लक्ष्य है लेकिन स्वयं भ्रष्टाचार नहीं है। क्या भ्रष्टाचार भी भ्रष्ट है; क्या भ्रष्ट है लेकिन स्वयं भ्रष्टाचार नहीं है। क्या भ्रष्टाचार भी भ्रष्टाचारों से जुड़ा है; क्या भ्रष्टाचारों से जुड़ा है लेकिन स्वयं भ्रष्टाचार नहीं है। क्या भ्रष्टाचारों से जुड़ा नहीं है, भ्रष्टाचारों का लक्ष्य है; क्या भ्रष्टाचारों से जुड़ा नहीं है, भ्रष्टाचारों का लक्ष्य नहीं है। क्या पहले मार्ग द्वारा त्यागा जाना है; क्या पहले मार्ग द्वारा नहीं त्यागा जाना है। क्या बाद के मार्गों द्वारा त्यागा जाना है; क्या बाद के मार्गों द्वारा नहीं त्यागा जाना है। क्या पहले मार्ग द्वारा त्यागा जाने वाला मूल है; क्या पहले मार्ग द्वारा त्यागा जाने वाला कोई मूल नहीं है। क्या बाद के मार्गों द्वारा त्यागा जाने वाला मूल है; क्या बाद के मार्गों द्वारा त्यागा जाने वाला कोई मूल नहीं है।
प्रारंभिक अनुप्रयोग के साथ है; प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना है। निरंतर अनुप्रयोग के साथ है; निरंतर अनुप्रयोग के बिना है। उत्साह के साथ है; उत्साह के बिना है। [45] उत्साह के साथ है; उत्साह के बिना है। आनंद के साथ है; आनंद के बिना है। उदासीनता के साथ है; उदासीनता के बिना है। इच्छा के तल की विशेषता है; इच्छा के तल की विशेषता नहीं है। रूप के तल की विशेषता है; रूप के तल की विशेषता नहीं है। निराकार तल की विशेषता है; निराकार तल की विशेषता नहीं है। समाहित है (अर्थात सांसारिक है); समाहित नहीं है (अर्थात अलौकिक है)। मुक्ति की ओर प्रवृत्त है; मुक्ति की ओर प्रवृत्त नहीं है। निश्चित (परिणामी समय) का है; निश्चित (परिणामी समय) का नहीं है। पार करने योग्य है; पार करने योग्य नहीं है। विलाप के कारण के साथ है; विलाप के कारण के बिना है।
तीन भागों में विभाजित मानसिक सहवर्ती भावों का समूह: अच्छा है; बुरा है; न अच्छा है न बुरा। :P: इसी प्रकार दस भागों में विभाजित मानसिक सहवर्ती भावों का समूह है।
P = अनुच्छेद 92 देखें।

95. एकल विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्तीताओं का समुच्चय: चेतना से जुड़ा है।

53

मानसिक सहवर्तीताओं का द्विभाजन: शोक का कारण है; शोक का कारण नहीं है।
तीन गुना विभाजन के माध्यम से मानसिक सहवर्ती का समूह: सुखद भावना से जुड़ा है; : पी 1 : आंतरिक वस्तु है; बाहरी वस्तु है; आंतरिक और बाहरी दोनों वस्तु है।
पृष्ठ 2: इस प्रकार दस के माध्यम से मानसिक सहवर्तीताओं का कुल योग है-
तह विभाजन।
पी' = पैरा देखें। 93. पी 2 = पैरा देखें। 92.
(यहाँ खंड समाप्त होता है) दोहे पर आधारित। [46]
96. एकल विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्तीताओं का समुच्चय: चेतना से जुड़ा है।
दो भागों में विभाजित मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह: मूल है; मूल नहीं है।

तीन भागों में विभाजित मानसिक सहवर्ती भावों का समूह: अच्छा है; बुरा है; न अच्छा है न बुरा। :P: इसी प्रकार दस भागों में विभाजित मानसिक सहवर्ती भावों का समूह है।
P = अनुच्छेद 92 देखें।
97. एकल विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्तीताओं का समुच्चय: चेतना से जुड़ा है।
मानसिक सहवर्तीताओं का समूह दो भागों में विभाजित किया गया है: शोक का कारण है; शोक का कारण नहीं है।
तीन भागों में विभाजित मानसिक सहवर्ती भावों का समूह: अच्छा है; बुरा है; न अच्छा है न बुरा। :P: इसी प्रकार दस भागों में विभाजित मानसिक सहवर्ती भावों का समूह है।
P = अनुच्छेद 92 देखें।
98. एकल विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्तीताओं का समुच्चय: चेतना से जुड़ा है।
दोहरे विभाजन के माध्यम से मानसिक सहवर्तीताओं का समूह: मूल है; मूल नहीं है।
तीन प्रकार से विभाजित मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह: आंतरिक वस्तु वाला; बाह्य वस्तु वाला; आंतरिक और बाह्य दोनों वस्तु वाला। :P: दस प्रकार से विभाजित मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह यही है।
P = अनुच्छेद 92 देखें।

54

99. एकल विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्तीताओं का समुच्चय: चेतना से जुड़ा है।
मानसिक सहवर्तीताओं का समूह दो भागों में विभाजित किया गया है: शोक का कारण है; शोक का कारण नहीं है।
तीन प्रकार से विभाजित करने पर मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह: आंतरिक वस्तु वाला; बाह्य वस्तु वाला; आंतरिक और बाह्य दोनों वस्तु वाला। :P: दस प्रकार से विभाजित करने पर मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह इस प्रकार है।
P = अनुच्छेद 92 देखें।
(यहाँ खंड समाप्त होता है) त्रिक पर आधारित। [47]
100. एकल विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्तीताओं का समुच्चय: चेतना से जुड़ा है।
दो भागों में विभाजित मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह: मूल है; मूल नहीं है।
तीन भागों में विभाजित मानसिक सहवर्ती भावों का समूह: अच्छा है; बुरा है; न अच्छा है न बुरा। :P: इसी प्रकार दस भागों में विभाजित मानसिक सहवर्ती भावों का समूह है।^
एन!
P = अनुच्छेद 92 देखें।
101. एकल विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्तीताओं का समुच्चय: चेतना से जुड़ा है।
दोहरे विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह मूल के साथ होता है; मूल के साथ नहीं होता है।
मानसिक सहवर्ती भावों का त्रिविध विभाजन इस प्रकार है: सुखद भावना से जुड़ा हुआ; दुखद भावना से जुड़ा हुआ; न दुखद और न सुखद भावना से जुड़ा हुआ। : P : इसी प्रकार मानसिक सहवर्ती भावों का दसविध विभाजन इस प्रकार है।
P = अनुच्छेद 92 देखें।

102. एकल विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्तीताओं का समुच्चय: चेतना से जुड़ा है।
मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह, दोहरे विभाजन के माध्यम से: मूल से संबंधित है; मूल से संबंधित नहीं है।
तीन गुना विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्तीताओं का कुल योग: परिणामी; परिणामी उत्पन्न करता है; न तो परिणामी है और न ही

55

परिणाम उत्पन्न करने वाला। : पी : इस प्रकार दस गुना विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्ती तत्वों का समुच्चय होता है।
P = अनुच्छेद 92 देखें।

103. एकल विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्तीताओं का समुच्चय: चेतना से जुड़ा है।
मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह, दोहरे विभाजन के माध्यम से: क्या मूल तत्व के साथ मूल तत्व भी होता है; क्या मूल तत्व के साथ होता है लेकिन मूल तत्व नहीं होता है।
मानसिक सहवर्ती भावों का त्रिविध विभाजन इस प्रकार है: जो ग्रहण किया जाता है, वह आसक्तियों का विषय होता है; जो ग्रहण नहीं किया जाता, वह आसक्तियों का विषय होता है; जो ग्रहण नहीं किया जाता, वह आसक्तियों का विषय नहीं होता। इसी प्रकार मानसिक सहवर्ती भावों का दसविध विभाजन इस प्रकार है। [48]
P = अनुच्छेद 92 देखें।

104. एकल विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्तीताओं का समुच्चय: चेतना से जुड़ा है।
मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह, दोहरे विभाजन के माध्यम से: क्या मूल भी मूल से जुड़ा है; मूल से जुड़ा है लेकिन मूल नहीं है।
मानसिक सहवर्ती तत्वों का त्रिविध विभाजन इस प्रकार है: भ्रष्ट है तो भ्रष्ट तत्वों का विषय है; भ्रष्ट नहीं है तो भ्रष्ट तत्वों का विषय है; भ्रष्ट नहीं है तो भ्रष्ट तत्वों का विषय नहीं है। :P: इसी प्रकार मानसिक सहवर्ती तत्वों का दसविध विभाजन है।
P = अनुच्छेद 92 देखें।

105. एकल विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्तीताओं का समुच्चय: चेतना से जुड़ा है।
मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह, दोहरे विभाजन के माध्यम से: मूल नहीं है, मूल के साथ है; मूल नहीं है, मूल के साथ नहीं है।
मानसिक सहवर्ती तत्वों का त्रिविध विभाजन इस प्रकार है: प्रारंभिक अनुप्रयोग के साथ, निरंतर अनुप्रयोग के साथ; प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, केवल निरंतर अनुप्रयोग के साथ; प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, निरंतर अनुप्रयोग के बिना। इसी प्रकार मानसिक सहवर्ती तत्वों का दसविध विभाजन इस प्रकार है।
P = अनुच्छेद 92 देखें।

56

106. एकल विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्तीताओं का समुच्चय: चेतना से जुड़ा है।
मानसिक सहवर्तीताओं का समूह, दोहरे विभाजन के माध्यम से: सांसारिक है; अलौकिक है।
मानसिक सहवर्ती भावों का त्रिगुण विभाजन इस प्रकार है: उत्साह के साथ; आनंद के साथ; उदासीनता के साथ। : P : इसी प्रकार मानसिक सहवर्ती भावों का दसगुण विभाजन इस प्रकार है।
P = अनुच्छेद 92 देखें।
107. एकल विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्तीताओं का समुच्चय: चेतना से जुड़ा है।
दो भागों में विभाजित मानसिक सहवर्तीताओं का समूह: एक तरीके से बोधगम्य है; दूसरे तरीके से बोधगम्य नहीं है।
तीन भागों में विभाजित मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह: पहले मार्ग से त्यागा जाना है; बाद के मार्गों से त्यागा जाना है; न तो पहले मार्ग से और न ही बाद के मार्गों से त्यागा जाना है। :P: इस प्रकार दस भागों में विभाजित मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह है। [49]
P = अनुच्छेद 92 देखें।

108. एकल विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्तीताओं का समुच्चय: चेतना से जुड़ा है।
दो भागों में विभाजित मानसिक सहवर्तीताओं का समूह; अपवित्रता है; अपवित्रता नहीं है।
तीन प्रकार से विभाजित मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह: प्रथम मार्ग द्वारा त्यागा जाने वाला मूल तत्व; अनुवर्ती मार्गों द्वारा त्यागा जाने वाला मूल तत्व; प्रथम मार्ग या अनुवर्ती मार्गों द्वारा त्यागा जाने वाला कोई मूल तत्व नहीं। :P; इसी प्रकार दस प्रकार से विभाजित मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह है।
P = अनुच्छेद 92 देखें।

109. एकल विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्तीताओं का समुच्चय: चेतना से जुड़ा है।

मानसिक सहवर्तीताओं का समूह दोहरे विभाजन के माध्यम से: दोषों का विषय है; दोषों का विषय नहीं है।
तीन गुना विभाजन के माध्यम से मानसिक सहवर्तीताओं का कुल योग-

57

sion: संचयी है; विक्षेपी है; न संचयी है और न ही विक्षेपी। : P : इस प्रकार दस गुना विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्ती का समुच्चय है।
P = अनुच्छेद 92 देखें।
110. एकल विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्तीताओं का समुच्चय: चेतना से जुड़ा है।
मानसिक सहवर्तीताओं का समूह दोहरे विभाजन के माध्यम से: दोषों से जुड़ा है; दोषों से जुड़ा नहीं है।
मानसिक सहवर्ती तत्वों का त्रिविध विभाजन इस प्रकार है: सात अलौकिक अवस्थाओं का समूह; अंतिम अलौकिक अवस्था का समूह; न तो सात अलौकिक अवस्थाओं का समूह और न ही अंतिम अलौकिक अवस्था का समूह। :P: इसी प्रकार मानसिक सहवर्ती तत्वों का दसविध विभाजन इस प्रकार है।
P = अनुच्छेद 92 देखें।
111. एकल विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्तीताओं का समुच्चय: चेतना से जुड़ा है।
मानसिक सहवर्तीताओं का समूह दोहरे विभाजन के माध्यम से: क्या अपवित्रता भी अपवित्रताओं का विषय है; क्या यह अपवित्रताओं का विषय है लेकिन अपवित्रता नहीं है।
तीन भागों में विभाजित मानसिक सहवर्ती तत्वों का कुल योग: निम्न है; उदात्त है; असीम है। :P: इसी प्रकार दस भागों में विभाजित मानसिक सहवर्ती तत्वों का कुल योग है।
P = अनुच्छेद 92 देखें।

112. एकल विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्तीताओं का समुच्चय: चेतना से जुड़ा है।
मानसिक सहवर्ती तत्वों का दोहरे विभाजन के माध्यम से समूह: क्या अपवित्रता भी अपवित्रताओं से जुड़ी है; क्या यह अपवित्रताओं से जुड़ी है लेकिन स्वयं अपवित्रता नहीं है।
तीन प्रकार से विभाजित मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह: निम्न उद्देश्य रखता है; उदात्त उद्देश्य रखता है; असीम उद्देश्य रखता है। :P: इस प्रकार दस प्रकार से विभाजित मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह है। [50]
P = अनुच्छेद 92 देखें।
113. एकल विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्तीताओं का समुच्चय: चेतना से जुड़ा है।

58

मानसिक सहवर्तीताओं का समूह दोहरे विभाजन के अनुसार: दोषों से संबद्ध नहीं है, दोषों का विषय है; दोषों से संबद्ध नहीं है, दोषों का विषय नहीं है।
तीन प्रकार से विभाजित मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह: निम्न है; मध्य है; उच्च है। इसी प्रकार दस प्रकार से विभाजित मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह है।
P = अनुच्छेद 92 देखें।

114. एकल विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्तीताओं का समुच्चय: चेतना से जुड़ा है।
दो भागों में विभाजित मानसिक सहवर्तीताओं का समूह: बंधन है; बंधन नहीं है।
तीन गुना विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्ती तत्वों का समुच्चय: एक निश्चित (परिणामी समय) के साथ एक झूठी (अवस्था) है; एक निश्चित (परिणामी समय) के साथ एक सही (अवस्था) है; और इसका कोई निश्चित (परिणामी समय) नहीं है। : P : इस प्रकार दस गुना विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्ती तत्वों का समुच्चय है।
P = अनुच्छेद 92 देखें।

115. एकल विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्तीताओं का समुच्चय: चेतना से जुड़ा है।
मानसिक सहवर्तीताओं का समूह, दोहरे विभाजन के माध्यम से: बेड़ियों का विषय है; बेड़ियों का विषय नहीं है।
तीन प्रकार से विभाजित मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह: पथ को अपने लक्ष्य के रूप में, पथ को अपने कारण के रूप में और पथ को अपने प्रमुख कारक के रूप में मानता है। :P: दस प्रकार से विभाजित मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह यही है।
P = अनुच्छेद 92 देखें।

116. एकल विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्तीताओं का समुच्चय: चेतना से जुड़ा है।
मानसिक सहवर्तीताओं का दोहरे विभाजन के आधार पर समूह: बेड़ियों से जुड़ा है; बेड़ियों से नहीं जुड़ा है।
तीन प्रकार से विभाजित मानसिक सहवर्तीताओं का समूह: उत्पन्न हुआ है; उत्पन्न नहीं हुआ है; उत्पन्न होना ही है। :P: इस प्रकार दस प्रकार से विभाजित मानसिक सहवर्तीताओं का समूह है। [51]

P = अनुच्छेद 92 देखें।

59

117. एकल विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्तीताओं का समुच्चय: चेतना से जुड़ा है।
मानसिक सहवर्तीताओं का समूह दोहरे विभाजन के माध्यम से: क्या बंधन भी बंधनों का विषय है; क्या बंधनों का विषय है लेकिन बंधन नहीं है।
तीन भागों में विभाजित करके मानसिक सहवर्ती तत्वों का कुल योग इस प्रकार है: भूतकाल है; भविष्यकाल है; वर्तमानकाल है। इसी प्रकार दस भागों में विभाजित करके मानसिक सहवर्ती तत्वों का कुल योग इस प्रकार है।
P = अनुच्छेद 92 देखें।
118. एकल विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्तीताओं का समुच्चय: चेतना से जुड़ा है।
मानसिक सहवर्ती तत्वों का दोहरे विभाजन के माध्यम से समूह: क्या बंधन भी बंधनों से जुड़ा है; क्या यह बंधनों से जुड़ा है लेकिन बंधन नहीं है।
तीन भागों में विभाजित मानसिक सहवर्तीताओं का समूह: भूतकाल का कर्म है; भविष्यकाल का कर्म है; वर्तमान काल का कर्म है।
पी: इस प्रकार मानसिक सहवर्तीताओं का योग दस गुना होता है।
विभाजन।
P = अनुच्छेद 92 देखें।

119. एकल विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्तीताओं का समुच्चय: चेतना से जुड़ा है।
मानसिक सहवर्तीताओं का समूह दोहरे विभाजन के माध्यम से: बंधनों से संबद्ध नहीं है, बंधनों का विषय है; बंधनों से संबद्ध नहीं है, बंधनों का विषय नहीं है।
मानसिक सहवर्ती तत्वों का त्रिविध विभाजन इस प्रकार है: आंतरिक; बाह्य; आंतरिक और बाह्य दोनों। :P: इसी प्रकार मानसिक सहवर्ती तत्वों का दसविध विभाजन इस प्रकार है।
P = अनुच्छेद 92 देखें।

120. «एकल विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्तीताओं का समुच्चय: चेतना से जुड़ा है।
दो भागों में विभाजित मानसिक सहवर्तीताओं का कुल योग: संबंध है; संबंध नहीं है।
तीन भागों में विभाजित मानसिक सहवर्तीताओं का समूह: आंतरिक वस्तु है; बाह्य वस्तु है; आंतरिक और बाह्य दोनों वस्तुएँ हैं 5*

60

और बाह्य वस्तु। :P: इस प्रकार दस गुना विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्ती तत्वों का समुच्चय प्राप्त होता है।

P = अनुच्छेद 92 देखें।

(यहाँ पारस्परिक वृद्धि का खंड समाप्त होता है।) [52]

मानसिक सहवर्ती तत्वों का सात भागों में विभाजन इस प्रकार है: अच्छा है; बुरा है; न अच्छा है न बुरा; इच्छा के तल का लक्षण है; रूप के तल का लक्षण है; निराकार तल का लक्षण है; इसमें शामिल नहीं है (अर्थात् अलौकिक है)। इस प्रकार मानसिक सहवर्ती तत्वों का सात भागों में विभाजन किया गया है।

सात प्रकार के विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह: सुखद अनुभूति से जुड़ा है; पीड़ादायक अनुभूति से जुड़ा है; न पीड़ादायक और न ही सुखद अनुभूति से जुड़ा है; इच्छा के तल का लक्षण है; रूप के तल का लक्षण है; निराकार तल का लक्षण है; इसमें शामिल नहीं है (अर्थात् यह सांसारिक से परे है)। :P: आंतरिक वस्तु है; बाह्य वस्तु है; आंतरिक और बाह्य दोनों वस्तुएँ हैं; इच्छा के तल का लक्षण है; रूप के तल का लक्षण है; निराकार तल का लक्षण है; इसमें शामिल नहीं है (अर्थात् यह सांसारिक से परे है)। इस प्रकार सात प्रकार के विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह है।

P = अनुच्छेद 93 देखें।

मानसिक सहवर्ती क्रियाओं का चौबीस गुना विभाजन: नेत्र संपर्क से उत्पन्न मानसिक सहवर्ती क्रियाओं का योग अच्छा है; बुरा है; न अच्छा है न बुरा। कान संपर्क से उत्पन्न। rP 1: नाक संपर्क से उत्पन्न। : P 1: जीभ संपर्क से उत्पन्न। :PX: शरीर संपर्क से उत्पन्न। : P 1: मन संपर्क से उत्पन्न मानसिक सहवर्ती क्रियाओं का योग अच्छा है; बुरा है; न अच्छा है न बुरा। नेत्र संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति; :P 2: मन संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति। इस प्रकार चौबीस गुना विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्ती क्रियाओं का योग है।

पृष्ठ 1 ^: पहले उदाहरण के अनुसार पूरा करें। पृष्ठ 2 — मध्यवर्ती अर्थ।

चौबीस गुना विभाजन के एक अन्य तरीके से मानसिक सहवर्ती का समुच्चय: नेत्र संपर्क के कारण होने वाले मानसिक सहवर्ती का समुच्चय सुखद भावना से जुड़ा होता है; :P 1 : आंतरिक वस्तु है; बाह्य वस्तु है; आंतरिक और बाह्य दोनों वस्तुएँ हैं।

61

कान के संपर्क से उत्पन्न। : P 2 : नाक के संपर्क से उत्पन्न। : P 2 : जीभ के संपर्क से उत्पन्न। :P 2 : शरीर के संपर्क से उत्पन्न। : P 2 ; मन के संपर्क से उत्पन्न मानसिक सहवर्तीताओं का समूह सुखद अनुभूति से जुड़ा होता है; : P 1 : आंतरिक वस्तु होती है; बाह्य वस्तु होती है; आंतरिक और बाह्य दोनों वस्तुएँ होती हैं। आँख के संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति; कान के संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति; नाक के संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति; जीभ के संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति; शरीर के संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति; मन के संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति। इस प्रकार चौबीस गुना विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्तीताओं का समूह है।

P* = पैराग्राफ 93 देखें। P 2 = प्रत्येक को पहले उदाहरण के अनुसार पूरा करें।

तीस गुना विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्तीताओं का समुच्चय: नेत्र संपर्क के कारण उत्पन्न मानसिक सहवर्तीताओं का समुच्चय इच्छा के तल की विशेषता है; रूप के तल की विशेषता है; निराकार तल की विशेषता है; इसमें शामिल नहीं है (अर्थात् यह अलौकिक है)। कान के संपर्क के कारण। : पृष्ठ 1 : नाक के संपर्क के कारण। : पृष्ठ 1 : [53] जीभ के संपर्क के कारण।

P 1 : शारीरिक संपर्क के कारण। : P 1 : मानसिक विचारों का समूह-

मन के संपर्क से उत्पन्न होने वाली सहक्रियाएँ इच्छा के तल की विशेषताएँ हैं; रूप के तल की विशेषताएँ हैं; निराकार तल की विशेषताएँ हैं; इसमें शामिल नहीं है (अर्थात् यह अलौकिक है)। नेत्र संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति; : पृष्ठ 2 : मन के संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति। इस प्रकार तीस गुना विभाजन द्वारा मानसिक सहक्रियाओं का समुच्चय है।

P x = पहले उदाहरण के रूप में पूर्ण। P 2 = मध्यवर्ती अर्थ।

अनेक प्रकार से विभाजित मानसिक संवेदनाओं का समूह: नेत्र संपर्क से उत्पन्न मानसिक संवेदनाएँ अच्छी होती हैं; बुरी होती हैं; न अच्छी होती हैं न बुरी; इच्छा के तल की विशेषता होती हैं; रूप के तल की विशेषता होती हैं; निराकार तल की विशेषता होती हैं; इसमें शामिल नहीं होतीं (अर्थात् अलौकिक होती हैं)। — कान संपर्क से उत्पन्न। :P: नाक संपर्क से उत्पन्न।

पी : जीभ के संपर्क से उत्पन्न। : पी : शरीर के संपर्क से उत्पन्न। : पी :

मन के संपर्क से उत्पन्न मानसिक अभिक्रियाओं का समूह अच्छा है; बुरा है; न अच्छा है न बुरा है; इच्छा के तल का लक्षण है; रूप के तल का लक्षण है; निराकार तल का लक्षण है; इसमें शामिल नहीं है (अर्थात् यह अलौकिक है)। नेत्र संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति; कान संपर्क

से उत्पन्न इच्छाशक्ति; नाक संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति; जीभ संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति; शरीर संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति; मन संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति। इस प्रकार अनेक विभाजनों द्वारा मानसिक अभिक्रियाओं का समूह बनता है।
P = पहले उदाहरण के अनुसार पूर्ण करें।

62

मानसिक सहवर्ती भावों का एक अन्य प्रकार से विविध विभाजन: नेत्र संपर्क से उत्पन्न मानसिक सहवर्ती भावों का समूह सुखद भावना से जुड़ा होता है; पीड़ादायक भावना से जुड़ा होता है; न पीड़ादायक और न ही सुखद भावना से जुड़ा होता है। : P 1 : इसमें आंतरिक वस्तु होती है; इसमें बाह्य वस्तु होती है; इसमें आंतरिक और बाह्य दोनों वस्तुएँ होती हैं; यह इच्छा के तल की विशेषता है; यह रूप के तल की विशेषता है; यह निराकार तल की विशेषता है; इसमें शामिल नहीं है (अर्थात् यह अलौकिक है)। कान के संपर्क से उत्पन्न। :P 2 : नाक के संपर्क से उत्पन्न। ;P 2 : जीभ के संपर्क से उत्पन्न। : P 2 : शरीर के संपर्क से उत्पन्न। : P 2 : मन के संपर्क से उत्पन्न मानसिक सहवर्ती भावों का समूह सुखद भावना से जुड़ा होता है; rP 1 : इसमें आंतरिक वस्तु होती है; इसमें बाह्य वस्तु होती है; इसमें आंतरिक और बाह्य दोनों वस्तुएँ होती हैं; यह इच्छा के तल की विशेषता है; यह रूप के तल की विशेषता है; यह निराकार तल की विशेषता है; इसमें शामिल नहीं है (अर्थात् यह अलौकिक है)। नेत्र संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति; कान संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति; नाक संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति; जीभ संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति; शरीर संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति; मन संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति। इस प्रकार यह अनेक विभाजनों द्वारा मानसिक सहवर्ती क्रियाओं का समूह है।
कृपया पैराग्राफ 93 देखें। पृष्ठ 2 = प्रत्येक को पहले उदाहरण के अनुसार पूरा करें।
इसे मानसिक सहवर्तीताओं का समूह कहा जाता है।
5. चेतना का समूह
121. उसमें चेतना का समुच्चय क्या है? एकल विभाजन द्वारा चेतना का समुच्चय: संपर्क से जुड़ा है। [54]
चेतना का समूह दो भागों में विभाजित किया जा सकता है: मूल तत्व के साथ होता है; मूल तत्व के साथ नहीं होता है।
चेतना का त्रिविध विभाजन इस प्रकार है: अच्छा है; बुरा है; न अच्छा है न बुरा।
चेतना का समूह चार प्रकार से विभाजित है: यह इच्छा के तल की विशेषता है; यह रूप के तल की विशेषता है; यह निराकार तल की विशेषता है; यह इसमें शामिल नहीं है (अर्थात् यह अलौकिक है)।
चेतना का पंच विभाजन इस प्रकार है: यह सुख (शारीरिक) की नियंत्रक शक्ति से संबंधित है; यह दर्द (शारीरिक) की नियंत्रक शक्ति से संबंधित है; यह...

63

यह मानसिक सुख की नियंत्रक शक्ति से संबंधित है; मानसिक पीड़ा की नियंत्रक शक्ति से संबंधित है; और उदासीनता की नियंत्रक शक्ति से संबंधित है। इस प्रकार, चेतना का समूह पाँच भागों में विभाजित है।
चेतना का छह भागों में विभाजन इस प्रकार है: नेत्र चेतना; कान चेतना; नाक चेतना; जीभ चेतना; शरीर चेतना; मन चेतना। इस प्रकार चेतना का छह भागों में विभाजन किया गया है।
चेतना का सात भागों में विभाजन इस प्रकार है: नेत्र चेतना; कान चेतना; नाक चेतना; जीभ चेतना; शरीर चेतना; मन तत्व; मन-चेतना तत्व। इस प्रकार चेतना का सात भागों में विभाजन होता है।
चेतना का अष्टांग विभाजन इस प्रकार है: नेत्र चेतना; कान चेतना; नाक चेतना; जीभ चेतना; सुख और दुख से युक्त देह चेतना; मन तत्व; मन-चेतना तत्व। इस प्रकार चेतना का अष्टांग विभाजन होता है।
चेतना का नौ भागों में विभाजन इस प्रकार है: नेत्र चेतना; कान चेतना; नाक चेतना; जीभ चेतना; शरीर चेतना; मन तत्व; मन-चेतना तत्व जो अच्छा है, जो बुरा है, जो न अच्छा है न बुरा। इस प्रकार चेतना का नौ भागों में विभाजन होता है।
चेतना का दस भागों में विभाजन इस प्रकार है: नेत्र चेतना; सुख और दुख से युक्त देह चेतना; मन तत्व; मन-चेतना तत्व जो अच्छा है, जो बुरा है, जो न अच्छा है न बुरा। इस प्रकार चेतना का दस भागों में विभाजन होता है।
P = मध्यवर्ती इंद्रियां।

122. एकल विभाजन द्वारा चेतना का समुच्चय: संपर्क से जुड़ा है।
चेतना का समूह दो भागों में विभाजित किया जा सकता है: मूल तत्व के साथ होता है; मूल तत्व के साथ नहीं होता है।
चेतना का समग्र विभाजन तीन प्रकार से किया गया है: 'I' सुखद भावनाओं से जुड़ा है; 'I' पीड़ादायक भावनाओं से जुड़ा है; 'I' न तो पीड़ादायक और न ही सुखद भावनाओं से जुड़ा है। [55]

64

परिणाम देने वाला; परिणाम उत्पन्न करने वाला; न तो परिणाम देने वाला और न ही परिणाम उत्पन्न करने वाला। (लालसा और भ्रामक दृष्टि से) ग्रहण किया जाता है, आसक्तियों का विषय होता है; ग्रहण नहीं किया जाता, आसक्तियों का विषय होता है; ग्रहण नहीं किया जाता, आसक्तियों का विषय नहीं होता। भ्रष्ट होता है, भ्रष्टताओं का विषय होता है; भ्रष्ट नहीं होता, भ्रष्टताओं का विषय होता है; भ्रष्ट नहीं होता, भ्रष्टताओं का विषय नहीं होता। प्रारंभिक अभ्यास के साथ होता है, निरंतर अभ्यास के साथ होता है; प्रारंभिक अभ्यास के बिना, केवल निरंतर अभ्यास के साथ होता है; प्रारंभिक अभ्यास के बिना, निरंतर अभ्यास के बिना होता है। उत्साह के साथ होता है; आनंद के साथ होता है; उदासीनता के साथ होता है। प्रथम मार्ग द्वारा त्यागा जाना है; अनुवर्ती मार्गों द्वारा त्यागा जाना है; न तो प्रथम मार्ग द्वारा और न ही अनुवर्ती मार्गों द्वारा त्यागा जाना है। प्रथम मार्ग द्वारा त्यागा जाने वाला मूल है; अनुवर्ती मार्गों द्वारा त्यागा जाने वाला मूल है; प्रथम मार्ग या अनुवर्ती मार्गों द्वारा त्यागा जाने वाला कोई मूल नहीं है। यह संचयी है (पुनर्जन्म और मृत्यु के निरंतर चक्र का); यह विक्षेपी है; यह न तो संचयी है और न ही विक्षेपी। यह सात अलौकिक अवस्थाओं में से एक है; यह अंतिम अलौकिक अवस्था में से एक है; यह न तो सात अलौकिक अवस्थाओं में से एक है और न ही अंतिम अलौकिक अवस्था में से एक है। यह निम्न है; यह उदात्त है; यह अतुलनीय है। इसका निम्न उद्देश्य है; इसका उदात्त उद्देश्य है; इसका अतुलनीय उद्देश्य है। यह निम्न है; यह मध्यवर्ती है; यह श्रेष्ठ है। यह एक झूठी अवस्था है जिसका परिणाम समय निश्चित है; यह एक सही अवस्था है जिसका परिणाम समय निश्चित है; इसका कोई निश्चित परिणाम समय नहीं है। इसका उद्देश्य पथ है; इसका कारण पथ है; इसका प्रमुख कारक पथ है। यह उत्पन्न हुआ है; यह उत्पन्न नहीं हुआ है; यह उत्पन्न होने के लिए बाध्य है। यह भूतकाल है; यह भविष्यकाल है; यह वर्तमान काल है। इसका भूतकाल का उद्देश्य है; इसका भविष्यकाल का उद्देश्य है; इसका वर्तमान काल का उद्देश्य है। यह आंतरिक है; यह बाह्य है; यह आंतरिक और बाह्य दोनों है। इसका आंतरिक उद्देश्य है; इसका बाह्य उद्देश्य है; इसका आंतरिक और बाह्य दोनों उद्देश्य हैं। :P: इस प्रकार दस गुना विभाजन द्वारा चेतना का समुच्चय होता है।
P = अनुच्छेद 121 देखें।

123. एकल विभाजन द्वारा चेतना का समुच्चय: संपर्क से जुड़ा है।
चेतना का समूह दो प्रकार से विभाजित किया जा सकता है: मूल से जुड़ा हुआ; मूल से जुड़ा हुआ नहीं। मूल नहीं है, मूल के साथ है; मूल नहीं है, मूल के साथ नहीं है। सांसारिक है; अलौकिक है। एक मार्ग से ज्ञात है; दूसरे मार्ग से ज्ञात नहीं है। दोषों का विषय है; दोषों का विषय नहीं है। दोषों से जुड़ा हुआ है;

65

गंदगी से जुड़ा नहीं है। गंदगी से जुड़ा नहीं है, गंदगी की चीज़ है; गंदगी से जुड़ा नहीं है, गंदगी की चीज़ नहीं है। बेड़ियों की चीज़ है; बेड़ियों की चीज़ नहीं है। बेड़ियों से जुड़ा है; बेड़ियों से जुड़ा नहीं है। बेड़ियों से जुड़ा नहीं है, बेड़ियों की चीज़ है; बेड़ियों से जुड़ा नहीं है, बेड़ियों की चीज़ नहीं है।
बंधनों की चीज़ है; बंधनों की चीज़ नहीं है। बंधनों से जुड़ा है; बंधनों से जुड़ा नहीं है। बंधनों से जुड़ा नहीं है, बंधनों की चीज़ है; बंधनों से जुड़ा नहीं है, बंधनों की चीज़ नहीं है। बाढ़ की चीज़ है; बाढ़ की चीज़ नहीं है। बाढ़ से जुड़ा है; बाढ़ से जुड़ा नहीं है। बाढ़ से जुड़ा नहीं है, बाढ़ की चीज़ है; बाढ़ से सम्बन्धित नहीं है, बाढ़ की वस्तु नहीं है। बंधनों की वस्तु है; बंधनों की वस्तु नहीं है। बंधनों से सम्बन्धित है; बंधनों से सम्बन्धित नहीं है। बंधनों से सम्बन्धित नहीं है, बंधनों की वस्तु है; बंधनों से सम्बन्धित नहीं है, बंधनों की वस्तु नहीं है। बाधाओं की वस्तु है; [56] बाधाओं की वस्तु नहीं है। बाधाओं से सम्बन्धित है; बाधाओं से सम्बन्धित नहीं है। बाधाओं से सम्बन्धित नहीं है,

बाधाओं का उद्देश्य है; बाधाओं से सम्बन्धित नहीं है, बाधाओं का उद्देश्य नहीं है। विकृतियों की वस्तु है; विकृतियों की वस्तु नहीं है। विकृतियों से सम्बन्धित है; विकृतियों से सम्बन्धित नहीं है। विकृतियों से सम्बन्धित नहीं है, विकृतियों का उद्देश्य है; विकृतियों से सम्बन्धित नहीं है, विकृतियों का उद्देश्य नहीं है। समझा जाता है; समझा नहीं जाता है। अटैचमेंट का ऑब्जेक्ट है; अटैचमेंट का ऑब्जेक्ट नहीं है। अटैचमेंट से जुड़ा है; अटैचमेंट से जुड़ा नहीं है। अटैचमेंट से जुड़ा नहीं है, अटैचमेंट का ऑब्जेक्ट है; अटैचमेंट से जुड़ा नहीं है, अटैचमेंट का ऑब्जेक्ट नहीं है। करप्शन का ऑब्जेक्ट है; करप्शन का ऑब्जेक्ट नहीं है। करप्ट है; करप्ट नहीं है। करप्शन से जुड़ा है; करप्शन से जुड़ा नहीं है। करप्शन से जुड़ा नहीं है, करप्शन का ऑब्जेक्ट है; करप्शन से जुड़ा नहीं है, करप्शन का ऑब्जेक्ट नहीं है। पहले रास्ते से छोड़ा जाना है; पहले रास्ते से नहीं छोड़ा जाना है। बाद के रास्तों से छोड़ा जाना है; बाद के रास्तों से नहीं छोड़ा जाना है। पहले रास्ते से छोड़ने के लिए रूट है

66

पहला रास्ता; पहले रास्ते से छोड़ने के लिए कोई रूट नहीं है। बाद के रास्तों से छोड़ने के लिए रूट है; बाद के रास्तों से छोड़ने के लिए कोई रूट नहीं है। प्रारंभिक अनुप्रयोग के साथ है; प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना है। निरंतर अनुप्रयोग के साथ है; निरंतर अनुप्रयोग के बिना है। उत्साह के साथ है; उत्साह के बिना है। उत्साह के साथ है; उत्साह के साथ नहीं है। आनंद के साथ है; आनंद के साथ नहीं है। उदासीनता के साथ है; उदासीनता के साथ नहीं है। इच्छा के तल की विशेषता है; इच्छा के तल की विशेषता नहीं है। रूप के तल की विशेषता है; रूप के तल की विशेषता नहीं है। निराकार तल की विशेषता है; निराकार तल की विशेषता नहीं है। समाहित है (अर्थात सांसारिक है); समाहित नहीं है (अर्थात अलौकिक है)। मुक्ति की ओर प्रवृत्त है; मुक्ति की ओर प्रवृत्त नहीं है। निश्चित (परिणामी समय) का है; निश्चित (परिणामी समय) का नहीं है। पार करने योग्य है; पार करने योग्य नहीं है। विलाप के कारण के साथ है; विलाप के कारण के बिना है। [57]

चेतना का त्रिविध विभाजन इस प्रकार है: अच्छा; बुरा; न अच्छा न बुरा। :P इसी प्रकार चेतना का दसविध विभाजन इस प्रकार है।
P = अनुच्छेद 121 देखें।

124. एकल विभाजन द्वारा चेतना का समुच्चय: संपर्क से जुड़ा है।
चेतना का समग्र विभाजन दो प्रकार से किया जा सकता है: शोक का कारण युक्त; शोक का कारण रहित।
चेतना का त्रिगुणित समूह: सुखद अनुभूति से संबंधित; पीड़ादायक अनुभूति से संबंधित; न पीड़ादायक और न ही सुखद अनुभूति से संबंधित। परिणामी;
P 1 : इसमें आंतरिक वस्तु है; इसमें बाह्य वस्तु है; इसमें आंतरिक और बाह्य दोनों वस्तुएँ हैं
बाह्य वस्तु। : पृष्ठ 2 : इस प्रकार चेतना का समुच्चय दस गुना विभाजन द्वारा होता है।
पी* = पैरा देखें। 122. पी 2 = पैरा देखें। 121.
(यह खंड यहीं समाप्त होता है) दोहों पर आधारित
125. एकल विभाजन द्वारा चेतना का समुच्चय: संपर्क से जुड़ा है।

67

चेतना का समूह दो भागों में विभाजित किया जा सकता है: मूल तत्व के साथ होता है; मूल तत्व के साथ नहीं होता है।
चेतना का त्रिविध विभाजन इस प्रकार है: अच्छा; बुरा; न अच्छा न बुरा। :P इसी प्रकार चेतना का दसविध विभाजन इस प्रकार है।
P = अनुच्छेद 121 देखें।

126. एकल विभाजन द्वारा चेतना का समुच्चय: संपर्क से जुड़ा है।
चेतना का द्विभाजन: मूल से संबंधित है; मूल से संबंधित नहीं है। विलाप के कारण से संबंधित है; विलाप के कारण से रहित है।
P = अनुच्छेद 123 देखें।

चेतना का समूह तीन भागों में विभाजित है: अच्छा है; बुरा है; न अच्छा है न बुरा। : पी : इसी प्रकार चेतना का समूह दस भागों में विभाजित है। [58]
P = अनुच्छेद 121 देखें।

127. एकल विभाजन द्वारा चेतना का समुच्चय: संपर्क से जुड़ा है।
चेतना का समूह दो भागों में विभाजित किया जा सकता है: मूल तत्व के साथ होता है; मूल तत्व के साथ नहीं होता है।
चेतना का त्रिगुणात्मक विभाजन इस प्रकार है: सुखद भावना से संबंधित; दुखदायी भावना से संबंधित; न दुखदायी और न ही सुखद भावना से संबंधित। परिणामी;
P 1 : इसमें आंतरिक वस्तु है; इसमें बाह्य वस्तु है; इसमें आंतरिक और बाह्य दोनों वस्तुएँ हैं
बाह्य वस्तु। : पृष्ठ 2 : इस प्रकार चेतना का समुच्चय दस गुना विभाजन द्वारा होता है।
पी^पैरा देखें. 122. पी 2 = पैरा देखें। 121.

128. एकल विभाजन द्वारा चेतना का समुच्चय: संपर्क से जुड़ा है।
चेतना का द्विभाजन: मूल से संबद्ध है; मूल से संबद्ध नहीं है। विलाप के कारण से संबद्ध है; विलाप के कारण से मुक्त है।
P = अनुच्छेद 123 देखें।
चेतना का त्रिविध विभाजन इस प्रकार है: आंतरिक वस्तु; बाह्य वस्तु; आंतरिक और बाह्य दोनों वस्तुएँ।

68
बाह्य वस्तु। :P: इस प्रकार दस गुना विभाजन द्वारा चेतना का समुच्चय होता है।
P = अनुच्छेद 121 देखें।
(यह खंड यहीं समाप्त होता है) त्रिक पर आधारित
129. एकल विभाजन द्वारा चेतना का समूह: संपर्क से जुड़ा है।
चेतना का समूह, दोहरे विभाजन के माध्यम से: मूल तत्व के साथ होता है; मूल तत्व के साथ नहीं होता है।
चेतना का समूह तीन भागों में विभाजित है: अच्छा है; बुरा है; न अच्छा है न बुरा। : पी : इसी प्रकार चेतना का समूह दस भागों में विभाजित है। [59]
P = अनुच्छेद 121 देखें।

130. चेतना का एकल विभाजन द्वारा समुच्चय: संपर्क से जुड़ा है।
चेतना का समूह दोहरे विभाजन के माध्यम से: मूल से जुड़ा है; मूल से नहीं जुड़ा है।
चेतना का त्रिगुणात्मक विभाजन इस प्रकार है: सुखद अनुभूति से संबंधित; पीड़ादायक अनुभूति से संबंधित; न पीड़ादायक और न ही सुखद अनुभूति से संबंधित। इसी प्रकार, चेतना का दसगुणात्मक विभाजन इस प्रकार है।
P= पैराग्राफ 121 देखें।
131. एकल विभाजन द्वारा चेतना का समुच्चय: संपर्क से जुड़ा है।
चेतना का समूह दोहरे विभाजन के माध्यम से: मूल नहीं है, मूल के साथ है; मूल नहीं है, मूल के साथ नहीं है।
चेतना का त्रिविध विभाजन इस प्रकार है: यह परिणामी है; यह परिणामी का उत्पादक है; यह न तो परिणामी है और न ही परिणामी का उत्पादक है। :P: इसी प्रकार चेतना का दसविध विभाजन इस प्रकार है।
P = अनुच्छेद 121 देखें।
132. एकल विभाजन द्वारा चेतना का समुच्चय: संपर्क से जुड़ा है।
चेतना का समग्र रूप से दो भागों में विभाजित किया जा सकता है: सांसारिक; अलौकिक।

69

चेतना का समूह तीन प्रकार से विभाजित है: जो ग्रहण किया जाता है, वह आसक्तियों का विषय होता है; जो ग्रहण नहीं किया जाता, वह आसक्तियों का विषय होता है; जो ग्रहण नहीं किया जाता, वह आसक्तियों का विषय नहीं होता। इसी प्रकार चेतना का समूह दस प्रकार से विभाजित है।
P = अनुच्छेद 121 देखें।

133. एकल विभाजन द्वारा चेतना का समुच्चय: संपर्क से जुड़ा है।
चेतना का समग्र रूप से दो भागों में विभाजित किया जा सकता है: एक तरीके से बोधगम्य; दूसरे तरीके से बोधगम्य नहीं।
चेतना का समूह तीन भागों में विभाजित है: भ्रष्ट है, भ्रष्टता का विषय है; भ्रष्ट नहीं है, भ्रष्टता का विषय है; भ्रष्ट नहीं है, भ्रष्टता का विषय नहीं है। इसी प्रकार चेतना का समूह दस भागों में विभाजित है।
P = अनुच्छेद 121 देखें।
134. एकल विभाजन द्वारा चेतना का समुच्चय: संपर्क से जुड़ा है।
चेतना का समूह दो भागों में विभाजित है: यह विकारों का विषय है; यह विकारों का विषय नहीं है।
चेतना का समग्र विभाजन तीन प्रकार से किया जा सकता है: प्रारंभिक अनुप्रयोग के साथ, निरंतर अनुप्रयोग के साथ; प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, केवल निरंतर अनुप्रयोग के साथ; प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, निरंतर अनुप्रयोग के बिना।
पी: इस प्रकार चेतना का कुल योग दस गुना है।
विभाजन।
P = अनुच्छेद 121 देखें।

135. एकल विभाजन द्वारा चेतना का समूह: संपर्क से जुड़ा है।
चेतना का दो भागों में विभाजन: दोषों से जुड़ा हुआ है; दोषों से नहीं जुड़ा हुआ है।
चेतना का त्रिगुणित विभाजन इस प्रकार है: उत्साह से युक्त; आनंद से युक्त; उदासीनता से युक्त। इसी प्रकार चेतना का दसगुणित विभाजन इस प्रकार है।
P = अनुच्छेद 121 देखें।

70

136. एकल विभाजन द्वारा चेतना का समुच्चय: संपर्क से जुड़ा है।
चेतना का समूह दो प्रकार से विभाजित है: यह दोषों से संबद्ध नहीं है, यह दोषों का विषय है; यह दोषों से संबद्ध नहीं है, यह दोषों का विषय नहीं है।
चेतना का त्रिगुणात्मक विभाजन इस प्रकार है: प्रथम मार्ग द्वारा त्यागा जाना है; पश्चात मार्गों द्वारा त्यागा जाना है; प्रथम मार्ग या पश्चात मार्गों द्वारा नहीं त्यागा जाना है। : पी: इस प्रकार चेतना का दसगुणात्मक विभाजन इस प्रकार है।
P = अनुच्छेद 121 देखें।
137. एकल विभाजन द्वारा चेतना का समुच्चय: संपर्क से जुड़ा है।
चेतना का समूह दोहरे विभाजन के माध्यम से: बंधनों का विषय है; बंधनों का विषय नहीं है।
चेतना का त्रिविध विभाजन इस प्रकार है: प्रथम मार्ग द्वारा त्यागा जाने वाला मूल; पश्चात मार्गों द्वारा त्यागा जाने वाला मूल; और प्रथम या पश्चात मार्गों द्वारा त्यागा जाने वाला कोई मूल नहीं। :P: इसी प्रकार चेतना का दसविध विभाजन है।
पी = पैरा 121 देखें।
138. एकल विभाजन द्वारा चेतना का समुच्चय: संपर्क से जुड़ा है।
चेतना का समूह दो भागों में विभाजित किया जा सकता है: बंधनों से जुड़ा हुआ; बंधनों से नहीं जुड़ा हुआ।
चेतना का त्रिगुणात्मक विभाजन इस प्रकार है: संचयी है; विक्षेपी है; न संचयी है और न ही विक्षेपी है। इसी प्रकार चेतना का दसगुणात्मक विभाजन इस प्रकार है।
P = अनुच्छेद 121 देखें।

139. एकल विभाजन द्वारा चेतना का समुच्चय: संपर्क से जुड़ा है।
चेतना का समग्र विभाजन दो प्रकार से किया जा सकता है: यह बंधनों से संबद्ध नहीं है, यह बंधनों का विषय है; यह बंधनों से संबद्ध नहीं है, यह बंधनों का विषय नहीं है।
चेतना का त्रिविध विभाजन इस प्रकार है:

71

सात अलौकिक अवस्थाओं में से; अंतिम अलौकिक अवस्था में से; न तो सात अलौकिक अवस्थाओं में से और न ही अंतिम अलौकिक अवस्था में से। : P : इस प्रकार दस गुना विभाजन द्वारा चेतना का समुच्चय है।
P = अनुच्छेद 121 देखें।
140. एकल विभाजन द्वारा चेतना का समुच्चय: संपर्क से जुड़ा है।
चेतना का समूह दोहरे विभाजन के माध्यम से: संबंधों का विषय है; संबंधों का विषय नहीं है।
चेतना का त्रिगुणात्मक विभाजन इस प्रकार है: निम्न; उदात्त; असीम। :P: इसी प्रकार चेतना का दसगुणात्मक विभाजन इस प्रकार है।
P = अनुच्छेद 121 देखें।
141. चेतना का एकल विभाजन द्वारा समुच्चय: संपर्क से जुड़ा है।
चेतना का समग्र विभाजन दो प्रकार से किया जा सकता है: यह संबंधों से जुड़ा है; यह संबंधों से जुड़ा नहीं है।
चेतना का समूह तीन भागों में विभाजित है: निम्न विषय, उच्च विषय और असीम विषय। इसी प्रकार, चेतना का समूह दस भागों में विभाजित है। (पैरा 121 देखें)

142. एकल विभाजन द्वारा चेतना का समूह: संपर्क से जुड़ा है।
चेतना का समग्र विभाजन दो प्रकार से किया जा सकता है: यह बंधनों से संबद्ध नहीं है, यह बंधनों का विषय है; यह बंधनों से संबद्ध नहीं है, यह बंधनों का विषय नहीं है।
चेतना का त्रिगुणात्मक विभाजन इस प्रकार है: निम्न; मध्य; श्रेष्ठ। इसी प्रकार, चेतना का दसगुणात्मक विभाजन इस प्रकार है।
P = अनुच्छेद 121 देखें।

143. एकल विभाजन द्वारा चेतना का समुच्चय: संपर्क से जुड़ा है।
चेतना का समूह दोहरे विभाजन के माध्यम से: बाढ़ का विषय है; बाढ़ का विषय नहीं है।
चेतना का त्रिगुणात्मक विभाजन: एक निश्चित (परिणामी समय के साथ) झूठी (अवस्था है); एक सही (अवस्था के साथ) है।

72

निश्चित (परिणामी समय); कोई निश्चित (परिणामी समय) नहीं है। : पी : इस प्रकार दस गुना विभाजन द्वारा चेतना का समुच्चय है।
P = अनुच्छेद 121 देखें।
144. चेतना का एकल विभाजन द्वारा समुच्चय; संपर्क से जुड़ा है।
चेतना का समूह दो भागों में विभाजित किया जा सकता है: यह बाढ़ से संबंधित है; यह बाढ़ से संबंधित नहीं है।
चेतना का त्रिविध विभाजन इस प्रकार है: पथ इसका विषय है; पथ इसका कारण है; पथ इसका प्रमुख कारक है। : P : इसी प्रकार चेतना का दसविध विभाजन इस प्रकार है।
P = अनुच्छेद 121 देखें।

145. एकल विभाजन द्वारा चेतना का समुच्चय: संपर्क से जुड़ा है।
चेतना का समूह दोहरे विभाजन के माध्यम से: बाढ़ से संबंधित नहीं है, बाढ़ का विषय है; बाढ़ से संबंधित नहीं है, बाढ़ का विषय नहीं है।

चेतना का समूह तीन भागों में विभाजित है: उत्पन्न हुआ है; उत्पन्न नहीं हुआ है; उत्पन्न होना ही है। :P: इसी प्रकार चेतना का समूह दस भागों में विभाजित है।
P = अनुच्छेद 121 देखें।
146. एकल विभाजन द्वारा चेतना का समुच्चय: संपर्क से जुड़ा है।
चेतना का समूह दोहरे विभाजन के माध्यम से: बंधनों का विषय है; बंधनों का विषय नहीं है।
चेतना का समूह तीन भागों में विभाजित है: भूतकाल; भविष्यकाल; वर्तमानकाल। इसी प्रकार, चेतना का समूह दस भागों में विभाजित है।
P = अनुच्छेद 121 देखें।
147. एकल विभाजन द्वारा चेतना का समुच्चय: संपर्क से जुड़ा है।
चेतना का समूह दो भागों में विभाजित किया जा सकता है: यह बंधनों से जुड़ा है; यह बंधनों से नहीं जुड़ा है।
चेतना का त्रिविध विभाजन इस प्रकार है: भूतकाल का कर्ता; भविष्यकाल का कर्ता; वर्तमानकाल का कर्ता। :P: इसी प्रकार चेतना का दसविध विभाजन इस प्रकार है।
P = अनुच्छेद 121 देखें।

73

148. एकल विभाजन द्वारा चेतना का समुच्चय: संपर्क से जुड़ा है।
चेतना का समूह दोहरे विभाजन के अनुसार: बंधनों से संबद्ध नहीं है, बंधनों का विषय है; बंधनों से संबद्ध नहीं है, बंधनों का विषय नहीं है।
चेतना का समूह तीन भागों में विभाजित है: आंतरिक; बाह्य; आंतरिक और बाह्य दोनों। इसी प्रकार चेतना का समूह दस भागों में विभाजित है।
P = अनुच्छेद 121 देखें।
149. एकल विभाजन द्वारा चेतना का समुच्चय: संपर्क से जुड़ा है।
चेतना का समूह दो भागों में विभाजित है: यह बाधाओं का विषय है; यह बाधाओं का विषय नहीं है।
चेतना का त्रिविध विभाजन इस प्रकार है: आंतरिक विषय; बाह्य विषय; आंतरिक और बाह्य दोनों विषय। :P: इसी प्रकार चेतना का दसविध विभाजन है।
P = अनुच्छेद 121 देखें।
(यहाँ पारस्परिक वृद्धि का खंड समाप्त होता है) [60]
चेतना का सात भागों में विभाजन इस प्रकार है: अच्छा है; बुरा है; न अच्छा है न बुरा; इच्छा के तल का लक्षण है; रूप के तल का लक्षण है; निराकार तल का लक्षण है; और इसमें कुछ भी शामिल नहीं है (अर्थात् यह सांसारिक से परे है)। इस प्रकार चेतना का सात भागों में विभाजन इस प्रकार है।
चेतना का सात भागों में विभाजन इस प्रकार है: सुखद अनुभूति से जुड़ा हुआ; पीड़ादायक अनुभूति से जुड़ा हुआ; न पीड़ादायक और न ही सुखद अनुभूति से जुड़ा हुआ; इच्छा के तल का लक्षण है; रूप के तल का लक्षण है; निराकार तल का लक्षण है; इसमें शामिल नहीं है (अर्थात् यह सांसारिक से परे है)। :P: आंतरिक वस्तु है; बाह्य वस्तु है; आंतरिक और बाह्य दोनों वस्तुएँ हैं; इच्छा के तल का लक्षण है; रूप के तल का लक्षण है; निराकार तल का लक्षण है; इसमें शामिल नहीं है (अर्थात् यह सांसारिक से परे है)। इस प्रकार चेतना का सात भागों में विभाजन इस प्रकार है।
P= पैराग्राफ 122 देखें।

74

चेतना का चौबीस भागों में विभाजन: नेत्र संपर्क से उत्पन्न चेतना का समुच्चय अच्छा है; बुरा है; न अच्छा है न बुरा है। कान संपर्क से उत्पन्न चेतना का समुच्चय। नाक संपर्क से उत्पन्न चेतना का समुच्चय। जीभ संपर्क से उत्पन्न चेतना का समुच्चय। शरीर संपर्क से उत्पन्न

चेतना का समुच्चय। मन संपर्क से उत्पन्न चेतना का समुच्चय अच्छा है; बुरा है; न अच्छा है न बुरा है। नेत्र चेतना; कान चेतना; नाक चेतना; जीभ चेतना; शरीर चेतना; मन चेतना। इस प्रकार चेतना का चौबीस भागों में विभाजन होता है।

P = प्रत्येक को पहले उदाहरण के अनुसार पूरा करें।

चेतना का चौबीस गुना विभाजन इस प्रकार है: नेत्र संपर्क से उत्पन्न चेतना का समूह सुखद अनुभूति से जुड़ा होता है; पीड़ादायक अनुभूति से जुड़ा होता है; न पीड़ादायक और न ही सुखद अनुभूति से जुड़ा होता है। : P 1 : इसमें आंतरिक वस्तु होती है; इसमें बाह्य वस्तु होती है; इसमें आंतरिक और बाह्य दोनों वस्तुएँ होती हैं। यह कान के संपर्क से उत्पन्न होता है। : P 2 : नाक के संपर्क से उत्पन्न होता है। : P 2 : जीभ के संपर्क से उत्पन्न होता है। : P 2 : शरीर के संपर्क से उत्पन्न होता है। : P 2 : मन के संपर्क से उत्पन्न चेतना का समूह rP 1 : इसमें आंतरिक वस्तु होती है; इसमें बाह्य वस्तु होती है; इसमें आंतरिक और बाह्य दोनों वस्तुएँ होती हैं। नेत्र चेतना; कान चेतना; नाक चेतना; जीभ चेतना; शरीर चेतना; मन चेतना। इस प्रकार चौबीस गुना विभाजन द्वारा चेतना का समूह बनता है।

P x = पैराग्राफ 122 देखें। P 2 = प्रत्येक को पहले उदाहरण के अनुसार पूरा करें।

चेतना का तीस गुना विभाजन: नेत्र संपर्क से उत्पन्न चेतना का समुच्चय इच्छा तल की विशेषता है; रूप तल की विशेषता है; निराकार तल की विशेषता है; इसमें शामिल नहीं है (अर्थात् यह अलौकिक है)। कान संपर्क से उत्पन्न। :P: नाक संपर्क से उत्पन्न।

P: जीभ के संपर्क से होता है। :P: शरीर के संपर्क से होता है। :P:

मन के संपर्क से उत्पन्न चेतना का समूह इच्छा के तल की विशेषता है; रूप के तल की विशेषता है; निराकार तल की विशेषता है; इसमें शामिल नहीं है (अर्थात् यह अलौकिक है)। [61] नेत्र चेतना; कान चेतना; नाक चेतना; जीभ चेतना; शरीर चेतना; मन चेतना। इस प्रकार तीस गुना विभाजन द्वारा चेतना का समूह है।

P = प्रत्येक को पहले उदाहरण के अनुसार पूरा करें।

75

चेतना का अनेक भागों में विभाजन: नेत्र संपर्क से उत्पन्न चेतना का समुच्चय अच्छा है; बुरा है; न अच्छा है न बुरा; इच्छा के तल का लक्षण है; रूप के तल का लक्षण है; निराकार तल का लक्षण है; इसमें शामिल नहीं है (अर्थात् यह अलौकिक है)। कान संपर्क से उत्पन्न। :P 1 : नाक संपर्क से उत्पन्न। : P 1 : जीभ संपर्क से उत्पन्न। iP 1 : शरीर संपर्क से उत्पन्न। iP 1 : मन संपर्क से उत्पन्न चेतना का समुच्चय अच्छा है; बुरा है; न अच्छा है न बुरा; इच्छा के तल का लक्षण है; रूप के तल का लक्षण है; निराकार तल का लक्षण है; इसमें शामिल नहीं है (अर्थात् यह अलौकिक है)। नेत्र चेतना;

पृष्ठ 2: मन चेतना। इस प्रकार यह चेतना का समूह है।

अनेक विभाजनों के माध्यम से।

P 1 = प्रत्येक को पहले उदाहरण के रूप में पूरा करें। P 2 = मध्यवर्ती इंद्रियां।

चेतना का एक अन्य विविध विभाजन इस प्रकार है: नेत्र संपर्क से उत्पन्न चेतना का समूह सुखद अनुभूति से जुड़ा होता है; : P 1 : इसमें आंतरिक वस्तु होती है; इसमें बाह्य वस्तु होती है; इसमें आंतरिक और बाह्य दोनों वस्तुएँ होती हैं; यह इच्छा तल की विशेषता है; यह रूप तल की विशेषता है; यह निराकार तल की विशेषता है; यह इसमें शामिल नहीं है (अर्थात् यह अलौकिक है)। यह कान के संपर्क से उत्पन्न होता है। : P 2 : यह नाक के संपर्क से उत्पन्न होता है।

P 2 : जीभ के संपर्क से उत्पन्न, :P 2 : शरीर के संपर्क से उत्पन्न। : P 2 :

मन के संपर्क से उत्पन्न चेतना का समूह सुखद अनुभूति से जुड़ा होता है; : P 1 : इसमें आंतरिक वस्तु होती है; इसमें बाह्य वस्तु होती है; इसमें आंतरिक और बाह्य दोनों वस्तुएँ होती हैं; यह इच्छा के तल की विशेषता है; यह रूप के तल की विशेषता है; यह निराकार तल की विशेषता है; यह इसमें शामिल नहीं है (अर्थात् यह अलौकिक है)। नेत्र चेतना; कान चेतना; नाक चेतना; जीभ चेतना; शरीर चेतना; मन चेतना। इस प्रकार अनेक विभाजनों द्वारा चेतना का समूह बनता है।

P 1 = पैराग्राफ 122 देखें। P 2 = प्रत्येक को पहले उदाहरण के अनुसार पूरा करें।

इसे चेतना का समूह कहा जाता है।

(यह खंड यहीं समाप्त होता है) अभिधम्म के अनुसार विश्लेषण

76

3. पूछताछ
150. पाँच समुच्चय इस प्रकार हैं: पदार्थ की गुणवत्ता का समुच्चय,
भावना का समूह, बोध का समूह, मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह, चेतना का समूह।
151. पाँचों स्कंधों में से कितने अच्छे हैं; कितने बुरे हैं; कितने न अच्छे हैं न बुरे? :P: कितने विलाप करने योग्य हैं; कितने विलाप न करने योग्य हैं? [62]
P = शेष उपयुक्त त्रिक और युग्मक।

1. त्रिक
152. भौतिक गुणों का समूह न तो अच्छा है और न ही बुरा। चार समूह कभी अच्छे होते हैं, कभी बुरे होते हैं और कभी न अच्छे होते हैं। दो समूहों को न तो सुखद, न दुखदायी और न ही दुखदायी कहा जा सकता है। तीन समूह कभी सुखद, कभी दुखदायी और कभी दुखदायी होते हैं। भौतिक गुणों का समूह न तो परिणामदायी है और न ही परिणाम उत्पन्न करने वाला। चार समूह कभी परिणामदायी होते हैं, कभी परिणाम उत्पन्न करने वाले होते हैं और कभी न तो परिणामदायी होते हैं और न ही परिणाम उत्पन्न करने वाले। भौतिक गुणों का समूह कभी लालसा और भ्रामक दृष्टि से वश में किया जाता है और आसक्तियों का विषय होता है; कभी वश में नहीं किया जाता, फिर भी आसक्तियों का विषय होता है। चार समूह कभी वश में किए जाते हैं और आसक्तियों के विषय होते हैं; कभी वश में नहीं किए जाते, फिर भी आसक्तियों के विषय होते हैं; कभी वश में नहीं किए जाते, फिर भी आसक्तियों का विषय होते हैं।
भौतिक गुणों का समूह निष्प्रभावी है, बल्कि विकारों का विषय है। चार समूह कभी-कभी विकृत होते हैं, विकारों के विषय होते हैं; कभी-कभी विकृत नहीं होते, विकारों के विषय होते हैं; कभी-कभी विकृत नहीं होते, विकारों के विषय नहीं होते। भौतिक गुणों का समूह प्रारंभिक प्रयोग रहित है, निरंतर प्रयोग रहित है। तीन समूह कभी-कभी प्रारंभिक प्रयोग के साथ होते हैं, निरंतर प्रयोग के साथ होते हैं; कभी-कभी प्रारंभिक प्रयोग रहित होते हैं।

77

केवल निरंतर अनुप्रयोग; कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, निरंतर अनुप्रयोग के बिना। मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के साथ, कभी-कभी निरंतर अनुप्रयोग के साथ होता है; कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, केवल निरंतर अनुप्रयोग के साथ होता है; कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, निरंतर अनुप्रयोग के बिना होता है; कभी-कभी इसे न तो प्रारंभिक अनुप्रयोग के साथ, न ही निरंतर अनुप्रयोग के साथ, न ही प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, न ही निरंतर अनुप्रयोग के साथ, और न ही प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, न ही निरंतर अनुप्रयोग के साथ कहा जाना चाहिए। भौतिक गुणों के समूह को न तो उत्साह के साथ, न ही आनंद के साथ, और न ही उदासीनता के साथ कहा जाना चाहिए। भावनाओं का समूह कभी-कभी उत्साह के साथ होता है; आनंद के साथ नहीं होता; उदासीनता के साथ नहीं होता; कभी-कभी इसे उत्साह के साथ नहीं कहा जाना चाहिए। तीन समूह कभी-कभी उत्साह के साथ होते हैं; कभी-कभी आनंद के साथ होते हैं; कभी-कभी उदासीनता के साथ होते हैं; कभी-कभी इसे न तो उत्साह के साथ, न ही आनंद के साथ, और न ही उदासीनता के साथ कहा जाना चाहिए।
भौतिक गुणों का समूह न तो प्रथम मार्ग से और न ही पश्चात मार्गों से त्यागा जा सकता है। चार समूह कभी-कभी प्रथम मार्ग से त्यागे जाते हैं; कभी-कभी पश्चात मार्गों से त्यागे जाते हैं; कभी-कभी प्रथम मार्ग से और न ही पश्चात मार्गों से त्यागे जाते हैं। भौतिक गुणों के समूह का कोई मूल नहीं है जिसे प्रथम मार्ग से और न ही पश्चात मार्गों से त्यागा जा सके। चार समूहों के मूल कभी-कभी प्रथम मार्ग से त्यागे जाते हैं; कभी-कभी पश्चात मार्गों से त्यागे जाते हैं; कभी-कभी उनके मूल नहीं होते जिन्हें प्रथम मार्ग से और न ही पश्चात मार्गों से त्यागा जा सके। भौतिक गुणों का समूह न तो संचयी है और न ही विक्षेपी (पुनर्जन्म और मृत्यु का निरंतर चक्र)। चार समूह कभी-कभी संचयी होते हैं; कभी-कभी विक्षेपी होते हैं; कभी-कभी न तो संचयी होते हैं और न ही विक्षेपी। भौतिक गुणों का समूह न तो सात अलौकिक अवस्थाओं का है और न ही अंतिम अलौकिक अवस्था का। चार समूह कभी-कभी सात अलौकिक अवस्थाओं के होते हैं; कभी-कभी अंतिम अलौकिक अवस्था के होते हैं; कभी-कभी ये सात अलौकिक अवस्थाओं में से किसी के भी नहीं होते, न ही अंतिम अलौकिक अवस्था के। भौतिक गुणों का कुल योग निम्न होता है। चार समुच्चय कभी निम्न होते हैं; कभी उदात्त होते हैं; कभी

78

असीम हैं। भौतिक गुणों के समूह का कोई उद्देश्य नहीं है। चार समूहों के कभी निम्न उद्देश्य होते हैं; कभी उदात्त उद्देश्य होते हैं; कभी असीम उद्देश्य होते हैं; कभी-कभी यह नहीं कहा जा सकता कि उनके निम्न उद्देश्य हैं; [63] उदात्त उद्देश्य हैं या असीम उद्देश्य हैं। भौतिक गुणों का समूह मध्यवर्ती है। चार समूह कभी निम्न होते हैं; कभी मध्यवर्ती होते हैं; कभी श्रेष्ठ होते हैं। भौतिक गुणों के समूह का कोई निश्चित (परिणाम समय) नहीं होता है। चार समूह कभी निश्चित (परिणाम समय) के साथ गलत (अवस्थाएँ) होते हैं; कभी निश्चित (परिणाम समय) के साथ सही (अवस्थाएँ) होते हैं; कभी-कभी उनका कोई निश्चित (परिणाम समय) नहीं होता है।
भौतिक गुणों के समूह का कोई लक्ष्य नहीं होता। चार समूहों का कभी-कभी पथ उनका लक्ष्य होता है; कभी-कभी पथ उनका कारण होता है; कभी-कभी पथ उनका प्रमुख कारक होता है; कभी-कभी यह कहना उचित नहीं होगा कि पथ उनका लक्ष्य है, पथ उनका कारण है या पथ उनका प्रमुख कारक है। (पाँच समूह) कभी उत्पन्न होते हैं; कभी उत्पन्न नहीं होते; कभी-कभी उत्पन्न होना ही होता है। कभी भूतकाल होते हैं; कभी-कभी भविष्यकाल होते हैं; कभी-कभी वर्तमानकाल होते हैं। भौतिक गुणों के समूह का कोई लक्ष्य नहीं होता। चार समूहों के कभी-कभी भूतकाल के लक्ष्य होते हैं; कभी-कभी भविष्यकाल के लक्ष्य होते हैं; कभी-कभी वर्तमानकाल के लक्ष्य होते हैं; कभी-कभी यह कहना उचित नहीं होगा कि उनके भूतकाल के लक्ष्य हैं, भविष्यकाल के लक्ष्य हैं या वर्तमानकाल के लक्ष्य हैं। (पाँच समूह) कभी-कभी आंतरिक होते हैं; कभी-कभी बाह्य होते हैं; कभी-कभी आंतरिक और बाह्य दोनों होते हैं। भौतिक गुणों के समूह का कोई लक्ष्य नहीं होता। चार समूहों के कभी-कभी आंतरिक लक्ष्य होते हैं; कभी-कभी बाह्य लक्ष्य होते हैं; कभी-कभी आंतरिक और बाह्य दोनों लक्ष्य होते हैं; कभी-कभी यह कहना उचित नहीं होगा कि उनके आंतरिक लक्ष्य हैं, बाह्य लक्ष्य हैं या आंतरिक और बाह्य दोनों लक्ष्य हैं। चार समूह अदृश्य होते हैं, अप्रभावित होते हैं। भौतिक गुणों का समूह कभी-कभी दृश्यमान होता है, कभी-कभी प्रभावित होता है; कभी-कभी जो दिखाई नहीं देता, वह प्रभाव डालता है; कभी-कभी जो दिखाई नहीं देता, वह प्रभाव नहीं डालता।
2. दोहे
153. चार समूह मूल नहीं हैं। मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह कभी मूल होता है, कभी नहीं होता। भौतिक गुणों का समूह मूल के साथ नहीं होता। चार समूहों का समूह कभी मूल के साथ होता है, कभी नहीं होता। भौतिक गुणों का समूह मूल के साथ नहीं होता।

79

मूल से संबद्ध। चार समूह कभी-कभी मूल से संबद्ध होते हैं; कभी-कभी मूल से संबद्ध नहीं होते। भौतिक गुणों के समूह को यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वह मूल के साथ भी है या मूल के साथ है लेकिन मूल नहीं है। तीन समूहों को यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वह मूल के साथ भी है; (वे) कभी-कभी मूल के साथ होते हैं लेकिन मूल नहीं होते; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वह मूल के साथ होते हैं लेकिन मूल नहीं होते। मानसिक सहवर्ती समूहों का समूह कभी-कभी मूल के साथ भी होता है; कभी-कभी मूल के साथ होता है लेकिन मूल नहीं होता; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वह मूल के साथ भी है या मूल के साथ है लेकिन मूल नहीं है। भौतिक गुणों के समूह को यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वह मूल के साथ भी है या मूल के साथ संबद्ध है लेकिन मूल नहीं है। तीन समूहों को यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वह मूल के साथ भी हैं; (वे) कभी-कभी मूल के साथ संबद्ध होते हैं लेकिन मूल नहीं होते; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वह मूल के साथ संबद्ध हैं लेकिन मूल नहीं हैं। मानसिक सहवर्ती समूहों का समूह कभी-कभी मूल के साथ भी होता है; कभी-कभी मूल के साथ संबद्ध होता है लेकिन मूल नहीं होता; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि जड़ है, जड़ से भी जुड़ी हुई है या जड़ से जुड़ी हुई है लेकिन जड़ नहीं है। भौतिक गुणों का समूह जड़ नहीं है, जड़ के साथ नहीं है। [64] तीन समूह कभी-कभी जड़ नहीं होते, जड़ के साथ होते हैं; कभी-कभी जड़ नहीं होते, जड़ के साथ नहीं होते। मानसिक सहवर्ती का समूह कभी-कभी जड़ नहीं होता, जड़ के साथ होता है; कभी-कभी जड़ नहीं होता, जड़ के साथ नहीं होता; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि जड़ नहीं है, जड़ के साथ है या जड़ नहीं है, जड़ के साथ नहीं है। (1)
(पांचों समुच्चय) कारण सहित हैं। सशर्त हैं।
चार समुच्चय अदृश्य हैं। भौतिक गुणों का समुच्चय कभी दृश्यमान होता है; कभी अदृश्य होता है। चार समुच्चय अप्रभावित हैं। भौतिक गुणों का समुच्चय कभी प्रभावित होता है; कभी प्रभावित नहीं होता। भौतिक गुणों का समुच्चय भौतिक है। चार समुच्चय भौतिक नहीं

हैं। भौतिक गुणों का समुच्चय सांसारिक है। चार समुच्चय कभी सांसारिक होते हैं; कभी अलौकिक होते हैं। (पाँच समुच्चय) एक तरीके से ज्ञात किए जा सकते हैं; दूसरे तरीके से ज्ञात नहीं किए जा सकते। (2)
चार समूह दोष नहीं हैं। मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह कभी दोष होता है, कभी दोष नहीं होता। भौतिक गुणों का समूह दोष का विषय है।

80

दोष। चार समूह कभी-कभी दोषों के विषय होते हैं; कभी-कभी दोषों के विषय नहीं होते। भौतिक गुणों का समूह दोषों से संबंधित नहीं है। चार समूह कभी-कभी दोषों से संबंधित होते हैं; कभी-कभी दोषों से संबंधित नहीं होते। भौतिक गुणों के समूह को दोष और दोषों का विषय नहीं कहा जाना चाहिए; यह दोषों का विषय तो है, लेकिन स्वयं दोष नहीं है। तीन समूहों को दोष और दोषों का विषय नहीं कहा जाना चाहिए; कभी-कभी वे दोषों के विषय होते हैं, लेकिन स्वयं दोष नहीं होते; कभी-कभी उन्हें दोषों का विषय तो कहा जाना चाहिए, लेकिन स्वयं दोष नहीं होते। मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह कभी-कभी दोष और दोषों का विषय होता है; कभी-कभी दोषों का विषय तो होता है, लेकिन स्वयं दोष नहीं होता; कभी-कभी उन्हें दोषों का विषय तो कहा जाना चाहिए, लेकिन स्वयं दोष नहीं होते। भौतिक गुणों के समूह को अशुद्धता से संबंधित या अशुद्धता से संबंधित लेकिन स्वयं अशुद्धता न कहना उचित नहीं है। तीन समूहों को अशुद्धता से संबंधित या अशुद्धता से संबंधित कहना उचित नहीं है; (वे) कभी-कभी अशुद्धता से संबंधित होते हैं लेकिन अशुद्धता नहीं होते; कभी-कभी अशुद्धता से संबंधित लेकिन स्वयं अशुद्धता न कहना उचित नहीं है। मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह कभी-कभी अशुद्धता से संबंधित या अशुद्धता से संबंधित होता है; कभी-कभी अशुद्धता से संबंधित लेकिन स्वयं अशुद्धता नहीं होता; कभी-कभी अशुद्धता से संबंधित या अशुद्धता से संबंधित लेकिन स्वयं अशुद्धता न कहना उचित नहीं है। भौतिक गुणों का समूह अशुद्धता से संबंधित नहीं है, अशुद्धता का विषय है। चार समूह कभी-कभी अशुद्धता से संबंधित नहीं होते, अशुद्धता के विषय होते हैं; कभी-कभी अशुद्धता से संबंधित नहीं होते, अशुद्धता के विषय नहीं होते। कभी-कभी ऐसा नहीं कहा जाना चाहिए कि वे अशुद्धियों से संबंधित नहीं हैं, अशुद्धियों के विषय हैं या अशुद्धियों से संबंधित नहीं हैं, अशुद्धियों के विषय नहीं हैं। (3)
चार समूह बंधन नहीं हैं। मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह कभी बंधन होता है, कभी नहीं होता। भौतिक गुणों का समूह बंधनों का विषय है। चार समूह कभी बंधनों के विषय होते हैं, कभी नहीं होते। भौतिक गुणों का समूह बंधनों का विषय नहीं है।

81

बंधनों से संबद्ध। चार समूह कभी-कभी बंधनों से संबद्ध होते हैं; कभी-कभी बंधनों से संबद्ध नहीं होते। भौतिक गुणों के समूह को बंधन और बंधनों का विषय नहीं कहा जाना चाहिए; (यह) बंधनों का विषय तो है, पर बंधन स्वयं नहीं है। तीन समूहों को बंधन और बंधनों का विषय नहीं कहा जाना चाहिए; [65] (वे) कभी-कभी बंधनों का विषय तो होते हैं, पर बंधन स्वयं नहीं होते; कभी-कभी उन्हें बंधनों का विषय तो कहा जाना चाहिए, पर बंधन स्वयं नहीं होते। मानसिक सहवर्ती समूहों का समूह कभी-कभी बंधन और बंधनों का विषय होता है; कभी-कभी बंधनों का विषय तो होता है, पर बंधन स्वयं नहीं होता; कभी-कभी उन्हें बंधन और बंधनों का विषय तो कहा जाना चाहिए, पर बंधन स्वयं नहीं होता। भौतिक गुणों के समूह को बंधन और बंधनों से संबद्ध तो कहा जाना चाहिए, पर पर बंधन स्वयं नहीं होता। तीन समूहों को कभी-कभी बंधनों से जुड़ा हुआ नहीं कहा जाना चाहिए; (वे) कभी-कभी बंधनों से जुड़े होते हैं लेकिन बंधन नहीं होते; कभी-कभी उन्हें बंधनों से जुड़ा हुआ नहीं कहा जाना चाहिए लेकिन बंधन नहीं होते। मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह कभी-कभी बंधनों से जुड़ा होता है; कभी-कभी बंधनों से जुड़ा होता है लेकिन बंधन नहीं होता; कभी-कभी उन्हें बंधनों से जुड़ा हुआ या बंधनों से जुड़ा हुआ लेकिन बंधन नहीं कहा जाना चाहिए। भौतिक गुणों का समूह बंधनों से जुड़ा नहीं होता, बंधनों का विषय होता है। चार समूह कभी-कभी बंधनों से जुड़े नहीं होते, बंधनों के विषय होते हैं; कभी-कभी बंधनों से जुड़े नहीं होते, बंधनों के विषय नहीं होते; कभी-कभी उन्हें बंधनों से जुड़ा नहीं होता, बंधनों के विषय होते हैं या बंधनों से जुड़ा नहीं होता, बंधनों का विषय नहीं होते कहा जाना चाहिए। (4)
चार समूह बंधन नहीं हैं। मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह कभी बंधन होता है, कभी नहीं। भौतिक गुणों का समूह बंधनों का विषय होता है। चार समूह कभी बंधनों के विषय होते हैं, कभी नहीं होते। भौतिक गुणों का समूह बंधनों से संबद्ध नहीं होता। चार समूह कभी बंधनों से संबद्ध होते हैं, कभी नहीं होते। भौतिक गुणों के समूह को बंधन का विषय नहीं कहा जाना चाहिए; यह बंधनों का विषय तो है, पर बंधन नहीं है। तीन समूहों को बंधन का विषय नहीं कहा जाना चाहिए; वे कभी बंधनों के विषय होते हैं, पर बंधन नहीं होते; कभी-कभी ऐसा नहीं कहा जाना चाहिए।

82

संबंधों के विषय होते हुए भी वे स्वयं संबंध नहीं होते। मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह कभी-कभी संबंध होता है और संबंधों का विषय भी होता है; कभी-कभी संबंध का विषय होता है लेकिन संबंध नहीं होता; कभी-कभी यह कहना उचित नहीं होगा कि यह संबंध का विषय भी है या संबंध का विषय है लेकिन संबंध नहीं है। भौतिक गुणों के समूह को यह कहना उचित नहीं होगा कि यह संबंध से जुड़ा हुआ है या संबंध से जुड़ा हुआ है लेकिन संबंध नहीं है। तीन समूहों को यह कहना उचित नहीं होगा कि वे संबंध से जुड़े हुए भी हैं; (वे) कभी-कभी संबंध से जुड़े होते हैं लेकिन संबंध नहीं होते; कभी-कभी यह कहना उचित नहीं होगा कि वे संबंध से जुड़े हुए हैं लेकिन संबंध नहीं हैं। मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह कभी-कभी संबंध होता है और संबंधों से जुड़ा हुआ भी होता है; कभी-कभी संबंध से जुड़ा होता है लेकिन संबंध नहीं होता; कभी-कभी यह कहना उचित नहीं होगा कि यह संबंध से जुड़ा हुआ है या संबंध से जुड़ा हुआ है लेकिन संबंध नहीं है। भौतिक गुणों का समूह संबंधों से जुड़ा हुआ नहीं है, बल्कि संबंधों का विषय है। चार समूह कभी-कभी संबंधों से संबद्ध नहीं होते हैं, संबंधों के विषय होते हैं; कभी-कभी संबंधों से संबद्ध नहीं होते हैं, संबंधों के विषय नहीं होते हैं; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वे संबंधों से संबद्ध नहीं हैं, संबंधों के विषय हैं या संबंधों से संबद्ध नहीं हैं, संबंधों के विषय नहीं हैं। (5)

चार समूह बाढ़ नहीं हैं। :P: बंधन नहीं हैं। :P: [66] बाधाएँ नहीं हैं। मानसिक सहवर्ती का समूह कभी बाधा होता है; कभी बाधा नहीं होता।

भौतिक गुणों का समूह बाधाओं का कारण है। चार समूह कभी-कभी बाधाओं का कारण होते हैं; कभी-कभी नहीं होते। भौतिक गुणों का समूह बाधाओं से संबंधित नहीं है। चार समूह कभी-कभी बाधाओं से संबंधित होते हैं; कभी-कभी नहीं होते। भौतिक गुणों के समूह को बाधा और बाधाओं का कारण नहीं कहना चाहिए; यह बाधाओं का कारण तो है, लेकिन स्वयं बाधा नहीं है। तीन समूहों को बाधा और बाधाओं का कारण नहीं कहना चाहिए; वे कभी-कभी बाधाओं का कारण होते हैं, लेकिन स्वयं बाधा नहीं होते; कभी-कभी उन्हें बाधा और बाधाओं का कारण नहीं कहना चाहिए। मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह कभी-कभी बाधा और बाधाओं का कारण होता है; कभी-कभी बाधाओं का कारण तो होता है, लेकिन स्वयं बाधा नहीं होता। कभी-कभी इसे बाधा नहीं कहा जाना चाहिए, बाधाओं का उद्देश्य या बाधाओं का लक्ष्य बाधा नहीं है। भौतिक गुणों का कुल योग नहीं होना चाहिए।

83

यह कहा जा सकता है कि कोई अवरोध अन्य अवरोधों से भी जुड़ा हुआ है या अवरोधों से जुड़ा हुआ है लेकिन अवरोध नहीं है। तीन समूहों को यह नहीं कहा जाना चाहिए कि कोई अवरोध अन्य अवरोधों से भी जुड़ा हुआ है; (वे) कभी-कभी अवरोधों से जुड़े होते हैं लेकिन अवरोध नहीं होते; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि कोई अवरोधों से जुड़ा हुआ है लेकिन अवरोध नहीं है। मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह कभी-कभी अवरोध अन्य अवरोधों से भी जुड़ा हुआ होता है; कभी-कभी अवरोधों से जुड़ा होता है लेकिन अवरोध नहीं होता; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि कोई अवरोध अन्य अवरोधों से भी जुड़ा हुआ है या अवरोधों से जुड़ा हुआ है लेकिन अवरोध नहीं है। भौतिक गुणों का समूह अवरोधों से जुड़ा नहीं होता, अवरोधों का विषय होता है। चार समूह कभी-कभी अवरोधों से जुड़े नहीं होते, अवरोधों के विषय होते हैं; कभी-कभी अवरोधों से जुड़े नहीं होते, अवरोधों के विषय नहीं होते; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि, बाधाओं से संबंधित नहीं हैं, बाधाओं के विषय हैं या बाधाओं से संबंधित नहीं हैं, बाधाओं के विषय नहीं हैं। (8)

P = बाधाओं के संबंध में पूर्ण।

चार समूह विकृतियाँ नहीं हैं। मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह कभी विकृत होता है; कभी विकृत नहीं होता। भौतिक गुणों का समूह विकृतियों का विषय है। चार समूह कभी विकृतियों के विषय होते हैं; कभी विकृतियों के विषय नहीं होते। भौतिक गुणों का समूह विकृतियों से संबंधित नहीं है। तीन समूह कभी विकृतियों से संबंधित होते हैं; कभी विकृतियों से संबंधित नहीं होते। मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह कभी विकृतियों से संबंधित होता है; कभी विकृतियों से संबंधित नहीं होता; कभी विकृतियों से संबंधित है या नहीं, यह कहना उचित नहीं होगा। भौतिक गुणों के समूह को विकृतियों का विषय भी नहीं कहना चाहिए; यह विकृतियों का विषय तो है, लेकिन स्वयं विकृत नहीं है। तीन समूहों को विकृतियों का विषय भी नहीं कहना चाहिए; वे कभी विकृतियों के विषय होते हैं, लेकिन स्वयं विकृत नहीं होते। कभी-कभी विकृतियों का विषय नहीं कहा जाना चाहिए, बल्कि वे विकृतियाँ नहीं होतीं। मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह

कभी-कभी विकृति भी होता है और विकृतियों का विषय भी; कभी-कभी विकृतियों का विषय होता है लेकिन विकृति नहीं; कभी-कभी ऐसा नहीं कहा जाना चाहिए।

84

विकृति भी विकृतियों का विषय हो सकती है या विकृतियों का विषय हो सकती है, लेकिन वह विकृति नहीं है। भौतिक गुणों का समूह विकृतियों से जुड़ा नहीं है, विकृतियों का विषय है। चार समूह कभी-कभी विकृतियों से जुड़े नहीं होते, विकृतियों के विषय होते हैं; कभी-कभी विकृतियों से जुड़े नहीं होते, विकृतियों के विषय नहीं होते; [67] कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि विकृतियों से जुड़े नहीं हैं, विकृतियों के विषय हैं या विकृतियों से जुड़े नहीं हैं, विकृतियों के विषय नहीं हैं। (9)
भौतिक गुणों के समूह का कोई कर्ता नहीं होता। चार समूहों के कर्ता होते हैं। चेतना का समूह चेतना है। चारों समूह चेतना नहीं हैं। तीन समूह मानसिक सहवर्ती हैं। दो समूह मानसिक सहवर्ती नहीं हैं। तीन समूह चेतना से जुड़े हैं। भौतिक गुणों का समूह चेतना से जुड़ा नहीं है। चेतना के समूह को चेतना से जुड़ा हुआ या नहीं जुड़ा हुआ कहना उचित नहीं है। तीन समूह चेतना से जुड़े हुए हैं। भौतिक गुणों का समूह चेतना से जुड़ा हुआ नहीं है। चेतना के समूह को चेतना से जुड़ा हुआ या नहीं जुड़ा हुआ कहना उचित नहीं है। तीन समूह चेतना द्वारा उत्पन्न होते हैं। चेतना का समूह चेतना द्वारा उत्पन्न नहीं होता है। भौतिक गुणों का समूह कभी-कभी चेतना द्वारा उत्पन्न होता है; कभी-कभी नहीं होता है। तीन समूह चेतना के साथ सह-अस्तित्व में हैं। चेतना का समूह चेतना के साथ सह-अस्तित्व में नहीं है। भौतिक गुणों का समूह कभी-कभी चेतना के साथ सह-अस्तित्व में होता है; कभी-कभी नहीं होता है। तीन समूह चेतना के साथ रहते हैं। चेतना का समूह चेतना के साथ नहीं होता। भौतिक गुणों का समूह कभी-कभी चेतना के साथ होता है; कभी-कभी नहीं होता। तीन समूह चेतना से जुड़े होते हैं, चेतना द्वारा उत्पन्न होते हैं। दो समूह चेतना से जुड़े नहीं होते, चेतना द्वारा उत्पन्न नहीं होते। तीन समूह चेतना से जुड़े होते हैं, चेतना द्वारा उत्पन्न होते हैं, चेतना के साथ सह-अस्तित्व में होते हैं। दो समूह चेतना से जुड़े नहीं होते, चेतना द्वारा उत्पन्न नहीं होते, चेतना के साथ सह-अस्तित्व में नहीं होते। तीन समूह चेतना से जुड़े होते हैं, चेतना द्वारा उत्पन्न होते हैं, चेतना के साथ होते हैं। दो समूह चेतना से जुड़े नहीं होते, चेतना द्वारा उत्पन्न नहीं होते, चेतना के साथ नहीं होते। (10)

85

चेतना का समूह आंतरिक है। तीन समूह बाह्य हैं। भौतिक गुणों का समूह कभी आंतरिक होता है, कभी बाह्य। चार समूह व्युत्पन्न नहीं हैं। भौतिक गुणों का समूह कभी व्युत्पन्न होता है, कभी व्युत्पन्न नहीं होता। (पाँच समूह) कभी लालसा और भ्रामक दृष्टि से वश में हो जाते हैं, कभी वश में नहीं होते। चार समूह आसक्ति नहीं हैं। मानसिक सहवर्ती समूह कभी आसक्ति होता है, कभी आसक्ति नहीं होता। भौतिक गुणों का समूह आसक्ति का विषय है। चार समूह कभी आसक्ति के विषय होते हैं, कभी आसक्ति के विषय नहीं होते। भौतिक गुणों का समूह आसक्ति से संबद्ध नहीं है। चार समूह कभी आसक्ति से संबद्ध होते हैं, कभी आसक्ति से संबद्ध नहीं होते। भौतिक गुणों के समूह को यह नहीं कहना चाहिए कि आसक्ति और आसक्ति का विषय दोनों हैं; (यह) आसक्ति का विषय तो है, पर आसक्ति नहीं है। तीन समूहों को यह नहीं कहना चाहिए कि आसक्ति और आसक्ति का विषय दोनों हैं; (वे) कभी-कभी आसक्ति के विषय होते हैं लेकिन स्वयं आसक्ति नहीं होते; कभी-कभी उन्हें आसक्ति के विषय नहीं कहा जाना चाहिए लेकिन वे स्वयं आसक्ति नहीं होते। मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह कभी-कभी आसक्ति भी होता है और आसक्ति का विषय भी; कभी-कभी आसक्ति का विषय होता है लेकिन स्वयं आसक्ति नहीं होता; कभी-कभी उन्हें आसक्ति भी आसक्ति का विषय या आसक्ति का विषय लेकिन स्वयं आसक्ति नहीं कहा जाना चाहिए। भौतिक गुणों के समूह को आसक्ति भी आसक्ति से संबंधित या [68] आसक्ति से संबंधित लेकिन स्वयं आसक्ति नहीं कहा जाना चाहिए। तीन समूहों को आसक्ति भी आसक्ति से संबंधित नहीं कहा जाना चाहिए; (वे) कभी-कभी आसक्ति से संबंधित होते हैं लेकिन स्वयं आसक्ति नहीं होते; कभी-कभी उन्हें आसक्ति से संबंधित नहीं कहा जाना चाहिए लेकिन वे स्वयं आसक्ति नहीं होते। मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह कभी-कभी आसक्ति भी होता है और स्वयं आसक्ति से संबंधित भी; कभी-कभी आसक्ति से संबंधित होता है लेकिन स्वयं आसक्ति नहीं होता; कभी-कभी आसक्ति नहीं कहा जाना चाहिए, आसक्ति भी आसक्ति से जुड़ी होती है या आसक्ति से संबंधित होती है लेकिन वह स्वयं आसक्ति नहीं होती। भौतिक गुणों का समूह आसक्ति से जुड़ा नहीं होता, बल्कि आसक्ति का विषय होता है। चार समूह कभी-कभी आसक्ति से जुड़े नहीं होते, बल्कि आसक्ति के विषय होते हैं; कभी-कभी आसक्ति से जुड़े नहीं होते, बल्कि आसक्ति के विषय नहीं होते; कभी-कभी

86

यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वे आसक्तियों से असंबद्ध हैं, आसक्तियों के विषय हैं या आसक्तियों से असंबद्ध हैं, आसक्तियों के विषय नहीं हैं। (11)

चार समूह विकृत नहीं होते। मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह कभी विकृत होता है, कभी नहीं। भौतिक गुणों का समूह विकृतियों का विषय होता है। चार समूह कभी विकृतियों के विषय होते हैं, कभी नहीं। भौतिक गुणों का समूह विकृत नहीं होता। चार समूह कभी विकृत होते हैं, कभी नहीं। भौतिक गुणों का समूह विकृतियों से संबंधित नहीं होता। चार समूह कभी विकृतियों से संबंधित होते हैं, कभी नहीं। भौतिक गुणों के समूह को विकृतियों का विषय नहीं कहा जाना चाहिए; यह विकृतियों का विषय तो है, लेकिन स्वयं विकृत नहीं है। तीन समूहों को विकृतियों का विषय नहीं कहा जाना चाहिए; वे कभी विकृतियों के विषय होते हैं, लेकिन स्वयं विकृत नहीं होते; कभी-कभी उन्हें विकृतियों का विषय तो नहीं कहा जाना चाहिए, लेकिन स्वयं विकृत नहीं होते। मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह कभी विकृतियों का विषय भी होता है; कभी-कभी यह भ्रष्टता का विषय होता है, पर स्वयं भ्रष्टता नहीं होता; कभी-कभी यह कहना उचित नहीं होगा कि भ्रष्टता, भ्रष्टता का विषय भी है या भ्रष्टता का विषय है, पर स्वयं भ्रष्टता नहीं है। भौतिक गुणों के समूह को यह कहना उचित नहीं होगा कि भ्रष्टता भी भ्रष्ट है या भ्रष्ट है, पर स्वयं भ्रष्टता नहीं है। तीन समूहों को यह कहना उचित नहीं होगा कि भ्रष्टता भी भ्रष्ट है; (वे) कभी-कभी भ्रष्ट होते हैं, पर स्वयं भ्रष्टता नहीं होते; कभी-कभी यह कहना उचित नहीं होगा कि भ्रष्ट हैं, पर स्वयं भ्रष्टता नहीं हैं। मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह कभी-कभी भ्रष्टता भी भ्रष्ट होता है; कभी-कभी भ्रष्ट होता है, पर स्वयं भ्रष्टता नहीं होता; कभी-कभी यह कहना उचित नहीं होगा कि भ्रष्टता भी भ्रष्ट है या भ्रष्ट है, पर स्वयं भ्रष्टता नहीं है।

भौतिक गुणों के समूह को भ्रष्टाचार से जुड़ा हुआ या भ्रष्टाचार से संबंधित लेकिन स्वयं भ्रष्टाचार न होने वाला नहीं कहा जा सकता। तीन समूहों को भ्रष्टाचार से जुड़ा हुआ नहीं कहा जा सकता; (वे) कभी-कभी भ्रष्टाचार से जुड़े होते हैं लेकिन स्वयं भ्रष्टाचार नहीं होते; कभी-कभी भ्रष्टाचार से जुड़े होते हैं लेकिन स्वयं भ्रष्टाचार नहीं होते, ऐसा नहीं कहा जा सकता। मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह कभी-कभी भ्रष्टाचार से जुड़ा हुआ होता है; कभी-कभी भ्रष्टाचार से जुड़ा होता है लेकिन स्वयं भ्रष्टाचार नहीं होता।

87

भ्रष्टाचार; कभी-कभी भ्रष्टाचार नहीं कहा जाना चाहिए, भ्रष्टाचार से जुड़ा हुआ भी हो सकता है या भ्रष्टाचार से जुड़ा हुआ हो सकता है लेकिन भ्रष्टाचार नहीं है। भौतिक गुणवत्ता का समूह भ्रष्टाचार से जुड़ा हुआ नहीं है, भ्रष्टाचार का विषय है। चार समूह कभी-कभी [69] भ्रष्टाचार से जुड़े नहीं होते हैं, भ्रष्टाचार के विषय होते हैं; कभी-कभी भ्रष्टाचार से जुड़े नहीं होते हैं, भ्रष्टाचार के विषय नहीं होते हैं; कभी-कभी भ्रष्टाचार से जुड़ा हुआ नहीं कहा जाना चाहिए, भ्रष्टाचार से जुड़ा हुआ नहीं है, भ्रष्टाचार के विषय हैं या भ्रष्टाचार से जुड़ा हुआ नहीं है, भ्रष्टाचार के विषय नहीं हैं। (12)

भौतिक गुणों का समूह प्रथम मार्ग से नहीं छोड़ा जाना चाहिए। चार समूहों को कभी-कभी प्रथम मार्ग से छोड़ा जाना चाहिए; कभी-कभी प्रथम मार्ग से नहीं छोड़ा जाना चाहिए। भौतिक गुणों का समूह बाद के मार्गों से नहीं छोड़ा जाना चाहिए। चार समूहों को कभी-कभी बाद के मार्गों से छोड़ा जाना चाहिए; कभी-कभी बाद के मार्गों से नहीं छोड़ा जाना चाहिए। भौतिक गुणों के समूह का कोई मूल नहीं है जिसे प्रथम मार्ग से छोड़ा जा सके। चार समूहों के कभी-कभी मूल होते हैं जिन्हें प्रथम मार्ग से छोड़ा जा सके; कभी-कभी मूल नहीं होते जिन्हें प्रथम मार्ग से छोड़ा जा सके। भौतिक गुणों के समूह का कोई मूल नहीं है जिसे बाद के मार्गों से छोड़ा जा सके। चार समूहों के कभी-कभी मूल होते हैं जिन्हें बाद के मार्गों से छोड़ा जा सके; कभी-कभी मूल नहीं होते जिन्हें बाद के मार्गों से छोड़ा जा सके। भौतिक गुणों का समूह प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना है। चार समूहों के साथ कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग होता है; कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग नहीं होता है। भौतिक गुणों का समूह निरंतर अनुप्रयोग के बिना है। चार समूहों के साथ कभी-कभी निरंतर अनुप्रयोग होता है; कभी-कभी निरंतर अनुप्रयोग नहीं होता है। भौतिक गुणों का समूह उत्साहहीन है। चार समुच्चय कभी उत्साह से भरे होते हैं, कभी उत्साहहीन होते हैं। भौतिक गुणों का समुच्चय उत्साह से रहित होता है। चार समुच्चय कभी उत्साह से भरे होते हैं, कभी उत्साहहीन होते हैं। दो समुच्चय आनंद से रहित होते हैं। तीन समुच्चय कभी आनंद से भरे होते हैं, कभी आनंदहीन होते हैं। दो समुच्चय उदासीनता से रहित होते हैं। तीन समुच्चय कभी उदासीनता से भरे होते हैं, कभी उदासीनता रहित होते हैं।

भौतिक गुणों का समूह इच्छा के तल की विशेषता है। कभी-कभी चार समूह इच्छा के तल की विशेषता होते हैं।

88

इच्छा; कभी-कभी इच्छा के तल की विशेषताएँ नहीं होतीं। भौतिक गुणों का समूह रूप के तल की विशेषताएँ नहीं होता। चार समूह कभी-कभी रूप के तल की विशेषताएँ होते हैं; कभी-कभी रूप के तल की विशेषताएँ नहीं होते। भौतिक गुणों का समूह निराकार तल की विशेषताएँ नहीं होता। चार समूह कभी-कभी निराकार तल की विशेषताएँ होते हैं; कभी-कभी निराकार तल की विशेषताएँ नहीं होते। भौतिक गुणों का समूह समाहित है (अर्थात सांसारिक है)। चार समूह कभी-कभी समाहित होते हैं (अर्थात सांसारिक हैं); कभी-कभी समाहित नहीं होते (अर्थात अलौकिक हैं)। भौतिक गुणों का समूह मुक्त होने की प्रवृत्ति नहीं रखता। चार समूह कभी-कभी मुक्त होने की प्रवृत्ति रखते हैं; कभी-कभी मुक्त होने की प्रवृत्ति नहीं रखते। भौतिक गुणों के समूह का कोई निश्चित (परिणामी समय) नहीं होता। चार समूह कभी-कभी निश्चित (परिणामी समय) के होते हैं; कभी-कभी निश्चित (परिणामी समय) नहीं होते। भौतिक गुणों का समूह पार किया जा सकता है। चार समूह कभी-कभी पार किए जा सकते हैं; कभी-कभी पार नहीं किए जा सकते। भौतिक गुणों का समूह शोक का कारण नहीं है। चार समूह कभी-कभी शोक का कारण होते हैं; कभी-कभी शोक का कोई कारण नहीं होता। (13)
(यह खंड यहीं समाप्त होता है) पूछताछ
कुल योगों का विश्लेषण समाप्त हो गया है।
टिपिटक >> अभिधम्म पिटक >> विभंग >> अध्याय 2 पाठ - आयतन/द्वार
विभंग-विश्लेषण की पुस्तक-गोतम बुद्ध द्वारा बोली गई
पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण
पाली से अनुवादित यू. थित्तिला, रंगून, बर्मा, 1969 द्वारा

ओसीआर संस्करण, प्रूफरीडिंग नहीं की गई है, इसमें त्रुटियां हैं
(पाठकों को दिए गए .pdf संस्करण की सहायता से पाठ को सही करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है)

अध्याय 2. आधारों (आयातना/द्वारों) का विश्लेषण

1. प्रवचनों के अनुसार विश्लेषण

154. [70] बारह आधार हैं: आँख आधार, दृश्य आधार, कान आधार, श्रव्य आधार, नाक आधार, गंध आधार, जीभ आधार, स्वाद आधार, शरीर आधार, स्पर्शनीय आधार, मन आधार, वैचारिक आधार।

आँख क्षणभंगुर, दुखमय, आत्माहीन, परिवर्तनशील वस्तु है; दृश्य वस्तुएँ क्षणभंगुर, दुखमय, आत्माहीन, परिवर्तनशील वस्तुएँ हैं। कान क्षणभंगुर, दुखमय, आत्माहीन, परिवर्तनशील वस्तु है; श्रव्य वस्तुएँ क्षणभंगुर, दुखमय, आत्माहीन, परिवर्तनशील वस्तुएँ हैं। नाक क्षणभंगुर, दुखमय, आत्माहीन, परिवर्तनशील वस्तु है; सुगंधित वस्तुएँ क्षणभंगुर, दुखमय, आत्माहीन, परिवर्तनशील वस्तुएँ हैं। जीभ क्षणभंगुर, दुखमय, आत्माहीन, परिवर्तनशील वस्तु है; स्वादयुक्त वस्तुएँ क्षणभंगुर, दुखमय, आत्माहीन, परिवर्तनशील वस्तुएँ हैं। शरीर क्षणभंगुर, दुखमय, आत्माहीन, परिवर्तनशील वस्तु है; स्पर्शनीय वस्तुएँ क्षणभंगुर, दुखमय, आत्माहीन, परिवर्तनशील वस्तुएँ हैं। मन क्षणभंगुर, दुखमय, आत्माहीन, परिवर्तनशील वस्तु है; वैचारिक (वस्तुएँ) क्षणभंगुर, दुखदायी, आत्माहीन और परिवर्तनशील वस्तुएँ हैं।

(यहाँ समाप्त होता है) प्रवचनों के अनुसार विश्लेषण

2. अभिधम्म के अनुसार विश्लेषण

155. बारह आधार हैं: आँख आधार, कान आधार, नाक आधार, जीभ आधार, शरीर आधार, मन आधार, दृश्य आधार, श्रव्य आधार, गंध आधार, स्वाद आधार, स्पर्श आधार, वैचारिक आधार।

156. उसमें आँख का आधार क्या है? वह आँख जो चार महान आवश्यक तत्वों से उत्पन्न होकर, शरीर में समाहित, अदृश्य, आक्षेपकारी, संवेदी सतह है; [71] जिसके माध्यम से अदृश्य आक्षेपकारी

आँख (एक) ने देखा, देखता है, देखेगा या देख सकता है; दृश्यमान, आक्षेपिक, दृश्यमान (वस्तु); यह आँख है; यह आँख का आधार है; यह आँख का तत्व है; यह आँख की नियंत्रक शक्ति है; यह एक दुनिया है; यह एक द्वार है; यह एक सागर है; यह प्रकाश है; यह एक क्षेत्र है; यह एक आधार है; यह एक मार्गदर्शक है; यह मार्गदर्शन है; यह निकटवर्ती तट है; यह एक खाली गाँव है। इसे आँख का आधार कहते हैं। (1)

157. इसमें कान का आधार क्या है? वह कान जो चार महान तत्वों से उत्पन्न होकर, शरीर में समाहित, अदृश्य, आक्षेपकारी, संवेदी सतह है; जिसके माध्यम से अदृश्य आक्षेपकारी कान (कोई) अदृश्य आक्षेपकारी श्रव्य (वस्तु) सुनता है, सुनता है, सुनेगा या सुन सकता है; यही कान है; यही कान का आधार है; यही कान का तत्व है; यही कान की नियंत्रक शक्ति है; यही एक संसार है; यही एक द्वार है; यही एक सागर है; यही प्रकाश है; यही एक क्षेत्र है; यही एक आधार है; यही निकटवर्ती तट है; यही एक खाली गाँव है। इसे ही कान का आधार कहते हैं। (2)

158. उसमें नाक का आधार क्या है? वह नाक जो चार महान आवश्यक तत्वों से उत्पन्न होती है, एक संवेदनशील सतह है, शरीर में समाहित है, अदृश्य है, आक्षेपकारी है; जिसके माध्यम से अदृश्य आक्षेपकारी नाक (कोई) अदृश्य आक्षेपकारी गंधयुक्त (वस्तु) को सूंघता है, सूंघता है, सूंघेगा या सूंघ सकता है; यही नाक है; यही नाक का आधार है; यही नाक का तत्व है; यही नाक की नियंत्रक क्षमता है; यही एक संसार है; यही एक द्वार है; यही एक सागर है; यही प्रकाश है; यही एक क्षेत्र है; यही एक आधार है; यही निकटवर्ती तट है; यही एक खाली गाँव है। इसे नाक का आधार कहते हैं। (3)

159. इसमें जीभ का आधार क्या है? वह जीभ जो चार महान आवश्यक तत्वों से उत्पन्न होती है, संवेदी सतह है, शरीर में समाहित है, अदृश्य है, प्रभावकारी है; जिसके माध्यम से अदृश्य प्रभावकारी जीभ (कोई) अदृश्य प्रभावकारी स्वादिष्ट (वस्तु) का स्वाद लेता है, लेता है, लेगा या ले सकता है; यही जीभ है; यही जीभ का आधार है; यही जीभ का तत्व है; यही जीभ की नियंत्रक शक्ति है; यही एक संसार है; यही एक द्वार है; यही एक सागर है; यही प्रकाश है; यही एक क्षेत्र है; यही एक आधार है; यही निकटवर्ती तट है; यही एक खाली गाँव है। इसे जीभ का आधार कहते हैं। (4)

160. इसमें शरीर का आधार क्या है? वह शरीर जो चार महान तत्वों से उत्पन्न होकर, संवेदी सतह है, शरीर में समाहित है, अदृश्य है, प्रभावकारी है; जिसके माध्यम से अदृश्य प्रभावकारी शरीर (कोई) किसी अदृश्य प्रभावकारी स्पर्शनीय वस्तु को स्पर्श करता है, स्पर्श करता है, स्पर्श करेगा या कर सकता है; यही शरीर है; यही शरीर का आधार है; यही शरीर का तत्व है।

91

मैं

यह शरीर की नियंत्रक शक्ति है; यह एक संसार है; यह एक द्वार है; यह एक सागर है; यह प्रकाश है; यह एक क्षेत्र है; यह एक आधार है; यह निकटवर्ती तट है; यह एक खाली गाँव है। इसे शरीर का आधार कहते हैं। (5)

161. उसमें मन का आधार क्या है? एकल विभाजन के अनुसार मन का आधार: संपर्क से जुड़ा है।

दो प्रकार से विभाजित करके मानसिक आधार: मूल तत्व के साथ होता है; मूल तत्व के साथ नहीं होता है।

मन को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है: अच्छा है; बुरा है; न अच्छा है न बुरा।

मन का आधार चार भागों में विभाजित है: यह इच्छा के तल की विशेषता है; यह रूप के तल की विशेषता है; यह निराकार तल की विशेषता है; यह इसमें शामिल नहीं है (अर्थात् यह अलौकिक है)।

मन का आधार पाँच भागों में विभाजित है: यह सुख (शारीरिक) की नियंत्रक क्षमता से जुड़ा है; यह दर्द (शारीरिक) की नियंत्रक क्षमता से जुड़ा है; यह मानसिक सुख की नियंत्रक क्षमता से जुड़ा है; यह मानसिक दर्द की नियंत्रक क्षमता से जुड़ा है; यह उदासीनता की नियंत्रक क्षमता से जुड़ा है।

मन का आधार छह भागों में विभाजित है: नेत्र चेतना; कान चेतना; नाक चेतना; जीभ चेतना; शरीर चेतना; मन चेतना। इस प्रकार मन का आधार छह भागों में विभाजित है।

मन का आधार सात भागों में विभाजित है: नेत्र चेतना; कान चेतना; नाक चेतना; जीभ चेतना; शरीर चेतना; मन तत्व; मन-चेतना तत्व। इस प्रकार मन का आधार सात भागों में विभाजित है।

मन का आधार आठ भागों में विभाजित है: नेत्र चेतना; कान चेतना; नाक चेतना; जीभ चेतना; सुख और दुख से ग्रस्त शरीर चेतना; मन तत्व; मन-चेतना तत्व। इस प्रकार मन का आधार आठ भागों में विभाजित है।

मन का आधार नौ भागों में विभाजित है: नेत्र चेतना; कान चेतना; नाक चेतना; जीभ चेतना; शरीर चेतना; मन तत्व; मन-चेतना तत्व जो अच्छा है, जो बुरा है, जो न अच्छा है न बुरा। इस प्रकार मन का आधार नौ भागों में विभाजित है।

मन का आधार दस भागों में विभाजित है: नेत्र चेतना; कान चेतना; नाक चेतना; जीभ चेतना; शरीर

6 *

92

चेतना जो सुख से ग्रस्त है, जो दुख से ग्रस्त है; मन तत्व; मन-चेतना तत्व जो अच्छा है, जो बुरा है, जो न अच्छा है न बुरा। इस प्रकार मन दस गुना विभाजन द्वारा आधार है। [72]

एकल विभाजन के माध्यम से मन का आधार: संपर्क से जुड़ा हुआ है।

दो प्रकार से विभाजित करके मानसिक आधार: मूल तत्व के साथ होता है; मूल तत्व के साथ नहीं होता है।

तीन प्रकार से विभाजित मन का आधार: सुखद भावनाओं से जुड़ा होता है; दुखदायी भावनाओं से जुड़ा होता है; न दुखदायी और न ही सुखद भावनाओं से जुड़ा होता है। इस प्रकार मन का आधार अनेक प्रकार से विभाजित होता है। इसे मन का आधार कहते हैं। (6)

P = अनुच्छेद 122-149 देखें।

162. उसमें दृश्य आधार क्या है? वह दृश्य (वस्तु) जो चार प्रमुख तत्वों से उत्पन्न होकर चमकदार, दृश्यमान, आक्षेपकारी, नीली, पीली, लाल, सफेद, काली, लालिमा लिए हरी, सुनहरी, आम की कली के रंग की, लंबी, छोटी, छोटी, बड़ी, वृत्ताकार, वर्गाकार, षट्भुजाकार, अष्टभुजाकार, सोलह कोनों वाली, नीची, ऊँची, छायादार, चमकीली, हल्की, गहरी, मंद, धुंधली, धुएँदार, धूल भरी, चंद्रमा की डिस्क की तरह चमकदार, सूर्य की डिस्क की तरह चमकदार, खगोलीय पिंडों की तरह चमकदार, दर्पण की डिस्क की तरह चमकदार, रत्न, शंख, मोती, खूंटी की आँख की तरह चमकदार, सोने और चांदी की तरह चमकदार हो; या कोई अन्य दृश्य (वस्तु) जो चार प्रमुख तत्वों से उत्पन्न होकर चमकदार, दृश्यमान और आक्षेपकारी हो; वह दृश्य, आवर्ती, दृश्य (वस्तु) जिसे (किसी ने) अदृश्य आवर्ती दृष्टि से देखा है, देख रहा है, देखेगा या देख सकता है; यही दृश्य (वस्तु) है; यही दृश्य आधार है; यही दृश्य तत्व है। इसे दृश्य आधार कहते हैं। (7)

163. उसमें श्रव्य आधार क्या है? वह श्रव्य (वस्तु) जो चार प्रमुख तत्वों से उत्पन्न होकर अदृश्य, आक्षेपकारी, ढोल की ध्वनि, तबले की ध्वनि, शंख की ध्वनि, ढोल की ध्वनि, संगीत की ध्वनि, झांझ की ध्वनि, हाथ की ध्वनि, प्राणियों की ध्वनि, वस्तुओं के टकराव की ध्वनि, वायु की ध्वनि, जल की ध्वनि, मानव ध्वनि, अमानवीय ध्वनि हो; या कोई अन्य श्रव्य (वस्तु) जो चार प्रमुख तत्वों से उत्पन्न होकर अदृश्य, आक्षेपकारी हो; वह अदृश्य आक्षेपकारी श्रव्य (वस्तु) जिसे (किसी ने) अदृश्य आक्षेपकारी के माध्यम से सुना है, सुनता है, सुनेगा या सुन सकता है।

कान; यह श्रव्य (वस्तु) है; यह श्रव्य आधार है; यह श्रव्य तत्व है। इसे श्रव्य आधार कहा जाता है। (8)

164. इसमें सुगंधित आधार क्या है? वह सुगंधित वस्तु जो चार प्रमुख तत्वों से उत्पन्न होती है, अदृश्य और प्रभावकारी होती है; जड़ों की गंध, रस की गंध, छाल की गंध, पत्तियों की गंध, फूलों की गंध, फलों की गंध, कच्चे पदार्थों की गंध, सड़ी हुई गंध, सुखद गंध, अप्रिय गंध; या कोई भी अन्य सुगंधित वस्तु जो चार प्रमुख तत्वों से उत्पन्न होती है, अदृश्य और प्रभावकारी होती है; वह अदृश्य और प्रभावकारी सुगंधित वस्तु जिसे (कोई) अपनी अदृश्य प्रभावकारी नाक से सूंघता है, सूंघ रहा है, सूंघेगा या सूंघ सकता है; यही सुगंधित वस्तु है; यही सुगंधित आधार है; यही सुगंधित तत्व है। इसे सुगंधित आधार कहते हैं।

(9)

165. इसमें स्वाद का आधार क्या है? वह स्वाद जो चार प्रमुख तत्वों से उत्पन्न होकर अदृश्य, प्रभावकारी होता है, जड़ों का स्वाद, तनों का स्वाद, छाल का स्वाद, पत्तियों का स्वाद, फूलों का स्वाद, फलों का स्वाद, खट्टा, मीठा, कड़वा, तीखा, नमकीन, क्षारीय, मीठा-तीखा, तीखा, अच्छा, मतली लाने वाला होता है; या कोई अन्य स्वाद जो चार प्रमुख तत्वों से उत्पन्न होकर अदृश्य और प्रभावकारी हो; वह अदृश्य प्रभावकारी स्वाद जिसका स्वाद (किसी ने) अदृश्य प्रभावकारी जीभ के माध्यम से चखा है, चखता है, चखेगा या चख सकता है; यही स्वाद है; यही स्वाद का आधार है; यही स्वाद तत्व है। इसे स्वाद का आधार कहते हैं। (10)

166. उसमें मूर्त आधार क्या है? विस्तार का तत्व, ऊष्मा का तत्व, गति का तत्व, कठोर, कोमल, चिकना, खुरदरा, सुखद स्पर्श, कष्टदायक स्पर्श, भारी, हल्का; वह अदृश्य आक्षेपित मूर्त वस्तु जिसे (किसी ने) छुआ है, छूता है, छूएगा या किसी अदृश्य आक्षेपित पिंड के माध्यम से छू सकता है; यही मूर्त वस्तु है; यही मूर्त आधार है; यही मूर्त तत्व है। इसे मूर्त आधार कहते हैं। (11)

167. उसमें वैचारिक आधार क्या है? भावना का समूह, बोध का समूह, मानसिक सहवर्ती का समूह और वैचारिक आधार में समाहित वह अदृश्य अप्रभावित भौतिक गुण; अप्रतिबंधित तत्व।

उसमें भावनाओं का समूह क्या है? एकल विभाजन द्वारा भावनाओं का समूह: संपर्क से जुड़ा है।

94

विश्लेषण की पुस्तक

दो प्रकार से विभाजित भावों का समूह: मूल भाव से युक्त; मूल भाव से रहित। तीन प्रकार से विभाजित भावों का समूह: अच्छा; बुरा; न अच्छा न बुरा। इसी प्रकार दस प्रकार से विभाजित भावों का समूह है। इसी प्रकार अनेक प्रकार से विभाजित भावों का समूह है। इसे भावों का समूह कहते हैं। (1)

P = अनुच्छेद 34-61 सहित देखें।

इसमें बोध का सार क्या है? एकल विभाजन द्वारा बोध का सार: संपर्क से जुड़ा होता है। द्वि विभाजन द्वारा बोध का सार: मूल से जुड़ा होता है; मूल से नहीं जुड़ा होता है। त्रि विभाजन द्वारा बोध का सार: अच्छा होता है; बुरा होता है; न अच्छा न बुरा होता है। :PX : इस प्रकार दस विभाजन द्वारा बोध का सार है। :P 2 : इस प्रकार अनेक विभाजन द्वारा बोध का सार है। इसे बोध का सार कहते हैं। (2)

P^पैरा 62 देखें। P 2 = पैरा 63-91 सहित देखें।

उसमें मानसिक सहवर्तीताओं का कुल योग क्या है?

एक प्रकार के विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह: चेतना से जुड़ा होता है। दो प्रकार के विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह: मूल है; मूल नहीं है। तीन प्रकार के विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह: अच्छा है; बुरा है; न अच्छा है न बुरा। (PX) इसी प्रकार दस प्रकार के विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह है। (P2) इसी प्रकार अनेक प्रकार के विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह है। इसे मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह कहा जाता है। (3)

पृष्ठ 1 — पैराग्राफ 92 देखें। पृष्ठ 2 = पैराग्राफ 93-120 देखें।

इसमें वैचारिक आधार में समाहित अदृश्य अप्रभावित पदार्थ क्या है? स्त्रीत्व की नियंत्रक शक्ति, पुरुषत्व की नियंत्रक शक्ति; भोजन का पोषक तत्व। इसे ही वैचारिक आधार में समाहित अदृश्य अप्रभावित पदार्थ कहा जाता है। (4)

पी = डीएचएस पैराग्राफ 595 देखें।

उसमें अप्रतिबंधित तत्व क्या है? [73]

कामवासना का नाश; घृणा का नाश; सुस्ती का नाश। इसे अप्रतिबंधित तत्व कहा जाता है। (5)

इसे वैचारिक आधार कहा जाता है।

(यहाँ समाप्त होता है) अभिधम्म के अनुसार विश्लेषण

आधारों का विश्लेषण

95

3. पूछताछ

168. बारह आधार हैं: आँख आधार, दृश्य आधार, कान आधार, श्रव्य आधार, नाक आधार, गंध आधार, जीभ आधार, स्वाद आधार, शरीर आधार, स्पर्श आधार, मन आधार, वैचारिक आधार।

169. बारह आधारों में से कितने अच्छे हैं; कितने बुरे हैं; कितने न अच्छे हैं न बुरे? :P : कितने ऐसे हैं जिन पर शोक करने का कारण है; कितने ऐसे हैं जिन पर शोक करने का कोई कारण नहीं है?

P = शेष उपयुक्त त्रिक और युग्मक।

1. त्रिक

170. दस आधार न तो अच्छे हैं और न ही बुरे। दो आधार कभी अच्छे होते हैं; कभी बुरे; कभी न अच्छे होते हैं और न बुरे। दस आधारों को न तो सुखद भावना से जुड़ा हुआ कहा जा सकता है; न ही पीड़ादायक भावना से जुड़ा हुआ; और न ही पीड़ादायक और न ही सुखद भावना से जुड़ा हुआ। मन का आधार कभी सुखद भावना से जुड़ा होता है; कभी पीड़ादायक भावना से जुड़ा होता है; और न ही पीड़ादायक और न ही सुखद भावना से जुड़ा होता है। वैचारिक आधार कभी सुखद भावना से जुड़ा होता है; कभी पीड़ादायक भावना से जुड़ा होता है; और न ही पीड़ादायक और न ही सुखद भावना से जुड़ा होता है; कभी-कभी को न तो सुखद भावना से जुड़ा हुआ कहा जा सकता है; न ही पीड़ादायक भावना से जुड़ा हुआ; और न ही पीड़ादायक और न ही सुखद भावना से जुड़ा हुआ। दस आधार न तो परिणाम हैं और न ही परिणाम उत्पन्न करने वाले। दो आधार कभी-कभी परिणाम होते हैं; कभी-कभी परिणाम उत्पन्न करने वाले होते हैं; और कभी-कभी न तो परिणाम होते हैं और न ही परिणाम उत्पन्न करने वाले।

पांच आधार (लालसा और भ्रामक दृष्टि से) ग्रसित होते हैं, आसक्ति के विषय होते हैं। श्रव्य आधार ग्रसित नहीं होता, आसक्ति का विषय होता है। चार आधार कभी-कभी ग्रसित होते हैं, आसक्ति के विषय होते हैं; कभी-कभी ग्रसित नहीं होते, आसक्ति के विषय होते हैं। दो आधार कभी-कभी ग्रसित होते हैं, आसक्ति के विषय होते हैं; कभी-कभी ग्रसित नहीं होते, आसक्ति के विषय होते हैं; कभी-कभी ग्रसित नहीं होते, आसक्ति के विषय नहीं होते। दस आधार अविघटित नहीं होते, विकृतियों के विषय होते हैं। दो आधार कभी-कभी विकृत होते हैं, विकृतियों के विषय होते हैं; कभी-कभी अविघटित नहीं होते, विकृतियों के विषय होते हैं; कभी-कभी अविघटित नहीं होते, विकृतियों के विषय नहीं होते। दस आधार

96

विश्लेषण की पुस्तक

प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, निरंतर अनुप्रयोग के बिना। मन का आधार कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के साथ होता है, कभी-कभी निरंतर अनुप्रयोग के साथ; कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, केवल निरंतर अनुप्रयोग के साथ; कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, निरंतर अनुप्रयोग के बिना। वैचारिक आधार कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के साथ होता है, कभी-कभी निरंतर अनुप्रयोग के साथ; कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, केवल निरंतर अनुप्रयोग के साथ; कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, निरंतर अनुप्रयोग के बिना; कभी-कभी यह नहीं कहा जा सकता कि यह न तो प्रारंभिक अनुप्रयोग के साथ है, न ही निरंतर अनुप्रयोग के साथ; न ही प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, न ही निरंतर अनुप्रयोग के साथ; और न ही प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, न ही निरंतर अनुप्रयोग के साथ। दस आधारों को न तो उत्साह के साथ, न ही आनंद के साथ, और न ही उदासीनता के साथ कहा जा सकता है। दो आधार कभी-कभी उत्साह के साथ होते हैं; [74] कभी-कभी आनंद के साथ; कभी-कभी उदासीनता के साथ; कभी-कभी यह नहीं कहा जा सकता कि यह न तो उत्साह के साथ, न ही आनंद के साथ, और न ही उदासीनता के साथ।

दस आधारों को न तो प्रथम मार्ग से और न ही पश्चात मार्गों से त्यागा जाना चाहिए। दो आधारों को कभी-कभी प्रथम मार्ग से त्यागा जाना चाहिए; कभी-कभी पश्चात मार्गों से त्यागा जाना चाहिए; कभी-कभी उन्हें न तो प्रथम मार्ग से और न ही पश्चात मार्गों से त्यागा जाना चाहिए। दस आधारों की कोई जड़ नहीं होती जिसे प्रथम मार्ग से या पश्चात मार्गों से त्यागा जा सके। दो आधारों की कभी-कभी जड़ होती है जिसे प्रथम मार्ग से त्यागा जाना चाहिए; कभी-कभी जड़ होती है जिसे पश्चात मार्गों से त्यागा जाना चाहिए; कभी-कभी जड़ होती है जिसे प्रथम मार्ग से या पश्चात मार्गों से त्यागा नहीं जाना चाहिए। दस आधार न तो संचयी हैं और न ही विक्षेपी (पुनर्जन्म और मृत्यु के निरंतर चक्र के)। दो आधार कभी-कभी संचयी होते हैं; कभी-कभी विक्षेपी होते हैं; कभी-कभी न तो संचयी होते हैं और न ही विक्षेपी। दस आधार न तो सात अलौकिक अवस्थाओं के हैं और न ही अंतिम अलौकिक अवस्था के। दो आधार कभी-कभी सात अलौकिक अवस्थाओं के होते हैं; कभी-कभी अंतिम अलौकिक अवस्था के होते हैं; कभी-कभी ये सात अलौकिक अवस्थाओं में से किसी के भी नहीं होते, न ही अंतिम अलौकिक अवस्था के। दस आधार निम्न हैं। दो आधार कभी निम्न होते हैं; कभी उदात्त होते हैं;

कभी अकल्पनीय होते हैं। दस आधारों का कोई लक्ष्य नहीं होता। दो आधारों के कभी निम्न लक्ष्य होते हैं; कभी उदात्त लक्ष्य होते हैं; कभी अकल्पनीय लक्ष्य होते हैं; कभी-कभी यह कहना उचित नहीं होगा कि उनके निम्न, उदात्त या अकल्पनीय लक्ष्य हैं। दस आधार हैं

मध्यवर्ती। दो आधार कभी निम्नतर होते हैं, कभी मध्यवर्ती; कभी श्रेष्ठ। दस आधारों का कोई निश्चित (परिणामी समय) नहीं होता। दो आधार कभी निश्चित (परिणामी समय) के साथ असत्य (अवस्था) होते हैं; कभी निश्चित (परिणामी समय) के साथ सही (अवस्था) होते हैं; कभी उनका कोई निश्चित (परिणामी समय) नहीं होता।

दस आधारों का कोई कर्म नहीं होता। दो आधारों का कभी-कभी पथ कर्म होता है; कभी-कभी पथ कारण होता है; कभी-कभी पथ प्रमुख कारक होता है; कभी-कभी यह नहीं कहा जा सकता कि पथ उनका कर्म है, पथ उनका कारण है या पथ उनका प्रमुख कारक है। पाँच आधार कभी-कभी उत्पन्न होते हैं; कभी-कभी उत्पन्न होने के लिए बाध्य होते हैं; यह नहीं कहा जा सकता कि वे उत्पन्न नहीं हुए हैं। श्रव्य आधार कभी-कभी उत्पन्न होता है; कभी-कभी उत्पन्न नहीं होता; यह नहीं कहा जा सकता कि वह उत्पन्न होने के लिए बाध्य है। पाँच आधार कभी-कभी उत्पन्न होते हैं; कभी-कभी उत्पन्न नहीं होते; कभी-कभी उत्पन्न होने के लिए बाध्य होते हैं। वैचारिक आधार कभी-कभी उत्पन्न होता है; कभी-कभी उत्पन्न नहीं होता; कभी-कभी उत्पन्न होने के लिए बाध्य होता है; कभी-कभी यह नहीं कहा जा सकता कि वह उत्पन्न हुआ है, उत्पन्न नहीं हुआ है या उत्पन्न होने के लिए बाध्य है। ग्यारह आधार कभी-कभी भूतकाल होते हैं; कभी-कभी भविष्यकाल होते हैं; कभी-कभी वर्तमानकाल होते हैं। वैचारिक आधार कभी-कभी भूतकाल होता है; कभी-कभी भविष्यकाल होता है; कभी-कभी वर्तमानकाल होता है; कभी-कभी यह नहीं कहा जा सकता कि वह भूतकाल है, भविष्यकाल है या वर्तमानकाल है। दस आधारों का कोई कर्म नहीं होता। दो आधारों का कभी-कभी भूतकाल कर्म होता है; कभी-कभी भविष्यकाल कर्म होता है; कभी-कभी वर्तमानकाल कर्म होता है; कभी-कभी [75] को भूतकाल, भविष्यकाल या वर्तमानकाल के कर्मों से युक्त नहीं कहा जा सकता। (सभी आधार) कभी आंतरिक होते हैं; कभी बाह्य होते हैं; कभी आंतरिक और बाह्य दोनों होते हैं। दस आधारों का कोई कर्म नहीं होता। दो आधारों के कभी आंतरिक कर्म होते हैं; कभी बाह्य कर्म होते हैं; कभी आंतरिक और बाह्य दोनों कर्म होते हैं; कभी-कभी को आंतरिक, बाह्य या बाह्य और बाह्य दोनों कर्मों से युक्त नहीं कहा जा सकता। दृश्य आधार दृश्य होता है, और आक्षेपकारी होता है। नौ आधार अदृश्य होते हैं, और आक्षेपकारी होते हैं। दो आधार अदृश्य होते हैं, और आक्षेपकारी नहीं होते।

2. दोहे

1J1. ग्यारह आधार मूल नहीं हैं। वैचारिक आधार कभी मूल होता है; कभी नहीं होता। दस आधारों के साथ मूल नहीं होते। दो आधारों के साथ कभी मूल होते हैं; कभी नहीं होते। दस आधारों का मूल से कोई संबंध नहीं होता। दो आधारों का मूल से कोई संबंध नहीं होता; कभी नहीं होते। दस आधारों को मूल नहीं कहा जाना चाहिए।

जड़ों से जुड़ा हुआ या जड़ों से जुड़ा हुआ लेकिन स्वयं जड़ नहीं। मन के आधार को जड़ नहीं कहा जाना चाहिए; (यह) कभी-कभी जड़ से जुड़ा होता है लेकिन जड़ नहीं होता; कभी-कभी इसे जड़ से जुड़ा हुआ लेकिन स्वयं जड़ नहीं कहा जाना चाहिए। वैचारिक आधार कभी-कभी जड़ होता है और जड़ से जुड़ा होता है; कभी-कभी जड़ से जुड़ा होता है लेकिन स्वयं जड़ नहीं होता; कभी-कभी इसे जड़ नहीं कहा जाना चाहिए या जड़ से जुड़ा हुआ लेकिन स्वयं जड़ नहीं होता। दस आधारों को जड़ नहीं कहा जाना चाहिए; जड़ें जड़ों से जुड़ी होती हैं या जड़ों से जुड़ी होती हैं लेकिन स्वयं जड़ नहीं होतीं। मन के आधार को जड़ नहीं कहा जाना चाहिए; (यह) कभी-कभी जड़ से जुड़ा होता है लेकिन स्वयं जड़ नहीं होता; कभी-कभी इसे जड़ से जुड़ा हुआ लेकिन स्वयं जड़ नहीं कहा जाना चाहिए। वैचारिक आधार कभी-कभी जड़ होता है और जड़ से जुड़ा होता है; कभी-कभी जड़ से जुड़ा होता है लेकिन स्वयं जड़ नहीं होता; कभी-कभी इसे जड़ नहीं कहा जाना चाहिए या जड़ों से जुड़ा हुआ लेकिन स्वयं जड़ नहीं होता। दस आधार जड़ नहीं हैं, जड़ों से जुड़े नहीं हैं। मन का आधार कभी-कभी जड़ नहीं होता, जड़ से जुड़ा होता है; कभी-कभी मूल नहीं होता, मूल के साथ नहीं होता। वैचारिक आधार कभी-कभी मूल नहीं होता, मूल के साथ होता है; कभी-कभी मूल नहीं होता, मूल के साथ नहीं होता; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि है, मूल नहीं है, मूल के साथ है या मूल नहीं है, मूल के साथ नहीं है। (1)

ग्यारह आधार कारण सहित हैं। वैचारिक आधार कभी कारण सहित होता है; कभी कारण रहित होता है। ग्यारह आधार सशक्त हैं। वैचारिक आधार कभी सशक्त होता है; कभी अशक्त होता है। दृश्य आधार दृश्य है। [76] ग्यारह आधार दृश्य नहीं हैं। दस आधार आक्षेपकारी हैं। दो आधार आक्षेपकारी नहीं हैं। दस आधार भौतिक हैं। मन का आधार भौतिक नहीं है। वैचारिक आधार कभी भौतिक होता है; कभी भौतिक नहीं होता। दस आधार सांसारिक हैं। दो आधार कभी सांसारिक होते हैं; कभी अलौकिक होते हैं। (सभी आधार) एक तरीके से ज्ञात किए जा सकते हैं; दूसरे तरीके से ज्ञात नहीं किए जा सकते। (2)

ग्यारह आधार दोष नहीं हैं। वैचारिक आधार कभी दोष होता है, कभी दोष नहीं होता। दस आधार दोषों के विषय हैं। दो आधार कभी दोषों के विषय होते हैं, कभी दोष नहीं होते। दस आधार दोषों से संबंधित नहीं हैं। दो आधार कभी दोषों से संबंधित होते हैं, कभी दोष नहीं होते। दस आधारों को दोष और दोषों के विषय नहीं कहा जाना चाहिए; वे दोषों के विषय हैं।

आधारों का विश्लेषण

99

लेकिन ये दोष नहीं हैं। मन के आधार को दोष नहीं कहा जाना चाहिए; यह कभी-कभी दोषों का कारण होता है लेकिन दोष नहीं होता; कभी-कभी इसे दोषों का कारण नहीं कहा जाना चाहिए लेकिन दोष नहीं होता। वैचारिक आधार कभी-कभी दोष होता है और दोषों का कारण भी होता है; कभी-कभी दोषों का कारण होता है लेकिन दोष नहीं होता; कभी-कभी इसे दोषों का कारण नहीं कहा जाना चाहिए या दोषों का कारण होता है लेकिन दोष नहीं होता। दस आधारों को दोष नहीं कहा जाना चाहिए; यह दोषों से जुड़ा हुआ है लेकिन दोषों से संबंधित नहीं है। मन के आधार को दोष नहीं कहा जाना चाहिए; यह कभी-कभी दोषों से जुड़ा हुआ है लेकिन दोष नहीं होता; कभी-कभी इसे दोषों से जुड़ा हुआ नहीं कहा जाना चाहिए लेकिन दोष नहीं होता। वैचारिक आधार कभी-कभी अशुद्धता से भी जुड़ा होता है; कभी-कभी अशुद्धता से जुड़ा होता है लेकिन अशुद्धता नहीं होता; कभी-कभी ऐसा नहीं कहा जा सकता कि वह अशुद्धता है, अशुद्धता से भी जुड़ा होता है या अशुद्धता से जुड़ा होता है लेकिन अशुद्धता नहीं होता। दस आधार अशुद्धता से जुड़े नहीं होते, अशुद्धता के विषय होते हैं। दो आधार कभी-कभी अशुद्धता से जुड़े नहीं होते, अशुद्धता के विषय होते हैं; कभी-कभी अशुद्धता से जुड़े नहीं होते, अशुद्धता के विषय नहीं होते; कभी-कभी ऐसा नहीं कहा जा सकता कि वे अशुद्धता से जुड़े नहीं होते, अशुद्धता के विषय होते हैं या अशुद्धता से जुड़े नहीं होते, अशुद्धता के विषय नहीं होते। (3)

ग्यारह आधार बंधन नहीं हैं। वैचारिक आधार कभी बंधन होता है, कभी बंधन नहीं होता। दस आधार बंधनों के विषय होते हैं। दो आधार कभी बंधनों के विषय होते हैं, कभी बंधनों के विषय नहीं होते। दस आधार बंधनों से संबंधित नहीं होते। दो आधार कभी बंधनों से संबंधित होते हैं, कभी बंधनों से संबंधित नहीं होते। दस आधारों को बंधन और बंधनों के विषय नहीं कहा जाना चाहिए; वे बंधनों के विषय तो हैं, पर बंधन नहीं हैं। मन के आधार को बंधन और बंधनों का विषय नहीं कहा जाना चाहिए; यह कभी बंधनों का विषय होता है, पर बंधन नहीं होता; कभी-कभी इसे बंधनों का विषय और बंधन नहीं कहा जाना चाहिए। वैचारिक आधार कभी बंधन और बंधनों का विषय होता है; कभी-कभी बंधनों का विषय होता है, पर बंधन नहीं होता। कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि बंधन भी बंधनों की वस्तु है या बंधनों की वस्तु है लेकिन बंधन नहीं है।

दस आधारों को यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वे बंधन हैं, बंधनों से जुड़े हुए हैं या बंधनों से जुड़े हुए हैं लेकिन बंधन नहीं हैं। [77] मन के आधार को यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वह बंधन है, बंधनों से जुड़ा हुआ है; (यह) कभी-कभी बंधनों से जुड़ा होता है लेकिन बंधन नहीं होता; कभी-कभी इसे यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वह बंधनों से जुड़ा हुआ है लेकिन बंधन नहीं है। वैचारिक आधार कभी-कभी बंधन होता है, बंधनों से जुड़ा हुआ होता है; कभी-कभी बंधनों से जुड़ा होता है लेकिन बंधन नहीं होता; कभी-कभी इसे यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वह बंधन है, बंधनों से जुड़ा हुआ है या बंधनों से जुड़ा हुआ है लेकिन बंधन नहीं है। दस आधार बंधनों से जुड़े नहीं हैं, बंधनों के विषय हैं। दो आधार कभी-कभी बंधनों से जुड़े नहीं होते, बंधनों के विषय होते हैं; कभी-कभी बंधनों से जुड़े नहीं होते, बंधनों के विषय नहीं होते; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि, बेड़ियों से संबंधित नहीं हैं, बेड़ियों की वस्तुएँ हैं या बेड़ियों से संबंधित नहीं हैं, बेड़ियों की वस्तुएँ नहीं हैं। (4)

ग्यारह आधार बंधन नहीं हैं। वैचारिक आधार कभी बंधन होता है, कभी बंधन नहीं होता। दस आधार बंधनों के विषय होते हैं। दो आधार कभी बंधनों के विषय होते हैं, कभी बंधनों के विषय नहीं होते। दस आधार बंधनों से संबद्ध नहीं होते। दो आधार कभी बंधनों से संबद्ध होते हैं, कभी बंधनों से संबद्ध नहीं होते। दस आधारों को बंधन और बंधनों के विषय नहीं कहा जाना चाहिए; वे बंधनों के विषय तो हैं, लेकिन बंधन नहीं हैं। मन के आधार को बंधन और बंधनों का विषय नहीं कहा जाना चाहिए; यह कभी बंधनों का विषय होता है, लेकिन बंधन नहीं होता; कभी-कभी इसे बंधनों का विषय नहीं कहा जाना चाहिए, लेकिन बंधन नहीं होता। वैचारिक आधार कभी बंधन और बंधनों का विषय होता है, कभी-कभी बंधनों का विषय होता है, लेकिन बंधन नहीं होता; कभी-कभी इसे बंधन और बंधनों का विषय नहीं कहा जाना चाहिए, या तो यह बंधन का विषय है, लेकिन बंधन नहीं है। दस आधारों को यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वे संबंधों से जुड़े हुए हैं या संबंधों से जुड़े हुए हैं लेकिन स्वयं संबंध नहीं हैं। मन के आधार को यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वह संबंधों से जुड़ा हुआ है; (यह) कभी-कभी संबंधों से जुड़ा होता है लेकिन स्वयं संबंध नहीं होता; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वह संबंधों से जुड़ा हुआ है लेकिन स्वयं संबंध नहीं है। वैचारिक आधार कभी-कभी संबंधों से जुड़ा होता है; कभी-कभी संबंधों से जुड़ा होता है लेकिन स्वयं संबंध नहीं होता; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वह संबंधों से जुड़ा हुआ है या संबंधों से जुड़ा हुआ है लेकिन स्वयं संबंध नहीं है। दस आधार संबंधों से जुड़े नहीं होते, बल्कि संबंधों के विषय होते हैं। दो आधार कभी-कभी संबंधों से जुड़े नहीं होते, बल्कि संबंधों के विषय होते हैं; कभी-कभी संबंधों से जुड़े नहीं होते, बल्कि संबंधों के विषय नहीं होते; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वे संबंधों से जुड़े नहीं हैं।

जो संबंध से जुड़े हैं, वे संबंधों के विषय हैं या संबंधों से जुड़े नहीं हैं, वे संबंधों के विषय नहीं हैं। (5)

ग्यारह आधार बाढ़ नहीं हैं। :P: बंधन नहीं हैं। :P: बाधाएँ नहीं हैं। वैचारिक आधार कभी बाधा होता है; कभी बाधा नहीं होता। दस आधार बाधाओं के विषय हैं। दो आधार [78] कभी बाधाओं के विषय होते हैं; कभी बाधाओं के विषय नहीं होते। दस आधार बाधाओं से संबंधित नहीं हैं। दो आधार कभी बाधाओं से संबंधित होते हैं; कभी बाधाओं से संबंधित नहीं होते। दस आधारों को बाधाएँ और बाधाओं के विषय नहीं कहा जाना चाहिए; (वे) बाधाओं के विषय हैं लेकिन बाधाएँ नहीं हैं। मन के आधार को बाधा और बाधाओं का विषय नहीं कहा जाना चाहिए; (यह) कभी बाधाओं का विषय होता है लेकिन बाधा नहीं होता; कभी-कभी इसे बाधाएँ और बाधा नहीं कहा जाना चाहिए। वैचारिक आधार कभी-कभी बाधा भी होता है और बाधाओं का कारण भी; कभी-कभी बाधाओं का कारण तो होता है लेकिन बाधा नहीं होता; कभी-कभी इसे बाधा भी नहीं कहा जा सकता, बल्कि यह बाधाओं का कारण भी होता है या बाधाओं का कारण तो होता है लेकिन बाधा नहीं होता। दस आधारों को बाधा भी नहीं कहा जा सकता, बल्कि यह बाधाओं से जुड़ा हुआ भी हो सकता है या बाधाओं से जुड़ा हुआ तो होता है लेकिन बाधा नहीं होता। मन के आधार को बाधा भी नहीं कहा जा सकता, बल्कि यह बाधाओं से जुड़ा हुआ भी होता है; कभी-कभी यह बाधाओं से जुड़ा हुआ तो होता है लेकिन बाधा नहीं होता; कभी-कभी इसे बाधाओं से जुड़ा हुआ तो नहीं कहा जा सकता, बल्कि यह बाधा नहीं होता। वैचारिक आधार कभी-कभी बाधा भी होता है और बाधाओं से जुड़ा हुआ भी; कभी-कभी यह बाधाओं से जुड़ा हुआ तो होता है लेकिन बाधा नहीं होता। कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि कोई बाधा है, जो बाधाओं से भी जुड़ी है या बाधाओं से जुड़ी है लेकिन बाधा नहीं है। दस आधार बाधाओं से जुड़े नहीं हैं, बाधाओं के विषय हैं। दो आधार कभी-कभी बाधाओं से जुड़े नहीं होते, बाधाओं के विषय होते हैं; कभी-कभी बाधाओं से जुड़े नहीं होते, बाधाओं के विषय नहीं होते; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि कोई बाधा नहीं है, बाधाओं के विषय हैं या बाधाओं से जुड़े नहीं हैं, बाधाओं के विषय नहीं हैं। (8)

P = बाधाओं के संबंध में पूर्ण।

ग्यारह आधार विकृतियाँ नहीं हैं। वैचारिक आधार कभी-कभी विकृति होता है; कभी-कभी विकृति नहीं होता। दस आधार विकृतियों के विषय हैं। दो आधार कभी-कभी विकृतियों के विषय होते हैं;

कभी-कभी विकृतियों के विषय नहीं होते। दस आधार विकृतियों से संबंधित नहीं हैं। मन का आधार कभी-कभी विकृतियों से संबंधित होता है; कभी-कभी विकृतियों से संबंधित नहीं होता। वैचारिक आधार कभी-कभी विकृतियों से संबंधित होता है; कभी-कभी विकृतियों से संबंधित नहीं होता; कभी-कभी यह कहना उचित नहीं होगा कि यह विकृतियों से संबंधित है या नहीं। दस आधारों को विकृतियों का विषय नहीं कहना चाहिए; वे विकृतियों के विषय तो हैं, लेकिन स्वयं विकृत नहीं हैं। मन के आधार को विकृतियों का विषय नहीं कहना चाहिए; कभी-कभी यह विकृतियों का विषय होता है, लेकिन स्वयं विकृत नहीं होता; कभी-कभी यह कहना उचित नहीं होगा कि यह विकृतियों का विषय होता है, लेकिन स्वयं विकृत नहीं होता। वैचारिक आधार कभी-कभी विकृतियों का विषय होता है; कभी-कभी विकृतियों का विषय होता है, लेकिन स्वयं विकृत नहीं होता। कभी-कभी विकृति नहीं कहा जाना चाहिए, विकृति का उद्देश्य भी विकृति का उद्देश्य हो सकता है या विकृति का उद्देश्य नहीं है। दस आधार विकृतियों से जुड़े नहीं हैं, विकृतियों के उद्देश्य हैं। दो आधार कभी-कभी विकृतियों से जुड़े नहीं होते हैं, विकृतियों के उद्देश्य होते हैं; कभी-कभी विकृतियों से जुड़े नहीं होते हैं, विकृतियों के उद्देश्य नहीं होते हैं; कभी-कभी नहीं कहा जाना चाहिए, [79] विकृतियों से जुड़े नहीं हैं, विकृतियों के उद्देश्य हैं या विकृतियों से जुड़े नहीं हैं, विकृतियों के उद्देश्य नहीं हैं। (9)

दस आधारों का कोई वस्तु नहीं है। मन आधार का एक वस्तु है। वैचारिक आधार का कभी-कभी वस्तु होता है; कभी-कभी वस्तु नहीं होता। मन आधार चेतना है। ग्यारह आधार चेतना नहीं हैं। ग्यारह आधार मानसिक सहवर्ती नहीं हैं। वैचारिक आधार कभी-कभी मानसिक सहवर्ती होता है; कभी-कभी मानसिक सहवर्ती नहीं होता। दस आधार चेतना से संबद्ध नहीं हैं। वैचारिक आधार कभी-कभी चेतना से संबद्ध होता है; कभी-कभी चेतना से संबद्ध नहीं होता। मन आधार को चेतना से संबद्ध या असंबद्ध नहीं कहा जाना चाहिए। दस आधार चेतना से जुड़े नहीं हैं। वैचारिक आधार कभी-कभी चेतना से जुड़ा होता है; कभी-कभी चेतना से जुड़ा नहीं होता। मन आधार को चेतना से जुड़ा या असंबद्ध नहीं कहा जाना चाहिए। छह आधार चेतना द्वारा उत्पन्न नहीं होते हैं। छह आधार कभी-कभी चेतना द्वारा उत्पन्न होते हैं; कभी-कभी चेतना द्वारा उत्पन्न नहीं होते। ग्यारह आधार चेतना के साथ सह-अस्तित्व में नहीं हैं। वैचारिक आधार कभी-कभी चेतना के साथ सह-अस्तित्व में होता है; कभी-कभी नहीं होता।

आधारों का विश्लेषण

103

चेतना के साथ विद्यमान। ग्यारह आधार चेतना के साथ नहीं होते। वैचारिक आधार कभी-कभी चेतना के साथ होता है; कभी-कभी चेतना के साथ नहीं होता। ग्यारह आधार चेतना से जुड़े नहीं होते, न ही चेतना द्वारा उत्पन्न होते हैं। वैचारिक आधार कभी-कभी चेतना से जुड़ा होता है, चेतना द्वारा उत्पन्न होता है; कभी-कभी चेतना से जुड़ा नहीं होता, चेतना द्वारा उत्पन्न नहीं होता। ग्यारह आधार चेतना से जुड़े नहीं होते, न ही चेतना द्वारा उत्पन्न होते हैं, न ही चेतना के साथ सह-अस्तित्व में होते हैं। वैचारिक आधार कभी-कभी चेतना से जुड़ा होता है, चेतना द्वारा उत्पन्न होता है, चेतना के साथ सह-अस्तित्व में होता है; कभी-कभी चेतना से जुड़ा नहीं होता, चेतना द्वारा उत्पन्न नहीं होता, चेतना के साथ सह-अस्तित्व में नहीं होता। ग्यारह आधार चेतना से जुड़े नहीं होते, चेतना द्वारा उत्पन्न नहीं होते, न ही चेतना के साथ होते हैं। वैचारिक आधार कभी-कभी चेतना से जुड़ा होता है, चेतना द्वारा उत्पन्न होता है, चेतना के साथ होता है; कभी-कभी चेतना से जुड़ा नहीं होता, चेतना द्वारा उत्पन्न नहीं होता, चेतना के साथ नहीं होता। (10)

छह आधार आंतरिक हैं। छह आधार बाह्य हैं। नौ आधार व्युत्पन्न हैं। दो आधार व्युत्पन्न नहीं हैं। वैचारिक आधार कभी व्युत्पन्न होता है, कभी व्युत्पन्न नहीं होता। पाँच आधार (लालसा और भ्रामक दृष्टि से) ग्रहण किए जाते हैं। श्रव्य आधार ग्रहण नहीं किया जाता। छह आधार कभी ग्रहण किए जाते हैं, कभी ग्रहण नहीं किए जाते। ग्यारह आधार आसक्ति नहीं हैं। वैचारिक आधार कभी आसक्ति होता है, कभी आसक्ति नहीं होता। दस आधार आसक्ति के विषय हैं। दो आधार कभी आसक्ति के विषय होते हैं, कभी आसक्ति नहीं होते। दस आधार आसक्ति से संबद्ध नहीं हैं। दो आधार कभी आसक्ति से संबद्ध होते हैं, कभी आसक्ति नहीं होते। दस आधारों को आसक्ति और आसक्ति का विषय नहीं कहा जाना चाहिए; वे आसक्ति के विषय तो हैं, पर स्वयं आसक्ति नहीं हैं। मन के आधार को आसक्ति और आसक्ति का विषय नहीं कहा जाना चाहिए; वह कभी आसक्ति का विषय होता है, पर स्वयं आसक्ति नहीं है। कभी-कभी इसे आसक्तियों का विषय नहीं कहा जाना चाहिए, परन्तु यह स्वयं आसक्ति नहीं है। वैचारिक आधार कभी-कभी आसक्ति भी होता है और आसक्तियों का विषय भी; कभी-कभी यह आसक्ति का विषय होता है परन्तु आसक्ति नहीं; कभी-कभी इसे [80] आसक्ति भी नहीं कहा जाना चाहिए, या यह आसक्ति का विषय होता है परन्तु आसक्ति नहीं है। दस आधारों को यह नहीं कहा जाना चाहिए, कि वे आसक्तियाँ भी हैं और आसक्तियों से जुड़ी हैं या आसक्तियों से जुड़ी हैं परन्तु आसक्तियाँ नहीं हैं। मन आधार को यह नहीं कहा जाना चाहिए, कि वे आसक्तियाँ भी हैं और आसक्तियों से जुड़ी हैं; (यह) कभी-कभी

104

आसक्ति से जुड़ा हुआ है, लेकिन आसक्ति नहीं है; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि आसक्ति से जुड़ा हुआ है, लेकिन आसक्ति नहीं है। वैचारिक आधार कभी-कभी आसक्ति भी होता है और आसक्ति से जुड़ा हुआ भी होता है; कभी-कभी आसक्ति से जुड़ा होता है, लेकिन आसक्ति नहीं है; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि आसक्ति भी आसक्ति से जुड़ी हुई है या आसक्ति से जुड़ी हुई है, लेकिन आसक्ति नहीं है। दस आधार आसक्ति से जुड़े नहीं हैं, बल्कि आसक्ति के विषय हैं। दो आधार कभी-कभी आसक्ति से जुड़े नहीं होते, बल्कि आसक्ति के विषय होते हैं; कभी-कभी आसक्ति से जुड़े नहीं होते, बल्कि आसक्ति के विषय नहीं होते; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि आसक्ति से जुड़े नहीं हैं, बल्कि आसक्ति के विषय हैं या आसक्ति से जुड़े नहीं हैं, बल्कि आसक्ति के विषय नहीं हैं। (11)

ग्यारह आधार भ्रष्टता नहीं हैं। वैचारिक आधार कभी भ्रष्टता होता है; कभी भ्रष्टता नहीं होता। दस आधार भ्रष्टता के विषय हैं। दो आधार कभी भ्रष्टता के विषय होते हैं; कभी भ्रष्टता नहीं होते। दस आधार भ्रष्ट नहीं हैं। दो आधार कभी भ्रष्ट होते हैं; कभी भ्रष्टता नहीं होते। दस आधार भ्रष्टता से संबंधित नहीं हैं। दो आधार कभी भ्रष्टता से संबंधित होते हैं; कभी भ्रष्टता नहीं होते। दस आधारों को भ्रष्टता और भ्रष्टता का विषय नहीं कहा जाना चाहिए; वे भ्रष्टता के विषय तो हैं, लेकिन स्वयं भ्रष्टता नहीं हैं। मन के आधार को भ्रष्टता और भ्रष्टता का विषय नहीं कहा जाना चाहिए; यह कभी भ्रष्टता का विषय होता है, लेकिन स्वयं भ्रष्टता नहीं है; कभी-कभी इसे भ्रष्टता का विषय नहीं कहा जाना चाहिए, लेकिन स्वयं भ्रष्टता नहीं है। वैचारिक आधार कभी भ्रष्टता और भ्रष्टता का विषय होता है; कभी भ्रष्टता का विषय होता है, लेकिन स्वयं भ्रष्टता नहीं है। कभी-कभी भ्रष्टाचार को भ्रष्टाचार का विषय नहीं कहा जाना चाहिए, या भ्रष्टाचार का लक्ष्य तो भ्रष्टाचार नहीं है। दस आधारों को भ्रष्टाचार नहीं कहा जाना चाहिए, या भ्रष्टाचार भ्रष्ट नहीं है। मन के आधार को भ्रष्टाचार नहीं कहा जाना चाहिए; (यह) कभी-कभी भ्रष्ट होता है लेकिन भ्रष्टाचार नहीं है; कभी-कभी इसे भ्रष्ट नहीं कहा जाना चाहिए, लेकिन भ्रष्टाचार नहीं है। वैचारिक आधार कभी-कभी भ्रष्टाचार भी होता है; कभी-कभी भ्रष्ट होता है लेकिन भ्रष्टाचार नहीं है; कभी-कभी इसे भ्रष्टाचार नहीं कहा जाना चाहिए, या भ्रष्टाचार भ्रष्ट नहीं है।

दस आधार नहीं कहे जाने चाहिए, भ्रष्टाचार भी इससे जुड़ा हुआ है।

भ्रष्टाचार से जुड़े हुए हैं या भ्रष्टाचार से संबंधित हैं लेकिन स्वयं भ्रष्टाचार नहीं हैं। मन का आधार भ्रष्टाचार नहीं कहा जाना चाहिए, यह भी भ्रष्टाचार से जुड़ा हुआ है; (यह) कभी-कभी भ्रष्टाचार से जुड़ा होता है लेकिन भ्रष्टाचार नहीं होता; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि यह भ्रष्टाचार से जुड़ा हुआ है लेकिन भ्रष्टाचार नहीं है। वैचारिक आधार कभी-कभी भ्रष्टाचार होता है और भ्रष्टाचार से भी जुड़ा होता है; कभी-कभी भ्रष्टाचार से जुड़ा होता है लेकिन भ्रष्टाचार नहीं होता; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि भ्रष्टाचार भ्रष्टाचार से जुड़ा हुआ है या भ्रष्टाचार से जुड़ा हुआ है लेकिन भ्रष्टाचार नहीं है। दस आधार भ्रष्टाचार से जुड़े नहीं हैं, भ्रष्टाचार के विषय हैं। दो आधार कभी-कभी भ्रष्टाचार से जुड़े नहीं होते, भ्रष्टाचार के विषय होते हैं; [81] कभी-कभी भ्रष्टाचार से जुड़े नहीं होते, भ्रष्टाचार के विषय नहीं होते; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि भ्रष्टाचार से जुड़े नहीं हैं, भ्रष्टाचार के विषय हैं या भ्रष्टाचार से जुड़े नहीं हैं, भ्रष्टाचार के विषय नहीं हैं। (12)

दस आधारों को पहले मार्ग से नहीं छोड़ा जाना चाहिए। दो आधारों को कभी-कभी पहले मार्ग से छोड़ा जाना चाहिए; कभी-कभी पहले मार्ग से नहीं छोड़ा जाना चाहिए। दस आधारों को बाद के मार्गों से नहीं छोड़ा जाना चाहिए। दो आधारों को कभी-कभी बाद के मार्गों से छोड़ा जाना चाहिए; कभी-कभी बाद के मार्गों से नहीं छोड़ा जाना चाहिए। दस आधारों की कोई जड़ नहीं होती जिसे पहले मार्ग से छोड़ा जा सके। दो आधारों की कभी-कभी जड़ होती है जिसे पहले मार्ग से छोड़ा जा सके; कभी-कभी जड़ नहीं होती जिसे पहले मार्ग से छोड़ा जा सके। दस आधारों की कोई जड़ नहीं होती जिसे बाद के मार्गों से छोड़ा जा सके। दो आधारों की कभी-कभी जड़ होती है जिसे बाद के मार्गों से छोड़ा जा सके; कभी-कभी जड़ नहीं होती जिसे बाद के मार्गों से छोड़ा जा सके। दस आधारों का कोई प्रारंभिक अनुप्रयोग नहीं होता है। दो आधारों का कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग होता है; कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग नहीं होता है। दस आधारों का कोई निरंतर अनुप्रयोग नहीं होता है। दो आधारों का कभी-कभी निरंतर अनुप्रयोग होता है; कभी-कभी निरंतर अनुप्रयोग नहीं होता है। दस आधारों में उत्साह नहीं होता है। दो आधारों में कभी-कभी उत्साह होता है; कभी-कभी उत्साह नहीं होता है। दस आधारों का कोई उत्साह नहीं होता है। दो आधार कभी-कभी उत्साह के साथ होते हैं; कभी-कभी उत्साह के साथ नहीं होते। दस आधार आनंद के साथ नहीं होते। दो आधार कभी-कभी आनंद के साथ होते हैं; कभी-कभी आनंद के साथ नहीं होते। दस आधार उदासीनता के साथ नहीं होते। दो आधार कभी-कभी उदासीनता के साथ होते हैं; कभी-कभी उदासीनता के साथ नहीं होते।

106

विश्लेषण की पुस्तक

दस आधार इच्छा के तल की विशेषताएँ हैं। कभी-कभी दो आधार इच्छा के तल की विशेषताएँ होते हैं; कभी-कभी नहीं होते। दस आधार रूप के तल की विशेषताएँ नहीं हैं। कभी-कभी दो आधार रूप के तल की विशेषताएँ होते हैं; कभी-कभी नहीं होते। दस आधार निराकार तल की विशेषताएँ नहीं हैं। कभी-कभी दो आधार निराकार तल की विशेषताएँ होते हैं; कभी-कभी नहीं होते। दस आधार समाहित हैं (अर्थात सांसारिक हैं)। कभी-कभी दो आधार समाहित होते हैं (अर्थात सांसारिक हैं); कभी-कभी समाहित नहीं होते (अर्थात अलौकिक हैं)। दस आधारों में मुक्ति की प्रवृत्ति नहीं होती। कभी-कभी दो आधारों में मुक्ति की प्रवृत्ति होती है; कभी-कभी नहीं होती। दस आधारों का कोई निश्चित (परिणामी समय) नहीं होता। कभी-कभी दो आधारों का निश्चित (परिणामी समय) होता है; कभी-कभी नहीं होता। दस आधार पार किए जा सकते हैं। कभी-कभी दो आधार पार किए जा सकते हैं; कभी-कभी नहीं। दस आधार शोक का कारण नहीं हैं। दो आधार कभी-कभी शोक का कारण होते हैं; कभी-कभी शोक का कारण नहीं होते। (13)

(यह खंड यहीं समाप्त होता है) पूछताछ।

आधारों का विश्लेषण समाप्त हो गया है।
टिपिटक >> अभिधम्म पिटक >> विभंग >> अध्याय 3 पाठ - धातु
विभंग-विश्लेषण की पुस्तक-गोतम बुद्ध द्वारा बोली गई
पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण
पाली से यू. थिटिला, रंगून, बर्मा, 1969 द्वारा अनुवादित

ओसीआर संस्करण, प्रूफरीडिंग नहीं की गई है, इसमें त्रुटियां हैं
(पाठकों को दिए गए .pdf संस्करण की सहायता से पाठ को सही करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है)

अध्याय 3. तत्वों (धातुओं) का विश्लेषण

1. प्रवचनों के अनुसार विश्लेषण

172. [82] छह तत्व हैं: विस्तार का तत्व (पथवी), सामंजस्य का तत्व (आपो), ऊष्मा का तत्व (तेजो), गति का तत्व (वायो), स्थान का तत्व (आकाश), चेतना का तत्व (विज्ञाना)।

173. इसमें विस्तार का तत्व क्या है? विस्तार का तत्व दो प्रकार का होता है: आंतरिक; बाह्य। इसमें विस्तार का आंतरिक तत्व क्या है? वह जो व्यक्तिगत, स्व-संदर्भित, कठोर, सख्त, कठोरता से युक्त, आंतरिक और लालसा एवं भ्रामक दृष्टि से ग्रहण किया हुआ हो। उदाहरण के लिए: सिर के बाल, शरीर के बाल, नाखून, दांत, त्वचा; मांस, नसें, हड्डी, अस्थि मज्जा, गुर्दे; हृदय, यकृत, झिल्लीदार ऊतक, प्लीहा, फेफड़े; आंतें, मेसेंटरी, अपचित भोजन, मल; या जो कुछ भी व्यक्तिगत, स्व-संदर्भित, कठोर, सख्त, कठोरता से युक्त, आंतरिक और ग्रहण किया हुआ हो। इसे विस्तार का आंतरिक तत्व कहते हैं।

इसमें विस्तार का बाह्य तत्व क्या है? वह जो बाह्य, कठोर, सख्त, कठोर, बाह्य, अपठनीय है। उदाहरण के लिए; लोहा, तांबा, टिन, सीसा, चांदी, मोती, रत्न, कैट्स-आई, शंख, पत्थर, मूंगा, चांदी का सिक्का, सोना, माणिक, बहुरंगी कीमती पत्थर, घास, लकड़ी, बजरी, मिट्टी के बर्तन, मिट्टी, चट्टान, पहाड़; या जो कुछ भी बाह्य, कठोर, सख्त, सख्त, बाह्य, अपठनीय है। इसे विस्तार का बाह्य तत्व कहा जाता है। वह जो विस्तार का आंतरिक तत्व है और वह जो विस्तार का बाह्य तत्व है; इन दोनों को सामूहिक रूप से संक्षेप में लें तो, इसे विस्तार का तत्व कहा जाता है। (1) [83]

174. इसमें संसंजन का तत्व क्या है? संसंजन का तत्व दो प्रकार का होता है: आंतरिक और बाह्य। इसमें आंतरिक संसंजन तत्व क्या है? वह जो व्यक्तिगत, स्व-संदर्भित, जलयुक्त, तरल, श्यान, चिपचिपा, पदार्थ का संसंजनशील, आंतरिक और ग्रहणशील हो। उदाहरण के लिए: पित्त, कफ, मवाद, रक्त, पसीना, वसा, आंसू, लसीका, लार, नाक का बलगम, शिरापरक द्रव, मूत्र; या जो कुछ भी व्यक्तिगत, स्व-संदर्भित, जलयुक्त, तरल, चिपचिपा, पदार्थ का संसंजनशील, आंतरिक और ग्रहणशील हो। इसे आंतरिक संसंजन तत्व कहते हैं।

इसमें बाह्य संसंजन तत्व क्या है? वह जो बाह्य है, जैसे जल, द्रव, श्यान, श्यान, पदार्थ का संसंजन, बाह्य, जिसे समझा नहीं जा सकता। उदाहरण के लिए; जड़ों का रस, तनों का रस, छाल का रस, पत्तियों का रस, फूलों का रस, फलों का रस, दूध, नरम दही, घी, ताजा घी, तेल, शहद, गुड़, पृथ्वी या आकाश का जल; या जो कुछ भी बाह्य है, जल, द्रव, श्यान, श्यान, पदार्थ का संसंजन, बाह्य, जिसे समझा नहीं जा सकता। इसे बाह्य संसंजन तत्व कहते हैं। वह जो आंतरिक संसंजन तत्व है और वह जो बाह्य संसंजन तत्व है; इन दोनों को सामूहिक रूप से संक्षेप में लें तो, इसे संसंजन तत्व कहते हैं। (2)

175. इसमें ऊष्मा का तत्व क्या है? ऊष्मा का तत्व दो प्रकार का होता है: आंतरिक और बाह्य। इसमें आंतरिक ऊष्मा तत्व क्या है? वह जो व्यक्तिगत, स्व-संदर्भित, अग्नि, प्रज्वलित, ऊष्मा, गर्म, तापयुक्त, आंतरिक और ग्रहणशील हो। उदाहरण के लिए; वह जिससे ऊष्मा उत्पन्न होती है; वह जिससे क्षय होता है; वह जिससे जलकर राख हो जाता है; वह जिससे खाया, पिया, चबाया या चखा गया भोजन पूर्णतः पच जाता है; या जो कुछ भी व्यक्तिगत, स्व-संदर्भित, अग्नि, प्रज्वलित, ऊष्मा, गर्म, तापयुक्त, आंतरिक और ग्रहणशील हो। इसे आंतरिक ऊष्मा तत्व कहते हैं।

इसमें ऊष्मा का बाह्य तत्व क्या है? वह जो बाह्य है, अग्नि, प्रज्वलित, ऊष्मा, गर्म, उमसयुक्त, ऊष्मीय, बाह्य, जिसे समझा नहीं जा सकता। उदाहरण के लिए; लकड़ी की आग, भूसे की आग, घास की आग, गोबर की आग, भूसी की आग, कूड़े की आग, बिजली की आग (अर्थात्, बिजली), अग्नि की ऊष्मा, सूर्य की ऊष्मा, लकड़ी के ढेर में उत्पन्न ऊष्मा, घास के ढेर में उत्पन्न ऊष्मा, धान के ढेर में उत्पन्न ऊष्मा, वस्तुओं के ढेर में उत्पन्न ऊष्मा; या जो कुछ भी बाह्य है, अग्नि, प्रज्वलित, ऊष्मा, गर्म, उमसयुक्त, ऊष्मीय, बाह्य, जिसे

समझा नहीं जा सकता। इसे ऊष्मा का बाह्य तत्व कहते हैं। [84] वह जो ऊष्मा का आंतरिक तत्व है और वह जो ऊष्मा का बाह्य तत्व है; इन दोनों को सामूहिक रूप से और संक्षेप में एक साथ लेने पर, इसे ऊष्मा का तत्व कहते हैं। (3)

176. इसमें गति का तत्व क्या है? गति का तत्व दो प्रकार का होता है: आंतरिक; बाह्य। इसमें गति का आंतरिक तत्व क्या है? वह जो व्यक्तिगत, स्व-संदर्भित, वायु, हवादार, पदार्थ का फैलाव, आंतरिक, ग्रहणशील है। उदाहरण के लिए; ऊपर उठने वाली वायु; नीचे उतरने वाली वायु; पेट की वायु; आंतों की वायु।

हवा; अंगों में प्रवाहित होने वाली हवा; छुरी जैसी हवा; रेज़र जैसी हवा; चीर देने वाली हवा; साँस लेना या साँस छोड़ना; या जो कुछ भी व्यक्तिगत, आत्म-संदर्भित, हवा, हवादार, पदार्थ का फैलाव, आंतरिक, बोधगम्य है। इसे गति का आंतरिक तत्व कहा जाता है।

इसमें गति का बाह्य तत्व क्या है? वह जो बाह्य है, वायु, वायुमय, पदार्थ का फैलाव, बाह्य, जिसे समझा नहीं जा सकता। उदाहरण के लिए; पूर्वी हवाएँ; पश्चिमी हवाएँ; उत्तरी हवाएँ; दक्षिणी हवाएँ; धूल भरी हवाएँ; धूल रहित हवाएँ; ठंडी हवाएँ; गर्म हवाएँ; हल्की हवाएँ; तेज़ हवाएँ; काली हवाएँ (अर्थात, काले बादलों के साथ चलने वाली हवाएँ); ऊँचाई पर चलने वाली हवाएँ; पंखों से चलने वाली हवाएँ (अर्थात, पक्षियों के पंखों के कारण होने वाली वायु गति); सुपर्नन हवाएँ (अर्थात, पौराणिक गरूला पक्षी के कारण होने वाली वायु गति); वृत्ताकार ताड़ के पत्ते (पंखे) से निकलने वाली हवाएँ; पंखे से निकलने वाली हवा; या जो कुछ भी बाह्य है, वायु, वायुमय, पदार्थ का फैलाव, बाह्य, जिसे समझा नहीं जा सकता। इसे गति का बाह्य तत्व कहते हैं। वह जो गति का आंतरिक तत्व है और वह जो गति का बाह्य तत्व है; इन दोनों को सामूहिक रूप से और संक्षेप में एक साथ लेने पर, इसे गति का तत्व कहते हैं। (4)

177. इसमें अंतरिक्ष का तत्व क्या है? अंतरिक्ष का तत्व दो प्रकार का होता है: यह आंतरिक होता है; यह बाह्य होता है। इसमें अंतरिक्ष का आंतरिक तत्व क्या है? वह जो व्यक्तिगत, स्व-संदर्भित, अंतरिक्ष, स्थानिक, शून्य, खालीपन, अंतराल, अंतर्विभाज्य, मांस या रक्त के संपर्क में नहीं है, आंतरिक, ग्रहणशील है। उदाहरण के लिए; श्रवण मार्ग, नासिका मार्ग, मुख द्वार; वह जिससे खाया, पिया, चबाया, चखा जाता है; वह जिसमें खाया, पिया, चबाया, चखा जाता है; वह जिससे खाया, पिया, चबाया, चखा जाता है; या जो कुछ भी व्यक्तिगत, स्व-संदर्भित, अंतरिक्ष, स्थानिक, शून्य, खालीपन, अंतर्विभाज्य, मांस या रक्त के संपर्क में नहीं है, आंतरिक, ग्रहणशील है। इसे अंतरिक्ष का आंतरिक तत्व कहा जाता है।

उसमें अंतरिक्ष का बाह्य तत्व क्या है? वह जो बाह्य है, अंतरिक्ष, स्थानिक, शून्य, शून्यता, अंतराल, [85] अंतरालीय, चार महान तत्वों के संपर्क में नहीं, बाह्य, जिसे समझा नहीं जा सकता। इसे अंतरिक्ष का बाह्य तत्व कहा जाता है। वह जो अंतरिक्ष का आंतरिक तत्व है और वह जो अंतरिक्ष का बाह्य तत्व है; (इन) को सामूहिक रूप से और संक्षेप में एक साथ लेने पर, इसे अंतरिक्ष का तत्व कहा जाता है। (5)

178. उसमें चेतना का तत्व क्या है? आँख - चेतना-तत्व, कान - चेतना-तत्व, नाक - चेतना-तत्व-

विश्लेषण की पुस्तक

चेतना-तत्व, जीभ-चेतना-तत्व, शरीर-चेतना-तत्व, मन-चेतना-तत्व। इसे चेतना का तत्व कहा जाता है। (6)

ये छह तत्व हैं

179. अन्य छह तत्व हैं: सुख का तत्व (शारीरिक), पीड़ा का तत्व (शारीरिक), मानसिक सुख का तत्व, मानसिक पीड़ा का तत्व, उदासीनता का तत्व, अज्ञान का तत्व।

180. इसमें आनंद का तत्व क्या है? वह जो शारीरिक आराम है; शारीरिक सुख है; शारीरिक संपर्क से उत्पन्न सुखदायक अनुभव है; शारीरिक संपर्क से उत्पन्न सुखदायक अनुभूति है। इसे ही आनंद का तत्व कहा जाता है। (1)

इसमें दर्द का तत्व क्या है? वह जो शारीरिक बेचैनी है; शारीरिक दर्द है; शारीरिक संपर्क से उत्पन्न बेचैन पीड़ादायक अनुभव है; शारीरिक संपर्क से उत्पन्न बेचैन पीड़ादायक अनुभूति है। इसे दर्द का तत्व कहा जाता है। (2)

उसमें मानसिक सुख का तत्व क्या है? वह जो मानसिक सहजता है; मानसिक सुख; मानसिक संपर्क से उत्पन्न सुखदायक अनुभव; मानसिक संपर्क से उत्पन्न सुखदायक अनुभूति। इसे मानसिक सुख का तत्व कहा जाता है। (3)

उसमें मानसिक पीड़ा का तत्व क्या है? वह जो मानसिक बेचैनी है; मानसिक पीड़ा; मानसिक संपर्क से उत्पन्न बेचैन पीड़ादायक अनुभव; मानसिक संपर्क से उत्पन्न बेचैन पीड़ादायक भावना। इसे मानसिक पीड़ा का तत्व कहा जाता है। (4)

इसमें उदासीनता का तत्व क्या है? वह जो न तो मानसिक आराम है और न ही बेचैनी; न ही मानसिक संपर्क से उत्पन्न कोई दर्दनाक और न ही सुखद अनुभूति; न ही मानसिक संपर्क से उत्पन्न कोई दर्दनाक और न ही सुखद भावना। इसे उदासीनता का तत्व कहा जाता है। (5)

उसमें अज्ञान का तत्व क्या है? वह जो ज्ञान का अभाव है, दृष्टि का अभाव है, समझ का अभाव है, जागरूकता का अभाव है, ज्ञान का अभाव है, अंतर्दृष्टि का अभाव है, बोध का अभाव है, जांच का अभाव है, विवेक का अभाव है, चिंतन का अभाव है, तीक्ष्ण बुद्धि का अभाव है, मूर्खता है, नासमझी है, जागरूकता का अभाव है, सुस्ती है, मंदता है, संवेदनहीनता है, अज्ञान है, अज्ञान का सैलाब है, अज्ञान का बंधन है।

तत्वों का विश्लेषण

111

गुप्त अज्ञान, [86] उभरता हुआ अज्ञान; अज्ञान की बाधा, सुस्ती की बुरी जड़। इसे अज्ञान का तत्व कहा जाता है। (6)

ये छह तत्व हैं

181. अन्य छह तत्व हैं: इच्छा का तत्व, दुर्भावना का तत्व, क्रूरता का तत्व, त्याग का तत्व, दुर्भावना की अनुपस्थिति का तत्व, क्रूरता की अनुपस्थिति का तत्व।

182. इसमें इच्छा का तत्व क्या है? मन की चिंतन, विचार, एकाग्रता, ध्यान, गलत विचार, जो इच्छा से जुड़े होते हैं। इसे इच्छा का तत्व कहते हैं। भीड़भाड़ वाले नरक को निचली सीमा मानकर, परानिम्मितवासवत्ती (तल) के देवताओं को ऊपरी सीमा मानकर, इस समावेशन में जो कुछ भी है, जो इसमें घटित होता है, जो इसमें समाहित है, समुच्चय, तत्व, आधार, भौतिक गुण, भावनाएँ, बोध, मानसिक सहवर्ती, चेतना। इसे इच्छा का तत्व कहते हैं। (1)

उसमें दुर्भावना का तत्व क्या है? मनन, चिंतन,

P : दुर्भावना से जुड़ा गलत विचार। इसे तत्व कहा जाता है।
दुर्भावना का। या, चेतना की पीड़ा के दस कारणों में से एक है: आक्रोश, घृणा, शत्रुता, चिड़चिड़ापन, झुंझलाहट, क्रोध, अरुचि, मानसिक विकार, नफरत, क्रोध, क्रोधित होना, क्रोधित अवस्था, घृणा, घृणास्पद होना, घृणास्पद अवस्था, अव्यवस्था, अव्यवस्थित होना, विरोध, शत्रुता, उग्रता, अचानकता, चेतना के आनंद का अभाव। इसे दुर्भावना का तत्व कहा जाता है। (2)

पी — ऊपर देखें।

इसमें क्रूरता का तत्व क्या है? क्रूरता से जुड़ी मानसिकता, सोच, गलत विचार। इसे क्रूरता का तत्व कहा जाता है। इसमें कोई व्यक्ति हाथ से, मिट्टी के ढेले से, लाठी से, तलवार से, रस्सी से या किसी अन्य वस्तु से दूसरों को चोट पहुँचाता है; जो इसी प्रकार का है, दूसरों को परेशान करना, चोट पहुँचाना, तंग करना, घायल करना, उकसाना, क्रोधित करना, मारना। इसे क्रूरता का तत्व कहा जाता है। (3)

पी — ऊपर देखें।

इसमें त्याग का तत्व क्या है? त्याग से जुड़ी मानसिक प्रक्रिया, चिंतन, सही विचार। यही है

112

विश्लेषण की पुस्तक

इसे त्याग का तत्व कहा जाता है। सभी अच्छी अवस्थाएँ भी त्याग का तत्व हैं। (4)

P = ऊपर देखें।

उसमें दुर्भावना के अभाव का तत्व क्या है? दुर्भावना के अभाव से संबंधित चिंतन, विचार, सही विचार। इसे दुर्भावना के अभाव का तत्व कहा जाता है। प्राणियों में जो प्रेम है, प्रेमपूर्ण दया का कार्य है, प्रेमपूर्ण दया की अवस्था है, वह प्रेमपूर्ण दया है जो (दुर्भावना से) मानसिक रूप से मुक्त है। इसे दुर्भावना के अभाव का तत्व कहा जाता है। (5)

P = ऊपर देखें।

उसमें क्रूरता की अनुपस्थिति का तत्व क्या है? वह चिंतन, विचार, एकाग्रता, [87] ध्यान, मन का अनुप्रयोग, सही विचार, जो क्रूरता की अनुपस्थिति से जुड़ा है। इसे क्रूरता की अनुपस्थिति का तत्व कहा जाता है। प्राणियों में जो करुणा है, करुणा की अवस्था, करुणा जो मानसिक स्वतंत्रता (क्रूरता से) है। इसे क्रूरता की अनुपस्थिति का तत्व कहा जाता है। (6)

ये छह तत्व हैं

इस प्रकार, इन तीन समूहों में से प्रत्येक में छह तत्व हैं, जिन्हें सामूहिक रूप से और संक्षेप में लिया जाए तो अठारह तत्व होते हैं।

(यहाँ समाप्त होता है) प्रवचनों के अनुसार विश्लेषण

2. अभिधम्म के अनुसार विश्लेषण

183. अठारह तत्व हैं: आँख तत्व, दृश्य तत्व, आँख-चेतना-तत्व, कान तत्व, श्रव्य तत्व, कान-चेतना-तत्व, नाक तत्व, गंध तत्व, नाक-चेतना-तत्व, जीभ तत्व, स्वाद तत्व, जीभ-चेतना-तत्व, शरीर तत्व, स्पर्शनीय तत्व, शरीर-चेतना-तत्व, मन तत्व, वैचारिक तत्व, मन-चेतना-तत्व।

1 84. उसमें नेत्र तत्व क्या है? वह नेत्र जो चार महान आवश्यक तत्वों से उत्पन्न होकर संवेदी सतह है, :P: यह एक खाली गाँव है। इसे नेत्र तत्व कहते हैं। (1)

P = अनुच्छेद 156 देखें।

उसमें दृश्य तत्व क्या है? वह दृश्य (वस्तु) जो चार महान तत्वों से उत्पन्न होकर प्रकाशमान प्रतीत होती है; यही दृश्य तत्व है। इसे दृश्य तत्व कहा जाता है। (2)

पी — पैराग्राफ 162 देखें।

इसमें नेत्र-चेतना-तत्व क्या है? नेत्र और दृश्य (वस्तुओं) पर निर्भर करते हुए चेतना, मन, विचार, हृदय (अर्थात चेतना), प्रकाश (अर्थात चेतना), मन, मन का आधार, मन की नियंत्रक शक्ति, चेतना, चेतना का समूह उत्पन्न होता है; और उपरोक्त पर निर्भर करते हुए, नेत्र-चेतना-तत्व उत्पन्न होता है। इसे नेत्र-चेतना-तत्व कहा जाता है। (3)

उसमें कान तत्व क्या है? वह कान जो चार महान आवश्यक तत्वों से उत्पन्न होकर संवेदनशील सतह है, :P: यह एक खाली गाँव है। इसे कान तत्व कहते हैं। (4)

पी — पैराग्राफ 157 देखें।

उसमें श्रव्य तत्व क्या है? वह श्रव्य (वस्तु) जो चार महान आवश्यक तत्वों से उत्पन्न होकर अदृश्य, आक्षेपकारी है, :P : यही श्रव्य तत्व है। इसे श्रव्य तत्व कहा जाता है। (5)

P = अनुच्छेद 163 देखें।

इसमें श्रवण-चेतना-तत्व क्या है? कान और श्रव्य (वस्तुओं) पर निर्भर करते हुए चेतना, मन, विचार, हृदय, प्रकाश, मन, मन का आधार, मन की नियंत्रक शक्ति, चेतना, चेतना का समूह उत्पन्न होता है; और उपरोक्त पर निर्भर करते हुए, श्रवण-चेतना-तत्व उत्पन्न होता है। इसे श्रवण-चेतना-तत्व कहा जाता है। (6)

उसमें नाक तत्व क्या है? [88] वह नाक जो चार महान आवश्यक तत्वों से उत्पन्न होकर संवेदनशील सतह है, :P: यह एक खाली गाँव है। इसे नाक तत्व कहा जाता है। (7)

P = अनुच्छेद 158 देखें।

उसमें सुगंधित तत्व क्या है? वह सुगंधित (वस्तु) जो चार महान आवश्यक तत्वों से उत्पन्न होकर अदृश्य, प्रभावकारी होती है, यही सुगंधित तत्व है। इसे सुगंधित तत्व कहा जाता है। (8)

P = अनुच्छेद 164 देखें।

उसमें नाक-चेतना-तत्व क्या है? नाक और गंधयुक्त (वस्तुओं) पर निर्भर करते हुए चेतना, मन, विचार, हृदय, प्रकाश, मन, मन का आधार, मन की नियंत्रक क्षमता, चेतना, चेतना का समूह उत्पन्न होता है; और, निर्भर-

उपरोक्त के आधार पर, नाक-चेतना-तत्व। इसे नाक-चेतना-तत्व कहा जाता है। (9)

उसमें जीभ तत्व क्या है? वह जीभ जो चार महान आवश्यक तत्वों से उत्पन्न होकर संवेदनशील सतह है, :P: यह एक खाली गाँव है। इसे जीभ तत्व कहते हैं। (10)

P = अनुच्छेद 159 देखें।

उसमें स्वाद तत्व क्या है? वह स्वाद तत्व जो चार महान आवश्यक तत्वों से उत्पन्न होकर अदृश्य, प्रभावकारी होता है, यही स्वाद तत्व कहलाता है। (11)

P = अनुच्छेद 165 देखें।

इसमें जीभ-चेतना-तत्व क्या है? जीभ और स्वाद (वस्तुओं) पर निर्भर करते हुए चेतना, मन, विचार, हृदय, प्रकाश, मन, मन का आधार, मन की नियंत्रक शक्ति, चेतना, चेतना का समूह उत्पन्न होता है; और उपरोक्त पर निर्भर करते हुए, जीभ-चेतना-तत्व उत्पन्न होता है। इसे जीभ-चेतना-तत्व कहा जाता है। (12)

उसमें शरीर तत्व क्या है? वह शरीर जो चार महान आवश्यक तत्वों से उत्पन्न होकर संवेदी सतह है, :P: यह एक खाली गाँव है। इसे शरीर तत्व कहते हैं। (13)

P = अनुच्छेद 160 देखें।

उसमें मूर्त तत्व क्या है? विस्तार का तत्व।

पी: यह मूर्त तत्व है। इसे मूर्त तत्व कहा जाता है। (14)
P = अनुच्छेद 166 देखें।

उसमें शरीर-चेतना-तत्व क्या है? शरीर और मूर्त (वस्तुओं) पर निर्भर करते हुए चेतना, मन, विचार, हृदय, प्रकाश, मन, मन का आधार, मन की नियंत्रक क्षमता, चेतना, चेतना का समूह उत्पन्न होता है; और, उपरोक्त पर निर्भर करते हुए, शरीर-चेतना-तत्व उत्पन्न होता है। (15)

उसमें मन तत्व क्या है? उत्पन्न हुए नेत्र-चेतना तत्व के समाप्त होने के तुरंत बाद चेतना, मन, विचार, हृदय, प्रकाश, मन, मन का आधार, मन की नियंत्रक शक्ति, चेतना, चेतना का समूह उत्पन्न होता है; और उपरोक्त पर निर्भर करते हुए, मन तत्व। कान-चेतना तत्व। नाक-चेतना तत्व। जीभ-चेतना तत्व। उत्पन्न हुए शरीर-चेतना तत्व के समाप्त होने के तुरंत बाद चेतना, मन, विचार, हृदय, प्रकाश, मन, मन का आधार उत्पन्न होता है।

तत्वों का विश्लेषण

115

मन की नियंत्रक शक्ति, चेतना, चेतना का समूह; [89] और, उपरोक्त पर निर्भर, मन तत्व; साथ ही (प्रथम ध्यान के समय) सभी अवस्थाओं में चेतना, मन, विचार, हृदय, प्रकाश, मन, मन आधार, मन की नियंत्रक शक्ति, चेतना, चेतना का समूह उत्पन्न होता है; और, उपरोक्त पर निर्भर, मन तत्व। इसे मन तत्व कहा जाता है। (16)

P = प्रत्येक को पहले उदाहरण के अनुसार पूरा करें।

इसमें वैचारिक तत्व क्या है? भावना का समूह, धारणा का समूह, मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह और वैचारिक आधार में समाहित वह अदृश्य, अप्रभावित भौतिक गुण; अप्रतिबंधित तत्व।

इसमें भावनाओं का सार क्या है? एकल विभाजन द्वारा भावनाओं का सार: संपर्क से जुड़ा होता है। द्वि विभाजन द्वारा भावनाओं का सार: मूल के साथ होता है; मूल के साथ नहीं होता है। त्रि विभाजन द्वारा भावनाओं का सार: अच्छा होता है; बुरा होता है; न अच्छा न बुरा होता

है। पृष्ठ 1: दस विभाजन द्वारा भावनाओं का सार यही है। पृष्ठ 2: अनेक विभाजन द्वारा भावनाओं का सार यही है। इसे भावनाओं का सार कहते हैं। (1)

P^पैरा 34 देखें। P 2 = पैरा 35-61 सहित देखें।

इसमें बोध का समुच्चय क्या है? एकल विभाजन द्वारा बोध का समुच्चय: संपर्क से जुड़ा होता है। द्विभाजित विभाजन द्वारा बोध का समुच्चय: मूल के साथ होता है; मूल के साथ नहीं होता है। त्रिभाजित विभाजन द्वारा बोध का समुच्चय: अच्छा होता है; बुरा होता है; न अच्छा न बुरा होता है। इस प्रकार, दसभाजित विभाजन द्वारा बोध का समुच्चय है। इस प्रकार, अनेकभाजित विभाजन द्वारा बोध का समुच्चय है। इसे बोध का समुच्चय कहा जाता है। (2)

पृष्ठ 1 = पैराग्राफ 62 देखें। पृष्ठ 2 = पैराग्राफ 63-91 देखें।

उसमें मानसिक सहवर्तीताओं का कुल योग क्या है?

एक प्रकार के विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह: चेतना से जुड़ा हुआ है। दो प्रकार के विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह: मूल है; मूल नहीं है। तीन प्रकार के विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह: अच्छा है; बुरा है; न अच्छा है न बुरा। :PX : इस प्रकार दस प्रकार के विभाजन द्वारा मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह है। :P 2 : इस प्रकार समूह है

7 +

116

विश्लेषण की पुस्तक

मानसिक सहवर्तीताओं का अनेक प्रकार से विभाजन करके। इसे मानसिक सहवर्तीताओं का समूह कहा जाता है। (3)

P^पैरा 92 देखें। P 2 = पैरा 93-120 सहित देखें।

इसमें वैचारिक आधार में समाहित अदृश्य अप्रभावित पदार्थ क्या है? स्त्रीत्व की नियंत्रक क्षमता, :P: भोजन का पोषक तत्व। इसे ही वैचारिक आधार में समाहित अदृश्य अप्रभावित पदार्थ कहा जाता है। (4)

पी = डीएचएस पैराग्राफ 595 देखें।

इसमें अप्रतिबंधित तत्व क्या है? कामवासना का नाश, घृणा का नाश, सुस्ती का नाश। इसे ही अप्रतिबंधित तत्व कहते हैं। इसे ही वैचारिक तत्व कहते हैं।

(5) (17)

उसमें मन-चेतना-तत्व क्या है? उत्पन्न हुए नेत्र-चेतना-तत्व के समाप्त होने के तुरंत बाद मन तत्व उत्पन्न होता है; उत्पन्न हुए मन तत्व के समाप्त होने के तुरंत बाद [90] चेतना, मन, विचार, :PX : और, उपरोक्त के आधार पर, मन-चेतना-तत्व उत्पन्न होता है। कान-चेतना-तत्व। :P 2 : नाक-चेतना-तत्व। :P 2 : जीभ-चेतना-तत्व। :P 2 ; उत्पन्न हुए शरीर-चेतना-तत्व के समाप्त होने के तुरंत बाद मन तत्व उत्पन्न होता है; उत्पन्न हुए मन तत्व के समाप्त होने के तुरंत बाद चेतना, मन, विचार, .P 1 : और, उपरोक्त के आधार पर, मन-चेतना-तत्व उत्पन्न होता है। मन और वैचारिक (वस्तुओं) पर निर्भर करते हुए चेतना, मन, विचार, हृदय, प्रकाश, मन, मन का आधार, मन की नियंत्रक क्षमता, चेतना, चेतना का समूह उत्पन्न होता है; और उपरोक्त पर निर्भर करते हुए, मन-चेतना-तत्व उत्पन्न होता है। इसे मन-चेतना-तत्व कहा जाता है। (18)

pi = अंतिम उदाहरण के रूप में पूरा करें। p 2 = पहले उदाहरण के रूप में प्रत्येक को पूरा करें।

(यहाँ समाप्त होता है) अभिधम्म के अनुसार विश्लेषण

3. पूछताछ

185. अठारह तत्व हैं: आँख तत्व, दृश्य तत्व, आँख-चेतना तत्व, कान तत्व, श्रव्य तत्व, कान-चेतना तत्व, नाक तत्व, गंध तत्व, नाक-

चेतना-तत्व, जीभ तत्व, स्वाद तत्व, जीभ-चेतना-तत्व, शरीर तत्व, स्पर्शनीय तत्व, शरीर-चेतना-तत्व, मन तत्व, वैचारिक तत्व, मन-चेतना-तत्व।

186. अठारह तत्वों में से कितने अच्छे हैं; कितने बुरे हैं; कितने न अच्छे हैं न बुरे? :P: कितने ऐसे हैं जिनके लिए शोक का कारण है; कितने ऐसे हैं जिनके लिए शोक का कारण नहीं है?

P = शेष उपयुक्त त्रिक और युग्मक।

1. त्रिक

187. सोलह तत्व न तो अच्छे हैं और न ही बुरे। दो तत्व कभी अच्छे होते हैं, कभी बुरे; कभी न अच्छे होते हैं और न बुरे। दस तत्वों को न तो सुखद, न दुखदायी और न ही सुखदायी कहा जा सकता है। पाँच तत्व न तो दुखदायी और न ही सुखदायी होते हैं। देह-चेतना तत्व कभी सुखद और कभी दुखदायी होता है। मन-चेतना तत्व कभी सुखद, कभी दुखदायी और कभी दुखदायी होता है। देह-चेतना तत्व कभी सुखद, कभी दुखदायी और कभी दुखदायी होता है। वैचारिक तत्व कभी सुखद, कभी दुखदायी और कभी दुखदायी होता है। देह-चेतना तत्व कभी सुखद, कभी दुखदायी और कभी दुखदायी होता है।

दस तत्व न तो परिणाम हैं और न ही परिणाम उत्पन्न करते हैं। [91] पाँच तत्व परिणाम हैं। मन तत्व कभी-कभी परिणाम होता है; कभी-कभी न तो परिणाम होता है और न ही परिणाम उत्पन्न करता है। दो तत्व कभी-कभी परिणाम होते हैं; कभी-कभी परिणाम उत्पन्न करते हैं; कभी-कभी न तो परिणाम होते हैं और न ही परिणाम उत्पन्न करते हैं।

दस तत्व (लालसा और भ्रामक दृष्टि से) ग्रहण किए जाते हैं, वे आसक्ति के विषय हैं। श्रव्य तत्व ग्रहण नहीं किया जाता, वह आसक्ति का विषय है। पाँच तत्व कभी ग्रहण किए जाते हैं, वे आसक्ति के विषय हैं; कभी ग्रहण नहीं किए जाते, वे भी आसक्ति के विषय हैं। दो तत्व कभी ग्रहण किए जाते हैं, वे भी आसक्ति के विषय हैं।

आसक्ति; कभी-कभी समझ में नहीं आती, आसक्ति के विषय होते हैं; कभी-कभी समझ में नहीं आती, आसक्ति के विषय नहीं होते।

सोलह तत्व भ्रष्ट नहीं हैं, वे भ्रष्टता के विषय हैं। दो तत्व कभी भ्रष्ट होते हैं, भ्रष्टता के विषय होते हैं; कभी भ्रष्ट नहीं होते, भ्रष्टता के विषय होते हैं; कभी भ्रष्ट नहीं होते, भ्रष्टता के विषय नहीं होते। पंद्रह तत्व प्रारंभिक अनुप्रयोग और निरंतर अनुप्रयोग से रहित हैं। मन तत्व प्रारंभिक अनुप्रयोग और निरंतर अनुप्रयोग दोनों के साथ होता है। मन-चेतना तत्व कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग और निरंतर अनुप्रयोग दोनों के साथ होता है; कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, केवल निरंतर अनुप्रयोग के साथ होता है; कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, निरंतर अनुप्रयोग के बिना होता है। वैचारिक तत्व कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग और निरंतर अनुप्रयोग दोनों के साथ होता है; कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, केवल निरंतर अनुप्रयोग के साथ होता है; कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, निरंतर अनुप्रयोग के बिना होता है; कभी-कभी यह कहना उचित नहीं होगा कि यह न तो प्रारंभिक अनुप्रयोग के साथ है, न निरंतर अनुप्रयोग के साथ है; न ही प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, न ही निरंतर अनुप्रयोग के साथ है; न ही प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, न ही निरंतर अनुप्रयोग के साथ है; और न ही प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, न ही निरंतर अनुप्रयोग के साथ है। दस तत्व न तो उत्साह, न ही आनंद और न ही उदासीनता के साथ होते हैं। पाँच तत्व उदासीनता के साथ होते हैं। शरीर-चेतना तत्व उत्साह से रहित होता है; कभी-कभी आनंद से युक्त होता है; उदासीनता से रहित होता है; कभी-कभी इसे आनंद से युक्त नहीं कहा जा सकता। दो तत्व कभी-कभी उत्साह से युक्त होते हैं; कभी-कभी आनंद से युक्त होते हैं; कभी-कभी उदासीनता से युक्त होते हैं; कभी-कभी इसे उत्साह, आनंद या उदासीनता से युक्त नहीं कहा जा सकता।

सोलह तत्व ऐसे हैं जिन्हें न तो पहले मार्ग से और न ही बाद के मार्गों से छोड़ा जाना है। दो तत्व कभी-कभी पहले मार्ग से छोड़े जाने हैं; कभी-कभी बाद के मार्गों से छोड़े जाने हैं; कभी-कभी पहले मार्ग से और न ही बाद के मार्गों से छोड़े जाने हैं। सोलह तत्वों के कोई मूल नहीं हैं जिन्हें न तो पहले मार्ग से और न ही बाद के मार्गों से छोड़ा जाना है। दो तत्वों के कभी-कभी मूल होते हैं जिन्हें पहले मार्ग से छोड़ा जाना है; कभी-कभी उनके मूल होते हैं जिन्हें बाद के मार्गों से छोड़ा जाना है; कभी-कभी उनके कोई मूल नहीं होते जिन्हें छोड़ा जाना है।

प्रथम मार्ग से या पश्चात के मार्गों से। सोलह तत्व न तो संचयी हैं और न ही विक्षेपी (पुनर्जन्म और मृत्यु के निरंतर चक्र में)। दो तत्व कभी संचयी होते हैं; कभी विक्षेपी होते हैं; कभी न तो संचयी होते हैं और न ही विक्षेपी। सोलह तत्व न तो सात अलौकिक अवस्थाओं के हैं और न ही अंतिम अलौकिक अवस्था के। दो तत्व कभी सात अलौकिक अवस्थाओं के होते हैं; कभी अंतिम अलौकिक अवस्था के होते हैं; कभी न तो सात अलौकिक अवस्थाओं के होते हैं और न ही अंतिम अलौकिक अवस्था के।

सोलह तत्व निम्न हैं। दो तत्व कभी निम्न होते हैं; कभी उदात्त होते हैं; कभी अकल्पनीय होते हैं। [92] दस तत्वों का कोई उद्देश्य नहीं है। छह तत्वों के निम्न उद्देश्य हैं। दो तत्वों के कभी निम्न उद्देश्य होते हैं; कभी उदात्त उद्देश्य होते हैं; कभी अकल्पनीय उद्देश्य होते हैं; कभी-कभी यह नहीं कहा जा सकता कि उनके निम्न, उदात्त या अकल्पनीय उद्देश्य हैं। सोलह तत्व मध्यवर्ती हैं। दो तत्व कभी निम्न होते हैं; कभी मध्यवर्ती होते हैं; कभी श्रेष्ठ होते हैं। सोलह तत्वों का कोई निश्चित (परिणामी समय) नहीं है। दो तत्व कभी निश्चित (परिणामी समय) के साथ असत्य (अवस्था) होते हैं; कभी निश्चित (परिणामी समय) के साथ सही (अवस्था) होते हैं; कभी निश्चित (परिणामी समय) के साथ उनका कोई निश्चित (परिणामी समय) नहीं होता है।

दस तत्वों का कोई कर्म नहीं होता। छह तत्वों के लिए न तो पथ को कर्म, न ही कारण, और न ही प्रमुख कारक कहा जा सकता है। दो तत्वों के लिए कभी-कभी पथ कर्म होता है; कभी-कभी कारण होता है; कभी-कभी प्रमुख कारक होता है; कभी-कभी पथ को कर्म, कारण या प्रमुख कारक नहीं कहा जा सकता। दस तत्व कभी-कभी उत्पन्न होते हैं; कभी-कभी उत्पन्न होने के लिए बाध्य होते हैं; उन्हें उत्पन्न न होने के रूप में नहीं कहा जा सकता। श्रव्य तत्व कभी-कभी उत्पन्न होते हैं; कभी-कभी उत्पन्न नहीं होते; उन्हें उत्पन्न होने के लिए बाध्य नहीं कहा जा सकता। छह तत्व कभी-कभी उत्पन्न होते हैं; कभी-कभी उत्पन्न नहीं होते; कभी-कभी उत्पन्न होने के लिए बाध्य होते हैं। वैचारिक तत्व कभी-कभी उत्पन्न होते हैं; कभी-कभी उत्पन्न नहीं होते; कभी-कभी उत्पन्न होने के लिए बाध्य होते हैं; कभी-कभी उन्हें उत्पन्न, उत्पन्न न होने या उत्पन्न होने के लिए बाध्य नहीं कहा जा सकता।

सत्रह तत्व कभी भूतकाल में होते हैं; कभी भविष्यकाल में; कभी वर्तमानकाल में। वैचारिक तत्व कभी भूतकाल में होते हैं; कभी भविष्यकाल में; कभी वर्तमानकाल में; कभी-कभी इन्हें न तो भूतकाल, न भविष्यकाल और न ही वर्तमानकाल कहा जा सकता है। दस तत्वों के कोई कर्म नहीं होते। छह तत्वों के वर्तमान कर्म होते हैं। दो तत्व...

120

विश्लेषण की पुस्तक

समय के भूतकाल के कर्म होते हैं; कभी-कभी भविष्यकाल के कर्म होते हैं; कभी-कभी वर्तमानकाल के कर्म होते हैं; कभी-कभी न तो भूतकाल के कर्म होते हैं, न भविष्यकाल के कर्म होते हैं और न ही वर्तमानकाल के कर्म होते हैं। (सभी तत्व) कभी-कभी आंतरिक होते हैं; कभी-कभी बाह्य होते हैं; कभी-कभी आंतरिक और बाह्य दोनों होते हैं।

दस तत्वों का कोई वस्तु नहीं है। छह तत्वों के कभी आंतरिक वस्तु होते हैं; कभी बाह्य वस्तु होते हैं; कभी आंतरिक और बाह्य दोनों वस्तु होते हैं। दो तत्वों के कभी आंतरिक वस्तु होते हैं; कभी बाह्य वस्तु होते हैं; कभी आंतरिक और बाह्य दोनों वस्तु होते हैं; कभी-कभी यह कहना उचित नहीं होगा कि उनके आंतरिक, बाह्य या दोनों वस्तु हैं। दृश्य तत्व दृश्यमान है, और वह आक्षेपकारी है। नौ तत्व अदृश्य हैं, और वह आक्षेपकारी हैं। आठ तत्व अदृश्य हैं, और वह आक्षेपकारी नहीं हैं।

2. दोहे

188. सत्रह तत्व मूल तत्व नहीं हैं। वैचारिक तत्व कभी मूल तत्व होता है; कभी मूल तत्व नहीं होता। सोलह तत्व मूल तत्वों के साथ नहीं होते। दो तत्व कभी मूल तत्वों के साथ होते हैं; कभी मूल तत्वों के साथ नहीं होते। सोलह तत्व मूल तत्वों से संबद्ध नहीं हैं। [93] दो तत्व कभी मूल तत्वों से संबद्ध होते हैं; कभी मूल तत्वों से संबद्ध नहीं होते। सोलह तत्वों को मूल तत्व नहीं कहा जाना चाहिए, न ही यह कहा जाना चाहिए कि वे मूल तत्वों के साथ भी होते हैं या मूल तत्वों के साथ होते हैं लेकिन मूल तत्व नहीं होते। मन-चेतना-तत्व को मूल

तत्व नहीं कहा जाना चाहिए, न ही यह कहा जाना चाहिए कि वे मूल तत्वों के साथ भी होते हैं; (यह) कभी मूल तत्वों के साथ होता है लेकिन मूल तत्व नहीं होता; कभी-कभी इसे मूल तत्व के साथ भी होता है लेकिन मूल तत्व नहीं कहा जाना चाहिए। वैचारिक तत्व कभी मूल तत्व होता है और मूल तत्वों के साथ भी होता है; कभी-कभी मूल तत्वों के साथ होता है लेकिन मूल तत्व नहीं होता; कभी-कभी इसे मूल तत्व नहीं कहा जाना चाहिए कि वे मूल तत्वों के साथ भी होते हैं या मूल तत्वों के साथ होते हैं लेकिन मूल तत्व नहीं होते। सोलह तत्वों को मूल तत्व नहीं कहा जाना चाहिए, न ही यह कहा जाना चाहिए कि वे मूल तत्वों के साथ भी होते हैं या मूल तत्वों के साथ संबद्ध होते हैं लेकिन मूल तत्व नहीं होते। मन-चेतना-तत्व को मूल तत्व नहीं कहा जाना चाहिए, यह मूल तत्व से भी जुड़ा हुआ है; (यह) कभी-कभी मूल तत्व से जुड़ा होता है लेकिन मूल तत्व नहीं होता; कभी-कभी इसे मूल तत्व से जुड़ा हुआ नहीं कहा जाना चाहिए, यह मूल तत्व नहीं होता। वैचारिक तत्व कभी-कभी मूल तत्व भी होता है और मूल तत्व से भी जुड़ा होता है; कभी-कभी मूल तत्व से जुड़ा होता है लेकिन मूल तत्व नहीं होता; कभी-कभी इसे मूल तत्व नहीं कहा जाना चाहिए, यह मूल तत्व से भी जुड़ा हुआ है या मूल तत्व से जुड़ा हुआ है लेकिन मूल तत्व नहीं है। सोलह तत्व

न तो मूल तत्व हैं, न ही मूल तत्वों के साथ। मन-चेतना तत्व कभी मूल तत्व नहीं होता, कभी मूल तत्व के साथ होता है; कभी मूल तत्व नहीं होता, कभी मूल तत्व के साथ नहीं होता। वैचारिक तत्व कभी मूल तत्व नहीं होता, कभी मूल तत्व के साथ होता है; कभी मूल तत्व नहीं होता, कभी मूल तत्व होता है!

मूल के साथ नहीं; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि, मूल नहीं है, मूल के साथ है या मूल नहीं है, मूल के साथ नहीं है। (1)

सत्रह तत्व कारण सहित हैं। वैचारिक तत्व कभी कारण सहित होता है; कभी कारण रहित होता है। सत्रह तत्व सशर्त हैं। वैचारिक तत्व कभी सशर्त होता है; कभी अनिच्छुक होता है। दृश्य तत्व दृश्य है। सत्रह तत्व दृश्य नहीं हैं। दस तत्व आकस्मिक हैं। आठ तत्व आकस्मिक नहीं हैं। दस तत्व भौतिक हैं। सात तत्व भौतिक नहीं हैं। वैचारिक तत्व कभी भौतिक होता है;

कभी-कभी यह भौतिक नहीं होता। सोलह तत्व सांसारिक हैं। दो तत्व कभी-कभी सांसारिक होते हैं; कभी-कभी अलौकिक होते हैं।

(सभी तत्व) एक तरीके से बोधगम्य हैं; दूसरे तरीके से बोधगम्य नहीं हैं। (2)

सत्रह तत्व अपवित्रता नहीं हैं। वैचारिक तत्व कभी अपवित्रता होते हैं; कभी अपवित्रता नहीं होते। सोलह तत्व अपवित्रताओं के विषय हैं। दो तत्व कभी अपवित्रताओं के विषय होते हैं; कभी अपवित्रताओं के विषय नहीं होते। सोलह तत्व अपवित्रताओं से संबद्ध नहीं हैं। दो तत्व कभी अपवित्रता से संबद्ध होते हैं।

सोलह तत्व कभी-कभी दोषों से संबंधित नहीं होते। सोलह तत्वों को दोष और दोषों का विषय नहीं कहा जाना चाहिए; [94] (वे) दोषों के विषय हैं लेकिन दोष नहीं हैं। मन-चेतना तत्व को दोष और दोषों का विषय नहीं कहा जाना चाहिए; (यह) कभी-कभी दोषों का विषय होता है लेकिन दोष नहीं होता; कभी-कभी...

उसे अपवित्रता का विषय नहीं कहा जा सकता, बल्कि वह स्वयं अपवित्रता नहीं है।

वैचारिक तत्व कभी-कभी अपवित्रता भी होता है और अपवित्रताओं का विषय भी; कभी-कभी अपवित्रताओं का विषय होता है लेकिन J नहीं होता।

अपवित्रता; कभी-कभी इसे अपवित्रता नहीं कहा जाना चाहिए, यह भी j

अशुद्धियों का विषय या अशुद्धियों का विषय, लेकिन वह अशुद्धि नहीं है।

सोलह तत्वों को दोष नहीं कहा जाना चाहिए, न ही उन्हें दोष कहा जाना चाहिए, न ही उन्हें दोष कहा जाना चाहिए। मन-चेतना तत्व को दोष नहीं कहा जाना चाहिए, न ही उन्हें दोष कहा जाना चाहिए;

कभी-कभी अशुद्धियों से जुड़ा होता है, पर अशुद्धि नहीं होता; कभी-कभी अशुद्धियों से जुड़ा हुआ नहीं कहा जा सकता, पर अशुद्धि नहीं होता। वैचारिक तत्व कभी-कभी अशुद्धि भी होता है और अशुद्धियों से जुड़ा होता है; कभी-कभी अशुद्धियों से जुड़ा होता है, पर अशुद्धि नहीं होता; कभी-कभी अशुद्धि भी अशुद्धियों से जुड़ा हुआ नहीं कहा जा सकता, या अशुद्धियों से जुड़ा हुआ होता है, पर अशुद्धि नहीं होता। सोलह तत्व अशुद्धियों से जुड़े नहीं हैं, अशुद्धियों के विषय हैं। दो तत्व कभी-कभी अशुद्धियों से जुड़े नहीं होते, अशुद्धियों के विषय होते हैं; कभी-कभी अशुद्धियों से जुड़े नहीं होते, अशुद्धियों के विषय नहीं होते; कभी-कभी अशुद्धियों से जुड़े नहीं होते, अशुद्धियों के विषय होते हैं, या अशुद्धियों से जुड़े नहीं होते, अशुद्धियों के विषय नहीं होते। (3)

सत्रह तत्व बंधन नहीं हैं। वैचारिक तत्व कभी बंधन होता है, कभी बंधन नहीं होता। सोलह तत्व बंधनों के विषय हैं। दो तत्व कभी बंधनों के विषय होते हैं, कभी बंधनों के विषय नहीं होते। सोलह तत्व बंधनों से संबद्ध नहीं हैं। दो तत्व कभी बंधनों से संबद्ध होते हैं, कभी बंधनों से संबद्ध नहीं होते। सोलह तत्वों को बंधन और बंधनों के विषय नहीं कहा जाना चाहिए; वे बंधनों के विषय तो हैं, पर बंधन नहीं हैं। मन-चेतना तत्व को बंधन और बंधनों का विषय नहीं कहा जाना चाहिए; यह कभी बंधनों का विषय होता है, पर बंधन नहीं होता; कभी-कभी इसे बंधनों का विषय और बंधन नहीं कहा जाना चाहिए। वैचारिक तत्व कभी बंधन और बंधनों का विषय होता है, कभी बंधनों का विषय होता है, पर बंधन नहीं होता। कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि यह बंधन है, बंधनों का भी विषय है या बंधनों का विषय है लेकिन बंधन नहीं है। सोलह तत्व यह नहीं कहा जाना चाहिए कि यह बंधन है, बंधनों से भी जुड़ा हुआ है या बंधनों से जुड़ा हुआ है लेकिन बंधन नहीं है। मन-चेतना-तत्व यह नहीं कहा जाना चाहिए कि यह बंधन है, बंधनों से भी जुड़ा हुआ है; (यह) कभी-कभी बंधनों से जुड़ा होता है लेकिन बंधन नहीं होता; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि यह बंधनों से जुड़ा हुआ है लेकिन बंधन नहीं है। वैचारिक तत्व कभी-कभी बंधन होता है, बंधनों से भी जुड़ा होता है; कभी-कभी बंधनों से जुड़ा होता है लेकिन बंधन नहीं होता; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि यह बंधन है, बंधनों से भी जुड़ा हुआ है या बंधनों से जुड़ा हुआ है लेकिन बंधन नहीं है। सोलह तत्व बंधनों से जुड़े नहीं हैं, बंधनों के विषय हैं, [95] दो तत्व कभी-कभी

बेड़ियों से संबद्ध नहीं हैं, बेड़ियों की वस्तुएँ हैं; कभी-कभी बेड़ियों से संबद्ध नहीं होते, बेड़ियों की वस्तुएँ नहीं होते; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि बेड़ियों से संबद्ध नहीं हैं, बेड़ियों की वस्तुएँ हैं या बेड़ियों से संबद्ध नहीं हैं, बेड़ियों की वस्तुएँ नहीं हैं। (4)

सत्रह तत्व बंधन नहीं हैं। वैचारिक तत्व कभी बंधन होता है, कभी बंधन नहीं होता। सोलह तत्व बंधनों के विषय हैं। दो तत्व कभी बंधनों के विषय होते हैं, कभी बंधनों के विषय नहीं होते। सोलह तत्व बंधनों से संबद्ध नहीं हैं। दो तत्व कभी बंधनों से संबद्ध होते हैं, कभी बंधनों से संबद्ध नहीं होते। सोलह तत्वों को बंधन और बंधनों के विषय नहीं कहा जाना चाहिए; वे बंधनों के विषय तो हैं, लेकिन बंधन नहीं हैं। मन-चेतना तत्व को बंधन और बंधनों का विषय नहीं कहा जाना चाहिए; यह कभी बंधनों का विषय होता है, लेकिन बंधन नहीं होता; कभी-कभी इसे बंधनों का विषय नहीं कहा जाना चाहिए, लेकिन बंधन नहीं होता। वैचारिक तत्व कभी बंधन और बंधनों का विषय होता है, कभी-कभी बंधनों का विषय होता है, लेकिन बंधन नहीं होता; कभी-कभी इसे बंधन और बंधनों का विषय नहीं कहा जाना चाहिए, या तो बंधन और बंधनों का विषय है, लेकिन बंधन नहीं है। सोलह तत्वों को यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वे बंधन से जुड़े हुए हैं या बंधन से जुड़े हुए हैं लेकिन बंधन नहीं हैं। मन-चेतना तत्व को यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वह बंधन से जुड़ा हुआ है; (यह) कभी-कभी बंधन से जुड़ा होता है लेकिन बंधन नहीं होता; कभी-कभी इसे यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वह बंधन से जुड़ा हुआ है लेकिन बंधन नहीं है। वैचारिक तत्व कभी-कभी बंधन से जुड़ा होता है; कभी-कभी बंधन से जुड़ा होता है लेकिन बंधन नहीं होता; कभी-कभी इसे यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वह बंधन से जुड़ा हुआ है या बंधन से जुड़ा हुआ है लेकिन बंधन नहीं है। सोलह तत्व बंधन से जुड़े नहीं हैं, बंधन के विषय हैं। दो तत्व कभी-कभी बंधन से जुड़े नहीं होते, बंधन के विषय होते हैं; कभी-कभी बंधन से जुड़े नहीं होते, बंधन के विषय नहीं होते; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वे बंधन से जुड़े नहीं हैं, बंधन के विषय हैं या बंधन से जुड़े नहीं हैं, बंधन के विषय नहीं हैं। (5) सत्रह तत्व बाढ़ नहीं हैं। :P: बंधन नहीं हैं। :P: बाधाएँ नहीं हैं। वैचारिक तत्व कभी बाधा होता है; कभी बाधा नहीं होता। सोलह तत्व बाधाओं के विषय हैं। दो तत्व कभी बाधाओं के विषय होते हैं; कभी बाधाओं के विषय नहीं होते। सोलह तत्व बाधाओं से संबद्ध नहीं हैं। दो तत्व कभी बाधाओं से संबद्ध होते हैं; कभी संबद्ध नहीं होते। 7 *

124

विश्लेषण की पुस्तक

सोलह तत्वों को बाधाएँ और बाधाओं के विषय नहीं कहा जाना चाहिए; वे बाधाओं के विषय तो हैं, पर स्वयं बाधाएँ नहीं हैं। मन-चेतना तत्व को बाधा और बाधाओं का विषय नहीं कहा जाना चाहिए; यह कभी-कभी बाधाओं का विषय होता है, पर स्वयं बाधा नहीं होता; कभी-कभी इसे बाधाओं का विषय नहीं कहा जाना चाहिए, पर स्वयं बाधा नहीं होता। वैचारिक तत्व कभी-कभी बाधा और बाधाओं का विषय होता है; कभी-कभी बाधाओं का विषय होता है, पर स्वयं बाधा नहीं होता; कभी-कभी इसे बाधा और बाधाओं का विषय नहीं कहा जाना चाहिए, या बाधाओं का विषय तो है, पर स्वयं बाधा नहीं है। सोलह तत्वों को बाधा और बाधाओं से संबद्ध नहीं कहा जाना चाहिए, या बाधाओं से संबद्ध तो है, पर स्वयं बाधा नहीं है। मन-चेतना-तत्व को बाधा नहीं कहा जाना चाहिए, यह बाधाओं से भी जुड़ा हुआ है; (यह) कभी-कभी बाधाओं से जुड़ा होता है लेकिन बाधा नहीं होता; कभी-कभी इसे बाधाओं से जुड़ा हुआ नहीं कहा जाना चाहिए, लेकिन बाधा नहीं होता। वैचारिक तत्व कभी-कभी बाधा भी होता है और बाधाओं से भी जुड़ा होता है; कभी-कभी बाधाओं से जुड़ा होता है लेकिन बाधा नहीं होता; कभी-कभी इसे बाधाओं से जुड़ा हुआ नहीं कहा जाना चाहिए या बाधाओं से जुड़ा हुआ है लेकिन बाधा नहीं होता। सोलह तत्व बाधाओं से जुड़े नहीं हैं, बाधाओं के विषय हैं। दो तत्व कभी-कभी बाधाओं से जुड़े नहीं होते, बाधाओं के विषय होते हैं; कभी-कभी बाधाओं से जुड़े नहीं होते, बाधाओं के विषय नहीं होते। कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि, बाधाओं से संबंधित नहीं हैं, बाधाओं के विषय हैं या बाधाओं से संबंधित नहीं हैं, बाधाओं के विषय नहीं हैं। (8)

P = बाधाओं के संबंध में पूर्ण।

सत्रह तत्व विकृतियाँ नहीं हैं। वैचारिक तत्व कभी-कभी विकृति होता है; कभी-कभी विकृति नहीं होता। सोलह तत्व विकृतियों के विषय हैं। दो तत्व कभी-कभी विकृतियों के विषय होते हैं; कभी-कभी विकृतियों के विषय नहीं होते। सोलह तत्व विकृतियों से संबंधित नहीं हैं। मन-चेतना तत्व कभी-कभी विकृतियों से संबंधित होता है; कभी-कभी विकृतियों से संबंधित नहीं होता। वैचारिक तत्व कभी-कभी विकृतियों से संबंधित होता है; कभी-कभी विकृतियों से संबंधित नहीं होता; कभी-कभी इसे विकृतियों से संबंधित नहीं कहा जा सकता।

या विकृतियों से संबद्ध नहीं। सोलह तत्वों को विकृतियाँ और विकृतियों का विषय नहीं कहा जाना चाहिए; वे विकृतियों का विषय तो हैं, पर स्वयं विकृतियाँ नहीं हैं। मन-चेतना तत्व को विकृती और विकृतियों का विषय नहीं कहा जाना चाहिए; यह कभी-कभी विकृतियों का विषय होता है, पर स्वयं विकृती नहीं होता; कभी-कभी इसे विकृतियों का विषय नहीं कहा जाना चाहिए, पर स्वयं विकृती नहीं होता। वैचारिक तत्व कभी-कभी विकृती और विकृतियों का विषय होता है; कभी-कभी विकृतियों का विषय होता है, पर स्वयं विकृती नहीं होता; कभी-कभी इसे विकृतियों का विषय या विकृतियों का विषय नहीं कहा जाना चाहिए, पर स्वयं विकृती नहीं होता। सोलह तत्व विकृतियों से संबद्ध नहीं हैं, विकृतियों के विषय हैं। दो तत्व कभी-कभी विकृतियों से संबद्ध नहीं होते, पर विकृतियों के विषय होते हैं; कभी-कभी विकृतियों से संबद्ध नहीं होते, पर विकृतियों के विषय नहीं होते। कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वे विकृतियों से जुड़े नहीं हैं, विकृतियों के विषय हैं या विकृतियों से जुड़े नहीं हैं, विकृतियों के विषय नहीं हैं।

(9)

दस तत्वों का कोई वस्तु नहीं है। सात तत्वों का वस्तु है। वैचारिक तत्व का कभी वस्तु होता है, कभी नहीं होता। सात तत्व चेतना हैं। ग्यारह तत्व चेतना नहीं हैं। सत्रह तत्व मानसिक सहवर्ती नहीं हैं। वैचारिक तत्व कभी मानसिक सहवर्ती होता है, कभी नहीं होता। दस तत्व चेतना से संबद्ध नहीं हैं। वैचारिक तत्व कभी चेतना से संबद्ध होता है, कभी नहीं होता। सात तत्वों को चेतना से संबद्ध या असंबद्ध नहीं कहा जा सकता। दस तत्व चेतना से जुड़े हुए हैं। वैचारिक तत्व कभी चेतना से संबद्ध होता है, कभी नहीं होता। सात तत्वों को चेतना से संबद्ध या असंबद्ध नहीं कहा जा सकता।

बारह तत्व चेतना द्वारा उत्पन्न नहीं होते। छह तत्व कभी-कभी चेतना द्वारा उत्पन्न होते हैं; कभी-कभी चेतना द्वारा उत्पन्न नहीं होते। [96] सत्रह तत्व चेतना के साथ सह-अस्तित्व में नहीं होते। वैचारिक तत्व कभी-कभी चेतना के साथ सह-अस्तित्व में होता है; कभी-कभी चेतना के साथ सह-अस्तित्व में नहीं होता। सत्रह तत्व चेतना के साथ नहीं होते। वैचारिक तत्व कभी-कभी चेतना के साथ होता है;

कभी-कभी चेतना के साथ नहीं होता। सत्रह तत्व चेतना से जुड़े नहीं होते, न ही चेतना द्वारा उत्पन्न होते हैं। वैचारिक तत्व कभी-कभी चेतना से जुड़ा होता है, चेतना द्वारा उत्पन्न होता है; कभी-कभी चेतना से जुड़ा नहीं होता, चेतना द्वारा उत्पन्न नहीं होता। सत्रह तत्व चेतना से जुड़े नहीं होते, न ही चेतना द्वारा उत्पन्न होते हैं, न ही चेतना के साथ सह-अस्तित्व में होते हैं। वैचारिक तत्व कभी-कभी चेतना से जुड़ा होता है, चेतना द्वारा उत्पन्न होता है, चेतना के साथ सह-अस्तित्व में होता है; कभी-कभी चेतना से जुड़ा नहीं होता, चेतना द्वारा उत्पन्न नहीं होता, चेतना के साथ सह-अस्तित्व में नहीं होता। सत्रह तत्व चेतना से जुड़े नहीं होते, चेतना द्वारा उत्पन्न नहीं होते, और न ही चेतना के साथ होते हैं। वैचारिक तत्व कभी-कभी चेतना से जुड़ा होता है, चेतना द्वारा उत्पन्न होता है, और चेतना के साथ होता है; कभी-कभी चेतना से जुड़ा नहीं होता, चेतना द्वारा उत्पन्न नहीं होता, और चेतना के साथ नहीं होता। बारह तत्व आंतरिक हैं। छह तत्व बाह्य हैं। (10)

नौ तत्व व्युत्पन्न हैं। आठ तत्व व्युत्पन्न नहीं हैं। वैचारिक तत्व कभी व्युत्पन्न होता है, कभी व्युत्पन्न नहीं होता। दस तत्व (लालसा और भ्रामक दृष्टि से) ग्रहण किए जाते हैं। श्रव्य तत्व ग्रहण नहीं किया जाता। सात तत्व कभी ग्रहण किए जाते हैं, कभी ग्रहण नहीं किए जाते। सत्रह तत्व आसक्ति नहीं हैं। वैचारिक तत्व कभी आसक्ति होता है, कभी आसक्ति नहीं होता। सोलह तत्व आसक्ति के विषय हैं। दो तत्व कभी आसक्ति के विषय होते हैं, कभी आसक्ति नहीं होते। सोलह तत्व आसक्ति से संबद्ध नहीं हैं। दो तत्व कभी आसक्ति से संबद्ध होते हैं, कभी आसक्ति नहीं होते। सोलह तत्वों को आसक्ति और आसक्ति का विषय नहीं कहा जाना चाहिए; वे आसक्ति के विषय तो हैं, पर स्वयं आसक्ति नहीं हैं। मन-चेतना तत्व को आसक्ति और आसक्ति का विषय नहीं कहा जाना चाहिए; यह कभी आसक्ति का विषय तो होता है, पर स्वयं आसक्ति नहीं होता; कभी-कभी इसे आसक्ति का विषय तो नहीं कहा जाना चाहिए, पर स्वयं आसक्ति नहीं होती। वैचारिक तत्व कभी-कभी आसक्ति भी होता है और आसक्तियों का विषय भी; कभी-कभी आसक्तियों का विषय तो होता है लेकिन स्वयं आसक्ति नहीं; कभी-कभी यह कहना उचित नहीं होगा कि यह आसक्ति भी है और आसक्तियों का विषय भी है या स्वयं आसक्ति नहीं।

सोलह तत्वों को आसक्ति या आसक्ति से जुड़े हुए लेकिन स्वयं आसक्ति न होने वाले तत्व नहीं कहा जाना चाहिए। मन-चेतना तत्व को आसक्ति या आसक्ति से जुड़ा हुआ तत्व नहीं कहा जाना चाहिए;

कभी-कभी आसक्ति से जुड़ा होता है, लेकिन स्वयं आसक्ति नहीं होता; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि यह आसक्ति से जुड़ा है, लेकिन स्वयं आसक्ति नहीं है। वैचारिक तत्व कभी-कभी आसक्ति भी होता है और आसक्ति से जुड़ा भी होता है; कभी-कभी आसक्ति से जुड़ा होता है, लेकिन स्वयं आसक्ति नहीं होता; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि यह आसक्ति भी होता है और आसक्ति से जुड़ा होता है, लेकिन स्वयं आसक्ति नहीं होता। सोलह तत्व आसक्ति से जुड़े नहीं हैं, बल्कि आसक्ति के विषय हैं। दो तत्व कभी-कभी आसक्ति से जुड़े नहीं होते, लेकिन स्वयं आसक्ति के विषय होते हैं; कभी-कभी आसक्ति से जुड़े नहीं होते, लेकिन स्वयं आसक्ति के विषय नहीं होते; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि यह आसक्ति से जुड़ा नहीं है, बल्कि आसक्ति के विषय हैं या आसक्ति से जुड़े नहीं हैं, लेकिन स्वयं आसक्ति के विषय नहीं हैं। (11)

सत्रह तत्व भ्रष्टता नहीं हैं। वैचारिक तत्व कभी भ्रष्टता होता है; कभी भ्रष्टता नहीं होता। सोलह तत्व भ्रष्टता के विषय हैं। दो तत्व कभी भ्रष्टता के विषय होते हैं; कभी भ्रष्टता के विषय नहीं होते। सोलह तत्व भ्रष्ट नहीं हैं। दो तत्व कभी भ्रष्ट होते हैं; कभी भ्रष्ट नहीं होते। सोलह तत्व भ्रष्टता से संबद्ध नहीं हैं। दो तत्व कभी भ्रष्टता से संबद्ध होते हैं; कभी भ्रष्टता से संबद्ध नहीं होते। सोलह तत्वों को भ्रष्टता और भ्रष्टता के विषय नहीं कहा जाना चाहिए; वे भ्रष्टता के विषय तो हैं, लेकिन स्वयं भ्रष्टता नहीं हैं। मन-चेतना तत्व को भ्रष्टता और भ्रष्टता का विषय नहीं कहा जाना चाहिए; यह कभी भ्रष्टता का विषय होता है, लेकिन स्वयं भ्रष्टता नहीं होता; कभी-कभी इसे भ्रष्टता का

विषय नहीं कहा जाना चाहिए, लेकिन स्वयं भ्रष्टता नहीं है। वैचारिक तत्व कभी भ्रष्टता और भ्रष्टता का विषय होता है; कभी भ्रष्टता का विषय होता है, लेकिन स्वयं भ्रष्टता नहीं होता। कभी-कभी भ्रष्टाचार को भ्रष्टाचार का विषय नहीं कहा जाना चाहिए, बल्कि यह भ्रष्टाचार नहीं है।

सोलह तत्वों को भ्रष्ट नहीं कहा जाना चाहिए, भ्रष्टाचार भी भ्रष्ट करता है या भ्रष्ट करता है लेकिन स्वयं भ्रष्ट नहीं है। मन-चेतना तत्व को भ्रष्ट नहीं कहा जाना चाहिए; (यह) कभी भ्रष्ट होता है लेकिन भ्रष्ट नहीं होता; कभी भ्रष्ट नहीं कहा जाना चाहिए लेकिन भ्रष्ट नहीं होता। वैचारिक तत्व

128

विश्लेषण की पुस्तक

कभी-कभी भ्रष्टाचार भी भ्रष्ट होता है; कभी-कभी भ्रष्ट होता है लेकिन भ्रष्टाचार नहीं होता; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि भ्रष्टाचार भी भ्रष्ट है या भ्रष्ट है लेकिन भ्रष्टाचार नहीं है। सोलह तत्वों को यह नहीं कहा जाना चाहिए कि भ्रष्टाचार भी भ्रष्टाचार से जुड़े हैं या भ्रष्टाचार से जुड़े हैं लेकिन भ्रष्टाचार नहीं हैं। [97] मन-चेतना-तत्व को यह नहीं कहा जाना चाहिए कि भ्रष्टाचार भी भ्रष्टाचार से जुड़ा है; (यह) कभी-कभी भ्रष्टाचार से जुड़ा होता है लेकिन भ्रष्टाचार नहीं होता; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि भ्रष्टाचार से जुड़ा है लेकिन भ्रष्टाचार नहीं है। वैचारिक तत्व कभी-कभी भ्रष्टाचार भी भ्रष्टाचार से जुड़ा होता है; कभी-कभी भ्रष्टाचार से जुड़ा होता है लेकिन भ्रष्टाचार नहीं होता; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि भ्रष्टाचार भी भ्रष्टाचार से जुड़ा है या भ्रष्टाचार से जुड़ा है लेकिन भ्रष्टाचार नहीं है। सोलह तत्व भ्रष्टाचार से जुड़े नहीं हैं, भ्रष्टाचार के विषय हैं। दो तत्व कभी-कभी भ्रष्टाचार से जुड़े नहीं होते हैं, भ्रष्टाचार के विषय होते हैं; कभी-कभी भ्रष्टाचार से जुड़े नहीं होते हैं, भ्रष्टाचार के विषय नहीं होते; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वे भ्रष्टाचार से जुड़े नहीं हैं, भ्रष्टाचार के शिकार हैं या भ्रष्टाचार से जुड़े नहीं हैं, भ्रष्टाचार के शिकार नहीं हैं। (12)

सोलह तत्व प्रथम पथ द्वारा नहीं छोड़े जाने हैं। दो तत्व कभी-कभी प्रथम पथ द्वारा छोड़े जाने हैं; कभी-कभी प्रथम पथ द्वारा नहीं छोड़े जाने हैं। सोलह तत्व बाद के पथों द्वारा नहीं छोड़े जाने हैं। दो तत्व कभी-कभी बाद के पथों द्वारा छोड़े जाने हैं; कभी-कभी बाद के पथों द्वारा नहीं छोड़े जाने हैं। सोलह तत्वों के ऐसे कोई मूल नहीं हैं जिन्हें प्रथम पथ द्वारा छोड़ा जाना है। दो तत्वों के ऐसे मूल हैं जिन्हें प्रथम पथ द्वारा छोड़ा जाना है; कभी-कभी पहले पथ द्वारा नहीं छोड़े जाने हैं। सोलह तत्वों के ऐसे कोई मूल नहीं हैं जिन्हें बाद के पथों द्वारा छोड़ा जाना है। दो तत्वों के ऐसे मूल हैं जिन्हें बाद के पथों द्वारा छोड़ा जाना है; कभी-कभी बाद के पथों द्वारा नहीं छोड़े जाने हैं।

पंद्रह तत्व प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना हैं। मन तत्व प्रारंभिक अनुप्रयोग के साथ है। दो तत्व कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के साथ होते हैं; कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना होते हैं। पंद्रह तत्व निरंतर अनुप्रयोग के बिना हैं। मन तत्व निरंतर अनुप्रयोग के साथ है। दो तत्व कभी-कभी निरंतर अनुप्रयोग के साथ होते हैं;

तत्वों का विश्लेषण

129

कभी-कभी निरंतर प्रयास के बिना होते हैं। सोलह तत्व उत्साहहीन होते हैं। दो तत्व कभी-कभी उत्साह से भरे होते हैं; कभी-कभी उत्साहहीन होते हैं। सोलह तत्वों में उत्साह नहीं होता है। दो तत्व कभी-कभी उत्साह से भरे होते हैं; कभी-कभी उत्साह नहीं होता है। पंद्रह तत्वों में आनंद नहीं होता है। तीन तत्व कभी-कभी आनंद से भरे होते हैं; कभी-कभी आनंद नहीं होता है। ग्यारह तत्वों में उदासीनता नहीं होती है। पाँच तत्वों में उदासीनता होती है। दो तत्व कभी-कभी उदासीनता से भरे होते हैं; कभी-कभी उदासीनता नहीं होती है।

इच्छा के तल की विशेषताएँ सोलह तत्व हैं। दो तत्व कभी-कभी इच्छा के तल की विशेषताएँ होते हैं; कभी-कभी नहीं होते। सोलह तत्व रूप के तल की विशेषताएँ नहीं हैं। दो तत्व कभी-कभी रूप के तल की विशेषताएँ होते हैं; कभी-कभी नहीं होते। सोलह तत्व निराकार तल की विशेषताएँ नहीं हैं। दो तत्व कभी-कभी निराकार तल की विशेषताएँ होते हैं; कभी-कभी नहीं होते। सोलह तत्व समाहित हैं (अर्थात सांसारिक हैं)। दो तत्व कभी-कभी समाहित होते हैं (अर्थात सांसारिक हैं); कभी-कभी समाहित नहीं होते (अर्थात अलौकिक हैं)। सोलह तत्व मुक्त होने की प्रवृत्ति नहीं रखते। दो तत्व कभी-कभी मुक्त होने की प्रवृत्ति रखते हैं। सोलह तत्वों का कोई निश्चित (परिणामी समय) नहीं होता। दो तत्व कभी-कभी निश्चित (परिणामी समय) के होते हैं; कभी-कभी नहीं होते। सोलह तत्व पार किए जा सकते हैं। दो तत्व कभी-कभी पार किए जा सकते हैं; कभी-कभी पार नहीं किए जा सकते। [98] सोलह तत्व विलाप के कारण के बिना हैं। दो तत्व कभी-कभी विलाप के कारण के साथ होते हैं; कभी-कभी शोक का कोई कारण नहीं होता। (13)

(यह खंड यहीं समाप्त होता है) पूछताछ

तत्वों का विश्लेषण समाप्त हो गया है।
टिपिटक >> अभिधम्म पिटक >> विभंग >> अध्याय 4 पाठ - सच्चा
विभंग-विश्लेषण की पुस्तक-गोतम बुद्ध द्वारा बोली गई
पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण
पाली से यू. थिटिला, रंगून, बर्मा, 1969 द्वारा अनुवादित

ओसीआर संस्करण, प्रूफरीडिंग नहीं की गई है, इसमें त्रुटियां हैं
(पाठकों को दिए गए .pdf संस्करण की सहायता से पाठ को सही करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है)

अंतर्वस्तु
1सीएच.4 . सत्य का विश्लेषण (सच्चा सं. सत्य)
1.1i. प्रवचनों के अनुसार विश्लेषण
1.1.11. दुख का सत्य
1.1.22. कारण की सच्चाई
1.1.33. समाप्ति का सत्य
1.1.44. मार्ग का सत्य
1.22. अभिधम्म के अनुसार विश्लेषण
1.33. पूछताछ
सीएच.4 . सत्य का विश्लेषण (सच्चा सं. सत्य)
i. प्रवचनों के अनुसार विश्लेषण
189. [99] चार आर्य सत्य हैं: दुख का आर्य सत्य; दुख के कारण का आर्य सत्य; दुख की समाप्ति का आर्य सत्य; दुख की समाप्ति की ओर ले जाने वाले मार्ग का आर्य सत्य।
1. दुख का सत्य

190. इसमें दुख का आर्य सत्य क्या है? जन्म दुख है; वृद्धावस्था दुख है; मृत्यु दुख है; शोक— विलाप— पीड़ा (शारीरिक)— मानसिक पीड़ा— निराशा दुख है; नापसंद के साथ संगति दुख है; पसंद के से वियोग दुख है; इच्छा की प्राप्ति न होना भी दुख है; संक्षेप में, आसक्तियों के पाँचों समूह दुख हैं।
191. उसमें जन्म क्या है? वह जो किसी विशेष प्राणी के लिए, किसी विशेष श्रेणी के प्राणियों में, जन्म, उत्पत्ति, प्रवेश, पूर्ण अस्तित्व, समुच्चय का प्रकट होना, आधारों का अधिग्रहण है। इसे ही जन्म कहते हैं।
192. इसमें वृद्धावस्था क्या है? किसी विशेष श्रेणी के प्राणी के लिए जो वृद्धावस्था, दुर्बलता, टूटे दांत, सफेद बाल, झुर्रीदार त्वचा, जीवन का क्षय, नियंत्रण करने की क्षमताओं का क्षय है, उसे वृद्धावस्था कहते हैं।
193. इसमें मृत्यु क्या है? किसी भी श्रेणी के प्राणी के लिए जो भी मृत्यु, देहांत, विघटन, लुप्त होना, मरना, जीवनकाल की समाप्ति, समुच्चय का विघटन, शरीर का त्याग, प्राण शक्ति के नियंत्रण का विनाश है, उसे ही मृत्यु कहते हैं।
194. उसमें दुःख क्या है? (वह जो) किसी रिश्तेदार के कारण दुर्भाग्य से पीड़ित व्यक्ति को या किसी अन्य दुर्भाग्य से पीड़ित व्यक्ति को होता है

सत्य का विश्लेषण

131

धन के कारण या बीमारी के कारण दुर्भाग्य से पीड़ित व्यक्ति को या (भ्रष्ट) नैतिकता के कारण दुर्भाग्य से पीड़ित व्यक्ति को [100] या गलत दृष्टिकोण के कारण दुर्भाग्य से पीड़ित व्यक्ति को या किसी न किसी दुर्भाग्य से ग्रस्त व्यक्ति को या किसी न किसी पीड़ादायक चीज से पीड़ित व्यक्ति को दुःख, शोक, दुःख की अवस्था, आंतरिक दुःख, गहरा दुःख, मन की जलन, मानसिक पीड़ा, दुःख का तीर लगता है। इसे दुःख कहते हैं।
195. विलाप क्या है? (वह जो) किसी रिश्तेदार के कारण दुर्भाग्य से पीड़ित व्यक्ति के लिए, या धन के कारण दुर्भाग्य से पीड़ित व्यक्ति के लिए, या बीमारी के कारण दुर्भाग्य से पीड़ित व्यक्ति के लिए, या भ्रष्ट नैतिकता के कारण दुर्भाग्य से पीड़ित व्यक्ति के लिए, या गलत दृष्टिकोण के कारण दुर्भाग्य से पीड़ित व्यक्ति के लिए, या किसी न किसी दुर्भाग्य से ग्रस्त व्यक्ति के लिए, या किसी न किसी पीड़ादायक बात से पीड़ित व्यक्ति के लिए, रोना, विलाप करना, रोने की क्रिया, विलाप की अवस्था, विलाप की अवस्था, (दुखद) बातें, निरर्थक बातें, रोना, दुःखपूर्ण बड़बड़ाहट, दुःखपूर्ण बड़बड़ाहट की क्रिया, दुःखपूर्ण बड़बड़ाहट की अवस्था है। इसे विलाप कहते हैं।
196. इसमें दर्द क्या है? वह जो शारीरिक बेचैनी, शारीरिक पीड़ा, शारीरिक संपर्क से उत्पन्न बेचैन पीड़ादायक अनुभव, शारीरिक संपर्क से उत्पन्न बेचैन पीड़ादायक अनुभूति है। इसे दर्द कहते हैं।
197. इसमें मानसिक पीड़ा क्या है? वह मानसिक बेचैनी, मानसिक पीड़ा, मानसिक संपर्क से उत्पन्न बेचैन पीड़ादायक अनुभव, मानसिक संपर्क से उत्पन्न बेचैन पीड़ादायक भावना। इसे मानसिक पीड़ा कहते हैं।
198. निराशा क्या है? (वह) जो किसी रिश्तेदार के कारण दुर्भाग्य से पीड़ित व्यक्ति को, या धन के कारण दुर्भाग्य से पीड़ित व्यक्ति को, या बीमारी के कारण दुर्भाग्य से पीड़ित व्यक्ति को, या भ्रष्ट नैतिकता के कारण दुर्भाग्य से पीड़ित व्यक्ति को, या गलत दृष्टिकोण के कारण दुर्भाग्य से पीड़ित व्यक्ति को, या किसी न किसी दुर्भाग्य से ग्रस्त व्यक्ति को, या किसी न किसी पीड़ादायक बात से पीड़ित व्यक्ति को, हताशा, निराशा की अवस्था, हताशा की अवस्था कहती है। इसे ही निराशा कहते हैं।
199. इसमें वह पीड़ा क्या है जो नापसंद के साथ संगति से उत्पन्न होती है? इसमें वह सब कुछ शामिल है जो अवांछनीय, अप्रिय या अप्रिय है।

132

विश्लेषण की पुस्तक

वहाँ (वस्तुएँ) मौजूद हैं, जो दृश्य, श्रव्य, सुगंधित, स्वादयुक्त और स्पर्शनीय हैं; या वे जो कल्याणकारी, लाभदायी या सुखदायी नहीं हैं, या जो किसी को बंधनों से मुक्त नहीं करना चाहते; वह जो संगति (मिलने-जुलने से), संगति (प्राप्त करने से), मेलजोल, सहयोग करने से उत्पन्न होती है। नापसंदीदा लोगों के साथ संगति को ही कष्ट कहते हैं।

200. इसमें प्रियतम से वियोग का दुख क्या है? इसमें जो भी वांछनीय, सुखद, मनभावन वस्तुएँ हैं, चाहे वे दृश्य हों, श्रव्य हों, सुगंधित हों, स्वादयुक्त हों, स्पर्शनीय हों; या वे जो कल्याण चाहने वाले हों, लाभ चाहने वाले हों, आराम चाहने वाले हों या जो किसी को माता-पिता, भाई-बहन, मित्र, सहकर्मी, रिश्तेदार या रक्त संबंधियों के बंधनों से मुक्त करना चाहते हों; वह जो (मिलन-जुलन से) परहेज करना, (प्राप्त करने से) परहेज करना, मेल-जोल न रखना, सहयोग न करना है। इसे प्रियतम से वियोग का दुख कहते हैं। [101]

201. इसमें 'इच्छा पूरी न होना भी दुख है' का क्या अर्थ है? जन्म के अधीन प्राणियों में ऐसी इच्छा उत्पन्न होती है, "यदि हम जन्म के अधीन न होते तो अच्छा होता; जन्म हमारे लिए न आए"; यह इच्छा करने से प्राप्त नहीं होता। यही है, 'इच्छा पूरी न होना भी दुख है'।

वृद्धावस्था से ग्रस्त प्राणियों में। :P: बीमारी से ग्रस्त प्राणियों में।

पी: मृत्यु के अधीन प्राणियों में। :पी: शोक के अधीन प्राणियों में —

शोक, पीड़ा (शारीरिक) - मानसिक पीड़ा - निराशा, ऐसी इच्छा उत्पन्न होती है, "काश हम शोक, शोक, पीड़ा (शारीरिक) - मानसिक पीड़ा - निराशा के अधीन न होते; काश शोक, शोक, पीड़ा (शारीरिक) - मानसिक पीड़ा - निराशा हम पर न आती"; यह इच्छा मात्र से प्राप्त नहीं होता। यह भी, इच्छा पूरी न होना, दुख है।

P = पहले उदाहरण के सामान्य रूप में प्रत्येक को पूरा करें।

202. इसमें संक्षेप में क्या कहा गया है कि 'पाँच समूह (जिनके विषय के रूप में) आसक्ति दुख का कारण बनते हैं'? वे हैं: भौतिक गुणों का समूह (जिनके विषय के रूप में) आसक्ति, संवेदनाओं का समूह (जिनके विषय के रूप में) आसक्ति, बोध का समूह (जिनके विषय के रूप में) आसक्ति, मानसिक संवेदनाओं का समूह (जिनके विषय के रूप में) आसक्ति, चेतना का समूह (जिनके विषय के रूप में)

आसक्ति के विषय। इन्हें संक्षेप में 'पापों के विषय के रूप में) दुख कहा जाता है।

इसे ही दुख का महान सत्य कहा जाता है।

2. कारण की सच्चाई

203. इसमें दुख के कारण का आर्य सत्य क्या है?

वह लालसा जो पुन: जन्म का कारण बनती है, उसमें तीव्र वासना होती है, वह इस और उस के लिए प्रबल लालसा होती है। उदाहरण के लिए; इंद्रिय सुख की लालसा, जन्म लेने की लालसा, जन्म न लेने की लालसा।

यही लालसा जब उत्पन्न होती है तो कहाँ से उत्पन्न होती है; और जब शांत होती है तो कहाँ शांत होती है? संसार में जो कुछ भी सुंदर या सुखद है, इसी लालसा से उत्पन्न होती है; और इसी से शांत होती है।

संसार में सुंदर, सुखद वस्तु क्या है? संसार में आँख सुंदर, सुखद वस्तु है; इसी में यह लालसा उत्पन्न होती है; इसी में यह स्थिर होती है। संसार में कान। :P: संसार में नाक। संसार में जीभ। संसार में शरीर। संसार में मन सुंदर, सुखद वस्तु है; इसी में यह लालसा उत्पन्न होती है; इसी में यह स्थिर होती है।

P = प्रत्येक को पहले उदाहरण के अनुसार पूरा करें।

दृश्य जगत में (वस्तुएँ) सुंदर और सुखद हैं; यहीं पर यह लालसा उत्पन्न होती है; यहीं पर स्थिर होती है। श्रव्य जगत में (वस्तुएँ) हैं। :P: सुगंधित जगत में (वस्तुएँ) हैं। स्वादमय जगत में (वस्तुएँ) हैं। स्पर्शनीय जगत में (वस्तुएँ) हैं। [102] वैचारिक जगत में (वस्तुएँ) सुंदर और सुखद हैं; यहीं पर यह लालसा उत्पन्न होती है; यहीं पर स्थिर होती है।

P = प्रत्येक को पहले उदाहरण के अनुसार पूरा करें।

संसार में नेत्र चेतना एक सुंदर, सुखद वस्तु है; इसमें ही यह लालसा उत्पन्न होती है; इसमें ही यह स्थिर होती है। संसार में कान चेतना। :P: संसार में नाक चेतना। संसार में जीभ चेतना। संसार में शरीर चेतना। संसार में मन चेतना एक सुंदर, सुखद वस्तु है; इसमें ही यह लालसा उत्पन्न होती है; इसमें ही यह स्थिर होती है।
P = प्रत्येक को पहले उदाहरण के अनुसार पूरा करें।

134

विश्लेषण की पुस्तक

संसार में नेत्र संपर्क एक प्यारी, सुखद वस्तु है; यहीं पर यह लालसा उत्पन्न होती है; यहीं पर यह शांत होती है। संसार में कान का संपर्क। :P: संसार में नाक का संपर्क। संसार में जीभ का संपर्क। संसार में शरीर का संपर्क। संसार में मन का संपर्क एक प्यारी, सुखद वस्तु है; यहीं पर यह लालसा उत्पन्न होती है; यहीं पर यह शांत होती है।
P = प्रत्येक को पहले उदाहरण के अनुसार पूरा करें।
संसार में, नेत्र संपर्क से उत्पन्न अनुभूति एक सुंदर, सुखद वस्तु है; इसी में यह लालसा उत्पन्न होती है; इसी में यह स्थिर होती है। संसार में, कान संपर्क से उत्पन्न अनुभूति; P: संसार में, नाक संपर्क से उत्पन्न अनुभूति; संसार में, जीभ संपर्क से उत्पन्न अनुभूति; संसार में, शरीर संपर्क से उत्पन्न अनुभूति। संसार में, मन संपर्क से उत्पन्न अनुभूति एक सुंदर, सुखद वस्तु है; इसी में यह लालसा उत्पन्न होती है; इसी में यह स्थिर होती है।
P — प्रत्येक को पहले उदाहरण के अनुसार पूरा करें।
संसार में दृश्य वस्तुओं का अनुभव एक सुंदर, सुखद अनुभव है; इसमें यह लालसा उत्पन्न होती है; इसमें यह स्थिर होती है। संसार में श्रव्य वस्तुओं का अनुभव।
पी: दुनिया में गंधयुक्त (वस्तुओं) की धारणा। दुनिया में
स्वादमय (वस्तुओं) की अनुभूति। संसार में मूर्त (वस्तुओं) की अनुभूति। संसार में वैचारिक (वस्तुओं) की अनुभूति एक प्यारी, सुखद चीज है; इसमें यह लालसा उत्पन्न होती है; इसमें यह स्थिर होती है।
P = प्रत्येक को पहले उदाहरण के अनुसार पूरा करें।
संसार में दृश्य वस्तुओं के प्रति इच्छाशक्ति एक सुंदर, सुखद वस्तु है; इसमें यह लालसा उत्पन्न होती है; इसमें यह स्थिर होती है। संसार में श्रव्य वस्तुओं के प्रति इच्छाशक्ति। :P: संसार में सुगंधित वस्तुओं के प्रति इच्छाशक्ति। संसार में स्वादिष्ट वस्तुओं के प्रति इच्छाशक्ति। संसार में स्पर्शनीय वस्तुओं के प्रति इच्छाशक्ति। संसार में वैचारिक वस्तुओं के प्रति इच्छाशक्ति एक सुंदर, सुखद वस्तु है; इसमें यह लालसा उत्पन्न होती है; इसमें यह स्थिर होती है।
P = प्रत्येक को पहले उदाहरण के अनुसार पूरा करें।
संसार में प्रत्यक्ष (वस्तुओं) की लालसा एक प्यारी, सुखद बात है; इसमें यह लालसा जब उत्पन्न होती है, तब उत्पन्न होती है; इसमें यह स्थिर होकर स्थिर हो जाती है। संसार में प्रत्यक्ष (वस्तुओं) की लालसा। :P:

सत्य का विश्लेषण

135

संसार सुगंधित वस्तुओं के लिए तरसता है। संसार स्वादमय वस्तुओं के लिए तरसता है। संसार स्पर्शनीय वस्तुओं के लिए तरसता है। संसार में वैचारिक वस्तुओं के लिए तरसना एक प्यारी, सुखद बात है; इसमें यह तरस उत्पन्न होने पर उत्पन्न होता है; इसमें यह स्थिर होने पर स्थिर हो जाता है।
P = प्रत्येक को पहले उदाहरण के अनुसार पूरा करें।
संसार में दृश्य वस्तुओं के बारे में सोचना एक सुंदर, सुखद बात है; इसी में यह लालसा उत्पन्न होती है; इसी में यह स्थिर होती है। संसार में श्रव्य वस्तुओं के बारे में सोचना।

पी: दुनिया में गंधयुक्त (वस्तुओं) के बारे में सोचना। दुनिया में
स्वादिष्ट (वस्तुओं) का चिंतन। संसार में मूर्त (वस्तुओं) का चिंतन। संसार में वैचारिक (वस्तुओं) का चिंतन एक प्यारी बात है, सुखद बात है; इसमें यह लालसा उत्पन्न होती है; इसमें यह स्थिर होती है। [103]
P = प्रत्येक को पहले उदाहरण के अनुसार पूरा करें।
संसार में दृश्य वस्तुओं का अवलोकन करना एक सुंदर और सुखद अनुभव है; इसमें यह लालसा उत्पन्न होती है और शांत हो जाती है। संसार में श्रव्य वस्तुओं का अवलोकन करना एक सुंदर और सुखद अनुभव है; इसमें यह लालसा उत्पन्न होती है और शांत हो जाती है। संसार में सुगंधित वस्तुओं का अवलोकन करना एक सुंदर और सुखद अनुभव है; इसमें यह लालसा उत्पन्न होती है और शांत हो जाती है। संसार में स्वादयुक्त वस्तुओं का अवलोकन करना एक सुंदर और सुखद अनुभव है; इसमें यह लालसा उत्पन्न होती है और शांत हो जाती है। संसार में स्पर्शनीय वस्तुओं का अवलोकन करना एक सुंदर और सुखद अनुभव है; इसमें यह लालसा उत्पन्न होती है और शांत हो जाती है। संसार में वैचारिक वस्तुओं का अवलोकन करना एक सुंदर और सुखद अनुभव है; इसमें यह लालसा उत्पन्न होती है और शांत हो जाती है।
इसे ही दुख के कारणों का महान सत्य कहा जाता है।
3. समाप्ति का सत्य
204. उसमें दुख के निवारण का आर्य सत्य क्या है? वह जो उस लालसा का पूर्ण वैराग्यपूर्ण निवारण, त्याग, परित्याग, उससे मुक्ति और अनासक्ति है।
जब इस लालसा को त्याग दिया जाता है, तो इसे कहाँ त्यागना चाहिए; जब यह समाप्त हो जाती है, तो यह कहाँ समाप्त होती है? जो कुछ भी हो

136

विश्लेषण की पुस्तक

संसार एक सुंदर वस्तु है, एक सुखद वस्तु है; इसमें इस लालसा को त्याग देना चाहिए; इसमें जब रुकना समाप्त हो जाता है।
संसार में सुंदर, सुखद वस्तु क्या है? संसार में आँख सुंदर, सुखद वस्तु है; इसमें इस लालसा को त्याग देना चाहिए; इसमें जब यह रुक जाती है, तब यह रुक जाती है। संसार में कान। :P: संसार में नाक। संसार में जीभ। संसार में शरीर। संसार में मन सुंदर, सुखद वस्तु है; इसमें इस लालसा को त्याग देना चाहिए; इसमें जब यह रुक जाती है, तब यह रुक जाती है।
P = प्रत्येक को पहले उदाहरण के अनुसार पूरा करें।
दृश्य जगत में (वस्तु) एक सुंदर, सुखद वस्तु है; इसमें इस लालसा को त्याग देना चाहिए; इसमें जब यह रुक जाती है, तब यह रुक जाती है। श्रव्य जगत में (वस्तु)। :P : सुगंधित जगत में (वस्तु)। स्वादमय जगत में (वस्तु)। स्पर्शनीय जगत में (वस्तु)। वैचारिक जगत में (वस्तु) एक सुंदर, सुखद वस्तु है; इसमें इस लालसा को त्याग देना चाहिए; इसमें जब यह रुक जाती है, तब यह रुक जाती है।
P = प्रत्येक को पहले उदाहरण के अनुसार पूरा करें।
संसार में नेत्र चेतना एक सुंदर, सुखद वस्तु है; इसमें इस लालसा का त्याग करना चाहिए; इसमें जब यह समाप्त हो जाती है, तब यह समाप्त हो जाती है। संसार में कान चेतना। :P: संसार में नाक चेतना। संसार में जीभ चेतना। संसार में शरीर चेतना। संसार में मन चेतना एक सुंदर, सुखद वस्तु है; इसमें इस लालसा का त्याग करना चाहिए; इसमें जब यह समाप्त हो जाती है, तब यह समाप्त हो जाती है।
P =: प्रत्येक को पहले उदाहरण के अनुसार पूरा करें।
संसार में नेत्र संपर्क एक प्यारी, सुखद वस्तु है; यहाँ इस लालसा को त्याग देना चाहिए; यहाँ जब यह रुक जाती है, तब यह रुक जाती है। संसार में कान का संपर्क। :P : संसार में नाक का संपर्क। संसार में जीभ का संपर्क। संसार में शरीर का संपर्क। संसार में मन का संपर्क एक प्यारी, सुखद वस्तु है; यहाँ इस लालसा को त्याग देना चाहिए; यहाँ जब यह रुक जाती है, तब यह रुक जाती है।
P = प्रत्येक को पहले उदाहरण के अनुसार पूरा करें।
इस संसार में, आँखों के संपर्क से उत्पन्न होने वाली अनुभूति एक प्यारी, सुखद अनुभूति है; यहाँ इस लालसा को त्याग देना चाहिए; यहाँ जब यह रुक जाती है, तो रुक जाती है। इस संसार में, कानों के संपर्क से उत्पन्न होने वाली अनुभूति। :P: इस संसार में, नाक के संपर्क से उत्पन्न होने वाली अनुभूति। इस संसार में, जीभ के संपर्क से उत्पन्न होने वाली अनुभूति। इस संसार में,

शारीरिक संपर्क। [104] दुनिया में मन के संपर्क से उत्पन्न भावना एक प्यारी चीज है, सुखद चीज है; इसमें इस लालसा को त्यागने पर त्याग देना चाहिए; इसमें जब रुकना बंद हो जाता है।
P = प्रत्येक को पहले उदाहरण के अनुसार पूरा करें।
दुनिया में दृश्य वस्तुओं की अनुभूति। दुनिया में श्रव्य वस्तुओं की अनुभूति। दुनिया में सुगंधित वस्तुओं की अनुभूति। दुनिया में स्वादयुक्त वस्तुओं की अनुभूति। दुनिया में स्पर्शनीय वस्तुओं की अनुभूति। दुनिया में वैचारिक वस्तुओं की अनुभूति एक प्यारी, सुखद चीज है; इसमें इस लालसा को त्याग देना चाहिए; इसमें जब यह समाप्त हो जाती है।
दृश्य वस्तुओं के संबंध में संसार में इच्छाशक्ति होती है। श्रव्य वस्तुओं के संबंध में संसार में इच्छाशक्ति होती है। सुगंधित वस्तुओं के संबंध में संसार में इच्छाशक्ति होती है। स्वादिष्ट वस्तुओं के संबंध में संसार में इच्छाशक्ति होती है। स्पर्शनीय वस्तुओं के संबंध में संसार में इच्छाशक्ति होती है। वैचारिक वस्तुओं के संबंध में संसार में इच्छाशक्ति एक प्यारी वस्तु है, एक सुखद वस्तु है; इसमें इस लालसा को त्यागने पर त्याग देना चाहिए; इसमें जब रुकना समाप्त हो जाता है।
संसार में प्रत्यक्ष वस्तुओं की लालसा, श्रव्य वस्तुओं की लालसा, सुगंधित वस्तुओं की लालसा, स्वादयुक्त वस्तुओं की लालसा, स्पर्शनीय वस्तुओं की लालसा और वैचारिक वस्तुओं की लालसा एक प्यारी, सुखद वस्तु है; इस लालसा को त्यागने पर ही इसका त्याग करना चाहिए; यह लालसा समाप्त हो जाती है।
संसार में दृश्य वस्तुओं के बारे में सोचना। संसार में श्रव्य वस्तुओं के बारे में सोचना। संसार में स्वादमय वस्तुओं के बारे में सोचना। संसार में स्पर्शनीय वस्तुओं के बारे में सोचना। संसार में वैचारिक वस्तुओं के बारे में सोचना एक प्यारी, सुखद बात है; इसमें इस लालसा को त्याग देना चाहिए; इसमें जब यह रुक जाती है तो रुक जाती है।
दृश्य वस्तुओं की विश्व परीक्षा में। श्रव्य वस्तुओं की विश्व परीक्षा में। सुगंधित वस्तुओं की विश्व परीक्षा में। स्वादयुक्त वस्तुओं की विश्व परीक्षा में। स्पर्शनीय वस्तुओं की विश्व परीक्षा में। वैचारिक वस्तुओं की विश्व परीक्षा में एक प्यारी वस्तु, एक सुखद वस्तु है; इसमें इस लालसा को त्याग देना चाहिए; इसमें जब रुकना समाप्त हो जाता है।
इसे दुखों के निवारण का आर्य सत्य कहा जाता है।

4. मार्ग का सत्य

205. दुखों के निवारण की ओर ले जाने वाले मार्ग का आर्य सत्य क्या है? केवल यही आर्य अष्टांगिक मार्ग है। अर्थात्: सही दृष्टि, सही विचार, सही वाणी, सही कर्म, सही आजीविका, सही प्रयास, सही जागरूकता, सही एकाग्रता।
इसमें सही दृष्टिकोण क्या है? दुख का ज्ञान, दुख के कारण का ज्ञान, दुख के निवारण का ज्ञान, दुख निवारण के मार्ग का ज्ञान। यही सही दृष्टिकोण कहलाता है।
उसमें सही विचार क्या है? त्याग से जुड़ा विचार, द्वेष से रहित विचार, क्रूरता से रहित विचार। यही सही विचार कहलाता है। [105]
इसमें सही वाणी क्या है? झूठी वाणी से बचना, निंदात्मक वाणी से बचना, कठोर वाणी से बचना, निरर्थक वाणी से बचना। यही सही वाणी कहलाती है।
इसमें सही कर्म क्या है? प्राणियों की हत्या न करना, बिना माँगी वस्तुएँ न लेना, यौन दुराचार से बचना। यही सही कर्म कहलाता है।
इसमें सही आजीविका क्या है? इसमें एक नेक शिष्य, गलत आजीविका को त्यागकर, सही आजीविका से अपना जीवन यापन करता है। यही सही आजीविका कहलाती है।

इसमें उचित प्रयास क्या है? इसमें भिक्षु इच्छा उत्पन्न करता है, प्रयास करता है, ऊर्जा जगाता है, मन लगाता है, और अजन्मे बुरे भावों को उत्पन्न न होने देने का प्रयास करता है; इच्छा उत्पन्न करता है, प्रयास करता है, ऊर्जा जगाता है, मन लगाता है, और उत्पन्न हुए बुरे भावों को त्यागने का प्रयास करता है; इच्छा उत्पन्न करता है, प्रयास करता है, ऊर्जा जगाता है, मन लगाता है, और अजन्मे अच्छे भावों को उत्पन्न होने देने का प्रयास करता है; इच्छा उत्पन्न करता है, प्रयास करता है, ऊर्जा जगाता है, मन लगाता है, और उत्पन्न हुए अच्छे भावों को स्थिर करने, उन्हें व्यवस्थित करने, उनमें वृद्धि करने, उन्हें परिपक्व बनाने, उनका विकास करने और उन्हें पूर्ण करने का प्रयास करता है। इसे ही उचित प्रयास कहते हैं।

इसमें सही सचेतनता क्या है? इसमें एक भिक्षु शरीर में शरीर का चिंतन करते हुए, उत्साही, जागरूक और सचेतन होकर संसार (अर्थात शरीर) में लोभ और मानसिक पीड़ा को दूर करता है। भावनाओं में। :P: चेतना में। :P: वैचारिक वस्तुओं (अर्थात धारणाओं और मानसिक सहवर्तीताओं के समूह) में वैचारिक वस्तुओं का चिंतन करते हुए, उत्साही, जागरूक और सचेतन होकर लोभ को दूर करता है।

संसार में (अर्थात वैचारिक वस्तुओं में) उदासी और मानसिक पीड़ा को समझना। इसे सही जागरूकता कहते हैं।

P = पहले उदाहरण के सामान्य रूप में प्रत्येक को पूरा करें।

इसमें सही एकाग्रता क्या है? इसमें एक भिक्षु, इंद्रिय सुखों से विरक्त, बुरी अवस्थाओं से विरक्त होकर, आरंभिक अभ्यास और निरंतर अभ्यास के साथ, वैराग्य से उत्पन्न उत्साह और आनंद से युक्त प्रथम ध्यान में प्राप्त होता है और निवास करता है; आरंभिक अभ्यास और निरंतर अभ्यास को त्यागकर वह आंतरिक परिष्कार और मन के उन्नत विकास के साथ, आरंभिक अभ्यास और निरंतर अभ्यास के बिना, एकाग्रता से उत्पन्न उत्साह और आनंद से युक्त द्वितीय ध्यान में प्राप्त होता है और निवास करता है; वह इच्छा रहित होकर समभाव, सचेत और जागरूक रहता है और शरीर (मानसिक समुच्चय) के माध्यम से आनंद का अनुभव करता है; इसे ही श्रेष्ठजन "समभाव, सचेत आनंद में रहने वाला" कहते हैं; वह तृतीय ध्यान में प्राप्त होता है और निवास करता है; सुख और दुख का त्याग करके, फिर मानसिक सुख और मानसिक दुख को समाप्त करके वह चतुर्थ ध्यान में प्राप्त होता है और निवास करता है (जो) न तो दुख है और न ही सुख (बल्कि) समभाव से उत्पन्न सचेतनता की शुद्धता है। इसे सही एकाग्रता कहते हैं। [106]

इसे दुखों के निवारण की ओर ले जाने वाले मार्ग का आर्य सत्य कहा जाता है।

(यहाँ समाप्त होता है) प्रवचनों के अनुसार विश्लेषण

2. अभिधम्म के अनुसार विश्लेषण

206. चार सत्य ये हैं: - दुख, दुख का कारण, दुख का निवारण, दुख के निवारण की ओर ले जाने वाला मार्ग।

इसमें दुख का कारण क्या है? लालसा। यही दुख का कारण कहलाता है।

इसमें दुख क्या है? शेष विकृतियाँ, शेष बुरी अवस्थाएँ, तीनों अच्छे मूल जो दोषों के विषय हैं, शेष अच्छी अवस्थाएँ जो दोषों के विषय हैं, अच्छी और बुरी अवस्थाओं के परिणाम जो दोषों के विषय हैं, वे सभी निष्क्रिय अवस्थाएँ जो न अच्छी हैं, न बुरी हैं और न ही कर्म के परिणाम हैं, और सभी भौतिक गुण। यही दुख कहलाता है।

इसमें दुखों का निवारण क्या है? भोग-विलास का त्याग। इसी को दुखों का निवारण कहते हैं।

उसमें दुखों के निवारण का मार्ग क्या है? उस समय जब एक भिक्षु निरंतर पुनर्जन्म और मृत्यु के चक्र को तोड़ते हुए मुक्ति की ओर अग्रसर अलौकिक ध्यान विकसित करता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर प्रथम अवस्था में प्रवेश

करता है; वह कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान के प्रथम ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय आठ घटक मार्ग हैं (अर्थात्), सही दृष्टिकोण, सही एकाग्रता।
पीजे = पैरा 205 देखें। पी 2 = मध्यवर्ती पथ घटक।
इसमें सही दृष्टिकोण क्या है? वह जो ज्ञान, समझ, सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण, सत्य की खोज-ज्ञान का कारक, मार्ग का घटक, मार्ग में समाहित है। इसे ही सही दृष्टिकोण कहते हैं।
P = अनुच्छेद 525 देखें।
इसमें सही विचार क्या है? वह जो चिंतन है, जो सोच है, सही विचार, मार्ग का घटक, मार्ग में समाहित। इसे ही सही विचार कहते हैं।
P = अनुच्छेद 182 देखें।
इसमें सही वाणी क्या है? वह जो चार प्रकार के कुकर्मों से बचती है, उनसे दूर रहती है, उन्हें नहीं करती, उनसे परहेज करती है, उनसे दूर रहती है, उनमें निर्दोष होती है, उनकी सीमा का उल्लंघन नहीं करती, और उन कुकर्मों के मार्ग को नष्ट करती है: सही वाणी, मार्ग का घटक, मार्ग में समाहित। यही सही वाणी कहलाती है।
उसमें सही कर्म क्या है? वह कर्म जो तीन गलत शारीरिक कर्मों से बचना, उनसे दूर रहना, उनसे परहेज करना, उनसे परहेज करना, उन्हें न करना, उनसे निर्दोष होना, उनकी सीमा पार न करना, उनके कारण को नष्ट करना है: [107] सही कर्म, मार्ग का घटक, मार्ग में शामिल। इसे सही कर्म कहते हैं।
तो सही आजीविका क्या है? वह जो गलत आजीविका से बचती है, उससे दूर रहती है, उससे परहेज करती है, उसे नहीं करती है, उससे निर्दोष रहती है, उसकी सीमा का उल्लंघन नहीं करती है, और गलत आजीविका के मार्ग को नष्ट कर देती है: सही आजीविका, मार्ग का घटक, मार्ग में शामिल। यही सही आजीविका कहलाती है।
इसमें सही प्रयास क्या है? वह जो मानसिक ऊर्जा को जागृत करता है, सही प्रयास, ऊर्जा-ज्ञान-कारक, मार्ग का घटक, मार्ग में समाहित। इसे ही सही प्रयास कहते हैं।
P = अनुच्छेद 220 देखें।

सत्य का विश्लेषण

141

इसमें सही सचेतनता क्या है? वह जो सचेतनता है, निरंतर सचेतनता है, सही सचेतनता है, सचेतनता-ज्ञान का कारक है, मार्ग का घटक है, मार्ग में समाहित है। इसे ही सही सचेतनता कहते हैं।
P = अनुच्छेद 220 देखें।
इसमें सही एकाग्रता क्या है? चेतना की स्थिरता, दृढ़ता, सही एकाग्रता, एकाग्रता-ज्ञान का कारक, मार्ग का घटक, मार्ग में समाहित। इसे सही एकाग्रता कहते हैं। इसे दुख के निवारण का मार्ग कहते हैं; (साथ ही) दुख के निवारण के मार्ग से जुड़ी शेष अवस्थाएँ भी।
P = अनुच्छेद 220 देखें।

207. इसमें दुख का कारण क्या है? लालसा और शेष विकृतियाँ। यही दुख का कारण कहलाता है।
इसमें दुख क्या है? शेष बुरी अवस्थाएँ, तीन अच्छे मूल तत्व जो दोषों के विषय हैं, शेष अच्छी अवस्थाएँ जो दोषों के विषय हैं, अच्छी और बुरी अवस्थाओं के परिणाम जो दोषों के विषय हैं, वे सभी निष्क्रिय अवस्थाएँ जो न अच्छी हैं, न बुरी हैं और न ही कर्म के परिणाम हैं, और सभी भौतिक गुण। यही दुख कहलाता है।
इसी में दुखों का निवारण क्या है? भोग-विलास और शेष विकारों का त्याग करना। यही दुखों का निवारण कहलाता है।
उसमें दुखों के निवारण का मार्ग क्या है?
यहाँ उस समय जब एक भिक्षु निरंतर पुनर्जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति पाने की ओर अग्रसर अलौकिक ध्यान विकसित करता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर प्रथम अवस्था में प्रवेश करता है; वह कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान की प्रथम ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय आठ घटक मार्ग होते हैं, अर्थात् सही

दृष्टिकोण, सही एकाग्रता। इसे दुखों के निवारण का मार्ग कहा जाता है; [108] (साथ ही) शेष अवस्थाएँ भी इसी मार्ग से संबंधित हैं जो दुखों के निवारण की ओर ले जाती हैं।

पी 1 = पैरा 205 देखें। पी 2 = मध्यवर्ती पथ घटक।

208. इसमें दुख का कारण क्या है? लालसा, शेष विकृतियाँ और शेष बुरी अवस्थाएँ। यही दुख का कारण कहलाता है।

इसमें दुख क्या है? तीन अच्छे मूल तत्व जो दोषों के विषय हैं, शेष अच्छी अवस्थाएँ जो दोषों के विषय हैं, अच्छी और बुरी अवस्थाओं के परिणाम जो दोषों के विषय हैं, वे सभी निष्क्रिय अवस्थाएँ जो न तो अच्छी हैं, न बुरी हैं और न ही कर्म के परिणाम हैं, और सभी भौतिक गुण। यही दुख कहलाता है।

इसमें दुखों का निवारण क्या है? व्यथा और शेष विकारों तथा शेष बुरी अवस्थाओं का त्याग करना। यही दुखों का निवारण कहलाता है।

इसमें दुखों के निवारण का मार्ग क्या है? इसमें उस समय जब एक भिक्षु जन्म-मृत्यु के निरंतर चक्र से मुक्ति पाने के लिए अलौकिक ध्यान विकसित करता है; वह गलत दृष्टि का त्याग करके, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर प्रथम अवस्था में प्रवेश करता है; वह कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान की प्रथम ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय आठ घटक मार्ग हैं, अर्थात् सही दृष्टि और सही एकाग्रता। इसे दुखों के निवारण का मार्ग कहा जाता है; (साथ ही) शेष अवस्थाएँ भी दुखों के निवारण के मार्ग से संबंधित हैं।

पृष्ठ 1 — पैराग्राफ 205 देखें। पृष्ठ 2 = मध्यवर्ती पथ घटक।

209. इसमें दुख का कारण क्या है? लालसा, शेष विकृतियाँ, शेष बुरी अवस्थाएँ और वे तीन अच्छे मूल जो विकृतियों के विषय हैं। यही दुख का कारण कहलाता है।

इसमें दुख क्या है? शेष अच्छे गुण जो दोषों के विषय हैं, अच्छे और बुरे गुणों के परिणाम जो दोषों के विषय हैं, वे सभी निष्क्रिय अवस्थाएँ जो न तो अच्छी हैं, न बुरी हैं और न ही कर्म के परिणाम हैं, और सभी भौतिक गुण। यही दुख कहलाता है।

इसमें दुखों का निवारण क्या है? भोग-विलास, शेष विकारों, शेष बुरी अवस्थाओं और उन तीन अच्छे मूलों का त्याग करना जो विकारों के कारक हैं। यही दुखों का निवारण कहलाता है।

उसमें दुखों के निवारण का मार्ग क्या है?

यहाँ उस समय जब एक भिक्षु अलौकिक ध्यान विकसित करता है, जो निरंतर जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्ति की ओर अग्रसर होता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर प्रथम अवस्था में प्रवेश करता है, ऋणात्मक श्लोक 1: उस प्रथम ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है जो कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान है; उस समय

आठ मुख्य मार्ग हैं, (अर्थात्) सही दृष्टि, सही एकाग्रता। इसे दुखों के निवारण का मार्ग कहा जाता है।

पी* = पैरा 205 देखें। पी 2 - मध्यवर्ती पथ घटक।

210. इसमें दुख का कारण क्या है? लालसा, शेष विकृतियाँ, शेष बुरी अवस्थाएँ, तीन अच्छे मूल जो विकृतियों के विषय हैं और शेष अच्छी अवस्थाएँ जो विकृतियों के विषय हैं। यही दुख का कारण कहलाता है।

उसमें दुख क्या है? अच्छे और बुरे भावों के परिणाम, जो दोषों के विषय हैं, वे सभी निष्क्रिय अवस्थाएँ जो न तो अच्छी हैं, न बुरी हैं और न ही कर्मों के परिणाम हैं, और सभी भौतिक गुण। यही दुख कहलाता है।

इसमें दुखों का निवारण क्या है? भोग-विलास, शेष विकारों, शेष बुरी अवस्थाओं, तीनों अच्छे मूलों (जो विकारों के विषय हैं) और शेष अच्छे अवस्थाओं (जो विकारों के विषय हैं) का त्याग करना ही दुखों का निवारण कहलाता है।

उसमें दुखों के निवारण का मार्ग क्या है?
यहाँ उस समय जब एक भिक्षु निरंतर जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्ति पाने की ओर अग्रसर अलौकिक ध्यान विकसित करता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर प्रथम अवस्था में प्रवेश करता है, rP 1: वह कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान की प्रथम ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय आठ घटक मार्ग होते हैं, (अर्थात्) सही दृष्टिकोण, :P 2: सही एकाग्रता। इसे दुखों के निवारण का मार्ग कहा जाता है; (साथ ही) शेष अवस्थाएँ भी दुखों के निवारण के मार्ग से संबंधित हैं। [110]
पी 1 = पैरा 205 देखें। पी 2 = मध्यवर्ती पथ घटक।

211. चार सत्य ये हैं: - दुख, दुख का कारण, दुख का निवारण, दुख के निवारण की ओर ले जाने वाला मार्ग।
इसमें दुख का कारण क्या है? लालसा। यही दुख का कारण कहलाता है।
उसमें दुख क्या है? शेष विकृतियाँ, शेष बुरी अवस्थाएँ, तीन अच्छे मूल जो दोषों के विषय हैं, शेष अच्छी अवस्थाएँ जो दोषों के विषय हैं, अच्छी और बुरी अवस्थाओं के परिणाम जो दोषों के विषय हैं, और जो भी निष्क्रिय अवस्थाएँ हैं, वे न तो अच्छी हैं और न ही बुरी।

न तो बुरी बातें, न ही कर्मों के परिणाम, और न ही सभी भौतिक गुण। इसे ही दुख कहते हैं।
इसमें दुखों का निवारण क्या है? भोग-विलास का त्याग। इसी को दुखों का निवारण कहते हैं।
इसमें दुखों के निवारण का मार्ग क्या है? इसमें उस समय जब एक भिक्षु पुनर्जन्म और मृत्यु के निरंतर चक्र से मुक्ति पाने की ओर अग्रसर अलौकिक ध्यान विकसित करता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर प्रथम अवस्था में प्रवेश करता है, और कठिन अभ्यास तथा धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान की प्रथम अवस्था को प्राप्त करके उसमें निवास करता है; उस समय पाँच मुख्य मार्ग हैं, (अर्थात्) सही दृष्टिकोण, सही विचार, सही प्रयास, सही जागरूकता और सही एकाग्रता।
P = अनुच्छेद 205 देखें।
इसमें सही दृष्टिकोण क्या है? वह जो ज्ञान, समझ, सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण, सत्य की खोज-ज्ञान का कारक, मार्ग का घटक, मार्ग में समाहित है। इसे ही सही दृष्टिकोण कहते हैं।
P = अनुच्छेद 525 देखें।
इसमें सही विचार क्या है? वह जो चिंतन है, जो सोच है, सही विचार, मार्ग का घटक, मार्ग में समाहित। इसे ही सही विचार कहते हैं।
P = अनुच्छेद 182 देखें।
इसमें सही प्रयास क्या है? वह जो मानसिक ऊर्जा को जागृत करता है, सही प्रयास, ऊर्जा-ज्ञान-कारक, मार्ग का घटक, मार्ग में समाहित। इसे ही सही प्रयास कहते हैं।
P = अनुच्छेद 220 देखें।
इसमें सही सचेतनता क्या है? वह जो सचेतनता है, निरंतर सचेतनता है, सही सचेतनता है, सचेतनता-ज्ञान का कारक है, मार्ग का घटक है, मार्ग में समाहित है। इसे ही सही सचेतनता कहते हैं।
P = अनुच्छेद 220 देखें।
इसमें सही एकाग्रता क्या है? वह जो चेतना की स्थिरता है, सही एकाग्रता, एकाग्रता-ज्ञान-कारक, मार्ग का घटक, मार्ग में समाहित। इसे सही एकाग्रता कहते हैं। इसे दुख के निवारण का मार्ग कहते हैं; (साथ ही) दुख के निवारण के मार्ग से जुड़ी शेष अवस्थाएँ भी। [I1l]
P = अनुच्छेद 220 देखें।

212. इसमें दुख का कारण क्या है? लालसा, शेष विकृतियाँ, शेष बुरी अवस्थाएँ, तीन अच्छे मूल जो विकृतियों के विषय हैं और शेष अच्छी अवस्थाएँ जो विकृतियों के विषय हैं। यही दुख का कारण कहलाता है।

उसमें दुख क्या है? अच्छे और बुरे भावों के परिणाम, जो दोषों के विषय हैं, वे सभी निष्क्रिय अवस्थाएँ जो न तो अच्छी हैं, न बुरी हैं और न ही कर्मों के परिणाम हैं, और सभी भौतिक गुण। यही दुख कहलाता है।
इसमें दुखों का निवारण क्या है? भोग-विलास, शेष विकारों, शेष बुरी अवस्थाओं, तीनों अच्छे मूलों (जो विकारों के विषय हैं) और शेष अच्छे अवस्थाओं (जो विकारों के विषय हैं) का त्याग करना ही दुखों का निवारण कहलाता है।
उसमें दुखों के निवारण का मार्ग क्या है?
जब कोई भिक्षु जन्म-मृत्यु के निरंतर चक्र से मुक्ति पाने के लिए अलौकिक ध्यान विकसित करता है, तब वह गलत दृष्टि का त्याग करके, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर प्रथम अवस्था में प्रवेश करता है और उस ध्यान में स्थिर रहता है जो कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान का परिणाम है। उस समय पाँच मुख्य मार्ग हैं: सही दृष्टि, सही विचार, सही प्रयास, सही जागरूकता और सही एकाग्रता। इसे दुखों के निवारण का मार्ग कहा जाता है; और इसी मार्ग से संबंधित अन्य अवस्थाएँ भी दुखों के निवारण की ओर ले जाती हैं।
P = अनुच्छेद 205 देखें।
213. चार सत्य ये हैं: - दुख, दुख का कारण, दुख का निवारण, दुख के निवारण की ओर ले जाने वाला मार्ग।
इसमें दुख का कारण क्या है? लालसा। यही दुख का कारण कहलाता है।
इसमें दुख क्या है? शेष विकृतियाँ, शेष बुरी अवस्थाएँ, तीनों अच्छे मूल जो दोषों के विषय हैं, शेष अच्छी अवस्थाएँ जो दोषों के विषय हैं, अच्छी और बुरी अवस्थाओं के परिणाम जो दोषों के विषय हैं, वे सभी निष्क्रिय अवस्थाएँ जो न अच्छी हैं, न बुरी हैं और न ही कर्म के परिणाम हैं, और सभी भौतिक गुण। यही दुख कहलाता है।
इसमें दुखों का निवारण क्या है? भोग-विलास का त्याग। इसी को दुखों का निवारण कहते हैं।
उसमें दुखों के निवारण का मार्ग क्या है?

146

विश्लेषण की पुस्तक

यहाँ उस समय जब एक भिक्षु अलौकिक ध्यान [112] विकसित करता है, जो निरंतर पुनर्जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति की ओर अग्रसर होता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके और इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर प्रथम अवस्था में प्रवेश करने के लिए, कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान की प्रथम ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय संपर्क होता है, अविचलितता होती है। इसे दुख के निवारण का मार्ग कहा जाता है।
पी^पैरा देखें. 205. पी 2 = ध्स देखें। पैरा. 277.

214. इसमें दुख का कारण क्या है? लालसा, शेष विकृतियाँ, शेष बुरी अवस्थाएँ, तीन अच्छे मूल जो विकृतियों के विषय हैं, और शेष अच्छी अवस्थाएँ जो विकृतियों के विषय हैं। यही दुख का कारण कहलाता है।
उसमें दुख क्या है? अच्छे और बुरे भावों के परिणाम, जो दोषों के विषय हैं, वे सभी निष्क्रिय अवस्थाएँ जो न तो अच्छी हैं, न बुरी हैं और न ही कर्मों के परिणाम हैं, और सभी भौतिक गुण। यही दुख कहलाता है।
इसमें दुखों का निवारण क्या है? भोग-विलास, शेष विकारों, शेष बुरी अवस्थाओं, तीनों अच्छे मूलों (जो विकारों के विषय हैं) और शेष अच्छे अवस्थाओं (जो विकारों के विषय हैं) का त्याग करना ही दुखों का निवारण कहलाता है।
उसमें दुखों के निवारण का मार्ग क्या है?
यहाँ उस समय जब भिक्षु जन्म-मृत्यु के निरंतर चक्र से मुक्ति पाने की ओर अग्रसर अलौकिक ध्यान विकसित करता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर प्रथम अवस्था में प्रवेश करता है; वह कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान की प्रथम ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय संपर्क स्थापित होता है, अविचलितता बनी रहती है। इसे दुखों के निवारण का मार्ग कहा जाता है।
पी 1 = पैरा देखें। 205. पी 2 = ध्स देखें। पैरा. 277.
(यहाँ समाप्त होता है) अभिधम्म के अनुसार विश्लेषण
3. पूछताछ

215. चार आर्य सत्य हैं: — दुख का आर्य सत्य, दुख के कारण का आर्य सत्य, और दुख के समाधान का आर्य सत्य।

दुखों का निवारण, दुखों के निवारण की ओर ले जाने वाला आर्य सत्य।

216. चार आर्य सत्यों में से कितने अच्छे हैं; कितने बुरे हैं; कितने न अच्छे हैं न बुरे? :P: कितने ऐसे हैं जिन पर शोक करने का कारण है; कितने ऐसे हैं जिन पर शोक करने का कोई कारण नहीं है?

P = शेष उपयुक्त त्रिक और युग्मक।

1. त्रिक

217. कारण का सत्य बुरा है। मार्ग का सत्य अच्छा है। निवारण का सत्य न अच्छा है न बुरा। दुख का सत्य कभी अच्छा होता है; कभी बुरा होता है; कभी न अच्छा होता है न बुरा। दो सत्य कभी सुखद अनुभूति से जुड़े होते हैं; [113] कभी दुखदायी न सुखद अनुभूति से जुड़े होते हैं। निवारण के सत्य को न तो सुखद अनुभूति से जुड़ा हुआ कहा जा सकता है; न दुखदायी अनुभूति से जुड़ा हुआ; न दुखदायी न सुखद अनुभूति से जुड़ा हुआ। दुख का सत्य कभी सुखद अनुभूति से जुड़ा होता है; कभी दुखदायी अनुभूति से जुड़ा होता है; कभी दुखदायी न सुखद अनुभूति से जुड़ा होता है; कभी-कभी इसे न सुखद अनुभूति से जुड़ा हुआ कहा जा सकता है; न दुखदायी अनुभूति से जुड़ा हुआ; न दुखदायी न सुखद अनुभूति से जुड़ा हुआ। दो सत्य परिणाम उत्पन्न करते हैं। निवारण का सत्य न तो परिणाम उत्पन्न करता है और न ही परिणाम उत्पन्न करता है। दुख का सत्य कभी-कभी परिणाम उत्पन्न करता है; कभी-कभी परिणाम उत्पन्न होता है; कभी-कभी न तो परिणाम होता है और न ही परिणाम उत्पन्न होता है। कारण का सत्य (लालसा और भ्रामक दृष्टि से) बोधहीन होता है, आसक्तियों का विषय होता है। दो सत्य बोधहीन होते हैं, आसक्तियों के विषय नहीं होते। दुख का सत्य कभी-कभी बोधहीन होता है, आसक्तियों का विषय होता है; कभी-कभी बोधहीन होता है, आसक्तियों का विषय होता है।

कारण का सत्य भ्रष्ट है, वह भ्रष्टताओं का विषय है। दो सत्य भ्रष्ट नहीं हैं, वे भ्रष्टताओं के विषय नहीं हैं। दुख का सत्य कभी भ्रष्ट होता है, भ्रष्टताओं का विषय होता है; कभी भ्रष्ट नहीं होता, भ्रष्टताओं का विषय होता है। कारण का सत्य प्रारंभिक अभ्यास के साथ-साथ निरंतर अभ्यास से भी जुड़ा होता है। समाप्ति का सत्य प्रारंभिक अभ्यास के बिना, निरंतर अभ्यास के बिना होता है। मार्ग का सत्य 8 +

कभी-कभी यह प्रारंभिक अभ्यास के साथ होता है, कभी निरंतर अभ्यास के साथ; कभी-कभी यह प्रारंभिक अभ्यास के बिना होता है, केवल निरंतर अभ्यास के साथ; कभी-कभी यह प्रारंभिक अभ्यास के बिना होता है, निरंतर अभ्यास के बिना। दुख का सत्य कभी-कभी प्रारंभिक अभ्यास के साथ होता है, कभी-कभी निरंतर अभ्यास के साथ; कभी-कभी यह प्रारंभिक अभ्यास के बिना होता है, केवल निरंतर अभ्यास के साथ; कभी-कभी यह प्रारंभिक अभ्यास के बिना होता है, निरंतर अभ्यास के बिना; या कभी-कभी इसे न तो प्रारंभिक अभ्यास के साथ, न ही निरंतर अभ्यास के साथ, न ही प्रारंभिक अभ्यास के बिना, न ही निरंतर अभ्यास के साथ कहा जाना चाहिए। दो सत्य कभी-कभी उत्साह के साथ होते हैं; कभी-कभी आनंद के साथ; कभी-कभी उदासीनता के साथ। समाप्ति के सत्य को न तो उत्साह के साथ, न ही आनंद के साथ, और न ही उदासीनता के साथ कहा जाना चाहिए। दुख का सत्य कभी-कभी उत्साह के साथ होता है; कभी-कभी आनंद के साथ; कभी-कभी उदासीनता के साथ; कभी-कभी इसे न तो उत्साह के साथ, न ही आनंद के साथ, और न ही उदासीनता के साथ कहा जाना चाहिए।

दो सत्य ऐसे हैं जिन्हें न तो प्रथम मार्ग से और न ही पश्चात मार्गों से त्यागा जा सकता है। कारण का सत्य कभी प्रथम मार्ग से त्यागा जा सकता है; कभी पश्चात मार्गों से। दुख का सत्य कभी प्रथम मार्ग से त्यागा जा सकता है; कभी पश्चात मार्गों से; कभी-कभी न तो प्रथम मार्ग से और न ही पश्चात मार्गों से। दो सत्यों का कोई मूल नहीं है जिसे न तो प्रथम मार्ग से और न ही पश्चात मार्गों से त्यागा जा सके। कारण का सत्य कभी मूल रखता है जिसे प्रथम मार्ग से त्यागा जा सकता है; कभी-कभी पश्चात मार्गों से। दुख का सत्य कभी मूल रखता है जिसे प्रथम मार्ग से त्यागा जा सकता है; कभी-कभी पश्चात मार्गों से; कभी-कभी न तो प्रथम मार्ग से और न ही पश्चात मार्गों से। कारण का सत्य संचयी है (पुनर्जन्म और मृत्यु का निरंतर चक्र)। मार्ग का सत्य विक्षेपी है। [114] समाप्ति का सत्य न तो संचयी है और

न ही विक्षेपी। दुःख का सत्य कभी संचयी होता है; कभी न तो संचयी होता है और न ही विक्षेपी। मार्ग का सत्य सात अलौकिक अवस्थाओं का है। तीन सत्य न तो सात अलौकिक अवस्थाओं के हैं और न ही अंतिम अलौकिक अवस्था के।

सत्य का विश्लेषण

149

कारण का सत्य निम्न है। दो सत्य असीम हैं। दुख का सत्य कभी निम्न होता है, कभी उदात्त। निःसंतोष के सत्य का कोई उद्देश्य नहीं होता। मार्ग के सत्य का असीम उद्देश्य होता है। कारण के सत्य का कभी निम्न उद्देश्य होता है, कभी उदात्त उद्देश्य होता है; कभी असीम उद्देश्य नहीं होता; कभी-कभी यह कहना उचित नहीं होगा कि इसका कोई निम्न उद्देश्य है या उदात्त उद्देश्य। दुख के सत्य का कभी निम्न उद्देश्य होता है, कभी उदात्त उद्देश्य होता है; कभी असीम उद्देश्य होता है; कभी-कभी यह कहना उचित नहीं होगा कि इसका कोई निम्न उद्देश्य है, उदात्त उद्देश्य है या असीम उद्देश्य है।
कारण का सत्य निम्न है। दो सत्य श्रेष्ठ हैं। दुख का सत्य कभी निम्न होता है, कभी मध्य होता है। समाप्ति के सत्य का कोई निश्चित (परिणाम समय) नहीं होता। मार्ग का सत्य एक सही (अवस्था) है जिसका निश्चित (परिणाम समय) होता है। दो सत्य कभी निश्चित (परिणाम समय) के साथ असत्य (अवस्था) होते हैं, कभी उनका कोई निश्चित (परिणाम समय) नहीं होता। समाप्ति के सत्य का कोई कर्ता नहीं होता। कारण के सत्य के बारे में यह नहीं कहा जा सकता कि मार्ग उसका कर्ता है, मार्ग उसका कारण है या मार्ग उसका प्रमुख कारक है। मार्ग के सत्य का मार्ग उसका कर्ता नहीं है; मार्ग उसका कारण है; कभी मार्ग उसका प्रमुख कारक है; कभी यह नहीं कहा जा सकता कि मार्ग उसका प्रमुख कारक है। दुख के सत्य का मार्ग कभी उसका कर्ता है; मार्ग उसका कारण नहीं है; कभी मार्ग उसका प्रमुख कारक है; कभी यह नहीं कहा जा सकता कि मार्ग उसका कर्ता है या मार्ग उसका प्रमुख कारक है। दो सत्य कभी उत्पन्न होते हैं, कभी उत्पन्न नहीं होते। यह नहीं कहा जाना चाहिए कि यह उत्पन्न होने के लिए बाध्य है। समाप्ति के सत्य को न तो उत्पन्न हुआ, न उत्पन्न न हुआ, और न ही उत्पन्न होने के लिए बाध्य कहा जाना चाहिए। दुख का सत्य कभी उत्पन्न होता है, कभी उत्पन्न नहीं होता, और कभी उत्पन्न होने के लिए बाध्य होता है। तीन सत्य कभी भूतकाल के होते हैं, कभी भविष्यकाल के होते हैं, और कभी वर्तमानकाल के होते हैं। समाप्ति के सत्य को न तो भूतकाल का, न भविष्यकाल का, और न ही वर्तमानकाल का कहा जाना चाहिए। समाप्ति के सत्य का कोई कर्ता नहीं होता। मार्ग के सत्य का न तो भूतकाल का, न भविष्यकाल का, और न ही वर्तमानकाल का कर्ता होता है। दो सत्यों का कभी भूतकाल का, कभी भविष्यकाल का, और कभी वर्तमानकाल का कर्ता होता है; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि उनका न भूतकाल का, न भविष्यकाल का, और न ही वर्तमानकाल का कर्ता होता है। [115] समाप्ति का सत्य बाह्य होता है। तीन सत्य कभी आंतरिक होते हैं, कभी बाह्य होते हैं, और कभी आंतरिक और बाह्य दोनों होते हैं। समाप्ति के सत्य का कोई कर्ता नहीं होता। मार्ग के सत्य का बाह्य कर्ता होता है। कारण के सत्य का कभी आंतरिक कर्ता होता है;

150

विश्लेषण की पुस्तक

कभी-कभी इसका बाह्य उद्देश्य होता है; कभी-कभी इसका आंतरिक और बाह्य दोनों उद्देश्य होते हैं। दुःख के सत्य का कभी आंतरिक उद्देश्य होता है; कभी-कभी इसका बाह्य उद्देश्य होता है; कभी-कभी इसका आंतरिक और बाह्य दोनों उद्देश्य होते हैं; कभी-कभी यह कहना उचित नहीं होगा कि इसका कोई आंतरिक उद्देश्य है, बाह्य उद्देश्य है या दोनों। तीन सत्य अदृश्य हैं, अप्रभावित हैं। दुःख का सत्य कभी-कभी दृश्यमान होता है, अप्रभावित होता है; कभी-कभी अदृश्य होता है, अप्रभावित होता है।

2. दोहे

218. कारण का सत्य मूल है। निवारण का सत्य मूल नहीं है। दो सत्य कभी-कभी मूल होते हैं; कभी-कभी मूल नहीं होते। दो सत्यों के साथ मूल होते हैं। निवारण के सत्य के साथ मूल नहीं होता। दुख का सत्य कभी-कभी मूल के साथ होता है; कभी-कभी मूल के साथ नहीं होता। दो सत्यों का मूल से संबंध होता है। निवारण का सत्य मूल से संबंधित नहीं है। दुख का सत्य कभी-कभी मूल से संबंधित होता है;

कभी-कभी मूल से संबंधित नहीं होता। कारण का सत्य मूल है और इसके साथ मूल भी होता है। निवारण के सत्य को यह नहीं कहना चाहिए कि वह मूल है और इसके साथ मूल भी है या मूल के साथ है लेकिन मूल नहीं है। मार्ग का सत्य कभी-कभी मूल है और इसके साथ मूल भी होता है; कभी-कभी मूल के साथ मूल भी होता है लेकिन मूल नहीं होता। दुख का सत्य कभी-कभी मूल है और इसके साथ मूल भी होता है; कभी-कभी मूल के साथ मूल भी होता है लेकिन मूल नहीं होता; कभी-कभी यह नहीं कहना चाहिए कि वह मूल है और इसके साथ मूल भी है या मूल के साथ है लेकिन मूल नहीं है। कारण का सत्य मूल है और इसके साथ मूल भी होता है। समाप्ति के सत्य को यह नहीं कहना चाहिए कि वह जड़ से भी जुड़ा हुआ है या जड़ से जुड़ा हुआ है लेकिन जड़ नहीं है। मार्ग का सत्य कभी जड़ से जुड़ा हुआ होता है; कभी जड़ से जुड़ा होता है लेकिन जड़ नहीं होता। दुख का सत्य कभी जड़ से भी जुड़ा हुआ होता है; कभी जड़ से जुड़ा होता है लेकिन जड़ नहीं होता; कभी-कभी इसे यह नहीं कहना चाहिए कि वह जड़ से भी जुड़ा हुआ है या जड़ से जुड़ा हुआ है लेकिन जड़ नहीं है। समाप्ति का सत्य जड़ नहीं है, जड़ के साथ नहीं है। कारण के सत्य को यह नहीं कहना चाहिए कि वह जड़ नहीं है, जड़ के साथ है या जड़ नहीं है, जड़ के साथ नहीं है। मार्ग का सत्य कभी जड़ नहीं होता, जड़ के साथ होता है; कभी-कभी इसे यह नहीं कहना चाहिए कि वह जड़ नहीं है, जड़ के साथ है (या जड़ नहीं है, जड़ नहीं है)।

सत्य का विश्लेषण

151

(जड़ के साथ)* दुख का सत्य कभी जड़ नहीं होता, जड़ के साथ होता है; कभी जड़ नहीं होता, जड़ के साथ नहीं होता; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि जड़ नहीं है, जड़ के साथ है या जड़ नहीं है, जड़ के साथ नहीं है। (1) [116]
कुछ ग्रंथों में यह कोष्ठक में दिया गया वाक्यांश शामिल नहीं होता है।
तीन सत्य कारण सहित हैं। निर्गमन का सत्य कारणहीन है। तीन सत्य सशर्त हैं। निर्गमन का सत्य सशर्त नहीं है। तीन सत्य अदृश्य हैं। दुख का सत्य कभी दृश्यमान होता है; कभी अदृश्य होता है। तीन सत्य अप्रभावित हैं। दुख का सत्य कभी प्रभावित होता है; कभी अप्रभावित होता है। तीन सत्य भौतिक नहीं हैं। दुख का सत्य कभी भौतिक होता है; कभी भौतिक नहीं होता। दो सत्य सांसारिक हैं। दो सत्य अलौकिक हैं। (सभी सत्य) एक मार्ग से ज्ञात होते हैं; दूसरे मार्ग से ज्ञात नहीं होते। (2)
कारण का सत्य अपवित्रता है। दो सत्य अपवित्रता नहीं हैं। दुख का सत्य कभी अपवित्रता होता है, कभी अपवित्रता नहीं होता। दो सत्य अपवित्रताओं के विषय हैं। दो सत्य अपवित्रताओं के विषय नहीं हैं। कारण का सत्य अपवित्रताओं से जुड़ा है। दो सत्य अपवित्रताओं से नहीं जुड़े हैं। दुख का सत्य कभी अपवित्रताओं से जुड़ा होता है, कभी अपवित्रताओं से नहीं जुड़ा होता। कारण का सत्य अपवित्रता भी है और अपवित्रताओं का विषय भी। दो सत्यों को अपवित्रता और अपवित्रताओं का विषय या अपवित्रताओं का विषय तो कहा नहीं जाना चाहिए। दुख का सत्य कभी अपवित्रता भी है और अपवित्रताओं का विषय भी; कभी अपवित्रताओं का विषय तो होता है, लेकिन अपवित्रता नहीं। कारण का सत्य अपवित्रता भी है और अपवित्रताओं से जुड़ा है। दो सत्यों को इस प्रकार नहीं कहा जाना चाहिए कि वे दोष से जुड़े हुए हैं या दोष से जुड़े हुए हैं लेकिन दोष नहीं हैं। दुख का सत्य कभी-कभी दोष से जुड़ा हुआ होता है; कभी-कभी दोष से जुड़ा होता है लेकिन दोष नहीं होता; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वे दोष से जुड़े हुए हैं या दोष से जुड़े हुए हैं लेकिन दोष नहीं हैं। दो सत्य न तो दोष से जुड़े हैं और न ही दोष के विषय हैं। कारण के सत्य को इस प्रकार नहीं कहा जाना चाहिए कि वे दोष से जुड़े नहीं हैं, दोष के विषय हैं या दोष से जुड़े नहीं हैं, दोष के विषय नहीं हैं।

152

विश्लेषण की पुस्तक

अपवित्रताओं का। कष्ट का सत्य कभी-कभी अपवित्रताओं से जुड़ा नहीं होता, बल्कि अपवित्रताओं का विषय होता है; कभी-कभी ऐसा नहीं कहा जाना चाहिए कि वह अपवित्रताओं से जुड़ा नहीं है, बल्कि अपवित्रताओं का विषय है (या अपवित्रताओं से जुड़ा नहीं है, अपवित्रताओं का विषय नहीं है)।* (3)
कुछ ग्रंथों में यह कोष्ठक में दिया गया वाक्यांश शामिल नहीं होता है।

कारण का सत्य बंधन है। दो सत्य बंधन नहीं होते। दुख का सत्य कभी बंधन होता है, कभी बंधन नहीं होता। दो सत्य बंधनों के विषय होते हैं। दो सत्य बंधनों के विषय नहीं होते। कारण का सत्य बंधनों से जुड़ा होता है। दो सत्य बंधनों से नहीं जुड़े होते। दुख का सत्य कभी बंधनों से जुड़ा होता है, कभी बंधनों से नहीं जुड़ा होता। कारण का सत्य बंधन भी है और बंधनों का विषय भी। दो सत्यों को यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वे बंधन भी हैं और बंधनों के विषय भी, या बंधनों के विषय तो हैं लेकिन बंधन नहीं। दुख का सत्य कभी बंधन भी है और बंधनों का विषय भी, कभी बंधनों का विषय तो होता है लेकिन बंधन नहीं। कारण का सत्य बंधन भी है और बंधनों से जुड़ा हुआ भी। [117] दो सत्यों को यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वे बंधन भी हैं और बंधनों से जुड़े हुए भी, या बंधनों से जुड़े हुए तो हैं लेकिन बंधन नहीं। दुःख का सत्य कभी-कभी बंधन से जुड़ा होता है; कभी-कभी बंधन से जुड़ा होता है लेकिन बंधन नहीं होता; कभी-कभी यह कहना उचित नहीं होगा कि यह बंधन से जुड़ा है या बंधन से जुड़ा है लेकिन बंधन नहीं है। दो सत्य बंधनों से जुड़े नहीं होते, बंधनों के विषय नहीं होते। कारण के सत्य के बारे में यह कहना उचित नहीं होगा कि यह बंधनों से जुड़ा नहीं है, बंधनों का विषय है या बंधनों से जुड़ा नहीं है, बंधनों का विषय नहीं है। दुःख का सत्य कभी-कभी बंधनों से जुड़ा नहीं होता, बंधनों का विषय होता है; कभी-कभी यह कहना उचित नहीं होगा कि यह बंधनों से जुड़ा नहीं है, बंधनों का विषय है (या बंधनों से जुड़ा नहीं है, बंधनों का विषय नहीं है)।* (4)
कुछ ग्रंथों में यह कोष्ठक में दिया गया वाक्यांश शामिल नहीं होता है।
कारण का सत्य बंधन है। दो सत्य बंधन नहीं होते। दुख का सत्य कभी बंधन होता है, कभी नहीं। दो सत्य बंधनों के विषय होते हैं। दो सत्य बंधनों के विषय नहीं होते। दो सत्य बंधनों से जुड़े नहीं होते। दो सत्य कभी बंधनों से जुड़े होते हैं, कभी नहीं। कारण का सत्य बंधन भी है और बंधनों का विषय भी। दो सत्य नहीं होने चाहिए।

सत्य का विश्लेषण

153

कहा जाता है कि, बंधन भी बंधनों के विषय होते हैं या बंधनों के विषय होते हैं लेकिन बंधन नहीं होते। दुख का सत्य कभी-कभी बंधन भी बंधनों का विषय होता है; कभी-कभी बंधनों का विषय होता है लेकिन बंधन नहीं होता। कारण का सत्य भी बंधनों से जुड़ा होता है; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि, बंधन भी बंधनों से जुड़ा होता है (या बंधनों से जुड़ा होता है लेकिन बंधन नहीं होता)।* दो सत्यों को यह नहीं कहा जाना चाहिए कि, बंधन भी बंधनों से जुड़े होते हैं या बंधनों से जुड़े होते हैं लेकिन बंधन नहीं होते। दुख का सत्य कभी-कभी बंधन भी बंधनों से जुड़ा होता है; कभी-कभी बंधनों से जुड़ा होता है लेकिन बंधन नहीं होता; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि, बंधन भी बंधनों से जुड़ा होता है या बंधनों से जुड़ा होता है लेकिन बंधन नहीं होता। दो सत्य बंधनों से जुड़े नहीं होते, बंधनों के विषय नहीं होते। दो सत्य कभी-कभी बंधनों से जुड़े नहीं होते, बंधनों के विषय होते हैं; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि, संबंधों से जुड़े नहीं हैं, संबंधों के विषय हैं (या संबंधों से जुड़े नहीं हैं, संबंधों के विषय नहीं हैं)।* (5)
कुछ ग्रंथों में कोष्ठक में दिए गए वाक्यांश शामिल नहीं होते हैं।
कारण का सत्य बाढ़ है। :P : बंधन है। :P : बाधा है। दो सत्य बाधा नहीं हैं। दुख का सत्य कभी बाधा होता है; कभी बाधा नहीं होता। दो सत्य बाधाओं के विषय हैं। दो सत्य बाधाओं के विषय नहीं हैं। कारण का सत्य बाधाओं से जुड़ा है। दो सत्य बाधाओं से नहीं जुड़े हैं। दुख का सत्य कभी बाधाओं से जुड़ा होता है; कभी बाधाओं से नहीं जुड़ा होता। [118] कारण का सत्य बाधा भी है और बाधाओं का विषय भी। दो सत्यों को बाधाएँ भी और बाधाओं के विषय भी या बाधाओं के विषय तो हैं लेकिन बाधा नहीं हैं, ऐसा नहीं कहा जाना चाहिए। दुख का सत्य कभी बाधा भी है और बाधाओं का विषय भी; कभी बाधाओं का विषय तो है लेकिन बाधा नहीं है। कारण का सत्य अवरोधों से भी जुड़ा हुआ है। दो सत्यों को यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वे अवरोधों से भी जुड़े हुए हैं या अवरोधों से जुड़े हुए हैं लेकिन अवरोध नहीं हैं। दुख का सत्य कभी अवरोधों से भी जुड़ा हुआ होता है; कभी अवरोधों से जुड़ा होता है लेकिन अवरोध नहीं होता; कभी अवरोधों से भी जुड़ा हुआ होता है या अवरोधों से जुड़ा होता है लेकिन अवरोध नहीं होता, ऐसा नहीं कहा जाना चाहिए। दो सत्य अवरोधों से जुड़े नहीं होते, अवरोधों के विषय नहीं होते। कारण के सत्य को यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वह अवरोधों से जुड़ा नहीं है, अवरोधों का विषय है।

154

जो अवरोधों से जुड़ा हो या न जुड़ा हो, वह अवरोधों का विषय नहीं है। दुख का सत्य कभी-कभी अवरोधों से जुड़ा न होकर अवरोधों का विषय होता है; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि अवरोधों से जुड़ा न होकर अवरोधों का विषय है (या अवरोधों से जुड़ा न होकर अवरोधों का विषय नहीं है)।* (8)

P = बाधाओं के संबंध में पूर्ण।

कुछ ग्रंथों में यह कोष्ठक में दिया गया वाक्यांश शामिल नहीं होता है।

तीन सत्य विकृति नहीं हैं। दुख का सत्य कभी विकृति होता है, कभी विकृति नहीं होता। दो सत्य विकृतियों के विषय होते हैं। दो सत्य विकृतियों के विषय नहीं होते। दो सत्य विकृतियों से संबंधित नहीं होते। कारण का सत्य कभी विकृतियों से संबंधित होता है, कभी विकृति से संबंधित नहीं होता। दुख का सत्य कभी विकृतियों से संबंधित होता है, कभी विकृति से संबंधित नहीं होता; कभी विकृतियों से संबंधित या कभी नहीं कहा जा सकता। कारण के सत्य को विकृति और विकृतियों का विषय नहीं कहा जा सकता; यह विकृतियों का विषय तो है, पर विकृति नहीं है। दो सत्यों को विकृति और विकृतियों का विषय या विकृतियों का विषय तो नहीं कहा जा सकता, पर वे विकृतियाँ नहीं हैं। दुख का सत्य कभी विकृति और विकृतियों का विषय होता है, कभी विकृतियों का विषय तो होता है, पर विकृति नहीं है। दो सत्य विकृतियों से संबद्ध नहीं हैं, विकृतियों के विषय नहीं हैं। दो सत्य कभी-कभी विकृतियों से संबद्ध नहीं होते, विकृतियों के विषय होते हैं; कभी-कभी ऐसा नहीं कहा जाना चाहिए कि वे विकृतियों से संबद्ध नहीं हैं, विकृतियों के विषय हैं (या विकृतियों से संबद्ध नहीं हैं, विकृतियों के विषय नहीं हैं)।* (9)

कुछ ग्रंथों में यह कोष्ठक में दिया गया वाक्यांश शामिल नहीं होता है।

दो सत्यों के कर्म होते हैं। निःसंयम सत्य का कोई कर्म नहीं होता। दुख सत्य का कभी कर्म होता है, कभी नहीं होता। तीन सत्य चेतना नहीं हैं। दुख सत्य कभी चेतना होता है, कभी नहीं होता। दो सत्य मानसिक सहवर्ती हैं। निःसंयम सत्य मानसिक सहवर्ती नहीं है। दुख सत्य कभी मानसिक सहवर्ती होता है, कभी नहीं होता। दो सत्य [119] हैं

चेतना से संबद्ध। समाप्ति का सत्य चेतना से संबद्ध नहीं है। दुख का सत्य कभी-कभी चेतना से संबद्ध होता है; कभी-कभी चेतना से संबद्ध नहीं होता; कभी-कभी यह कहना उचित नहीं होगा कि यह चेतना से संबद्ध है या नहीं। दो सत्य चेतना से जुड़े होते हैं। समाप्ति का सत्य चेतना से संबद्ध नहीं है। दुख का सत्य कभी-कभी चेतना से संबद्ध होता है; कभी-कभी चेतना से संबद्ध नहीं होता; कभी-कभी यह कहना उचित नहीं होगा कि यह चेतना से संबद्ध है या नहीं। दो सत्य चेतना द्वारा उत्पन्न होते हैं। समाप्ति का सत्य चेतना द्वारा उत्पन्न नहीं होता है। दुख का सत्य कभी-कभी चेतना द्वारा उत्पन्न होता है; कभी-कभी चेतना द्वारा उत्पन्न नहीं होता है। दो सत्य चेतना के साथ सह-अस्तित्व में होते हैं। समाप्ति का सत्य चेतना के साथ सह-अस्तित्व में नहीं होता है। दुख का सत्य कभी-कभी चेतना के साथ सह-अस्तित्व में होता है; कभी-कभी चेतना के साथ सह-अस्तित्व में नहीं होता है। दो सत्य चेतना के साथ होते हैं। समाप्ति का सत्य चेतना के साथ नहीं होता है। दुख का सत्य कभी-कभी चेतना के साथ होता है; कभी-कभी चेतना के साथ नहीं होता। दो सत्य चेतना से जुड़े हुए हैं, चेतना द्वारा उत्पन्न होते हैं। समाप्ति का सत्य चेतना से जुड़ा हुआ नहीं है, चेतना द्वारा उत्पन्न नहीं होता। दुख का सत्य कभी-कभी चेतना से जुड़ा हुआ होता है, चेतना द्वारा उत्पन्न होता है; कभी-कभी चेतना से जुड़ा हुआ नहीं होता, चेतना द्वारा उत्पन्न नहीं होता। दो सत्य चेतना से जुड़े हुए हैं, चेतना द्वारा उत्पन्न होते हैं और चेतना के साथ सह-अस्तित्व में हैं। समाप्ति का सत्य चेतना से जुड़ा हुआ नहीं है, चेतना द्वारा उत्पन्न नहीं होता और चेतना के साथ सह-अस्तित्व में नहीं होता। दुख का सत्य कभी-कभी चेतना से जुड़ा हुआ होता है, चेतना द्वारा उत्पन्न होता है और चेतना के साथ सह-अस्तित्व में होता है; कभी-कभी चेतना से जुड़ा हुआ नहीं होता, चेतना द्वारा उत्पन्न नहीं होता और चेतना के साथ सह-अस्तित्व में नहीं होता। दो सत्य चेतना से जुड़े हुए हैं, चेतना द्वारा उत्पन्न होते हैं और चेतना के साथ होते हैं। समाप्ति का सत्य चेतना से जुड़ा हुआ नहीं है, चेतना द्वारा उत्पन्न नहीं होता और चेतना के साथ नहीं होता। दुख का सत्य कभी-कभी चेतना से जुड़ा हुआ होता है, चेतना द्वारा उत्पन्न होता है और चेतना के साथ होता है; कभी-कभी चेतना से जुड़ा हुआ नहीं होता, चेतना द्वारा उत्पन्न नहीं होता और चेतना के साथ नहीं होता। तीन सत्य बाह्य हैं। दुःख का सत्य कभी आंतरिक होता है, कभी बाह्य। (10)

तीन सत्य प्राप्त नहीं होते। दुख का सत्य कभी प्राप्त होता है, कभी नहीं। तीन सत्य (लालसा और भ्रामक दृष्टि से) बोधित नहीं होते। दुख का सत्य कभी बोधित होता है;
8 *

156

विश्लेषण की पुस्तक

कभी-कभी समझ में नहीं आता। कारण का सत्य आसक्ति है। दो सत्य आसक्ति नहीं हैं। दुख का सत्य कभी-कभी आसक्ति होता है; कभी-कभी आसक्ति नहीं होता। दो सत्य आसक्ति के विषय हैं। दो सत्य आसक्ति के विषय नहीं हैं। दो सत्य आसक्ति से संबद्ध नहीं हैं। दो सत्य कभी-कभी आसक्ति से संबद्ध होते हैं; कभी-कभी आसक्ति से संबद्ध नहीं होते। कारण का सत्य आसक्ति भी है और आसक्ति का विषय भी। दो सत्यों को यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वे आसक्ति भी हैं और आसक्ति के विषय भी, या तो आसक्ति के विषय हैं लेकिन आसक्ति नहीं हैं। दुख का सत्य कभी-कभी आसक्ति भी है और आसक्ति का विषय भी; कभी-कभी आसक्ति का विषय होता है लेकिन आसक्ति नहीं होता। कारण का सत्य कभी-कभी आसक्ति भी है और आसक्ति से संबद्ध भी; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि आसक्ति भी आसक्तियों से जुड़ी होती है (या आसक्तियों से जुड़ी होती है लेकिन आसक्ति नहीं होती)।* दो सत्यों को यह नहीं कहा जाना चाहिए कि आसक्ति भी आसक्तियों से जुड़ी होती है या आसक्तियों से जुड़ी होती है लेकिन आसक्ति नहीं होती। दुख का सत्य कभी-कभी आसक्ति भी आसक्तियों से जुड़ा होता है; कभी-कभी आसक्तियों से जुड़ा होता है लेकिन आसक्ति नहीं होता; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि आसक्ति भी आसक्तियों से जुड़ी होती है या आसक्तियों से जुड़ी होती है लेकिन आसक्ति नहीं होती। दो सत्य आसक्तियों से जुड़े नहीं होते, आसक्तियों के विषय नहीं होते। दो सत्य कभी-कभी आसक्तियों से जुड़े नहीं होते, आसक्तियों के विषय होते हैं; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि आसक्तियों से जुड़े नहीं होते, आसक्तियों के विषय होते हैं (या आसक्तियों से जुड़े नहीं होते, आसक्तियों के विषय नहीं होते)।* (11)
कुछ ग्रंथों में कोष्ठक में दिए गए वाक्यांश शामिल नहीं होते हैं।
कारण का सत्य भ्रष्टाचार है। दो सत्य भ्रष्टाचार नहीं हैं। दुख का सत्य कभी-कभी भ्रष्टाचार होता है; कभी-कभी भ्रष्टाचार नहीं होता। दो सत्य भ्रष्टाचार के विषय हैं। दो सत्य भ्रष्टाचार के विषय नहीं हैं। कारण का सत्य भ्रष्ट है। दो सत्य भ्रष्ट नहीं हैं। दुख का सत्य कभी-कभी भ्रष्ट होता है; कभी-कभी भ्रष्टाचार नहीं होता। कारण का सत्य भ्रष्टाचार से जुड़ा है। दो सत्य भ्रष्टाचार से जुड़े नहीं हैं। दुख का सत्य कभी-कभी भ्रष्टाचार से जुड़ा होता है; कभी-कभी भ्रष्टाचार से जुड़ा नहीं होता। कारण का सत्य भ्रष्टाचार भी है और भ्रष्टाचार का विषय भी।

सत्य का विश्लेषण

157

दो सत्यों को एक ही नहीं कहा जाना चाहिए: या तो भ्रष्टाचार भी भ्रष्टाचार का विषय है, या भ्रष्टाचार का विषय तो है, लेकिन स्वयं भ्रष्टाचार नहीं है। दुख का सत्य कभी-कभी भ्रष्टाचार भी होता है, और भ्रष्टाचार का विषय भी; कभी-कभी भ्रष्टाचार का विषय तो होता है, लेकिन स्वयं भ्रष्टाचार नहीं होता। कारण का सत्य भी भ्रष्टाचार है, और भ्रष्ट है। दो सत्यों को एक ही नहीं कहा जाना चाहिए: या तो भ्रष्टाचार भी भ्रष्ट है, या भ्रष्ट तो है, लेकिन स्वयं भ्रष्टाचार नहीं है। दुख का सत्य कभी-कभी भ्रष्टाचार भी भ्रष्ट होता है, कभी-कभी भ्रष्ट तो होता है, लेकिन स्वयं भ्रष्टाचार नहीं होता; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि भ्रष्टाचार भी भ्रष्ट है, या भ्रष्ट तो है, लेकिन स्वयं भ्रष्टाचार नहीं है। कारण का सत्य भी भ्रष्टाचार है, और भ्रष्टाचार से जुड़ा हुआ है। दो सत्यों को एक ही नहीं कहा जाना चाहिए: या तो भ्रष्टाचार भी भ्रष्टाचार से जुड़ा हुआ है, या भ्रष्टाचार से जुड़ा हुआ है, लेकिन स्वयं भ्रष्टाचार नहीं है। दुख का सत्य कभी-कभी भ्रष्टाचार भी भ्रष्टाचार से जुड़ा हुआ होता है, कभी-कभी भ्रष्टाचार से जुड़ा हुआ होता है, लेकिन स्वयं भ्रष्टाचार नहीं होता; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि भ्रष्टाचार भी भ्रष्टाचार से जुड़ा हुआ है, या भ्रष्टाचार से जुड़ा हुआ है, लेकिन स्वयं भ्रष्टाचार नहीं है। दो सत्य भ्रष्टाचारों से संबद्ध नहीं हैं, भ्रष्टाचारों के विषय नहीं हैं। कारण के सत्य को भ्रष्टाचारों से संबद्ध न होने के कारण भ्रष्टाचारों का विषय या भ्रष्टाचारों से संबद्ध न होने के कारण भ्रष्टाचारों का विषय नहीं कहा जाना चाहिए। पीड़ा का सत्य कभी-कभी भ्रष्टाचारों से

संबद्ध न होने के कारण भ्रष्टाचारों का विषय होता है; कभी-कभी भ्रष्टाचारों से संबद्ध न होने के कारण भ्रष्टाचारों का विषय नहीं कहा जाना चाहिए (या भ्रष्टाचारों से संबद्ध न होने के कारण भ्रष्टाचारों का विषय नहीं होता)।* (12) [121]
कुछ ग्रंथों में यह कोष्ठक में दिया गया वाक्यांश शामिल नहीं होता है।
दो सत्यों को प्रथम मार्ग से नहीं छोड़ा जाना चाहिए। दो सत्यों को कभी-कभी प्रथम मार्ग से छोड़ना पड़ता है; कभी-कभी नहीं छोड़ा जाता। दो सत्यों को बाद के मार्गों से नहीं छोड़ा जाना चाहिए। दो सत्यों को कभी-कभी बाद के मार्गों से छोड़ना पड़ता है; कभी-कभी नहीं छोड़ा जाता। दो सत्यों की कोई जड़ नहीं है जिसे प्रथम मार्ग से छोड़ा जा सके। दो सत्यों की कभी-कभी जड़ होती है जिसे प्रथम मार्ग से छोड़ा जा सके; कभी-कभी नहीं होती है जिसे पहले मार्ग से छोड़ा जा सके। दो सत्यों की कोई जड़ नहीं है जिसे बाद के मार्गों से छोड़ा जा सके। दो सत्यों की कभी-कभी जड़ होती है जिसे बाद के मार्गों से छोड़ा जा सके; कभी-कभी नहीं होती है जिसे बाद के मार्गों से छोड़ा जा सके। सत्य का

158

विश्लेषण की पुस्तक

कारण के साथ प्रारंभिक अभ्यास होता है। समाप्ति का सत्य प्रारंभिक अभ्यास के बिना होता है। दो सत्य कभी-कभी प्रारंभिक अभ्यास के साथ होते हैं; कभी-कभी प्रारंभिक अभ्यास के बिना होते हैं। कारण का सत्य निरंतर अभ्यास के साथ होता है। समाप्ति का सत्य निरंतर अभ्यास के बिना होता है। दो सत्य कभी-कभी निरंतर अभ्यास के साथ होते हैं; कभी-कभी निरंतर अभ्यास के बिना होते हैं। समाप्ति का सत्य उत्साहहीन होता है। तीन सत्य कभी-कभी उत्साह के साथ होते हैं; कभी-कभी उत्साहहीन होते हैं। समाप्ति का सत्य उत्साहहीन होता है। तीन सत्य कभी-कभी उत्साह के साथ होते हैं; कभी-कभी उत्साहहीन होते हैं। समाप्ति का सत्य आनंदहीन होता है। तीन सत्य कभी-कभी आनंद के साथ होते हैं; कभी-कभी आनंदहीन होते हैं। समाप्ति का सत्य उदासीनता के साथ नहीं होता है। तीन सत्य कभी-कभी उदासीनता के साथ होते हैं; कभी-कभी उदासीनता नहीं होती है।
कारण का सत्य इच्छा के तल का लक्षण है। दो सत्य इच्छा के तल के लक्षण नहीं हैं। दुख का सत्य कभी-कभी इच्छा के तल का लक्षण होता है; कभी-कभी नहीं होता। तीन सत्य रूप के तल के लक्षण नहीं हैं। दुख का सत्य कभी-कभी रूप के तल का लक्षण होता है; कभी-कभी नहीं होता। तीन सत्य निराकार तल के लक्षण नहीं हैं। दुख का सत्य कभी-कभी निराकार तल का लक्षण होता है; कभी-कभी नहीं होता। दो सत्य समाहित हैं (अर्थात सांसारिक हैं)। दो सत्य समाहित नहीं हैं (अर्थात अलौकिक हैं)। मार्ग का सत्य मुक्ति की ओर प्रवृत्त होता है। तीन सत्य मुक्ति की ओर प्रवृत्त नहीं होते। मार्ग का सत्य स्थिर (परिणामी समय) का होता है। समाप्ति का सत्य स्थिर (परिणामी समय) का नहीं होता। दो सत्य कभी-कभी स्थिर (परिणामी समय) के होते हैं; कभी-कभी स्थिर (परिणामी समय) के नहीं होते। दो सत्य पार किए जा सकते हैं। दो सत्य पार नहीं किए जा सकते। कारण की सच्चाई विलाप का कारण है। दो सत्य विलाप का कारण नहीं हैं। पीड़ा की सच्चाई कभी विलाप का कारण होती है; कभी विलाप का कारण नहीं होती। (13)
(यह खंड यहीं समाप्त होता है) पूछताछ
सत्यों का विश्लेषण समाप्त हुआ।
टिपिटक >> अभिधम्म पिटक >> विभंग >> अध्याय 5 पाठ - इंद्रिय
विभंग-विश्लेषण की पुस्तक-गोतम बुद्ध द्वारा बोली गई
पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण
पाली से यू. थिटिला, रंगून, बर्मा, 1969 द्वारा अनुवादित

ओसीआर संस्करण, प्रूफरीडिंग नहीं की गई है, इसमें त्रुटियां हैं
(पाठकों को दिए गए .pdf संस्करण की सहायता से पाठ को सही करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है)

अध्याय 5. नियंत्रण शक्तियों (इंद्रिय) का विश्लेषण

1. अभिधम्म के अनुसार विश्लेषण

219. [122] बाईस नियंत्रण शक्तियाँ इस प्रकार हैं: आँख की नियंत्रण शक्ति, कान की नियंत्रण शक्ति, नाक की नियंत्रण शक्ति, जीभ की नियंत्रण शक्ति, शरीर की नियंत्रण शक्ति, मन की नियंत्रण शक्ति, स्त्रीत्व की नियंत्रण शक्ति, पुरुषत्व की नियंत्रण शक्ति, प्राण शक्ति, सुख (शारीरिक) की नियंत्रण शक्ति, दर्द (शारीरिक) की नियंत्रण शक्ति, मानसिक सुख की नियंत्रण शक्ति, मानसिक दर्द की नियंत्रण शक्ति, उदासीनता की नियंत्रण शक्ति, विश्वास की नियंत्रण शक्ति, ऊर्जा की नियंत्रण शक्ति, जागरूकता की नियंत्रण शक्ति, एकाग्रता की नियंत्रण शक्ति, ज्ञान की नियंत्रण शक्ति, 'मैं अज्ञात को जान रहा हूँ' की नियंत्रण शक्ति, और पूर्ण रूप से जानने वाले की नियंत्रण शक्ति। 3

1. इसके बाद इसे 'प्रारंभिक ज्ञानोदय' कहा जाएगा, अर्थात् धारा-प्राप्ति का मार्ग।

2 इसके बाद इसे 'मध्यवर्ती ज्ञानोदय' कहा जाएगा, अर्थात् धारा-प्राप्ति के फल से लेकर अरहंतत्व के मार्ग तक।

3. इसके बाद इसे 'अंतिम ज्ञानोदय' कहा जाएगा, अर्थात् अरहंतत्व का फल।

220. इसमें आँख की नियंत्रक शक्ति क्या है? वह आँख जो चार महान तत्वों से उत्पन्न होकर संवेदी सतह है, : P : यह एक खाली गाँव है। इसे आँख की नियंत्रक शक्ति कहते हैं। (1)

P = अनुच्छेद 156 देखें।

उसमें कान की नियंत्रक शक्ति क्या है? : पृष्ठ 1 : नाक की नियंत्रक शक्ति क्या है? : पृष्ठ 1 : जीभ की नियंत्रक शक्ति क्या है? : पृष्ठ 1 : शरीर की नियंत्रक शक्ति क्या है? वह शरीर जो चार महान तत्वों से उत्पन्न होकर संवेदी सतह है, : पृष्ठ 2 : यह एक खाली गाँव है। इसे शरीर की नियंत्रक शक्ति कहा जाता है। (5)

P* = उचित रूप से भरें। P 2 = पैराग्राफ 160 देखें।

उसमें मन की नियंत्रक शक्ति क्या है?

मन की एकल विभाजन विधि: संपर्क से संबंधित है। मन की नियंत्रक विधि: मूल तत्व से संबंधित है; मूल तत्व से संबंधित नहीं है। मन की त्रिविभाजन विधि: अच्छी है; बुरी है; न अच्छी है न बुरी है। मन की चौविभाजन विधि: इच्छा तल की विशेषता है; रूप तल की विशेषता है; निराकार तल की विशेषता है; इसमें शामिल नहीं है (अर्थात् अलौकिक है)। मन की पंचविभाजन विधि: सुख (शारीरिक) की नियंत्रक विधि से संबंधित है; दुख (शारीरिक) की नियंत्रक विधि से संबंधित है; मानसिक सुख की नियंत्रक विधि से संबंधित है; मानसिक दुख की नियंत्रक विधि से संबंधित है; उदासीनता की नियंत्रक विधि से संबंधित है। मन की छह विभाजन विधि: नेत्र चेतना, मन चेतना। इस प्रकार मन की छह विभाजन विधि द्वारा नियंत्रित विधि है।

P = मध्यवर्ती इंद्रियां।

मन की नियंत्रण क्षमता को सात भागों में विभाजित किया गया है: नेत्र चेतना; शरीर चेतना; मन तत्व; मन-चेतना तत्व। इस प्रकार मन की नियंत्रण क्षमता को सात भागों में विभाजित किया गया है।

P = मध्यवर्ती इंद्रियां।

मन की नियंत्रक शक्ति का आठ भागों में विभाजन इस प्रकार है: नेत्र चेतना; सुख और दुख से ग्रस्त देह चेतना; मन तत्व; मन-चेतना तत्व। इस प्रकार मन की नियंत्रक शक्ति का आठ भागों में विभाजन होता है।

P = मध्यवर्ती इंद्रियां।

मन की नियंत्रण क्षमता को नौ भागों में विभाजित किया गया है: नेत्र चेतना; शरीर चेतना; मन तत्व; मन-चेतना-तत्व जो अच्छा है, जो बुरा है, जो न अच्छा है न बुरा। इस प्रकार मन की नियंत्रण क्षमता को नौ भागों में विभाजित किया गया है।

P = मध्यवर्ती इंद्रियां।

मन की नियंत्रक शक्ति को दस भागों में विभाजित किया गया है: नेत्र चेतना; : पृष्ठ 1 : सुख और दुख से युक्त देह चेतना; मन तत्व; मन-चेतना-तत्व जो अच्छा है, जो बुरा है, जो न अच्छा है न बुरा। इस प्रकार मन की नियंत्रक शक्ति का निर्धारण होता है।

नियंत्रणकारी संकायों का विश्लेषण

161

दस गुना विभाजन। :P 2 : इस प्रकार मन की नियंत्रक क्षमता को अनेक भागों में विभाजित किया जाता है। इसे मन की नियंत्रक क्षमता कहा जाता है। (6)

पृष्ठ 1 = मध्यवर्ती अर्थ। पृष्ठ 2 = अनुच्छेद 122-149 देखें।

(7) स्त्रीत्व का नियंत्रक बल क्या है? स्त्री में जो स्त्री रूप, स्त्री लक्षण, स्त्री व्यवहार, स्त्री आचरण, स्त्रीत्व, स्त्रीत्व है। इसे स्त्रीत्व का नियंत्रक बल कहा जाता है। (7) पुरुषत्व का नियंत्रक बल क्या है? पुरुष में जो पुरुष रूप, पुरुष लक्षण, पुरुष व्यवहार, [123] पुरुष आचरण, पुरुषत्व, पुरुषत्व है। इसे पुरुषत्व का नियंत्रक बल कहा जाता है। (8) प्राणिक सिद्धांत का नियंत्रक बल क्या है? प्राणिक सिद्धांत का नियंत्रक बल दो भागों में विभाजित है: भौतिक प्राणिक सिद्धांत का नियंत्रक बल; अभौतिक प्राणिक सिद्धांत का नियंत्रक बल।

इसमें भौतिक प्राणिक शक्ति का नियंत्रक कौन है? इन भौतिक वस्तुओं में जो जीवन, स्थिरता, निरंतरता, पालन, प्रगति, निरंतरता, संरक्षण, प्राणिक शक्ति और प्राणिक शक्ति का नियंत्रक है, वही भौतिक प्राणिक शक्ति का नियंत्रक कहलाता है।

उसमें, अभौतिक प्राणिक सिद्धांत की नियंत्रक शक्ति क्या है? इन अभौतिक अवस्थाओं में जो जीवन, स्थिरता, निरंतरता, पालन, प्रगति, निरंतरता, संरक्षण, प्राणिक सिद्धांत, प्राणिक सिद्धांत की नियंत्रक शक्ति है, उसे अभौतिक प्राणिक सिद्धांत की नियंत्रक शक्ति कहा जाता है। इसे प्राणिक सिद्धांत की नियंत्रक शक्ति कहा जाता है। (9)

इसमें आनंद का नियंत्रक कौन सा है? वह जो शारीरिक सहजता है; शारीरिक सुख; शारीरिक संपर्क से उत्पन्न सुखदायक अनुभव; शारीरिक संपर्क से उत्पन्न सुखदायक अनुभूति। इसे ही आनंद का नियंत्रक कहा जाता है। (10)

इसमें दर्द को नियंत्रित करने वाली शक्ति क्या है? वह जो शारीरिक बेचैनी है; शारीरिक दर्द है; शारीरिक संपर्क से उत्पन्न बेचैन पीड़ादायक अनुभव है; शारीरिक संपर्क से उत्पन्न बेचैन पीड़ादायक अनुभूति है। इसे दर्द को नियंत्रित करने वाली शक्ति कहा जाता है। (11)

उसमें मानसिक सुख का नियंत्रक कौन सा है? वह जो मानसिक सहजता है; मानसिक सुख; मानसिक संपर्क से उत्पन्न सुखदायक अनुभव; मानसिक संपर्क से उत्पन्न सुखदायक अनुभूति। इसे ही मानसिक सुख का नियंत्रक कहा जाता है। (12)

162

विश्लेषण की पुस्तक

इसमें मानसिक पीड़ा को नियंत्रित करने वाली शक्ति क्या है? वह जो मानसिक बेचैनी है; मानसिक पीड़ा; मानसिक संपर्क से उत्पन्न बेचैन पीड़ादायक अनुभव; मानसिक संपर्क से उत्पन्न बेचैन पीड़ादायक भावना। इसे मानसिक पीड़ा को नियंत्रित करने वाली शक्ति कहा जाता है। (13)

इसमें उदासीनता की नियंत्रक शक्ति क्या है? वह जो न तो मानसिक सुख है और न ही बेचैनी; न ही मानसिक संपर्क से उत्पन्न कोई पीड़ादायक और न ही सुखद अनुभूति; न ही मानसिक संपर्क से उत्पन्न कोई पीड़ादायक और न ही सुखद भावना। इसे उदासीनता की नियंत्रक शक्ति कहा जाता है। (14)

उसमें विश्वास की नियंत्रक शक्ति क्या है? वह जो विश्वास है, आत्मविश्वास होना, भरोसा, अंतर्निहित आस्था, विश्वास, विश्वास की नियंत्रक शक्ति, विश्वास की सामर्थ्य। इसे ही विश्वास की नियंत्रक शक्ति कहा जाता है। (15)

उसमें ऊर्जा की नियंत्रक शक्ति क्या है? वह जो मानसिक ऊर्जा, परिश्रम, प्रयास, आकांक्षा, मेहनत, उत्साह, दृढ़ता, शक्ति, स्थिरता, अटूट प्रयास, इच्छा का त्याग न करना, कार्य का त्याग न करना, कार्य पर दृढ़ पकड़, [124] ऊर्जा, ऊर्जा की नियंत्रक शक्ति, ऊर्जा की शक्ति को जागृत करती है। इसे ऊर्जा की नियंत्रक शक्ति कहा जाता है। (16)

इसमें, ध्यान की नियंत्रक शक्ति क्या है? वह जो ध्यान है, निरंतर ध्यान, स्मरण, सजगता, याद रखने की क्रिया, ध्यान में रखना, सतहीपन से परे होना, विस्मृति से दूर रहना, ध्यान, ध्यान की नियंत्रक शक्ति, ध्यान की सामर्थ्य, सही ध्यान। इसे ही ध्यान की नियंत्रक शक्ति कहा जाता है। (17)

इसमें एकाग्रता को नियंत्रित करने वाली शक्ति क्या है? वह जो स्थिरता, दृढ़ता, चेतना की स्थिरता है; ध्यान न भटकना, अविचलित रहना, मानसिक अविचलितता, शांति, एकाग्रता को नियंत्रित करने वाली शक्ति, एकाग्रता की क्षमता, सही एकाग्रता। इसे ही एकाग्रता को नियंत्रित करने वाली शक्ति कहते हैं।

(18)

उसमें बुद्धि की नियंत्रक शक्ति क्या है? वह जो बुद्धि, समझ, : P : सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण है। इसे ही बुद्धि की नियंत्रक शक्ति कहा जाता है। (19)

P = अनुच्छेद 525 देखें।

इसमें प्रारंभिक ज्ञानोदय को नियंत्रित करने वाली शक्ति कौन सी है?

जो उन अवस्थाओं की प्राप्ति के लिए आवश्यक है जो ज्ञात नहीं हैं, समझी नहीं जा सकती हैं, प्राप्त नहीं की जा सकती हैं, पहचानी नहीं जा सकती हैं, अनुभव नहीं की जा सकती हैं, वही ज्ञान, समझ, सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज है।

नियंत्रणकारी संकायों का विश्लेषण

163

सही दृष्टिकोण, सत्य की खोज-ज्ञान-कारक, पथ घटक, पथ में शामिल। इसे प्रारंभिक ज्ञान का नियंत्रक बल कहा जाता है। (20)

P = अनुच्छेद 525 देखें।

उसमें मध्यवर्ती ज्ञानोदय का नियंत्रक तत्व क्या है? वह तत्व जो ज्ञात, बोधित, प्राप्त, पहचाने और अनुभव किए गए उन अवस्थाओं की प्राप्ति के लिए ज्ञान, समझ, मंदता का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण, सत्य की खोज-ज्ञानोदय कारक, मार्ग का घटक, मार्ग में समाहित है। इसे मध्यवर्ती ज्ञानोदय का नियंत्रक तत्व कहा जाता है। (21)

पी — पैराग्राफ 525 देखें।

इसमें अंतिम ज्ञानोदय को नियंत्रित करने वाली शक्ति कौन सी है?

जो पूर्णतः ज्ञात, बोधित, प्राप्त, विवेचित और साकार अवस्थाओं की प्राप्ति के लिए आवश्यक है, वह है ज्ञान, समझ, मंदता का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण, सत्य की खोज-ज्ञानोदय कारक, मार्ग का घटक, मार्ग में समाहित। इसे ही अंतिम ज्ञानोदय का नियंत्रक तत्व कहा जाता है। (22)

P = अनुच्छेद 525 देखें।

(यहाँ समाप्त होता है) अभिधम्म के अनुसार विश्लेषण

2. पूछताछ

221. बाईस नियंत्रण शक्तियाँ हैं: आँख की नियंत्रण शक्ति, कान की नियंत्रण शक्ति, नाक की नियंत्रण शक्ति, जीभ की नियंत्रण शक्ति, शरीर की नियंत्रण शक्ति, मन की नियंत्रण शक्ति, स्त्रीत्व की नियंत्रण शक्ति, पुरुषत्व की नियंत्रण शक्ति, प्राणिक सिद्धांत की नियंत्रण शक्ति, सुख (शारीरिक) की नियंत्रण शक्ति, पीड़ा (शारीरिक) की नियंत्रण शक्ति, मानसिक सुख की नियंत्रण शक्ति, मानसिक पीड़ा की नियंत्रण शक्ति, उदासीनता की नियंत्रण शक्ति, आत्मविश्वास की नियंत्रण शक्ति, ऊर्जा की नियंत्रण शक्ति, जागरूकता की नियंत्रण शक्ति, एकाग्रता की नियंत्रण शक्ति, [125] ज्ञान की नियंत्रण शक्ति, प्रारंभिक ज्ञान की नियंत्रण शक्ति, मध्यवर्ती ज्ञान की नियंत्रण शक्ति, अंतिम ज्ञान की नियंत्रण शक्ति।

222. बाईस नियंत्रण शक्तियों में से कितनी शक्तियाँ अच्छी हैं?

164

विश्लेषण की पुस्तक

कितने बुरे हैं; कितने न अच्छे हैं न बुरे? : P : कितने शोक करने योग्य हैं; कितने शोक करने योग्य नहीं हैं?

P = शेष उपयुक्त त्रिक और युग्मक।

1. त्रिक

223. दस नियंत्रण शक्तियाँ न तो अच्छी हैं और न ही बुरी। मानसिक पीड़ा की नियंत्रण शक्ति बुरी है। प्रारंभिक ज्ञान की नियंत्रण शक्ति अच्छी है। चार नियंत्रण शक्तियाँ कभी अच्छी होती हैं; कभी-कभी न अच्छी होती हैं और न बुरी। छह नियंत्रण शक्तियाँ कभी अच्छी होती हैं; कभी बुरी होती हैं; कभी-कभी न अच्छी होती हैं और न बुरी।

बारह नियंत्रणकारी शक्तियों को न तो सुखद अनुभूति से, न ही पीड़ादायक अनुभूति से, और न ही न पीड़ादायक और न ही सुखद अनुभूति से संबंधित कहा जा सकता है। छह नियंत्रणकारी शक्तियां कभी-कभी सुखद अनुभूति से संबंधित होती हैं; कभी-कभी पीड़ादायक और न ही सुखद अनुभूति से संबंधित होती हैं। तीन नियंत्रणकारी शक्तियां कभी-कभी सुखद अनुभूति से संबंधित होती हैं; कभी-कभी पीड़ादायक अनुभूति से संबंधित होती हैं; और कभी-कभी पीड़ादायक और न ही सुखद अनुभूति से संबंधित होती हैं। प्राणिक सिद्धांत की नियंत्रणकारी शक्ति कभी-कभी सुखद अनुभूति से संबंधित होती है; कभी-कभी पीड़ादायक अनुभूति से संबंधित होती है; कभी-कभी पीड़ादायक और न ही सुखद अनुभूति से संबंधित होती है; कभी-कभी को न तो सुखद अनुभूति से, न पीड़ादायक अनुभूति से, और न ही पीड़ादायक और न ही सुखद अनुभूति से संबंधित कहा जा सकता है।

सात नियंत्रण शक्तियाँ न तो परिणाम उत्पन्न करती हैं और न ही परिणाम उत्पन्न करती हैं। तीन नियंत्रण शक्तियाँ परिणाम उत्पन्न करती हैं। दो नियंत्रण शक्तियाँ परिणाम उत्पन्न करती हैं। मध्यवर्ती ज्ञान की नियंत्रण शक्ति कभी परिणाम उत्पन्न करती है; कभी परिणाम उत्पन्न करती है। नौ नियंत्रण शक्तियाँ कभी परिणाम उत्पन्न करती हैं; कभी परिणाम उत्पन्न करती हैं; कभी-कभी न तो परिणाम उत्पन्न करती हैं और न ही परिणाम उत्पन्न करती हैं। नौ नियंत्रण शक्तियाँ (लालसा और भ्रामक दृष्टि से) बोधित होती हैं, आसक्ति का विषय होती हैं। मानसिक पीड़ा की नियंत्रण शक्ति बोधित नहीं होती, आसक्ति का विषय होती है। तीन नियंत्रण शक्तियाँ बोधित नहीं होतीं, आसक्ति का विषय नहीं होतीं। नौ नियंत्रण शक्तियाँ कभी बोधित होती हैं, आसक्ति का विषय होती हैं; कभी बोधित नहीं होतीं, आसक्ति का विषय होती हैं; कभी बोधित नहीं होतीं, आसक्ति का विषय नहीं होतीं।

नियंत्रणकारी संकायों का विश्लेषण

165

नौ नियंत्रणकारी शक्तियाँ भ्रष्ट नहीं हैं, वे भ्रष्टताओं के अधीन हैं। मानसिक पीड़ा की नियंत्रणकारी शक्ति भ्रष्ट है, वह भ्रष्टताओं का अधीन है। तीन नियंत्रणकारी शक्तियाँ भ्रष्ट नहीं हैं, वे भ्रष्टताओं के अधीन नहीं हैं। तीन नियंत्रणकारी शक्तियाँ कभी-कभी भ्रष्ट नहीं होतीं, भ्रष्टताओं का अधीन होती हैं; कभी-कभी भ्रष्ट नहीं होतीं, भ्रष्टताओं का अधीन नहीं होतीं। छह नियंत्रणकारी शक्तियाँ कभी-कभी भ्रष्ट होती हैं, भ्रष्टताओं का अधीन होती हैं; कभी-कभी भ्रष्ट नहीं होतीं, भ्रष्टताओं का अधीन होती हैं; कभी-कभी भ्रष्ट नहीं होतीं, भ्रष्टताओं का अधीन नहीं होतीं। नौ नियंत्रणकारी शक्तियाँ प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, निरंतर अनुप्रयोग के बिना हैं। मानसिक पीड़ा की नियंत्रणकारी शक्ति प्रारंभिक अनुप्रयोग के साथ, निरंतर अनुप्रयोग के साथ है। उदासीनता की नियंत्रणकारी शक्ति कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के साथ, निरंतर अनुप्रयोग के साथ होती है; कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, निरंतर अनुप्रयोग के बिना होती है। ग्यारह नियंत्रणकारी शक्तियाँ कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के साथ, निरंतर अनुप्रयोग के साथ होती हैं; कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, केवल निरंतर अनुप्रयोग के साथ होती हैं; कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, निरंतर अनुप्रयोग के बिना होती हैं।

ग्यारह नियंत्रणकारी शक्तियों को न तो उत्साह से युक्त, न ही आनंद से युक्त और न ही उदासीनता से युक्त कहा जा सकता है। मानसिक आनंद की नियंत्रणकारी शक्ति कभी उत्साह से युक्त होती है; कभी आनंद से युक्त नहीं होती; कभी उदासीनता से युक्त नहीं होती; [126] कभी-कभी को उत्साह से युक्त नहीं कहा जा सकता। छह नियंत्रणकारी शक्तियाँ कभी उत्साह से युक्त होती हैं; कभी आनंद से युक्त होती हैं; कभी उदासीनता से युक्त होती हैं। चार नियंत्रणकारी शक्तियाँ कभी उत्साह से युक्त होती हैं; कभी आनंद से युक्त होती हैं; कभी उदासीनता से युक्त होती हैं; कभी-कभी को न तो उत्साह से युक्त, न आनंद से युक्त और न ही उदासीनता से युक्त कहा जा सकता है।

पंद्रह नियंत्रक शक्तियों को न तो पहले मार्ग से और न ही बाद के मार्गों से छोड़ा जाना चाहिए। मेण्टल दर्द की नियंत्रक शक्ति को कभी-कभी पहले मार्ग से छोड़ा जाना चाहिए; कभी-कभी बाद के मार्गों से छोड़ा जाना चाहिए। छह नियंत्रक शक्तियों को कभी-कभी पहले मार्ग

से छोड़ा जाना चाहिए; कभी-कभी बाद के मार्गों से छोड़ा जाना चाहिए; कभी-कभी उन्हें न तो पहले मार्ग से और न ही बाद के मार्गों से छोड़ा जाना चाहिए। पंद्रह नियंत्रक शक्तियों का कोई मूल नहीं है जिसे छोड़ा जा सके।

166

विश्लेषण की पुस्तक

या तो पहले मार्ग से या बाद के मार्गों से। मानसिक पीड़ा को नियंत्रित करने वाली शक्ति कभी-कभी पहले मार्ग से त्याग दी जाती है; कभी-कभी बाद के मार्गों से त्याग दी जाती है। छह नियंत्रण शक्तियाँ कभी-कभी पहले मार्ग से त्याग दी जाती हैं; कभी-कभी बाद के मार्गों से त्याग दी जाती हैं; कभी-कभी न तो पहले मार्ग से और न ही बाद के मार्गों से त्याग दी जाती हैं।

दस नियंत्रक शक्तियाँ न तो संचयी हैं और न ही विक्षेपी (पुनर्जन्म और मृत्यु के निरंतर चक्र की)। मानसिक पीड़ा की नियंत्रक शक्ति संचयी है। प्रारंभिक ज्ञानोदय की नियंत्रक शक्ति विक्षेपी है। मध्यवर्ती ज्ञानोदय की नियंत्रक शक्ति कभी-कभी विक्षेपी होती है; कभी-कभी न तो संचयी होती है और न ही विक्षेपी। नौ नियंत्रक शक्तियाँ कभी-कभी संचयी होती हैं; कभी-कभी विक्षेपी होती हैं; कभी-कभी न तो संचयी होती हैं और न ही विक्षेपी। दस नियंत्रक शक्तियाँ न तो सात अलौकिक अवस्थाओं की हैं और न ही अंतिम अलौकिक अवस्था की। दो नियंत्रक शक्तियाँ सात अलौकिक अवस्थाओं की हैं। अंतिम ज्ञानोदय की नियंत्रक शक्ति अंतिम अलौकिक अवस्था की है। नौ नियंत्रक शक्तियाँ कभी-कभी सात अलौकिक अवस्थाओं की होती हैं; कभी-कभी अंतिम अलौकिक अवस्था की होती हैं; कभी-कभी न तो सात अलौकिक अवस्थाओं की होती हैं और न ही अंतिम अलौकिक अवस्था की।

दस नियंत्रण शक्तियाँ निम्न स्तर की हैं। तीन नियंत्रण शक्तियाँ असीम हैं। नौ नियंत्रण शक्तियाँ कभी निम्न स्तर की होती हैं; कभी उदात्त होती हैं; कभी असीम होती हैं। सात नियंत्रण शक्तियों का कोई लक्ष्य नहीं होता। दो नियंत्रण शक्तियों का निम्न स्तर का लक्ष्य होता है। तीन नियंत्रण शक्तियों का असीम स्तर का लक्ष्य होता है। मानसिक पीड़ा की नियंत्रण शक्ति का कभी निम्न स्तर का लक्ष्य होता है; कभी उदात्त लक्ष्य होता है; असीम लक्ष्य नहीं होता; कभी-कभी यह कहना उचित नहीं होगा कि इसका निम्न स्तर का या उदात्त लक्ष्य है। नौ नियंत्रण शक्तियों का कभी निम्न स्तर का लक्ष्य होता है; कभी उदात्त लक्ष्य होता है; कभी-कभी असीम लक्ष्य होता है; कभी-कभी यह कहना उचित नहीं होगा कि इसका निम्न स्तर का, उदात्त लक्ष्य है या असीम लक्ष्य है।

नौ नियंत्रण शक्तियाँ मध्यवर्ती हैं। मानसिक पीड़ा की नियंत्रण शक्ति निम्न स्तर की है। तीन नियंत्रण शक्तियाँ श्रेष्ठ हैं। तीन नियंत्रण शक्तियाँ कभी मध्यवर्ती होती हैं, कभी श्रेष्ठ होती हैं। छह नियंत्रण शक्तियाँ कभी निम्न होती हैं, कभी मध्यवर्ती होती हैं, कभी श्रेष्ठ होती हैं। दस नियंत्रण शक्तियों का कोई निश्चित (परिणाम समय) नहीं है। प्रारंभिक ज्ञानोदय की नियंत्रण शक्ति एक निश्चित (परिणाम समय) वाली सही (अवस्था) है।

नियंत्रणकारी संकायों का विश्लेषण

167

चार नियंत्रक शक्तियाँ कभी-कभी सही (परिणामी समय वाली) अवस्थाएँ होती हैं; कभी-कभी उनका कोई निश्चित (परिणामी समय) नहीं होता। मानसिक पीड़ा की नियंत्रक शक्ति कभी-कभी गलत (परिणामी समय वाली) अवस्था होती है; [127] कभी-कभी उसका कोई निश्चित (परिणामी समय) नहीं होता। छह नियंत्रक शक्तियाँ कभी-कभी गलत (परिणामी समय वाली) अवस्थाएँ होती हैं; कभी-कभी सही (परिणामी समय वाली) अवस्थाएँ होती हैं; कभी-कभी उनका कोई निश्चित (परिणामी समय) नहीं होता। सात नियंत्रक शक्तियों का कोई लक्ष्य नहीं होता। चार नियंत्रक शक्तियों के बारे में यह नहीं कहा जा सकता कि उनका लक्ष्य, कारण या प्रभावक कारक पथ है। प्रारंभिक ज्ञानोदय की नियंत्रक शक्ति का लक्ष्य पथ नहीं होता; (कभी-कभी)* इसका कारण पथ होता है; कभी-कभी इसका प्रभावक कारक पथ होता है; कभी-कभी यह नहीं कहा जा सकता कि इसका कारण या प्रभावक कारक पथ है। मध्यवर्ती ज्ञानोदय की नियंत्रक शक्ति का लक्ष्य पथ नहीं होता; कभी-कभी इसका कारण पथ होता है; कभी-कभी पथ प्रमुख कारक होता है; कभी-कभी यह नहीं कहा जा सकता कि पथ इसका कारण है या प्रमुख कारक है। नौ नियंत्रक शक्तियाँ कभी-कभी पथ को अपना लक्ष्य मानती हैं; कभी-

कभी पथ को अपना कारण मानती हैं; कभी-कभी पथ को अपना प्रमुख कारक मानती हैं; कभी-कभी यह नहीं कहा जा सकता कि पथ न तो लक्ष्य है, न ही कारण है और न ही प्रमुख कारक है।

कुछ ग्रंथों में ये कोष्ठक में दिए गए शब्द शामिल नहीं होते हैं।

दस नियंत्रण शक्तियाँ कभी जागृत होती हैं; कभी जागृत होना अनिवार्य होता है; इन्हें निष्क्रिय नहीं कहा जाना चाहिए। दो नियंत्रण शक्तियाँ कभी जागृत होती हैं; कभी जागृत नहीं होतीं; इन्हें जागृत होना अनिवार्य नहीं कहा जाना चाहिए। दस नियंत्रण शक्तियाँ कभी जागृत होती हैं; कभी जागृत नहीं होतीं; कभी जागृत होना अनिवार्य होता है। (सभी नियंत्रण शक्तियाँ) कभी भूतकाल होती हैं; कभी भविष्यकाल होती हैं; कभी वर्तमानकाल होती हैं। सात नियंत्रण शक्तियों का कोई कर्ता नहीं होता। दो नियंत्रण शक्तियों का वर्तमान कर्ता होता है। तीन नियंत्रण शक्तियों का भूतकाल, भविष्यकाल या वर्तमान कर्ता नहीं कहा जाना चाहिए। दस नियंत्रण शक्तियों का कभी भूतकाल, कभी भविष्यकाल और कभी वर्तमान कर्ता होता है; कभी भूतकाल, भविष्यकाल या वर्तमान कर्ता नहीं कहा जाना चाहिए। (सभी नियंत्रण शक्तियाँ) कभी आंतरिक होती हैं; कभी बाह्य होती हैं; कभी आंतरिक और बाह्य दोनों होती हैं। सात नियंत्रण शक्तियों का कोई कर्ता नहीं होता। तीन नियंत्रण शक्तियों का बाह्य कर्ता होता है।

चार नियंत्रणकारी शक्तियों के कभी आंतरिक लक्ष्य होते हैं; कभी बाह्य लक्ष्य होते हैं; कभी आंतरिक और बाह्य दोनों लक्ष्य होते हैं। आठ नियंत्रणकारी शक्तियों के कभी आंतरिक लक्ष्य होते हैं; कभी बाह्य लक्ष्य होते हैं; कभी आंतरिक और बाह्य दोनों लक्ष्य होते हैं; कभी-कभी यह कहना उचित नहीं होगा कि उनके आंतरिक, बाह्य या दोनों लक्ष्य होते हैं। पाँच नियंत्रणकारी शक्तियाँ अदृश्य होती हैं, वे प्रभावकारी होती हैं। सत्रह नियंत्रणकारी शक्तियाँ अदृश्य होती हैं, वे प्रभावकारी नहीं होती हैं।

2. दोहे

224. चार नियंत्रक शक्तियाँ मूल हैं। अठारह नियंत्रक शक्तियाँ मूल नहीं हैं। सात नियंत्रक शक्तियाँ मूलों के साथ होती हैं। नौ नियंत्रक शक्तियाँ मूलों के साथ नहीं होती हैं। छह नियंत्रक शक्तियाँ कभी-कभी मूलों के साथ होती हैं; कभी-कभी मूलों के साथ नहीं होती हैं। सात नियंत्रक शक्तियाँ मूलों से संबद्ध हैं। नौ नियंत्रक शक्तियाँ मूलों से संबद्ध नहीं हैं। छह नियंत्रक शक्तियाँ कभी-कभी मूलों से संबद्ध होती हैं; कभी-कभी मूलों से संबद्ध नहीं होती हैं। चार नियंत्रक शक्तियाँ मूल भी हैं और मूलों के साथ भी होती हैं। नौ नियंत्रक शक्तियों को मूल भी नहीं कहा जाना चाहिए, न ही यह कहा जाना चाहिए कि वे मूलों के साथ भी होती हैं या मूलों के साथ होती हैं लेकिन मूल नहीं हैं। तीन नियंत्रक शक्तियों को मूल भी नहीं कहा जाना चाहिए, न ही यह कहा जाना चाहिए कि वे मूलों के साथ भी होती हैं; (वे) मूलों के साथ होती हैं लेकिन मूल नहीं हैं। छह नियंत्रक शक्तियों को मूल भी नहीं कहा जाना चाहिए, न ही यह कहा जाना चाहिए कि वे मूलों के साथ भी होती हैं लेकिन मूल नहीं हैं; (वे) कभी-कभी मूलों के साथ होती हैं लेकिन मूल नहीं होती हैं; कभी-कभी उन्हें मूलों के साथ भी नहीं कहा जाना चाहिए, न ही यह कहा जाना चाहिए कि वे मूलों के साथ होती हैं लेकिन मूल नहीं हैं।

चार नियंत्रक शक्तियाँ जड़ से भी जुड़ी होती हैं। [128] नौ नियंत्रक शक्तियों को जड़ से भी जुड़ी हुई या जड़ से जुड़ी हुई लेकिन स्वयं जड़ न होने वाली नहीं कहा जाना चाहिए। तीन नियंत्रक शक्तियों को जड़ से भी जुड़ी हुई नहीं कहा जाना चाहिए; वे जड़ से जुड़ी हुई तो हैं लेकिन स्वयं जड़ नहीं हैं। छह नियंत्रक शक्तियों को जड़ से भी जुड़ी हुई नहीं कहा जाना चाहिए; वे कभी-कभी जड़ से जुड़ी होती हैं लेकिन स्वयं जड़ नहीं होती हैं; कभी-कभी उन्हें जड़ से जुड़ी हुई लेकिन स्वयं जड़ न होने वाली नहीं कहा जाना चाहिए।

नौ नियंत्रक शक्तियाँ मूल नहीं हैं, न ही मूलों के साथ होती हैं। तीन नियंत्रक शक्तियाँ मूल नहीं हैं, लेकिन मूलों के साथ होती हैं।

मूलों द्वारा। चार नियंत्रक शक्तियों को यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वे मूल नहीं हैं, मूलों के साथ हैं या मूल नहीं हैं, मूलों के साथ नहीं हैं। छह नियंत्रक शक्तियां कभी-कभी मूल नहीं होती हैं, मूलों के साथ होती हैं; कभी-कभी मूल नहीं होती हैं, मूलों के साथ नहीं होती हैं। (1)

(सभी नियंत्रक शक्तियाँ) कारण सहित हैं। बद्ध हैं। अदृश्य हैं। पाँच नियंत्रक शक्तियाँ आकस्मिक हैं। सत्रह नियंत्रक शक्तियाँ आकस्मिक नहीं हैं। सात नियंत्रक शक्तियाँ भौतिक हैं। चौदह नियंत्रक शक्तियाँ भौतिक नहीं हैं। प्राणिक सिद्धांत की नियंत्रक शक्ति कभी भौतिक होती है; कभी भौतिक नहीं होती। दस नियंत्रक शक्तियाँ सांसारिक हैं। तीन नियंत्रक शक्तियाँ अलौकिक हैं। नौ नियंत्रक शक्तियाँ कभी सांसारिक होती हैं; कभी अलौकिक होती हैं। (सभी नियंत्रक शक्तियाँ) एक मार्ग से ज्ञात की जा सकती हैं; दूसरे मार्ग से ज्ञात नहीं की जा सकतीं। (2)

(सभी नियंत्रणकारी शक्तियाँ) दोष नहीं हैं। दस नियंत्रणकारी शक्तियाँ दोषों के विषय हैं। तीन नियंत्रणकारी शक्तियाँ दोषों के विषय नहीं हैं। नौ नियंत्रणकारी शक्तियाँ कभी-कभी दोषों के विषय होती हैं; कभी-कभी दोषों के विषय नहीं होतीं। पंद्रह नियंत्रणकारी शक्तियाँ दोषों से संबंधित नहीं हैं। मानसिक पीड़ा की नियंत्रणकारी शक्ति दोषों से संबंधित है। छह नियंत्रणकारी शक्तियाँ कभी-कभी दोषों से संबंधित होती हैं; कभी-कभी दोषों से संबंधित नहीं होतीं। दस नियंत्रणकारी शक्तियों को दोष और दोषों के विषय नहीं कहा जाना चाहिए; वे दोषों के विषय तो हैं लेकिन दोष नहीं हैं। तीन नियंत्रणकारी शक्तियों को दोष और दोषों के विषय या दोषों के विषय तो हैं लेकिन दोष नहीं कहा जाना चाहिए। नौ नियंत्रणकारी शक्तियों को दोष और दोषों के विषय नहीं कहा जाना चाहिए; वे कभी-कभी दोषों के विषय तो होती हैं लेकिन दोष नहीं हैं। कभी-कभी इन्हें अशुद्धियों की वस्तु नहीं कहा जाना चाहिए, बल्कि ये स्वयं अशुद्धियाँ नहीं होतीं।

पंद्रह नियंत्रणकारी शक्तियों को दोष नहीं कहा जाना चाहिए, न ही यह कहा जाना चाहिए कि वे दोषों से भी संबंधित हैं या दोषों से संबंधित तो हैं लेकिन दोष नहीं हैं। मानसिक पीड़ा की नियंत्रणकारी शक्ति को दोषों से भी संबंधित दोष नहीं कहा जाना चाहिए; यह दोषों से संबंधित तो है लेकिन दोष नहीं है। छह नियंत्रणकारी शक्तियों को दोषों से भी संबंधित दोष नहीं कहा जाना चाहिए; वे कभी-कभी दोषों से संबंधित होती हैं लेकिन दोष नहीं होतीं; कभी-कभी नहीं कहा जाना चाहिए।

170

विश्लेषण की पुस्तक

कुछ इंद्रियों को दोषों से संबंधित कहा जाता है, लेकिन वे स्वयं दोष नहीं हैं। नौ नियंत्रण इंद्रियां दोषों से संबंधित नहीं हैं, बल्कि दोषों के विषय हैं। तीन नियंत्रण इंद्रियां दोषों से संबंधित नहीं हैं, और न ही दोषों के विषय हैं। मानसिक पीड़ा की नियंत्रण इंद्री को न तो दोषों से संबंधित नहीं कहा जा सकता, और न ही यह कहा जा सकता है कि यह दोषों का विषय है, और न ही यह कहा जा सकता है कि यह दोषों से संबंधित नहीं है, और न ही यह कहा जा सकता है कि यह दोषों का विषय है। तीन नियंत्रण इंद्रियां कभी-कभी दोषों से संबंधित नहीं होती हैं, और न ही दोषों का विषय होती हैं; कभी-कभी दोषों से संबंधित नहीं होती हैं, और न ही दोषों का विषय होती हैं। छह नियंत्रण इंद्रियां कभी-कभी दोषों से संबंधित नहीं होती हैं, और न ही दोषों का विषय होती हैं; कभी-कभी दोषों से संबंधित नहीं होती हैं, और न ही यह कहा जा सकता है कि यह दोषों से संबंधित नहीं है, और न ही यह कहा जा सकता है कि यह दोषों का विषय है, और न ही यह कहा जा सकता है कि यह दोषों से संबंधित नहीं है, और न ही यह कहा जा सकता है कि यह दोषों का विषय है, और न ही यह कहा जा सकता है कि यह दोषों से संबंधित नहीं है, और न ही यह कहा जा सकता है कि यह दोषों का विषय है, और न ही यह कहा जा सकता है कि यह दोषों से संबंधित नहीं है, और न ही यह कहा जा सकता है कि यह दोषों का विषय है। (3)

(सभी नियंत्रक शक्तियाँ) बंधन नहीं हैं। दस नियंत्रक शक्तियाँ बंधनों के अधीन हैं। तीन नियंत्रक शक्तियाँ बंधनों के अधीन नहीं हैं। नौ नियंत्रक शक्तियाँ कभी-कभी बंधनों के अधीन होती हैं; कभी-कभी नहीं होती हैं। पंद्रह नियंत्रक शक्तियाँ बंधनों से संबंधित नहीं हैं। मानसिक पीड़ा की नियंत्रक शक्ति बंधनों से संबंधित है। छह नियंत्रक शक्तियाँ कभी-कभी [129] बंधनों से संबंधित होती हैं; कभी-कभी नहीं होती हैं। दस नियंत्रक शक्तियों को बंधन और बंधनों के अधीन नहीं कहा जाना चाहिए; (वे) बंधनों के अधीन हैं लेकिन बंधन नहीं हैं। तीन नियंत्रक शक्तियों को बंधन और बंधनों के अधीन नहीं कहा जाना चाहिए या बंधनों के अधीन हैं लेकिन बंधन नहीं हैं। नौ नियंत्रक शक्तियों को बंधन और बंधनों के अधीन नहीं कहा जाना चाहिए; (वे) कभी-कभी बंधनों के अधीन होती हैं लेकिन बंधन नहीं हैं; कभी-कभी इन्हें बेड़ियों की वस्तु नहीं कहा जाना चाहिए, बल्कि ये स्वयं बेड़ियाँ नहीं होती हैं।

पंद्रह नियंत्रणकारी शक्तियों को बंधन नहीं कहा जाना चाहिए, न ही यह कहा जाना चाहिए कि वे बंधनों से जुड़ी हुई हैं, या बंधनों से जुड़ी हुई हैं लेकिन स्वयं बंधन नहीं हैं। मानसिक पीड़ा की नियंत्रणकारी शक्ति को बंधन नहीं कहा जाना चाहिए, न ही यह कहा जाना चाहिए कि वह बंधनों से जुड़ी हुई है, लेकिन स्वयं बंधन नहीं है। छह नियंत्रणकारी शक्तियों को बंधन नहीं कहा जाना चाहिए, न ही यह कहा जाना चाहिए कि वे बंधनों से जुड़ी हुई हैं, लेकिन स्वयं बंधन नहीं हैं।

नियंत्रणकारी संकायों का विश्लेषण

171

नौ नियंत्रणकारी शक्तियाँ बंधनों से संबद्ध नहीं हैं, बल्कि बंधनों के अधीन हैं। तीन नियंत्रणकारी शक्तियाँ बंधनों से संबद्ध नहीं हैं, बल्कि बंधनों के अधीन नहीं हैं।
मानसिक पीड़ा को नियंत्रित करने वाली क्षमता को यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वह बेड़ियों से संबंधित नहीं है, बेड़ियों का विषय है या बेड़ियों से संबंधित नहीं है, बेड़ियों का विषय नहीं है। तीन नियंत्रण क्षमताएँ कभी-कभी बेड़ियों से संबंधित नहीं होती हैं, बेड़ियों का विषय होती हैं; कभी-कभी बेड़ियों से संबंधित नहीं होती हैं, बेड़ियों का विषय नहीं होती हैं। छह नियंत्रण क्षमताएँ कभी-कभी बेड़ियों से संबंधित नहीं होती हैं, बेड़ियों का विषय होती हैं; कभी-कभी बेड़ियों से संबंधित नहीं होती हैं, बेड़ियों का विषय नहीं होती हैं; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वह बेड़ियों से संबंधित नहीं है, बेड़ियों का विषय है या बेड़ियों से संबंधित नहीं है, बेड़ियों का विषय नहीं है। (4)
(सभी नियंत्रक शक्तियाँ) बंधन नहीं हैं। दस नियंत्रक शक्तियाँ बंधनों के विषय हैं। तीन नियंत्रक शक्तियाँ बंधनों के विषय नहीं हैं। नौ नियंत्रक शक्तियाँ कभी-कभी बंधनों के विषय होती हैं; कभी-कभी नहीं होती हैं। पंद्रह नियंत्रक शक्तियाँ बंधनों से संबद्ध नहीं हैं। मानसिक पीड़ा की नियंत्रक शक्ति बंधनों से संबद्ध है। छह नियंत्रक शक्तियाँ कभी-कभी बंधनों से संबद्ध होती हैं; कभी-कभी नहीं होती हैं। दस नियंत्रक शक्तियों को बंधनों का विषय नहीं कहा जाना चाहिए; वे बंधनों का विषय तो हैं लेकिन बंधन नहीं हैं। तीन नियंत्रक शक्तियों को बंधनों का विषय या बंधनों का विषय तो नहीं कहा जाना चाहिए लेकिन बंधन नहीं हैं। नौ नियंत्रक शक्तियों को बंधनों का विषय नहीं कहा जाना चाहिए; वे कभी-कभी बंधनों का विषय तो होती हैं लेकिन बंधन नहीं होती हैं; कभी-कभी उन्हें बंधनों का विषय तो नहीं कहा जाना चाहिए लेकिन बंधन नहीं हैं।
पंद्रह नियंत्रक शक्तियों को यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वे भी बंधनों से जुड़ी हैं या बंधनों से जुड़ी हैं लेकिन बंधन नहीं हैं। मानसिक पीड़ा की नियंत्रक शक्ति को यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वह भी बंधनों से जुड़ी है; (यह) बंधनों से जुड़ी है लेकिन बंधन नहीं है। छह नियंत्रक शक्तियों को यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वे भी बंधनों से जुड़ी हैं; (वे) कभी-कभी बंधनों से जुड़ी होती हैं लेकिन बंधन नहीं होतीं; कभी-कभी को यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वे बंधनों से जुड़ी हैं लेकिन बंधन नहीं हैं।
नौ नियंत्रक संकाय संबंधों से संबद्ध नहीं हैं, वे संबंधों के विषय हैं। तीन नियंत्रक संकाय [130] संबंधों से संबद्ध नहीं हैं, वे संबंधों के विषय नहीं हैं। नियंत्रक संकाय

172

विश्लेषण की पुस्तक

मानसिक पीड़ा के बारे में यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वह संबंधों से संबंधित नहीं है, संबंधों का विषय है या संबंधों से संबंधित नहीं है, संबंधों का विषय नहीं है। तीन नियंत्रक क्षमताएँ कभी-कभी संबंधों से संबंधित नहीं होती हैं, संबंधों का विषय होती हैं; कभी-कभी संबंधों से संबंधित नहीं होती हैं, संबंधों का विषय नहीं होती हैं। छह नियंत्रक क्षमताएँ कभी-कभी संबंधों से संबंधित नहीं होती हैं, संबंधों का विषय होती हैं; कभी-कभी संबंधों से संबंधित नहीं होती हैं, संबंधों का विषय नहीं होती हैं; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वह संबंधों से संबंधित नहीं है, संबंधों का विषय है या संबंधों से संबंधित नहीं है, संबंधों का विषय नहीं है। (5)
(सभी नियंत्रक शक्तियाँ) बाढ़ नहीं हैं। :P: बंधन नहीं हैं, :P: बाधाएँ नहीं हैं। दस नियंत्रक शक्तियाँ बाधाओं के विषय हैं। तीन नियंत्रक शक्तियाँ बाधाओं के विषय नहीं हैं। नौ नियंत्रक शक्तियाँ कभी-कभी बाधाओं के विषय होती हैं; कभी-कभी बाधाओं के विषय नहीं होती हैं। पंद्रह नियंत्रक शक्तियाँ बाधाओं से संबंधित नहीं हैं। मानसिक पीड़ा की नियंत्रक शक्ति बाधाओं से संबंधित है। छह नियंत्रक शक्तियाँ

कभी-कभी बाधाओं से संबंधित होती हैं; कभी-कभी बाधाओं से संबंधित नहीं होती हैं। दस नियंत्रक शक्तियों को बाधाएँ और बाधाओं के विषय नहीं कहा जाना चाहिए; वे बाधाओं के विषय तो हैं लेकिन बाधाएँ नहीं हैं। तीन नियंत्रक शक्तियों को बाधाएँ और बाधाओं के विषय या बाधाओं के विषय तो नहीं कहा जाना चाहिए लेकिन बाधाएँ नहीं हैं। नौ नियंत्रणकारी शक्तियों को बाधाएँ और बाधाओं के विषय नहीं कहा जाना चाहिए; (वे) कभी-कभी बाधाओं के विषय होते हैं लेकिन बाधाएँ नहीं होते; कभी-कभी उन्हें बाधाओं के विषय नहीं कहा जाना चाहिए लेकिन बाधाएँ नहीं होते।

पंद्रह नियंत्रक शक्तियों को बाधक नहीं कहा जाना चाहिए, न ही यह कहा जाना चाहिए कि वे बाधक हैं लेकिन स्वयं बाधक नहीं हैं। मानसिक पीड़ा की नियंत्रक शक्ति को बाधक नहीं कहा जाना चाहिए; यह बाधक है लेकिन स्वयं बाधक नहीं है। छह नियंत्रक शक्तियों को बाधक नहीं कहा जाना चाहिए; वे कभी-कभी बाधक होती हैं लेकिन स्वयं बाधक नहीं होतीं; कभी-कभी उन्हें बाधक होना लेकिन स्वयं बाधक न होना नहीं कहा जाना चाहिए।

नौ नियंत्रक शक्तियाँ बाधाओं से असंबद्ध हैं, बल्कि बाधाओं की वस्तुएँ हैं। तीन नियंत्रक शक्तियाँ बाधाओं से असंबद्ध हैं, और बाधाओं की वस्तुएँ नहीं हैं।

नियंत्रणकारी संकायों का विश्लेषण

173

मानसिक पीड़ा को नियंत्रित करने वाली क्षमता को बाधाओं से असंबद्ध, बाधाओं का विषय या बाधाओं से असंबद्ध, बाधाओं का विषय नहीं कहा जाना चाहिए। तीन नियंत्रण क्षमताएँ कभी-कभी बाधाओं से असंबद्ध होती हैं, बाधाओं का विषय होती हैं; कभी-कभी बाधाओं से असंबद्ध होती हैं, बाधाओं का विषय नहीं होती हैं। छह नियंत्रण क्षमताएँ कभी-कभी बाधाओं से असंबद्ध होती हैं, बाधाओं का विषय होती हैं; कभी-कभी बाधाओं से असंबद्ध होती हैं, बाधाओं का विषय नहीं होती हैं; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वे बाधाओं से असंबद्ध हैं, बाधाओं का विषय हैं या बाधाओं से असंबद्ध, बाधाओं का विषय नहीं हैं। (8)

P = बाधाओं के संबंध में पूर्ण।

(सभी नियंत्रक शक्तियाँ) विकृतियाँ नहीं हैं। दस नियंत्रक शक्तियाँ विकृतियों के विषय हैं। तीन नियंत्रक शक्तियाँ विकृतियों के विषय नहीं हैं। नौ नियंत्रक शक्तियाँ कभी-कभी विकृतियों के विषय होती हैं; कभी-कभी विकृतियों के विषय नहीं होतीं। सोलह नियंत्रक शक्तियाँ विकृतियों से संबंधित नहीं हैं। छह नियंत्रक शक्तियाँ कभी-कभी विकृतियों से संबंधित होती हैं; कभी-कभी विकृतियों से संबंधित नहीं होतीं। दस नियंत्रक शक्तियों को विकृतियाँ और विकृतियों के विषय नहीं कहा जाना चाहिए; (वे) विकृतियों के विषय हैं लेकिन विकृतियाँ नहीं हैं। तीन नियंत्रक शक्तियों को विकृतियाँ और विकृतियों के विषय नहीं कहा जाना चाहिए; (वे) कभी-कभी विकृतियों के विषय होते हैं लेकिन विकृतियाँ नहीं हैं; कभी-कभी विकृतियों का विषय नहीं कहा जाना चाहिए, बल्कि वे विकृतियाँ नहीं हैं। दस नियंत्रक शक्तियाँ विकृतियों से संबंधित नहीं हैं, बल्कि विकृतियों का विषय हैं। तीन नियंत्रक शक्तियाँ विकृतियों से संबंधित नहीं हैं, बल्कि विकृतियों का विषय हैं। तीन नियंत्रक शक्तियाँ कभी-कभी विकृतियों से संबंधित नहीं होती हैं, बल्कि विकृतियों का विषय होती हैं; कभी-कभी विकृतियों से संबंधित नहीं होती हैं, बल्कि विकृतियों का विषय नहीं होती हैं। छह नियंत्रक शक्तियाँ कभी-कभी विकृतियों से संबंधित नहीं होती हैं, बल्कि विकृतियों का विषय होती हैं; कभी-कभी विकृतियों से संबंधित नहीं होती हैं, बल्कि विकृतियों का विषय नहीं होती हैं; कभी-कभी विकृतियों से संबंधित नहीं कहा जाना चाहिए, बल्कि विकृतियों से संबंधित नहीं होती हैं।

174

विश्लेषण की पुस्तक

विकृतियों से जुड़े हुए या विकृतियों से असंबद्ध व्यक्ति विकृतियों के विषय नहीं होते (9)

सात नियंत्रणकारी शक्तियों का कोई लक्ष्य नहीं है। चौदह नियंत्रणकारी शक्तियों का लक्ष्य है। प्राण सिद्धांत की नियंत्रणकारी शक्ति का कभी-कभी लक्ष्य होता है; कभी-कभी नहीं होता। इक्कीस नियंत्रणकारी शक्तियाँ चेतना नहीं हैं। मन की नियंत्रणकारी शक्ति चेतना है। तेरह नियंत्रणकारी शक्तियाँ मानसिक सहवर्ती हैं। आठ नियंत्रणकारी शक्तियाँ मानसिक सहवर्ती नहीं हैं। प्राण सिद्धांत की नियंत्रणकारी

शक्ति कभी-कभी मानसिक सहवर्ती होती है; कभी-कभी नहीं होती। तेरह नियंत्रणकारी शक्तियाँ चेतना से जुड़ी हैं। सात नियंत्रणकारी शक्तियाँ चेतना से नहीं जुड़ी हैं। प्राण सिद्धांत की नियंत्रणकारी शक्ति कभी-कभी चेतना से जुड़ी होती है; कभी-कभी नहीं होती। मन की नियंत्रणकारी शक्ति को चेतना से जुड़ा हुआ या नहीं जुड़ा हुआ नहीं कहा जा सकता।

तेरह नियंत्रण शक्तियाँ चेतना से जुड़ी होती हैं। सात नियंत्रण शक्तियाँ चेतना से नहीं जुड़ी होती हैं। प्राण तत्व की नियंत्रण शक्ति कभी चेतना से जुड़ी होती है, कभी नहीं। मन की नियंत्रण शक्ति को चेतना से जुड़ा हुआ या नहीं जुड़ा हुआ कहना उचित नहीं है। तेरह नियंत्रण शक्तियाँ चेतना द्वारा उत्पन्न होती हैं। आठ नियंत्रण शक्तियाँ चेतना द्वारा उत्पन्न नहीं होती हैं। प्राण तत्व की नियंत्रण शक्ति कभी चेतना द्वारा उत्पन्न होती है, कभी नहीं।

तेरह नियंत्रण शक्तियाँ चेतना के साथ विद्यमान होती हैं। आठ नियंत्रण शक्तियाँ चेतना के साथ विद्यमान नहीं होतीं। प्राणिक सिद्धांत की नियंत्रण शक्ति कभी-कभी चेतना के साथ विद्यमान होती है; कभी-कभी नहीं होती। तेरह नियंत्रण शक्तियाँ चेतना के साथ होती हैं। आठ नियंत्रण शक्तियाँ चेतना के साथ नहीं होतीं। प्राणिक सिद्धांत की नियंत्रण शक्ति कभी-कभी चेतना के साथ होती है; कभी-कभी नहीं होती।

तेरह नियंत्रक शक्तियाँ चेतना से जुड़ी हुई हैं, चेतना द्वारा उत्पन्न होती हैं। आठ नियंत्रक शक्तियाँ चेतना से जुड़ी हुई नहीं हैं, चेतना द्वारा उत्पन्न नहीं होती हैं। प्राण सिद्धांत की नियंत्रक शक्ति कभी-कभी चेतना से जुड़ी होती है, चेतना द्वारा उत्पन्न होती है; कभी-कभी चेतना से जुड़ी नहीं होती है, चेतना द्वारा उत्पन्न नहीं होती है। तेरह नियंत्रक शक्तियाँ चेतना से जुड़ी हुई हैं, चेतना द्वारा उत्पन्न होती हैं।

नियंत्रणकारी संकायों का विश्लेषण

175

चेतना के साथ सह-अस्तित्व में। आठ नियंत्रक शक्तियाँ चेतना से जुड़ी नहीं हैं, चेतना द्वारा उत्पन्न नहीं होती हैं, और चेतना के साथ सह-अस्तित्व में नहीं होती हैं। प्राणिक सिद्धांत की नियंत्रक शक्ति कभी-कभी चेतना से जुड़ी होती है, चेतना द्वारा उत्पन्न होती है, और चेतना के साथ सह-अस्तित्व में होती है; कभी-कभी चेतना से जुड़ी नहीं होती है, चेतना द्वारा उत्पन्न नहीं होती है, और चेतना के साथ सह-अस्तित्व में नहीं होती है। तेरह नियंत्रक शक्तियाँ चेतना से जुड़ी होती हैं, चेतना द्वारा उत्पन्न होती हैं, और चेतना के साथ होती हैं। आठ नियंत्रक शक्तियाँ चेतना से जुड़ी नहीं होती हैं, चेतना द्वारा उत्पन्न नहीं होती हैं, और चेतना के साथ नहीं होती हैं। प्राणिक सिद्धांत की नियंत्रक शक्ति कभी-कभी चेतना से जुड़ी होती है, चेतना द्वारा उत्पन्न होती है, और चेतना के साथ होती है; कभी-कभी चेतना से जुड़ी नहीं होती है, चेतना द्वारा उत्पन्न नहीं होती है, और चेतना के साथ नहीं होती है। छह नियंत्रक शक्तियाँ आंतरिक हैं। सोलह नियंत्रक शक्तियाँ बाह्य हैं। (10) [132]

सात नियंत्रण शक्तियाँ व्युत्पन्न होती हैं। चौदह नियंत्रण शक्तियाँ व्युत्पन्न नहीं होतीं। प्राणिक शक्ति की नियंत्रण शक्ति कभी व्युत्पन्न होती है, कभी व्युत्पन्न नहीं होती। नौ नियंत्रण शक्तियाँ (लालसा और भ्रामक दृष्टि से) बोधित होती हैं। चार नियंत्रण शक्तियाँ बोधित नहीं होतीं। नौ नियंत्रण शक्तियाँ कभी बोधित होती हैं, कभी बोधित नहीं होतीं। (सभी नियंत्रण शक्तियाँ) आसक्ति नहीं हैं। दस नियंत्रण शक्तियाँ आसक्ति के विषय हैं। तीन नियंत्रण शक्तियाँ आसक्ति के विषय नहीं हैं। नौ नियंत्रण शक्तियाँ कभी आसक्ति के विषय होती हैं, कभी आसक्ति के विषय नहीं होतीं। सोलह नियंत्रण शक्तियाँ आसक्ति से संबद्ध नहीं हैं। छह नियंत्रण शक्तियाँ कभी आसक्ति से संबद्ध होती हैं, कभी आसक्ति से संबद्ध नहीं होतीं। दस नियंत्रण शक्तियों को आसक्ति और आसक्ति का विषय नहीं कहा जाना चाहिए; वे आसक्ति का विषय तो हैं, पर आसक्ति नहीं हैं। तीन नियंत्रण शक्तियों को आसक्ति और आसक्ति का विषय नहीं कहा जाना चाहिए, या आसक्ति का विषय तो हैं, पर आसक्ति नहीं हैं। नौ इंद्रियों को आसक्ति और आसक्ति का विषय कहना उचित नहीं है; वे कभी-कभी आसक्ति का विषय होती हैं, परन्तु स्वयं आसक्ति नहीं होतीं। दस इंद्रियों को भी कभी-कभी आसक्ति का विषय कहना उचित नहीं है; कभी-कभी आसक्ति का विषय होना, परन्तु स्वयं आसक्ति न होना भी उचित नहीं है।

सोलह नियंत्रक शक्तियों को आसक्ति से संबंधित आसक्ति या आसक्ति से संबंधित लेकिन स्वयं आसक्ति न होने वाली आसक्ति नहीं कहा जाना चाहिए। छह नियंत्रक शक्तियों को आसक्ति से संबंधित आसक्ति नहीं कहा जाना चाहिए;

176

(वे) कभी-कभी आसक्ति से जुड़े होते हैं, लेकिन स्वयं आसक्ति नहीं होते; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वे आसक्ति से जुड़े होते हैं, लेकिन स्वयं आसक्ति नहीं होते। दस नियंत्रण शक्तियाँ आसक्ति से जुड़ी नहीं होतीं, बल्कि आसक्ति के विषय होती हैं। तीन नियंत्रण शक्तियाँ आसक्ति से जुड़ी नहीं होतीं, और न ही आसक्ति के विषय होती हैं। तीन नियंत्रण शक्तियाँ कभी-कभी आसक्ति से जुड़ी नहीं होतीं, और न ही आसक्ति के विषय होती हैं; कभी-कभी आसक्ति से जुड़ी नहीं होतीं, और न ही आसक्ति के विषय होती हैं। छह नियंत्रण शक्तियाँ कभी-कभी आसक्ति से जुड़ी नहीं होतीं, और न ही आसक्ति के विषय होती हैं; कभी-कभी आसक्ति से जुड़ी नहीं होतीं, और न ही आसक्ति के विषय होती हैं; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वे आसक्ति से जुड़ी नहीं हैं, बल्कि आसक्ति के विषय हैं या कभी-कभी आसक्ति से जुड़ी नहीं हैं, और न ही आसक्ति के विषय हैं। (11)
(सभी नियंत्रणकारी शक्तियाँ) भ्रष्ट नहीं हैं। दस नियंत्रणकारी शक्तियाँ भ्रष्टता की वस्तुएँ हैं। तीन नियंत्रणकारी शक्तियाँ भ्रष्टता की वस्तुएँ नहीं हैं। नौ नियंत्रणकारी शक्तियाँ कभी-कभी भ्रष्टता की वस्तुएँ होती हैं; कभी-कभी भ्रष्टता की वस्तुएँ नहीं होती हैं। पंद्रह नियंत्रणकारी शक्तियाँ भ्रष्ट नहीं हैं। मानसिक पीड़ा की नियंत्रणकारी शक्ति भ्रष्ट है। छह नियंत्रणकारी शक्तियाँ कभी-कभी भ्रष्ट होती हैं; कभी-कभी भ्रष्ट नहीं होती हैं। पंद्रह नियंत्रणकारी शक्तियाँ भ्रष्टता से संबंधित नहीं हैं। मानसिक पीड़ा की नियंत्रणकारी शक्ति भ्रष्टता से संबंधित है। छह नियंत्रणकारी शक्तियाँ कभी-कभी भ्रष्टता से संबंधित होती हैं; कभी-कभी भ्रष्टता से संबंधित नहीं होती हैं। दस नियंत्रणकारी शक्तियों को भ्रष्टता और भ्रष्टता की वस्तुएँ नहीं कहा जाना चाहिए; (वे) भ्रष्टता की वस्तुएँ हैं लेकिन भ्रष्टता नहीं हैं। तीन नियंत्रणकारी शक्तियों को भ्रष्टता और भ्रष्टता की वस्तुएँ या भ्रष्टता की वस्तुएँ लेकिन भ्रष्टता नहीं कहा जाना चाहिए। नौ नियंत्रणकारी शक्तियों को भ्रष्टता और भ्रष्टता की वस्तुएँ नहीं कहा जाना चाहिए; (वे) कभी-कभी भ्रष्टताओं के शिकार होते हैं लेकिन स्वयं भ्रष्ट नहीं होते; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वे भ्रष्टताओं के शिकार हैं लेकिन स्वयं भ्रष्ट नहीं हैं।
पंद्रह नियंत्रक शक्तियों को यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वे भी भ्रष्ट हैं या भ्रष्ट हैं लेकिन भ्रष्ट नहीं हैं। मानसिक पीड़ा की नियंत्रक शक्ति को यह नहीं कहा जाना चाहिए कि [133] वह भी भ्रष्ट है; (यह) भ्रष्ट है लेकिन भ्रष्ट नहीं है। छह नियंत्रक शक्तियों को यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वे भी भ्रष्ट हैं; (वे) कभी-कभी

भ्रष्ट हैं लेकिन भ्रष्टाचार नहीं हैं; कभी-कभी उन्हें भ्रष्ट नहीं कहा जाना चाहिए, भ्रष्ट हैं लेकिन भ्रष्टाचार नहीं हैं।
पंद्रह नियंत्रणकारी शक्तियों को भ्रष्टाचार से संबंधित या भ्रष्टाचार से संबंधित न कहना उचित नहीं है। मानसिक पीड़ा की नियंत्रणकारी शक्ति को भ्रष्टाचार से संबंधित न कहना उचित नहीं है; यह भ्रष्टाचार से संबंधित तो है, लेकिन स्वयं भ्रष्टाचार नहीं है। छह नियंत्रणकारी शक्तियों को भ्रष्टाचार से संबंधित न कहना उचित नहीं है; वे कभी-कभी भ्रष्टाचार से संबंधित होती हैं, लेकिन स्वयं भ्रष्टाचार नहीं हैं; कभी-कभी उन्हें भ्रष्टाचार से संबंधित न कहना उचित नहीं है। नौ नियंत्रणकारी शक्तियां भ्रष्टाचार से संबंधित नहीं हैं, बल्कि भ्रष्टाचार की वस्तु हैं। तीन नियंत्रणकारी शक्तियां भ्रष्टाचार से संबंधित नहीं हैं, बल्कि भ्रष्टाचार की वस्तु नहीं हैं। मानसिक पीड़ा की नियंत्रणकारी शक्ति को भ्रष्टाचार से संबंधित न होना, भ्रष्टाचार की वस्तु होना या भ्रष्टाचार से संबंधित न होना, भ्रष्टाचार की वस्तु न होना उचित नहीं है। तीन नियंत्रणकारी शक्तियां कभी-कभी भ्रष्टाचार से संबंधित नहीं होती हैं, बल्कि भ्रष्टाचार की वस्तु होती हैं। कभी-कभी भ्रष्टाचार से जुड़े नहीं होते, भ्रष्टाचार के शिकार नहीं होते। छह नियंत्रक शक्तियाँ कभी-कभी भ्रष्टाचार से जुड़ी नहीं होतीं, भ्रष्टाचार के शिकार होती हैं; कभी-कभी भ्रष्टाचार से जुड़ी नहीं होतीं, भ्रष्टाचार के शिकार नहीं होतीं; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वे भ्रष्टाचार से जुड़ी नहीं हैं, भ्रष्टाचार के शिकार हैं या भ्रष्टाचार से जुड़ी नहीं हैं, भ्रष्टाचार के शिकार नहीं हैं। (12)
प्रथम मार्ग द्वारा पंद्रह नियंत्रक शक्तियों का त्याग नहीं किया जाना चाहिए। सात नियंत्रक शक्तियों का कभी-कभी प्रथम मार्ग द्वारा त्याग किया जाना चाहिए; कभी-कभी प्रथम मार्ग द्वारा उनका त्याग नहीं किया जाना चाहिए। बाद के मार्गों द्वारा पंद्रह नियंत्रक शक्तियों का त्याग नहीं किया जाना चाहिए। बाद के मार्गों द्वारा सात नियंत्रक शक्तियों का कभी-कभी त्याग किया जाना चाहिए, कभी-कभी बाद के मार्गों द्वारा उनका त्याग नहीं किया जाना चाहिए। प्रथम मार्ग द्वारा परित्यक्त किए जाने के लिए पंद्रह नियंत्रक शक्तियों का कोई मूल नहीं है। प्रथम मार्ग द्वारा परित्यक्त किए जाने के लिए सात नियंत्रक शक्तियों का कभी-कभी मूल होता है; कभी-कभी पहले मार्ग द्वारा

परित्यक्त किए जाने के लिए कोई मूल नहीं होता है। बाद के मार्गों द्वारा परित्यक्त किए जाने के लिए पंद्रह नियंत्रक शक्तियों का कोई मूल नहीं है। बाद के मार्गों द्वारा परित्यक्त किए जाने के लिए सात नियंत्रक शक्तियों का कभी-कभी मूल होता है; कभी-कभी बाद के मार्गों द्वारा परित्यक्त किए जाने के लिए कोई मूल नहीं होता है।

178

विश्लेषण की पुस्तक

नौ नियंत्रण शक्तियाँ प्रारंभ में अनुप्रयुक्त नहीं होतीं। मानसिक पीड़ा की नियंत्रण शक्ति प्रारंभ में अनुप्रयुक्त होती है। बारह नियंत्रण शक्तियाँ कभी-कभी प्रारंभ में अनुप्रयुक्त होती हैं; कभी-कभी प्रारंभ में अनुप्रयुक्त नहीं होतीं। नौ नियंत्रण शक्तियाँ निरंतर अनुप्रयुक्त नहीं होतीं। मानसिक पीड़ा की नियंत्रण शक्ति निरंतर अनुप्रयुक्त होती है। बारह नियंत्रण शक्तियाँ कभी-कभी निरंतर अनुप्रयुक्त होती हैं; कभी-कभी निरंतर अनुप्रयुक्त नहीं होतीं। ग्यारह नियंत्रण शक्तियाँ उत्साहहीन होती हैं। ग्यारह नियंत्रण शक्तियाँ कभी-कभी उत्साह से भरी होती हैं; कभी-कभी उत्साहहीन होती हैं। ग्यारह नियंत्रण शक्तियाँ उत्साह से रहित होती हैं। ग्यारह नियंत्रण शक्तियाँ कभी-कभी उत्साह से भरी होती हैं; कभी-कभी उत्साह रहित होती हैं। बारह नियंत्रण शक्तियाँ आनंद से रहित होती हैं। दस नियंत्रण शक्तियाँ कभी-कभी आनंद से भरी होती हैं; कभी-कभी आनंद रहित होती हैं। बारह नियंत्रण शक्तियाँ उदासीनता से रहित होती हैं। दस नियंत्रण शक्तियाँ कभी-कभी उदासीनता से भरी होती हैं; कभी-कभी उदासीनता रहित होती हैं।

इच्छा के तल की विशेषता दस नियंत्रक शक्तियाँ हैं। तीन नियंत्रक शक्तियाँ इच्छा के तल की विशेषता नहीं हैं। नौ नियंत्रक शक्तियाँ कभी-कभी इच्छा के तल की विशेषता होती हैं; कभी-कभी नहीं होती हैं। तेरह नियंत्रक शक्तियाँ रूप के तल की विशेषता नहीं हैं। नौ नियंत्रक शक्तियाँ कभी-कभी रूप के तल की विशेषता होती हैं; कभी-कभी नहीं होती हैं। चौदह नियंत्रक शक्तियाँ निराकार तल की विशेषता नहीं हैं। आठ नियंत्रक शक्तियाँ कभी-कभी निराकार तल की विशेषता होती हैं; कभी-कभी नहीं होती हैं। दस नियंत्रक शक्तियाँ शामिल हैं (अर्थात सांसारिक हैं)। तीन नियंत्रक शक्तियाँ शामिल नहीं हैं (अर्थात अलौकिक हैं)। नौ नियंत्रक शक्तियाँ कभी-कभी शामिल होती हैं (अर्थात सांसारिक हैं); कभी-कभी शामिल नहीं होती हैं (अर्थात अलौकिक हैं)। [134] ग्यारह नियंत्रक शक्तियाँ मुक्त होने की प्रवृत्ति नहीं रखती हैं। ज्ञानोदय की शुरुआत की नियंत्रक शक्ति मुक्त होने की प्रवृत्ति रखती है। दस नियंत्रक शक्तियाँ कभी-कभी मुक्त होने की प्रवृत्ति रखती हैं; कभी-कभी नहीं रखती हैं। दस नियंत्रक शक्तियों का कोई निश्चित (परिणामी समय) नहीं होता। प्रारंभिक ज्ञानोदय की नियंत्रक शक्ति का निश्चित (परिणामी समय) होता है। ग्यारह नियंत्रक शक्तियाँ कभी-कभी निश्चित (परिणामी समय) की होती हैं; कभी-कभी उनका कोई निश्चित (परिणामी समय) नहीं होता। दस नियंत्रक शक्तियों को पार किया जा सकता है। तीन

नियंत्रणकारी संकायों का विश्लेषण

179

नियंत्रणकारी शक्तियाँ अजेय हैं। नौ नियंत्रणकारी शक्तियाँ कभी-कभी अजेय होती हैं; कभी-कभी अजेय होती हैं। पंद्रह नियंत्रणकारी शक्तियाँ शोक का कारण नहीं होतीं। मानसिक पीड़ा की नियंत्रणकारी शक्ति शोक का कारण होती है। छह नियंत्रणकारी शक्तियाँ कभी-कभी शोक का कारण होती हैं; कभी-कभी शोक का कारण नहीं होतीं। (13)

(यह खंड यहीं समाप्त होता है) पूछताछ

नियंत्रणकारी संकायों का विश्लेषण समाप्त हुआ।

टिपिटक >> अभिधम्म पिटक >> विभंग >> अध्याय 6 - पतीच्चसमुप्पदा

विभंग-विश्लेषण की पुस्तक-गोतम बुद्ध द्वारा बोली गई

पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

पाली से अनुवादित यू. थित्तिला, रंगून, बर्मा, 1969 द्वारा

ओसीआर संस्करण, प्रूफरीडिंग नहीं की गई है, इसमें त्रुटियां हैं

(पाठकों को दिए गए .pdf संस्करण की सहायता से पाठ को सही करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है)

अध्याय 6. आश्रित उत्पत्ति का विश्लेषण (पटिच्चसमुप्पदा)
(संस्कृत: प्रतीत्य-समुत्पाद)
1. प्रवचनों के अनुसार विश्लेषण
225. [135] अज्ञान के कारण कर्म उत्पन्न होते हैं; कर्मों के कारण चेतना उत्पन्न होती है; चेतना के कारण मन और पदार्थ उत्पन्न होते हैं; मन और पदार्थ के कारण छह आधार उत्पन्न होते हैं; छह आधारों के कारण संपर्क उत्पन्न होता है; संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है; भावना के कारण लालसा उत्पन्न होती है; लालसा के कारण आसक्ति उत्पन्न होती है; आसक्ति के कारण जन्म उत्पन्न होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था-मृत्यु-शोक-विलाप-पीड़ा (शारीरिक)-मानसिक पीड़ा-निराशा उत्पन्न होती है। इस प्रकार इस संपूर्ण दुख का स्रोत बनता है।
226. इसमें अज्ञान क्या है? दुख के ज्ञान का अभाव, दुख के कारण के ज्ञान का अभाव, दुख के निवारण के ज्ञान का अभाव, दुख के निवारण के मार्ग के ज्ञान का अभाव। यही अज्ञान कहलाता है।
इसमें 'अज्ञान के कारण कर्म उत्पन्न होते हैं' का क्या अर्थ है? अच्छे परिणाम उत्पन्न करने वाली गतिविधि, बुरे परिणाम उत्पन्न करने वाली गतिविधि, अविचल परिणाम उत्पन्न करने वाली गतिविधि, शारीरिक गतिविधि, मौखिक गतिविधि, मानसिक गतिविधि।
इसमें अच्छे परिणाम उत्पन्न करने वाली गतिविधि क्या है? इच्छा के तल की विशेषता, रूप के तल की विशेषता, दान से उत्पन्न, नैतिकता से उत्पन्न, ध्यान से उत्पन्न अच्छी इच्छाशक्ति। यही अच्छे परिणाम उत्पन्न करने वाली गतिविधि कहलाती है।
इसमें वह गतिविधि क्या है जो बुराई (परिणाम) उत्पन्न करती है? बुराई
इच्छा के तल की विशेषता वाली संकल्पना। इसे बुरे परिणाम उत्पन्न करने वाली गतिविधि कहा जाता है।
उसमें ऐसी कौन सी गतिविधि है जो अविचल (परिणामस्वरूप) उत्पन्न करती है?
निराकार तल की विशेषता अच्छी इच्छाशक्ति है। इसे अविचल (परिणाम) उत्पन्न करने वाली क्रिया कहा जाता है।

के

आश्रित उत्पत्ति का विश्लेषण 181
इसमें शारीरिक गतिविधि क्या है? शारीरिक इच्छाशक्ति शारीरिक गतिविधि है; मौखिक इच्छाशक्ति मौखिक गतिविधि है; मानसिक इच्छाशक्ति मानसिक गतिविधि है। इन्हें 'अज्ञान के कारण उत्पन्न होने वाली गतिविधियाँ' कहा जाता है। [136]
227. इसमें 'कर्मों के कारण चेतना उत्पन्न होती है' क्या है? आँख की चेतना, कान की चेतना, नाक की चेतना, जीभ की चेतना, शरीर की चेतना, मन की चेतना। इसे ही 'कर्मों के कारण चेतना उत्पन्न होती है' कहते हैं।
228. इसमें 'चेतना के कारण मन और पदार्थ की उत्पत्ति' क्या है? मन है; पदार्थ है। इसमें मन क्या है? संवेदनाओं का समूह, बोधों का समूह, मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह। इसे मन कहते हैं। इसमें पदार्थ क्या है? चार प्रमुख तत्व और उनसे उत्पन्न भौतिक गुण। इसे पदार्थ कहते हैं। इस प्रकार यह मन और यह पदार्थ है। इसे 'चेतना के कारण मन और पदार्थ की उत्पत्ति' कहते हैं।
229. इसमें 'मन और पदार्थ के कारण छह आधार उत्पन्न होते हैं' क्या है? आँख का आधार, कान का आधार, नाक का आधार, जीभ का आधार, शरीर का आधार, मन का आधार। इसे 'मन और पदार्थ के कारण छह आधार उत्पन्न होते हैं' कहा जाता है।
230. इसमें 'छह आधारों के कारण संपर्क उत्पन्न होता है' क्या है? आँख का संपर्क, कान का संपर्क, नाक का संपर्क, जीभ का संपर्क, शरीर का संपर्क, मन का संपर्क। इसे 'छह आधारों के कारण संपर्क उत्पन्न होता है' कहा जाता है।
231. इसमें 'संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है' क्या है? आँख के संपर्क से उत्पन्न भावना, कान के संपर्क से उत्पन्न भावना, नाक के संपर्क से उत्पन्न भावना, जीभ के संपर्क से उत्पन्न भावना, शरीर के संपर्क से उत्पन्न भावना, मन के संपर्क से उत्पन्न भावना। इसे ही 'संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है' कहा जाता है।
232. इसमें 'इच्छा उत्पन्न होने के कारण' क्या है? दृश्य वस्तुओं की लालसा, श्रव्य वस्तुओं की लालसा, सुगंधित वस्तुओं की लालसा, स्वादयुक्त वस्तुओं की लालसा, स्पर्शनीय वस्तुओं की लालसा, वैचारिक वस्तुओं की लालसा। इसे 'इच्छा उत्पन्न होने के कारण' कहा जाता है।
233. इसमें 'लालसा के कारण आसक्ति उत्पन्न होती है' क्या है? इच्छा की आसक्ति, गलत दृष्टिकोण की आसक्ति,

(गलत) आदतों और प्रथाओं से आसक्ति, आत्मा-सिद्धांत से आसक्ति। इसे 'लालसा के कारण आसक्ति उत्पन्न होना' कहा जाता है।
234. उसमें आसक्ति के कारण क्या उत्पन्न होता है? [137] दो भागों में विभाजित है: कर्म-उत्पत्ति; परिणाम-उत्पत्ति। उसमें कर्म-उत्पत्ति क्या है? कर्म जो अच्छा (परिणाम) उत्पन्न करता है, कर्म जो बुरा (परिणाम) उत्पन्न करता है, कर्म जो अटल (परिणाम) उत्पन्न करता है। इसे कर्म-उत्पत्ति कहते हैं। और जो भी कर्म उत्पत्ति की ओर ले जाता है, वह कर्म-उत्पत्ति कहलाता है।
इसमें परिणामी-उत्पत्ति क्या है? इच्छा के तल पर उत्पन्न होना, रूप के तल पर उत्पन्न होना, निराकार तल पर उत्पन्न होना, प्रत्यक्ष-उत्पत्ति, अप्रत्यक्त-उत्पत्ति, न प्रत्यक्ष-उत्पत्ति और न अप्रत्यक्ष-उत्पत्ति, एकल समूह उत्पन्न होना, चार समूह उत्पन्न होना, पांच समूह उत्पन्न होना। इसे परिणामी-उत्पत्ति कहते हैं। इसे 'आसक्ति के कारण उत्पन्न होना' कहते हैं।
235. उसमें 'जन्म होने के कारण' क्या है?
किसी विशेष श्रेणी के किसी विशेष प्राणी के लिए जो जन्म, उत्पत्ति, प्रवेश, पूर्ण अस्तित्व, समुच्चय का प्रकट होना, आधारों का अधिग्रहण है, उसे ही 'जन्म' कहा जाता है।
236. उसमें 'जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु उत्पन्न होती है' का क्या अर्थ है?
बुढ़ापा होता है; मृत्यु होती है। तो बुढ़ापा क्या है? किसी भी प्राणी के लिए, किसी भी श्रेणी में, बुढ़ापा, दुर्बलता, टूटे दांत, सफेद बाल, झुर्रीदार त्वचा, जीवन का क्षय, इंद्रियों का कमजोर होना, यही बुढ़ापा कहलाता है।
इसमें मृत्यु क्या है? किसी भी प्राणी के लिए, चाहे वह किसी भी श्रेणी का हो, मृत्यु, विघटन, विलीन होना, मरना, जीवनकाल की समाप्ति, शरीर का विघटन, शरीर का त्याग, प्राण शक्ति का नाश होना। यही मृत्यु कहलाता है। इसी प्रकार वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इसे 'जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु' कहा जाता है।
237. उसमें दुःख क्या है? (वह दुःख) जो किसी रिश्तेदार के कारण दुर्भाग्य से पीड़ित व्यक्ति को, या धन के कारण दुर्भाग्य से पीड़ित व्यक्ति को, या बीमारी के कारण दुर्भाग्य से पीड़ित व्यक्ति को होता है।

भ्रष्ट नैतिकता के कारण दुर्भाग्य से पीड़ित व्यक्ति को, गलत दृष्टिकोण के कारण दुर्भाग्य से पीड़ित व्यक्ति को, किसी न किसी दुर्भाग्य से ग्रस्त व्यक्ति को, किसी न किसी पीड़ा से पीड़ित व्यक्ति को, शोक, दुःख की अवस्था, आंतरिक शोक, गहरा शोक, मन की जलन, मानसिक पीड़ा, शोक का तीर लगता है। इसे ही शोक कहते हैं।
238. विलाप क्या है? (वह जो) किसी रिश्तेदार के कारण दुर्भाग्य से पीड़ित व्यक्ति को, या धन के कारण दुर्भाग्य से पीड़ित व्यक्ति को, या [138] किसी बीमारी के कारण दुर्भाग्य से पीड़ित व्यक्ति को, या (भ्रष्ट) नैतिकता के कारण दुर्भाग्य से पीड़ित व्यक्ति को, या गलत दृष्टिकोण के कारण दुर्भाग्य से पीड़ित व्यक्ति को, या किसी न किसी दुर्भाग्य से ग्रस्त व्यक्ति को, या किसी न किसी पीड़ादायक बात से पीड़ित व्यक्ति को, रोना, विलाप करना, रोने की क्रिया, विलाप करने की क्रिया, रोने की अवस्था, विलाप की अवस्था, (दुखद) बातें, निरर्थक बातें, रोना, दुःखपूर्ण बड़बड़ाहट, दुःखपूर्ण बड़बड़ाहट की क्रिया, दुःखपूर्ण बड़बड़ाहट की अवस्था है। इसे विलाप कहते हैं।
239. इसमें दर्द क्या है? वह जो शारीरिक बेचैनी, शारीरिक पीड़ा, शारीरिक संपर्क से उत्पन्न बेचैन पीड़ादायक अनुभव, शारीरिक संपर्क से उत्पन्न बेचैन पीड़ादायक अनुभूति है। इसे दर्द कहते हैं।
240. इसमें मानसिक पीड़ा क्या है? वह मानसिक बेचैनी, मानसिक पीड़ा, मानसिक संपर्क से उत्पन्न बेचैन पीड़ादायक अनुभव, मानसिक संपर्क से उत्पन्न बेचैन पीड़ादायक भावना। इसे मानसिक पीड़ा कहते हैं।
241. इसमें निराशा क्या है? (वह) जो किसी रिश्तेदार के कारण दुर्भाग्य से पीड़ित व्यक्ति को, या धन के कारण दुर्भाग्य से पीड़ित व्यक्ति को, या बीमारी के कारण दुर्भाग्य से पीड़ित व्यक्ति को, या भ्रष्ट नैतिकता के कारण दुर्भाग्य से पीड़ित व्यक्ति को, या गलत दृष्टिकोण के

कारण दुर्भाग्य से पीड़ित व्यक्ति को, या किसी न किसी दुर्भाग्य से ग्रस्त व्यक्ति को, या किसी न किसी पीड़ा से पीड़ित व्यक्ति को, हताशा, निराशा की अवस्था, हताशा की अवस्था में डाल देती है। इसे ही निराशा कहते हैं।
242. 'इस प्रकार इस संपूर्ण पीड़ा का उदय हुआ है' का अर्थ है: इस प्रकार संयोजन, संयोजन, संयोजन,

इस संपूर्ण दुःख-पीड़ा का प्रकट होना। इसलिए इसे 'इस प्रकार इस संपूर्ण दुःख-पीड़ा की उत्पत्ति' कहा जाता है।
(यहाँ समाप्त होता है) प्रवचनों के अनुसार विश्लेषण
2. अभिधम्म के अनुसार विश्लेषण
1. कारण चतुर्भुज
243. अज्ञान के कारण गतिविधि होती है; गतिविधि के कारण चेतना होती है; चेतना के कारण मन होता है; मन के कारण छठा आधार होता है; छठे आधार के कारण संपर्क होता है; संपर्क के कारण भावना होती है; भावना के कारण लालसा होती है; लालसा के कारण आसक्ति होती है; आसक्ति के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस संपूर्ण दुख के समूह का उद्भव होता है। (1)
अज्ञान के कारण गतिविधि होती है; गतिविधि के कारण चेतना होती है; चेतना के कारण मन होता है; मन के कारण संपर्क होता है; संपर्क के कारण भावना होती है; भावना के कारण लालसा होती है; लालसा के कारण आसक्ति होती है; [139] आसक्ति के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस संपूर्ण दुख के समूह का उद्भव होता है। (2)
अज्ञान के कारण गतिविधि होती है; गतिविधि के कारण चेतना होती है; चेतना के कारण मन और पदार्थ होते हैं; मन और पदार्थ के कारण छठा आधार होता है; छठे आधार के कारण संपर्क होता है; संपर्क के कारण भावना होती है; भावना के कारण लालसा होती है; लालसा के कारण आसक्ति होती है; आसक्ति के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस संपूर्ण दुख का स्रोत बनता है। (3)
अज्ञान के कारण गतिविधि होती है; गतिविधि के कारण चेतना होती है; चेतना के कारण मन और पदार्थ होते हैं; मन और पदार्थ के कारण छह आधार होते हैं; छठे आधार के कारण संपर्क होता है; संपर्क के कारण भावना होती है; भावना के कारण लालसा होती है; लालसा के कारण आसक्ति होती है; आसक्ति के कारण सृजन होता है;

वहाँ उत्पन्न होना ही जन्म है; जन्म के कारण ही वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस समस्त दुख का उद्भव होता है। (4)
(यहाँ समाप्त होता है) कारण चतुर्भुज
2. रूट टेट्राड
244. अज्ञान के कारण अज्ञान से उपजी कर्म-क्रिया उत्पन्न होती है; कर्म के कारण कर्म से उपजी चेतना उत्पन्न होती है; चेतना के कारण चेतना से उपजी मन उत्पन्न होता है; मन के कारण मन से उपजी छठी अवस्था उत्पन्न होती है; छठी अवस्था के कारण छठी अवस्था से उपजी संपर्क क्रिया उत्पन्न होती है; संपर्क क्रिया के कारण संपर्क क्रिया से उपजी भावना उत्पन्न होती है; भावना क्रिया से उपजी लालसा उत्पन्न होती है; लालसा के कारण लालसा से उपजी आसक्ति उत्पन्न होती है; आसक्ति के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस समस्त दुख का स्रोत उत्पन्न होता है।
(1) (5)

अज्ञान के कारण अज्ञान से उपजी कर्म-क्रिया उत्पन्न होती है; कर्म के कारण कर्म से उपजी चेतना उत्पन्न होती है; चेतना के कारण चेतना से उपजी मन उत्पन्न होता है; मन के कारण मन से उपजी संपर्क क्रिया उत्पन्न होती है; संपर्क क्रिया के कारण संपर्क क्रिया से उपजी भावना क्रिया उत्पन्न होती है; भावना क्रिया से उपजी लालसा क्रिया से उपजी आसक्ति क्रिया से उपजी आसक्ति क्रिया उत्पन्न होती है; आसक्ति के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस समस्त दुख का स्रोत उत्पन्न होता है। (2) (6)

अज्ञान के कारण अज्ञान में निहित कर्म होता है; कर्म के कारण कर्म में निहित चेतना होती है; चेतना के कारण चेतना में निहित मन और पदार्थ [140] होते हैं; मन और पदार्थ के कारण मन और पदार्थ में निहित छठा आधार होता है; छठे आधार के कारण छठे आधार में निहित संपर्क होता है; संपर्क के कारण संपर्क में निहित भावना होती है; भावना के कारण भावना में निहित लालसा होती है; लालसा के कारण लालसा में निहित आसक्ति होती है; आसक्ति के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस संपूर्ण दुख के समूह का उद्भव होता है। (3) (7)

अज्ञानता के कारण ही अज्ञानता पर आधारित गतिविधियाँ होती हैं;

गतिविधि के कारण चेतना गतिविधि में निहित है; चेतना के कारण मन और पदार्थ चेतना में निहित हैं; मन और पदार्थ के कारण छह आधार मन और पदार्थ में निहित हैं; छठे आधार के कारण संपर्क छठे आधार में निहित है; संपर्क के कारण भावना संपर्क में निहित है; भावना के कारण लालसा भावना में निहित है; लालसा के कारण आसक्ति लालसा में निहित है; आसक्ति के कारण सृजन होता है; सृजन के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस संपूर्ण दुख के समूह का उद्भव होता है। (4) (8)

(यहाँ समाप्त होता है) रूट टेट्राड

3. एसोसिएशन टेट्राड

245. अज्ञान के कारण अज्ञान से संबंधित कर्म उत्पन्न होता है; कर्म के कारण कर्म से संबंधित चेतना उत्पन्न होती है; चेतना के कारण चेतना से संबंधित मन उत्पन्न होता है; मन के कारण मन से संबंधित छठा आधार उत्पन्न होता है; छठे आधार के कारण छठे आधार से संबंधित संपर्क उत्पन्न होता है; संपर्क के कारण संपर्क से संबंधित भावना उत्पन्न होती है; भावना के कारण भावना से संबंधित लालसा उत्पन्न होती है; लालसा के कारण लालसा से संबंधित आसक्ति उत्पन्न होती है; आसक्ति के कारण सृजन होता है; सृजन के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस समस्त दुख के समूह का उद्भव होता है। (1) (9) अज्ञान के कारण अज्ञान से संबंधित कर्म उत्पन्न होता है; कर्म के कारण कर्म से संबंधित चेतना उत्पन्न होती है; चेतना के कारण चेतना से संबंधित मन उत्पन्न होता है; मन के कारण मन से संबंधित संपर्क उत्पन्न होता है; संपर्क के कारण संपर्क से संबंधित भावना उत्पन्न होती है; भावना के कारण भावना से संबंधित लालसा उत्पन्न होती है; लालसा के कारण लालसा से संबंधित आसक्ति उत्पन्न होती है; आसक्ति के कारण सृजन होता है; सृजन के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस संपूर्ण पीड़ा का उद्गम होता है। (2) (10)

अज्ञान के कारण अज्ञान से जुड़ी गतिविधि होती है; गतिविधि के कारण गतिविधि से जुड़ी चेतना होती है; चेतना [141] के कारण मन और पदार्थ होते हैं, मन चेतना से जुड़ा होता है; मन और पदार्थ के कारण

छठा आधार मन और पदार्थ से जुड़ा है; छठे आधार के कारण संपर्क होता है; संपर्क के कारण भावना होती है; भावना के कारण लालसा होती है; लालसा के कारण आसक्ति होती है; आसक्ति के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस संपूर्ण दुख का स्रोत बनता है। (3) (11)

अज्ञान के कारण अज्ञान से संबंधित कर्म होता है; कर्म के कारण कर्म से संबंधित चेतना होती है; चेतना के कारण मन और पदार्थ होते हैं, चेतना से संबंधित मन होता है; मन और पदार्थ के कारण छह आधार होते हैं, छठा आधार मन से संबंधित होता है; छठे आधार के कारण छठे आधार से संबंधित संपर्क होता है; संपर्क के कारण संपर्क से संबंधित भावना होती है; भावना के कारण भावना से संबंधित लालसा होती है; लालसा के कारण लालसा से संबंधित आसक्ति होती है; आसक्ति के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस संपूर्ण दुख के समूह का उद्भव होता है। (4) (12)

(यहाँ समाप्त होता है) एसोसिएशन टेट्राड

4. पारस्परिकता चतुष्कोण

246. अज्ञान के कारण कर्म होता है; कर्म के कारण अज्ञान होता है। कर्म के कारण चेतना होती है; चेतना के कारण कर्म होता है। चेतना के कारण मन होता है; मन के कारण चेतना होती है। मन के कारण छठा आधार होता है; छठे आधार के कारण मन होता है। छठे आधार के कारण संपर्क होता है; संपर्क के कारण छठा आधार होता है। संपर्क के कारण संवेदना होती है; संवेदना के कारण संपर्क होता है। संवेदना के कारण लालसा होती है; लालसा के कारण संवेदना होती है। लालसा के कारण आसक्ति होती है; आसक्ति के कारण लालसा होती है। आसक्ति के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस समस्त दुख के समूह का उद्भव होता है। (1) (13)

अज्ञान के कारण गतिविधि उत्पन्न होती है; गतिविधि के कारण अज्ञान उत्पन्न होता है; गतिविधि के कारण चेतना उत्पन्न होती है;

9 *

188

विश्लेषण की पुस्तक

चेतना के कारण ही गतिविधि होती है। चेतना के कारण ही मन होता है; मन के कारण ही चेतना होती है। मन के कारण ही संपर्क होता है; संपर्क के कारण ही मन होता है। संपर्क के कारण ही भावना होती है; भावना के कारण ही संपर्क होता है। भावना के कारण ही लालसा होती है; लालसा के कारण ही भावना होती है। लालसा के कारण ही आसक्ति होती है; आसक्ति के कारण ही लालसा होती है। आसक्ति के कारण ही जन्म होता है; जन्म के कारण ही वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस संपूर्ण दुख के समूह का उद्भव होता है। (2) (14) [142]

अज्ञान के कारण गतिविधि होती है; गतिविधि के कारण अज्ञान होता है। गतिविधि के कारण चेतना होती है; चेतना के कारण गतिविधि होती है। चेतना के कारण मन और पदार्थ होते हैं; मन और पदार्थ के कारण चेतना होती है। मन और पदार्थ के कारण छठा आधार होता है; छठे आधार के कारण मन और पदार्थ होते हैं। छठे आधार के कारण संपर्क होता है; संपर्क के कारण छठा आधार होता है। संपर्क के कारण भावना होती है; भावना के कारण संपर्क होता है। भावना के कारण लालसा होती है; लालसा के कारण भावना होती है। लालसा के कारण आसक्ति होती है; आसक्ति के कारण लालसा होती है। आसक्ति के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस संपूर्ण दुख के समूह का उद्भव होता है। (3) (15)

अज्ञान के कारण गतिविधि होती है; गतिविधि के कारण अज्ञान होता है। गतिविधि के कारण चेतना होती है; चेतना के कारण गतिविधि होती है। चेतना के कारण मन और पदार्थ होते हैं; मन और पदार्थ के कारण चेतना होती है। मन और पदार्थ के कारण छह आधार होते हैं; छठे आधार के कारण मन और पदार्थ होते हैं। छठे आधार के कारण संपर्क होता है; संपर्क के कारण छठा आधार होता है। संपर्क के कारण संवेदना होती है; संवेदना के कारण संपर्क होता है। संवेदना के कारण लालसा होती है; लालसा के कारण संवेदना होती है। लालसा के कारण आसक्ति होती है; आसक्ति के कारण लालसा होती है। आसक्ति के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस संपूर्ण दुख का स्रोत बनता है। (4) (16)

(यहाँ समाप्त होता है) पारस्परिकता चतुष्कोण

आश्रित उत्पत्ति का विश्लेषण
सारांश

189

247. कर्म के कारण अज्ञान उत्पन्न होता है; [143] : P : चेतना के कारण अज्ञान उत्पन्न होता है; :P : मन के कारण अज्ञान उत्पन्न होता है; :P : छठे आधार के कारण अज्ञान उत्पन्न होता है; :P : संपर्क के कारण अज्ञान उत्पन्न होता है; : P : भावना के कारण अज्ञान उत्पन्न होता है; :P : लालसा के कारण अज्ञान उत्पन्न होता है; :P : आसक्ति के कारण अज्ञान उत्पन्न होता है; :P : अज्ञान के कारण कर्म उत्पन्न होता है; कर्म के कारण चेतना उत्पन्न होती है; चेतना के कारण मन उत्पन्न होता है; मन के कारण छठा आधार उत्पन्न होता है; छठे आधार के कारण संपर्क उत्पन्न होता है; संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है; भावना के कारण लालसा उत्पन्न होती है; लालसा के कारण आसक्ति उत्पन्न होती है; आसक्ति के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस समस्त दुख का स्रोत उत्पन्न होता है।
P = अनुच्छेद 243-246 देखें।
(यहाँ समाप्त होता है) सारांश
[144]
5. कारण चतुर्भुज
248. कौन सी अवस्थाएँ बुरी हैं? जब गलत दृष्टि से प्रेरित, मानसिक सुख के साथ बुरी चेतना उत्पन्न होती है, जिसमें दृश्य, श्रव्य, सुगंधित, स्वादयुक्त, स्पर्शनीय, वैचारिक वस्तुएँ हों या जो भी वस्तु हो; उस समय अज्ञान के कारण गतिविधि होती है; गतिविधि के कारण चेतना होती है; चेतना के कारण मन होता है; मन के कारण छठा आधार होता है; छठे आधार के कारण संपर्क होता है; संपर्क के कारण संवेदना होती है; संवेदना के कारण तृष्णा होती है; तृष्णा के कारण आसक्ति होती है; आसक्ति के कारण सृजन होता है; सृजन के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार दुखों के इस पूरे समूह का उद्भव होता है।
249. अज्ञान क्या है? ज्ञान का अभाव, दृष्टि का अभाव, अज्ञान का अवरोध, सुस्ती की बुरी जड़। यही अज्ञान कहलाता है।
पी = पैरा 1 80 देखें।

190

विश्लेषण की पुस्तक

उसमें 'अज्ञानता के कारण गतिविधि होती है' का क्या अर्थ है?
जो इच्छाशक्ति है, इच्छाशक्ति से प्रेरित होना, इच्छाशक्ति से प्रेरित होने की अवस्था। इसे 'अज्ञानता के कारण गतिविधि' कहा जाता है।
उसमें 'गतिविधि के कारण चेतना' का क्या अर्थ है? वह जो चेतना, मन, विचार, हृदय, प्रकाश, मन, मन का आधार, मन की नियंत्रक शक्ति, चेतना, चेतना का समूह है; और उपरोक्त पर निर्भर मन-
चेतना-तत्व। इसे 'गतिविधि के कारण चेतना' कहा जाता है।
इसमें 'चेतना के कारण मन का अस्तित्व है' का क्या अर्थ है?
भावों का समूह, बोधों का समूह, मानसिक अभिक्रियाओं का समूह। इसे ही 'चेतना के कारण मन' कहा जाता है।
इसमें 'मन के कारण छठा आधार होता है' का क्या अर्थ है?
जो चेतना, मन, विचार, हृदय, प्रकाश, मन, मन का आधार, मन की नियंत्रक शक्ति, चेतना, चेतना का समूह है; और उपरोक्त पर निर्भर मन-
चेतना-तत्व। इसे 'मन के कारण छठा आधार' कहा जाता है।
इसमें 'छठे बेस की वजह से संपर्क होता है' का क्या अर्थ है?
जो संपर्क है, संपर्क करना है, संपर्क की क्रिया है, संपर्क की अवस्था है। इसे 'छठे आधार के कारण संपर्क है' कहा जाता है।

इसमें 'संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है' का क्या अर्थ है? वह जो मानसिक सहजता, मानसिक आनंद, मानसिक संपर्क से उत्पन्न सुखदायक अनुभव, मानसिक संपर्क से उत्पन्न सुखदायक भावना है। इसे ही 'संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है' कहा जाता है। [145]

इसमें 'इंद्रिय के कारण तृष्णा' क्या है? वह जो वासना, मोह, प्रलोभन, अभिमान, तीव्र वासना, चेतना का मोह है। इसे ही 'इंद्रिय के कारण तृष्णा' कहा जाता है।

इसमें 'लालसा के कारण आसक्ति उत्पन्न होती है' का क्या अर्थ है?

गलत दृष्टिकोण, गलत दृष्टिकोण का सहारा लेना, गलत दृष्टिकोण का जंगल, गलत दृष्टिकोण का विकराल रूप, गलत दृष्टिकोण का डगमगाना, गलत दृष्टिकोण का बंधन, पकड़, दृढ़ता, दृढ़ विश्वास, विकृति, बुरा मार्ग, झूठा रास्ता, असत्यता, विधर्म का आधार, उलटी पकड़। इसे ही 'लालसा के कारण आसक्ति' कहा जाता है।

इसमें 'आसक्ति के कारण ही ऐसा होता है' का क्या अर्थ है?

आसक्ति को छोड़कर, यह भावनाओं का समूह है।

बोध का समूह, मानसिक अभिव्यंजनों का समूह, चेतना का समूह। इसे 'आसक्ति के कारण ही उत्पत्ति होती है' कहा जाता है।

इसमें 'जन्म होने के कारण ही जन्म होता है' का क्या अर्थ है? वह जो किसी अवस्था के लिए जन्म, उत्पत्ति, अस्तित्व, पूर्ण अस्तित्व, प्रकट होना है। इसी को 'जन्म होने के कारण ही जन्म होता है' कहा जाता है।

तो फिर 'जन्म के कारण ही वृद्धावस्था और मृत्यु होती है' का क्या अर्थ है? वृद्धावस्था होती है; मृत्यु होती है। तो फिर वृद्धावस्था क्या है? वह जो किसी भी अवस्था के लिए वृद्धावस्था, दुर्बलता, जीवन का क्षय है। इसे वृद्धावस्था कहते हैं। तो फिर मृत्यु क्या है? वह जो किसी भी अवस्था के लिए विनाश, क्षय, विखंडन, विघटन, अनित्यता, लुप्त होना है। इसे मृत्यु कहते हैं। यही वृद्धावस्था और मृत्यु है। इसी को 'जन्म के कारण ही वृद्धावस्था और मृत्यु होती है' कहते हैं।

इस प्रकार इस संपूर्ण पीड़ा के उत्पन्न होने का अर्थ है:

इस प्रकार यह संपूर्ण पीड़ा का संयोजन, संयोजन, संयोजन और प्रकटीकरण है। अतः इसे 'इस प्रकार इस संपूर्ण पीड़ा का उद्भव होता है' कहा जाता है। (1)

250. ... उस समय अज्ञान के कारण गतिविधि होती है; गतिविधि के कारण चेतना होती है; चेतना के कारण मन होता है; मन के कारण संपर्क होता है; संपर्क के कारण भावना होती है; भावना के कारण लालसा होती है; [146] लालसा के कारण आसक्ति होती है; आसक्ति के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस संपूर्ण दुख का समूह उत्पन्न होता है।

251. अज्ञान क्या है? ज्ञान का अभाव, दृष्टि का अभाव, अज्ञान का अवरोध, सुस्ती की बुरी जड़। यही अज्ञान कहलाता है।

P = अनुच्छेद 180 देखें।

इसमें 'अज्ञानता के कारण गतिविधि होती है' का क्या अर्थ है?

जो इच्छाशक्ति है, इच्छाशक्ति से प्रेरित होना, इच्छाशक्ति से प्रेरित होने की अवस्था। इसे 'अज्ञान के कारण गतिविधि' कहा जाता है।

इसमें 'गतिविधि के कारण चेतना उत्पन्न होती है' का क्या अर्थ है? वह जो चेतना, मन, विचार आदि है, और उपरोक्त के आधार पर, मन-चेतना-तत्व है। इसी को 'गतिविधि के कारण चेतना उत्पन्न होती है' कहा जाता है।

P = अनुच्छेद 184 देखें।

इसमें 'चेतना के कारण मन का अस्तित्व है' का क्या अर्थ है?

भावों का समूह, बोधों का समूह, मानसिक अभिक्रियाओं का समूह। इसे ही 'चेतना के कारण मन' कहा जाता है।
'मन के कारण संपर्क होता है', इसमें मन क्या है? संपर्क को छोड़कर (यह) भावना का समूह है, बोध का समूह है, मानसिक सहवर्तीताओं का समूह है, चेतना का समूह है। इसे ही मन कहते हैं।
इसमें 'मन के कारण संपर्क होता है' का क्या अर्थ है? वह जो संपर्क है, संपर्क करना है, संपर्क की क्रिया है, संपर्क की अवस्था है। इसे ही 'मन के कारण संपर्क होता है' कहा जाता है। इसलिए इसे "इस प्रकार इस संपूर्ण दुख का उद्गम होता है" कहा जाता है। (2)
P = अनुच्छेद 249 देखें।
252. ... उस समय अज्ञान के कारण गतिविधि उत्पन्न होती है; गतिविधि के कारण चेतना उत्पन्न होती है; चेतना के कारण मन और पदार्थ उत्पन्न होते हैं; मन और पदार्थ के कारण छठा आधार उत्पन्न होता है; छठे आधार के कारण संपर्क उत्पन्न होता है; संपर्क के कारण संवेदना उत्पन्न होती है; संवेदना के कारण लालसा उत्पन्न होती है; लालसा के कारण आसक्ति उत्पन्न होती है; आसक्ति के कारण सृजन होता है; सृजन के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस समस्त दुख का स्रोत उत्पन्न होता है।
253. अज्ञान क्या है? ज्ञान का अभाव, दृष्टि का अभाव, अज्ञान का अवरोध, सुस्ती की बुरी जड़। यही अज्ञान कहलाता है।
P = अनुच्छेद 180 देखें।
उसमें 'अज्ञानता के कारण गतिविधि होती है' का क्या अर्थ है?
जो इच्छाशक्ति है, इच्छाशक्ति से प्रेरित होना, इच्छाशक्ति से प्रेरित होने की अवस्था। इसे 'अज्ञान के कारण गतिविधि' कहा जाता है।
उसमें 'गतिविधि के कारण चेतना' क्या है? वह जो चेतना, मन, विचार, और उपरोक्त पर निर्भर मन-चेतना-तत्व है। इसे 'गतिविधि के कारण चेतना' कहा जाता है। [147]
P = अनुच्छेद 184 देखें।
उसमें 'चेतना के कारण मन और पदार्थ का अस्तित्व है' क्या है? मन है; पदार्थ है। उसमें मन क्या है? संवेदनाओं का समूह, बोधों का समूह, मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह। इसे मन कहते हैं। उसमें पदार्थ क्या है? नेत्र आधार की प्रारंभिक उत्पत्ति; कान आधार की प्रारंभिक उत्पत्ति; नाक आधार की प्रारंभिक उत्पत्ति; जीभ आधार की प्रारंभिक उत्पत्ति;

शरीर का आधार; या चेतना से उत्पन्न होने वाला, चेतना के कारण उत्पन्न होने वाला, चेतना से उत्पन्न होने वाला कोई भी अन्य भौतिक गुण। इसे पदार्थ कहते हैं। इस प्रकार यह मन और यह पदार्थ है। इसे 'चेतना के कारण मन और पदार्थ का अस्तित्व है' कहा जाता है।
'मन के कारण ही छठा आधार है'; मन है; पदार्थ है। उसमें मन क्या है? संवेदनाओं का समूह; बोधों का समूह, मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह। इसे मन कहते हैं। उसमें पदार्थ क्या है? वह भौतिक गुण जिस पर मन-चेतना-तत्व निर्भर करता है। इसे पदार्थ कहते हैं। इस प्रकार यह मन और यह पदार्थ है। इसे मन और पदार्थ कहते हैं।
इसमें 'मन और पदार्थ के कारण छठा आधार' क्या है? वह जो चेतना, मन, विचार, और उपरोक्त पर निर्भर मन-चेतना-तत्व है। इसे ही 'मन और पदार्थ के कारण छठा आधार' कहा जाता है।
पी — पैराग्राफ 184 देखें।
इसमें 'छठे बेस की वजह से संपर्क होता है' का क्या अर्थ है?
जो संपर्क है, संपर्क करना है, संपर्क की क्रिया है, संपर्क की अवस्था है। इसे 'छठे आधार के कारण संपर्क होता है' कहा जाता है।
पी: इसलिए इसे 'इस प्रकार इस संपूर्ण द्रव्यमान का उद्भव हुआ' कहा जाता है।
पीड़ा का। (3)
P = अनुच्छेद 249 देखें।

254. ... उस समय अज्ञान के कारण गतिविधि उत्पन्न होती है; गतिविधि के कारण चेतना उत्पन्न होती है; चेतना के कारण मन और पदार्थ उत्पन्न होते हैं; मन और पदार्थ के कारण छह आधार उत्पन्न होते हैं; छठे आधार के कारण संपर्क उत्पन्न होता है; संपर्क के कारण संवेदना

उत्पन्न होती है; संवेदना के कारण लालसा उत्पन्न होती है; लालसा के कारण आसक्ति उत्पन्न होती है; आसक्ति के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस समस्त दुख का स्रोत उत्पन्न होता है।
255. अज्ञान क्या है? ज्ञान का अभाव, दृष्टि का अभाव, अज्ञान का अवरोध, सुस्ती की बुरी जड़। इसे ही अज्ञान कहते हैं।
p = अनुच्छेद 180 देखें।
इसमें 'अज्ञानता के कारण गतिविधि होती है' का क्या अर्थ है?
जो इच्छाशक्ति है, इच्छाशक्ति होना, इच्छाशक्ति होने की अवस्था। इसे 'अज्ञानता के कारण गतिविधि होती है' कहा जाता है [148]

194

विश्लेषण की पुस्तक

इसमें 'गतिविधि के कारण चेतना उत्पन्न होती है' का क्या अर्थ है?
जो चेतना, मन, विचार आदि है; और उपरोक्त के आधार पर, मन-चेतना-तत्व। इसे 'गतिविधि के कारण चेतना' कहा जाता है।
P = अनुच्छेद 184 देखें।
तो फिर 'चेतना के कारण मन और पदार्थ का अस्तित्व है' का क्या अर्थ है? मन है; पदार्थ है। तो फिर मन क्या है? संवेदनाओं का समूह, बोधों का समूह, मानसिक क्रियाओं का समूह। इसे मन कहते हैं। तो फिर पदार्थ क्या है? नेत्र के आधार की उत्पत्ति; कान के आधार की उत्पत्ति; नाक के आधार की उत्पत्ति; जीभ के आधार की उत्पत्ति; शरीर के आधार की उत्पत्ति; या चेतना से उत्पन्न होने वाला, चेतना के कारण उत्पन्न होने वाला, चेतना द्वारा निर्मित कोई भी अन्य भौतिक गुण। इसे पदार्थ कहते हैं। इस प्रकार यह मन और यह पदार्थ है। इसे ही 'चेतना के कारण मन और पदार्थ का अस्तित्व है' कहते हैं।
'मन और पदार्थ के कारण छह आधार हैं; मन है; पदार्थ है। इसमें मन क्या है? संवेदनाओं का समूह, बोधों का समूह, मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह। इसे मन कहते हैं। इसमें पदार्थ क्या है? चार प्रमुख तत्व और वह भौतिक गुण जिस पर मन-चेतना-तत्व निर्भर करता है। इसे पदार्थ कहते हैं। इस प्रकार यह मन और यह पदार्थ है। इसे मन और पदार्थ कहते हैं।
इसमें 'मन और पदार्थ के कारण छह आधार होते हैं' का क्या अर्थ है? आँख का आधार, कान का आधार, नाक का आधार, जीभ का आधार, शरीर का आधार, मन का आधार। इसी को 'मन और पदार्थ के कारण छह आधार होते हैं' कहा जाता है।
इसमें 'छठे बेस की वजह से संपर्क होता है' का क्या अर्थ है?
जो संपर्क है, संपर्क करना है, संपर्क की क्रिया है, संपर्क की अवस्था है। इसे 'छठे आधार के कारण संपर्क होता है' कहा जाता है। :P: इसलिए इसे "इस प्रकार इस संपूर्ण पीड़ा का उद्भव होता है" कहा जाता है। (4)
p = पैराग्राफ 249 देखें।
(यहाँ समाप्त होता है) कारण चतुर्भुज
6. रूट टेट्राड
256. ... उस समय अज्ञान के कारण अज्ञान में निहित कर्म होते हैं; कर्म के कारण अज्ञान में निहित चेतना होती है।

आश्रित उत्पत्ति का विश्लेषण

195

चेतना के कारण चेतना में निहित मन उत्पन्न होता है; मन के कारण मन में निहित छठा आधार उत्पन्न होता है; छठे आधार के कारण छठे आधार में निहित संपर्क उत्पन्न होता है; संपर्क के कारण संपर्क में निहित भावना उत्पन्न होती है; भावना के कारण भावना में निहित लालसा उत्पन्न होती है; लालसा के कारण लालसा में निहित आसक्ति उत्पन्न होती है; आसक्ति के कारण सृजन होता है; सृजन के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस संपूर्ण दुख का स्रोत उत्पन्न होता है।
257. अज्ञान क्या है? ज्ञान का अभाव, दृष्टि का अभाव, अज्ञान का अवरोध, सुस्ती की बुरी जड़। यही अज्ञान कहलाता है।
P = अनुच्छेद 180 देखें।

इसमें 'अज्ञान के कारण अज्ञान में निहित गतिविधि' का क्या अर्थ है? वह जो इच्छाशक्ति है, इच्छाशक्ति से प्रेरित होना है, इच्छाशक्ति से प्रेरित होने की अवस्था है। इसे ही 'अज्ञान के कारण अज्ञान में निहित गतिविधि' कहा जाता है।
उसमें 'गतिविधि के कारण गतिविधि में निहित चेतना' का क्या अर्थ है? वह जो चेतना, मन, विचार है।
पी: और, उपर्युक्त के आधार पर, मन-चेतना-तत्व।
इसे 'गतिविधि के कारण चेतना उत्पन्न होती है जो गतिविधि में निहित होती है' कहा जाता है।
P = अनुच्छेद 184 देखें।
इसमें 'चेतना के कारण चेतना में निहित मन' का क्या अर्थ है? भावों का समूह, बोधों का समूह, मानसिक अभिक्रियाओं का समूह। इसी को 'चेतना के कारण चेतना में निहित मन' कहा जाता है।
उसमें 'मन के कारण मन में निहित छठा आधार' क्या है? वह जो चेतना, मन, विचार है।
पी: और, उपर्युक्त के आधार पर, मन-चेतना-तत्व।
इसे 'मन के कारण मन में निहित छठा आधार' कहा जाता है।
पैरा 184 देखें।
इसमें 'छठे आधार के कारण छठे आधार में निहित संपर्क है' का क्या अर्थ है? वह जो संपर्क है, संपर्क करना है, संपर्क की क्रिया है, संपर्क की अवस्था है। इसे ही 'छठे आधार के कारण छठे आधार में निहित संपर्क है' कहा जाता है।

इसमें वह क्या है जो संपर्क के कारण उत्पन्न होने वाली अनुभूति को दर्शाता है? मानसिक शांति, मानसिक आनंद, मानसिक संपर्क से उत्पन्न होने वाला सुखद अनुभव, मानसिक संपर्क से उत्पन्न होने वाली सुखद अनुभूति। इसे ही 'संपर्क के कारण उत्पन्न होने वाली अनुभूति' कहा जाता है।
इसमें 'भावना के कारण भावना से उपजी लालसा' का क्या अर्थ है? वह जो वासना, मोह, चेतना का मोह है। इसे ही 'भावना के कारण भावना से उपजी लालसा' कहा जाता है।
P = अनुच्छेद 249 देखें।
इसमें 'लालसा के कारण लालसा में निहित आसक्ति' क्या है? वह जो गलत दृष्टिकोण है, गलत दृष्टिकोण का सहारा लेना है, विधर्म का आधार है, उलटी पकड़ है। इसे ही 'लालसा के कारण लालसा में निहित आसक्ति' कहा जाता है। इसलिए इसे ही "इस प्रकार इस संपूर्ण दुख का उद्गम होता है" कहा जाता है। (1) (5) [150]
P = अनुच्छेद 249 देखें।
258. ... उस समय अज्ञान के कारण अज्ञान से उपजी गतिविधि उत्पन्न होती है; गतिविधि के कारण गतिविधि से उपजी चेतना उत्पन्न होती है; चेतना के कारण चेतना से उपजी मन उत्पन्न होता है; मन के कारण मन से उपजी संपर्क उत्पन्न होता है; संपर्क के कारण संपर्क से उपजी भावना उत्पन्न होती है; भावना के कारण भावना से उपजी लालसा उत्पन्न होती है; लालसा के कारण लालसा से उपजी आसक्ति उत्पन्न होती है; आसक्ति के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस समस्त दुख का स्रोत उत्पन्न होता है।
259. अज्ञान क्या है? ज्ञान का अभाव, दृष्टि का अभाव, अज्ञान का अवरोध, सुस्ती की बुरी जड़। यही अज्ञान कहलाता है।
P = अनुच्छेद 180 देखें।
इसमें 'अज्ञान के कारण अज्ञान से उपजी गतिविधि' का क्या अर्थ है? वह जो इच्छाशक्ति है, इच्छाशक्ति से युक्त होना है, इच्छाशक्ति से युक्त होने की अवस्था है। इसी को 'अज्ञान के कारण अज्ञान से उपजी गतिविधि' कहा जाता है।
उसमें 'गतिविधि के कारण चेतना उत्पन्न होती है' का क्या अर्थ है? वह जो चेतना, मन, विचार है।

197

पी: और, उपर्युक्त के आधार पर, मन-चेतना-तत्व।
इसे 'गतिविधि के कारण चेतना उत्पन्न होती है' कहा जाता है।
P = अनुच्छेद 184 देखें।
इसमें 'चेतना के कारण चेतना में निहित मन' का क्या अर्थ है? भावों का समूह, बोधों का समूह, मानसिक अभिक्रियाओं का समूह। इसी को 'चेतना के कारण चेतना में निहित मन' कहा जाता है।
'मन के कारण मन में निहित संपर्क होता है', इसमें मन क्या है? संपर्क को छोड़कर (यह) भावना का समूह है, बोध का समूह है, मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह है, चेतना का समूह है। इसे ही मन कहते हैं।
इसमें 'मन के कारण मन में निहित संपर्क' का क्या अर्थ है? वह जो संपर्क है, संपर्क करना है, संपर्क की क्रिया है, संपर्क की अवस्था है। इसे ही 'मन के कारण मन में निहित संपर्क' कहा जाता है। (2) (6)
पी सा देखें पैरा 249.
260. ... उस समय अज्ञान के कारण अज्ञान से उपजी गतिविधि होती है; गतिविधि के कारण गतिविधि से उपजी चेतना होती है; चेतना के कारण चेतना से उपजी मन और पदार्थ होते हैं; मन और पदार्थ के कारण मन और पदार्थ से उपजी छठी अवस्था होती है; छठी अवस्था के कारण छठी अवस्था से उपजी संपर्क होता है; संपर्क के कारण संपर्क से उपजी भावना होती है; भावना के कारण भावना से उपजी लालसा होती है; लालसा के कारण लालसा से उपजी आसक्ति होती है; आसक्ति के कारण जन्म होता है; [151] जन्म के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस संपूर्ण दुख का उद्‍भव होता है।
261. अज्ञान क्या है? ज्ञान का अभाव, दृष्टि का अभाव, अज्ञान का अवरोध, सुस्ती की बुरी जड़। यही अज्ञान कहलाता है।
^ = पैराग्राफ 180 देखें।
इसमें 'अज्ञान के कारण अज्ञान से उपजी गतिविधि' का क्या अर्थ है? वह जो इच्छाशक्ति है, इच्छाशक्ति से युक्त होना है, इच्छाशक्ति से युक्त होने की अवस्था है। इसी को 'अज्ञान के कारण अज्ञान से उपजी गतिविधि' कहा जाता है।

198

विश्लेषण की पुस्तक

उसमें 'गतिविधि के कारण गतिविधि में निहित चेतना' का क्या अर्थ है? वह जो चेतना, मन, विचार है।
पी: और, उपर्युक्त के आधार पर, मन-चेतना-तत्व।
इसे 'गतिविधि के कारण चेतना उत्पन्न होती है जो गतिविधि में निहित होती है' कहा जाता है।
P = अनुच्छेद 184 देखें।
तो फिर 'चेतना के कारण मन और चेतना में निहित पदार्थ' का क्या अर्थ है? मन है; पदार्थ है। तो फिर मन क्या है? संवेदनाओं का समूह, बोधों का समूह, मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह। इसे मन कहते हैं। तो फिर पदार्थ क्या है? नेत्र के आधार की उत्पत्ति; कान के आधार की उत्पत्ति; नाक के आधार की उत्पत्ति; जीभ के आधार की उत्पत्ति; शरीर के आधार की उत्पत्ति; या चेतना से उत्पन्न, चेतना के कारण उत्पन्न, चेतना द्वारा निर्मित कोई भी अन्य भौतिक गुण। इसे पदार्थ कहते हैं। यही मन और पदार्थ है। इसे ही 'चेतना के कारण मन और चेतना में निहित पदार्थ' कहते हैं।
मन और पदार्थ के कारण छठा आधार है, जो मन और पदार्थ में निहित है*, मन है; पदार्थ है। उसमें मन क्या है? संवेदनाओं का समूह, बोधों का समूह, मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह। इसे मन कहते हैं। उसमें पदार्थ क्या है? वह भौतिक गुण जिस पर मन-चेतना-तत्व निर्भर करता है। इसे पदार्थ कहते हैं। इस प्रकार यह मन और यह पदार्थ है। इसे मन और पदार्थ कहते हैं।
इसमें 'मन और पदार्थ के कारण मन और पदार्थ में निहित छठा आधार' क्या है? वह जो चेतना, मन, विचार, और उपरोक्त पर निर्भर मन-चेतना तत्व है। इसे 'मन और पदार्थ के कारण मन और पदार्थ में निहित छठा आधार' कहा जाता है।
P = अनुच्छेद 184 देखें।

उसमें 'छठे आधार के कारण छठे आधार में निहित संपर्क है*' क्या है? वह जो संपर्क है, संपर्क करना है, संपर्क की क्रिया है, संपर्क की अवस्था है। इसे 'छठे आधार के कारण छठे आधार में निहित संपर्क है*' कहा जाता है। :P: इसलिए इसे "इस प्रकार इस संपूर्ण पीड़ा का उद्भव होता है" कहा जाता है। (3) (7) [152]
P = अनुच्छेद 249 देखें।
262. ... उस समय अज्ञान के कारण अज्ञान में निहित कर्म होते हैं; कर्म के कारण अज्ञान में निहित चेतना होती है।

चेतना के कारण मन और चेतना में निहित पदार्थ उत्पन्न होते हैं; मन और पदार्थ के कारण मन और पदार्थ में निहित छह आधार उत्पन्न होते हैं; छठे आधार के कारण छठे आधार में निहित संपर्क उत्पन्न होता है; संपर्क के कारण संपर्क में निहित भावना उत्पन्न होती है; भावना के कारण भावना में निहित लालसा उत्पन्न होती है; लालसा के कारण लालसा में निहित आसक्ति उत्पन्न होती है; आसक्ति के कारण सृजन होता है; सृजन के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस संपूर्ण दुख का स्रोत उत्पन्न होता है।
263. अज्ञान क्या है? ज्ञान का अभाव, दृष्टि का अभाव, अज्ञान का अवरोध, सुस्ती की बुरी जड़। यही अज्ञान कहलाता है।
P = अनुच्छेद 180 देखें।
इसमें 'अज्ञान के कारण अज्ञान से उपजी गतिविधि' का क्या अर्थ है? वह जो इच्छाशक्ति है, इच्छाशक्ति से युक्त होना, इच्छाशक्ति से युक्त होने की अवस्था। इसे ही 'अज्ञान के कारण अज्ञान से उपजी गतिविधि' कहा जाता है।
उसमें 'गतिविधि के कारण चेतना उत्पन्न होती है' का क्या अर्थ है? वह जो चेतना, मन, विचार है।
पी: और, उपर्युक्त के आधार पर, मन-चेतना-तत्व।
इसे 'गतिविधि के कारण चेतना उत्पन्न होती है जो गतिविधि में निहित होती है' कहा जाता है।
P = अनुच्छेद 184 देखें।
तो फिर 'चेतना के कारण मन और चेतना में निहित पदार्थ का अस्तित्व है' का क्या अर्थ है? मन है; पदार्थ है। तो फिर मन क्या है? संवेदनाओं का समूह, बोधों का समूह, मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह। इसे मन कहते हैं। तो फिर पदार्थ क्या है? नेत्र के आधार की उत्पत्ति; कान के आधार की उत्पत्ति; नाक के आधार की उत्पत्ति; जीभ के आधार की उत्पत्ति; शरीर के आधार की उत्पत्ति; या चेतना से उत्पन्न, चेतना के कारण उत्पन्न, चेतना द्वारा निर्मित कोई भी अन्य भौतिक गुण। इसे पदार्थ कहते हैं। यही मन और पदार्थ है। इसे ही 'चेतना के कारण मन और चेतना में निहित पदार्थ का अस्तित्व है' कहते हैं।
'मन और पदार्थ के कारण छह आधार हैं, जो मन और पदार्थ में निहित हैं', मन है; पदार्थ है। इसमें मन क्या है? भावना का समूह, बोध का समूह, मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह। इसे ही मन कहते हैं। इसमें पदार्थ क्या है?

चार प्रमुख तत्व और वह भौतिक गुण जिस पर मन-चेतना-तत्व निर्भर करता है। इसे पदार्थ कहते हैं। इस प्रकार यह मन और यह पदार्थ है। इसे मन और पदार्थ कहते हैं।
उसमें 'मन और पदार्थ के कारण मन और पदार्थ में निहित छह आधार हैं' क्या है? [153] आँख आधार, कान आधार, नाक आधार, जीभ आधार, शरीर आधार, मन आधार। इसे 'मन और पदार्थ के कारण मन और पदार्थ में निहित छह आधार हैं' कहा जाता है।
इसमें 'छठे आधार के कारण छठे आधार में निहित संपर्क' का क्या अर्थ है? वह जो संपर्क है, संपर्क करना है, संपर्क की क्रिया है, संपर्क की अवस्था है। इसे ही 'छठे आधार के कारण छठे आधार में निहित संपर्क' कहा जाता है।

इसमें 'संपर्क के कारण संपर्क में निहित भावना' का क्या अर्थ है? वह जो मानसिक शांति, मानसिक आनंद, मानसिक संपर्क से उत्पन्न सुखद अनुभूति, मानसिक संपर्क से उत्पन्न सुखद अनुभूति है। इसे ही 'संपर्क के कारण संपर्क में निहित भावना' कहा जाता है।
इसमें 'भावना के कारण भावना से उपजी लालसा' का क्या अर्थ है? वह जो वासना, मोह, चेतना का मोह है। इसे ही 'भावना के कारण भावना से उपजी लालसा' कहा जाता है।
P = अनुच्छेद 249 देखें।
इसमें 'लालसा के कारण लालसा से उपजी आसक्ति' क्या है? वह जो गलत दृष्टिकोण है, गलत दृष्टिकोण का सहारा लेना है, विधर्म का आधार है, उलटी पकड़ है। इसे ही 'लालसा के कारण लालसा से उपजी आसक्ति' कहा जाता है। इसलिए इसे ही "इस प्रकार इस संपूर्ण दुख का उद्‌गम होता है" कहा जाता है। (4) (8)
P = अनुच्छेद 249 देखें।
(यहाँ समाप्त होता है) रूट टेट्राड
7. एसोसिएशन टेट्राड
264. ... उस समय अज्ञान के कारण अज्ञान से जुड़ी गतिविधि होती है; गतिविधि के कारण गतिविधि से जुड़ी चेतना होती है; चेतना के कारण चेतना से जुड़ा मन होता है; मन के कारण मन से जुड़ा छठा आधार होता है; छठे आधार के कारण...

छठे आधार से संपर्क; संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है; भावना के कारण लालसा उत्पन्न होती है; लालसा के कारण आसक्ति उत्पन्न होती है; आसक्ति के कारण सृजन होता है; सृजन के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस संपूर्ण दुख का स्रोत उत्पन्न होता है।
265. अज्ञान क्या है? ज्ञान का अभाव, दृष्टि का अभाव, अज्ञान का अवरोध, सुस्ती की बुरी जड़। यही अज्ञान कहलाता है।
P = अनुच्छेद 180 देखें।
इसमें 'अज्ञान के कारण अज्ञान से संबंधित गतिविधि होती है' का क्या अर्थ है? वह जो इच्छाशक्ति है, इच्छाशक्ति से युक्त होना, इच्छाशक्ति की अवस्था। इसे ही 'अज्ञान के कारण अज्ञान से संबंधित गतिविधि होती है' कहा जाता है।
इसमें 'गतिविधि के कारण चेतना का अस्तित्व' का क्या अर्थ है? वह जो चेतना, मन, विचार, और उपरोक्त के आधार पर, मन-चेतना तत्व है। इसे ही 'गतिविधि के कारण चेतना का अस्तित्व' कहा जाता है।
P = अनुच्छेद 184 देखें।
इसमें 'चेतना के कारण चेतना से जुड़ा मन' का क्या अर्थ है? भावों का समूह, बोधों का समूह, मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह। इसी को 'चेतना के कारण चेतना से जुड़ा मन' कहा जाता है।
उसमें 'मन के कारण मन से जुड़ा छठा आधार क्या है?' [154] वह जो चेतना, मन, विचार, और उपरोक्त पर निर्भर मन-चेतना-तत्व है। इसे 'मन के कारण मन से जुड़ा छठा आधार' कहा जाता है।
P = अनुच्छेद 184 देखें।
यहां 'छठे स्वर के कारण छठे स्वर से जुड़ा संपर्क होता है' का क्या अर्थ है? वह जो संपर्क है, संपर्क करना, संपर्क की क्रिया, संपर्क की अवस्था। इसे ही 'छठे स्वर के कारण छठे स्वर से जुड़ा संपर्क होता है' कहा जाता है।
इसमें 'संपर्क के कारण संपर्क से जुड़ी भावना उत्पन्न होती है' का क्या अर्थ है? वह जो मानसिक शांति, मानसिक आनंद है।

मानसिक संपर्क से उत्पन्न सुखद अनुभव, मानसिक संपर्क से उत्पन्न सुखद अनुभूति। इसे 'संपर्क के कारण उससे जुड़ी अनुभूति' कहा जाता है।
इसमें 'भावना के कारण भावना से जुड़ी लालसा' का क्या अर्थ है? वह जो वासना, मोह, चेतना का मोह है। इसे ही 'भावना के कारण भावना से जुड़ी लालसा' कहते हैं।
P = अनुच्छेद 249 देखें।
इसमें 'इच्छा के कारण आसक्ति उत्पन्न होती है' का क्या अर्थ है? यह गलत दृष्टिकोण है, गलत दृष्टिकोण का सहारा लेना है, विधर्म का आधार है, उलटी पकड़ है। इसी को 'इच्छा के कारण आसक्ति उत्पन्न होती है' कहते हैं।
पी: इसलिए इसे "इस प्रकार इस संपूर्ण द्रव्यमान का उदय हुआ" कहा जाता है।
पीड़ा का"। (1) (9)
P = अनुच्छेद 249 देखें।

266. ... उस समय अज्ञान के कारण अज्ञान से जुड़ी गतिविधि होती है; गतिविधि के कारण गतिविधि से जुड़ी चेतना होती है; चेतना के कारण चेतना से जुड़ा मन होता है; मन के कारण मन से जुड़ा संपर्क होता है; संपर्क के कारण संपर्क से जुड़ा भाव होता है; भाव के कारण भाव से जुड़ी लालसा होती है; लालसा के कारण लालसा से जुड़ा आसक्ति होता है; आसक्ति के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस संपूर्ण दुख का स्रोत बनता है।
267. अज्ञान क्या है? ज्ञान का अभाव, दृष्टि का अभाव, अज्ञान का अवरोध, सुस्ती की बुरी जड़। इसे ही अज्ञान कहते हैं।
P = अनुच्छेद 180 देखें।
उसमें 'अज्ञान के कारण अज्ञान से जुड़ी गतिविधि होती है' क्या है? [155] जो इच्छाशक्ति है, इच्छाशक्ति होना, इच्छाशक्ति होने की अवस्था। इसे 'अज्ञान के कारण अज्ञान से जुड़ी गतिविधि होती है' कहा जाता है।
उसमें 'गतिविधि के कारण गतिविधि से जुड़ी चेतना' का क्या अर्थ है? वह जो चेतना, मन, विचार, और उपरोक्त के आधार पर, मन-चेतना है।

आश्रित उत्पत्ति का विश्लेषण

203

तत्व। इसे 'गतिविधि के कारण गतिविधि से जुड़ी चेतना' कहा जाता है।
P = अनुच्छेद 184 देखें।
इसमें 'चेतना के कारण चेतना से जुड़ा मन' का क्या अर्थ है? भावों का समूह, बोधों का समूह, मानसिक अभिक्रियाओं का समूह। इसी को 'चेतना के कारण चेतना से जुड़ा मन' कहा जाता है।
'मन के कारण मन से संपर्क जुड़ा होता है', इसमें मन क्या है? संपर्क को छोड़कर (यह) भावना का समूह है, बोध का समूह है, मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह है, चेतना का समूह है। इसे ही मन कहते हैं।
इसमें 'मन के कारण मन से जुड़ा संपर्क' क्या है? वह जो संपर्क है, संपर्क करना है, संपर्क की क्रिया है, संपर्क की अवस्था है। इसे ही 'मन के कारण मन से जुड़ा संपर्क' कहा जाता है। :P: इसलिए इसे "इस प्रकार इस संपूर्ण दुख का उद्गम होता है" कहा जाता है। (2) (10)
P = अनुच्छेद 249 देखें।
268. ... उस समय अज्ञान के कारण अज्ञान से जुड़ी गतिविधि होती है; गतिविधि के कारण गतिविधि से जुड़ी चेतना होती है; चेतना के कारण मन और पदार्थ होते हैं, चेतना से जुड़ा मन होता है; मन और पदार्थ के कारण मन से जुड़ा छठा आधार होता है; छठे आधार के कारण छठे आधार से जुड़ा संपर्क होता है; संपर्क के कारण संपर्क से जुड़ा भाव होता है; भाव के कारण भाव से जुड़ी लालसा होती है; लालसा के कारण लालसा से जुड़ा आसक्ति होता है; आसक्ति के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस संपूर्ण दुख के समूह की उत्पत्ति होती है।
269. अज्ञान क्या है? ज्ञान का अभाव, दृष्टि का अभाव, अज्ञान का अवरोध, सुस्ती की बुरी जड़। इसे ही अज्ञान कहते हैं।
P = अनुच्छेद 180 देखें।

उसमें 'अज्ञान के कारण अज्ञान से जुड़ी गतिविधि होती है' का क्या अर्थ है? वह जो इच्छाशक्ति है, अस्तित्व है।

स्वैच्छिक, स्वैच्छिक होने की अवस्था। इसे 'अज्ञानता के कारण अज्ञानता से जुड़ी गतिविधि' कहा जाता है। [156]
इसमें 'गतिविधि के कारण चेतना का अस्तित्व' का क्या अर्थ है? वह जो चेतना, मन, विचार, और उपरोक्त के आधार पर, मन-चेतना तत्व है। इसे ही 'गतिविधि के कारण चेतना का अस्तित्व' कहा जाता है।
P = अनुच्छेद 184 देखें।
इसमें 'चेतना के कारण मन और पदार्थ का अस्तित्व है, मन चेतना से जुड़ा हुआ है' का क्या अर्थ है? मन है; पदार्थ है। इसमें मन क्या है? संवेदनाओं का समूह, बोधों का समूह, मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह। इसे मन कहते हैं। इसमें पदार्थ क्या है? नेत्र के आधार की प्रारंभिक उत्पत्ति; कान के आधार की प्रारंभिक उत्पत्ति; नाक के आधार की प्रारंभिक उत्पत्ति; जीभ के आधार की प्रारंभिक उत्पत्ति; शरीर के आधार की प्रारंभिक उत्पत्ति; या चेतना से उत्पन्न होने वाला, चेतना के कारण उत्पन्न होने वाला, चेतना द्वारा निर्मित कोई भी अन्य भौतिक गुण। इसे पदार्थ कहते हैं। इस प्रकार यह मन और यह पदार्थ है। इसे 'चेतना के कारण मन और पदार्थ का अस्तित्व है, मन चेतना से जुड़ा हुआ है' कहा जाता है।
मन और पदार्थ के कारण मन से जुड़ा छठा आधार* है; मन है; पदार्थ है। उसमें मन क्या है? संवेदनाओं का समूह, बोधों का समूह, मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह। इसे मन कहते हैं। उसमें पदार्थ क्या है? वह भौतिक गुण जिस पर मन-चेतना-तत्व निर्भर करता है। इसे पदार्थ कहते हैं। इस प्रकार यह मन और यह पदार्थ है। इसे मन और पदार्थ कहते हैं।
इसमें 'मन और पदार्थ के कारण मन से जुड़ा छठा आधार' क्या है? वह जो चेतना, मन, विचार आदि है, और उपरोक्त के आधार पर, मन-चेतना-तत्व है। इसे ही 'मन और पदार्थ के कारण मन से जुड़ा छठा आधार' कहा जाता है।
P = अनुच्छेद 184 देखें।
इसमें 'छठे आधार के कारण छठे आधार से जुड़ा संपर्क होता है' का क्या अर्थ है? वह जो संपर्क है, संपर्क करना, संपर्क की क्रिया, संपर्क की अवस्था। इसे 'छठे आधार के कारण छठे आधार से जुड़ा संपर्क होता है' कहा जाता है।
पी: इसलिए इसे "इस प्रकार इस संपूर्ण द्रव्यमान का उदय हुआ" कहा जाता है।
पीड़ा का**. (3) (11)
पी — पैराग्राफ 249 देखें।

270. ... उस समय अज्ञान के कारण अज्ञान से जुड़ी गतिविधि होती है; गतिविधि के कारण गतिविधि से जुड़ी चेतना होती है; चेतना के कारण मन और पदार्थ होते हैं, चेतना से जुड़ा मन होता है; मन और पदार्थ के कारण छह आधार होते हैं, छठा आधार मन से जुड़ा होता है; छठे आधार के कारण छठे आधार से जुड़ा संपर्क होता है; संपर्क [157] के कारण संपर्क से जुड़ी भावना होती है; भावना के कारण भावना से जुड़ी लालसा होती है; लालसा के कारण लालसा से जुड़ी आसक्ति होती है; आसक्ति के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस संपूर्ण दुख के समूह का उद्भव होता है।
271. अज्ञान क्या है? ज्ञान का अभाव, दृष्टि का अभाव, अज्ञान का अवरोध, सुस्ती की बुरी जड़। यही अज्ञान कहलाता है।
P = अनुच्छेद 180 देखें।
इसमें 'अज्ञान के कारण अज्ञान से संबंधित गतिविधि होती है' का क्या अर्थ है? वह जो इच्छाशक्ति है, इच्छाशक्ति से जुड़ा होना है, इच्छाशक्ति की अवस्था है। इसी को 'अज्ञान के कारण अज्ञान से संबंधित गतिविधि होती है' कहा जाता है।

इसमें 'गतिविधि के कारण चेतना का अस्तित्व' का क्या अर्थ है? वह जो चेतना, मन, विचार, और उपरोक्त के आधार पर, मन-चेतना तत्व है। इसे ही 'गतिविधि के कारण चेतना का अस्तित्व' कहा जाता है।

P = अनुच्छेद 184 देखें।

तो फिर 'चेतना के कारण मन और पदार्थ का अस्तित्व है, मन चेतना से जुड़ा हुआ है' का क्या अर्थ है? मन है; पदार्थ है। तो फिर मन क्या है? संवेदनाओं का समूह, बोधों का समूह; मानसिक क्रियाओं का समूह। इसे मन कहते हैं। तो फिर पदार्थ क्या है? नेत्र के आधार की उत्पत्ति; कान के आधार की उत्पत्ति; नाक के आधार की उत्पत्ति; जीभ के आधार की उत्पत्ति; शरीर के आधार की उत्पत्ति; या चेतना से उत्पन्न होने वाला, चेतना के कारण उत्पन्न होने वाला, चेतना द्वारा निर्मित कोई भी अन्य भौतिक गुण। इसे पदार्थ कहते हैं। यही मन और पदार्थ है। इसे ही 'चेतना के कारण मन और पदार्थ का अस्तित्व है, मन चेतना से जुड़ा हुआ है' कहते हैं।

206

विश्लेषण की पुस्तक

'मन और पदार्थ के कारण छह आधार हैं, छठा आधार मन से जुड़ा है', मन है; पदार्थ है। इसमें मन क्या है? संवेदनाओं का समूह, बोधों का समूह, मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह। इसे मन कहते हैं। इसमें पदार्थ क्या है? चार महा तत्व और वह भौतिक गुण जिस पर मन-चेतना-तत्व निर्भर करता है। इसे पदार्थ कहते हैं। इस प्रकार यह मन और यह पदार्थ है। इसे मन और पदार्थ कहते हैं।

इसमें 'मन और पदार्थ के कारण छह आधार हैं, छठा आधार मन से संबंधित है' क्या है? आँख आधार, कान आधार, नाक आधार, जीभ आधार, शरीर आधार, मन आधार। इसे 'मन और पदार्थ के कारण छह आधार हैं, छठा आधार मन से संबंधित है' कहा जाता है। • [158]

इसमें 'छठे आधार के कारण छठे आधार से जुड़ा संपर्क है' का क्या अर्थ है? वह जो संपर्क है, संपर्क करना, संपर्क की क्रिया, संपर्क की अवस्था। इसे 'छठे आधार के कारण छठे आधार से जुड़ा संपर्क है' कहा जाता है। :P: इसलिए इसे "इस प्रकार इस संपूर्ण पीड़ा का उद्भव होता है" कहा जाता है। (4) (12)

P = अनुच्छेद 249 देखें।

(यहाँ समाप्त होता है) एसोसिएशन टेट्राड

8. पारस्परिकता चतुष्कोण

272. ... उस समय अज्ञान के कारण गतिविधि होती है; गतिविधि के कारण अज्ञान होता है। गतिविधि के कारण चेतना होती है; चेतना के कारण गतिविधि होती है। चेतना के कारण मन होता है; मन के कारण चेतना होती है। मन के कारण छठा आधार होता है; छठे आधार के कारण मन होता है। छठे आधार के कारण संपर्क होता है; संपर्क के कारण छठा आधार होता है। संपर्क के कारण संवेदना होती है; संवेदना के कारण संपर्क होता है। संवेदना के कारण तृष्णा होती है; तृष्णा के कारण संवेदना होती है। तृष्णा के कारण आसक्ति होती है; आसक्ति के कारण तृष्णा होती है। आसक्ति के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस समस्त दुख का उद्भव होता है।

आश्रित उत्पत्ति का विश्लेषण

207

273. अज्ञान क्या है? ज्ञान का अभाव, दृष्टि का अभाव, अज्ञान का अवरोध, सुस्ती की बुरी जड़। इसे ही अज्ञान कहते हैं।

P = अनुच्छेद 180 देखें।

इसमें 'अज्ञानता के कारण गतिविधि होती है' का क्या अर्थ है?

जो इच्छाशक्ति है, इच्छाशक्ति से प्रेरित होना, इच्छाशक्ति से प्रेरित होने की अवस्था। इसे 'अज्ञान के कारण गतिविधि' कहा जाता है।

इसमें 'कर्म के कारण अज्ञान भी होता है' का क्या अर्थ है? ज्ञान का अभाव, दृष्टि का अभाव, अज्ञान का अवरोध, सुस्ती की बुरी जड़। इसी को 'कर्म के कारण अज्ञान भी होता है' कहा जाता है।

P = अनुच्छेद 180 देखें।

इसमें 'गतिविधि के कारण चेतना उत्पन्न होती है' का क्या अर्थ है? वह जो चेतना, मन, विचार आदि है, और उपरोक्त के आधार पर, मन-चेतना-तत्व है। इसी को 'गतिविधि के कारण चेतना उत्पन्न होती है' कहा जाता है।

P = अनुच्छेद 184 देखें।

इसमें 'चेतना के कारण ही गतिविधि होती है' का क्या अर्थ है? वह जो इच्छाशक्ति है, इच्छाशक्तियुक्त होना है, इच्छाशक्तियुक्त होने की अवस्था है। इसी को 'चेतना के कारण ही गतिविधि होती है' कहा जाता है।

इसमें 'चेतना के कारण मन का अस्तित्व है' का क्या अर्थ है?

भावों का समूह, बोधों का समूह, मानसिक अभिक्रियाओं का समूह। इसे ही 'चेतना के कारण मन' कहा जाता है।

उसमें 'मन के कारण ही चेतना है' क्या है? वह जो चेतना, मन, विचार, :P: और उपरोक्त पर निर्भर, मन-चेतना-तत्व है। इसे 'मन के कारण ही चेतना है' कहा जाता है। [159]

P = अनुच्छेद 184 देखें।

इसमें 'मन के कारण छठा आधार' क्या है? वह जो चेतना, मन, विचार आदि है, और उपरोक्त के आधार पर, मन-चेतना-तत्व है। इसे ही 'मन के कारण छठा आधार' कहा जाता है।

P = अनुच्छेद 184 देखें।

उसमें 'छठे आधार के कारण मन भी है' का क्या अर्थ है? भावना का समूह, बोध का समूह, समूह-

208

विश्लेषण की पुस्तक

मानसिक सहवर्तीताओं का द्वार। इसे 'छठे आधार के कारण भी मन होता है' कहा जाता है।

इसमें 'छठे आधार के कारण संपर्क होता है' का क्या अर्थ है? वह जो संपर्क है, संपर्क करना है, संपर्क की क्रिया है, संपर्क की अवस्था है। इसे 'छठे आधार के कारण संपर्क होता है' कहा जाता है। इसमें 'संपर्क के कारण छठा आधार भी होता है' का क्या अर्थ है? वह जो चेतना, मन, विचार है, और उपरोक्त के आधार पर, मन-चेतना-तत्व है। इसे 'संपर्क के कारण छठा आधार भी होता है' कहा जाता है।

P = अनुच्छेद 184 देखें।

इसमें 'संपर्क के कारण अनुभूति उत्पन्न होती है' का क्या अर्थ है? वह जो मानसिक शांति, मानसिक आनंद, मानसिक संपर्क से उत्पन्न सुखद अनुभूति, मानसिक संपर्क से उत्पन्न सुखद अनुभूति है। इसी को 'संपर्क के कारण अनुभूति उत्पन्न होती है' कहा जाता है।

इसमें 'भावना के कारण भी संपर्क होता है*' का क्या अर्थ है? वह जो संपर्क है, संपर्क करना है, संपर्क की क्रिया है, संपर्क की अवस्था है। इसे ही 'भावना के कारण भी संपर्क होता है*' कहा जाता है।

इसमें 'इंद्रिय के कारण तृष्णा' क्या है? वह जो वासना, मोह, चेतना का मोह है। इसे ही 'इंद्रिय के कारण तृष्णा' कहा जाता है।

P = अनुच्छेद 249 देखें।

उसमें 'लालसा के कारण भी भावना उत्पन्न होती है' का क्या अर्थ है?

जो मानसिक शांति, मानसिक आनंद, मानसिक संपर्क से उत्पन्न सुखदायक अनुभव, मानसिक संपर्क से उत्पन्न सुखदायक अनुभूति है। इसे ही 'लालसा के कारण भी अनुभूति' कहा जाता है।

इसमें 'लालसा के कारण आसक्ति उत्पन्न होती है' का क्या अर्थ है?

गलत दृष्टिकोण, गलत दृष्टिकोण का सहारा लेना, :P: विधर्म का आधार, उलटी पकड़। इसे ही 'लालसा के कारण आसक्ति' कहा जाता है।

P = अनुच्छेद 249 देखें।

इसमें 'आसक्ति के कारण तृष्णा उत्पन्न होती है' का क्या अर्थ है? वह जो वासना है, यानी चेतना का मोह। इसे ही 'आसक्ति के कारण तृष्णा उत्पन्न होती है' कहते हैं।

P = अनुच्छेद 249 देखें।
उसमें 'आसक्ति के कारण जो उत्पन्न होता है' का क्या अर्थ है?
आसक्ति को छोड़कर, यह भावनाओं का समूह है।

धारणाओं का समूह, मानसिक सहवर्तीताओं का समूह, चेतना का समूह। इसे आसक्ति का भ्रम कहा जाता है, जहाँ विकास होता है।
इसमें 'जन्म होने के कारण ही जन्म होता है' का क्या अर्थ है? वह जो किसी अवस्था के लिए जन्म, उत्पत्ति, अस्तित्व, पूर्ण अस्तित्व, प्रकट होना है। इसे ही 'जन्म होने के कारण ही जन्म होता है' कहा जाता है।
इसमें 'जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु' का क्या अर्थ है? वृद्धावस्था है; मृत्यु है। इसमें वृद्धावस्था क्या है? वह जो किसी भी अवस्था के लिए वृद्धावस्था, दुर्बलता, जीवन का क्षय है। [160] इसे वृद्धावस्था कहते हैं। इसमें मृत्यु क्या है? वह जो किसी भी अवस्था के लिए विनाश, क्षय, टूटना, विघटन, अनित्यता, लुप्त होना है। इसे मृत्यु कहते हैं। यही वृद्धावस्था और मृत्यु है। इसे ही 'जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु' कहते हैं।
'इस प्रकार इस संपूर्ण पीड़ा का उद्भव हुआ' का अर्थ है: इस प्रकार इस संपूर्ण पीड़ा का संयोजन, संयोजन, सहस्थापन और प्रकटीकरण हुआ है। अतः इसे "इस प्रकार इस संपूर्ण पीड़ा का उद्भव हुआ" कहा जाता है। (1) (13)
274. ... उस समय अज्ञान के कारण गतिविधि होती है; गतिविधि के कारण अज्ञान होता है। गतिविधि के कारण चेतना होती है; चेतना के कारण गतिविधि होती है। चेतना के कारण मन होता है; मन के कारण चेतना होती है। मन के कारण संपर्क होता है; संपर्क के कारण मन होता है। संपर्क के कारण संवेदना होती है; संवेदना के कारण संपर्क होता है। संवेदना के कारण तृष्णा होती है; तृष्णा के कारण संवेदना होती है। तृष्णा के कारण आसक्ति होती है; आसक्ति के कारण तृष्णा होती है। आसक्ति के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस समस्त दुख का उद्भव होता है।
275. अज्ञान क्या है? ज्ञान का अभाव, दृष्टि का अभाव, अज्ञान का अवरोध, सुस्ती की बुरी जड़। यही अज्ञान कहलाता है।
P = अनुच्छेद 180 देखें।
इसमें 'अज्ञानता के कारण गतिविधि होती है' का क्या अर्थ है?
जो इच्छाशक्ति है, इच्छाशक्ति से प्रेरित होना, इच्छाशक्ति से प्रेरित होने की अवस्था। इसे 'अज्ञान के कारण गतिविधि' कहा जाता है।

इसमें 'कर्म के कारण अज्ञान भी होता है' का क्या अर्थ है?
ज्ञान का अभाव, दृष्टि का अभाव: अज्ञान का अवरोध, सुस्ती की बुरी जड़। इसे ही 'कर्म के कारण भी अज्ञान' कहा जाता है।
P = अनुच्छेद 180 देखें।
इसमें 'गतिविधि के कारण चेतना उत्पन्न होती है' का क्या अर्थ है?
जो चेतना, मन, विचार आदि है, और उपरोक्त के आधार पर, मन-चेतना-तत्व है। इसे 'गतिविधि के कारण चेतना' कहा जाता है।
पी = पैरा 1 84 देखें।
इसमें 'चेतना के कारण ही गतिविधि होती है' का क्या अर्थ है? वह जो इच्छाशक्ति है, इच्छाशक्तियुक्त होना है, इच्छाशक्तियुक्त होने की अवस्था है। इसी को 'चेतना के कारण ही गतिविधि होती है' कहा जाता है।
इसमें 'चेतना के कारण मन का अस्तित्व है' का क्या अर्थ है?
भावों का समूह, बोधों का समूह, मानसिक अभिक्रियाओं का समूह। इसे ही 'चेतना के कारण मन' कहा जाता है।

उसमें 'मन के कारण चेतना भी है' क्या है? वह जो चेतना, मन, विचार, और उपरोक्त पर निर्भर मन-चेतना-तत्व है। इसे 'मन के कारण चेतना भी है' कहा जाता है। [161]
P = अनुच्छेद 184 देखें।
'मन के कारण संपर्क होता है', इसमें मन क्या है? संपर्क को छोड़कर (यह) भावना का समूह है, बोध का समूह है, मानसिक सहवर्तीताओं का समूह है, चेतना का समूह है। इसे ही मन कहते हैं।
इसमें 'मन के कारण संपर्क' का क्या अर्थ है? वह जो संपर्क है, संपर्क करना है, संपर्क की क्रिया है, संपर्क की अवस्था है। इसी को 'मन के कारण संपर्क' कहा जाता है।
इसमें 'संपर्क के कारण मन भी उत्पन्न होता है' का क्या अर्थ है? भावना का समूह, बोध का समूह, मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह, चेतना का समूह। इसे ही 'संपर्क के कारण मन भी उत्पन्न होता है' कहा जाता है। :P: इसलिए इसे "इस प्रकार इस संपूर्ण पीड़ा का उद्भव होता है" कहा जाता है। (2) (14)
P = अनुच्छेद 249 देखें।

276. ... उस समय अज्ञानता के कारण गतिविधि होती है; गतिविधि के कारण अज्ञानता भी होती है। गतिविधि के कारण...

आश्रित उत्पत्ति का विश्लेषण

211

चेतना; चेतना के कारण ही गतिविधि होती है। चेतना के कारण ही मन और पदार्थ होते हैं; मन और पदार्थ के कारण ही चेतना होती है। मन और पदार्थ के कारण ही छठा आधार होता है; छठे आधार के कारण ही मन और पदार्थ होते हैं। छठे आधार के कारण ही संपर्क होता है; संपर्क के कारण ही छठा आधार होता है। संपर्क के कारण ही भावना होती है; भावना के कारण ही संपर्क होता है। भावना के कारण ही लालसा होती है; लालसा के कारण ही भावना होती है। लालसा के कारण ही आसक्ति होती है; आसक्ति के कारण ही लालसा होती है। आसक्ति के कारण ही सृजन होता है; सृजन के कारण ही जन्म होता है; जन्म के कारण ही वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस संपूर्ण दुख का स्रोत उत्पन्न होता है।
277. अज्ञान क्या है? ज्ञान का अभाव, दृष्टि का अभाव, अज्ञान का अवरोध, सुस्ती की बुरी जड़। यही अज्ञान कहलाता है।
पी—पैरा 180 देखें।
उसमें 'अज्ञानता के कारण गतिविधि 5' का क्या अर्थ है?
जो इच्छाशक्ति है, इच्छाशक्ति होना, इच्छाशक्ति की अवस्था। इसे 'अज्ञानता के कारण गतिविधि होती है' कहा जाता है।
इसमें 'कर्म के कारण अज्ञान भी होता है' क्या है? ज्ञान का अभाव, दृष्टि का अभाव, अज्ञान का अवरोध, सुस्ती की बुरी जड़। इसे ही 'कर्म के कारण अज्ञान भी होता है' कहा जाता है।
P = अनुच्छेद 180 देखें।
इसमें 'गतिविधि के कारण चेतना उत्पन्न होती है' का क्या अर्थ है?
जो चेतना, मन, विचार, :P: और, उपरोक्त के आधार पर, मन-चेतना-तत्व है। इसे 'गतिविधि के कारण चेतना' कहा जाता है।
पी — पैराग्राफ 184 देखें।
इसमें 'चेतना के कारण भी गतिविधि होती है' का क्या अर्थ है? वह जो इच्छाशक्ति है, इच्छाशक्तियुक्त होना, इच्छाशक्तियुक्त होने की अवस्था। इसे ही 'चेतना के कारण भी गतिविधि होती है' कहा जाता है।
उसमें 'चेतना के कारण मन और पदार्थ है' क्या है? मन है; पदार्थ है। उसमें मन क्या है? संवेदनाओं का समूह, बोधों का समूह, मानसिक सहवर्तीताओं का समूह। इसे मन कहते हैं। उसमें क्या है?
10 +

212

पदार्थ? [162] आँख के आधार की प्रारंभिक उत्पत्ति; कान के आधार की प्रारंभिक उत्पत्ति; नाक के आधार की प्रारंभिक उत्पत्ति; जीभ के आधार की प्रारंभिक उत्पत्ति; शरीर के आधार की प्रारंभिक उत्पत्ति; या चेतना से उत्पन्न, चेतना के कारण उत्पन्न, चेतना से उत्पन्न होने वाला कोई भी अन्य भौतिक गुण। इसे पदार्थ कहते हैं। इस प्रकार यह मन और यह पदार्थ है। इसे 'चेतना के कारण मन और पदार्थ है' कहा जाता है।

'मन और पदार्थ के कारण ही चेतना होती है', मन होता है; पदार्थ होता है। इसमें मन क्या है? संवेदनाओं का समूह, बोधों का समूह, मानसिक अभिक्रियाओं का समूह। यही मन कहलाता है। इसमें पदार्थ क्या है? वह भौतिक गुण जिस पर मन-चेतना-तत्व निर्भर करता है। यही पदार्थ कहलाता है। इस प्रकार यह मन और यह पदार्थ है। यही मन और पदार्थ कहलाता है।

उसमें 'मन और पदार्थ के कारण चेतना भी होती है' का क्या अर्थ है? वह जो चेतना, मन, विचार है।

पी: और, उपर्युक्त के आधार पर, मन-चेतना-तत्व।

इसे 'मन और पदार्थ के कारण चेतना' भी कहा जाता है।

P = अनुच्छेद 184 देखें।

'मन और पदार्थ के कारण छठा आधार है', मन है; पदार्थ है। उसमें मन क्या है? संवेदनाओं का समूह, बोधों का समूह, मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह। यही मन कहलाता है। उसमें पदार्थ क्या है? वह भौतिक गुण जिस पर मन-चेतना-तत्व निर्भर करता है। यही पदार्थ कहलाता है। इस प्रकार यह मन और यह पदार्थ है। यही मन और पदार्थ कहलाता है।

इसमें 'मन और पदार्थ के कारण छठा आधार' क्या है? वह जो चेतना, मन, विचार आदि है, और उपरोक्त के आधार पर, मन-चेतना-तत्व है। इसे ही 'मन और पदार्थ के कारण छठा आधार' कहा जाता है।

P = अनुच्छेद 184 देखें।

उसमें 'छठे आधार के कारण मन और पदार्थ भी है' का क्या अर्थ है? मन है; पदार्थ है। उसमें मन क्या है? संवेदनाओं का समूह, बोधों का समूह, मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह। इसे मन कहते हैं। उसमें पदार्थ क्या है? नेत्र आधार का आरंभिक उद्भव; कान आधार का आरंभिक उद्भव; नाक आधार का आरंभिक उद्भव; जीभ आधार का आरंभिक उद्भव;

शरीर के आधार का उद्भव; या चेतना से उत्पन्न होने वाला, चेतना के कारण उत्पन्न होने वाला, चेतना द्वारा निर्मित होने वाला कोई भी अन्य भौतिक गुण। इसे पदार्थ कहते हैं। इस प्रकार यह मन और यह पदार्थ है। इसे 'छठे आधार के कारण भी मन और पदार्थ का अस्तित्व है' कहा जाता है।

उसमें 'छठे आधार के कारण संपर्क होता है' का क्या अर्थ है?

जो संपर्क है, संपर्क करना है, संपर्क की क्रिया है, संपर्क की अवस्था है। इसे 'छठे आधार के कारण संपर्क है' कहा जाता है।

उसमें 'संपर्क के कारण छठा आधार भी है' क्या है? वह जो चेतना, मन, विचार है, : पृष्ठ 1 : और, उपरोक्त पर निर्भर, मन-चेतना-तत्व। इसे 'संपर्क के कारण छठा आधार भी है' कहा जाता है। :पृष्ठ 2 : इसलिए इसे "इस प्रकार इस संपूर्ण पीड़ा का उद्भव होता है" कहा जाता है। (3) (15) [163]

पी एल = पैरा देखें। 184. पी 2 = पैरा देखें। 249.

278. ... उस समय अज्ञान के कारण गतिविधि होती है; गतिविधि के कारण अज्ञान होता है। गतिविधि के कारण चेतना होती है; चेतना के कारण गतिविधि होती है। चेतना के कारण मन और पदार्थ होते हैं; मन और पदार्थ के कारण चेतना होती है। मन और पदार्थ के कारण छह आधार होते हैं; छठे आधार के कारण मन और पदार्थ होते हैं। छठे आधार के कारण संपर्क होता है; संपर्क के कारण छठा आधार होता है। संपर्क के कारण संवेदना होती है; संवेदना के कारण संपर्क होता है। संवेदना के कारण लालसा होती है; लालसा के कारण संवेदना होती है। लालसा के कारण आसक्ति होती है; आसक्ति के कारण लालसा होती है। आसक्ति के कारण सृजन होता है; सृजन के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस समस्त दुख का उद्भव होता है।

279. अज्ञान क्या है? ज्ञान का अभाव, दृष्टि का अभाव, अज्ञान का अवरोध, सुस्ती की बुरी जड़। यही अज्ञान कहलाता है।
P = अनुच्छेद 180 देखें।
उसमें 'अज्ञानता के कारण गतिविधि होती है' का क्या अर्थ है?
जो इच्छाशक्ति है, इच्छाशक्ति से युक्त होना, इच्छाशक्ति से युक्त होने की अवस्था। इसे 'अज्ञानता के कारण गतिविधि' कहा जाता है।
उसमें 'कर्म के कारण अज्ञान भी होता है' का क्या अर्थ है? वह जो ज्ञान का अभाव है, दृष्टि का अभाव है, : P : अवरोध

अज्ञानता, जो सुस्ती की बुरी जड़ है। इसे 'गतिविधि के कारण भी अज्ञानता' कहा जाता है।
P = अनुच्छेद 180 देखें।
उसमें 'गतिविधि के कारण चेतना होती है' का क्या अर्थ है?
जो चेतना, मन, विचार, और उपरोक्त के आधार पर, मन-चेतना-तत्व है। इसे 'गतिविधि के कारण चेतना' कहा जाता है।
P = अनुच्छेद 184 देखें।
इसमें 'चेतना के कारण ही गतिविधि होती है' का क्या अर्थ है? वह जो इच्छाशक्ति है, इच्छाशक्तियुक्त होना है, इच्छाशक्तियुक्त होने की अवस्था है। इसी को 'चेतना के कारण ही गतिविधि होती है' कहा जाता है।
तो फिर 'चेतना के कारण मन और पदार्थ का अस्तित्व है' का क्या अर्थ है? मन है; पदार्थ है। तो फिर मन क्या है? संवेदनाओं का समूह, बोधों का समूह, मानसिक क्रियाओं का समूह। इसे मन कहते हैं। तो फिर पदार्थ क्या है? नेत्र के आधार की उत्पत्ति; कान के आधार की उत्पत्ति; नाक के आधार की उत्पत्ति; जीभ के आधार की उत्पत्ति; शरीर के आधार की उत्पत्ति; या चेतना से उत्पन्न होने वाला, चेतना के कारण उत्पन्न होने वाला, चेतना से उत्पन्न होने वाला कोई भी अन्य भौतिक गुण। इसे पदार्थ कहते हैं। यही मन और पदार्थ है। इसी को 'चेतना के कारण मन और पदार्थ का अस्तित्व है' कहते हैं।
'मन और पदार्थ के कारण ही चेतना है', मन है; पदार्थ है। उसमें मन क्या है? संवेदनाओं का समूह, बोधों का समूह, मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह। इसे मन कहते हैं। उसमें पदार्थ क्या है? वह भौतिक गुण जिस पर मन-चेतना-तत्व निर्भर करता है। इसे पदार्थ कहते हैं। इस प्रकार यह मन और यह पदार्थ है। इसे मन और पदार्थ कहते हैं। [164]
इसमें 'मन और पदार्थ के कारण चेतना भी होती है' का क्या अर्थ है? वह जो चेतना, मन, विचार आदि है, और उपरोक्त के आधार पर, मन-चेतना-तत्व है। इसे ही 'मन और पदार्थ के कारण चेतना भी होती है' कहा जाता है।
P = अनुच्छेद 184 देखें।
'मन और पदार्थ के कारण छह आधार हैं', मन है; पदार्थ है। उसमें मन क्या है? संवेदनाओं का समूह, बोधों का समूह, मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह। इसे मन कहते हैं। उसमें पदार्थ क्या है? चार महान आवश्यक तत्व और

वह भौतिक गुण जिस पर मन-चेतना-तत्व का प्रभाव निर्भर करता है। इसे पदार्थ कहते हैं। इसी प्रकार यह मन और यह पदार्थ है। इसे मन और पदार्थ कहते हैं।
इसमें 'मन और पदार्थ के कारण छह आधार होते हैं' का क्या अर्थ है? आँख का आधार, कान का आधार, नाक का आधार, जीभ का आधार, शरीर का आधार, मन का आधार। इसी को 'मन और पदार्थ के कारण छह आधार होते हैं' कहा जाता है।
इसमें 'छठे आधार के कारण मन और पदार्थ का अस्तित्व है' का क्या अर्थ है? मन है; पदार्थ है। इसमें मन क्या है? संवेदनाओं का समूह, बोधों का समूह, मानसिक क्रियाओं का समूह। इसे मन कहते हैं। इसमें पदार्थ क्या है? नेत्र आधार की उत्पत्ति; कान आधार की उत्पत्ति; नाक आधार की उत्पत्ति; जीभ आधार की उत्पत्ति; शरीर आधार की उत्पत्ति; या चेतना से उत्पन्न, चेतना द्वारा निर्मित, चेतना द्वारा उत्पन्न

कोई भी अन्य भौतिक गुण। इसे पदार्थ कहते हैं। इस प्रकार यह मन और यह पदार्थ है। इसे ही 'छठे आधार के कारण मन और पदार्थ का अस्तित्व है' कहा जाता है।
इसमें 'छठे बेस की वजह से संपर्क होता है' का क्या अर्थ है?
जो संपर्क है, संपर्क करना है, संपर्क की क्रिया है, संपर्क की अवस्था है। इसे 'छठे आधार के कारण संपर्क है' कहा जाता है।
इसमें 'संपर्क के कारण छठा आधार भी मौजूद है' का क्या अर्थ है? वह जो चेतना, मन, विचार, और उपरोक्त के आधार पर, मन-चेतना-तत्व है। इसे ही 'संपर्क के कारण छठा आधार भी मौजूद है' कहा जाता है।
P = अनुच्छेद 184 देखें।
इसमें 'संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है' का क्या अर्थ है? वह जो मानसिक शांति, मानसिक आनंद, मानसिक संपर्क से उत्पन्न सुखदायक अनुभव, मानसिक संपर्क से उत्पन्न सुखदायक भावना है। इसे ही 'संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है' कहा जाता है। :P: इसलिए इसे "इस प्रकार इस संपूर्ण पीड़ा का उद्भव होता है" कहा जाता है। (4) (16)
P = अनुच्छेद 249 देखें।
(यहाँ समाप्त होता है) पारस्परिकता चतुष्कोण
9. बुरी अवस्थाओं का प्रदर्शन
280. कौन सी अवस्थाएँ बुरी हैं? जब गलत कार्यों से जुड़े मानसिक सुख के साथ बुरी चेतना उत्पन्न होती है।

उत्तेजना सहित दृष्टि: पृष्ठ 1: मानसिक सुख से युक्त, गलत दृष्टि से असंबद्ध, [165] दृश्य वस्तु युक्त, पृष्ठ 2: मानसिक सुख से युक्त, गलत दृष्टि से असंबद्ध, उत्तेजना सहित, दृश्य वस्तु, श्रव्य वस्तु, सुगंधित वस्तु, स्वादयुक्त वस्तु, स्पर्शनीय वस्तु, वैचारिक वस्तु या जो भी (वस्तु) से संबंधित हो; उस समय अज्ञान के कारण गतिविधि होती है; गतिविधि के कारण चेतना होती है; चेतना के कारण मन होता है; मन के कारण छठा आधार होता है; छठे आधार के कारण संपर्क होता है; संपर्क के कारण भावना होती है; भावना के कारण लालसा होती है; लालसा के कारण निर्णय होता है; निर्णय के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस 'संपूर्ण दुख समूह' का उद्भव होता है।
पैरा 248-279 देखें।
P 2 = निम्नलिखित उदाहरण के अनुसार पूरा करें।
281. अज्ञान क्या है? ज्ञान का अभाव, दृष्टि का अभाव, अज्ञान का अवरोध, सुस्ती की बुरी जड़। इसे ही अज्ञान कहते हैं।
P = अनुच्छेद 180 देखें।
इसमें 'अज्ञानता के कारण गतिविधि होती है' का क्या अर्थ है?
जो इच्छाशक्ति है, इच्छाशक्ति से प्रेरित होना, इच्छाशक्ति से प्रेरित होने की अवस्था। इसे 'अज्ञान के कारण गतिविधि' कहा जाता है।
P = अनुच्छेद 249 देखें।
इसमें 'लालसा के कारण निर्णय होता है' का क्या अर्थ है?
जो चेतना का निर्णय है, निर्णायक होने के कारण, उस (चेतना) की निर्णय की अवस्था है। इसे 'इच्छा के कारण निर्णय' कहा जाता है।
इसमें 'निर्णय के कारण ऐसा हो रहा है' का क्या अर्थ है?
निर्णय को छोड़कर, यह भावनाओं का समूह है, बोध का समूह है, मानसिक अभिक्रियाओं का समूह है, चेतना का समूह है। इसे 'निर्णय के कारण ही उत्पत्ति होती है' कहा जाता है। :P: इसलिए इसे "इस प्रकार इस संपूर्ण दु:ख का उद्भव होता है" कहा जाता है।
पी — अनुच्छेद 249-279 देखें, 'निर्णय' के लिए उपयुक्त संशोधनों के साथ।
282. कौन सी अवस्थाएँ बुरी हैं? जब बुरी चेतना उत्पन्न होती है, जो उदासीनता के साथ-साथ गलत दृष्टिकोण से जुड़ी होती है,

217

दृश्य वस्तु, श्रव्य वस्तु, गंधयुक्त वस्तु, स्वादयुक्त वस्तु, स्पर्शनीय वस्तु, वैचारिक वस्तु, या किसी भी वस्तु से संबंधित वस्तु होने पर; उस समय अज्ञान के कारण गतिविधि उत्पन्न होती है; गतिविधि के कारण चेतना उत्पन्न होती है; चेतना के कारण मन उत्पन्न होता है; मन के कारण छठा आधार उत्पन्न होता है; छठे आधार के कारण संपर्क उत्पन्न होता है; संपर्क के कारण संवेदना उत्पन्न होती है; संवेदना के कारण तृष्णा उत्पन्न होती है; तृष्णा के कारण आसक्ति उत्पन्न होती है; आसक्ति के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार दुखों के इस संपूर्ण समूह की उत्पत्ति होती है।

283. [166] उसमें अज्ञान क्या है? वह जो ज्ञान का अभाव है, दृष्टि का अभाव है, : पृष्ठ 1 : अज्ञान का अवरोध है, सुस्ती की बुरी जड़ है। इसे ही अज्ञान कहते हैं। :पृष्ठ 2 :
पी 1; =पैरा देखें. 180. पी 2 = पैरा देखें। 249.

इसमें 'संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है' का क्या अर्थ है?
जो न तो मानसिक शांति है और न ही बेचैनी; मानसिक संपर्क से उत्पन्न न तो पीड़ादायक और न ही सुखद अनुभव; मानसिक संपर्क से उत्पन्न न तो पीड़ादायक और न ही सुखद भावना। इसे 'संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है' कहा जाता है। :P: इसलिए इसे "इसी प्रकार इस संपूर्ण पीड़ा का उद्‌भव होता है" कहा जाता है।
पी = पैराग्राफ 249-279 देखें, जिसमें 'अंतर' के लिए उपयुक्त संशोधन शामिल हैं।

284. कौन सी अवस्थाएँ बुरी हैं? जब उदासीनता के साथ, गलत दृष्टिकोण से जुड़ी हुई, उकसावे से प्रेरित बुरी चेतना उत्पन्न होती है, :P 1 : उदासीनता के साथ, गलत दृष्टिकोण से जुड़ी नहीं, दृश्य वस्तु वाली, :P 2 : उदासीनता के साथ, गलत दृष्टिकोण से जुड़ी नहीं, उकसावे के साथ, दृश्य वस्तु, श्रव्य वस्तु, गंधयुक्त वस्तु, स्वादयुक्त वस्तु, स्पर्शनीय वस्तु, वैचारिक वस्तु या किसी भी (वस्तु) से संबंधित; उस समय अज्ञान के कारण गतिविधि होती है; गतिविधि के कारण चेतना होती है; चेतना के कारण मन होता है; मन के कारण छठा आधार होता है; छठे आधार के कारण संपर्क होता है; संपर्क के कारण भावना होती है; भावना के कारण लालसा होती है; लालसा के कारण निर्णय होता है; निर्णय के कारण बनना होता है; बनने के कारण...

218

विश्लेषण की पुस्तक

जन्म से ही बुढ़ापा और मृत्यु होती है। इसी प्रकार दुखों का यह संपूर्ण समूह उत्पन्न होता है।
पृष्ठ 1 = पैराग्राफ 248-279 सहित देखें, 'अंतर' के लिए उपयुक्त संशोधनों के साथ।
P 2 = निम्नलिखित उदाहरण के अनुसार पूरा करें।

285. इसमें अज्ञान क्या है? :P: इसलिए इसे "इस प्रकार इस संपूर्ण पीड़ा का उद्‌गम होता है" कहा जाता है।
पी = पैराग्राफ 249-279 देखें, जिसमें 'अंतर' और 'निर्णय' के लिए उपयुक्त संशोधन किए गए हैं।

286. कौन सी अवस्थाएँ बुरी हैं? जब बुरी चेतना उत्पन्न होती है, जो मानसिक पीड़ा, घृणा, उत्तेजना, दृश्य वस्तु, श्रव्य वस्तु, गंधयुक्त वस्तु, स्वादयुक्त वस्तु, स्पर्शनीय वस्तु, वैचारिक वस्तु आदि से संबंधित होती है; उस समय अज्ञान के कारण गतिविधि होती है; गतिविधि के कारण चेतना होती है; चेतना के कारण मन होता है; मन के कारण छठा आधार होता है; छठे आधार के कारण संपर्क होता है; संपर्क के कारण भावना होती है; भावना के कारण घृणा होती है; घृणा के कारण निर्णय होता है; निर्णय के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस संपूर्ण दुख का उद्‌भव होता है।
P = निम्नलिखित उदाहरण के अनुसार पूरा करें।

287. उसमें अज्ञान क्या है? वह जो ज्ञान का अभाव है, दृष्टि का अभाव है, अज्ञान का अवरोध है, सुस्ती की बुरी जड़ है। इसे अज्ञान कहते हैं। इसे 'छठे आधार के कारण संपर्क' कहा जाता है।
पी 1 = पैरा देखें। 180. पी 2 = पैरा देखें। 249.
उसमें 'संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है' क्या है? [167] वह जो मानसिक बेचैनी, मानसिक पीड़ा, मानसिक संपर्क से उत्पन्न बेचैन पीड़ादायक अनुभव, मानसिक संपर्क से उत्पन्न बेचैन पीड़ादायक भावना है। इसे 'संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है' कहा जाता है।
इसमें 'भावना के कारण घृणा उत्पन्न होती है' का क्या अर्थ है?
जो चेतना को विचलित करता है, :P: उग्रता, अचानकता,

चेतना के आनंद का अभाव। इसे 'भावना के कारण अरुचि' कहा जाता है।
P = अनुच्छेद 182 देखें।
इसमें 'विकर्षण के कारण निर्णय होता है' का क्या अर्थ है?
जो चेतना का निर्णय है, निर्णायक होने के कारण, उस (चेतना) की निर्णय की अवस्था है। इसे 'विकर्षण के कारण निर्णय' कहा जाता है।
इसमें 'निर्णय के कारण ऐसा हो रहा है' का क्या अर्थ है?
निर्णय को छोड़कर, यह भावनाओं का समूह है, बोध का समूह है, मानसिक अभिक्रियाओं का समूह है, चेतना का समूह है। इसे 'निर्णय के कारण ही उत्पत्ति होती है' कहा जाता है। :P: इसलिए इसे "इस प्रकार इस संपूर्ण पीड़ा का उद्भव होता है" कहा जाता है।
पी = 'मानसिक पीड़ा', 'घृणा' और 'निर्णय' के लिए उपयुक्त संशोधनों के साथ पैरा 249-279 देखें।
288. कौन सी अवस्थाएँ बुरी हैं? जब उदासीनता, संदेह और दृश्य, श्रव्य, सुगंधित, स्वादयुक्त, स्पर्शनीय, वैचारिक वस्तुओं से युक्त बुरी चेतना उत्पन्न होती है, या किसी भी वस्तु से संबंधित होती है; उस समय अज्ञान के कारण गतिविधि होती है; गतिविधि के कारण चेतना होती है; चेतना के कारण मन होता है; मन के कारण छठा आधार होता है; छठे आधार के कारण संपर्क होता है; संपर्क के कारण संवेदना होती है; संवेदना के कारण संदेह होता है; संदेह के कारण सृजन होता है; सृजन के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार दुखों के इस संपूर्ण समूह का उद्भव होता है।
289. उसमें अज्ञान क्या है? वह जो ज्ञान का अभाव है, दृष्टि का अभाव है, अज्ञान का अवरोध है, सुस्ती की बुरी जड़ है। इसे अज्ञान कहते हैं। इसे 'छठे आधार के कारण संपर्क' कहा जाता है।
पी 1 = पैरा देखें। 180. पी 2 = पैरा देखें। 249.
मैं*
इसमें 'संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है' का क्या अर्थ है?
जो न तो मानसिक आराम है और न ही बेचैनी, न ही मानसिक संपर्क से उत्पन्न कोई पीड़ादायक और न ही सुखद अनुभव, न ही मानसिक संपर्क से उत्पन्न कोई पीड़ादायक और न ही सुखद भावना। इसे 'संपर्क के कारण भावना' कहा जाता है। [168]
10 *

इसमें 'संदेह की भावना के कारण' क्या है? उलझन, असमंजस, असमंजस की स्थिति, व्याकुलता, संदेह, दोलन, दोहरा मार्ग, उतार-चढ़ाव, पकड़ की अनिश्चितता, टालमटोल, संकोच, आगे न बढ़ना, चेतना की कठोरता, मानसिक त्याग। इसी को 'संदेह की भावना के कारण' कहा जाता है।

इसमें 'संदेह के कारण ही कुछ उत्पन्न होता है' का क्या अर्थ है?
संदेह को छोड़कर, यह भावनाओं का समूह है, बोध का समूह है, मानसिक अभिक्रियाओं का समूह है, चेतना का समूह है। इसे 'संदेह के कारण उत्पत्ति होती है' कहा जाता है। :P: इसलिए इसे "इस प्रकार इस संपूर्ण दु:ख का उद्भव होता है" कहा जाता है।
P = * in- अंतर * और 'संदेह' के लिए उपयुक्त संशोधनों के साथ पैरा 249-279 देखें।
290. कौन सी अवस्थाएँ बुरी हैं? जब उदासीनता, ध्यान भटकाव और दृश्य, श्रव्य, सुगंधित, स्वादयुक्त, स्पर्शनीय, वैचारिक वस्तुओं से युक्त बुरी चेतना उत्पन्न होती है, या किसी भी वस्तु से संबंधित होती है; उस समय अज्ञान के कारण गतिविधि होती है; गतिविधि के कारण चेतना होती है; चेतना के कारण मन होता है; मन के कारण छठा आधार होता है; छठे आधार के कारण संपर्क होता है; संपर्क के कारण संवेदना होती है; संवेदना के कारण ध्यान भटकता है; ध्यान भटकने के कारण निर्णय होता है; निर्णय के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार दुखों के इस संपूर्ण समूह का उद्भव होता है।
291. उसमें अज्ञान क्या है? वह जो ज्ञान का अभाव है, दृष्टि का अभाव है, अज्ञान का अवरोध है, सुस्ती की बुरी जड़ है। इसे अज्ञान कहते हैं। इसे 'छठे आधार के कारण संपर्क' कहा जाता है।
पी 1 = पैरा देखें। 180. पी 2 = पैरा देखें। 249.
इसमें 'संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है' का क्या अर्थ है?
जो मानसिक शांति या बेचैनी नहीं है, मानसिक संपर्क से उत्पन्न होने वाला कोई सुखदायक या सुखदायक अनुभव नहीं है, मानसिक संपर्क से उत्पन्न होने वाली कोई सुखदायक या सुखदायक अनुभूति नहीं है। इसे ही 'संपर्क के कारण अनुभूति' कहा जाता है।
इसमें 'ध्यान भटकने की अनुभूति के कारण' का क्या अर्थ है?
जो चेतना को विचलित करता है, बेचैनी पैदा करता है, मानसिक तनाव उत्पन्न करता है।

चेतना में अस्थिरता और उथल-पुथल। इसे 'ध्यान भटकने की अनुभूति' कहा जाता है।
उसमें 'विचलित होने के कारण निर्णय होता है' क्या है? [169] जो चेतना का निर्णय है, निर्णायक होने के कारण, उस (चेतना) की निर्णय अवस्था। इसे 'विचलित होने के कारण निर्णय होता है' कहा जाता है।
इसमें 'निर्णय के कारण ऐसा हो रहा है' का क्या अर्थ है?
निर्णय को छोड़कर, यह भावनाओं का समूह है, बोध का समूह है, मानसिक अभिक्रियाओं का समूह है, चेतना का समूह है। इसे 'निर्णय के कारण ही उत्पत्ति होती है' कहा जाता है। :P: इसलिए इसे "इस प्रकार इस संपूर्ण पीड़ा का उद्भव होता है" कहा जाता है।
P = पैराग्राफ 249-279 देखें, जिसमें 'अंतर', 'विचलित करना' और 'निर्णय' के लिए उपयुक्त संशोधन शामिल हैं।
(यहाँ समाप्त होता है) बुरी अवस्थाओं का विवरण
10. अच्छे राज्यों का विवरण
292. कौन सी अवस्थाएँ अच्छी हैं? जब इच्छा के तल की विशेषता वाली अच्छी चेतना, ज्ञान से जुड़ी मानसिक सुख के साथ उत्पन्न होती है, जिसमें दृश्य, श्रव्य, सुगंधित, स्वादयुक्त, स्पर्शनीय, वैचारिक वस्तुएँ होती हैं या जो भी (वस्तु) से संबंधित होती है; उस समय अच्छे आधारों के कारण गतिविधि होती है; गतिविधि के कारण चेतना होती है; चेतना के कारण मन होता है; मन के कारण छठा आधार होता है; छठे आधार के कारण संपर्क होता है; संपर्क के कारण भावना होती है; भावना के कारण विश्वास होता है; विश्वास के कारण निर्णय होता है; निर्णय के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार दुखों के इस पूरे समूह की उत्पत्ति होती है।
293. इसमें अच्छे गुण क्या हैं? लोभ का अभाव, घृणा का अभाव, सुस्ती का अभाव।
इसमें लोभ का अभाव क्या है? लोभ का अभाव, लालच की अनुपस्थिति, लोभहीनता की अवस्था, कामवासना का अभाव, कामवासना की अनुपस्थिति, कामवासना की अनुपस्थिति की अवस्था, लालच का अभाव, लोभ के अभाव का अच्छा मूल। इसे लोभ का अभाव कहते हैं।
उसमें घृणा का अभाव क्या है? वह जो अभाव है

घृणा, घृणा का अभाव, घृणा की अनुपस्थिति की अवस्था, दुर्भावना का अभाव, दुर्भावना की अनुपस्थिति की अवस्था, घृणा के अभाव का अच्छा मूल। इसे घृणा का अभाव कहते हैं।
उसमें सुस्ती का अभाव क्या है? वह जो ज्ञान, समझ, सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण है। इसे सुस्ती का अभाव कहते हैं। इन्हें अच्छे मूल कहते हैं। [170]
P = अनुच्छेद 525 देखें।
इसमें 'अच्छी जड़ों के कारण गतिविधि होती है' का क्या अर्थ है?
जो इच्छाशक्ति है, इच्छाशक्ति से युक्त होना, इच्छाशक्ति से युक्त होने की अवस्था। इसे 'अच्छी जड़ों के कारण गतिविधि' कहा जाता है।
उसमें 'गतिविधि के कारण चेतना उत्पन्न होती है' का क्या अर्थ है?
पी: चेतना के कारण मन होता है। पी: मन के कारण
छठा आधार है। :P: छठे आधार के कारण संपर्क होता है। :P: संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है। :P: इसे ही 'संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है' कहते हैं।
P = अनुच्छेद 249 देखें।
इसमें 'भावना के कारण आस्था' का क्या अर्थ है? वह जो आत्मविश्वास, विश्वास, भरोसा और अंतर्निहित आस्था है। इसी को 'भावना के कारण आस्था' कहा जाता है।
इसमें 'विश्वास के कारण निर्णय' का क्या अर्थ है? वह जो चेतना का निर्णय है, निर्णायक होना, उस (चेतना) की निर्णय की अवस्था। इसे ही 'विश्वास के कारण निर्णय' कहा जाता है।
इसमें 'निर्णय के कारण ऐसा हो रहा है' का क्या अर्थ है?
अस्तित्व के अपवाद के साथ, यह भावनाओं का समूह, बोध का समूह, मानसिक अभिक्रियाओं का समूह और चेतना का समूह है। इसे 'निर्णय के कारण अस्तित्व' कहा जाता है। अतः इसे "इस प्रकार इस संपूर्ण पीड़ा का उद्भव होता है" कहा जाता है।
पी = पैराग्राफ 249-279 देखें, जिसमें 'अच्छी जड़ें', 'विश्वास 5' और 'निर्णय 5' के लिए उपयुक्त संशोधन शामिल हैं।
294. कौन सी अवस्थाएँ अच्छी हैं? जब इच्छा तल की विशेषता वाली अच्छी चेतना मानसिक सुख के साथ, ज्ञान से जुड़ी हुई, प्रेरणा से युक्त, दृश्य वस्तु के साथ उत्पन्न होती है, iP 1: मानसिक सुख के साथ, ज्ञान से रहित, दृश्य वस्तु के साथ, :P 2: के साथ

ज्ञान या प्रेरणा से असंबद्ध, प्रत्यक्ष, श्रव्य, सुगंधित, स्वादयुक्त, स्पर्शनीय, वैचारिक, या किसी भी (वस्तु) से संबंधित मानसिक सुख; उस समय अच्छे आधारों के कारण गतिविधि उत्पन्न होती है; गतिविधि के कारण चेतना उत्पन्न होती है; चेतना के कारण मन उत्पन्न होता है; मन के कारण छठा आधार उत्पन्न होता है; छठे आधार के कारण संपर्क उत्पन्न होता है; संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है; भावना के कारण विश्वास उत्पन्न होता है; विश्वास के कारण निर्णय उत्पन्न होता है; निर्णय के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस संपूर्ण दुख का उद्भव होता है।
P*s=पैरा 292 और 293 देखें। P 2 — निम्नलिखित उदाहरण के अनुसार पूरा करें।

295. इसमें अच्छे गुण क्या हैं? लोभ का अभाव, घृणा का अभाव।

इसमें लोभ का अभाव क्या है? लोभ का अभाव, लालच की अनुपस्थिति, लोभहीनता की अवस्था, कामवासना का अभाव, कामवासना की अनुपस्थिति, कामवासना की अनुपस्थिति की अवस्था, लालच का अभाव, लोभ के अभाव का अच्छा मूल। यही लोभ का अभाव कहलाता है।
उसमें घृणा का अभाव क्या है? घृणा का अभाव, घृणा करने की प्रवृत्ति का अभाव, द्वेष का अभाव, द्वेष के अभाव की अवस्था, घृणा के अभाव का अच्छा मूल। इसे ही घृणा का अभाव कहते हैं। इन्हें अच्छे मूल कहते हैं।
इसमें 'अच्छी जड़ों के कारण गतिविधि होती है' का क्या अर्थ है?
जो इच्छाशक्ति है, इच्छाशक्ति से युक्त होना, इच्छाशक्ति की अवस्था। इसे 'अच्छे मूल तत्वों के कारण सक्रियता' कहते हैं। :P: इसे 'छठे आधार के कारण संपर्क' कहते हैं।
P = अनुच्छेद 293 देखें।
इसमें 'संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है' का क्या अर्थ है?
जो मानसिक शांति, मानसिक आनंद, मानसिक संपर्क से उत्पन्न सुखद अनुभूति, मानसिक संपर्क से उत्पन्न सुखद अनुभूति है, उसे ही 'संपर्क के कारण अनुभूति' कहा जाता है। :P: इसलिए इसे ही "इसी प्रकार इस संपूर्ण दुख का स्रोत है" कहा जाता है।
पी = पैराग्राफ 249-279 देखें, जिसमें 'अच्छी जड़ें', 'विश्वास' और 'निर्णय' के लिए उपयुक्त संशोधन किए गए हैं।

224

विश्लेषण की पुस्तक

296. कौन सी अवस्थाएँ अच्छी हैं? जब इच्छा के तल की विशेषता वाली अच्छी चेतना, उदासीनता के साथ, ज्ञान से जुड़ी हुई, दृश्य वस्तु से युक्त, ज्ञान से युक्त, उत्तेजना से युक्त, दृश्य वस्तु, श्रव्य वस्तु, सुगंधित वस्तु, स्वादयुक्त वस्तु, स्पर्शनीय वस्तु, वैचारिक वस्तु से युक्त या किसी भी (वस्तु) से संबंधित अवस्था में उत्पन्न होती है; उस समय अच्छे आधारों के कारण गतिविधि होती है; गतिविधि के कारण चेतना होती है; चेतना के कारण मन होता है; मन के कारण छठा आधार होता है; छठे आधार के कारण संपर्क होता है; संपर्क के कारण भावना होती है; भावना के कारण विश्वास होता है; विश्वास के कारण निर्णय होता है; निर्णय के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार दुख के इस पूरे समूह का उद्भव होता है।
P = निम्नलिखित उदाहरण के अनुसार पूरा करें।

297. इसमें अच्छी जड़ें क्या हैं? लोभ का अभाव, घृणा का अभाव, सुस्ती का अभाव। इन्हें अच्छी जड़ें कहा जाता है।
इसमें 'अच्छी जड़ों के कारण गतिविधि होती है' का क्या अर्थ है? वह जो इच्छाशक्ति है, इच्छाशक्ति से प्रेरित होना, इच्छाशक्ति से प्रेरित होने की अवस्था। इसे ही 'अच्छी जड़ों के कारण गतिविधि होती है' कहा जाता है। :P: इसलिए इसे 'छठे आधार के कारण संपर्क होता है' कहा जाता है।
P = पैरा 293 देखें,
इसमें 'संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है' का क्या अर्थ है?
जो न तो मानसिक शांति है और न ही बेचैनी, न ही मानसिक संपर्क से उत्पन्न कोई पीड़ादायक और न ही सुखद अनुभूति, न ही मानसिक संपर्क से उत्पन्न कोई पीड़ादायक और न ही सुखद भावना। इसे ही 'संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है' कहा जाता है। :P: इसलिए इसे "इस प्रकार इस संपूर्ण पीड़ा का उद्भव होता है" कहा जाता है।
पी = पैराग्राफ 249-279 देखें, जिसमें 'अच्छी जड़ें', 'उदासीनता', 'विश्वास' और 'निर्णय' के लिए उपयुक्त संशोधन किए गए हैं।
298. कौन सी अवस्थाएँ अच्छी हैं? जब इच्छा के तल की विशेषता वाली अच्छी चेतना, उदासीनता के साथ उत्पन्न होती है, ज्ञान से असंबद्ध होती है, और दृश्य वस्तु होती है,
पी: उदासीनता के साथ, ज्ञान से असंबद्ध,
उकसावे के साथ, जिसमें दृश्य वस्तु, श्रव्य वस्तु, गंधयुक्त वस्तु, स्वादयुक्त वस्तु, स्पर्शनीय वस्तु, वैचारिक वस्तु हो या जो भी (वस्तु) से संबंधित हो; उस समय अच्छे कारणों से^

गतिविधि होती है; गतिविधि के कारण चेतना होती है; चेतना के कारण मन होता है; मन के कारण छठा आधार होता है; छठे आधार के कारण संपर्क होता है; संपर्क के कारण भावना होती है; भावना के कारण विश्वास होता है; विश्वास के कारण निर्णय होता है; निर्णय के कारण विकास होता है; विकास के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस संपूर्ण दुख का उद्भव होता है। [171]

P = निम्नलिखित उदाहरण के अनुसार पूरा करें।

299. इसमें अच्छे मूल तत्व क्या हैं? लोभ का अभाव, घृणा का अभाव। इन्हें ही अच्छे मूल तत्व कहते हैं।

इसमें 'अच्छी जड़ों के कारण गतिविधि होती है' का क्या अर्थ है? वह जो इच्छाशक्ति है, इच्छाशक्ति से प्रेरित होना, इच्छाशक्ति से प्रेरित होने की अवस्था। इसे ही 'अच्छी जड़ों के कारण गतिविधि होती है' कहा जाता है। :P: इसलिए इसे "इस प्रकार इस संपूर्ण पीड़ा का उद्भव होता है" कहा जाता है।

P = अनुच्छेद 249-279 देखें, जिसमें 'अच्छी जड़ें', 'उदासीनता', 'विश्वास' और 'निर्णय' के लिए उपयुक्त संशोधन किए गए हैं।

300. कौन सी अवस्थाएँ अच्छी हैं? जब कोई भिक्षु रूप-तल में पुनर्जन्म का मार्ग विकसित करता है, तब वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर पृथ्वी के प्रथम इहन में निवास करता है; उस समय अच्छे मूलों के कारण गतिविधि होती है; गतिविधि के कारण चेतना उत्पन्न होती है; चेतना के कारण मन उत्पन्न होता है; मन के कारण छठा आधार उत्पन्न होता है; छठे आधार के कारण संपर्क उत्पन्न होता है; संपर्क के कारण संवेदना उत्पन्न होती है; संवेदना के कारण विश्वास उत्पन्न होता है; विश्वास के कारण निर्णय उत्पन्न होता है; निर्णय के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस समस्त दुख-समूह की उत्पत्ति होती है।

P = अनुच्छेद 205 देखें।

301. इसमें अच्छी जड़ें क्या हैं? लोभ का अभाव, घृणा का अभाव, सुस्ती का अभाव। इन्हें अच्छी जड़ें कहा जाता है।

इसमें 'अच्छी जड़ों के कारण गतिविधि होती है' का क्या अर्थ है? वह जो इच्छाशक्ति है, इच्छाशक्ति से प्रेरित होना, इच्छाशक्ति से प्रेरित होने की अवस्था। इसे ही 'अच्छी जड़ों के कारण गतिविधि होती है' कहा जाता है। :P : इसलिए इसे "इस प्रकार इस संपूर्ण दुख का उद्भव होता है" कहा जाता है।

पी = पैराग्राफ 249-279 देखें, जिसमें 'अच्छी जड़ें', 'विश्वास' और 'निर्णय' के लिए उपयुक्त संशोधन किए गए हैं।

302. कौन सी अवस्थाएँ अच्छी हैं? जब कोई भिक्षु निराकार लोक में पुनर्जन्म का मार्ग विकसित करता है, तब वह पूर्णतः शून्यता की अवस्था को पार कर, सुख का त्याग करके, चौथे ध्यान में लीन हो जाता है और उस अवस्था का अनुभव करता है जो न तो प्रत्यक्ष है और न ही अप्रत्यक्ष; उस समय अच्छे मूल तत्वों के कारण गतिविधि होती है; गतिविधि के कारण चेतना होती है; चेतना के कारण मन होता है; मन के कारण छठा आधार होता है; छठे आधार के कारण संपर्क होता है; संपर्क के कारण संवेदना होती है; संवेदना के कारण विश्वास होता है; विश्वास के कारण निर्णय होता है; निर्णय के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस समस्त दुख का उद्भव होता है।

P = अनुच्छेद 205 देखें।

303. इसमें अच्छी जड़ें क्या हैं? लोभ का अभाव, घृणा का अभाव, सुस्ती का अभाव। इन्हें अच्छी जड़ें कहा जाता है।

इसमें 'अच्छी जड़ों के कारण गतिविधि होती है' का क्या अर्थ है? वह जो इच्छाशक्ति है, इच्छाशक्तिपूर्ण होना, इच्छाशक्तिपूर्ण होने की अवस्था। इसे ही 'अच्छी जड़ों के कारण गतिविधि होती है' कहा जाता है। :P: इसे ही 'छठे आधार के कारण संपर्क होता है*' कहा जाता है।

P = अनुच्छेद 293 देखें।

इसमें 'संपर्क के कारण अनुभूति उत्पन्न होती है' का क्या अर्थ है? वह जो मानसिक शांति, मानसिक आनंद, मानसिक संपर्क से उत्पन्न सुखद अनुभूति, मानसिक संपर्क से उत्पन्न सुखद अनुभूति है। इसे ही 'संपर्क के कारण अनुभूति उत्पन्न होती है' कहा जाता है।
पी: इसलिए इसे "इस प्रकार इस संपूर्ण द्रव्यमान का उदय हुआ" कहा जाता है।
पीड़ा का।
पी = पैराग्राफ 249-279 देखें, जिसमें 'अच्छी जड़ें*, *उदासीनता', 'विश्वास' और 'निर्णय* के लिए उपयुक्त संशोधन शामिल हैं।
यह और बर्मा, सीलोन और पीटीएस के कुछ अन्य ग्रंथ प्रतीत होते हैं
यहां गलती करना गलत होगा, क्योंकि अरूपा ध्यान में अनुभूति 'न तो कष्टदायक होती है और न ही सुखद'।
इसलिए इसे पैरा 297 के अनुसार पढ़ा जाना चाहिए। थाईलैंड के कुछ ग्रंथों में यह बाद वाला पाठ दिया गया है।
304. कौन सी अवस्थाएँ अच्छी हैं? उस समय जब (एक भिक्षु) निरंतर पुनर्जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति की ओर अग्रसर अलौकिक ध्यान विकसित करता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, प्रथम अवस्था में प्रवेश करने के लिए, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, [173] :P: प्रथम ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है, जो कठिन अभ्यास है।

धीरे-धीरे ज्ञान प्राप्त होता है; उस समय अच्छी जड़ों के कारण गतिविधि होती है; गतिविधि के कारण चेतना उत्पन्न होती है; चेतना के कारण मन उत्पन्न होता है; मन के कारण छठा आधार उत्पन्न होता है; छठे आधार के कारण संपर्क उत्पन्न होता है; संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है; भावना के कारण विश्वास उत्पन्न होता है; विश्वास के कारण निर्णय उत्पन्न होता है; निर्णय के कारण विकास होता है; विकास के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इन अवस्थाओं का उद्भव होता है।
P = अनुच्छेद 205 देखें।
305. इसमें अच्छे गुण क्या हैं? लोभ का अभाव, घृणा का अभाव, सुस्ती का अभाव।
इसमें लोभ का अभाव क्या है? : घृणा का अभाव।
पृष्ठ 1: सुस्ती का अभाव? जो ज्ञान है, समझ है,
पृष्ठ 2: सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण, सत्य
अन्वेषण-ज्ञान-कारक, मार्ग का घटक, मार्ग में समाहित। इसे ही सुस्ती का अभाव कहते हैं। इन्हें ही अच्छे मूल कहते हैं।
पी^पैरा देखें. 293. पी 2 = पैरा देखें। 525.
इसमें 'अच्छी जड़ों के कारण गतिविधि होती है' का क्या अर्थ है?
जो इच्छाशक्ति है, इच्छाशक्ति से युक्त होना, इच्छाशक्ति की अवस्था। इसे 'अच्छी जड़ों के कारण गतिविधि होती है' कहते हैं। :P: इसे 'छठे आधार के कारण संपर्क होता है' कहते हैं।
P = अनुच्छेद 293 देखें।
इसमें 'संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है' का क्या अर्थ है? वह मानसिक शांति, मानसिक आनंद, मानसिक संपर्क से उत्पन्न सुखद अनुभूति, मानसिक संपर्क से उत्पन्न सुखद अनुभूति। इसी को 'संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है' कहा जाता है।
उसमें 'भावना के कारण विश्वास है' क्या है? वह जो आत्मविश्वास, विश्वास होना, भरोसा, अंतर्निहित विश्वास है। इसे 'भावना के कारण विश्वास है' कहा जाता है।
उसमें 'विश्वास के कारण निर्णय होता है' क्या है? वह जो चेतना का निर्णय है, निर्णायक होना, उस (चेतना) की निर्णय की अवस्था। इसे 'विश्वास के कारण निर्णय होता है' कहा जाता है।
इसमें 'निर्णय के कारण ऐसा हो रहा है' का क्या अर्थ है?
निर्णय को छोड़कर, यह भावनाओं का समूह, बोध का समूह, मानसिक सहवर्तीताओं का समूह और चेतना का समूह है। इसे 'निर्णय के कारण' कहा जाता है।

'जन्म लेना'। :P: इसे कहते हैं 'जन्म के कारण ही बुढ़ापा और मृत्यु होती है'।

पी = पैराग्राफ 249-279 देखें, 'अच्छी जड़ें', 'विश्वास' और 'निर्णय' के लिए उपयुक्त संशोधनों के साथ।

■ इन अवस्थाओं की उत्पत्ति का अर्थ है: — इन अवस्थाओं का संयोजन, संयोजन, सहस्थापन और प्रकटीकरण। अतः इसे "इन अवस्थाओं की उत्पत्ति" कहा जाता है।

(यहाँ समाप्त होता है) अच्छे राज्यों की व्याख्या

11. न तो अच्छी और न ही बुरी अवस्थाओं का स्पष्टीकरण

306. कौन सी अवस्थाएँ न अच्छी हैं और न बुरी? जब इच्छा तल के अनुरूप अच्छे कर्म करने और उनका संचय करने के बाद, दृश्य वस्तु के साथ उदासीनता से युक्त परिणामी दृष्टि चेतना उत्पन्न होती है; उस समय कर्म के कारण चेतना होती है; चेतना के कारण मन; मन के कारण छठा आधार है; छठे आधार के कारण संपर्क है; संपर्क के कारण भावना है; भावना के कारण विकास है; विकास के कारण जन्म है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु है। इस प्रकार इस संपूर्ण दुख का स्रोत उत्पन्न होता है।

307. उसमें गतिविधि क्या है? वह जो इच्छाशक्ति है, इच्छाशक्तियुक्त होना, इच्छाशक्तियुक्त होने की अवस्था। इसे गतिविधि कहते हैं। इसमें 'गतिविधि के कारण चेतना' का क्या अर्थ है? वह जो चेतना, मन, विचार आदि है, और उपरोक्त के आधार पर, नेत्र-चेतना-तत्व है। इसी को 'गतिविधि के कारण चेतना' कहा जाता है।

P = अनुच्छेद 184 देखें।

उसमें 'चेतना के कारण मन है' क्या है? [174] भावना का समूह, बोध का समूह, मानसिक सहवर्ती का समूह। इसे ही 'चेतना के कारण मन है' कहा जाता है।

इसमें 'मन के कारण छठा आधार होता है' का क्या अर्थ है?

जो चेतना, मन, विचार, और उपरोक्त के आधार पर, नेत्र-चेतना-तत्व है। इसे 'मन के कारण छठा आधार' कहा जाता है।

P = अनुच्छेद 184 देखें।

आश्रित उत्पत्ति का विश्लेषण

229

इसमें 'छठे बेस की वजह से संपर्क होता है' का क्या अर्थ है?

जो संपर्क है, संपर्क करना है, संपर्क की क्रिया है, संपर्क की अवस्था है। इसे 'छठे आधार के कारण संपर्क होता है' कहा जाता है।

इसमें 'संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है' का क्या अर्थ है? वह जो न तो मानसिक शांति है और न ही बेचैनी, न ही मानसिक संपर्क से उत्पन्न कोई पीड़ादायक और न ही सुखद अनुभूति है, न ही मानसिक संपर्क से उत्पन्न कोई पीड़ादायक और न ही सुखद भावना है। इसे ही 'संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है' कहा जाता है।

इसमें 'भावना के कारण उत्पत्ति होती है' का क्या अर्थ है? भावना को छोड़कर, यह बोध का समूह है, मानसिक सहवर्तीताओं का समूह है, चेतना का समूह है। इसे ही 'भावना के कारण उत्पत्ति होती है' कहा जाता है। अतः इसे 'इस प्रकार इस संपूर्ण दुःख का उद्भव होता है' कहा जाता है।

P = अनुच्छेद 249 देखें।

308. ... उस समय गतिविधि के कारण गतिविधि में निहित चेतना उत्पन्न होती है; चेतना के कारण चेतना में निहित मन उत्पन्न होता है; मन के कारण मन में निहित छठा आधार उत्पन्न होता है; छठे आधार के कारण छठे आधार में निहित संपर्क उत्पन्न होता है; संपर्क के कारण संपर्क में निहित भावना उत्पन्न होती है; भावना के कारण सृजन होता है; सृजन के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस संपूर्ण दुख का उद्भव होता है।

309. ... उस समय गतिविधि के कारण गतिविधि से जुड़ी चेतना उत्पन्न होती है; चेतना के कारण चेतना से जुड़ा मन उत्पन्न होता है; मन के कारण मन से जुड़ा छठा आधार उत्पन्न होता है; छठे आधार के कारण छठे आधार से जुड़ा संपर्क उत्पन्न होता है; संपर्क के कारण संपर्क से जुड़ा भाव उत्पन्न होता है; भाव के कारण निर्माण होता है; निर्माण के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस संपूर्ण दुख का उद्भव होता है।

310. ... उस समय गतिविधि के कारण चेतना होती है; चेतना के कारण गतिविधि होती है। चेतना के कारण मन होता है; [175] मन के कारण चेतना होती है। मन के कारण छठा आधार होता है; छठे आधार के कारण मन होता है। छठे आधार के कारण संपर्क होता है; संपर्क के कारण छठा आधार होता है।

230

विश्लेषण की पुस्तक

संपर्क से भावना उत्पन्न होती है; भावना से संपर्क होता है। भावना से विकास होता है; विकास से जन्म होता है; जन्म से वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस समस्त दुख का उद्‌भव होता है।
311. कौन सी अवस्थाएँ न अच्छी हैं और न बुरी? जब इच्छा तल के अनुरूप अच्छे कर्म करने और उन्हें संचित करने के बाद, श्रवण विषय के साथ उदासीनता से युक्त कान चेतना उत्पन्न होती है; :P: गंध विषय के साथ उदासीनता से युक्त नाक चेतना उत्पन्न होती है; पी: उदासीनता के साथ-साथ जीभ की चेतना उत्पन्न होती है।
स्वादिष्ट वस्तु होने पर; :P: सुख के साथ देह चेतना उत्पन्न होती है, जिसमें मूर्त वस्तु होती है; उस समय गतिविधि के कारण चेतना उत्पन्न होती है; चेतना के कारण मन उत्पन्न होता है; मन के कारण छठा आधार उत्पन्न होता है; छठे आधार के कारण संपर्क उत्पन्न होता है; संपर्क के कारण संवेदना उत्पन्न होती है; संवेदना के कारण सृजन होता है; सृजन के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस संपूर्ण दुख का स्रोत उत्पन्न होता है।
P = अंतिम उदाहरण के रूप में पूर्ण करें।
312. इसमें गतिविधि क्या है? वह जो इच्छाशक्ति है, इच्छाशक्तियुक्त होना, इच्छाशक्तियुक्त होने की अवस्था। इसे गतिविधि कहते हैं। : P : इसे 'छठे आधार के कारण संपर्क है' कहा जाता है।
P = अनुच्छेद 307 देखें।
इसमें 'संपर्क के कारण अनुभूति' का क्या अर्थ है? शारीरिक सहजता, शारीरिक सुख, शारीरिक संपर्क से उत्पन्न सुखदायक अनुभूति, शारीरिक संपर्क से उत्पन्न सुखदायक अनुभूति। इसी को 'संपर्क के कारण अनुभूति' कहते हैं।
इसमें 'भावना के कारण उत्पत्ति होती है' का क्या अर्थ है? भावना को छोड़कर (यह) बोध का समूह है, मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह है, चेतना का समूह है। इसे ही 'भावना के कारण उत्पत्ति होती है' कहा जाता है। :P: इसलिए इसे "इस प्रकार इस संपूर्ण दुःख का उद्‌भव होता है" कहा जाता है।
P = अनुच्छेद 249 और 308-310 देखें।
313. कौन सी अवस्थाएँ न अच्छी हैं और न बुरी? जब इच्छा तल के अनुरूप अच्छे कर्म करने और उन्हें संचित करने के बाद, परिणामी मानसिक तत्व उत्पन्न होता है, तो उसके साथ एक और तत्व भी उत्पन्न होता है।

द्वितीय

आश्रित उत्पत्ति का विश्लेषण 23 1

दृश्य, श्रव्य, सुगंधित, स्वादयुक्त, स्पर्शनीय वस्तु से संबंधित या किसी भी वस्तु से संबंधित उदासीनता के कारण; उस समय [176] गतिविधि के कारण चेतना उत्पन्न होती है; चेतना के कारण मन उत्पन्न होता है; मन के कारण छठा आधार उत्पन्न होता है; छठे आधार के कारण संपर्क उत्पन्न होता है; संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है; भावना के कारण निर्णय उत्पन्न होता है; निर्णय के कारण सृजन होता है; सृजन के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस संपूर्ण दुख का उद्‌भव होता है।
314. उसमें गतिविधि क्या है? वह जो इच्छाशक्ति है, इच्छाशक्तियुक्त होना, इच्छाशक्तियुक्त होने की अवस्था। इसे गतिविधि कहते हैं। इसमें 'गतिविधि के कारण चेतना' क्या है? वह जो चेतना, मन, विचार, rP 1 है: और उपरोक्त पर निर्भर, मन तत्व। इसे 'गतिविधि के कारण चेतना' कहा जाता है। :P 2: इसे 'छठे आधार के कारण संपर्क' कहा जाता है।
पी^पैरा देखें. 184. पी 2 = पैरा देखें। 307.

इसमें 'संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है' का क्या अर्थ है? वह जो न तो मानसिक शांति है और न ही बेचैनी, न ही मानसिक संपर्क से उत्पन्न कोई पीड़ादायक और न ही सुखद अनुभूति है, न ही मानसिक संपर्क से उत्पन्न कोई पीड़ादायक और न ही सुखद भावना है। इसे ही 'संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है' कहा जाता है।
इसमें 'भावना के कारण निर्णय लिया गया' का क्या अर्थ है?
जो चेतना का निर्णय है, निर्णायक है, उस (चेतना) की निर्णय की अवस्था है। इसे 'अनुभूति के कारण निर्णय' कहा जाता है।
इसमें 'निर्णय के कारण ऐसा हो रहा है' का क्या अर्थ है?
निर्णय को छोड़कर, यह भावनाओं का समूह है, बोध का समूह है, मानसिक अभिक्रियाओं का समूह है, चेतना का समूह है। इसे 'निर्णय के कारण ही उत्पत्ति होती है' कहा जाता है। :P: इसलिए इसे "इस प्रकार इस संपूर्ण पीड़ा का उद्भव होता है" कहा जाता है।
tfP = 'निर्णय' के लिए उपयुक्त संशोधनों के साथ अनुच्छेद 249 और 308-310 देखें।
315. कौन सी अवस्थाएँ न अच्छी हैं और न बुरी? जब इच्छा तल के अनुरूप अच्छे कर्म करने और उन्हें संचित करने के बाद दृश्य और श्रव्य वस्तु से युक्त मानसिक आनंद के साथ परिणामी मन-चेतना तत्व उत्पन्न होता है।

टी

वस्तु, सुगंधित वस्तु, स्वादयुक्त वस्तु, स्पर्शनीय वस्तु, वैचारिक वस्तु या जो भी वस्तु हो; उस समय गतिविधि के कारण चेतना उत्पन्न होती है; चेतना के कारण मन उत्पन्न होता है; मन के कारण छठा आधार उत्पन्न होता है; छठे आधार के कारण संपर्क उत्पन्न होता है; संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है; भावना के कारण निर्णय उत्पन्न होता है; निर्णय के कारण सृजन होता है; सृजन के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस संपूर्ण दुख का स्रोत उत्पन्न होता है।
316. [177] उसमें गतिविधि क्या है? वह जो इच्छाशक्ति है, इच्छाशक्ति होना, इच्छाशक्ति होने की अवस्था। इसे गतिविधि कहते हैं।
इसमें 'गतिविधि के कारण चेतना' का क्या अर्थ है? वह जो चेतना, मन, विचार, rP 1 : और उपरोक्त के आधार पर, मन-चेतना-तत्व है। इसे 'गतिविधि के कारण चेतना' कहा जाता है। :P 2 : इसे 'छठे आधार के कारण संपर्क' कहा जाता है।
पी 1 = पैरा देखें। 184. पी 2 = पैरा देखें। 307.
इसमें 'संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है' का क्या अर्थ है? वह मानसिक शांति, मानसिक आनंद, मानसिक संपर्क से उत्पन्न सुखद अनुभूति, मानसिक संपर्क से उत्पन्न सुखद अनुभूति। इसी को 'संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है' कहा जाता है।
इसमें 'भावना के कारण निर्णय' का क्या अर्थ है? वह जो चेतना का निर्णय है, निर्णायक होना है, उस (चेतना) की निर्णय की अवस्था है। इसे ही 'भावना के कारण निर्णय' कहा जाता है।
इसमें 'निर्णय के कारण ऐसा हो रहा है' का क्या अर्थ है?
निर्णय को छोड़कर, यह भावनाओं का समूह है, बोध का समूह है, मानसिक अभिक्रियाओं का समूह है, चेतना का समूह है। इसे 'निर्णय के कारण ही उत्पत्ति होती है' कहा जाता है। :P: इसलिए इसे "इस प्रकार इस संपूर्ण पीड़ा का उद्भव होता है" कहा जाता है।
पी = 'निर्णय*' के लिए उपयुक्त संशोधन के साथ पैरा 249 और 308-310 देखें।
317. कौन सी अवस्थाएँ न तो अच्छी हैं और न ही बुरी? जब इच्छा तल के अनुरूप अच्छे कर्म करने और उन्हें संचित करने के बाद, उदासीनता से युक्त मन-चेतना तत्व उत्पन्न होता है, जिसमें दृश्य वस्तु, श्रव्य वस्तु, सुगंधित वस्तु, स्वादयुक्त वस्तु, स्पर्शनीय वस्तु और वैचारिक वस्तुएँ होती हैं।

जब कोई वस्तु किसी विषय से संबंधित होती है, तो उस समय क्रिया के कारण चेतना उत्पन्न होती है; चेतना के कारण मन उत्पन्न होता है; मन के कारण छठा आधार उत्पन्न होता है; छठे आधार के कारण संपर्क उत्पन्न होता है; संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है; भावना के

कारण निर्णय उत्पन्न होता है; निर्णय के कारण सृजन होता है; सृजन के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस संपूर्ण दुख का स्रोत उत्पन्न होता है।

318. उसमें गतिविधि क्या है? वह जो इच्छाशक्ति है, इच्छाशक्तियुक्त होना, इच्छाशक्तियुक्त होने की अवस्था। इसे गतिविधि कहते हैं। इसमें 'गतिविधि के कारण चेतना उत्पन्न होती है' का क्या अर्थ है?

जो चेतना, मन, विचार आदि है, तथा उपरोक्त के आधार पर मन-चेतना-तत्व। इसे 'गतिविधि के कारण चेतना' कहा जाता है। इसे 'छठे आधार के कारण संपर्क' कहा जाता है।

पी 1 = पैरा देखें। 184. पी 2 = पैरा देखें। 307. ! जे

इसमें 'संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है' का क्या अर्थ है? वह जो न तो मानसिक शांति है और न ही बेचैनी, न ही मानसिक संपर्क से उत्पन्न कोई पीड़ादायक और न ही सुखद अनुभूति है, न ही मानसिक संपर्क से उत्पन्न कोई पीड़ादायक और न ही सुखद भावना है। इसे ही 'संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है' कहा जाता है।

इसमें 'भावना के कारण निर्णय' का क्या अर्थ है? वह जो चेतना का निर्णय है, निर्णायक होना है, उस (चेतना) की निर्णय की अवस्था है। इसे ही 'भावना के कारण निर्णय' कहा जाता है।

इसमें 'निर्णय के कारण ऐसा हो रहा है' का क्या अर्थ है?

निर्णय को छोड़कर, यह भावनाओं का समूह, बोध का समूह, मानसिक सहवर्तीताओं का समूह और चेतना का समूह है। इसे 'निर्णय के कारण ही निर्णय' कहा जाता है।

'बनना'। :P: इसलिए इसे "इस प्रकार इस संपूर्ण पीड़ा का उद्‌भव हुआ" कहा जाता है।

पी = 'निर्णय' के लिए उपयुक्त संशोधन के साथ अनुच्छेद 249 और 308-310 देखें।

319. कौन सी अवस्थाएँ न अच्छी हैं और न बुरी? उस समय जब अच्छे कर्म करने के बाद, अच्छे कर्मों का संचय करने के बाद, जो [इच्छा के तल पर परिणामी मन-चेतना-तत्व उत्पन्न होता है, जो मानसिक सुख से युक्त होता है और ज्ञान से जुड़ा होता है।

मानसिक आनंद के साथ, ज्ञान से जुड़ा हुआ, उत्तेजना से जुड़ा हुआ। rP 1: मानसिक आनंद के साथ, जुड़ा हुआ नहीं।

234

विश्लेषण की पुस्तक

ज्ञान के साथ, उकसावे के साथ। rP 1: उदासीनता के साथ, ज्ञान से जुड़ा हुआ। :P*: उदासीनता के साथ, ज्ञान से जुड़ा हुआ, उकसावे के साथ। rP 1: उदासीनता के साथ, ज्ञान से नहीं जुड़ा हुआ। iP 1: उदासीनता के साथ, ज्ञान से नहीं जुड़ा हुआ, उकसावे के साथ, दृश्य वस्तु के साथ, :P 2: वैचारिक वस्तु या जो भी (वस्तु) से संबंधित है; उस समय गतिविधि के कारण चेतना होती है; चेतना के कारण मन होता है; मन के कारण छठा आधार होता है; छठे आधार के कारण संपर्क होता है; संपर्क के कारण भावना होती है; भावना के कारण विश्वास होता है; विश्वास के कारण निर्णय होता है; निर्णय के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस संपूर्ण दुख का उद्‌भव होता है।

P* = अंतिम उदाहरण के रूप में पूर्ण।

P 2 = मध्यवर्ती इंद्रिय वस्तुएँ।

320. उसमें गतिविधि क्या है? वह जो इच्छाशक्ति है, इच्छाशक्तियुक्त होना, इच्छाशक्तियुक्त होने की अवस्था। इसे गतिविधि कहते हैं। इसमें 'गतिविधि के कारण चेतना' का क्या अर्थ है? वह जो चेतना, मन, विचार, और उपरोक्त के आधार पर, मन-चेतना-तत्व है। इसे 'गतिविधि के कारण चेतना' कहा जाता है। इसे 'संपर्क के कारण भावना' कहा जाता है।

पी एक्स = पैरा देखें। 184. पी 2 = पैरा देखें। 307.

उसमें 'भावना के कारण विश्वास है' क्या है? [178] जो विश्वास है, आत्मविश्वास होना, भरोसा, अंतर्निहित विश्वास। इसे 'भावना के कारण विश्वास है' कहा जाता है।

इसमें 'विश्वास के कारण निर्णय' का क्या अर्थ है? वह जो चेतना का निर्णय है, निर्णायक होना, उस (चेतना) की निर्णय की अवस्था। इसे ही 'विश्वास के कारण निर्णय' कहा जाता है।
इसमें 'निर्णय के कारण ऐसा हो रहा है' का क्या अर्थ है?
निर्णय को छोड़कर, यह भावनाओं का समूह है, बोध का समूह है, मानसिक अभिक्रियाओं का समूह है, चेतना का समूह है। इसे 'निर्णय के कारण ही उत्पत्ति होती है' कहा जाता है। :P: इसलिए इसे "इस प्रकार इस संपूर्ण पीड़ा का उद्‌भव होता है" कहा जाता है।
पी = 'विश्वास' और 'निर्णय' के लिए उपयुक्त संशोधनों के साथ पैरा 249 और 308-310 देखें।

आश्रित उत्पत्ति का विश्लेषण

235

321. कौन सी अवस्थाएँ न अच्छी हैं और न बुरी? जब कोई भिक्षु शारीरिक लोक में पुनर्जन्म का मार्ग अपनाता है, तब वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर पृथ्वी लोक की प्रथम ध्यान अवस्था में लीन हो जाता है; उस समय ध्यान में स्थिरता होती है। ये अवस्थाएँ अच्छी हैं।
पी^पैरा देखें. 205. पी 2 = डीएचएस। पैरा. 1.
उसने, रूप के तल पर प्रचलित उसी अच्छे कर्म को संपन्न करके, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर,
पी: परिणामी पृथ्वी उपकरण प्रथम ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय
समय के कारण गतिविधि से चेतना उत्पन्न होती है; चेतना से मन उत्पन्न होता है; मन से छठा आधार उत्पन्न होता है; छठे आधार से संपर्क उत्पन्न होता है; संपर्क से भावना उत्पन्न होती है; भावना से विश्वास उत्पन्न होता है; विश्वास से निर्णय उत्पन्न होता है; निर्णय से विकास होता है; विकास से जन्म होता है; जन्म से वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस संपूर्ण दुख का उद्‌भव होता है। [179]
P = अनुच्छेद 184 देखें।
322. कौन सी अवस्थाएँ न अच्छी हैं और न बुरी? जब कोई भिक्षु निराकार लोक में पुनर्जन्म का मार्ग अपनाता है, तब वह पूर्णतः शून्यता की अवस्था को पार कर, सुख का त्याग कर, (आरपी 1) चौथे ध्यान में लीन हो जाता है और उसमें निवास करता है, उस अवस्था की अनुभूति के साथ जो न अनुभूति है और न अनुभूति; उस समय संपर्क होता है, (पीपी 2) अविचलितता होती है। ये अवस्थाएँ अच्छी हैं।
पी^पैरा देखें. 205. पी 2 = ध्स देखें। पैरा. 1.
निराकार तल के समान अच्छे कर्मों का संचय करके, वह पूर्णतः शून्यता की अवस्था से पार होकर, सुख का त्याग करके, परिणामी चतुर्थ ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है, जो उस अवस्था की अनुभूति से युक्त होता है जो न तो अनुभूति है और न ही अअनुभूति; उस समय कर्म के कारण चेतना उत्पन्न होती है; चेतना के कारण मन उत्पन्न होता है; मन के कारण छठा आधार उत्पन्न होता है; छठे आधार के कारण संपर्क उत्पन्न होता है; संपर्क के कारण संवेदना उत्पन्न होती है; संवेदना के कारण विश्वास उत्पन्न होता है; विश्वास के कारण निर्णय उत्पन्न होता है; निर्णय के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस समस्त दुख का उद्‌भव होता है।
P = अनुच्छेद 205 देखें।

236

विश्लेषण की पुस्तक

323. कौन सी अवस्थाएँ न अच्छी हैं और न बुरी? जब (एक भिक्षु) जन्म-मृत्यु के निरंतर चक्र से मुक्त होकर, मुक्ति की ओर अग्रसर अलौकिक ध्यान विकसित करता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर प्रथम अवस्था में प्रवेश करता है; वह कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान की प्रथम अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय संपर्क होता है, अविचल होता है। ये अवस्थाएँ अच्छी हैं।
पी^पैरा देखें. 205. पी 2 = ध्स देखें। पैरा. 277.

ऐसा करने के बाद, उसी अलौकिक अच्छे ध्यान को विकसित करने के बाद, वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, परिणामस्वरूप प्राप्त प्रथम ध्यान में निवास करता है, जो कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान है;* उस समय गतिविधि के कारण चेतना उत्पन्न होती है; चेतना के कारण मन उत्पन्न होता है; मन के कारण छठा आधार उत्पन्न होता है; छठे आधार के कारण संपर्क उत्पन्न होता है; संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है; भावना के कारण विश्वास उत्पन्न होता है; विश्वास के कारण निर्णय उत्पन्न होता है; [180] निर्णय के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इन अवस्थाओं का उद्भव होता है।
P = अनुच्छेद 205 देखें।
< खाली है * आमतौर पर यहां शामिल किया जाता है।
324. कौन सी अवस्थाएँ न तो अच्छी हैं और न ही बुरी? जब बुरे कर्म करने और उनका संचय करने के बाद दृश्य वस्तु के प्रति उदासीनता से युक्त नेत्र चेतना उत्पन्न होती है; तब श्रव्य वस्तु के प्रति उदासीनता से युक्त कान चेतना उत्पन्न होती है; तब सुगंधित वस्तु के प्रति उदासीनता से युक्त नाक चेतना उत्पन्न होती है; तब स्वादयुक्त वस्तु के प्रति उदासीनता से युक्त जीभ चेतना उत्पन्न होती है; तब स्पर्शनीय वस्तु के प्रति पीड़ा से युक्त शरीर चेतना उत्पन्न होती है; उस समय कर्म के कारण चेतना उत्पन्न होती है; चेतना के कारण मन उत्पन्न होता है; मन के कारण छठा आधार उत्पन्न होता है; छठे आधार के कारण संपर्क उत्पन्न होता है; संपर्क के कारण संवेदना उत्पन्न होती है; संवेदना के कारण सृजन होता है; सृजन के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस संपूर्ण दुख का समूह उत्पन्न होता है।
P = अंतिम उदाहरण के रूप में पूर्ण करें।

325. इसमें गतिविधि क्या है? वह जो इच्छाशक्ति है, इच्छाशक्तियुक्त होना, इच्छाशक्तियुक्त होने की अवस्था। इसे गतिविधि कहते हैं।

आश्रित उत्पत्ति का विश्लेषण

237

उसमें 'गतिविधि के कारण चेतना उत्पन्न होती है' का क्या अर्थ है?
जो चेतना, मन, विचार, rP 1 : और, उपरोक्त पर निर्भर, शरीर-चेतना-तत्व है। इसे 'गतिविधि के कारण चेतना' कहा जाता है। :P 2 : इसे 'छठे आधार के कारण संपर्क 5' कहा जाता है।
पी^पैरा देखें. 184. पी 2 = पैरा देखें। 307.
इसमें 'संपर्क के कारण अनुभूति' का क्या अर्थ है? वह जो शारीरिक बेचैनी, शारीरिक पीड़ा, शारीरिक संपर्क से उत्पन्न बेचैन पीड़ादायक अनुभव, शारीरिक संपर्क से उत्पन्न बेचैन पीड़ादायक अनुभूति है। इसे 'संपर्क के कारण अनुभूति' कहा जाता है।
इसमें 'भावना के कारण ही उत्पत्ति होती है' का क्या अर्थ है? भावना को छोड़कर (यह) बोध का समूह है, मानसिक सहवर्ती का समूह है, चेतना का समूह है। इसे ही 'भावना के कारण ही उत्पत्ति होती है' कहा जाता है। :P: इसलिए इसे "इस प्रकार इस संपूर्ण दुख समूह की उत्पत्ति होती है" कहा जाता है।
P = अनुच्छेद 249 और 308-310 देखें।
326. कौन सी अवस्थाएँ न अच्छी हैं और न बुरी? [181] जब बुरे कर्म करने और उन्हें संचित करने के बाद, उदासीनता से युक्त परिणामी मन तत्व उत्पन्न होता है, जिसमें दृश्य, श्रव्य, सुगंधित, स्वादयुक्त, स्पर्शनीय वस्तुएँ होती हैं या जो भी वस्तु हो; उस समय कर्म के कारण चेतना उत्पन्न होती है; चेतना के कारण मन उत्पन्न होता है; मन के कारण छठा आधार उत्पन्न होता है; छठे आधार के कारण संपर्क उत्पन्न होता है; संपर्क के कारण संवेदना उत्पन्न होती है; संवेदना के कारण निर्णय उत्पन्न होता है; निर्णय के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार दुखों के इस संपूर्ण समूह की उत्पत्ति होती है।
327. उसमें गतिविधि क्या है? वह जो इच्छाशक्ति है, इच्छाशक्तियुक्त होना, इच्छाशक्तियुक्त होने की अवस्था। इसे गतिविधि कहते हैं।
इसमें 'गतिविधि के कारण चेतना' क्या है? वह जो चेतना, मन, विचार, rP 1 है: और उपरोक्त पर निर्भर, मन तत्व। इसे 'गतिविधि के कारण चेतना 5' कहा जाता है। :P 2: इसे 'छठे आधार के कारण संपर्क 5' कहा जाता है।
पी^पैरा देखें. 184. पी 2 = पैरा देखें। 307.

उसमें 'संपर्क के कारण अनुभूति होती है' का क्या अर्थ है? वह जो न तो मानसिक शांति है और न ही बेचैनी, न ही पीड़ादायक और न ही पीड़ादायक।

मानसिक संपर्क से उत्पन्न सुखद अनुभव, मानसिक संपर्क से उत्पन्न एक ऐसी अनुभूति जो न तो कष्टदायक है और न ही सुखद। इसे 'संपर्क के कारण अनुभूति' कहा जाता है।
इसमें 'भावना के कारण निर्णय' का क्या अर्थ है? वह जो चेतना का निर्णय है, निर्णायक होना है, उस (चेतना) की निर्णय की अवस्था है। इसे ही 'भावना के कारण निर्णय' कहा जाता है।
इसमें 'निर्णय के कारण ऐसा हो रहा है' का क्या अर्थ है?
निर्णय को छोड़कर, यह भावनाओं का समूह है, बोध का समूह है, मानसिक अभिक्रियाओं का समूह है, चेतना का समूह है। इसे 'निर्णय के कारण ही उत्पत्ति होती है' कहा जाता है। :P: इसलिए इसे "इस प्रकार इस संपूर्ण पीड़ा का उद्भव होता है" कहा जाता है।
पी = 'निर्णय*' के लिए उपयुक्त संशोधन के साथ अनुच्छेद 249 और 308-310 देखें।
328. कौन सी अवस्थाएँ न अच्छी हैं और न बुरी? जब बुरे कर्म करने और उनका संचय करने के बाद, उदासीनता से युक्त, प्रत्यक्ष विषय वाली, वैचारिक विषय वाली, या किसी भी (विषय) से संबंधित, परिणामी मन-चेतना तत्व उत्पन्न होता है; उस समय कर्म के कारण चेतना उत्पन्न होती है; चेतना के कारण मन उत्पन्न होता है; मन के कारण छठा आधार उत्पन्न होता है; छठे आधार के कारण संपर्क उत्पन्न होता है; संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है; भावना के कारण निर्णय उत्पन्न होता है; निर्णय के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार दुखों के इस संपूर्ण समूह की उत्पत्ति होती है।
P = मध्यवर्ती इंद्रिय वस्तुएँ।

329. उसमें गतिविधि क्या है? वह जो इच्छाशक्ति है, इच्छाशक्तियुक्त होना, इच्छाशक्तियुक्त होने की अवस्था। इसे गतिविधि कहते हैं। इसमें 'गतिविधि के कारण चेतना उत्पन्न होती है' का क्या अर्थ है? वह जो चेतना, मन, विचार, और उपरोक्त पर निर्भर मन-चेतना-तत्व है। इसे ही 'गतिविधि के कारण चेतना उत्पन्न होती है' कहा जाता है। इसलिए इसे "इस प्रकार इस संपूर्ण दुख का उद्भव होता है" कहा जाता है। [182]
P* = पैराग्राफ 184 देखें।
पृष्ठ 2 = 'निर्णय' के लिए उपयुक्त संशोधन के साथ अनुच्छेद 249 और 308-310 देखें।

330. कौन सी अवस्थाएँ न अच्छी हैं और न बुरी? जब मन का कोई तत्व निष्क्रिय अवस्था में उत्पन्न होता है, तब वह न तो अच्छा होता है और न ही बुरा।

क्रिया का परिणाम, उदासीनता के साथ, दृश्य वस्तु युक्त, iP 1 : मूर्त वस्तु, :P 2 : मन-चेतना उत्पन्न होती है- वह तत्व जो निष्क्रिय है, न अच्छा है न बुरा, न ही क्रिया का परिणाम, मानसिक सुख के साथ, दृश्य वस्तु युक्त।
PX : वैचारिक वस्तु, :P 2 : मन-चेतना उत्पन्न होती है-
वह तत्व जो निष्क्रिय है, न अच्छा है, न बुरा है, न ही किसी क्रिया का परिणाम है, उदासीनता से युक्त है, जिसका प्रत्यक्ष विषय है, rP 1; वैचारिक विषय है या जो भी (विषय) से संबंधित है; उस समय गतिविधि के कारण चेतना उत्पन्न होती है; चेतना के कारण मन उत्पन्न होता है; मन के कारण छठा आधार उत्पन्न होता है; छठे आधार के कारण संपर्क उत्पन्न होता है; संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है;

भावना के कारण निर्णय उत्पन्न होता है; निर्णय के कारण विकास होता है; विकास के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस संपूर्ण दुख का उद्भव होता है।
P 1 = मध्यवर्ती इंद्रिय संबंधी वस्तुएँ। P 2 = अंतिम उदाहरण के रूप में पूर्ण करें।
33 1. कौन सी अवस्थाएँ न अच्छी हैं और न बुरी? उस समय जब निष्क्रिय, न अच्छी, न बुरी और न ही किसी क्रिया का परिणाम, मानसिक सुख से युक्त, ज्ञान से जुड़ी हुई, :PX : मानसिक सुख से युक्त, ज्ञान से संबंधित, उत्तेजना से युक्त, :PX : मानसिक सुख से युक्त, ज्ञान से संबंधित नहीं, :PX : मानसिक सुख से युक्त, ज्ञान से संबंधित नहीं, उत्तेजना से युक्त, •.P 1 : उदासीनता से युक्त, ज्ञान से संबंधित, :PX : उदासीनता से युक्त, ज्ञान से संबंधित, उत्तेजना से युक्त, :PX : उदासीनता से युक्त, ज्ञान से संबंधित नहीं, उत्तेजना से युक्त, दृश्य वस्तु युक्त, :P 2 : वैचारिक वस्तु या जो भी (वस्तु) से संबंधित है; उस समय गतिविधि के कारण चेतना होती है; चेतना के कारण मन होता है; मन के कारण छठा आधार होता है; छठे आधार के कारण संपर्क होता है; संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है; भावना के कारण विश्वास उत्पन्न होता है; विश्वास के कारण निर्णय उत्पन्न होता है; निर्णय के कारण विकास होता है; [183] विकास के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस संपूर्ण पीड़ा का उद्भव होता है।
P 1 ^ अंतिम उदाहरण के रूप में पूर्ण करें। P 2 = मध्यवर्ती इंद्रिय वस्तुएँ।

332. कौन सी अवस्थाएँ न अच्छी हैं और न बुरी? उस समय जब (एक भिक्षु) उस रूप तल की विशेषता वाले ध्यान का विकास करता है जो

240

विश्लेषण की पुस्तक

निष्क्रिय, न अच्छा, न बुरा, न ही कर्म का परिणाम, (वर्तमान जीवन में) सुखमय जीवन का कारण, वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, पृथ्वी के प्रथम ध्यान में लीन हो जाता है; उस समय कर्म के कारण चेतना उत्पन्न होती है; चेतना के कारण मन उत्पन्न होता है; मन के कारण छठा आधार उत्पन्न होता है; छठे आधार के कारण संपर्क उत्पन्न होता है; संपर्क के कारण संवेदना उत्पन्न होती है; संवेदना के कारण विश्वास उत्पन्न होता है; विश्वास के कारण निर्णय उत्पन्न होता है; निर्णय के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस समस्त दुख का उद्भव होता है।
P = अनुच्छेद 205 देखें।

333. कौन सी अवस्थाएँ न तो अच्छी हैं और न बुरी? जब (एक भिक्षु) निराकार तल के उस ध्यान को विकसित करता है जो निष्क्रिय है, न अच्छा है, न बुरा है और न ही कर्म का परिणाम है, (जो) वर्तमान जीवन में सुखद जीवन का कारण है, तब वह पूर्णतः शून्यता की अवस्था को पार कर, सुख का त्याग करके, चौथे ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है, उस अवस्था की अनुभूति के साथ जो न तो अनुभूति है और न ही अअनुभूति; उस समय कर्म के कारण चेतना उत्पन्न होती है; [184] चेतना के कारण मन उत्पन्न होता है; मन के कारण छठा आधार उत्पन्न होता है; छठे आधार के कारण संपर्क उत्पन्न होता है; संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है; भावना के कारण विश्वास उत्पन्न होता है; विश्वास के कारण निर्णय उत्पन्न होता है; निर्णय के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस संपूर्ण दुख का उद्भव होता है।
पी — पैराग्राफ 205 देखें।
(यहाँ समाप्त होता है) न तो अच्छी और न ही बुरी अवस्थाओं का स्पष्टीकरण

12. अज्ञानता पर आधारित अच्छी अवस्थाओं का स्पष्टीकरण
334. कौन सी अवस्थाएँ अच्छी हैं? जब इच्छा के तल की विशेषता वाली अच्छी चेतना उत्पन्न होती है, जो मानसिक सुख से युक्त हो, ज्ञान से जुड़ी हो, और दृश्य वस्तु हो,
P : वैचारिक वस्तु या जो भी (वस्तु) से संबंधित है; उस समय
अज्ञान के कारण समय में गतिविधि होती है; गतिविधि के कारण चेतना होती है; चेतना के कारण मन होता है; क्योंकि

आश्रित उत्पत्ति का विश्लेषण

241

मन में छठा आधार है; छठे आधार के कारण संपर्क उत्पन्न होता है; संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है; भावना के कारण विश्वास उत्पन्न होता है; विश्वास के कारण निर्णय उत्पन्न होता है; निर्णय के कारण विकास होता है; विकास के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस संपूर्ण दुख का स्रोत उत्पन्न होता है।

P = मध्यवर्ती इंद्रिय वस्तुएँ।

335. इसमें 'अज्ञान के कारण कर्म' का क्या अर्थ है? वह जो इच्छाशक्ति है, इच्छाशक्ति से युक्त होना, इच्छाशक्ति की अवस्था। इसे ही 'अज्ञान के कारण कर्म' कहते हैं। :P: इसे ही 'छठे आधार के कारण संपर्क' कहते हैं।

P = अनुच्छेद 249 देखें।

इसमें 'संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है' का क्या अर्थ है? वह मानसिक शांति, मानसिक आनंद, मानसिक संपर्क से उत्पन्न सुखद अनुभूति, मानसिक संपर्क से उत्पन्न सुखद अनुभूति। इसी को 'संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है' कहा जाता है।

इसमें 'भावना के कारण आस्था' का क्या अर्थ है? वह जो आत्मविश्वास, विश्वास, भरोसा और अंतर्निहित आस्था है। इसी को 'भावना के कारण आस्था' कहा जाता है।

इसमें 'विश्वास के कारण निर्णय' का क्या अर्थ है? वह जो चेतना का निर्णय है, निर्णायक होना, उस (चेतना) की निर्णय की अवस्था। इसे ही 'विश्वास के कारण निर्णय' कहा जाता है।

इसमें 'निर्णय के कारण ऐसा हो रहा है' का क्या अर्थ है?

निर्णय को छोड़कर, यह भावनाओं का समूह है, बोध का समूह है, मानसिक अभिक्रियाओं का समूह है, चेतना का समूह है। इसे 'निर्णय के कारण ही उत्पत्ति होती है' कहा जाता है। :P: इसलिए इसे "इस प्रकार इस संपूर्ण पीड़ा का उद्भव होता है" कहा जाता है।

P = अनुच्छेद 249 देखें।

336. ... उस समय अज्ञान के कारण गतिविधि होती है; गतिविधि के कारण चेतना होती है; चेतना के कारण मन होता है; मन के कारण संपर्क होता है; संपर्क के कारण भावना होती है; भावना के कारण विश्वास होता है; विश्वास के कारण निर्णय होता है; निर्णय के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस संपूर्ण दुख का स्रोत उत्पन्न होता है। [185]

242

विश्लेषण की पुस्तक

337. ... उस समय अज्ञान के कारण गतिविधि उत्पन्न होती है; गतिविधि के कारण चेतना उत्पन्न होती है; चेतना के कारण मन और पदार्थ उत्पन्न होते हैं; मन और पदार्थ के कारण छठा आधार उत्पन्न होता है; छठे आधार के कारण संपर्क उत्पन्न होता है; संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है; भावना के कारण विश्वास उत्पन्न होता है; विश्वास के कारण निर्णय उत्पन्न होता है; निर्णय के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस समस्त दुख का उद्भव होता है।

338. ... उस समय अज्ञान के कारण गतिविधि उत्पन्न होती है; गतिविधि के कारण चेतना उत्पन्न होती है; चेतना के कारण मन और पदार्थ उत्पन्न होते हैं; मन और पदार्थ के कारण छह आधार उत्पन्न होते हैं; छठे आधार के कारण संपर्क उत्पन्न होता है; संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है; भावना के कारण विश्वास उत्पन्न होता है; विश्वास के कारण निर्णय उत्पन्न होता है; निर्णय के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस समस्त दुख का उद्भव होता है।

339. कौन सी अवस्थाएँ अच्छी हैं? जब इच्छा के तल की विशेषता वाली अच्छी चेतना उत्पन्न होती है, जो ज्ञान से संबंधित मानसिक सुख और प्रेरणा से युक्त होती है, :PX : जब मानसिक सुख से युक्त, ज्ञान से रहित अवस्था उत्पन्न होती है।
PX: मानसिक आनंद से युक्त, ज्ञान से संबंधित नहीं।
किनारे पर, उकसावे के साथ, :PX : उदासीनता के साथ, ज्ञान से जुड़ा हुआ, :PX : उदासीनता के साथ, ज्ञान से जुड़ा हुआ, उकसावे के साथ, :PX : उदासीनता के साथ, ज्ञान से जुड़ा हुआ नहीं, :PX : उदासीनता के साथ, ज्ञान से जुड़ा हुआ नहीं, उकसावे के साथ, दृश्य वस्तु वाला।

पृष्ठ 2: वैचारिक वस्तु या जो भी (वस्तु) से संबंधित है; पर
उस समय अज्ञान के कारण गतिविधि उत्पन्न होती है; गतिविधि के कारण चेतना उत्पन्न होती है; चेतना के कारण मन उत्पन्न होता है; मन के कारण छठा आधार उत्पन्न होता है; छठे आधार के कारण संपर्क उत्पन्न होता है; संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है; भावना के कारण विश्वास उत्पन्न होता है; विश्वास के कारण निर्णय उत्पन्न होता है; निर्णय के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार दुखों के इस संपूर्ण समूह की उत्पत्ति होती है।

V 1 — अंतिम उदाहरण के रूप में पूर्ण करें।

P 2 = मध्यवर्ती इंद्रिय वस्तुएँ।

आश्रित उत्पत्ति का विश्लेषण

243

340. कौन सी अवस्थाएँ अच्छी हैं? जब (एक भिक्षु) रूप के तल में पुनर्जन्म का मार्ग विकसित करता है, [186] वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, पृथ्वी के प्रथम ध्यान में लीन हो जाता है; उस समय अज्ञान के कारण कर्म उत्पन्न होता है; कर्म के कारण चेतना उत्पन्न होती है; चेतना के कारण मन उत्पन्न होता है; मन के कारण छठा आधार उत्पन्न होता है; छठे आधार के कारण संपर्क उत्पन्न होता है; संपर्क के कारण संवेदना उत्पन्न होती है; संवेदना के कारण विश्वास उत्पन्न होता है; विश्वास के कारण निर्णय उत्पन्न होता है; निर्णय के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस समस्त दुख का उद्भव होता है।
P = अनुच्छेद 205 देखें।
341. कौन सी अवस्थाएँ अच्छी हैं? जब कोई भिक्षु निराकार लोक में पुनर्जन्म का मार्ग विकसित करता है, तब वह पूर्णतः शून्यता की अवस्था को पार कर, सुख का त्याग करके, चौथे ध्यान में लीन हो जाता है और उस अवस्था का अनुभव करता है जो न तो प्रत्यक्ष है और न ही अप्रत्यक्ष; उस समय अज्ञान के कारण कर्म उत्पन्न होता है; कर्म के कारण चेतना उत्पन्न होती है; चेतना के कारण मन उत्पन्न होता है; मन के कारण छठा आधार उत्पन्न होता है; छठे आधार के कारण संपर्क उत्पन्न होता है; संपर्क के कारण संवेदना उत्पन्न होती है; संवेदना के कारण विश्वास उत्पन्न होता है; विश्वास के कारण निर्णय उत्पन्न होता है; निर्णय के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस समस्त दुख का उद्भव होता है।
P = अनुच्छेद 205 देखें।
342. कौन सी अवस्थाएँ अच्छी हैं? उस समय जब (एक भिक्षु) विकसित होता है
अलौकिक ध्यान, जो मुक्ति की ओर अग्रसर होता है, निरंतर पुनर्जन्म और मृत्यु के चक्र को विदारक करता है; वह, गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, प्रथम अवस्था में प्रवेश करने के लिए, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, उस प्रथम ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है जो कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान है; उस समय अज्ञान के कारण गतिविधि होती है; गतिविधि के कारण चेतना होती है; चेतना के कारण मन होता है; मन के कारण छठा आधार होता है; छठे आधार के कारण संपर्क होता है; संपर्क के कारण भावना होती है; भावना के कारण विश्वास होता है;
निर्णय के कारण परिवर्तन होता है; परिवर्तन के कारण
एन +

जन्म; जन्म के कारण ही वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इन अवस्थाओं का उद्‌भव होता है।
P = अनुच्छेद 205 देखें।
(यहाँ समाप्त होता है) अज्ञानता पर आधारित अच्छे राज्यों का विवरण
13. अच्छे मूल वाले परिणामों का विवरण
343. कौन सी अवस्थाएँ न तो अच्छी हैं और न ही बुरी? जब इच्छा तल के अनुरूप अच्छे कर्म करने और संचित करने के बाद, दृश्य वस्तु के साथ-साथ उदासीनता से युक्त दृश्य चेतना उत्पन्न होती है; उस समय अच्छे कर्मों के कारण गतिविधि होती है; गतिविधि के कारण चेतना होती है; चेतना के कारण मन होता है; मन के कारण छठा आधार होता है; छठे आधार के कारण संपर्क होता है; संपर्क के कारण संवेदना होती है; संवेदना के कारण सृजन होता है; सृजन के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार दुखों के इस संपूर्ण समूह की उत्पत्ति होती है।
344. उसमें 'अच्छी जड़ों के कारण गतिविधि होती है' का क्या अर्थ है?
जो इच्छाशक्ति है, इच्छाशक्ति से युक्त होना, इच्छाशक्ति की अवस्था। इसे 'अच्छी जड़ों के कारण गतिविधि' कहा जाता है। इसलिए इसे "इस प्रकार इस संपूर्ण पीड़ा का उद्‌भव होता है" कहा जाता है।
P = अनुच्छेद 307 देखें।

345. कौन सी अवस्थाएँ न अच्छी हैं और न बुरी? जब इच्छा तल के अनुरूप अच्छे कर्म करने और उन्हें संचित करने के बाद, श्रवण विषय के साथ उदासीनता से युक्त परिणामी कान चेतना उत्पन्न होती है, iP 1 : गंध विषय के साथ उदासीनता से युक्त नाक चेतना उत्पन्न होती है,
पीएक्स: उदासीनता के साथ जीभ की चेतना उत्पन्न होती है।
स्वादमय वस्तु होने पर, iP 1: सुख के साथ देह चेतना उत्पन्न होती है, मूर्त वस्तु होने पर, :PX: उदासीनता के साथ मन तत्व उत्पन्न होता है, दृश्य वस्तु होने पर, :P 2: मूर्त वस्तु, rP 1: मानसिक सुख के साथ मन-चेतना-तत्व उत्पन्न होता है, दृश्य वस्तु होने पर, :P 2: वैचारिक वस्तु, ;PX: उदासीनता के साथ मन-चेतना-तत्व उत्पन्न होता है, दृश्य वस्तु होने पर, :P 2: वैचारिक

किसी वस्तु से संबंधित या उससे संबंधित किसी भी वस्तु से संबंधित; उस समय अच्छे आधारों के कारण गतिविधि होती है; गतिविधि के कारण चेतना उत्पन्न होती है; चेतना के कारण मन उत्पन्न होता है; मन के कारण छठा आधार उत्पन्न होता है; छठे आधार के कारण संपर्क उत्पन्न होता है; संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है; [188] भावना के कारण निर्णय उत्पन्न होता है; निर्णय के कारण विकास होता है; विकास के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस संपूर्ण दुख समूह का उद्‌भव होता है।
P 1 = अंतिम उदाहरण के रूप में पूर्ण। P 2 = मध्यवर्ती इंद्रिय वस्तुएँ।

346. कौन सी अवस्थाएँ न अच्छी हैं और न बुरी? जब इच्छा के तल के अनुरूप अच्छे कर्म करने और उन्हें संचित करने के बाद, मानसिक सुख से युक्त, ज्ञान से जुड़ा हुआ, परिणामी मन-चेतना-तत्व उत्पन्न होता है। .P 1 : मानसिक सुख से युक्त, ज्ञान से युक्त, उत्तेजना से युक्त, :PX : मानसिक सुख से युक्त, ज्ञान से रहित, rP 1 : मानसिक सुख से युक्त, ज्ञान से रहित, उत्तेजना से युक्त, rP 1 : उदासीनता से युक्त, ज्ञान से युक्त, rP 1 : उदासीनता से युक्त, ज्ञान से युक्त, उत्तेजना से युक्त, :PA : उदासीनता से युक्त, ज्ञान से रहित, rP 1 : उदासीनता से युक्त, ज्ञान से रहित, उत्तेजना से युक्त, दृश्य वस्तु के साथ, :P 2 : वैचारिक वस्तु या जो भी (वस्तु) से संबंधित है; उस समय अच्छे मूलों के कारण गतिविधि होती है; गतिविधि के कारण चेतना होती है; चेतना के कारण मन होता है; मन के कारण छठा आधार उत्पन्न होता है; छठे आधार के कारण संपर्क उत्पन्न होता है; संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है; भावना के कारण विश्वास

उत्पन्न होता है; विश्वास के कारण निर्णय उत्पन्न होता है; निर्णय के कारण विकास होता है; विकास के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार दुखों के इस संपूर्ण समूह का उद्भव होता है।
P* = अंतिम उदाहरण के रूप में पूर्ण। P 2 = मध्यवर्ती इंद्रिय वस्तुएँ।

347. कौन सी अवस्थाएँ न अच्छी हैं और न बुरी? जब कोई भिक्षु रूप-तल में पुनर्जन्म का मार्ग विकसित करता है, तब वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर पृथ्वी-आधारित प्रथम ध्यान में लीन हो जाता है; उस समय संपर्क होता है, अविचलितता होती है। ये अवस्थाएँ अच्छी हैं।

पृष्ठ 1 = पैराग्राफ 205 देखें।

पृष्ठ 2 = डीएचएस पैराग्राफ 1 देखें।

रूप तल के समान अच्छे कर्मों का संचय करके, वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर पृथ्वी से उत्पन्न प्रथम ध्यान में लीन हो जाता है; उस समय अच्छे कर्मों के कारण कर्म उत्पन्न होता है; कर्म के कारण चेतना उत्पन्न होती है; चेतना के कारण मन उत्पन्न होता है; मन के कारण छठा आधार उत्पन्न होता है; छठे आधार के कारण संपर्क उत्पन्न होता है; संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है; भावना के कारण विश्वास उत्पन्न होता है; विश्वास के कारण निर्णय उत्पन्न होता है; निर्णय के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। [189] इस प्रकार इस समस्त दुख का उद्भव होता है।
P = अनुच्छेद 205 देखें।

348. कौन सी अवस्थाएँ न अच्छी हैं और न बुरी? जब कोई भिक्षु निराकार लोक में पुनर्जन्म का मार्ग अपनाता है, तब वह पूर्णतः शून्यता की अवस्था को पार कर, सुख का त्याग कर, चौथे ध्यान में लीन हो जाता है और उसमें निवास करता है, उस अवस्था की अनुभूति के साथ जो न अनुभूति है और न अनुभूति; उस समय संपर्क होता है, अविचलितता होती है। ये अवस्थाएँ अच्छी हैं।
पी ! = पैरा देखें. 205. पी 2=डीएचएस देखें। पैरा. 1.
निराकार तल के समान अच्छे कर्मों का संचय करके, वह पूर्णतः शून्यता की अवस्था से पार होकर, सुख का त्याग करके, परिणामी चतुर्थ ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है, जहाँ उसे उस अवस्था का बोध होता है जो न तो बोध है और न ही अबोध; उस समय अच्छे मूलों के कारण कर्म उत्पन्न होता है; कर्म के कारण चेतना उत्पन्न होती है; चेतना के कारण मन उत्पन्न होता है; मन के कारण छठा आधार उत्पन्न होता है; छठे आधार के कारण संपर्क उत्पन्न होता है; संपर्क के कारण संवेदना उत्पन्न होती है; संवेदना के कारण विश्वास उत्पन्न होता है; विश्वास के कारण निर्णय उत्पन्न होता है; निर्णय के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इस समस्त दुख का उद्भव होता है।
P = अनुच्छेद 205 देखें।

349. कौन सी अवस्थाएँ न अच्छी हैं न बुरी? उस समय जब (एक भिक्षु) निरंतर पुनर्जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति की ओर अग्रसर अलौकिक ध्यान विकसित करता है; वह, इन सब का त्याग करने के कारण

गलत दृष्टिकोण, प्रथम अवस्था में प्रवेश करने के लिए, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, :PX : पहले ध्यान में निवास करता है जो कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान है; उस समय संपर्क होता है, :P 2 : अविचलितता होती है। ये अवस्थाएँ अच्छी हैं।
पी^पैरा देखें. 205. पी 2 = ध्स देखें। पैरा. 277.
ऐसा करने के बाद, उसी उत्तम अलौकिक ध्यान को विकसित करने के बाद, वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, परिणामी प्रथम ध्यान में लीन हो जाता है, जो कठोर अभ्यास, धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान और शून्यता से उत्पन्न होता है; उस समय उत्तम जड़ों के कारण गतिविधि होती है; गतिविधि के कारण चेतना उत्पन्न होती है; चेतना के कारण मन उत्पन्न होता है; मन के कारण छठा आधार उत्पन्न होता है; छठे आधार के कारण संपर्क उत्पन्न होता है; संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है; भावना के कारण विश्वास उत्पन्न होता है; विश्वास के कारण निर्णय उत्पन्न होता है; निर्णय के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार इन अवस्थाओं का उद्भव होता है। [190]
P = अनुच्छेद 205 देखें।
(यहाँ समाप्त होता है) अच्छे मूल वाले परिणामों का विवरण

14. खराब जड़ों वाले परिणामों का स्पष्टीकरण
350. कौन सी अवस्थाएँ न तो अच्छी हैं और न बुरी? जब बुरे कर्म करने और उनका संचय करने से दृश्य वस्तु के प्रति उदासीनता से युक्त दृश्य चेतना उत्पन्न होती है; उस समय बुरे कर्मों के कारण कर्म उत्पन्न होते हैं; कर्म के कारण चेतना उत्पन्न होती है; चेतना के कारण मन उत्पन्न होता है; मन के कारण छठा आधार उत्पन्न होता है; छठे आधार के कारण संपर्क उत्पन्न होता है; संपर्क के कारण संवेदना उत्पन्न होती है; संवेदना के कारण सृजन होता है; सृजन के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार दुखों के इस संपूर्ण समूह का उद्भव होता है।
351. उसमें 'खराब जड़ों के कारण गतिविधि होती है' का क्या अर्थ है?
जो इच्छाशक्ति है, इच्छाशक्ति से युक्त होना, इच्छाशक्ति की अवस्था। इसे *बुरी जड़ों के कारण गतिविधि कहा जाता है। :P: इसलिए इसे “इस प्रकार इस संपूर्ण पीड़ा का उद्भव होता है” कहा जाता है।
P = अनुच्छेद 307 देखें।

352. कौन सी अवस्थाएँ न तो अच्छी हैं और न ही बुरी? जब बुरे कर्म करने या उनका संचय करने के बाद, श्रवण विषय को ध्यान में रखते हुए, उदासीनता के साथ कान की चेतना उत्पन्न होती है, rP 1 : गंधयुक्त विषय को ध्यान में रखते हुए, उदासीनता के साथ नाक की चेतना उत्पन्न होती है, :PX : स्वादयुक्त विषय को ध्यान में रखते हुए, उदासीनता के साथ जीभ की चेतना उत्पन्न होती है।
पीएक्स; पीड़ा के साथ शारीरिक चेतना उत्पन्न होती है,
मूर्त वस्तु, rP 1 : उदासीनता के साथ मन तत्व उत्पन्न होता है, जिसमें दृश्य वस्तु होती है, :P 2 : मूर्त वस्तु या जो भी (वस्तु) से संबंधित है; उस समय बुरे मूलों के कारण गतिविधि होती है; गतिविधि के कारण चेतना होती है; चेतना के कारण मन होता है; मन के कारण छठा आधार होता है; छठे आधार के कारण संपर्क होता है; संपर्क के कारण भावना होती है; भावना के कारण निर्णय होता है; निर्णय के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार दुख के इस पूरे समूह का उद्भव होता है।
P x = अंतिम उदाहरण के रूप में पूर्ण। P 2 = मध्यवर्ती इंद्रिय वस्तुएँ।
353. कौन सी अवस्थाएँ न अच्छी हैं और न बुरी? जब बुरे कर्म करने और उन्हें संचित करने से, उदासीनता से युक्त, दृश्य वस्तु से युक्त, वैचारिक वस्तु से युक्त, परिणामी मन-चेतना तत्व उत्पन्न होता है; उस समय बुरे मूलों के कारण गतिविधि होती है; गतिविधि के कारण चेतना उत्पन्न होती है; चेतना के कारण मन उत्पन्न होता है; मन के कारण छठा आधार उत्पन्न होता है; छठे आधार के कारण संपर्क उत्पन्न होता है; संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है; भावना के कारण निर्णय उत्पन्न होता है; निर्णय के कारण जन्म होता है; जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है। इस प्रकार दुख के इस संपूर्ण समूह का उद्भव होता है।
P 2 = मध्यवर्ती इंद्रिय वस्तुएँ।

354. उसमें 'खराब जड़ों के कारण गतिविधि होती है' का क्या अर्थ है?
जो इच्छाशक्ति है, इच्छाशक्ति से युक्त होना, इच्छाशक्ति से युक्त होने की अवस्था। इसे 'बुरी जड़ों के कारण गतिविधि' कहा जाता है। इसमें 'गतिविधि के कारण चेतना' क्या है? वह जो चेतना, मन, विचार, और उपरोक्त के आधार पर, मन-चेतना-तत्व है। इसे ही 'गतिविधि के कारण चेतना' कहा जाता है।
P = अनुच्छेद 184 देखें।

आश्रित उत्पत्ति का विश्लेषण

249

उसमें 'चेतना के कारण मन का अस्तित्व है' का क्या अर्थ है?
भावना का समूह, बोध का समूह, मानसिक सहवर्तीताओं का समूह। इसे 'चेतना के कारण मन' कहा जाता है।
इसमें 'मन के कारण छठा आधार होता है' का क्या अर्थ है?
जो चेतना, मन, विचार, :P : और उपरोक्त के आधार पर, मन-चेतना-तत्व है। इसे 'मन के कारण छठा आधार 5' कहा जाता है।
P = अनुच्छेद 184 देखें।
इसमें 'छठे बेस की वजह से संपर्क होता है' का क्या अर्थ है?
जो संपर्क, संपर्क करना, संपर्क की क्रिया, संपर्क की अवस्था है। इसे 'छठे आधार के कारण संपर्क 5' कहा जाता है।
इसमें 'संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है' का क्या अर्थ है? वह जो न तो मानसिक शांति है और न ही बेचैनी, न ही मानसिक संपर्क से उत्पन्न कोई पीड़ादायक और न ही सुखद अनुभव, न ही मानसिक संपर्क से उत्पन्न कोई पीड़ादायक और न ही सुखद भावना। इसे ही 'संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है' कहा जाता है।
उसमें 'भावना के कारण निर्णय होता है' क्या है? वह जो चेतना का निर्णय है, निर्णायक होना, उस (चेतना) की निर्णय की अवस्था। इसे 'भावना के कारण निर्णय होता है' कहा जाता है।
इसमें 'निर्णय के कारण ऐसा हो रहा है' का क्या अर्थ है?
निर्णय के अपवाद के साथ (यह) भावना का समूह है, धारणा का समूह है, मानसिक सहवर्ती का समूह है, चेतना का समूह है। इसे 'निर्णय के कारण बनना' कहा जाता है।
उसमें 'जन्म होने के कारण' क्या है? वह जो इस या उस अवस्था के लिए जन्म, उत्पत्ति, अस्तित्व, पूर्ण अस्तित्व, प्रकट होना है। इसे 'जन्म होने के कारण' कहा जाता है।
इसमें 'जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है' का क्या अर्थ है? वृद्धावस्था होती है; मृत्यु होती है। इसमें वृद्धावस्था क्या है? वह जो किसी भी अवस्था के लिए वृद्धावस्था, दुर्बलता, जीवन का क्षय है। इसे वृद्धावस्था कहते हैं। इसमें मृत्यु क्या है? वह जो किसी भी अवस्था के लिए विनाश, क्षय, टूटना, विघटन, अनित्यता, लुप्त होना है। इसे मृत्यु कहते हैं। इस प्रकार यह वृद्धावस्था और यह मृत्यु है। इसे 'जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है' कहा जाता है।
'इस प्रकार इस संपूर्ण पीड़ा का उद्‌गम हुआ' का अर्थ है:

आश्रित उत्पत्ति का विश्लेषण

249

उसमें 'चेतना के कारण मन का अस्तित्व है' का क्या अर्थ है?
भावना का समूह, बोध का समूह, मानसिक सहवर्तीताओं का समूह। इसे 'चेतना के कारण मन' कहा जाता है।
इसमें 'मन के कारण छठा आधार होता है' का क्या अर्थ है?
जो चेतना, मन, विचार, :P : और उपरोक्त के आधार पर, मन-चेतना-तत्व है। इसे 'मन के कारण छठा आधार 5' कहा जाता है।
P = अनुच्छेद 184 देखें।

इसमें 'छठे बेस की वजह से संपर्क होता है' का क्या अर्थ है?
जो संपर्क, संपर्क करना, संपर्क की क्रिया, संपर्क की अवस्था है। इसे 'छठे आधार के कारण संपर्क 5' कहा जाता है।
इसमें 'संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है' का क्या अर्थ है? वह जो न तो मानसिक शांति है और न ही बेचैनी, न ही मानसिक संपर्क से उत्पन्न कोई पीड़ादायक और न ही सुखद अनुभव, न ही मानसिक संपर्क से उत्पन्न कोई पीड़ादायक और न ही सुखद भावना। इसे ही 'संपर्क के कारण भावना उत्पन्न होती है' कहा जाता है।
उसमें 'भावना के कारण निर्णय होता है' क्या है? वह जो चेतना का निर्णय है, निर्णायक होना, उस (चेतना) की निर्णय की अवस्था। इसे 'भावना के कारण निर्णय होता है' कहा जाता है।
इसमें 'निर्णय के कारण ऐसा हो रहा है' का क्या अर्थ है?
निर्णय के अपवाद के साथ (यह) भावना का समूह है, धारणा का समूह है, मानसिक सहवर्ती का समूह है, चेतना का समूह है। इसे 'निर्णय के कारण बनना' कहा जाता है।
उसमें 'जन्म होने के कारण' क्या है? वह जो इस या उस अवस्था के लिए जन्म, उत्पत्ति, अस्तित्व, पूर्ण अस्तित्व, प्रकट होना है। इसे 'जन्म होने के कारण' कहा जाता है।
इसमें 'जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है' का क्या अर्थ है? वृद्धावस्था होती है; मृत्यु होती है। इसमें वृद्धावस्था क्या है? वह जो किसी भी अवस्था के लिए वृद्धावस्था, दुर्बलता, जीवन का क्षय है। इसे वृद्धावस्था कहते हैं। इसमें मृत्यु क्या है? वह जो किसी भी अवस्था के लिए विनाश, क्षय, टूटना, विघटन, अनित्यता, लुप्त होना है। इसे मृत्यु कहते हैं। इस प्रकार यह वृद्धावस्था और यह मृत्यु है। इसे 'जन्म के कारण वृद्धावस्था और मृत्यु होती है' कहा जाता है।
'इस प्रकार इस संपूर्ण पीड़ा के समूह का उदय हुआ है 5 साधन:

250

विश्लेषण की पुस्तक

इस प्रकार यह संयोजन, संयोजन, सहस्थापन, पीड़ा के इस संपूर्ण समूह की उपस्थिति है। [192] इसलिए इसे "इस प्रकार पीड़ा के इस संपूर्ण समूह का उदय है" कहा जाता है।
(यहाँ समाप्त होता है) बुरी जड़ों वाले परिणामों का विवरण
(यहाँ समाप्त होता है) अभिधम्म के अनुसार विश्लेषण
आश्रित उत्पत्ति का विश्लेषण समाप्त हुआ।
टिपिटक >> अभिधम्म पिटक >> विभंग >> अध्याय 7 पाठ - सतीपत्थन
विभंग-विश्लेषण की पुस्तक-गोतम बुद्ध द्वारा बोली गई
पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण
पाली से अनुवादित यू. थिटिला, रंगून, बर्मा, 1969 द्वारा

ओसीआर संस्करण, प्रूफरीडिंग नहीं की गई है, इसमें त्रुटियां हैं
(पाठकों को दिए गए .pdf संस्करण की सहायता से पाठ को सही करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है)

अध्याय 7. सतिपाठन (सतिपाठन) की आधारशिला का विश्लेषण
(संस्कृत: स्मृति-प्रस्थान; यहाँ सति/स्मृति का अर्थ ध्यान है)

1. प्रवचनों के अनुसार विश्लेषण

355. [193] ध्यान के चार आधार — इसमें एक भिक्षु शरीर में आंतरिक रूप से शरीर का चिंतन करता है; शरीर में बाह्य रूप से शरीर का चिंतन करता है; शरीर में आंतरिक और बाह्य दोनों रूप से शरीर का चिंतन करता है, उत्साही, जागरूक, सचेत; संसार में लोभ और

मानसिक पीड़ा को दूर करता है। वह भावनाओं में आंतरिक रूप से भावना का चिंतन करता है; भावनाओं में बाह्य रूप से भावना का चिंतन करता है; भावनाओं में आंतरिक और बाह्य दोनों रूप से भावना का चिंतन करता है, उत्साही, जागरूक, सचेत; संसार में लोभ और मानसिक पीड़ा को दूर करता है। वह चेतना में आंतरिक रूप से चेतना का चिंतन करता है; चेतना में बाह्य रूप से चेतना का चिंतन करता है; चेतना में आंतरिक और बाह्य दोनों रूप से चेतना का चिंतन करता है, उत्साही, जागरूक, सचेत; संसार में लोभ और मानसिक पीड़ा को दूर करता है। वह मानसिक अवस्थाओं में आंतरिक रूप से मानसिक अवस्था का चिंतन करता है; बाह्य रूप से मानसिक अवस्थाओं में चिंतन करते हुए; आंतरिक और बाह्य दोनों मानसिक अवस्थाओं में चिंतन करते हुए, उत्साही, जागरूक, सचेत; संसार में लोभ और मानसिक पीड़ा को दूर करते हुए।

1. शरीर पर चिंतन की व्याख्या

356. और एक भिक्षु शरीर के भीतर आंतरिक रूप से शरीर का चिंतन कैसे करता है? यहाँ एक भिक्षु शरीर के आंतरिक रूप से चिंतन करता है, पैरों के तलवों से ऊपर की ओर, बालों के सिरों से नीचे की ओर, त्वचा में लिपटे हुए, विभिन्न अशुद्धियों से भरे हुए, इस प्रकार, “इस शरीर में सिर के बाल, शरीर के बाल, नाखून, दांत, त्वचा; मांस, नसें, हड्डी, अस्थि मज्जा, गुर्दे; हृदय, यकृत, झिल्लीदार ऊतक, प्लीहा, फेफड़े; आंतें, मेसेंटरी, अपचित भोजन, मल; पित्त, कफ, मवाद, रक्त, पसीना, वसा; आंसू, लसीका, लार, नाक का बलगम है।”

11

252 विश्लेषण की पुस्तक

सिनोवियल द्रव, मूत्र”। वह उस वस्तु का पीछा करता है, उसे विकसित करता है, दोहराता है, उसे अच्छी तरह से स्थिर करता है; पीछा करने, विकसित करने, दोहराने और उस वस्तु को अच्छी तरह से स्थिर करने के बाद, वह (अपनी) चेतना को बाह्य रूप से (दूसरों के) शरीर पर लागू करता है। [194]

और एक भिक्षु बाह्य रूप से शरीर में शरीर का चिंतन कैसे करता है? यहाँ एक भिक्षु बाह्य रूप से शरीर का चिंतन करता है, पैरों के तलवों से ऊपर की ओर, बालों के सिरों से नीचे की ओर, त्वचा से घिरे, विभिन्न अशुद्धियों से भरे शरीर का, इस प्रकार, 4 'उस शरीर में सिर के बाल, शरीर के बाल, नाखून, दांत, त्वचा; मांस, नसें, हड्डी, अस्थि मज्जा, गुर्दे; हृदय, यकृत, झिल्लीदार ऊतक, प्लीहा, फेफड़े; आंतें, मेसेंटरी, अपचित भोजन, मल; पित्त, कफ, मवाद, रक्त, पसीना, वसा; आंसू, लसीका, लार, नाक का बलगम, साइनोवियल द्रव, मूत्र'। वह उस विषय का अनुसरण करता है, उसे विकसित करता है, दोहराता है, उस पर अच्छी तरह ध्यान केंद्रित करता है; उस विषय का अच्छी तरह से अनुसरण करने, उसे विकसित करने, दोहराने और उस पर अच्छी तरह ध्यान केंद्रित करने के बाद, वह शरीर पर आंतरिक और बाह्य दोनों रूप से अपनी चेतना लगाता है।

और एक भिक्षु शरीर में आंतरिक और बाह्य रूप से कैसे चिंतन करता है? यहाँ एक भिक्षु शरीर का आंतरिक और बाह्य रूप से चिंतन करता है, पैरों के तलवों से ऊपर की ओर, बालों के सिरों से नीचे की ओर, त्वचा से घिरे, विभिन्न अशुद्धियों से परिपूर्ण, इस प्रकार, “इस शरीर में सिर के बाल, शरीर के बाल, नाखून, दांत, त्वचा; मांस, नसें, हड्डियाँ, अस्थि मज्जा, गुर्दे; हृदय, यकृत, झिल्लीदार ऊतक, प्लीहा, फेफड़े; आंतें, मेसेंटरी, अपचित भोजन, मल; पित्त, कफ, मवाद, रक्त, पसीना, वसा; आँसू, लसीका, लार, नाक का बलगम, नस का द्रव, मूत्र”। इस प्रकार एक भिक्षु शरीर में आंतरिक और बाह्य रूप से चिंतन करता है, उत्साही, जागरूक, सचेत; संसार में लोभ और मानसिक पीड़ा को दूर करता है।

357. 'चिंतन करना 9 का अर्थ है: उसमें जो चिंतन किया जाता है-

चिंतन? जो ज्ञान, समझ, : P : सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण है। इसे चिंतन कहते हैं। इस चिंतन से वह परिपूर्ण, अच्छी तरह परिपूर्ण, प्राप्त, अच्छी तरह प्राप्त, संपन्न, संपन्न, सुसज्जित है। इसलिए इसे 'चिंतन' कहते हैं।

P = अनुच्छेद 525 देखें।

358. 'निवास करना' का अर्थ है: चारों मुद्राओं को धारण करना, विद्यमान होना,

रक्षा करता है, चलता रहता है, बनाए रखता है, घूमता है, निवास करता है। इसलिए इसे 'निवास करना' कहा जाता है।

359. 'उत्साही' का अर्थ है: उसमें उत्साह क्या है? वह जो है

मानसिक ऊर्जा का जागरण, सही प्रयास। इसे उत्साह कहते हैं। वह इस उत्साह से परिपूर्ण है, इसे प्राप्त कर चुका है, इसे अच्छी तरह से प्राप्त कर चुका है, इससे संपन्न है, इससे परिपूर्ण है। इसलिए इसे 'उत्साही' कहते हैं।

P = अनुच्छेद 220 देखें।

360. 'जागरूक' का अर्थ है: उसमें जागरूकता क्या है? वह जो

ज्ञान, समझ, :P: सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण। इसे जागरूकता कहते हैं। वह इस जागरूकता से परिपूर्ण है, अच्छी तरह से परिपूर्ण है, अच्छी तरह से प्राप्त है, संपन्न है, अच्छी तरह से संपन्न है, सुसज्जित है। इसलिए इसे 'जागरूक' कहा जाता है।

P = अनुच्छेद 525 देखें।

361. 'सचेत* का अर्थ है: उसमें सचेतनता क्या है? कि

जो सचेतनता है, निरंतर सचेतनता, सही सचेतनता। इसे ही सचेतनता कहते हैं। इस सचेतनता से वह परिपूर्ण है, इस सचेतनता से अच्छी तरह परिपूर्ण है, इस सचेतनता को प्राप्त कर चुका है, इस सचेतनता से परिपूर्ण है। अतः इसे 'सचेत' कहते हैं।

P = अनुच्छेद 220 देखें।

362. 'संसार में लोभ और मानसिक पीड़ा को दूर करना' का अर्थ है: संसार क्या है? यही शरीर संसार है।

पांचों आसक्तियाँ (जिनके विषय हैं) संसार हैं। इसे संसार कहते हैं। इसमें लोभ क्या है? वह जो कामवासना, मोह, चेतना का मोह है। इसे लोभ कहते हैं। इसमें मानसिक पीड़ा क्या है? वह जो मानसिक बेचैनी, मानसिक पीड़ा, मानसिक संपर्क से उत्पन्न बेचैन पीड़ादायक अनुभव, मानसिक संपर्क से उत्पन्न बेचैन पीड़ादायक भावना है। इसे मानसिक पीड़ा कहते हैं। इस प्रकार इस संसार में यह लोभ और यह मानसिक पीड़ा दूर हो जाती है, समाप्त हो जाती है, शांत हो जाती है, नियंत्रित हो जाती है, समाप्त हो जाती है, भस्म हो जाती है, पूरी तरह नष्ट हो जाती है, मुरझा जाती है, पूरी तरह समाप्त हो जाती है। अतः इसे 'संसार में लोभ और मानसिक पीड़ा को दूर करना' कहते हैं।

P = अनुच्छेद 249 देखें।

(यहाँ समाप्त होता है) शरीर पर चिंतन की व्याख्या

254

विश्लेषण की पुस्तक

2. भावनाओं पर चिंतन की व्याख्या

363. और एक भिक्षु आंतरिक रूप से भावनाओं में चिंतन करते हुए कैसे रहता है? यहाँ एक भिक्षु सुखद अनुभूति का अनुभव करते हुए जानता है, "मुझे सुखद अनुभूति हो रही है"; पीड़ादायक अनुभूति का अनुभव करते हुए जानता है, "मुझे पीड़ादायक अनुभूति हो रही है"; न पीड़ादायक और न ही सुखद अनुभूति का अनुभव करते हुए जानता है, "मुझे न पीड़ादायक और न ही सुखद अनुभूति हो रही है"। सुखद सांसारिक अनुभूति का अनुभव करते हुए जानता है, "मुझे सुखद सांसारिक अनुभूति हो रही है"; या, सुखद सांसारिक अनुभूति का अनुभव करते हुए जानता है, "मुझे सुखद सांसारिक अनुभूति हो रही है"। पीड़ादायक सांसारिक अनुभूति का अनुभव करते हुए जानता है, "मुझे पीड़ादायक सांसारिक अनुभूति हो रही है"; या, पीड़ादायक सांसारिक अनुभूति का अनुभव करते हुए जानता है, "मुझे पीड़ादायक सांसारिक अनुभूति हो रही है"। न पीड़ादायक और न ही सुखद सांसारिक अनुभूति का अनुभव करते हुए जानता है, "मुझे न पीड़ादायक और न ही सुखद सांसारिक अनुभूति हो रही है"; या, न पीड़ादायक और न ही सुखद सांसारिक अनुभूति का अनुभव करते हुए जानता है, "मुझे न पीड़ादायक और न ही सुखद सांसारिक अनुभूति हो रही है"। [196] वह उस वस्तु का पीछा करता है, उसे विकसित करता है, दोहराता है, उसे अच्छी तरह से स्थिर करता है; पीछा करने, उसे विकसित करने, उसे दोहराने, उस वस्तु को अच्छी तरह से स्थिर करने के बाद, वह (अपनी) चेतना को बाहरी रूप से (दूसरों की) भावना पर लागू करता है।

और एक भिक्षु बाह्य रूप से भावनाओं में चिंतन करते हुए कैसे रहता है? यहाँ एक भिक्षु किसी दूसरे को सुखद अनुभूति का अनुभव करते हुए जानता है, "उसे सुखद अनुभूति हो रही है"; किसी दूसरे को दुखदायी अनुभूति का अनुभव करते हुए जानता है, "उसे दुखदायी अनुभूति हो रही है"; किसी दूसरे को न दुखदायी और न ही सुखद अनुभूति का अनुभव करते हुए जानता है।

' ' उसे न तो कोई पीड़ादायक और न ही कोई सुखद अनुभूति होती है 5 ' । किसी दूसरे व्यक्ति को सुखद सांसारिक अनुभूति का अनुभव करते हुए जानता है, तो कहता है, "उसे सुखद सांसारिक अनुभूति होती है"; किसी दूसरे व्यक्ति को सुखद सांसारिक अनुभूति का अनुभव करते हुए जानता है, तो कहता है, "उसे सुखद सांसारिक अनुभूति होती है"। किसी दूसरे व्यक्ति को पीड़ादायक सांसारिक अनुभूति का अनुभव करते हुए जानता है, तो कहता है, "उसे पीड़ादायक सांसारिक अनुभूति होती है"; किसी दूसरे व्यक्ति को पीड़ादायक सांसारिक अनुभूति का अनुभव करते हुए जानता है, तो कहता है, "उसे पीड़ादायक सांसारिक अनुभूति होती है"। किसी दूसरे व्यक्ति को न तो

पीड़ादायक और न ही कोई सुखद सांसारिक अनुभूति का अनुभव करते हुए जानता है, तो कहता है, "उसे न तो पीड़ादायक और न ही कोई सुखद सांसारिक अनुभूति होती है"; किसी दूसरे व्यक्ति को न तो पीड़ादायक और न ही कोई सुखद सांसारिक अनुभूति का अनुभव करते हुए जानता है, तो कहता है, "उसे न तो पीड़ादायक और न ही कोई सुखद सांसारिक अनुभूति होती है"। वह उस वस्तु का अच्छी तरह से अनुसरण करता है, उसे विकसित करता है, दोहराता है और उसमें स्थिर करता है; उस वस्तु का पीछा करने, उसे विकसित करने, उसे दोहराने और उसे अच्छी तरह से समझने के बाद, वह आंतरिक और बाह्य दोनों प्रकार की भावनाओं पर अपनी चेतना लगाता है।

माइंडफुलनेस की नींव का विश्लेषण

255

और एक भिक्षु किस प्रकार भावों में भावों का चिंतन करते हुए निवास करता है? इसमें भिक्षु सुखद भाव को जानता है, "सुखद भाव"; दुखदायी भाव को जानता है, "दुखदायी भाव"; न दुखदायी न सुखदायी भाव को जानता है, "न दुखदायी न सुखदायी भाव"। सुखद सांसारिक भाव को जानता है, "सुखदायी सांसारिक भाव"; वह सुखद सांसारिक अनुभूति को जानता है, "सुखद सांसारिक अनुभूति"। वह कष्टदायक सांसारिक अनुभूति को जानता है, "कष्टदायक सांसारिक अनुभूति"; वह कष्टदायक सांसारिक अनुभूति को जानता है, "कष्टदायक सांसारिक अनुभूति"। वह न कष्टदायक और न सुखदायक सांसारिक अनुभूति को जानता है, "न कष्टदायक और न सुखदायक सांसारिक अनुभूति"; वह न कष्टदायक और न सुखदायक सांसारिक अनुभूति को जानता है, "न कष्टदायक और न सुखदायक सांसारिक अनुभूति"। इस प्रकार एक भिक्षु आंतरिक और बाह्य दोनों प्रकार की अनुभूतियों में चिंतन करते हुए, उत्साही, जागरूक और सचेत होकर, संसार में लोभ और मानसिक पीड़ा को दूर करता है।

364. 'विचार करना' का अर्थ है: :PX : 'निवास करना' का अर्थ है: :P 2 :

'उत्साही' का अर्थ है: :P 3 : 'जागरूक' का अर्थ है: :P 4 : [197] 'सचेत' का अर्थ है: :PS : 'संसार में लोभ और मानसिक पीड़ा को दूर करना' का अर्थ है: संसार क्या है? यही भावना संसार है, और आसक्तियों के पाँच समूह भी संसार हैं। इसे संसार कहते हैं। लोभ क्या है? वह जो कामवासना, आसक्ति, :P 6 : चेतना की आसक्ति है। इसे लोभ कहते हैं। मानसिक पीड़ा क्या है? वह जो मानसिक बेचैनी, मानसिक पीड़ा, मानसिक संपर्क से उत्पन्न बेचैन पीड़ादायक अनुभव, मानसिक संपर्क से उत्पन्न बेचैन पीड़ादायक भावना है। इसे मानसिक पीड़ा कहते हैं। इस प्रकार इस संसार में यह लोभ और यह मानसिक पीड़ा दूर हो जाती है, समाप्त हो जाती है, शांत हो जाती है, स्थिर हो जाती है, अवरुद्ध हो जाती है, समाप्त हो जाती है, गायब हो जाती है, पूरी तरह नष्ट हो जाती है, मुरझा जाती है, पूरी तरह मुरझा जाती है, निरस्त हो जाती है। इसलिए इसे 'संसार से लोभ और मानसिक पीड़ा को दूर करना' कहा जाता है।

पी^पैरा देखें. 357. पी 2 = पैरा देखें। 358. पी 3 = पैरा देखें। 359

पी 4 = पैरा देखें। 360. पी 5 = पैरा देखें। 361. पी 6 = पैरा देखें। 249.

(यहाँ समाप्त होता है) भावना पर चिंतन की व्याख्या

256

विश्लेषण की पुस्तक

3. चेतना पर चिंतन की व्याख्या

365. और एक भिक्षु आंतरिक रूप से चेतना में चेतना का चिंतन कैसे करता है? यहाँ एक भिक्षु कामवासना से ग्रस्त चेतना को जानता है, “मेरी चेतना कामवासना से ग्रस्त है”; या, कामवासना रहित चेतना को जानता है, “मेरी चेतना कामवासना रहित है”। घृणा से ग्रस्त चेतना को जानता है, “मेरी चेतना घृणा से ग्रस्त है”; या, घृणा रहित चेतना को जानता है, “मेरी चेतना घृणा रहित है”। सुस्ती से ग्रस्त चेतना को जानता है, “मेरी चेतना सुस्ती से ग्रस्त है”; या, सुस्ती रहित चेतना को जानता है, “मेरी चेतना सुस्ती रहित है”। संकुचित चेतना को जानता है, “मेरी चेतना संकुचित है”; या, बिखरी हुई चेतना को जानता है, “मेरी चेतना बिखरी हुई है”। उदात्त चेतना को जानता है, “मेरी चेतना उदात्त है”; या, उदात्त न होने वाली चेतना को जानता है, “मेरी चेतना उदात्त नहीं है”। श्रेष्ठ चेतना को जानता है, “मेरी चेतना श्रेष्ठ है”; या, अतुलनीय चेतना को जानता है, “मेरी चेतना अतुलनीय है”। वह एकाग्रता को जानता है, “मेरी चेतना एकाग्र है”; या, गैर-एकाग्र चेतना को जानता है, “मेरी चेतना एकाग्र नहीं है”। वह मुक्त चेतना को जानता है, “मेरी चेतना मुक्त है”; या, गैर-मुक्त चेतना को जानता है, “मेरी चेतना मुक्त नहीं है”। वह उस विषय का अनुसरण करता है, उसे विकसित करता है, दोहराता है, और उस पर अच्छी तरह से ध्यान केंद्रित करता है; उस विषय का अनुसरण करने, उसे विकसित करने, दोहराने और उस पर अच्छी तरह से ध्यान केंद्रित करने के बाद, वह अपनी चेतना को दूसरों की चेतना पर बाह्य रूप से लागू करता है।

और एक भिक्षु बाहरी चेतना में चेतना का चिंतन कैसे करता है? यहाँ एक भिक्षु दूसरे की कामवासना से ग्रस्त चेतना को जानता है, “उसकी चेतना कामवासना से ग्रस्त है”; या, दूसरे की कामवासना रहित चेतना को जानता है, “उसकी चेतना कामवासना रहित है”। दूसरे की घृणा से ग्रस्त चेतना को जानता है, “उसकी चेतना घृणा से ग्रस्त है”; [198] या, दूसरे की घृणा रहित चेतना को जानता है, “उसकी चेतना घृणा रहित है”। दूसरे की सुस्ती से ग्रस्त चेतना को जानता है, “उसकी चेतना सुस्ती से ग्रस्त है”; या, दूसरे की सुस्ती रहित चेतना को जानता है, “उसकी चेतना सुस्ती रहित है”। जानता है

माइंडफुलनेस की नींव का विश्लेषण

257

दूसरे की संकुचित चेतना को जानकर, “उसकी चेतना संकुचित है”; या, दूसरे की बिखरी हुई चेतना को जानकर, “उसकी चेतना बिखरी हुई है”। दूसरे की उदात्त चेतना को जानकर, “उसकी चेतना उदात्त है”; या, दूसरे की उदात्त न होने वाली चेतना को जानकर, “उसकी चेतना उदात्त नहीं है”। दूसरे की श्रेष्ठ चेतना को जानकर, “उसकी चेतना श्रेष्ठ है”; या, दूसरे की अतुलनीय चेतना को जानकर, “उसकी चेतना अतुलनीय है”। दूसरे की एकाग्र चेतना को जानकर, “उसकी चेतना एकाग्र है”; या, दूसरे की अनिर्गाग्र चेतना को जानकर, “उसकी चेतना एकाग्र नहीं है”। दूसरे की मुक्त चेतना को जानकर, “उसकी चेतना मुक्त है”; या, दूसरे की अमुक्त चेतना को जानकर, “उसकी चेतना मुक्त नहीं है”। वह उस वस्तु का अच्छी तरह से अनुसरण करता है, उसे विकसित करता है, दोहराता है और उसमें स्थिर करता है; उस वस्तु का पीछा करने, उसे विकसित करने, उसे दोहराने और उसे अच्छी तरह से समझने के बाद, वह आंतरिक और बाह्य दोनों रूप से चेतना पर अपनी चेतना लागू करता है।

और एक भिक्षु आंतरिक और बाह्य दोनों रूप से चेतना में चेतना का चिंतन करते हुए कैसे निवास करता है? यहाँ एक भिक्षु कामवासना से ग्रस्त चेतना को जानता है, "कामवासना से ग्रस्त चेतना"; या, कामवासना रहित चेतना को जानता है, "कामवासना रहित चेतना"।

घृणा से ग्रस्त चेतना को जानता है, "घृणा से ग्रस्त चेतना"; या, घृणा रहित चेतना को जानता है, "घृणा रहित चेतना"। सुस्ती से ग्रस्त चेतना को जानता है, "सुस्तता से ग्रस्त चेतना"; या, सुस्ती रहित चेतना को जानता है, "सुस्तता रहित चेतना"। संकुचित चेतना को जानता है, "संकुचित चेतना"; या, बिखरी हुई चेतना को जानता है, "बिखरी हुई चेतना"। उदात्त चेतना को जानता है, "उदात्त चेतना"; या, उदात्त न होने वाली चेतना को जानता है, "उदात्त चेतना"। श्रेष्ठ चेतना को जानता है, "श्रेष्ठ चेतना"; या, श्रेष्ठ न होने वाली चेतना को जानता है, "श्रेष्ठ चेतना"। एकाग्र चेतना को जानता है, "एकाग्र चेतना"; या, जो एकाग्र चेतना से रहित है, उसे "एकाग्र चेतना" कहा जाता है। जो मुक्त चेतना से रहित है, उसे "मुक्त चेतना" कहा जाता है; या, जो मुक्त चेतना से रहित है, उसे "मुक्त चेतना से रहित" कहा जाता है। इस प्रकार एक भिक्षु आंतरिक और बाह्य दोनों रूपों में चेतना में चेतना का चिंतन करते हुए, उत्साही, जागरूक और सचेत होकर संसार में लोभ और मानसिक पीड़ा को दूर करता है।

258

विश्लेषण की पुस्तक

366. 'विचार करना' का अर्थ है: : पृष्ठ 1 : 'निवास करना' का अर्थ है: : पृष्ठ 2 :

'उत्साही' का अर्थ है: :पृष्ठ 3 : 'जागरूक' का अर्थ है: :पृष्ठ 4 : 'सचेत'

अर्थ: पृष्ठ 5: 'संसार में लोभ और मानसिक पीड़ा को दूर करना' का अर्थ है: संसार क्या है? यही चेतना संसार है, और आसक्तियों के पाँच समूह भी संसार हैं। लोभ क्या है? [199] वह जो कामवासना, आसक्ति, पृष्ठ 6: चेतना की आसक्ति है। इसे लोभ कहते हैं। मानसिक पीड़ा क्या है? वह जो मानसिक बेचैनी, मानसिक पीड़ा, मानसिक संपर्क से उत्पन्न बेचैन पीड़ादायक अनुभव, मानसिक संपर्क से उत्पन्न बेचैन पीड़ादायक भावना है। इसे मानसिक पीड़ा कहते हैं। इस प्रकार इस संसार में यह लोभ और यह मानसिक पीड़ा दूर हो जाती है, समाप्त हो जाती है, शांत हो जाती है, नियंत्रित हो जाती है, समाप्त हो जाती है, गायब हो जाती है, पूरी तरह नष्ट हो जाती है, मुरझा जाती है, पूरी तरह मुरझा जाती है, निरस्त हो जाती है। इसलिए इसे 'संसार में लोभ और मानसिक पीड़ा को दूर करना' कहते हैं।

पी* = पैरा देखें। 357. पी 2 = पैरा देखें। 358. पी 3 = पैरा देखें। 359.

पी 4 = पैरा देखें। 360. पी एस = पैरा देखें। 361. पी 6 = पैरा देखें। 249.

(यहाँ समाप्त होता है) चेतना पर चिंतन की व्याख्या

4. मानसिक अवस्थाओं पर चिंतन की व्याख्या

367. और भिक्षु मानसिक अवस्थाओं में चिंतन करते हुए कैसे रहता है? इसमें भिक्षु इंद्रिय सुख की आंतरिक इच्छा के बारे में जानता है, "मुझमें इंद्रिय सुख की आंतरिक इच्छा है"; या, इंद्रिय सुख की आंतरिक इच्छा न होने के बारे में जानता है, "मुझमें इंद्रिय सुख की आंतरिक इच्छा नहीं है"। और वह यह भी जानता है कि कैसे अजन्मी इंद्रिय सुख की इच्छा उत्पन्न होती है; और कैसे उत्पन्न इंद्रिय सुख की इच्छा का त्याग होता है; और कैसे त्यागी हुई इंद्रिय सुख की इच्छा का भविष्य में कोई जन्म नहीं होता है। आंतरिक द्वेष के बारे में; आंतरिक आलस्य और सुस्ती के बारे में; आंतरिक विचलितता और पश्चाताप के बारे में।

पी: आंतरिक संदेह के बारे में जानता है, "मेरे भीतर आंतरिक संदेह है।"
संदेह"; या, आंतरिक संदेह न होने के बारे में जानता है, "मुझमें आंतरिक संदेह नहीं है"। और यह भी जानता है कि अजन्मे संदेह का उदय कैसे होता है; और यह भी कि उत्पन्न संदेह का उदय कैसे होता है।

त्याग करने का भी वह ज्ञान रखता है; और यह भी कि त्यागे हुए संदेह का भविष्य में कोई उद्भव नहीं होता।

P = अंतिम उदाहरण के रूप में पूर्ण करें।

या तो वह आंतरिक सजगता-ज्ञान के तत्व के अस्तित्व को जानता है, "मुझमें आंतरिक सजगता-ज्ञान का तत्व मौजूद है"; या, आंतरिक सजगता-ज्ञान के तत्व के अस्तित्व न होने को जानता है, "मुझमें आंतरिक सजगता-ज्ञान का तत्व मौजूद नहीं है"। और वह यह भी जानता है कि अजन्मी सजगता-ज्ञान का तत्व कैसे उत्पन्न होता है; और यह भी कि उत्पन्न सजगता-ज्ञान का तत्व विकास की पूर्णता कैसे प्राप्त करता है। आंतरिक सत्य अन्वेषण-ज्ञान-कारक होने के कारण, आंतरिक ऊर्जा-ज्ञान-कारक होने के कारण, आंतरिक उत्साह-ज्ञान-कारक होने के कारण, आंतरिक शांति-ज्ञान-कारक होने के कारण, आंतरिक एकाग्रता-ज्ञान-कारक होने के कारण, आंतरिक समता-ज्ञान-कारक होने के कारण, "मुझमें आंतरिक समता-ज्ञान-कारक है"; या, वह जानता है कि उसमें आंतरिक समभाव-ज्ञान का तत्व नहीं है, "मुझमें आंतरिक समभाव-ज्ञान का तत्व नहीं है।" और वह यह भी जानता है कि अजन्मे समभाव-ज्ञान का तत्व कैसे उत्पन्न होता है; और यह भी कि उत्पन्न समभाव-ज्ञान का तत्व विकास की पूर्णता कैसे प्रदान करता है। वह उस विषय का अनुसरण करता है, उसे विकसित करता है, दोहराता है, और उस पर अच्छी तरह से ध्यान केंद्रित करता है; उस विषय का अनुसरण करने, उसे विकसित करने, दोहराने और उस पर अच्छी तरह से ध्यान केंद्रित करने के बाद वह अपनी चेतना को बाह्य मानसिक अवस्थाओं पर लगाता है।

P = अंतिम उदाहरण के रूप में पूर्ण करें।

और एक भिक्षु बाहरी मानसिक अवस्थाओं में मानसिक अवस्था का चिंतन कैसे करता है? इसमें भिक्षु दूसरे में इंद्रिय सुख की इच्छा के बारे में जानता है, "उसमें इंद्रिय सुख की इच्छा है"; या, दूसरे में इंद्रिय सुख की इच्छा न होने के बारे में जानता है, "उसमें इंद्रिय सुख की इच्छा नहीं है"। और वह यह भी जानता है कि कैसे अजन्मी इंद्रिय सुख की इच्छा उत्पन्न होती है; और कैसे उत्पन्न इंद्रिय सुख की इच्छा का त्याग होता है; और कैसे त्यागी हुई इंद्रिय सुख की इच्छा का भविष्य में कोई उद्भव नहीं होता। दूसरे में दुर्भावना होने के बारे में; दूसरे में आलस्य और सुस्ती होने के बारे में; दूसरे में विचलित होने और पश्चाताप होने के बारे में।

पी: दूसरे के मन में संदेह होने के बारे में जानता है, "उसमें संदेह है"
उसे"; या, दूसरे में संदेह न होने के बारे में जानते हुए, "उसमें कोई संदेह नहीं है"। और यह भी जानते हैं कि अजन्मे संदेह का भी उद्भव कैसे होता है; और उत्पन्न संदेह का त्याग कैसे होता है; और त्यागे हुए संदेह का भविष्य में कोई उद्भव नहीं होता।

P = अंतिम उदाहरण के रूप में पूर्ण करें।

या तो वह जानता है कि दूसरे में सजगता-ज्ञान का गुण है, "उसमें सजगता-ज्ञान का गुण है"; या, जानता है कि दूसरे में सजगता-ज्ञान का गुण नहीं है, "उसमें सजगता-ज्ञान का गुण नहीं है"। और वह यह भी जानता है कि अजन्मी सजगता-ज्ञान का गुण कैसे उत्पन्न होता है; और यह भी कि उत्पन्न सजगता-ज्ञान का गुण कैसे पूर्ण होता है। वह यह भी जानता है कि दूसरे में सत्य अन्वेषण-ज्ञान का गुण है, और दूसरे में ऊर्जा-ज्ञान का गुण है।

पी: दूसरे में उत्साह-ज्ञान-कारक होने का, :पी: का
किसी दूसरे में शांति-ज्ञान का गुण होने पर, किसी दूसरे में एकाग्रता-ज्ञान का गुण होने पर, किसी दूसरे में समभाव-ज्ञान का गुण होने पर, वह जानता है, "उसमें समभाव-ज्ञान का गुण है"; या, किसी दूसरे में समभाव-ज्ञान का गुण न होने पर, [201] "उसमें समभाव-ज्ञान का गुण नहीं है"। और वह यह भी जानता है कि अजन्मे समभाव-ज्ञान का गुण कैसे उत्पन्न होता है; और वह यह भी जानता है कि उत्पन्न समभाव-ज्ञान का गुण कैसे पूर्ण होता है। वह उस विषय का अनुसरण करता है, उसे विकसित करता है, दोहराता है, उसे अच्छी तरह से स्थिर करता है; उस विषय का अनुसरण करने, उसे विकसित करने, उसे दोहराने और उसे अच्छी तरह से स्थिर करने के बाद वह अपनी चेतना को आंतरिक और बाह्य दोनों मानसिक अवस्थाओं पर लगाता है।

P = अंतिम उदाहरण के रूप में पूर्ण करें।

और भिक्षु आंतरिक और बाह्य दोनों प्रकार की मानसिक अवस्थाओं में चिंतन करते हुए कैसे रहता है? यहाँ भिक्षु इंद्रिय सुख की इच्छा के बारे में जानता है, "इंद्रिय सुख की इच्छा है"; या, इंद्रिय सुख की इच्छा न होने के बारे में जानता है, "इंद्रिय सुख की इच्छा नहीं है"। और वह यह भी जानता है कि अजन्मी इंद्रिय सुख की इच्छा कैसे उत्पन्न होती है; और उत्पन्न इंद्रिय सुख की इच्छा का त्याग कैसे होता है।

माइंडफुलनेस की नींव का विश्लेषण 261

यह भी वह जानता है; और यह भी कि इंद्रिय सुख की इच्छा का त्याग भविष्य में नहीं होता। दुर्भावना, आलस्य, विचलितता और पश्चाताप के बारे में वह जानता है; संदेह के बारे में वह कहता है, "संदेह है"; या संदेह न होने के बारे में वह कहता है, "संदेह नहीं है"। और यह भी कि असंदेह का भी उद्भव होता है; और यह भी कि उत्पन्न संदेह का त्याग होता है; और यह भी कि त्यागे हुए संदेह का भविष्य में कोई उद्भव नहीं होता।

P — अंतिम उदाहरण के रूप में पूर्ण करें।

या तो वह सचेतनता-ज्ञान के कारक के अस्तित्व को जानता है, "सचेतनता-ज्ञान का कारक मौजूद है"; या, सचेतनता-ज्ञान के कारक के अस्तित्व न होने को जानता है, "सचेतनता-ज्ञान का कारक नहीं है"। और वह यह भी जानता है कि कैसे अजन्मी सचेतनता-ज्ञान का कारक उत्पन्न होता है; और कैसे उत्पन्न सचेतनता-ज्ञान के कारक से विकास की पूर्णता होती है, यह भी वह जानता है। सत्य अन्वेषण-ज्ञान के कारक के अस्तित्व को, ऊर्जा-ज्ञान के कारक के अस्तित्व को, उत्साह-ज्ञान के कारक के अस्तित्व को, शांति-ज्ञान के कारक के अस्तित्व को।

पी: एकाग्रता-ज्ञान-कारक होने के बारे में, :पी:
समभाव-ज्ञान के अस्तित्व को जानते हुए, वह कहता है, "समभाव-ज्ञान मौजूद है"; या समभाव-ज्ञान के अभाव को जानते हुए, वह कहता है, "समभाव-ज्ञान नहीं है"। और वह यह भी जानता है कि अनात्म समभाव-ज्ञान का उद्‌भव कैसे होता है; और उद्‌भवित समभाव-ज्ञान का विकास कैसे पूर्ण होता है, यह भी वह जानता है। इस प्रकार एक भिक्षु आंतरिक और बाह्य दोनों मानसिक अवस्थाओं में चिंतन करते हुए, सजग, जागरूक और सचेत रहता है; संसार में लोभ और मानसिक पीड़ा को दूर करता है।

P=: अंतिम उदाहरण के रूप में पूर्ण करें।

368. 'चिंतन 9 का अर्थ है: उसमें चिंतन क्या है? [202] जो ज्ञान, समझ, :P: सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण है। इसे चिंतन कहते हैं। वह इस चिंतन से परिपूर्ण है, अच्छी तरह परिपूर्ण है।

प्राप्त, अच्छी तरह से प्राप्त, संपन्न, संपन्न, सुसज्जित। इसलिए इसे 'चिंतन' कहा जाता है।

P = अनुच्छेद 525 देखें।

369. 'निवास करना' का अर्थ है: चारों मुद्राओं को धारण करना, अस्तित्व में रहना, रक्षा करना, चलते रहना, बनाए रखना, घूमना, निवास करना। अतः इसे 'निवास करना' कहा जाता है।

370. 'उत्साही' का अर्थ है: उसमें उत्साह क्या है? वह जो मानसिक ऊर्जा को जगाता है, :PX : सही प्रयास। इसे उत्साह कहते हैं। वह इस उत्साह से युक्त है, :P 2 : सुसज्जित है। इसलिए इसे 'उत्साही' कहा जाता है।

पी^पैरा देखें. 220. पी 2=पैरा देखें। 368.

371. 'जागरूक' का अर्थ है: जागरूकता क्या है? वह जो ज्ञान, समझ, :P 1 : सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण है। इसे जागरूकता कहते हैं। वह इस जागरूकता से युक्त है, :P 2 : सुसज्जित है। इसलिए इसे 'जागरूक' कहते हैं।

पी^पैरा देखें. 525. पी 2 = पैरा देखें। 368.

372. 'सचेत' का अर्थ है: उसमें सचेतनता क्या है? वह जो सचेतनता है, निरंतर सचेतनता, सही सचेतनता। इसे सचेतनता कहते हैं। वह इस सचेतनता से युक्त है, सुसज्जित है। इसलिए इसे 'सचेत' कहा जाता है।

पी^पैरा देखें. 220. पी 2 = पैरा देखें। 368.

373. 'संसार में लोभ और मानसिक पीड़ा को दूर करना' का अर्थ है: संसार क्या है? यही मानसिक अवस्थाएँ संसार हैं, और पाँचों तत्व (जिनके विषय हैं) भी संसार हैं। इसे संसार कहते हैं। लोभ क्या है? वह जो कामवासना, आसक्ति, चेतना की आसक्ति है। इसे लोभ कहते हैं। मानसिक पीड़ा क्या है? वह जो मानसिक बेचैनी, मानसिक पीड़ा, मानसिक संपर्क से उत्पन्न बेचैन पीड़ादायक अनुभव, मानसिक संपर्क से उत्पन्न बेचैन पीड़ादायक भावना है। इसे मानसिक पीड़ा कहते हैं। इस प्रकार इस संसार में यह लोभ और यह मानसिक पीड़ा दूर हो जाती है, समाप्त हो जाती है, शांत हो जाती है, नियंत्रित हो जाती है, समाप्त हो जाती है, गायब हो जाती है, पूरी तरह नष्ट हो जाती है, मुरझा जाती है, पूरी तरह मुरझा जाती है, निरस्त हो जाती है।

इसलिए इसे 'संसार से लोभ और मानसिक पीड़ा को दूर करना' कहा जाता है।

P = अनुच्छेद 249 देखें।

(यहाँ समाप्त होता है) मानसिक अवस्थाओं पर चिंतन की व्याख्या

(यहाँ समाप्त होता है) प्रवचनों के अनुसार विश्लेषण

2. अभिधम्म के अनुसार विश्लेषण

374. ध्यान के चार आधार — इसमें भिक्षु शरीर में शरीर का चिंतन करते हैं; भावनाओं में भावना का चिंतन करते हैं; चेतना में चेतना का चिंतन करते हैं; मानसिक अवस्थाओं में मानसिक अवस्था का चिंतन करते हैं।

[203]

375. भिक्षु शरीर में शरीर का ध्यान कैसे लगाता है? यहाँ उस समय जब भिक्षु जन्म-मृत्यु के निरंतर चक्र से मुक्ति पाने की ओर अग्रसर अलौकिक ध्यान विकसित करता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर प्रथम अवस्था में प्रवेश करता है, और उस प्रथम ध्यान में लीन हो जाता है जो कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान है—शरीर में शरीर का ध्यान लगाना। उस समय जो सचेतनता, निरंतर सचेतनता, सही सचेतनता, सचेतनता-ज्ञान का तत्व, मार्ग का घटक है, वह मार्ग में समाहित है। इसे सचेतनता का आधार कहा जाता है। (इसी प्रकार) शेष अवस्थाएँ भी सचेतनता के आधार से जुड़ी हैं।

पी — पैराग्राफ 205 देखें।

376. और एक भिक्षु किस प्रकार भावों में भावों का चिंतन करते हुए निवास करता है? यहाँ उस समय जब एक भिक्षु पुनर्जन्म और मृत्यु के निरंतर चक्र से मुक्ति पाने की ओर अग्रसर अति-मौन ध्यान विकसित करता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर प्रथम अवस्था में प्रवेश करता है, और उस प्रथम ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है जो कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान है—भावों में भावों का चिंतन करना। उस समय जो कुछ भी होता है,

264

विश्लेषण की पुस्तक

समय ही सचेतनता है, निरंतर सचेतनता है, सही सचेतनता है, सचेतनता-ज्ञान का कारक है, मार्ग का घटक है, मार्ग में समाहित है। इसे ही सचेतनता का आधार कहा जाता है। (साथ ही) शेष अवस्थाएँ भी सचेतनता के आधार से जुड़ी हुई हैं।

P = अनुच्छेद 205 देखें।

377. और एक भिक्षु चेतना में चेतना का चिंतन कैसे करता है? यहाँ उस समय जब एक भिक्षु निरंतर जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्ति पाने की ओर अग्रसर अलौकिक ध्यान विकसित करता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर प्रथम अवस्था में प्रवेश करता है, और उस प्रथम ध्यान में लीन हो जाता है जो कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान है—चेतना में चेतना का चिंतन। उस समय जो सचेतनता, निरंतर सचेतनता, सही सचेतनता, सचेतनता-ज्ञान-कारक, मार्ग का घटक है, वह मार्ग में समाहित है। इसे सचेतनता का आधार कहा जाता है। (इसी प्रकार) शेष अवस्थाएँ भी सचेतनता के आधारों से संबंधित हैं।

P = अनुच्छेद 205 देखें।

378. भिक्षु मानसिक अवस्थाओं में चिंतन करते हुए कैसे निवास करता है? यहाँ उस समय जब भिक्षु जन्म-मृत्यु के निरंतर चक्र से मुक्ति पाने की ओर अग्रसर अलौकिक ध्यान विकसित करता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर प्रथम अवस्था में प्रवेश करता है, और उस प्रथम ध्यान में निवास करता है जो कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान है—मानसिक अवस्थाओं में चिंतन करना। उस समय जो सचेतनता, निरंतर सचेतनता, सही सचेतनता, सचेतनता-ज्ञान-कारक, मार्ग का घटक है, वह मार्ग में समाहित है। इसे सचेतनता का आधार कहा जाता है। (इसी प्रकार) शेष अवस्थाएँ भी सचेतनता के आधार से जुड़ी हैं।

P = अनुच्छेद 205 देखें।

379. इसमें ध्यान का आधार क्या है? इसमें उस समय जब एक भिक्षु निरंतर पुनर्जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति पाने की ओर अग्रसर अलौकिक ध्यान विकसित करता है; वह गलत दृष्टिकोण को त्यागने और प्रथम अवस्था में प्रवेश करने के लिए ध्यान लगाता है।

माइंडफुलनेस की नींव का विश्लेषण

265

यह अवस्था, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, प्रथम ध्यान की अवस्था में लीन हो जाती है, जो कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान का परिणाम है—विभिन्न मानसिक अवस्थाओं में चिंतन करना। उस समय जो भी सचेतनता, निरंतर सचेतनता, सही सचेतनता,

सचेतनता-ज्ञान का कारक, मार्ग का घटक है, वह मार्ग में समाहित है। इसे सचेतनता का आधार कहा जाता है। (इसी प्रकार) शेष अवस्थाएँ भी सचेतनता के आधार से जुड़ी हुई हैं।

P = अनुच्छेद 205 देखें।

380. ध्यान के चार आधार — इसमें भिक्षु शरीर में शरीर का चिंतन करता है; भावनाओं में भावना का चिंतन करता है; चेतना में चेतना का चिंतन करता है; मानसिक अवस्थाओं में मानसिक अवस्था का चिंतन करता है।

[204]

381. और एक भिक्षु शरीर में शरीर का ध्यान करते हुए कैसे निवास करता है? यहाँ उस समय जब एक भिक्षु निरंतर पुनर्जन्म और मृत्यु के चक्र को तोड़ते हुए, मुक्ति की ओर अग्रसर अलौकिक ध्यान विकसित करता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, पहली अवस्था में प्रवेश करने के लिए, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, प्रथम ध्यान में निवास करता है, जो कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान है; उस समय संपर्क होता है, अविचल होता है। ये अवस्थाएँ अच्छी हैं। ऐसा करने के बाद, उसी अलौकिक अच्छे ध्यान को विकसित करने के बाद, वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, परिणामी प्रथम ध्यान में निवास करता है, जो कठिन अभ्यास, धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान है और शून्य है - शरीर में शरीर का ध्यान करते हुए। उस समय जो सचेतनता, निरंतर सचेतनता, सही सचेतनता, सचेतनता-ज्ञान-कारक, मार्ग का घटक है, वह मार्ग में समाहित है। इसे ही ध्यान का आधार कहा जाता है। (साथ ही) शेष अवस्थाएँ भी इसी आधार से जुड़ी होती हैं।

पी^पैरा देखें. 205. पी 2 = ध्स देखें। पैरा. 277.

382. और एक भिक्षु किस प्रकार भावों में भावों का चिंतन करते हुए निवास करता है? यहाँ उस समय जब एक भिक्षु निरंतर पुनर्जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति की ओर अग्रसर अति-मौन ध्यान विकसित करता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, प्रथम अवस्था में प्रवेश करने के लिए, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है।

266

विश्लेषण की पुस्तक

प्रथम ध्यान वह है जिसमें कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान शामिल है; उस समय संपर्क होता है, :P 2 : अविचल की अवस्था होती है। ये अवस्थाएँ अच्छी हैं। उसी अलौकिक अच्छे ध्यान को प्राप्त करने और विकसित करने के बाद, वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, :P 1 : परिणामी प्रथम ध्यान में लीन हो जाता है, जो कठिन अभ्यास, धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान और शून्यता से युक्त है—भावों में भावों का चिंतन करते हुए। उस समय जो सचेतनता, निरंतर सचेतनता, सही सचेतनता, सचेतनता-ज्ञान-कारक, मार्ग का घटक है, वह मार्ग में समाहित है। इसे सचेतनता का आधार कहा जाता है। (इसी प्रकार) शेष अवस्थाएँ भी सचेतनता के आधार से जुड़ी हैं।

पी^पैरा देखें. 205. पी 2 = ध्स देखें। पैरा. 277.

383. और एक भिक्षु चेतना में चेतना का चिंतन करते हुए कैसे रहता है? यहाँ उस समय जब एक भिक्षु निरंतर पुनर्जन्म और मृत्यु से मुक्ति की ओर अग्रसर अलौकिक ध्यान विकसित करता है; वह, गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, प्रथम अवस्था में प्रवेश करने के

लिए, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, प्रथम ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है, जो कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान है; उस समय संपर्क होता है, अविचल होता है। ये अवस्थाएँ अच्छी हैं। ऐसा करने के बाद, उसी अलौकिक अच्छे ध्यान को विकसित करने के बाद, वह, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, परिणामी प्रथम ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है, जो कठिन अभ्यास, धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान है और निःसंतान है - चेतना में चेतना का चिंतन करते हुए। उस समय जो सचेतनता, निरंतर सचेतनता, सही सचेतनता, सचेतनता-ज्ञान-कारक, मार्ग का घटक है, वह मार्ग में समाहित है। इसे माइंडफुलनेस की नींव कहा जाता है। (साथ ही) माइंडफुलनेस की नींव से जुड़ी शेष अवस्थाएँ भी। [205]

पी 1 - पैरा देखें। 205. पी 2 = ध्स देखें। पैरा. 277.

384. और भिक्षु मानसिक अवस्थाओं में चिंतन करते हुए कैसे रहता है? यहाँ उस समय जब भिक्षु निरंतर जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्ति पाने की ओर अग्रसर अलौकिक ध्यान विकसित करता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, पहली अवस्था में प्रवेश करने के लिए, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, प्रथम ध्यान में लीन हो जाता है, जो कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान है; उस समय संपर्क होता है, अविचल होता है। ये अवस्थाएँ अच्छी हैं। ऐसा करने और विकसित करने के बाद

उसी अलौकिक उत्तम ध्यान में, वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, ऋणात्मक श्लोक 1: परिणामी प्रथम ध्यान में लीन हो जाता है, जो कठिन अभ्यास, धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान और शून्यता से उत्पन्न होता है—विभिन्न मानसिक अवस्थाओं में मानसिक अवस्था का चिंतन करते हुए। उस समय जो सचेतनता, निरंतर सचेतनता, सही सचेतनता, सचेतनता-ज्ञान-कारक, मार्ग का घटक होता है, वह मार्ग में समाहित होता है। इसे सचेतनता का आधार कहा जाता है। (इसी प्रकार) शेष अवस्थाएँ भी सचेतनता के आधार से संबंधित होती हैं।

पी^पैरा देखें. 205. पी 2 = ध्स देखें। पैरा. 277.

385. इसमें ध्यान का आधार क्या है? इसमें उस समय जब एक भिक्षु जन्म-मृत्यु के निरंतर चक्र से मुक्त होकर, मुक्ति की ओर अग्रसर अलौकिक ध्यान विकसित करता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर प्रथम अवस्था में प्रवेश करता है; वह कठोर अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान से युक्त प्रथम ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय संपर्क होता है; अविचल की अवस्था होती है। ये अवस्थाएँ अच्छी हैं। ऐसा करने के बाद, उसी अलौकिक अच्छे ध्यान को विकसित करने के बाद, वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, परिणामी प्रथम ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है, जो कठोर अभ्यास, धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान से युक्त है और शून्य है।* उस समय जो ध्यान, निरंतर ध्यान, सही ध्यान, ध्यान-ज्ञान का कारक, मार्ग का घटक, मार्ग में समाहित है, उसे ही ध्यान का आधार कहा जाता है। (साथ ही) शेष अवस्थाएँ भी सचेतनता की नींव से जुड़ी हुई हैं।

पीए = पैरा देखें। 205. पी 2 = ध्स देखें। पैरा. 277.

^मानसिक अवस्थाओं में मानसिक अवस्था पर चिंतन करना आमतौर पर यहाँ शामिल होता है।

(यहाँ समाप्त होता है) अभिधम्म के अनुसार विश्लेषण

3. पूछताछ

386. ध्यान के चार आधार — इसमें भिक्षु शरीर में शरीर का चिंतन करते हुए, उत्साही, जागरूक और सचेत रहते हैं; संसार में लोभ और मानसिक पीड़ा को दूर करते हैं; भावों में भावों का चिंतन करते हुए, उत्साही, जागरूक और सचेत रहते हैं; संसार में लोभ और मानसिक पीड़ा को दूर करते हैं; चेतना में चेतना का चिंतन करते हुए, उत्साही, जागरूक और सचेत रहते हैं; संसार में लोभ और मानसिक पीड़ा को दूर करते हैं;

मानसिक अवस्थाओं में मानसिक स्थिति पर चिंतन करना, उत्साही, जागरूक, सचेत; संसार में लोभ और मानसिक पीड़ा को दूर करना। [206]

387. ध्यान के चार आधारों में से कितने अच्छे हैं; कितने बुरे हैं; कितने न अच्छे हैं न बुरे? :P: कितने ऐसे हैं जिन पर पछतावा करने का कारण है; कितने ऐसे हैं जिन पर पछतावा करने का कोई कारण नहीं है?

P = शेष उपयुक्त त्रिक और युग्मक।

1. त्रिक

388. (सजगता के चार आधार) कभी अच्छे होते हैं; कभी न अच्छे होते हैं न बुरे। कभी सुखद भावों से जुड़े होते हैं; कभी दुखदायी न सुखद भावों से जुड़े होते हैं। कभी परिणाम होते हैं; कभी परिणाम उत्पन्न करते हैं। (लालसा और भ्रामक दृष्टि से) बोधहीन होते हैं, आसक्तियों के विषय नहीं होते। न भ्रष्ट होते हैं, न भ्रष्टताओं के विषय होते हैं। कभी प्रारंभिक अभ्यास के साथ होते हैं, कभी निरंतर अभ्यास के साथ; कभी प्रारंभिक अभ्यास के बिना, केवल निरंतर अभ्यास के साथ; कभी प्रारंभिक अभ्यास के बिना, निरंतर अभ्यास के बिना। कभी उत्साह के साथ होते हैं; कभी आनंद के साथ; कभी उदासीनता के साथ। न तो प्रथम मार्ग से और न ही पश्चात मार्गों से त्यागे जाने योग्य; न ही प्रथम मार्ग से और न ही पश्चात मार्गों से त्यागे जाने योग्य कोई मूल हैं। कभी विक्षेपणशील होते हैं (लगातार पुनर्जन्म और मृत्यु के चक्र में बंधे हुए); कभी न तो संचयी होते हैं और न ही विक्षेपणशील। कभी सात अलौकिक अवस्थाओं के होते हैं; कभी अंतिम अलौकिक अवस्था के होते हैं। अतुलनीय होते हैं। इनका उद्देश्य असीम है। ये श्रेष्ठ हैं। कभी-कभी ये निश्चित (परिणामी समय) के साथ सही (अवस्थाएँ) होती हैं; कभी-कभी इनका कोई निश्चित (परिणामी समय) नहीं होता। इनका उद्देश्य पथ नहीं होता; कभी-कभी पथ इनका कारण होता है; कभी-कभी पथ इनका प्रमुख कारक होता है; कभी-कभी यह कहना उचित नहीं होगा कि पथ इनका कारण या प्रमुख कारक है। कभी-कभी ये उत्पन्न होते हैं; कभी-कभी उत्पन्न नहीं होते; कभी-कभी इनका उत्पन्न होना तय है। कभी-कभी ये भूतकाल होते हैं; कभी-कभी भविष्यकाल होते हैं; कभी-कभी वर्तमानकाल होते हैं। इनका न तो भूतकाल, न भविष्यकाल और न ही वर्तमानकाल का कोई उद्देश्य होता है। कभी-कभी ये आंतरिक होते हैं; कभी-कभी बाह्य होते हैं; कभी-कभी आंतरिक और बाह्य दोनों होते हैं। इनका बाह्य उद्देश्य होता है। ये अदृश्य होते हैं, इनका कोई प्रभाव नहीं होता।

2. दोहे

269

389. (सजगता के चार आधार) जड़ नहीं हैं। जड़ के साथ हैं। जड़ से जुड़े हैं। इन्हें जड़ के साथ होने वाली जड़ नहीं कहा जाना चाहिए; (वे) जड़ के साथ हैं लेकिन जड़ नहीं हैं। इन्हें जड़ के साथ होने वाली जड़ नहीं कहा जाना चाहिए: (वे) जड़ से जुड़े हैं लेकिन जड़ नहीं हैं। जड़ नहीं हैं, जड़ के साथ हैं।

(सजगता के चार आधार) कारण सहित हैं। बद्ध हैं। अदृश्य हैं। प्रभावहीन हैं। भौतिक नहीं हैं। अलौकिक हैं। एक मार्ग से ज्ञात किए जा सकते हैं; दूसरे मार्ग से ज्ञात नहीं किए जा सकते। दोष नहीं हैं। दोषों के विषय नहीं हैं। दोषों से संबद्ध नहीं हैं। यह नहीं कहा जाना चाहिए कि दोष भी दोषों के विषय हैं या दोषों के विषय हैं लेकिन दोष नहीं हैं। यह नहीं कहा जाना चाहिए कि दोष भी दोषों से संबद्ध हैं या दोषों से संबद्ध हैं लेकिन दोष नहीं हैं। दोषों से संबद्ध नहीं हैं, दोषों के विषय नहीं हैं। बंधन नहीं हैं।

पी: ये बंधन नहीं हैं। :पी: ये बाढ़ नहीं हैं। :पी: ये बंधन नहीं हैं। :पी: ये
बाधाएँ नहीं हैं। ; P: विकृतियाँ नहीं हैं। :P: इनके उद्देश्य होते हैं। ये चेतना नहीं हैं। ये मानसिक सहवर्ती हैं। ये चेतना से जुड़े हैं। ये चेतना से जुड़े हुए हैं। ये चेतना द्वारा उत्पन्न होते हैं। ये चेतना के साथ सह-अस्तित्व में हैं। ये चेतना के साथ रहते हैं। ये चेतना से जुड़े हुए हैं, चेतना द्वारा उत्पन्न होते हैं। ये चेतना से जुड़े हुए हैं, चेतना द्वारा उत्पन्न होते हैं, चेतना के साथ सह-अस्तित्व में हैं। ये चेतना से जुड़े हुए हैं, चेतना द्वारा उत्पन्न होते हैं, चेतना के साथ रहते हैं। ये बाह्य हैं। ये व्युत्पन्न नहीं हैं। इन्हें ग्रहण नहीं किया जा सकता है। ये आसक्ति नहीं हैं। :P: ये विकृतियाँ नहीं हैं। :P: इन्हें प्रथम मार्ग द्वारा नहीं छोड़ा जाना चाहिए। इन्हें अनुवर्ती मार्गों द्वारा नहीं छोड़ा जाना चाहिए। प्रथम मार्ग द्वारा छोड़े जाने योग्य कोई मूल नहीं हैं। अनुवर्ती मार्गों द्वारा छोड़े जाने योग्य कोई मूल नहीं हैं।

P = इस पैराग्राफ में वर्णित अपवित्रताओं के लिए पूर्ण।

(सजगता के चार आधार) कभी-कभी प्रारंभिक अभ्यास के साथ होते हैं; कभी-कभी प्रारंभिक अभ्यास के बिना होते हैं। कभी-कभी निरंतर अभ्यास के साथ होते हैं; कभी-कभी निरंतर अभ्यास के बिना होते हैं। कभी-कभी उत्साह के साथ होते हैं; [207] कभी-कभी उत्साह के बिना होते हैं। कभी-कभी उत्साह के साथ होते हैं; कभी-कभी उत्साह के बिना होते हैं। कभी-कभी आनंद के साथ होते हैं; कभी-कभी आनंद के बिना होते हैं। कभी-कभी साथ में होते हैं

द्वितीय

270

विश्लेषण की पुस्तक

उदासीनता; कभी-कभी उदासीनता के साथ नहीं होती। इच्छा के तल की विशेषताएँ नहीं हैं। रूप के तल की विशेषताएँ नहीं हैं। निराकार तल की विशेषताएँ नहीं हैं। समाहित नहीं हैं (अर्थात् अलौकिक हैं)। कभी-कभी मुक्ति की प्रवृत्ति रखते हैं; कभी-कभी मुक्ति की प्रवृत्ति

नहीं रखते। कभी-कभी निश्चित (परिणामी समय) के होते हैं; कभी-कभी अनिश्चित (परिणामी समय) के होते हैं। अतुलनीय हैं। शोक का कोई कारण नहीं है।

(यहाँ समाप्त होता है) पूछताछ

ध्यान की नींव का विश्लेषण

समाप्त
टिपिटक >> अभिधम्म पिटक >> विभंग >> अध्याय 8 पाठ - सम्मप्पाधना
विभंग-विश्लेषण की पुस्तक-गोतम बुद्ध द्वारा बोली गई
पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण
पाली से अनुवादित यू. थिटिला, रंगून, बर्मा, 1969 द्वारा

ओसीआर संस्करण, प्रूफरीडिंग नहीं की गई है, इसमें त्रुटियां हैं
(पाठकों को दिए गए .pdf संस्करण की सहायता से पाठ को सही करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है)

अध्याय 8. सही प्रयास (समप्पधान) का विश्लेषण

1. प्रवचनों के अनुसार विश्लेषण

390. [208] चार सही प्रयास — इसमें भिक्षु इच्छा उत्पन्न करता है, प्रयास करता है, ऊर्जा जगाता है, मन लगाता है, उन बुरी अवस्थाओं के उत्पन्न न होने के लिए प्रयास करता है जो उत्पन्न नहीं हुई हैं; इच्छा उत्पन्न करता है, प्रयास करता है, ऊर्जा जगाता है, मन लगाता है, उन बुरी अवस्थाओं के त्याग के लिए प्रयास करता है जो उत्पन्न हो चुकी हैं; इच्छा उत्पन्न करता है, प्रयास करता है, ऊर्जा जगाता है, मन लगाता है, उन अच्छी अवस्थाओं के उत्पन्न होने के लिए प्रयास करता है जो उत्पन्न नहीं हुई हैं; इच्छा उत्पन्न करता है, प्रयास करता है, ऊर्जा जगाता है, मन लगाता है, उन अच्छी अवस्थाओं को स्थिर करने, उन्हें एक साथ लाने, उन्हें बढ़ाने, उन्हें परिपक्व करने, उन्हें विकसित करने और उन्हें पूर्ण करने के लिए प्रयास करता है जो उत्पन्न हो चुकी हैं।

391. भिक्षु इच्छा कैसे उत्पन्न करता है, प्रयास कैसे करता है, ऊर्जा कैसे जगाता है, मन को कैसे लगाता है, और अजन्मे बुरे भावों को उत्पन्न न होने देने के लिए कैसे प्रयास करता है? अजन्मे बुरे भाव क्या हैं? तीन बुरे मूल (अर्थात) लोभ, घृणा, सुस्ती और उनसे उत्पन्न होने वाले दोष; उनसे संबंधित भावों का समूह, बोध का समूह, मानसिक बोधों का समूह, चेतना का समूह; उनसे उत्पन्न होने वाली शारीरिक क्रिया, वाणी और मानसिक क्रिया। इन्हें अजन्मे बुरे भाव कहा जाता है। इस प्रकार वह इच्छा उत्पन्न करता है, प्रयास करता है, ऊर्जा जगाता है, मन को कैसे लगाता है, और इन अजन्मे बुरे भावों को उत्पन्न न होने देने के लिए प्रयास करता है।

392. 'इच्छा उत्पन्न करना' का अर्थ है: इसमें इच्छा क्या है? जो इच्छा है, इच्छा करने की क्रिया, करने की इच्छा, अच्छी और धार्मिक इच्छा। इसे इच्छा कहते हैं। वह इस इच्छा को उत्पन्न करता है, अच्छी तरह से उत्पन्न करता है, इसे उत्पन्न करता है, इसे अच्छी तरह से उत्पन्न करता है, इसे अस्तित्व में लाता है, इसे पूर्ण रूप से अस्तित्व में लाता है। इसलिए इसे 'इच्छा उत्पन्न करना' कहते हैं।

393. 'प्रयास करता है' का अर्थ है: उसमें प्रयास क्या है? वह जो

मानसिक ऊर्जा का जागरण, सही प्रयास। [209] इसे प्रयास कहते हैं। इस प्रयास से वह संपन्न, अच्छी तरह संपन्न, प्राप्त, अच्छी तरह प्राप्त, संपन्न, संपन्न, सुसज्जित होता है। इसलिए इसे 'प्रयास करता है' कहा जाता है।

P = अनुच्छेद 220 देखें।

394. 'ऊर्जा जागृत करना' का अर्थ है: इसमें ऊर्जा क्या है? वह जो मानसिक ऊर्जा को जागृत करता है, यानी सही प्रयास। इसे ऊर्जा कहते हैं। वह इस ऊर्जा को जागृत करता है, अच्छी तरह जागृत करता है, आगे बढ़ाता है, विकसित करता है, दोहराता है। इसलिए इसे 'ऊर्जा जागृत करना' कहते हैं।

P = अनुच्छेद 220 देखें।

395. 'मन का प्रयोग करना' का अर्थ है: उसमें मन (चेतना) क्या है? वह जो चेतना, मन, विचार आदि है, और उपरोक्त के आधार पर, मन-चेतना-तत्व है। इसे मन कहते हैं। वह इस मन का प्रयोग करता है, अच्छी तरह से प्रयोग करता है, सहारा देता है, बार-बार सहारा देता है। इसलिए इसे 'मन का प्रयोग करना' कहते हैं।

P = अनुच्छेद 184 देखें।

396. 'प्रयास करता है' का अर्थ है: इसमें प्रयास क्या है? वह जो मानसिक ऊर्जा को जगाता है, यानी सही प्रयास। इसे प्रयास कहते हैं। वह इस प्रयास से युक्त है। इसलिए इसे 'प्रयास करता है' कहते हैं।

पी^पैरा देखें. 220. पी 2 = पैरा देखें। 357.

397. भिक्षु इच्छा कैसे उत्पन्न करता है, प्रयास कैसे करता है, ऊर्जा कैसे जगाता है, मन को कैसे लगाता है, और उत्पन्न हुई बुरी अवस्थाओं को त्यागने का प्रयास कैसे करता है? उत्पन्न हुई बुरी अवस्थाएँ क्या हैं? तीन बुरे मूल (अर्थात,) लोभ, घृणा, सुस्ती और उनसे उत्पन्न होने वाले दोष; उनसे संबंधित भावों का समूह, बोधों का समूह, मानसिक बोधों का समूह, चेतना का समूह; उनसे उत्पन्न होने वाली शारीरिक क्रिया, वाणी और मानसिक क्रिया। इन्हें उत्पन्न हुई बुरी अवस्थाएँ कहा जाता है। इस प्रकार वह इच्छा उत्पन्न करता है, प्रयास करता है, ऊर्जा जगाता है, मन को लगाता है, और उत्पन्न हुई इन बुरी अवस्थाओं को त्यागने का प्रयास करता है।

398. 'इच्छा उत्पन्न करता है* का अर्थ है: उसमें इच्छा क्या है? जो इच्छा है, इच्छा करने की क्रिया, करने की इच्छा, अच्छी धार्मिक इच्छा।

इसे इच्छा कहते हैं। यह इच्छा वह उत्पन्न करता है, अच्छी तरह से उत्पन्न करता है, उठने का कारण बनता है, अच्छी तरह से उठने का कारण बनता है, अस्तित्व में आने का कारण बनता है, पूर्ण रूप से अस्तित्व में आने का कारण बनता है। इसलिए इसे 'इच्छा उत्पन्न करना' कहा जाता है।

399 'प्रयास करता है' का अर्थ है: उसमें प्रयास क्या है? वह जो मानसिक ऊर्जा को जगाता है, : P 1 : सही प्रयास। इसे प्रयास कहते हैं। वह इस प्रयास से युक्त है, :P 2 : सुसज्जित है। इसलिए इसे 'प्रयास करता है' 5 कहा जाता है।

पी 1 = पैरा देखें। 220. पी 2 = पैरा देखें। 357.

400. 'ऊर्जा जगाना' का अर्थ है: उसमें ऊर्जा क्या है? वह जो मानसिक ऊर्जा को जगाता है, सही प्रयास। इसे ऊर्जा कहते हैं। वह इस ऊर्जा को जगाता है, अच्छी तरह जगाता है, आगे बढ़ाता है, विकसित करता है, दोहराता है। इसलिए इसे 'ऊर्जा जगाना' कहा जाता है।

P = अनुच्छेद 220 देखें।

401. 'मन को बल देता है' का अर्थ है: उसमें मन क्या है? वह जो चेतना, मन, विचार, आदि है, और उपरोक्त पर निर्भर मन-चेतना-तत्व है। इसे मन कहते हैं। वह इस मन को बल देता है, अच्छी तरह बल देता है, सहारा देता है, बार-बार सहारा देता है। इसलिए इसे 'मन को बल देता है' कहा जाता है।

P = अनुच्छेद 184 देखें।

402. 'प्रयास' का अर्थ है: उसमें प्रयास क्या है? वह जो मानसिक ऊर्जा को जगाता है, : P 1 : सही प्रयास। इसे प्रयास कहते हैं। वह इस प्रयास से युक्त है, :P 2 : सुसज्जित है। इसलिए इसे 'प्रयास' कहते हैं।

पी 1 = पैरा देखें। 220. पी 2 = पैरा देखें। 357.

403. और भिक्षु कैसे इच्छा उत्पन्न करता है, प्रयास करता है, ऊर्जा जगाता है, मन लगाता है, और उन अच्छे भावों को उत्पन्न करने का प्रयास करता है जो अभी उत्पन्न नहीं हुए हैं? [210] इसमें वे अच्छे भाव क्या हैं जो अभी उत्पन्न नहीं हुए हैं? तीन अच्छे मूल (अर्थात) लोभ का अभाव, घृणा का अभाव, सुस्ती का अभाव; भावों का समूह, बोध का समूह, मानसिक व्यंजकों का समूह, उनसे संबंधित चेतना का समूह; उनसे उत्पन्न शारीरिक क्रिया, वाणी क्रिया, मानसिक क्रिया। इन्हें वे अच्छे भाव कहा जाता है जो अभी उत्पन्न नहीं हुए हैं। इस प्रकार वह इच्छा उत्पन्न करता है, प्रयास करता है, ऊर्जा जगाता है, मन लगाता है, और इन अच्छे भावों को उत्पन्न करने का प्रयास करता है जो अभी उत्पन्न नहीं हुए हैं।

404. 'इच्छा उत्पन्न करता है* का अर्थ है: : पृष्ठ 1 : 'प्रयास करता है* का अर्थ है: : पृष्ठ 2 : 'ऊर्जा जगाता है* का अर्थ है: : पृष्ठ 3 : 'मन लगाता है* का अर्थ है: : पृष्ठ 4 : 'प्रयास करता है* का अर्थ है: इसमें प्रयास क्या है? वह जो मानसिक ऊर्जा को जगाता है, : पृष्ठ 5 : सही प्रयास। इसे प्रयास कहते हैं। वह इस प्रयास से युक्त है, : पृष्ठ 6 : सुसज्जित है। इसलिए इसे 'प्रयास करता है' कहते हैं।

पी^पैरा देखें. 392. पी 2 = पैरा देखें। 393. पी 3 = पैरा देखें। 394.

पी 4 = पैरा देखें। 395. पी 5 = पैरा देखें। 220. पीजी = पैरा देखें। 357.

405. भिक्षु सत्कार कैसे उत्पन्न करता है, प्रयास करता है, ऊर्जा जगाता है, मन को लगाता है, उत्पन्न हुई अच्छी अवस्थाओं की स्थिरता, संयोजन, वृद्धि, परिपक्वता, विकास और पूर्णता के लिए प्रयास करता है? उत्पन्न हुई अच्छी अवस्थाएँ क्या हैं? तीन अच्छे मूल तत्व (अर्थात्) लोभ का अभाव, घृणा का अभाव, सुस्ती का अभाव; भावों का समूह, बोधों का समूह, मानसिक बोधों का समूह, उनसे संबंधित चेतना का समूह; इनसे उत्पन्न शारीरिक क्रिया, वाणी क्रिया और मानसिक क्रिया। इन्हें उत्पन्न हुई अच्छी अवस्थाएँ कहा जाता है। इस प्रकार वह सत्कार उत्पन्न करता है, प्रयास करता है, ऊर्जा जगाता है, मन को लगाता है, और उत्पन्न हुई इन अच्छी अवस्थाओं की स्थिरता, संयोजन, वृद्धि, परिपक्वता, विकास और पूर्णता के लिए प्रयास करता है।

406. 'स्थिरीकरण* का अर्थ है: जो स्थिरीकरण है वह सहस्थापन है; जो सहस्थापन है वह वृद्धि है; जो वृद्धि है वह परिपक्वता है; जो परिपक्वता है वह विकास है; जो विकास है वह पूर्णता है।

407. 'इच्छा उत्पन्न करना* का अर्थ है: :PX : 'प्रयास करना* का अर्थ है: :P 2 : 'ऊर्जा जगाना* का अर्थ है: :P 3 : 'मन लगाना* का अर्थ है: :P 4 : 'प्रयास करना* का अर्थ है: इसमें प्रयास क्या है? वह जो मानसिक ऊर्जा को जगाता है, :P 5 : सही प्रयास। इसे प्रयास कहते हैं। वह इस प्रयास से युक्त है, :P 6 : सुसज्जित है। इसलिए इसे 'प्रयास करना' कहते हैं।

पी 1 = पैरा देखें। 392. पी 2 = पैरा देखें। 393. पी 3 = पैरा देखें। 394.

पी 4 = पैरा देखें। 395. पी 5 = पैरा देखें। 220. पी 6 = पैरा देखें। 357.

(यहाँ समाप्त होता है) प्रवचनों के अनुसार विश्लेषण [211]

सही प्रयास का विश्लेषण 275

2. अभिधम्म के अनुसार विश्लेषण

408. चार सही प्रयास — इसमें भिक्षु इच्छा उत्पन्न करता है, प्रयास करता है, ऊर्जा जगाता है, मन लगाता है, उन बुरी अवस्थाओं के उत्पन्न न होने के लिए प्रयास करता है जो उत्पन्न नहीं हुई हैं; इच्छा उत्पन्न करता है, प्रयास करता है, ऊर्जा जगाता है, मन लगाता है, उन बुरी अवस्थाओं के त्याग के लिए प्रयास करता है जो उत्पन्न हो चुकी हैं; इच्छा उत्पन्न करता है, प्रयास करता है, ऊर्जा जगाता है, मन लगाता है, उन अच्छी अवस्थाओं के उत्पन्न होने के लिए प्रयास करता है जो उत्पन्न नहीं हुई हैं; इच्छा उत्पन्न करता है, प्रयास करता है, ऊर्जा जगाता है, मन लगाता है, उन अच्छी अवस्थाओं को स्थिर करने, उन्हें एक साथ लाने, उन्हें बढ़ाने, उन्हें परिपक्व करने, उन्हें विकसित करने और उन्हें पूर्ण करने के लिए प्रयास करता है जो उत्पन्न हो चुकी हैं।

409. भिक्षु इच्छा कैसे उत्पन्न करता है, प्रयास कैसे करता है, ऊर्जा कैसे जगाता है, मन को कैसे लगाता है, और अजन्मे बुरे भावों के उत्पन्न न होने के लिए कैसे प्रयास करता है? यहाँ उस समय जब भिक्षु निरंतर पुनर्जन्म और मृत्यु के चक्र को तोड़ते हुए मुक्ति की ओर

अग्रसर अलौकिक ध्यान विकसित करता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर प्रथम अवस्था में प्रवेश करने के लिए, कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान के प्रथम ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय वह इच्छा उत्पन्न करता है, प्रयास करता है, ऊर्जा जगाता है, मन को कैसे लगाता है, और अजन्मे बुरे भावों के उत्पन्न न होने के लिए कैसे प्रयास करता है।

P = अनुच्छेद 205 देखें।

410. 'इच्छा उत्पन्न करना' का अर्थ है: इसमें इच्छा क्या है? जो इच्छा है, इच्छा करने की क्रिया, करने की इच्छा, अच्छी और धार्मिक इच्छा। इसे इच्छा कहते हैं। वह इस इच्छा को उत्पन्न करता है, अच्छी तरह से उत्पन्न करता है, इसे उत्पन्न करता है, इसे अच्छी तरह से उत्पन्न करता है, इसे अस्तित्व में लाता है, इसे पूर्ण रूप से अस्तित्व में लाता है। इसलिए इसे 'इच्छा उत्पन्न करना' कहते हैं।

411. 'प्रयास करना' का अर्थ है: इसमें प्रयास क्या है? वह जो मानसिक ऊर्जा को जगाता है, सही प्रयास, ऊर्जा-ज्ञान-कारक, मार्ग का घटक, मार्ग में समाहित। इसे प्रयास कहते हैं। वह इस प्रयास से संपन्न है, अच्छी तरह संपन्न है, प्राप्त है, अच्छी तरह प्राप्त है, संपन्न है, संपन्न है, सुसज्जित है। इसलिए इसे 'प्रयास करना' कहते हैं।

पी = पैरा 220 देखें। 12 +

276

विश्लेषण की पुस्तक

412. 'ऊर्जा जागृत करना' का अर्थ है: इसमें ऊर्जा क्या है? वह जो मानसिक ऊर्जा को जागृत करता है, सही प्रयास, ऊर्जा-ज्ञान-कारक, मार्ग का घटक, मार्ग में समाहित। [212] इसे ऊर्जा कहते हैं। वह इस ऊर्जा को जागृत करता है, अच्छी तरह जागृत करता है, उसका अनुसरण करता है, उसे विकसित करता है, दोहराता है। इसलिए इसे 'ऊर्जा जागृत करना' कहते हैं।

P = अनुच्छेद 220 देखें।

413. 'मन का प्रयोग करना' का अर्थ है: उसमें मन (चेतना) क्या है? वह जो चेतना, मन, विचार आदि है, और उपरोक्त के आधार पर, मन-चेतना तत्व है। इसे मन कहते हैं। वह इस मन का प्रयोग करता है, अच्छी तरह से प्रयोग करता है, सहारा देता है, बार-बार सहारा देता है। इसलिए इसे 'मन का प्रयोग करना' कहते हैं।

P = अनुच्छेद 184 देखें।

414. 'प्रयास करना' का अर्थ है: इसमें सही प्रयास क्या है? वह जो मानसिक ऊर्जा को जगाता है, सही प्रयास, ऊर्जा-ज्ञान-कारक, मार्ग का घटक, मार्ग में समाहित। इसे सही प्रयास कहते हैं। (साथ ही) सही प्रयास से संबंधित शेष अवस्थाएँ भी।

P = अनुच्छेद 220 देखें।

415. भिक्षु इच्छा कैसे उत्पन्न करता है, प्रयास कैसे करता है, ऊर्जा कैसे जगाता है, मन को कैसे लगाता है, और उत्पन्न हुई बुरी अवस्थाओं के त्याग के लिए कैसे प्रयास करता है? यहाँ उस समय जब भिक्षु पुनर्जन्म और मृत्यु के चक्र को तोड़ते हुए मुक्ति की ओर अग्रसर अलौकिक ध्यान विकसित करता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करने के लिए, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर प्रथम अवस्था में प्रवेश करने के लिए, कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान की प्रथम ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय वह इच्छा उत्पन्न करता है, प्रयास करता है, ऊर्जा जगाता है, मन को कैसे लगाता है, और उत्पन्न हुई बुरी अवस्थाओं के त्याग के लिए कैसे प्रयास करता है।

P = अनुच्छेद 205 देखें।

416. 'इच्छा उत्पन्न करता है' 9 का अर्थ है: : पृष्ठ 1 : 'प्रयास करता है' 9 का अर्थ है: : पृष्ठ 2 : 'ऊर्जा जगाता है' का अर्थ है: पृष्ठ 3 : 'मन लगाता है' का अर्थ है: पृष्ठ 4 : 'प्रयास करता है' का अर्थ है: इसमें सही प्रयास क्या है? वह जो मानसिक ऊर्जा को जगाता है, पृष्ठ 5 : सही प्रयास, ऊर्जा-ज्ञान-कारक, मार्ग घटक, मार्ग में शामिल।

सही प्रयास का विश्लेषण

277

इसे सही प्रयास कहते हैं। (साथ ही) शेष अवस्थाएँ भी सही प्रयास से जुड़ी होती हैं।

पी आर = पैरा देखें। 410. पी 2 = पैरा देखें। 411. पी 3 = पैरा देखें। 412.

पी 4 = पैरा देखें। 413. पी 5 = पैरा देखें। 220.

417. और भिक्षु कैसे इच्छा उत्पन्न करता है, प्रयास करता है, ऊर्जा जगाता है, मन लगाता है, और उन उत्तम अवस्थाओं की प्राप्ति के लिए प्रयास करता है जो अभी तक उत्पन्न नहीं हुई हैं? यहाँ उस समय जब भिक्षु निरंतर पुनर्जन्म और मृत्यु से मुक्ति की ओर अग्रसर अलौकिक ध्यान विकसित करता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करने के लिए, पहली अवस्था में प्रवेश करने के लिए, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, उस प्रथम ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है जो कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान है; उस समय वह इच्छा उत्पन्न करता है, प्रयास करता है, ऊर्जा जगाता है, मन लगाता है, और उन उत्तम अवस्थाओं की प्राप्ति के लिए प्रयास करता है जो अभी तक उत्पन्न नहीं हुई हैं। [213]

P = अनुच्छेद 205 देखें।

418. 'इच्छा उत्पन्न करना' का अर्थ है: rP 1 : 'प्रयास करना' का अर्थ है: :P 2 : 'ऊर्जा जगाना' का अर्थ है: :P 3 : 'मन लगाना' का अर्थ है: :P 4 : 'प्रयास करना' का अर्थ है: इसमें सही प्रयास क्या है? वह जो मानसिक ऊर्जा को जगाता है, :P 5 : सही प्रयास, ऊर्जा-ज्ञान-कारक, मार्ग का घटक, मार्ग में समाहित। इसे सही प्रयास कहते हैं। (इसी प्रकार) शेष अवस्थाएँ भी सही प्रयास से संबंधित हैं।

पी^पैरा देखें. 410. पी 2 - पैरा देखें। 411. पी 3 = पैरा देखें। 412.

पी 4 = पैरा देखें। 413. पी एस = पैरा देखें। 220.

419. भिक्षु इच्छा कैसे उत्पन्न करता है, प्रयास कैसे करता है, ऊर्जा कैसे जगाता है, मन को कैसे लगाता है, स्थिरता, संयोजन, वृद्धि, परिपक्वता, विकास और उत्पन्न हुई अच्छी अवस्थाओं की पूर्णता के लिए कैसे प्रयास करता है? यहाँ उस समय जब भिक्षु निरंतर पुनर्जन्म और मृत्यु से मुक्ति की ओर अग्रसर अलौकिक ध्यान विकसित करता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, पहली अवस्था में प्रवेश करने के लिए, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, उस प्रथम ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है जो कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान है; उस समय वह इच्छा उत्पन्न करता है, प्रयास करता है, ऊर्जा जगाता है, मन को कैसे लगाता है, स्थिरता, संयोजन, वृद्धि, परिपक्वता, विकास और उत्पन्न हुई अच्छी अवस्थाओं की पूर्णता के लिए कैसे प्रयास करता है।

P = अनुच्छेद 205 देखें।

278

विश्लेषण की पुस्तक

420. 'स्थिरीकरण के लिए' का अर्थ है: जो स्थिरीकरण है वह सहस्थापन है; जो सहस्थापन है वह वृद्धि है; जो वृद्धि है वह परिपक्वता है; जो परिपक्वता है वह विकास है; जो विकास है वह पूर्णता है।

421. 'इच्छा उत्पन्न करना' का अर्थ है: उसमें इच्छा क्या है? जो इच्छा है, इच्छा करने की क्रिया, करने की इच्छा, अच्छी और धार्मिक इच्छा। इसे इच्छा कहते हैं। वह इस इच्छा को उत्पन्न करता है, अच्छी तरह से उत्पन्न करता है, इसे उत्पन्न करता है, इसे अच्छी तरह से उत्पन्न करता है, इसे अस्तित्व में लाता है, इसे पूर्ण रूप से अस्तित्व में लाता है। इसलिए इसे 'इच्छा उत्पन्न करना' कहते हैं।

422. 'प्रयास करता है' का अर्थ है: इसमें प्रयास क्या है? वह जो मानसिक ऊर्जा को जगाता है, सही प्रयास, ऊर्जा-ज्ञान-कारक, मार्ग का घटक, मार्ग में समाहित। इसे प्रयास कहते हैं। वह इस प्रयास से युक्त है, अतः इसे 'प्रयास करता है' कहते हैं।

पी^पैरा देखें. 220. पी 2 = पैरा देखें। 357.

423. 'ऊर्जा जागृत करना* का अर्थ है: उसमें ऊर्जा क्या है?' वह जो मानसिक ऊर्जा को जागृत करता है, सही प्रयास, ऊर्जा-ज्ञान-कारक, मार्ग का घटक, मार्ग में समाहित। इसे ऊर्जा कहते हैं। वह इस ऊर्जा को जागृत करता है, अच्छी तरह जागृत करता है, [214] उसका अनुसरण करता है, उसे विकसित करता है, दोहराता है। इसलिए इसे 'ऊर्जा जागृत करना' कहते हैं।

P = अनुच्छेद 220 देखें।

424. 'मन का प्रयोग करना' का अर्थ है: इसमें मन क्या है? वह जो चेतना, मन, विचार आदि है, और उपरोक्त के आधार पर, मन-चेतना-तत्व है। इसे मन कहते हैं। वह इस मन का प्रयोग करता है, अच्छी तरह से प्रयोग करता है, सहारा देता है, बार-बार सहारा देता है। इसलिए इसे 'मन का प्रयोग करना' कहते हैं।

P = अनुच्छेद 184 देखें।

425. 'प्रयास करना' का अर्थ है: इसमें सही प्रयास क्या है? वह जो मानसिक ऊर्जा का जागरण है, सही प्रयास, ऊर्जा-ज्ञान-कारक, मार्ग का घटक, मार्ग में समाहित। इसे सही प्रयास कहा जाता है। (साथ ही) सही प्रयास से संबंधित शेष अवस्थाएँ भी।

P = अनुच्छेद 220 देखें।

सही प्रयास का विश्लेषण

279

426. इसमें सही प्रयास क्या है? इसमें उस समय जब भिक्षु पुनर्जन्म और मृत्यु के निरंतर चक्र से मुक्ति पाने के लिए अतिमंदनेझान विकसित करता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, प्रथम अवस्था में प्रवेश करने के लिए, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर,

पीएक्स: प्रथम ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है, जो कि कठिन अभ्यास है।
धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान; जो उस समय मानसिक ऊर्जा का उद्दीपन होता है, सही प्रयास, ऊर्जा-ज्ञान-कारक, मार्ग का घटक, मार्ग में समाहित। इसे सही प्रयास कहा जाता है। (साथ ही) सही प्रयास से संबंधित शेष अवस्थाएँ भी।

पी एक्स = पैरा देखें। 205. पी 2 = पैरा देखें। 220.

(यहाँ समाप्त होता है) अभिधम्म के अनुसार विश्लेषण

3. पूछताछ

427. चार उचित प्रयास — इसमें भिक्षु इच्छा उत्पन्न करता है, प्रयास करता है, ऊर्जा जगाता है, मन लगाता है, उत्पन्न न हुई बुरी अवस्थाओं के उत्पन्न न होने के लिए प्रयास करता है; उत्पन्न हो चुकी बुरी अवस्थाओं के त्याग के लिए प्रयास करता है; उत्पन्न न हुई अच्छी अवस्थाओं के उत्पन्न होने के लिए प्रयास करता है; इच्छा उत्पन्न करता है, प्रयास करता है, ऊर्जा जगाता है, मन लगाता है, उत्पन्न हुई अच्छी अवस्थाओं को स्थिर करने, उन्हें व्यवस्थित करने, उनकी वृद्धि करने, उन्हें परिपक्व करने, उनका विकास करने और उन्हें पूर्ण करने के लिए प्रयास करता है।

P = पहले उदाहरण के अनुसार पूर्ण करें।

428. चार सही प्रयासों में से कितने अच्छे हैं; कितने बुरे हैं; कितने न अच्छे हैं न बुरे? : कितने ऐसे हैं जिनके लिए शोक का कारण है; कितने ऐसे हैं जिनके लिए शोक का कारण नहीं है?

P = शेष उपयुक्त त्रिक और युग्मक।

1. त्रिक

429. (चार सही प्रयास) केवल अच्छे हैं। कभी सुखद अनुभूति से जुड़े होते हैं; कभी न दुखदायी और न सुखद अनुभूति से जुड़े होते हैं। परिणाम उत्पन्न करते हैं। [215] (लालसा और भ्रामक दृष्टि से) ग्रहण नहीं किए जाते, आसक्ति के विषय नहीं होते। न भ्रष्ट होते हैं, न भ्रष्टता के विषय होते हैं। कभी प्रारंभिक अभ्यास के साथ होते हैं, कभी निरंतर अभ्यास के साथ; कभी प्रारंभिक अभ्यास के बिना होते हैं।

280

विश्लेषण की पुस्तक

केवल निरंतर अभ्यास ही आवश्यक है; कभी-कभी प्रारंभिक अभ्यास के बिना, निरंतर अभ्यास के बिना भी होते हैं। कभी-कभी उत्साह से भरे होते हैं; कभी-कभी आनंद से भरे होते हैं; कभी-कभी उदासीनता से भरे होते हैं। इन्हें न तो प्रथम मार्ग से और न ही पश्चात मार्गों से त्यागा जा सकता है। इनकी कोई जड़ नहीं होती जिसे प्रथम मार्ग से या पश्चात मार्गों से त्यागा जा सके। ये विक्षेपी होते हैं (निरंतर पुनर्जन्म और मृत्यु के चक्र में)। ये सात अलौकिक अवस्थाओं के होते हैं। ये असीम होते हैं। इनका लक्ष्य असीम होता है। ये श्रेष्ठ होते हैं। ये सही अवस्थाएँ होती हैं जिनका समय निश्चित होता है। इनका लक्ष्य पथ नहीं होता; इनका कारण पथ होता है; कभी-कभी पथ इनका प्रमुख कारक होता है; कभी-कभी पथ इनका प्रमुख कारक नहीं होता। कभी-कभी ये उत्पन्न होते हैं; कभी-कभी उत्पन्न नहीं होते; इन्हें उत्पन्न होने के लिए बाध्य नहीं कहा जा सकता। कभी-कभी ये भूतकाल के होते हैं; कभी-कभी भविष्यकाल के होते हैं; कभी-कभी वर्तमानकाल के होते हैं। इनका न तो भूतकाल का लक्ष्य होता है, न भविष्यकाल का और न ही वर्तमानकाल का। कभी-कभी ये आंतरिक होते हैं; कभी-कभी बाहरी होते हैं; कभी-कभी आंतरिक और बाहरी दोनों होते हैं। इनका लक्ष्य बाहरी होता है। दिखाई नहीं देते, प्रभाव नहीं डालते।

2. दोहे

430. (चार सही प्रयास) जड़ नहीं हैं। जड़ के साथ नहीं हैं। जड़ से जुड़े हैं। इन्हें जड़ के साथ होने वाली जड़ नहीं कहा जाना चाहिए; (वे) जड़ के साथ हैं लेकिन जड़ नहीं हैं। इन्हें जड़ के साथ होने वाली जड़ नहीं कहा जाना चाहिए; (वे) जड़ के साथ हैं लेकिन जड़ नहीं हैं। जड़ नहीं हैं, जड़ के साथ हैं। कारण से जुड़े हैं। शर्त हैं।

अदृश्य हैं। प्रभावहीन हैं। भौतिक नहीं हैं। अलौकिक हैं। एक ही तरीके से ज्ञात किए जा सकते हैं; दूसरे तरीके से ज्ञात नहीं किए जा सकते। अशुद्धियाँ नहीं हैं। अशुद्धियों के विषय नहीं हैं।

ये अशुद्धियों से संबंधित नहीं हैं। इन्हें अशुद्धियाँ भी नहीं कहा जाना चाहिए, या अशुद्धियों की वस्तुएँ भी नहीं कहा जाना चाहिए, या अशुद्धियों की वस्तुएँ भी नहीं कहा जाना चाहिए, लेकिन ये अशुद्धियाँ नहीं हैं। इन्हें अशुद्धियाँ भी अशुद्धियों से संबंधित नहीं कहा जाना चाहिए, या अशुद्धियों से संबंधित नहीं कहा जाना चाहिए, लेकिन ये अशुद्धियाँ नहीं हैं। ये अशुद्धियों से संबंधित नहीं हैं, अशुद्धियों की वस्तुएँ नहीं हैं। ये बंधन नहीं हैं। ये बाढ़ नहीं हैं। ये बंधन नहीं हैं। ये बाधाएँ नहीं हैं। ये विकृतियाँ नहीं हैं। इनके विषय हैं। ये चेतना नहीं हैं। ये मानसिक सहवर्ती हैं। ये चेतना से संबंधित हैं। ये चेतना से जुड़े हुए हैं। ये उत्पन्न होते हैं।

सही प्रयास का विश्लेषण

281

चेतना द्वारा उत्पन्न। चेतना के साथ सह-अस्तित्व में। चेतना के साथ रहते हैं। चेतना से जुड़े हुए, चेतना द्वारा उत्पन्न। चेतना से जुड़े हुए, चेतना द्वारा उत्पन्न, चेतना के साथ सह-अस्तित्व में। चेतना से जुड़े हुए, चेतना द्वारा उत्पन्न, चेतना के साथ रहते हैं। बाह्य हैं। व्युत्पन्न नहीं हैं। बोध से परे हैं। आसक्ति नहीं हैं।

पी: ये भ्रष्टाचार नहीं हैं। :पी: इन्हें पहले ही त्यागा नहीं जाना चाहिए।
पथ। बाद के पथों द्वारा त्यागे नहीं जाने चाहिए। प्रथम पथ द्वारा त्यागे जाने योग्य कोई जड़ नहीं है। बाद के पथों द्वारा त्यागे जाने योग्य कोई जड़ नहीं है। कभी-कभी प्रारंभिक अभ्यास के साथ होते हैं; कभी-कभी प्रारंभिक अभ्यास के बिना होते हैं। कभी-कभी निरंतर अभ्यास के साथ होते हैं; कभी-कभी निरंतर अभ्यास के बिना होते हैं। कभी-कभी उत्साह के साथ होते हैं; कभी-कभी उत्साह के बिना होते हैं। कभी-कभी उत्साह के साथ होते हैं; कभी-कभी उत्साह के बिना होते हैं। कभी-कभी आनंद के साथ होते हैं; कभी-कभी आनंद के बिना होते हैं। कभी-कभी उदासीनता के साथ होते हैं; कभी-कभी उदासीनता के बिना होते हैं। इच्छा के तल की विशेषता नहीं हैं। रूप के तल की विशेषता नहीं हैं। निराकार तल की विशेषता नहीं हैं। समाहित नहीं हैं (अर्थात् अलौकिक हैं)। मुक्ति की ओर प्रवृत्त होते हैं। निश्चित (परिणामी समय) के होते हैं। पार नहीं किए जा सकते। शोक का कोई कारण नहीं है।

P = इस पैराग्राफ में वर्णित अपवित्रताओं के लिए पूर्ण।

(यहाँ समाप्त होता है) पूछताछ

सही प्रयास के विश्लेषण का समापन हो गया है।
टिपिटक >> अभिधम्म पिटक >> विभंग >> अध्याय 9 पाठ - इधिपादा
विभंग-विश्लेषण की पुस्तक-गोतम बुद्ध द्वारा बोली गई
पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण
पाली से अनुवादित यू. थिटिला, रंगून, बर्मा, 1969 द्वारा

ओसीआर संस्करण, प्रूफरीडिंग नहीं की गई है, इसमें त्रुटियां हैं
(पाठकों को दिए गए .pdf संस्करण की सहायता से पाठ को सही करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है)

अध्याय 9. सिद्धि के आधार का विश्लेषण (इद्धिपाद)

1. प्रवचनों के अनुसार विश्लेषण

431. [216] सिद्धि के चार आधार — इसमें एक भिक्षु 'इच्छा-एकाग्रता, प्रयास-गतिविधि' से युक्त सिद्धि का आधार विकसित करता है; 'ऊर्जा-एकाग्रता, प्रयास-गतिविधि' से युक्त सिद्धि का आधार विकसित करता है; 'चेतना-एकाग्रता, प्रयास-गतिविधि' से युक्त सिद्धि का आधार विकसित करता है; 'तर्क-एकाग्रता, प्रयास-गतिविधि' से युक्त सिद्धि का आधार विकसित करता है।

1. इच्छा को उपलब्धि का आधार बनाना

432. और एक भिक्षु 'इच्छा-एकाग्रता, प्रयास-गतिविधि' से युक्त सिद्धि का आधार कैसे विकसित करता है? यदि कोई भिक्षु इच्छा को प्रबल बनाकर एकाग्रता प्राप्त करता है; चेतना की एकाग्रता प्राप्त करता है, तो इसे 'इच्छा-एकाग्रता' कहा जाता है। वह इच्छा उत्पन्न

करता है, प्रयास करता है, ऊर्जा जगाता है, मन लगाता है, उन बुरी अवस्थाओं के उत्पन्न न होने के लिए प्रयास करता है जो उत्पन्न नहीं हुई हैं; इच्छा उत्पन्न करता है, प्रयास करता है, ऊर्जा जगाता है, मन लगाता है, उन बुरी अवस्थाओं के त्याग के लिए प्रयास करता है जो उत्पन्न हो चुकी हैं; इच्छा उत्पन्न करता है, प्रयास करता है, ऊर्जा जगाता है, मन लगाता है, उन अच्छी अवस्थाओं के उत्पन्न होने के लिए प्रयास करता है जो उत्पन्न नहीं हुई हैं; इच्छा उत्पन्न करता है, प्रयास करता है, ऊर्जा जगाता है, मन लगाता है, उन अच्छी अवस्थाओं को स्थिर करने, उन्हें एक साथ लाने, उन्हें बढ़ाने, उन्हें परिपक्व करने, उन्हें विकसित करने और उन्हें पूर्ण करने के लिए प्रयास करता है जो उत्पन्न हो चुकी हैं। इन्हें 'प्रयास-कार्य' कहा जाता है। अतः यह 'इच्छा-एकाग्रता' और यह 'प्रयास-कार्य', इन दोनों को सामूहिक रूप से संक्षेप में 'इच्छा-एकाग्रता, प्रयास-कार्य' कहा जाता है।

433. उसमें इच्छा क्या है? जो इच्छा है, इच्छा करने की क्रिया, करने की इच्छा, अच्छी, धार्मिक इच्छा। इसे ही इच्छा कहते हैं। [217]

उपलब्धि के आधार का विश्लेषण

283

इसमें एकाग्रता क्या है? वह जो स्थिरता, दृढ़ता, चेतना की स्थिरता है; ध्यान न भटकना, अविचलित रहना, मानसिक अविचलितता, शांति, एकाग्रता की क्षमता, एकाग्रता की शक्ति, सही एकाग्रता। यही एकाग्रता कहलाती है।

इसमें 'प्रयास-कार्य' क्या है? वह जो मानसिक ऊर्जा, परिश्रम, प्रयास, आकांक्षा, मेहनत, उत्साह, दृढ़ता, शक्ति, स्थिरता, अटूट प्रयास, इच्छा का त्याग न करना, कार्य का त्याग न करना, कार्य पर दृढ़ पकड़, ऊर्जा, ऊर्जा को नियंत्रित करने की क्षमता, ऊर्जा की शक्ति और सही प्रयास को जागृत करता है। इसे 'प्रयास-कार्य' कहा जाता है। इस प्रकार, वह इस इच्छा, इस एकाग्रता और इस 'प्रयास-कार्य' से परिपूर्ण है, अच्छी तरह परिपूर्ण है, प्राप्त है, अच्छी तरह प्राप्त है, संपन्न है, अच्छी तरह संपन्न है, सुसज्जित है। इसलिए इसे 'इच्छा-एकाग्रता, प्रयास-कार्य' से परिपूर्ण कहा जाता है।

434. 'उपलब्धि' का अर्थ है: इनमें से कौन सी अवस्था सिद्धि, पूर्ण सिद्धि, सिद्ध करने की क्रिया, पूर्ण रूप से सिद्ध करने की क्रिया, प्राप्त करना, बार-बार प्राप्त करना, अधिग्रहण करना, अच्छी तरह से अधिग्रहण करना, संपर्क करना, अहसास, उपलब्धि है।

'सिद्धि का आधार' से तात्पर्य है: उन सभी भावनाओं, सभी सभी बोधों, सभी मानसिक अभिक्रियाओं और सभी चेतनाओं का समूह, जिनमें उक्त प्रकार से सिद्धियाँ उत्पन्न हुई हैं।

'उपलब्धि का आधार विकसित करता है' का अर्थ है: वह इन अवस्थाओं का अनुसरण करता है, विकसित करता है, दोहराता है। इसलिए इसे 'उपलब्धि का आधार विकसित करता है' कहा जाता है।

2. ऊर्जा ही उपलब्धि का आधार है

435. एक भिक्षु सिद्धि का आधार कैसे विकसित करता है?

ऊर्जा-एकाग्रता, प्रयास-गतिविधि से सुसज्जित 5 ? यदि कोई भिक्षु ऊर्जा को प्रबल बनाकर एकाग्रता प्राप्त करता है; चेतना की एकाग्रता प्राप्त करता है। इसे 'ऊर्जा-एकाग्रता' कहा जाता है। वह इच्छा उत्पन्न करता है, प्रयास करता है, ऊर्जा को जागृत करता है, मन को बल देता है, और बुरी अवस्थाओं के उत्पन्न न होने के लिए प्रयास करता है।

उत्पन्न नहीं हुए हैं; :P: उत्पन्न हुई बुरी अवस्थाओं के त्याग के लिए; :P: उत्पन्न न हुई अच्छी अवस्थाओं के उदय के लिए; इच्छा उत्पन्न करता है, प्रयास करता है, ऊर्जा जगाता है, मन को सक्रिय करता है, स्थिरीकरण के लिए, संयोजन के लिए, वृद्धि के लिए प्रयास करता है।

परिपक्वता, विकास के लिए, उत्पन्न हुई अच्छी अवस्थाओं की पूर्णता के लिए। इन्हें 'प्रयास-गतिविधि' कहा जाता है। अतः यह 'ऊर्जा-एकाग्रता' और यह 'प्रयास-गतिविधि', इन दोनों को सामूहिक रूप से संक्षेप में 'ऊर्जा-एकाग्रता, प्रयास-गतिविधि' कहा जाता है।

P = पहले उदाहरण के अनुसार पूर्ण करें।

436. उसमें ऊर्जा क्या है? वह जो मानसिक ऊर्जा को जगाता है, : P : सही प्रयास। इसे ऊर्जा कहते हैं। [218]

P = अनुच्छेद 220 देखें।

इसमें एकाग्रता क्या है? वह जो स्थिरता, दृढ़ता, चेतना की स्थिरता है; ध्यान न भटकना, अविचलित रहना, मानसिक अविचलितता, शांति, एकाग्रता की क्षमता, एकाग्रता की शक्ति, सही एकाग्रता। यही एकाग्रता कहलाती है।

इसमें 'प्रयास-कार्य' क्या है? वह जो मानसिक ऊर्जा को जगाता है, यानी सही प्रयास। इसे 'प्रयास-कार्य' कहा जाता है। अतः वह इस ऊर्जा, इस एकाग्रता और इस 'प्रयास-कार्य' से युक्त है। इसलिए इसे 'ऊर्जा-एकाग्रता, प्रयास-कार्य' से युक्त कहा जाता है।

पी^पैरा देखें. 220. पी 2 - पैरा देखें। 357.

437. 'उपलब्धि' का अर्थ है: इनमें से कौन सी अवस्था सिद्धि, पूर्ण सिद्धि, सिद्धि करने की क्रिया, पूर्ण रूप से सिद्धि करने की क्रिया, प्राप्त करना, बार-बार प्राप्त करना, अधिग्रहण करना, अच्छी तरह से अधिग्रहण करना, संपर्क करना, अहसास, उपलब्धि है।

'सिद्धि का आधार' का अर्थ है: उस व्यक्ति की भावनाओं का समूह, चेतना का समूह (जिसमें उक्त तरीके से सिद्धियाँ उत्पन्न हुई हैं)।

P = मध्यवर्ती समुच्चय।

'सफलता के आधार का विकास करना' का अर्थ है: वह इन अवस्थाओं का अनुसरण करता है, उन्हें विकसित करता है और दोहराता है। इसलिए इसे 'सफलता के आधार का विकास करना' कहा जाता है।

3. चेतना ही सिद्धि का आधार है

438. और एक भिक्षु 'चेतना-एकाग्रता, प्रयास-गतिविधि' से युक्त सिद्धि का आधार कैसे विकसित करता है? यदि

उपलब्धि के आधार का विश्लेषण

285

एक भिक्षु चेतना को सर्वोपरि बनाकर एकाग्रता प्राप्त करता है; उसे एकाग्रचित्तता प्राप्त होती है। इसे 'चेतना-एकाग्रचित्त' कहते हैं। वह इच्छा उत्पन्न करता है, प्रयास करता है, ऊर्जा सजग करता है, मन को बल देता है, अजन्मे बुरे भावों को उत्पन्न न होने देने का प्रयास करता है; उत्पन्न हुए बुरे भावों को त्यागने का प्रयास करता है; अजन्मे अच्छे भावों को उत्पन्न करने का प्रयास करता है; इच्छा उत्पन्न करता है, प्रयास करता है, ऊर्जा सजग करता है, मन को बल देता है, उत्पन्न हुए अच्छे भावों को स्थिर करने, उन्हें व्यवस्थित करने, उन्हें बढ़ाने, उन्हें परिपक्व करने, उन्हें विकसित करने और उन्हें पूर्ण करने का प्रयास करता है। इन्हें 'प्रयास-गतिविधि' कहते हैं। अतः यह 'चेतना-एकाग्रचित्त' और यह 'प्रयास-गतिविधि', इन दोनों को सामूहिक रूप से संक्षेप में 'चेतना-एकाग्रचित्तता, प्रयास-गतिविधि' कहा जाता है।

P = पहले उदाहरण के अनुसार पूर्ण करें।

439. उसमें चेतना क्या है? वह जो चेतना, मन, विचार, आदि है, और उपरोक्त पर निर्भर मन-चेतना तत्व है। इसे चेतना कहते हैं।

P = अनुच्छेद 184 देखें।

इसमें एकाग्रता क्या है? वह जो स्थिरता है, चेतना की दृढ़ता है, सही एकाग्रता है। इसे ही एकाग्रता कहते हैं।

P = अनुच्छेद 220 देखें।

इसमें 'प्रयास-गतिविधि' क्या है? वह जो मानसिक ऊर्जा को जगाती है, यानी सही प्रयास। इसे 'प्रयास-गतिविधि' कहा जाता है। इस प्रकार वह इस चेतना, इस एकाग्रता और इस [219] 'प्रयास-गतिविधि' से युक्त है, यानी सुसज्जित है। इसलिए इसे "चेतना-एकाग्रता, प्रयास-गतिविधि" से सुसज्जित कहा जाता है।

पाई = पैरा देखें। 220. पी 2 = पैरा देखें। 357.

440. 'उपलब्धि* का अर्थ है: इनमें से कौन सी अवस्था सिद्धि, पूर्ण सिद्धि, सिद्ध करने की क्रिया, पूर्ण रूप से सिद्ध करने की क्रिया, प्राप्त करना, बार-बार प्राप्त करना, अधिग्रहण करना, अच्छी तरह से अधिग्रहण करना, संपर्क करना, अहसास, उपलब्धि है।

'सिद्धि का आधार' का अर्थ है: उस व्यक्ति की भावनाओं का समूह, चेतना का समूह (जिसमें उक्त तरीके से सिद्धियाँ उत्पन्न हुई हैं)।

P = मध्यवर्ती समुच्चय।

'सफलता के आधार का विकास करना' का अर्थ है: वह इन अवस्थाओं का अनुसरण करता है, उन्हें विकसित करता है और दोहराता है। इसलिए इसे 'सफलता के आधार का विकास करना' कहा जाता है।

4. उपलब्धि के आधार के रूप में तर्क

441. और एक भिक्षु 'तर्क-एकाग्रता, प्रयास-गतिविधि' से युक्त सिद्धि का आधार कैसे विकसित करता है? यदि कोई भिक्षु तर्क को प्रबल बनाकर एकाग्रता प्राप्त करता है; चेतना की एकाग्रता प्राप्त करता है, तो इसे 'तर्क-एकाग्रता' कहा जाता है। वह इच्छा उत्पन्न करता है, प्रयास करता है, ऊर्जा जगाता है, मन को बल देता है, उन बुरे भावों के उत्पन्न न होने के लिए प्रयास करता है जो उत्पन्न नहीं हुए हैं; उन बुरे भावों के त्याग के लिए प्रयास करता है जो उत्पन्न हो चुके हैं।

P: उन अच्छे राज्यों के उदय के लिए जो अभी तक उत्पन्न नहीं हुए हैं; उत्पन्न करता है
इच्छा करना, प्रयास करना, ऊर्जा जगाना, मन को सक्रिय करना, उत्पन्न हुई अच्छी अवस्थाओं को स्थिर करने, सामंजस्य स्थापित करने, बढ़ाने, परिपक्व करने, विकसित करने और पूर्ण करने के लिए प्रयास करना। इन्हें 'प्रयास-गतिविधि' कहा जाता है। अतः यह 'तर्क-एकाग्रता' और यह 'प्रयास-गतिविधि', इन दोनों को सामूहिक रूप से संक्षेप में 'तर्क-एकाग्रता, प्रयास-गतिविधि' कहा जाता है।

P = पहले उदाहरण के अनुसार पूर्ण करें।

442. इसमें तर्क क्या है? वह जो ज्ञान, समझ, :P: सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण है। इसे ही तर्क कहते हैं।

P = अनुच्छेद 525 देखें।

इसमें एकाग्रता क्या है? वह जो स्थिरता है, चेतना की दृढ़ता है, सही एकाग्रता है। इसे ही एकाग्रता कहते हैं।

P = अनुच्छेद 220 देखें।

इसमें 'प्रयास-कार्य' क्या है? वह जो मानसिक ऊर्जा को जगाता है, यानी सही प्रयास। इसे 'प्रयास-कार्य' कहा जाता है। इस प्रकार वह इस तर्क, इस एकाग्रता और इस 'प्रयास-कार्य' से युक्त है। अतः इसे "तर्क-एकाग्रता, प्रयास-कार्य से युक्त" कहा जाता है।

पृष्ठ 1 = पैराग्राफ 22 देखें।

पृष्ठ 2 = पैरा 357 देखें।

उपलब्धि के आधार का विश्लेषण

287

443. 'उपलब्धि' का अर्थ है: इनमें से कौन सी अवस्था उपलब्धि है, पूर्ण उपलब्धि है, उपलब्धि प्राप्त करने की क्रिया है, पूरी तरह से उपलब्धि प्राप्त करने की क्रिया है, प्राप्त करना है, बार-बार प्राप्त करना है, अधिग्रहण करना है, अच्छी तरह से अधिग्रहण करना है, संपर्क करना है, अहसास है, उपलब्धि है।

[220] 'उपलब्धि का आधार' का अर्थ है: भावना का समूह, बोध का समूह, मानसिक सहवर्ती का समूह, चेतना का समूह, उस व्यक्ति का (जिसमें उपरोक्त तरीके से सिद्धियाँ हुई हैं)।

'सफलता के आधार का विकास करना' का अर्थ है: वह इन अवस्थाओं का अनुसरण करता है, उन्हें विकसित करता है और दोहराता है। इसलिए इसे 'सफलता के आधार का विकास करना' कहा जाता है।

(यहाँ समाप्त होता है) प्रवचनों के अनुसार विश्लेषण

2. अभिधम्म के अनुसार विश्लेषण

444. सिद्धि के चार आधार — इसमें भिक्षु 'इच्छा-एकाग्रता, प्रयास-गतिविधि' से युक्त सिद्धि का आधार विकसित करता है; 'ऊर्जा-एकाग्रता, प्रयास-गतिविधि' से युक्त सिद्धि का आधार विकसित करता है; 'चेतना-एकाग्रता, प्रयास-गतिविधि' से युक्त सिद्धि का आधार विकसित करता है; और 'तर्क-एकाग्रता, प्रयास-गतिविधि' से युक्त सिद्धि का आधार विकसित करता है।

1. इच्छा को उपलब्धि का आधार बनाना

445. और भिक्षु 'इच्छा-एकाग्रता, प्रयास-क्रिया' से युक्त सिद्धि का आधार कैसे विकसित करता है? यहाँ उस समय जब भिक्षु निरंतर पुनर्जन्म और मृत्यु के चक्र को तोड़ते हुए मुक्ति की ओर अग्रसर अलौकिक ध्यान विकसित करता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर प्रथम अवस्था में प्रवेश करता है, और धीरे-धीरे अर्जित कठिन अभ्यास और ज्ञान की प्रथम ध्यान अवस्था को प्राप्त करके उसमें निवास करता है; उस समय वह 'इच्छा-एकाग्रता, प्रयास-क्रिया' से युक्त सिद्धि का आधार विकसित करता है।

P = अनुच्छेद 205 देखें।

288

विश्लेषण की पुस्तक

446. उसमें इच्छा क्या है? जो इच्छा है, इच्छा करने की क्रिया है, करने की इच्छा है, अच्छी और धार्मिक इच्छा है। इसे ही इच्छा कहते हैं।

इसमें एकाग्रता क्या है? वह जो स्थिरता है, चेतना की दृढ़ता है, सही एकाग्रता है, एकाग्रता-ज्ञान का कारक है, मार्ग का घटक है, मार्ग में समाहित है। इसे ही एकाग्रता कहते हैं।

P = अनुच्छेद 220 देखें।

इसमें 'प्रयास-कार्य' क्या है? वह जो मानसिक ऊर्जा को जगाता है, सही प्रयास, ऊर्जा-ज्ञान-कारक, मार्ग का घटक, मार्ग में समाहित। इसे 'प्रयास-कार्य' कहा जाता है। इस प्रकार वह इस इच्छा, इस एकाग्रता और इस 'प्रयास-कार्य' से युक्त है। अतः इसे 'इच्छा-एकाग्रता, प्रयास-कार्य' से युक्त कहा जाता है।

पी एल = पैरा देखें। 220. पी 2 = पैरा देखें। 357.

447. 'उपलब्धि' का अर्थ है: इनमें से कौन सी अवस्था सिद्धि, पूर्ण सिद्धि, सिद्धि करने की क्रिया, पूर्ण रूप से सिद्धि करने की क्रिया, प्राप्त करना, बार-बार प्राप्त करना, अधिग्रहण करना, अच्छी तरह से अधिग्रहण करना, संपर्क करना, अहसास, उपलब्धि है।

[221] 'उपलब्धि का आधार' का अर्थ है: संपर्क,

पी: प्रयास, किसी व्यक्ति का अडिग रहना (जिसमें उपलब्धियाँ
उपरोक्त तरीके से अस्तित्व में आए हैं।

पी~डीएचएस पैराग्राफ 277 देखें।

'सफलता के आधार का विकास करना' का अर्थ है: वह इन अवस्थाओं का अनुसरण करता है, उन्हें विकसित करता है और दोहराता है। इसलिए इसे 'सफलता के आधार का विकास करना' कहा जाता है।

2. ऊर्जा ही उपलब्धि का आधार है

448. एक भिक्षु 'ऊर्जा-एकाग्रता, प्रयास-गतिविधि' से युक्त सिद्धि का आधार कैसे विकसित करता है? यहाँ उस समय जब एक भिक्षु निरंतर पुनर्जन्म और मृत्यु के चक्र को तोड़ते हुए, मुक्ति की ओर अग्रसर अलौकिक ध्यान विकसित करता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर प्रथम अवस्था में प्रवेश करता है, और धीरे-धीरे अर्जित कठिन अभ्यास और ज्ञान की प्रथम ध्यान अवस्था को प्राप्त करके उसमें निवास करता है; उस समय वह 'ऊर्जा-एकाग्रता, प्रयास-गतिविधि' से युक्त सिद्धि का आधार विकसित करता है।

P = अनुच्छेद 205 देखें।

उपलब्धि के आधार का विश्लेषण

449. उसमें ऊर्जा क्या है? वह जो मानसिक ऊर्जा को जगाती है, सही प्रयास, ऊर्जा-ज्ञान-कारक, मार्ग का घटक, मार्ग में समाहित। इसे ही ऊर्जा कहते हैं।

P = अनुच्छेद 220 देखें।

इसमें एकाग्रता क्या है? वह जो स्थिरता है, चेतना की दृढ़ता है, सही एकाग्रता है, एकाग्रता-ज्ञान का कारक है, मार्ग का घटक है, मार्ग में समाहित है। इसे ही एकाग्रता कहते हैं।

P = अनुच्छेद 220 देखें।

इसमें 'प्रयास-गतिविधि' क्या है? वह जो मानसिक ऊर्जा को जागृत करती है, यानी सही प्रयास, ऊर्जा-ज्ञान-कारक, मार्ग का घटक, मार्ग में समाहित। इसे 'प्रयास-गतिविधि' कहा जाता है। अतः वह इस ऊर्जा, इस एकाग्रता और इस 'प्रयास-गतिविधि' से युक्त है। इसलिए इसे "ऊर्जा-एकाग्रता, प्रयास-गतिविधि से युक्त" कहा जाता है।

पी^पैरा देखें. 220. पी 2 - पैरा देखें। 357.

450. 'उपलब्धि 9 का अर्थ है; इनमें से कौन सी अवस्था सिद्धि, पूर्ण सिद्धि, सिद्धि करने की क्रिया, पूर्ण रूप से सिद्धि करने की क्रिया, प्राप्त करना, बार-बार प्राप्त करना, अधिग्रहण करना, अच्छी तरह से अधिग्रहण करना, संपर्क करना, अहसास, उपलब्धि है।

'उपलब्धि का आधार' का अर्थ है: संपर्क, प्रयास, अविचलितता उस व्यक्ति की (जिसमें उपलब्धियाँ प्राप्त हुई हैं) उपर्युक्त तरीके से।

पी = डीएचएस अनुच्छेद 277 देखें।

'सफलता के आधार का विकास करना' का अर्थ है: वह इन अवस्थाओं का अनुसरण करता है, उन्हें विकसित करता है, दोहराता है। इसलिए इसे 'सफलता के आधार का विकास करना' कहा जाता है।

3. चेतना ही सिद्धि का आधार है

451. और एक भिक्षु 'चेतना-एकाग्रता, प्रयास-गतिविधि' से युक्त सिद्धि का आधार कैसे विकसित करता है? यहाँ उस समय जब एक भिक्षु [222] अलौकिक ध्यान विकसित करता है जो निरंतर पुनर्जन्म से मुक्ति और विमोचन की ओर प्रवृत्त होता है और

290

विश्लेषण की पुस्तक

मृत्यु; वह, गलत दृष्टिकोण को त्यागकर, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, प्रथम अवस्था में प्रवेश करता है; वह प्रथम ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है, जो कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान है; उस समय वह 'चेतना-एकाग्रता, प्रयास-गतिविधि' से युक्त सिद्धि का आधार विकसित करता है।

P = अनुच्छेद 205 देखें।

452. उसमें चेतना क्या है? वह जो चेतना, मन, विचार, और उपरोक्त पर निर्भर मन-चेतना तत्व है। इसे चेतना कहते हैं।

P = अनुच्छेद 184 देखें।

इसमें एकाग्रता क्या है? वह जो स्थिरता है, चेतना की दृढ़ता है, सही एकाग्रता है, एकाग्रता-ज्ञान का कारक है, मार्ग का घटक है, मार्ग में समाहित है। इसे ही एकाग्रता कहते हैं।

P = अनुच्छेद 220 देखें।

इसमें 'प्रयास-गतिविधि' क्या है? वह जो मानसिक ऊर्जा का जागरण है, सही प्रयास, ऊर्जा-ज्ञान-कारक, मार्ग का घटक, मार्ग में समाहित। इसे 'प्रयास-गतिविधि' कहा जाता है। इस प्रकार वह इस चेतना, इस एकाग्रता और इस 'प्रयास-गतिविधि' से युक्त है। अतः इसे 'चेतना-एकाग्रता, प्रयास-गतिविधि' से युक्त कहा जाता है।

पी 1 = पैरा देखें। 220. पी 2 = पैरा देखें। 357.

453. 'उपलब्धि' का अर्थ है: इनमें से कौन सी अवस्था सिद्धि, पूर्ण सिद्धि, सिद्ध करने की क्रिया, पूर्ण रूप से सिद्ध करने की क्रिया, प्राप्त करना, बार-बार प्राप्त करना, अधिग्रहण करना, अच्छी तरह से अधिग्रहण करना, संपर्क करना, अहसास, उपलब्धि है।

'उपलब्धि का आधार' का अर्थ है: संपर्क, प्रयास, अविचलितता उस व्यक्ति की (जिसमें उपलब्धियाँ प्राप्त हुई हैं) उपर्युक्त तरीके से।

पी = डीएचएस अनुच्छेद 277 देखें।

'सफलता के आधार का विकास करना' का अर्थ है: वह इन अवस्थाओं का अनुसरण करता है, उन्हें विकसित करता है और दोहराता है। इसलिए इसे 'सफलता के आधार का विकास करना' कहा जाता है।

उपलब्धि के आधार का विश्लेषण 291

4. उपलब्धि के आधार के रूप में तर्क

454. एक भिक्षु 'तर्क-एकाग्रता, प्रयास-क्रिया' से युक्त सिद्धि का आधार कैसे विकसित करता है? यहाँ उस समय जब एक भिक्षु निरंतर पुनर्जन्म और मृत्यु के चक्र को तोड़ते हुए, मुक्ति की ओर अग्रसर अलौकिक ध्यान विकसित करता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर प्रथम अवस्था में प्रवेश करने के लिए, कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान की प्रथम ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय वह 'तर्क-एकाग्रता, प्रयास-क्रिया' से युक्त सिद्धि का आधार विकसित करता है।

P = अनुच्छेद 205 देखें।

455. इसमें तर्क क्या है? वह जो ज्ञान, समझ, :P: सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण, सत्य की खोज-ज्ञान-कारक, मार्ग का घटक, मार्ग में समाहित है। इसे तर्क कहते हैं।

P = अनुच्छेद 525 देखें।

उसमें एकाग्रता क्या है? वह जो स्थिरता है, चेतना की दृढ़ता है, : पी : सही एकाग्रता, [223] एकाग्रता-ज्ञान-कारक, पथ घटक, पथ में शामिल। इसे एकाग्रता कहते हैं।

P = अनुच्छेद 220 देखें।

इसमें 'प्रयास-कार्य' क्या है? वह जो मानसिक ऊर्जा को जगाता है, सही प्रयास, ऊर्जा-ज्ञान-कारक, मार्ग का घटक, मार्ग में समाहित। इसे ही 'प्रयास-कार्य' कहते हैं। अतः इस कारण, इस एकाग्रता और इस 'प्रयास-कार्य' से वह संपन्न, पूर्णतः संपन्न, सिद्ध, पूर्णतः सिद्ध, गुणों से परिपूर्ण होता है। अतः इसे "कारण-एकाग्रता, प्रयास-कार्य से परिपूर्ण" कहा जाता है।

P = अनुच्छेद 220 देखें।

456. 'उपलब्धि' का अर्थ है: इनमें से कौन सी अवस्था सिद्धि, पूर्ण सिद्धि, सिद्ध करने की क्रिया, पूर्ण रूप से सिद्ध करने की क्रिया, प्राप्त करना, बार-बार प्राप्त करना, अधिग्रहण करना, अच्छी तरह से अधिग्रहण करना, संपर्क करना, अहसास, उपलब्धि है।

'उपलब्धि का आधार' का अर्थ है: संपर्क, प्रयास, अविचलितता उस व्यक्ति की (जिसमें उपर्युक्त तरीके से उपलब्धियाँ प्राप्त हुई हैं)।

पी = डीएचएस अनुच्छेद 277 देखें।

'सफलता के आधार का विकास करना' का अर्थ है: वह इन अवस्थाओं का अनुसरण करता है, उन्हें विकसित करता है और दोहराता है। इसलिए इसे 'सफलता के आधार का विकास करना' कहा जाता है।

457. सिद्धि के चार आधार हैं: इच्छा सिद्धि का आधार, ऊर्जा सिद्धि का आधार, चेतना सिद्धि का आधार, तर्क सिद्धि का आधार।

458. उसमें इच्छा को सिद्धि का आधार क्या माना गया है?

इस समय जब भिक्षु जन्म-मृत्यु के निरंतर चक्र से मुक्ति पाने की ओर अग्रसर अलौकिक ध्यान विकसित करता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर प्रथम अवस्था में प्रवेश करता है; वह उस प्रथम ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है जो कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान है; उस समय जो इच्छा, इच्छा की क्रिया, करने की इच्छा, अच्छी और धार्मिक इच्छा होती है। इसे सिद्धि का आधार इच्छा कहा जाता है। (इसी प्रकार) अन्य अवस्थाएँ भी सिद्धि का आधार इच्छा से जुड़ी होती हैं।

P = अनुच्छेद 205 देखें।

459. इसमें उपलब्धि के आधार के रूप में ऊर्जा क्या है?

यहाँ उस समय जब एक भिक्षु अलौकिक ध्यान विकसित करता है, जो निरंतर जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्ति की ओर अग्रसर होता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर प्रथम अवस्था में प्रवेश करता है; वह उस प्रथम ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है जो कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान है; जो उस समय मानसिक ऊर्जा का जागरण होता है; सही प्रयास, ऊर्जा-ज्ञान-कारक, मार्ग का घटक, मार्ग में समाहित। इसे सिद्धि का आधार ऊर्जा कहा जाता है। (इसी प्रकार) शेष अवस्थाएँ भी सिद्धि के आधार ऊर्जा से जुड़ी होती हैं।

पी 1 = पैरा देखें। 205. पी 2 = पैरा देखें। 220.

460. इसमें सिद्धि के आधार के रूप में चेतना क्या है? इसमें उस समय जब एक भिक्षु [224] अलौकिक ध्यान विकसित करता है जो निरंतर पुनर्जन्म और मृत्यु से मुक्ति की ओर अग्रसर होता है; वह, गलत दृष्टिकोण को त्यागकर, पहले चरण में प्रवेश करने के लिए, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, पहले ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है, जो कठिन अभ्यास और ज्ञान है।

उपलब्धि के आधार का विश्लेषण 293

अर्जित; जो उस समय चेतना, मन, विचार हो।

पृष्ठ 2: और, उपरोक्त के आधार पर, मन-चेतना-
तत्व। इसे सिद्धि के आधार के रूप में चेतना कहा जाता है। (साथ ही) शेष अवस्थाएँ भी सिद्धि के आधार के रूप में चेतना से जुड़ी होती हैं।

पी 1 = पैरा देखें। 205. पी 2 = पैरा देखें। 184.

461. उसमें सिद्धि के आधार के रूप में तर्क क्या है?

इस समय जब भिक्षु पुनर्जन्म और मृत्यु के निरंतर चक्र से मुक्ति पाने की ओर अग्रसर अलौकिक ध्यान विकसित करता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर प्रथम अवस्था में प्रवेश करता है; वह उस प्रथम ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है जो कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान है; जो उस समय बुद्धि, समझ, सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण, सत्य की खोज-ज्ञान-कारक, मार्ग का घटक, मार्ग में समाहित है। इसे सिद्धि का आधार तर्क कहा जाता है। (इसी प्रकार) शेष अवस्थाएँ भी सिद्धि का आधार तर्क से जुड़ी हैं।

पी^पैरा देखें. 205. पी 2 = पैरा देखें। 525.

(यहाँ समाप्त होता है) अभिधम्म के अनुसार विश्लेषण

3. पूछताछ

462. सिद्धि के चार आधार — इसमें एक भिक्षु

'इच्छा-एकाग्रता, प्रयास-गतिविधि 5; 'ऊर्जा-एकाग्रता' से सुसज्जित उपलब्धि का आधार विकसित करता है; : पी :

'चेतना-एकाग्रता'; :P: 'तर्क-एकाग्रता, प्रयास-गतिविधि' से सुसज्जित उपलब्धि का आधार विकसित करता है।

P = अंतिम उदाहरण के रूप में पूर्ण करें।

463. सिद्धि के चार आधारों में से कितने अच्छे हैं; कितने बुरे हैं; कितने न अच्छे हैं न बुरे? : P : कितने ऐसे हैं जिन पर शोक करने का कारण है; कितने ऐसे हैं जिन पर शोक करने का कोई कारण नहीं है?

P =* शेष उपयुक्त त्रिक और युग्मक।

1. त्रिक

464. (सफलता के चार आधार) केवल अच्छे हैं। कभी-कभी सुखद भावना से जुड़े होते हैं; कभी-कभी जुड़े होते हैं

न तो पीड़ादायक और न ही सुखदायक भावों से युक्त। परिणाम उत्पन्न करने वाले। लालसा और भ्रामक दृष्टि से ग्रसित नहीं, आसक्ति के विषय नहीं। न तो भ्रष्ट, न ही भ्रष्टता के विषय। कभी प्रारंभिक परिश्रम के साथ, कभी निरंतर परिश्रम के साथ; कभी प्रारंभिक परिश्रम के बिना, केवल निरंतर परिश्रम के साथ; कभी प्रारंभिक परिश्रम के बिना, कभी निरंतर परिश्रम के बिना। कभी उत्साह के साथ; कभी सुख के साथ; कभी उदासीनता के साथ। प्रथम मार्ग या पश्चात मार्गों से त्यागे नहीं जा सकते। प्रथम मार्ग या पश्चात मार्गों से त्यागे जाने योग्य कोई मूल नहीं। निरंतर पुनर्जन्म और मृत्यु से मुक्त। सात अलौकिक अवस्थाओं के। असीम। असीम उद्देश्य वाले। श्रेष्ठ। निश्चित (परिणामी समय) वाली सही अवस्थाएँ। मार्ग को अपना उद्देश्य नहीं; मार्ग को अपना कारण; मार्ग को अपना प्रमुख कारक नहीं। कभी उत्थानित होते हैं; कभी उत्थानित नहीं होते। इन्हें उत्पन्न होना बाध्य नहीं कहा जा सकता। कभी भूतकाल होते हैं; कभी भविष्यकाल होते हैं; कभी वर्तमानकाल होते हैं। इनका न तो भूतकाल का कर्म होता है, न भविष्यकाल का कर्म और न ही वर्तमानकाल का कर्म। कभी आंतरिक होते हैं; कभी बाह्य होते हैं; कभी आंतरिक और बाह्य दोनों होते हैं। बाह्य कर्म होते हैं। ये दृश्यमान नहीं होते, न ही इनका कोई प्रभाव होता है। [225]

2. दोहे

465. सिद्धि का आधार तर्क है, जो मूल है। सिद्धि के तीन आधार मूल नहीं हैं। (सिद्धि के चार आधार) मूलों के साथ होते हैं। मूलों से जुड़े होते हैं। सिद्धि का आधार तर्क है, जो मूल के साथ भी होता है। सिद्धि के तीन आधारों को मूलों के साथ भी होना नहीं कहना चाहिए; वे मूलों के साथ होते हैं, लेकिन मूल नहीं हैं। सिद्धि का आधार तर्क है, जो मूल के साथ भी जुड़ा होता है। सिद्धि के तीन आधारों को मूलों के साथ भी होना नहीं कहना चाहिए; वे मूलों से जुड़े होते हैं, लेकिन मूल नहीं हैं। सिद्धि के तीन आधार मूल नहीं हैं, वे मूलों के साथ होते हैं। सिद्धि का आधार तर्क को मूल नहीं, मूल के साथ होना या मूल नहीं, मूल के साथ नहीं होना नहीं कहना चाहिए। (सिद्धि के चार

आधार) कारण सहित होते हैं। बद्ध होते हैं। अदृश्य होते हैं। अप्रवर्तनीय नहीं होते। भौतिक नहीं होते। अलौकिक होते हैं। एक ही मार्ग से ज्ञात होते हैं;

इन्हें किसी अन्य तरीके से भी पहचाना जा सकता है। ये दोष नहीं हैं। ये दोषों के विषय नहीं हैं। इनका दोषों से कोई संबंध नहीं है। इन्हें दोष भी नहीं कहा जाना चाहिए, या ये दोष के विषय तो हैं लेकिन दोष नहीं हैं। इन्हें दोष भी नहीं कहा जाना चाहिए, या ये दोषों से संबंधित तो हैं लेकिन दोष नहीं हैं। इनका दोषों से कोई संबंध नहीं है, ये दोषों के विषय भी नहीं हैं।

(सफलता के चार आधार) बंधन नहीं हैं। बंधन नहीं हैं। बाढ़ नहीं हैं। बंधन नहीं हैं। बाधाएँ नहीं हैं। विकृतियाँ नहीं हैं। इनके उद्देश्य हैं। सफलता के तीन आधार चेतना नहीं हैं। सफलता के आधार के रूप में चेतना, चेतना ही है। सफलता के तीन आधार मानसिक सहवर्ती हैं। सफलता के आधार के रूप में चेतना, मानसिक सहवर्ती नहीं है। सफलता के तीन आधार चेतना से जुड़े हैं। सफलता के आधार के रूप में चेतना को चेतना से जुड़ा हुआ या नहीं जुड़ा हुआ नहीं कहा जा सकता। सफलता के तीन आधार चेतना से जुड़े हुए हैं। सफलता के आधार के रूप में चेतना को चेतना से जुड़ा हुआ या नहीं जुड़ा हुआ नहीं कहा जा सकता। सफलता के तीन आधार चेतना द्वारा उत्पन्न होते हैं। सफलता के आधार के रूप में चेतना, चेतना द्वारा उत्पन्न नहीं होती है। सफलता के तीन आधार चेतना के साथ सह-अस्तित्व में हैं। सिद्धि के आधार के रूप में चेतना, चेतना के साथ सह-अस्तित्व में नहीं है। सिद्धि के तीन आधार चेतना के साथ होते हैं। सिद्धि के आधार के रूप में चेतना, चेतना के साथ नहीं होती। सिद्धि के तीन आधार चेतना से जुड़े हुए हैं, चेतना द्वारा उत्पन्न होते हैं। सिद्धि के आधार के रूप में चेतना, चेतना से जुड़ी हुई नहीं है, न ही चेतना द्वारा उत्पन्न होती है। सिद्धि के तीन आधार चेतना से जुड़े हुए हैं, चेतना द्वारा उत्पन्न होते हैं, और चेतना के साथ सह-अस्तित्व में हैं। सिद्धि के आधार के रूप में चेतना, चेतना से जुड़ी हुई नहीं है, चेतना द्वारा उत्पन्न नहीं होती है, और चेतना के साथ सह-अस्तित्व में नहीं है। सिद्धि के तीन आधार चेतना से जुड़े हुए हैं, चेतना द्वारा उत्पन्न होते हैं, और चेतना के साथ होते हैं। सिद्धि के आधार के रूप में चेतना, चेतना से जुड़ी हुई नहीं है, चेतना द्वारा उत्पन्न नहीं होती है, और चेतना के साथ नहीं होती है।

P = पिछले पैराग्राफ में वर्णित अपवित्रताओं के समान पूर्ण।

सिद्धि के तीन आधार बाह्य हैं। सिद्धि का आधार चेतना है, जो आंतरिक है। (सिद्धि के चार आधार) व्युत्पन्न नहीं हैं। इन्हें ग्रहण नहीं किया जा सकता। ये आसक्ति नहीं हैं। ये विकृतियाँ नहीं हैं। इन्हें प्रथम मार्ग द्वारा नहीं छोड़ा जा सकता। इन्हें पश्चात मार्गों द्वारा नहीं छोड़ा जा सकता। प्रथम मार्ग द्वारा छोड़े जाने योग्य कोई मूल नहीं हैं। पश्चात मार्गों द्वारा छोड़े जाने योग्य कोई मूल नहीं हैं। कभी-कभी प्रारंभिक अभ्यास के साथ होते हैं; कभी-कभी प्रारंभिक अभ्यास के बिना होते हैं। [226] कभी-कभी निरंतर अभ्यास के साथ होते हैं; कभी-कभी निरंतर अभ्यास के बिना होते हैं। कभी-कभी उत्साह के साथ होते हैं; कभी-कभी उत्साह के बिना होते हैं। कभी-कभी आनंद के साथ होते हैं; कभी-कभी आनंद के बिना होते हैं। कभी-कभी उदासीनता के साथ होते हैं; कभी-कभी उदासीनता के बिना होते हैं। इच्छा के तल की विशेषता नहीं हैं। रूप के तल की विशेषता नहीं हैं। निराकार तल की विशेषता नहीं हैं। समाहित नहीं हैं (अर्थात् अलौकिक हैं)। मुक्ति की ओर प्रवृत्त होते हैं। स्थिर (परिणामी समय) के होते हैं। वे अतुलनीय हैं। उन पर शोक करने का कोई कारण नहीं है।

P = पिछले पैराग्राफ में वर्णित अपवित्रताओं के समान पूर्ण।

(यहाँ समाप्त होता है) पूछताछ

उपलब्धि के आधार का विश्लेषण है

समाप्त
टिपिटक >> अभिधम्म पिटक >> विभंग >> अध्याय 10 पाठ - बोज्झांगा
विभंग-गोत्मा बुद्ध द्वारा बोली गई विश्लेषण की पुस्तक
पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण
पाली से अनुवादित यू. थिटिला, रंगून, बर्मा, 1969 द्वारा

ओसीआर संस्करण, प्रूफरीडिंग नहीं की गई है, इसमें त्रुटियां हैं
(पाठकों को दिए गए .pdf संस्करण की सहायता से पाठ को सही करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है)

अध्याय 10. ज्ञानोदय के कारकों का विश्लेषण (बोध्झंग, संस्कृत: बोध्यांग या बोधि-अंग)

1. प्रवचनों के अनुसार विश्लेषण

466. [277] सात ज्ञानोदय कारक हैं: सचेतनता- ज्ञानोदय-कारक, सत्य अन्वेषण- ज्ञानोदय-कारक, ऊर्जा- ज्ञानोदय-कारक, उत्साह- ज्ञानोदय-कारक, शांति- ज्ञानोदय-कारक, एकाग्रता- ज्ञानोदय-कारक, समभाव- ज्ञानोदय-कारक।

467. उसमें सचेतनता-ज्ञानोदय कारक क्या है?

इसमें भिक्षु सचेत रहता है, उत्कृष्ट ध्यान-प्रवेश से परिपूर्ण होता है, वह निरंतर स्मरण करता है कि (मुक्ति के विषय में) क्या किया गया है और क्या कहा गया है। इसे ही ध्यान-ज्ञान-कारक कहा जाता है। (1)

वह उपरोक्त तरीके से सचेत होकर, उसी बात की गहन खोज, छानबीन और तर्क-वितर्क करता है। इसे सत्य-जांच-ज्ञान-कारक कहा जाता है। (2)

किसी विषय की गहन खोज, छानबीन और बुद्धिमत्तापूर्वक तर्क करने में उनकी ऊर्जा अथक और अटूट होती है। इसे ऊर्जा-ज्ञान-कारक कहा जाता है। (3)

अत्यंत ऊर्जावान व्यक्ति में सांसारिक उत्साह से रहित उत्साह उत्पन्न होता है। इसे उत्साह-ज्ञान-कारक कहा जाता है। (4)

उत्साही मन वाले व्यक्ति के लिए (मानसिक समूहों का) शरीर शांत हो जाता है, चेतना भी शांत हो जाती है। इसे शांति-ज्ञान-कारक कहा जाता है। (5)

शांत शरीर (मानसिक समूहों) और मानसिक सुख वाले व्यक्ति के लिए, चेतना एकाग्र होती है। इसे एकाग्रता-ज्ञान-कारक कहा जाता है। (6)

जिस व्यक्ति की चेतना उपरोक्त प्रकार से एकाग्र होती है, वह संतुलित रहता है। इसे समभाव-ज्ञान-कारक कहा जाता है। (7)

468. ज्ञानोदय के सात कारक हैं: सचेतनता-

ज्ञानोदय कारक, सत्य की खोज-ज्ञानोदय कारक,

ऊर्जा-ज्ञान-कारक, उत्साह-ज्ञान-कारक, शांति-ज्ञान-कारक, एकाग्रता-ज्ञान-कारक, समभाव-ज्ञान-कारक। [228]

469. उसमें सचेतनता-ज्ञान-कारक क्या है? आंतरिक अवस्थाओं पर सचेतनता होती है; बाह्य अवस्थाओं पर सचेतनता होती है। जो आंतरिक अवस्थाओं पर सचेतनता है; वह सचेतनता-ज्ञान-कारक पूर्ण ज्ञान, ज्ञानोदय और पूर्ण मुक्ति के लिए भी है। जो बाह्य अवस्थाओं पर सचेतनता है; वह सचेतनता-ज्ञान-कारक पूर्ण ज्ञान, ज्ञानोदय और पूर्ण मुक्ति के लिए भी है। (1)

उसमें सत्य अन्वेषण-ज्ञानोदय कारक क्या है? आंतरिक अवस्थाओं का अन्वेषण है; बाह्य अवस्थाओं का अन्वेषण है। जो आंतरिक अवस्थाओं का अन्वेषण है; वह सत्य अन्वेषण-ज्ञानोदय कारक पूर्ण ज्ञान, ज्ञानोदय और पूर्ण मुक्ति के लिए भी है। जो बाह्य अवस्थाओं का अन्वेषण है; वह सत्य अन्वेषण-ज्ञानोदय कारक पूर्ण ज्ञान, ज्ञानोदय और पूर्ण मुक्ति के लिए भी है। (2)

उसमें ऊर्जा-ज्ञान-कारक क्या है? शारीरिक ऊर्जा है; मानसिक ऊर्जा है। जो शारीरिक ऊर्जा है; वह ऊर्जा-ज्ञान-कारक पूर्ण ज्ञान, ज्ञानोदय और पूर्ण मुक्ति के लिए भी है। जो मानसिक ऊर्जा है; वह ऊर्जा-ज्ञान-कारक पूर्ण ज्ञान, ज्ञानोदय और पूर्ण मुक्ति के लिए भी है। (3)

उसमें उत्साह-ज्ञान-कारक क्या है? उत्साह प्रारंभिक प्रयास और निरंतर प्रयास के साथ होता है; उत्साह प्रारंभिक प्रयास और निरंतर प्रयास के बिना भी होता है। जो उत्साह प्रारंभिक प्रयास और निरंतर प्रयास के साथ होता है; वह उत्साह-ज्ञान-कारक पूर्ण ज्ञान, ज्ञानोदय और पूर्ण मुक्ति के लिए भी होता है। जो उत्साह प्रारंभिक प्रयास और निरंतर प्रयास के बिना होता है; वह उत्साह-ज्ञान-कारक पूर्ण ज्ञान, ज्ञानोदय और पूर्ण मुक्ति के लिए भी होता है। (4)

उसमें शांति-ज्ञान का कारक क्या है? शरीर (मानसिक समूहों) की शांति है; चेतना की शांति है। जो शरीर की शांति है, वही शांति-ज्ञान का कारक पूर्ण ज्ञान, आत्मज्ञान और पूर्ण मुक्ति के लिए भी है। जो चेतना की शांति है...

शांति; वह शांति-ज्ञान का कारक पूर्ण ज्ञान, ज्ञानोदय और पूर्ण मुक्ति के लिए भी है। (5)

इसमें एकाग्रता-ज्ञान-कारक क्या है? एकाग्रता में प्रारंभिक अभ्यास और निरंतर अभ्यास शामिल होता है; एकाग्रता में प्रारंभिक अभ्यास और निरंतर अभ्यास नहीं होता है। जो एकाग्रता प्रारंभिक अभ्यास और निरंतर अभ्यास के साथ होती है, वह एकाग्रता-ज्ञान-कारक पूर्ण ज्ञान, ज्ञानोदय और पूर्ण मुक्ति के लिए भी है। जो एकाग्रता प्रारंभिक अभ्यास और निरंतर अभ्यास के बिना होती है, वह एकाग्रता-ज्ञान-कारक पूर्ण ज्ञान, ज्ञानोदय और पूर्ण मुक्ति के लिए भी है। (6)

उसमें समभाव-ज्ञान-कारक क्या है? आंतरिक अवस्थाओं का समभाव है; बाह्य अवस्थाओं का समभाव है। जो आंतरिक अवस्थाओं का समभाव है; वह समभाव-ज्ञान-कारक पूर्ण ज्ञान, ज्ञानोदय और पूर्ण मुक्ति के लिए भी है। जो बाह्य अवस्थाओं का समभाव है; वह समभाव-ज्ञान-कारक पूर्ण ज्ञान, ज्ञानोदय और पूर्ण मुक्ति के लिए भी है। (7) [229]

470. ज्ञानोदय के सात कारक हैं: सचेतनता-

ज्ञानोदय कारक, सत्य की खोज-ज्ञानोदय कारक, ऊर्जा-ज्ञानोदय कारक, उत्साह-ज्ञानोदय कारक, शांति-ज्ञानोदय कारक, एकाग्रता-ज्ञानोदय कारक, समभाव-ज्ञानोदय कारक।

471. उसमें सचेतनता-ज्ञानोदय कारक क्या है?

इसमें एक भिक्षु वैराग्य पर आधारित, कामवासना के अभाव पर आधारित, और अंत में त्याग पर आधारित, सचेतनता-ज्ञानोदय कारक विकसित करता है। सत्य अन्वेषण-ज्ञानोदय कारक विकसित करता है। :P: ऊर्जा विकसित करता है-

ज्ञानोदय कारक। : पी : उत्साह-ज्ञानोदय कारक विकसित करता है।

पी: शांति-ज्ञानोदय कारक विकसित करता है। :पी: विकसित करता है
एकाग्रता-ज्ञान-कारक: पी: वैराग्य पर निर्भर समभाव - ज्ञान-कारक विकसित करता है, जो कामवासना की अनुपस्थिति पर निर्भर है, जो समाप्ति पर निर्भर है, और अंततः त्याग में परिणत होता है।

P = अंतिम उदाहरण के रूप में पूर्ण करें।

(यहाँ समाप्त होता है) प्रवचनों के अनुसार विश्लेषण

300

विश्लेषण की पुस्तक

2. अभिधम्म के अनुसार विश्लेषण

472. ज्ञानोदय के सात कारक हैं: सचेतनता-

ज्ञानोदय कारक, सत्य की खोज-ज्ञानोदय कारक, ऊर्जा-ज्ञानोदय कारक, उत्साह-ज्ञानोदय कारक, शांति-ज्ञानोदय कारक, एकाग्रता-ज्ञानोदय कारक, समभाव-ज्ञानोदय कारक।

473. इसमें सात ज्ञानोदय कारक क्या हैं? इसमें उस समय जब एक भिक्षु निरंतर पुनर्जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति की ओर अग्रसर अलौकिक ध्यान विकसित करता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर प्रथम अवस्था में प्रवेश करता है, : पृष्ठ 1 : कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान के प्रथम ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय सात ज्ञानोदय कारक होते हैं (अर्थात्), सचेतनता-ज्ञानोदय-कारक, : पृष्ठ 2 : समभाव-ज्ञानोदय-कारक।

पी 1 = पैरा 205 देखें। पी 2 = मध्यवर्ती ज्ञानोदय कारक।

474. उसमें सचेतनता-ज्ञानोदय कारक क्या है?

जो सचेतनता है, निरंतर सचेतनता है, सही सचेतनता है, सचेतनता-ज्ञान-कारक है, मार्ग का घटक है, मार्ग में समाहित है। इसे सचेतनता-ज्ञान-कारक कहा जाता है। (1)

P = अनुच्छेद 220 देखें।

इसमें सत्य की खोज-ज्ञानोदय-कारक क्या है?

जो ज्ञान, समझ, :P: सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण, सत्य की खोज-ज्ञानोदय कारक, मार्ग का घटक, मार्ग में समाहित है। इसे ही सत्य की खोज-ज्ञानोदय कारक कहा जाता है। (2)

P = अनुच्छेद 525 देखें।

उसमें ऊर्जा-ज्ञान-कारक क्या है? वह जो मानसिक ऊर्जा का जागरण है, सही प्रयास, ऊर्जा-ज्ञान-कारक, मार्ग का घटक, मार्ग में समाहित। इसे ऊर्जा-ज्ञान-कारक कहा जाता है। (3)

P = अनुच्छेद 220 देखें।

उसमें उत्साह-ज्ञान-कारक क्या है? वह जो उत्साह, प्रसन्नता, आनंद, उमंग, उल्लास, उल्लास और सुख है।

उत्साह, चेतना का आनंद, उत्साह-ज्ञान-कारक। इसे उत्साह-ज्ञान-कारक कहा जाता है। (4) [230]

उसमें शांति-ज्ञान का कारक क्या है? वह जो संवेदनाओं के समूह, बोधों के समूह, मानसिक अभिक्रियाओं के समूह और चेतना के समूह में से शांति, निर्मलता, शांत अवस्था, निर्मलता की स्थिति, शांति-ज्ञान का कारक है। इसे ही शांति-ज्ञान का कारक कहा जाता है। (5)

उसमें एकाग्रता-ज्ञान-कारक क्या है? वह जो चेतना की स्थिरता है, सही एकाग्रता, एकाग्रता-ज्ञान-कारक, मार्ग का घटक, मार्ग में समाहित। इसे ही एकाग्रता-ज्ञान-कारक कहा जाता है। (6)

P = अनुच्छेद 220 देखें।

इसमें समभाव-ज्ञान-तत्व क्या है? जो समभाव है, जिसमें समभाव है, सर्वोच्च समभाव है, चेतना का संतुलन है, समभाव-ज्ञान-तत्व है। इसे समभाव-ज्ञान-तत्व कहते हैं। इन्हें सात ज्ञान-तत्व कहा जाता है। (साथ ही) शेष अवस्थाएँ भी सात ज्ञान-तत्वों से संबंधित हैं।

(7)

475. ज्ञानोदय के सात कारक हैं: सचेतनता-

ज्ञानोदय-कारक, :P: समभाव-ज्ञानोदय-कारक.

P = मध्यवर्ती ज्ञानोदय कारक।

476. उसमें सचेतनता-ज्ञानोदय कारक क्या है?

यहाँ उस समय जब एक भिक्षु अलौकिक ध्यान विकसित करता है, जो निरंतर पुनर्जन्म और मृत्यु के चक्र को तोड़ते हुए मुक्ति की ओर अग्रसर होता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर प्रथम अवस्था में प्रवेश करता है; वह उस प्रथम ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है जो कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान है; उस समय जो सचेतनता, निरंतर सचेतनता है; सही सचेतनता, सचेतनता-ज्ञान-कारक, मार्ग का घटक, मार्ग में शामिल है। इसे सचेतनता-ज्ञान-कारक कहा जाता है। (इसी प्रकार) सचेतनता-ज्ञान-कारक से संबंधित शेष अवस्थाएँ। (इसी प्रकार) सत्य अन्वेषण-ज्ञान-कारक से संबंधित शेष अवस्थाएँ। (इसी प्रकार) ऊर्जा-ज्ञान-कारक से संबंधित शेष अवस्थाएँ। (इसी प्रकार)

302

विश्लेषण की पुस्तक

(और) उत्साह-ज्ञान-कारक से जुड़ी शेष अवस्थाएँ। : पृष्ठ 3 : (साथ ही) शांति-ज्ञान-कारक से जुड़ी शेष अवस्थाएँ। :पृष्ठ 3 : (साथ ही) एकाग्रता-ज्ञान-कारक से जुड़ी शेष अवस्थाएँ।

पी एल = पैरा देखें। 205. पी 2 = पैरा देखें। 220.

पृष्ठ 3 = प्रत्येक को पहले उदाहरण के अनुसार पूरा करें, लेकिन पैराग्राफ 474 के अनुसार उचित संशोधनों के साथ।

इसमें समता-ज्ञान का तत्व क्या है? इसमें उस समय जब एक भिक्षु जन्म-मृत्यु के निरंतर चक्र से मुक्ति पाने की ओर अग्रसर अलौकिक ध्यान विकसित करता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर प्रथम अवस्था में प्रवेश करता है; वह उस प्रथम ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है जो कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान है; उस समय जो समता, समता से परिपूर्ण, सर्वोच्च समता, चेतना के संतुलन की अवस्था, समता-ज्ञान का तत्व है। इसे समता-ज्ञान का तत्व कहा जाता है। (इसी प्रकार) समता-ज्ञान के तत्व से संबंधित शेष अवस्थाएँ भी हैं। [231]

p = अनुच्छेद 205 देखें।

477. ज्ञानोदय के सात कारक हैं: सचेतनता-

ज्ञानोदय-कारक, : पी : समभाव-ज्ञानोदय-कारक.

P = मध्यवर्ती ज्ञानोदय कारक।

478. इसमें ज्ञानोदय के सात कारक क्या हैं? इसमें उस समय जब कोई भिक्षु निरंतर पुनर्जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्त होकर, मुक्ति की ओर अग्रसर अलौकिक ध्यान विकसित करता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, पहली अवस्था में प्रवेश करने के लिए, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, प्रथम ध्यान में लीन हो जाता है, जो कठोर अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान है; उस समय जो संपर्क है, वह अविचलित है। ये अवस्थाएँ अच्छी हैं। ऐसा करने के बाद, उसी अच्छे अलौकिक ध्यान को विकसित करने के बाद, वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, परिणामी प्रथम ध्यान में लीन हो जाता है, जो कठोर अभ्यास, धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान है और शून्य है; उस समय ज्ञानोदय के सात कारक हैं (अर्थात्): सचेतनता-ज्ञानोदय कारक, समभाव-ज्ञानोदय कारक।

पी^पैरा देखें. 205. पी 2=डीएचएस देखें। पैरा. 277.

पृष्ठ 3 — मध्यवर्ती ज्ञानोदय कारक।

ज्ञानोदय के कारकों का विश्लेषण

303

479. उसमें सचेतनता-ज्ञानोदय कारक क्या है?

जो सचेतनता है, निरंतर सचेतनता है, : पृष्ठ 1 : सही सचेतनता, सचेतनता-ज्ञान-कारक, मार्ग का घटक, मार्ग में समाहित। इसे सचेतनता-ज्ञान-कारक कहा जाता है। : पृष्ठ 2 :

पृष्ठ 1 — पैराग्राफ 220 देखें।

P 2 = पांच अनुवर्ती ज्ञानोदय कारक, पैरा 474 देखें।

इसमें समभाव-ज्ञान-तत्व क्या है? जो समभाव है, जिसमें समभाव है, सर्वोच्च समभाव है, चेतना का संतुलन है, समभाव-ज्ञान-तत्व है। इसे समभाव-ज्ञान-तत्व कहते हैं। इन्हें सात ज्ञान-तत्व कहा जाता है। (साथ ही) शेष अवस्थाएँ भी सात ज्ञान-तत्वों से संबंधित हैं।

480. ज्ञानोदय के सात कारक हैं: सचेतनता-

ज्ञानोदय-कारक, : पी : समभाव-ज्ञानोदय-कारक.

P = मध्यवर्ती ज्ञानोदय कारक।

481. उसमें सचेतनता-ज्ञानोदय कारक क्या है?

यहां उस समय जब एक भिक्षु निरंतर जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्ति पाने की ओर अग्रसर अलौकिक ध्यान विकसित करता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर प्रथम अवस्था में प्रवेश करता है; वह कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान से युक्त प्रथम ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय संपर्क होता है; अविचल होता है। ये अवस्थाएँ अच्छी हैं। ऐसा करने के बाद, उसी अच्छे अलौकिक ध्यान को विकसित करने पर, वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, परिणामी प्रथम ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; जो उस समय सचेतनता, निरंतर सचेतनता होती है; सही सचेतनता, सचेतनता-ज्ञान-कारक, मार्ग का घटक, मार्ग में समाहित होता है। इसे सचेतनता-ज्ञानोदय कारक कहा जाता है, (साथ ही) सचेतनता-ज्ञानोदय कारक से जुड़ी शेष अवस्थाएँ। :पृष्ठ 4 : (साथ ही) सत्य अन्वेषण-ज्ञानोदय कारक से जुड़ी शेष अवस्थाएँ [232]। :पृष्ठ 4 : (साथ ही) ऊर्जा-ज्ञानोदय कारक से जुड़ी शेष अवस्थाएँ। :पृष्ठ 4 : (साथ ही) उत्साह-ज्ञानोदय कारक से जुड़ी शेष अवस्थाएँ। :पृष्ठ 4 : (साथ ही)

304

विश्लेषण की पुस्तक

शेष अवस्थाएँ जो शांति-ज्ञान कारक से जुड़ी हैं। : पृष्ठ 4 : (साथ ही) शेष अवस्थाएँ जो एकाग्रता-ज्ञान कारक से जुड़ी हैं।

पी^पैरा देखें. 205. पी 2 = ध्स देखें। पैरा. 277.

पृष्ठ 3 = पैरा 220 देखें।

पृष्ठ 4 = प्रत्येक को पहले उदाहरण के अनुसार पूरा करें, लेकिन पैराग्राफ 474 के अनुसार उचित संशोधनों के साथ।

इसमें समभाव-ज्ञान का तत्व क्या है? इसमें उस समय जब एक भिक्षु जन्म-मृत्यु के निरंतर चक्र से मुक्ति पाने की ओर अग्रसर अलौकिक ध्यान विकसित करता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, प्रथम अवस्था में प्रवेश करने के लिए, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, प्रथम ध्यान में लीन हो जाता है, जो कठोर अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान है; उस समय संपर्क होता है, अविचल की अवस्था होती है। ये अवस्थाएँ अच्छी हैं। ऐसा करने के बाद, उसी अच्छे अलौकिक ध्यान को विकसित करने पर, वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, परिणामी प्रथम ध्यान में लीन हो जाता है, जो कठोर अभ्यास, धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान है और शून्य है; उस समय जो समभाव है,

समभाव से युक्त है, सर्वोच्च समभाव है, चेतना का संतुलन है, समभाव-ज्ञान का तत्व है। इसे समभाव-ज्ञान का तत्व कहा जाता है। (साथ ही) शेष अवस्थाएँ समभाव-ज्ञान-कारक से जुड़ी हुई हैं।

पी^पैरा देखें. 205. पी 2 = ध्स देखें। पैरा. 277.

(यहाँ समाप्त होता है) अभिधम्म के अनुसार विश्लेषण

3. पूछताछ

482. ज्ञानोदय के सात कारक हैं: सचेतनता-

ज्ञानोदय कारक, सत्य की खोज-ज्ञानोदय कारक, ऊर्जा-ज्ञानोदय कारक, उत्साह-ज्ञानोदय कारक, शांति-ज्ञानोदय कारक, एकाग्रता-ज्ञानोदय कारक, समभाव-ज्ञानोदय कारक।

483. ज्ञानोदय के सात कारकों में से कितने अच्छे हैं; कितने बुरे हैं; और कितने न अच्छे हैं न बुरे? :P: कैसे

ज्ञानोदय के कारकों का विश्लेषण 305

बहुतों के पास विलाप करने का कारण है; कितने ऐसे हैं जिनके पास विलाप करने का कोई कारण नहीं है?

P = शेष उपयुक्त त्रिक और युग्मक।

1. त्रिक

484. (सात ज्ञानोदय कारक) कभी अच्छे होते हैं; कभी न अच्छे न बुरे। उत्साह-ज्ञानोदय कारक सुखद अनुभूति से जुड़ा होता है। छह ज्ञानोदय कारक कभी सुखद अनुभूति से जुड़े होते हैं; कभी दुखदायी न सुखद अनुभूति से जुड़े होते हैं। (सात ज्ञानोदय कारक) कभी परिणाम होते हैं; कभी परिणाम उत्पन्न करते हैं। (लालसा और भ्रामक दृष्टि से) बोधित नहीं होते, आसक्ति के विषय नहीं होते। न भ्रष्ट होते हैं, न भ्रष्टता के विषय होते हैं। कभी प्रारंभिक अभ्यास के साथ होते हैं, कभी निरंतर अभ्यास के साथ; कभी प्रारंभिक अभ्यास के बिना, केवल निरंतर अभ्यास के साथ; कभी प्रारंभिक अभ्यास के बिना, निरंतर अभ्यास के बिना। उत्साह-ज्ञानोदय कारक उत्साह से नहीं जुड़ा होता; सुख से जुड़ा होता है; उदासीनता से नहीं जुड़ा होता। छह ज्ञानोदय कारक कभी उत्साह से जुड़े होते हैं; कभी सुख से जुड़े होते हैं; कभी उदासीनता से जुड़े होते हैं। (सात ज्ञानोदय कारक) न तो प्रथम मार्ग से और न ही पश्चात मार्गों से त्यागे जाने चाहिए; प्रथम पथ या पश्चात पथों द्वारा परित्याग किए जाने के लिए इनकी कोई जड़ नहीं होती। कभी-कभी ये विक्षेपी (लगातार पुनर्जन्म और मृत्यु के चक्र में) होते हैं; कभी-कभी न तो संचयी होते हैं और न ही विक्षेपी। कभी-कभी ये सात अलौकिक अवस्थाओं के होते हैं; कभी-कभी अंतिम अलौकिक अवस्था के होते हैं। ये अतुलनीय होते हैं। इनका उद्देश्य अतुलनीय होता है। ये श्रेष्ठ होते हैं। [233] कभी-कभी ये सही (परिणामी समय वाली) अवस्थाएँ होते हैं; कभी-कभी इनका कोई निश्चित (परिणामी समय) नहीं होता। इनका उद्देश्य पथ नहीं होता; कभी-कभी इनका कारण पथ होता है; कभी-कभी इनका प्रमुख कारक पथ होता है; कभी-कभी यह नहीं कहा जा सकता कि इनका कारण या प्रमुख कारक पथ है। कभी-कभी ये उत्पन्न होते हैं; कभी-कभी उत्पन्न नहीं होते; कभी-कभी उत्पन्न होने के लिए बाध्य होते हैं। कभी-कभी ये भूतकाल के होते हैं; कभी-कभी भविष्यकाल के होते हैं; कभी-कभी वर्तमानकाल के होते हैं। इन्हें न तो भूतकाल के, न

भविष्यकाल के और न ही वर्तमानकाल के उद्देश्य वाले कहा जा सकता है। कभी-कभी ये आंतरिक होते हैं; कभी-कभी बाह्य होते हैं; कभी-कभी

आंतरिक और बाह्य दोनों। बाह्य वस्तुएँ होती हैं। अदृश्य, अप्रभावित।

2. दोहे

485. सत्य अन्वेषण-ज्ञान-कारक मूल है। छह ज्ञानकारक मूलों से जुड़े हैं। सत्य अन्वेषण-ज्ञान-कारक मूल है और मूल से भी जुड़ा है; छह ज्ञानकारकों को मूल नहीं कहा जाना चाहिए; वे मूलों से जुड़े हैं लेकिन मूल नहीं हैं। सत्य अन्वेषण-ज्ञान-कारक मूल है और मूल से भी जुड़ा है। छह ज्ञानकारकों को मूल नहीं कहा जाना चाहिए; वे मूलों से जुड़े हैं लेकिन मूल नहीं हैं। छह ज्ञानकारक मूल नहीं हैं, मूलों से जुड़े हैं। सत्य अन्वेषण-ज्ञान-कारक को मूल नहीं कहा जाना चाहिए, मूल से जुड़ा है या मूल नहीं है, मूल से नहीं जुड़ा है। (सात ज्ञानकारक) कारण सहित हैं। बद्ध हैं। अदृश्य हैं। प्रभावहीन हैं। भौतिक नहीं हैं। अलौकिक हैं। एक मार्ग से ज्ञात हैं; दूसरे मार्ग से ज्ञात नहीं हैं। दोष नहीं हैं। दोषों के विषय नहीं हैं। दोषों से जुड़े नहीं हैं। ये नहीं कहा जाना चाहिए कि ये दोष, दोषों के विषय भी हैं या दोषों के विषय तो हैं लेकिन दोष नहीं हैं। ये दोष, दोषों से जुड़े हुए भी हैं या दोषों से जुड़े हुए हैं लेकिन दोष नहीं हैं। ये दोषों से जुड़े हुए नहीं हैं, दोषों के विषय भी नहीं हैं। ये बंधन नहीं हैं।

पी: ये बंधन नहीं हैं। :पी: ये बाढ़ नहीं हैं। :पी: ये बंधन नहीं हैं। :पी: ये
बाधाएँ नहीं हैं। :P: विकृतियाँ नहीं हैं। :P: इनके लक्ष्य होते हैं। ये चेतना नहीं हैं। ये मानसिक सहवर्ती हैं। ये चेतना से जुड़े हैं। ये चेतना से संबंधित हैं। ये चेतना द्वारा उत्पन्न होते हैं। ये चेतना के साथ सह-अस्तित्व में हैं। ये चेतना के साथ रहते हैं। ये चेतना से जुड़े हुए हैं, चेतना द्वारा उत्पन्न होते हैं। ये चेतना से जुड़े हुए हैं, चेतना द्वारा उत्पन्न होते हैं और चेतना के साथ सह-अस्तित्व में हैं। ये चेतना से जुड़े हुए हैं, चेतना द्वारा उत्पन्न होते हैं और चेतना के साथ रहते हैं। ये बाह्य हैं। ये व्युत्पन्न नहीं हैं। इन्हें ग्रहण नहीं किया जा सकता। ये आसक्ति नहीं हैं।

पी: ये भ्रष्टाचार नहीं हैं। :पी: इन्हें त्यागा नहीं जाना चाहिए।
पहला मार्ग। बाद के मार्गों द्वारा इन्हें नहीं छोड़ा जाना चाहिए। पहले मार्ग द्वारा छोड़े जाने के लिए इनकी कोई जड़ नहीं है। बाद के मार्गों द्वारा छोड़े जाने के लिए इनकी कोई जड़ नहीं है। कभी-कभी इनके साथ होते हैं।

प्रारंभिक प्रयोग द्वारा; कभी-कभी प्रारंभिक प्रयोग के बिना। कभी-कभी निरंतर प्रयोग के साथ; कभी-कभी निरंतर प्रयोग के बिना।

पी — इस पैराग्राफ में वर्णित अपवित्रताओं के संबंध में पूर्ण करें।

उत्साह-ज्ञान-कारक उत्साह रहित है। छह ज्ञान-कारक कभी उत्साह के साथ होते हैं; कभी उत्साह रहित होते हैं। उत्साह-ज्ञान-कारक उत्साह से रहित है। छह ज्ञान-कारक कभी उत्साह से युक्त होते हैं; कभी उत्साह रहित होते हैं। उत्साह-ज्ञान-कारक आनंद से युक्त है। [234] छह ज्ञान-कारक कभी आनंद से युक्त होते हैं; कभी आनंद रहित होते हैं। उत्साह-ज्ञान-कारक उदासीनता से रहित है। छह ज्ञान-कारक कभी उदासीनता से युक्त होते हैं; कभी उदासीनता रहित होते हैं।

(सात ज्ञानोदय कारक) इच्छा के तल के लक्षण नहीं हैं। रूप के तल के लक्षण नहीं हैं। निराकार तल के लक्षण नहीं हैं। इनमें शामिल नहीं हैं (अर्थात् ये अलौकिक हैं)। कभी-कभी ये मुक्ति की ओर प्रवृत्त होते हैं; कभी-कभी नहीं होते। कभी-कभी इनका (परिणामस्वरूप समय) निश्चित होता है; कभी-कभी इनका (परिणामस्वरूप समय) निश्चित नहीं होता। ये अप्राप्य हैं। शोक का कोई कारण नहीं हैं।

(यहाँ समाप्त होता है) पूछताछ

ज्ञानोदय के कारकों का विश्लेषण

समाप्त
टिपिटक >> अभिधम्म पिटक >> विभंग >> अध्याय 11 पाठ - मग्गंगा
विभंग-विश्लेषण की पुस्तक-गोतम बुद्ध द्वारा बोली गई
पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण
पाली से यू. थिटिला, रंगून, बर्मा, 1969 द्वारा अनुवादित

ओसीआर संस्करण, प्रूफरीडिंग नहीं की गई है, इसमें त्रुटियां हैं
(पाठकों को दिए गए .pdf संस्करण की सहायता से पाठ को सही करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है)

अध्याय 11. मार्ग घटकों का विश्लेषण (मग्गंगा संस्कृत: मार्ग-अंगा)

1. प्रवचनों के अनुसार विश्लेषण

486. [235] आर्य अष्टांगिक मार्ग। अर्थात्; सही दृष्टि, सही विचार, सही वाणी, सही कर्म, सही आजीविका, सही प्रयास, सही जागरूकता, सही एकाग्रता।

487. इसमें सही दृष्टिकोण क्या है? दुख का ज्ञान, दुख के कारण का ज्ञान, दुख के निवारण का ज्ञान, दुख के निवारण की ओर ले जाने वाले मार्ग का ज्ञान। यही सही दृष्टिकोण कहलाता है। (1)

इसमें सही विचार क्या है? त्याग से जुड़ा विचार, द्वेष से रहित विचार, क्रूरता से रहित विचार। यही सही विचार कहलाता है। (2)

उसमें सही वाणी क्या है? झूठी वाणी से बचना; निंदात्मक वाणी से बचना; कठोर वाणी से बचना; तुच्छ वाणी से बचना। यही सही वाणी कहलाती है। (3) उसमें सही कर्म क्या है? प्राणियों की हत्या से बचना; बिना दी हुई वस्तु न लेना; यौन दुराचार से बचना। यही सही कर्म कहलाती है। (4)

इसमें सही आजीविका क्या है? इसमें एक श्रेष्ठ शिष्य गलत आजीविका को त्यागकर सही आजीविका से अपना जीवन यापन करता है। यही सही आजीविका कहलाती है। (5)

इसमें उचित प्रयास क्या है? इसमें भिक्षु इच्छा उत्पन्न करता है, प्रयास करता है, ऊर्जा जगाता है, मन लगाता है, उन बुरी अवस्थाओं के उत्पन्न न होने के लिए प्रयास करता है जो उत्पन्न नहीं हुई हैं; इच्छा उत्पन्न करता है, प्रयास करता है, ऊर्जा जगाता है, मन लगाता है, उन बुरी अवस्थाओं के त्याग के लिए प्रयास करता है जो उत्पन्न हो चुकी हैं; इच्छा उत्पन्न करता है, प्रयास करता है, ऊर्जा जगाता है, मन लगाता है, उन अच्छी अवस्थाओं के उत्पन्न होने के लिए प्रयास करता है जो उत्पन्न नहीं हुई हैं; इच्छा उत्पन्न करता है, प्रयास करता है, ऊर्जा जगाता है, मन लगाता है, स्थिरता, संयोजन, वृद्धि और परिपक्वता के लिए प्रयास करता है।

पथ घटकों का विश्लेषण

309

विकास के लिए, उन अच्छे राज्यों की पूर्णता के लिए जो उत्पन्न हुए हैं। इसे सही प्रयास कहा जाता है। (6) [236]

इसमें सही ध्यान क्या है? इसमें भिक्षु शरीर में शरीर का चिंतन करते हुए, उत्साही, जागरूक और सचेत होकर संसार में लोभ और मानसिक पीड़ा को दूर करते हुए निवास करता है; भावनाओं में भावनाओं का चिंतन करते हुए, उत्साही, जागरूक और सचेत होकर लोभ को दूर करता है!

और संसार में मानसिक पीड़ा को दूर करता है; चेतना में चिंतन करते हुए, उत्साही, जागरूक, सचेत रहते हुए, लोभ और संसार में मानसिक पीड़ा को दूर करता है; वैचारिक वस्तुओं में वैचारिक वस्तुओं का चिंतन करते हुए, उत्साही, जागरूक, सचेत रहते हुए, संसार में लोभ और मानसिक पीड़ा को दूर करता है। इसे सही जागरूकता कहते हैं। (7)

इसमें सही एकाग्रता क्या है? इसमें एक भिक्षु इंद्रिय सुखों से विरक्त, बुरी अवस्थाओं से विरक्त होकर, आरंभिक अभ्यास और निरंतर अभ्यास के साथ, वैराग्य से उत्पन्न उत्साह और आनंद से युक्त प्रथम ध्यान में प्राप्त होता है और निवास करता है; आरंभिक अभ्यास और निरंतर अभ्यास को त्यागकर वह आंतरिक परिष्कार और मन के उन्नत विकास के साथ, आरंभिक अभ्यास और निरंतर अभ्यास के बिना, एकाग्रता से उत्पन्न उत्साह और आनंद से युक्त द्वितीय ध्यान में प्राप्त होता है और निवास करता है; उत्साह की इच्छा रखते हुए वह समभाव, सचेत और जागरूक रहता है और मानसिक अवस्थाओं के माध्यम से आनंद का अनुभव करता है; इसे ही श्रेष्ठजन "समभाव, सचेत आनंद में रहने वाला" कहते हैं; वह तृतीय ध्यान में प्राप्त होता है और निवास करता है; सुख और दुख का त्याग करके, फिर मानसिक सुख और मानसिक दुख को समाप्त करके वह चतुर्थ ध्यान में प्राप्त होता है और निवास करता है (जो) न तो दुख है और न ही सुख (बल्कि) समभाव से उत्पन्न चेतना की शुद्धता है। इसे ही सही एकाग्रता कहते हैं। (8)

488. आर्य अष्टांगिक मार्ग। अर्थात्; सही दृष्टि, सही विचार, सही वाणी, सही कर्म, सही आजीविका, सही प्रयास, सही जागरूकता, सही एकाग्रता।

489 V) इसमें सही दृष्टिकोण क्या है? इसमें भिक्षु वैराग्य पर आधारित, कामवासना से रहित, और अंत में त्याग पर आधारित सही दृष्टिकोण विकसित करता है। वह सही विचार विकसित करता है। सही वाणी विकसित करता है। सही कर्म विकसित करता है। सही आजीविका विकसित करता है। सही प्रयास विकसित करता है। सही जागरूकता विकसित करता है। सही एकाग्रता विकसित करता है।

वैराग्य पर निर्भर, कामवासना के अभाव पर निर्भर, समाप्ति पर निर्भर, अंततः परित्याग में परिणत।

P = अंतिम उदाहरण के रूप में पूर्ण करें।

(यहाँ समाप्त होता है) प्रवचनों के अनुसार विश्लेषण

2. अभिधम्म के अनुसार विश्लेषण

490. अष्टांगिक मार्ग है: सही दृष्टि, सही विचार, सही वाणी, सही कर्म, सही आजीविका, सही प्रयास, सही जागरूकता, सही एकाग्रता।

491. उसमें अष्टांगिक मार्ग क्या है? उसमें उस समय जब भिक्षु निरंतर पुनर्जन्म और मृत्यु से मुक्ति की ओर अग्रसर अलौकिक ध्यान विकसित करता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, पहली अवस्था में प्रवेश करने के लिए, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, [237] पहले ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है, जो कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान है; उस समय अष्टांगिक मार्ग (अर्थात्) सही दृष्टिकोण, सही एकाग्रता है।

P^पैरा 205 देखें। P 2 = मध्यवर्ती पथ घटक।

492. उसमें सही दृष्टिकोण क्या है? वह जो ज्ञान, समझ, : P : सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण, सत्य की खोज-ज्ञान-कारक, मार्ग का घटक, मार्ग में समाहित है। इसे सही दृष्टिकोण कहते हैं। (1)

p = अनुच्छेद 525 देखें।

उसमें सही विचार क्या है? वह जो चिंतन, विचार, ध्यान, एकाग्रता, मन का अनुप्रयोग, सही विचार, मार्ग का घटक, मार्ग में समाहित है। इसे सही विचार कहते हैं। (2)

इसमें सही वाणी क्या है? वह जो चार प्रकार के गलत कार्यों से बचती है, उनसे दूर रहती है, उनसे परहेज करती है, उनसे परहेज करती है, उन्हें नहीं करती है, उनसे निर्दोष होती है, उनकी सीमा का उल्लंघन नहीं करती है, और उन कार्यों के मार्ग को नष्ट करती है: सही वाणी, मार्ग का घटक, मार्ग में समाहित। इसे सही वाणी कहते हैं। (3)

इसमें सही कर्म क्या है? वह कर्म जो टालना, त्यागना है।

311

तीन गलत शारीरिक क्रियाओं से बचना, उनसे परहेज करना, उनसे दूर रहना, उन्हें न करना, उनसे मुक्त होना, उनकी सीमा का उल्लंघन न करना, उन गलत शारीरिक क्रियाओं के मार्ग को नष्ट करना: सही कर्म, मार्ग का घटक, मार्ग में शामिल। इसे सही कर्म कहते हैं। (4)

इसमें सही आजीविका क्या है? वह जो गलत आजीविका से बचना, उससे दूर रहना, उससे परहेज करना, उससे परहेज करना, उसे न करना, उससे निर्दोष होना, उसकी सीमा पार न करना, और गलत आजीविका के मार्ग को नष्ट करना है: सही आजीविका, मार्ग का घटक, मार्ग में शामिल। इसे सही आजीविका कहा जाता है। (5)

उसमें सही प्रयास क्या है? वह जो मानसिक ऊर्जा को जगाता है, सही प्रयास, ऊर्जा-ज्ञान-कारक, मार्ग का घटक, मार्ग में समाहित। इसे सही प्रयास कहते हैं। (6)

P = अनुच्छेद 220 देखें।

इसमें सही जागरूकता क्या है? वह जागरूकता, निरंतर जागरूकता, सही जागरूकता, जागरूकता-ज्ञान-कारक, मार्ग का घटक, मार्ग में समाहित। इसे सही जागरूकता कहते हैं। (7)

P = अनुच्छेद 220 देखें।

इसमें सही एकाग्रता क्या है? वह जो चेतना की स्थिरता है, सही एकाग्रता, एकाग्रता-ज्ञान-कारक, मार्ग का घटक, मार्ग में समाहित। इसे सही एकाग्रता कहते हैं। इसे अष्टांग मार्ग कहते हैं। (और इसी प्रकार) शेष अवस्थाएँ भी अष्टांग मार्ग से संबंधित हैं। (8)

P = अनुच्छेद 220 देखें।

493. पंच घटक मार्ग है: — सही दृष्टिकोण, सही विचार, सही प्रयास, सही जागरूकता, सही एकाग्रता। [238]

494. इसमें पंच तत्व मार्ग क्या है? इसमें उस समय जब कोई भिक्षु पुनर्जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति पाने की ओर अग्रसर अलौकिक ध्यान विकसित करता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर प्रथम अवस्था में प्रवेश करता है; वह कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान की प्रथम अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय पंच तत्व मार्ग (अर्थात्) सही दृष्टिकोण, सही विचार, सही प्रयास, सही जागरूकता और सही एकाग्रता है।

P = अनुच्छेद 205 देखें।

312

विश्लेषण की पुस्तक

495. इसमें सही दृष्टिकोण क्या है? वह जो ज्ञान, समझ, सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण, सत्य की खोज-ज्ञान का कारक, मार्ग का घटक, मार्ग में समाहित है। इसे सही दृष्टिकोण कहते हैं।

P = अनुच्छेद 525 देखें।

इसमें सही विचार क्या है? वह जो चिंतन है, जो सोच है, : सही विचार, मार्ग का घटक, मार्ग में समाहित। इसे ही सही विचार कहते हैं।

P = अनुच्छेद 182 देखें।

इसमें सही प्रयास क्या है? वह जो मानसिक ऊर्जा को जागृत करता है, सही प्रयास, ऊर्जा-ज्ञान-कारक, मार्ग का घटक, मार्ग में समाहित। इसे ही सही प्रयास कहते हैं।

पी — पैराग्राफ 220 देखें।

इसमें सही सचेतनता क्या है? वह जो सचेतनता है, निरंतर सचेतनता है, सही सचेतनता है, सचेतनता-ज्ञान का कारक है, मार्ग का घटक है, मार्ग में समाहित है। इसे ही सही सचेतनता कहते हैं।

P = अनुच्छेद 220 देखें।

इसमें सही एकाग्रता क्या है? वह जो चेतना की स्थिरता है, सही एकाग्रता, एकाग्रता-ज्ञान-कारक, मार्ग का घटक, मार्ग में समाहित। इसे सही एकाग्रता कहते हैं। इसे पंच-घटक मार्ग कहते हैं। (साथ ही) पंच-घटक मार्ग से जुड़ी शेष अवस्थाएँ भी।

P = अनुच्छेद 220 देखें।

496. पंच घटक मार्ग है: — सही दृष्टिकोण, सही विचार, सही प्रयास, सही जागरूकता, सही एकाग्रता।

497. इसमें सही दृष्टिकोण क्या है? इसमें उस समय जब एक भिक्षु पुनर्जन्म और मृत्यु के निरंतर चक्र से मुक्ति की ओर अग्रसर सुपरमुंडनेझान विकसित करता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, पहली अवस्था में प्रवेश करने के लिए, इंद्रिय सुखों से विरक्त होता है,

पीएक्स; प्रथम ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है, जो कठिन अभ्यास है।
धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान; जो उस समय बुद्धि, समझ हो, :P 2 : सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण, सत्य की खोज-ज्ञानोदय-कारक, मार्ग का घटक।

पथ घटकों का विश्लेषण

313

मार्ग में शामिल है। इसे सही दृष्टि कहते हैं। (साथ ही) सही दृष्टि से जुड़ी शेष अवस्थाएँ। :P 3 : (साथ ही) सही विचार से जुड़ी शेष अवस्थाएँ। : P 3 : (साथ ही) सही प्रयास से जुड़ी शेष अवस्थाएँ। : P 3 : (साथ ही) सही जागरूकता से जुड़ी शेष अवस्थाएँ। [239]

पी 1 ^ पैरा देखें। 205. पी 2 = पैरा देखें। 525.

पृष्ठ 3 = प्रत्येक को पहले उदाहरण के अनुसार पूरा करें, लेकिन पैराग्राफ 495 के अनुसार उचित संशोधनों के साथ।

इसमें सही एकाग्रता क्या है? इसमें उस समय जब एक भिक्षु अलौकिक ध्यान विकसित करता है, जो निरंतर जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्ति की ओर अग्रसर होता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, प्रथम अवस्था में प्रवेश करने के लिए, इंद्रिय सुखों से विरक्त होता है।

पी 1: पहले ध्यान में, जो कठिन अभ्यास है, को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है।
धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान; जो उस समय चेतना की स्थिरता है, सही एकाग्रता, एकाग्रता-ज्ञान-कारक, मार्ग का घटक, मार्ग में समाहित। इसे सही एकाग्रता कहते हैं। (साथ ही) शेष अवस्थाएँ भी सही एकाग्रता से जुड़ी होती हैं।

पीजे = पैरा देखें। 205. पी 2 = पैरा देखें। 220.

498. आठ घटक पथ है: दायाँ दृश्य, :P: दायाँ सांद्रण।

P = मध्यवर्ती पथ के घटक।

499. इसमें अष्टांग मार्ग क्या है? इसमें जब कोई भिक्षु जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्त होकर, मुक्ति की ओर अग्रसर अलौकिक ध्यान विकसित करता है, तब वह गलत दृष्टि का त्याग करके, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर प्रथम अवस्था में प्रवेश करता है और उसमें निवास करता है; उस समय वह सजगता है, अविचलितता की अवस्था में। ये अवस्थाएँ उत्तम हैं। ऐसा करने के बाद, उसी उत्तम अलौकिक ध्यान को विकसित करके, वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, परिणामी प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है, जो सजगता है, सजगता है और निःसंकोच है; उस समय अष्टांग मार्ग प्राप्त होता है, अर्थात् सही दृष्टि, सही एकाग्रता। इसे अष्टांग मार्ग कहा जाता है। (इसी प्रकार) शेष अवस्थाएँ भी अष्टांग मार्ग से संबंधित हैं।

पी^पैरा देखें. 205. पी 2 = ध्स देखें। पैरा. 277.

P 3 = मध्यवर्ती पथ घटक।

314

विश्लेषण की पुस्तक

500. पंच घटक मार्ग है: — सही दृष्टिकोण, सही विचार, सही प्रयास, सही जागरूकता, सही एकाग्रता।

501. इसमें पंच तत्व मार्ग क्या है? [240] इसमें जब कोई भिक्षु पुनर्जन्म और मृत्यु के निरंतर चक्र से मुक्ति पाने की प्रवृत्ति रखने वाले अलौकिक ध्यान का विकास करता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर प्रथम अवस्था में प्रवेश करता है; वह कठोर अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान के प्रथम ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय संपर्क होता है, अविचल होता है। ये अवस्थाएँ अच्छी हैं। ऐसा करने के बाद, उसी अच्छे अलौकिक ध्यान का विकास करने पर, वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, परिणामी प्रथम ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है, जो कठोर अभ्यास, धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान और निःसंतान होता है; उस समय पंच तत्व मार्ग (अर्थात) सही दृष्टिकोण, सही विचार, सही प्रयास, सही जागरूकता, सही एकाग्रता प्राप्त होती है। इसे पंच तत्व मार्ग कहा जाता है। (साथ ही) पंचघटक पथ से संबंधित शेष अवस्थाएँ भी।

पी^पैरा देखें. 205. पी 2 = ध्स देखें। पैरा, 277.

502. पंच घटक मार्ग है: — सही दृष्टिकोण, सही विचार, सही प्रयास, सही जागरूकता, सही एकाग्रता।

503. इसमें सही दृष्टिकोण क्या है? इसमें उस समय जब एक भिक्षु निरंतर जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्ति पाने की ओर अग्रसर अलौकिक ध्यान विकसित करता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर प्रथम अवस्था में प्रवेश करता है; वह कठोर अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान से युक्त प्रथम ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय संपर्क होता है; अविचल होता है। ये अवस्थाएँ अच्छी हैं। ऐसा करने के बाद, उसी अच्छे अलौकिक ध्यान को विकसित करने पर, वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, परिणामी प्रथम ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; जो उस समय ज्ञान, समझ, सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण, सत्य की खोज-ज्ञान-कारक, मार्ग का घटक और मार्ग में समाहित होता है। इसे सही दृष्टिकोण कहते हैं। (साथ ही) सही दृष्टिकोण से जुड़ी शेष अवस्थाएँ। :पृष्ठ 4 : (साथ ही) सही विचार से जुड़ी शेष अवस्थाएँ। :पृष्ठ 4 : (साथ ही) शेष

पथ घटकों का विश्लेषण

315

सही प्रयास से जुड़ी अवस्थाएँ। : पृष्ठ 4 : (साथ ही) सही जागरूकता से जुड़ी शेष अवस्थाएँ।

पी 1 - पैरा देखें। 205. पी 2 = ध्स देखें। पैरा. 277.

पृष्ठ 3 = पैराग्राफ 525 देखें।

पृष्ठ 4 = प्रत्येक को पहले उदाहरण के अनुसार पूरा करें, लेकिन पैराग्राफ 495 के अनुसार उचित संशोधनों के साथ।

इसमें सही एकाग्रता क्या है? इसमें उस समय जब एक भिक्षु निरंतर पुनर्जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति पाने की ओर अग्रसर अलौकिक ध्यान विकसित करता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, पहली अवस्था में प्रवेश करने के लिए, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, :P 1 : पहले ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है, जो कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान है; उस समय संपर्क होता है, :P 2 : [241] अविचल होता है। ये अवस्थाएँ अच्छी हैं। ऐसा करने के बाद, उसी अच्छे अलौकिक ध्यान को विकसित करने के बाद,

वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, :PX : परिणामी पहले ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है, जो कठिन अभ्यास, धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान है और शून्य है; जो उस समय स्थिरता, दृढ़ता, चेतना की दृढ़ता है; ध्यान न भटकना, अविचलित रहना, मानसिक स्थिरता, शांत रहना, एकाग्रता की क्षमता, एकाग्रता की शक्ति, सही एकाग्रता, एकाग्रता-ज्ञान कारक, मार्ग का घटक, मार्ग में शामिल। इसे सही एकाग्रता कहते हैं। (साथ ही) सही एकाग्रता से जुड़ी अन्य अवस्थाएँ भी।

पी एल = पैरा देखें। 205. पी 2 = ध्स देखें। पैरा. 277.

(यहाँ समाप्त होता है) अभिधम्म के अनुसार विश्लेषण

3. पूछताछ

504. आर्य अष्टांगिक मार्ग। अर्थात्; सही दृष्टि, सही विचार, सही वाणी, सही कर्म, सही आजीविका, सही प्रयास, सही जागरूकता, सही एकाग्रता।

505. आठ पथ घटकों में से कितने अच्छे हैं; कितने बुरे हैं; कितने न अच्छे हैं न बुरे? : P : कितने ऐसे हैं जिनके लिए शोक का कारण है; कितने ऐसे हैं जिनके लिए शोक का कारण नहीं है?

P = शेष उपयुक्त त्रिक और युग्मक।

13*

बीमार

316

विश्लेषण की पुस्तक

1. त्रिक

506. (आठ मार्ग घटक) कभी अच्छे होते हैं; कभी न अच्छे होते हैं, न बुरे। सही विचार सुखद अनुभूति से जुड़ा होता है। सात मार्ग घटक कभी सुखद अनुभूति से जुड़े होते हैं; कभी दुखदायी, न सुखद अनुभूति से जुड़े होते हैं। (आठ मार्ग घटक) कभी फलदायी होते हैं; कभी फलदायी उत्पन्न करते हैं। (लालसा और भ्रामक दृष्टि से) ग्राह्य नहीं होते, आसक्ति के विषय नहीं होते। न भ्रष्ट होते हैं, न भ्रष्टता के विषय होते हैं। सही विचार आरंभिक परिश्रम के बिना, केवल निरंतर परिश्रम से होता है। सात मार्ग घटक कभी आरंभिक परिश्रम के साथ, कभी निरंतर परिश्रम के साथ होते हैं; कभी आरंभिक परिश्रम के बिना, केवल निरंतर परिश्रम से होते हैं; कभी आरंभिक परिश्रम के बिना, निरंतर परिश्रम के बिना होते हैं। सही विचार उत्साह से भरा होता है; आनंद से भरा होता है; उदासीनता से रहित होता है। सात मार्ग घटक कभी उत्साह से भरे होते हैं; कभी आनंद से भरे होते हैं; कभी उदासीनता से भरे होते हैं। (आठ मार्ग घटक) न तो प्रथम मार्ग से और न ही पश्चात मार्गों से त्यागे जाने चाहिए। प्रथम पथ या पश्चात पथों द्वारा परित्याग किए जाने के लिए इनकी कोई जड़ नहीं होती।

कभी-कभी ये विक्षेपी (लगातार पुनर्जन्म और मृत्यु के चक्र में) होते हैं; कभी-कभी न तो संचयी होते हैं और न ही विक्षेपी। कभी-कभी ये सात अलौकिक अवस्थाओं के होते हैं; कभी-कभी अंतिम अलौकिक अवस्था के होते हैं। ये अतुलनीय होते हैं। इनका उद्देश्य अतुलनीय होता है। ये श्रेष्ठ होते हैं। कभी-कभी ये निश्चित (परिणामी समय) वाली सही (अवस्थाएँ) होते हैं; कभी-कभी इनका कोई निश्चित (परिणामी समय) नहीं होता। इनका उद्देश्य पथ नहीं होता; कभी-कभी इनका कारण पथ होता है; कभी-कभी इनका प्रमुख कारक पथ होता है; कभी-कभी यह नहीं कहा जा सकता कि इनका कारण या प्रमुख कारक पथ है। कभी-कभी ये उत्पन्न होते हैं; कभी-कभी उत्पन्न नहीं होते; कभी-कभी उत्पन्न होने के लिए बाध्य होते हैं। कभी-कभी ये भूतकाल के होते हैं; कभी-कभी भविष्यकाल के होते हैं; कभी-कभी वर्तमानकाल के होते हैं। इनका न तो भूतकाल का उद्देश्य होता है, न भविष्यकाल का और न ही वर्तमानकाल का। कभी-कभी ये आंतरिक होते हैं; कभी-कभी बाह्य होते हैं; कभी-कभी आंतरिक और बाह्य दोनों होते हैं। इनका उद्देश्य बाह्य होता है। ये अदृश्य होते हैं, इनका प्रभाव नहीं पड़ता। [242]

मैं

पथ घटकों का विश्लेषण

317

2. दोहे

507. सही दृष्टि मूल है। सात पथ घटक मूल नहीं हैं। (आठ पथ घटक) मूलों के साथ हैं। मूलों से संबद्ध हैं। सही दृष्टि मूल भी है और मूल से संबद्ध है। सात पथ घटकों को मूल भी नहीं कहा जाना चाहिए; वे मूलों के साथ तो हैं लेकिन मूल नहीं हैं। सही दृष्टि मूल भी है और मूल से संबद्ध है। सात पथ घटकों को मूल भी नहीं कहा जाना चाहिए; वे मूलों से संबद्ध तो हैं लेकिन मूल नहीं हैं। सात पथ घटक मूल नहीं हैं, मूलों के साथ हैं। सही दृष्टि को मूल नहीं कहा जाना चाहिए, मूल से संबद्ध है या मूल नहीं है, मूल से संबद्ध नहीं है।

(आठ पथ घटक) कारण सहित हैं। बद्ध हैं। अदृश्य हैं। अप्रभावित हैं। भौतिक नहीं हैं। अलौकिक हैं। एक ही मार्ग से ज्ञात किए जा सकते हैं; दूसरे मार्ग से ज्ञात नहीं किए जा सकते।

(आठ पथ घटक) दोष नहीं हैं। दोषों के विषय नहीं हैं। दोषों से संबद्ध नहीं हैं। इन्हें दोष भी हैं और दोषों के विषय भी, या दोष के विषय होते हुए भी दोष नहीं कहा जाना चाहिए। इन्हें दोष भी हैं और दोषों से संबद्ध भी, या दोष से संबद्ध होते हुए भी दोष नहीं कहा जाना चाहिए। ये दोषों से संबद्ध नहीं हैं, दोषों के विषय भी नहीं हैं।

(आठ पथ घटक) बंधन नहीं हैं। बंधन नहीं हैं। बाढ़ नहीं हैं। बंधन नहीं हैं। बाधाएँ नहीं हैं। विकृतियाँ नहीं हैं। इनके विषय हैं। ये चेतना नहीं हैं। ये मानसिक सहवर्ती हैं। ये चेतना से जुड़े हैं। ये चेतना से जुड़े हुए हैं। ये चेतना द्वारा उत्पन्न हैं। ये चेतना के साथ सह-अस्तित्व में हैं। ये चेतना के साथ चलते हैं। ये चेतना से जुड़े हुए हैं, चेतना द्वारा उत्पन्न हैं। ये चेतना से जुड़े हुए हैं, चेतना द्वारा उत्पन्न हैं, चेतना के साथ सह-अस्तित्व में हैं। ये चेतना से जुड़े हुए हैं, चेतना द्वारा उत्पन्न हैं, चेतना के साथ चलते हैं। ये बाह्य हैं। ये व्युत्पन्न नहीं हैं। इन्हें ग्रहण नहीं किया जा सकता।

P = पिछले पैराग्राफ में वर्णित अपवित्रताओं के अनुसार पूर्ण।

(आठ पथ घटक) आसक्ति नहीं हैं। :P: विकृतियाँ नहीं हैं। :P: प्रथम पथ द्वारा त्यागे जाने योग्य नहीं हैं। अनुवर्ती पथों द्वारा त्यागे जाने योग्य नहीं हैं। प्रथम पथ द्वारा त्यागे जाने योग्य कोई मूल नहीं हैं। अनुवर्ती पथों द्वारा त्यागे जाने योग्य कोई मूल नहीं हैं।

318

विश्लेषण की पुस्तक

अनुवर्ती मार्ग। सही विचार प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना होता है। सात मार्ग घटक कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के साथ होते हैं; कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना होते हैं। सही विचार निरंतर अनुप्रयोग के साथ होता है। सात मार्ग घटक कभी-कभी निरंतर अनुप्रयोग के साथ होते हैं; कभी-कभी निरंतर अनुप्रयोग के बिना होते हैं। सही विचार उत्साह से भरा होता है। सात मार्ग घटक कभी-कभी उत्साह से भरे होते हैं; कभी-कभी उत्साह के बिना होते हैं। सही विचार उत्साह से भरा होता है। सात मार्ग घटक कभी-कभी उत्साह से भरे होते हैं; कभी-कभी उत्साह के बिना होते हैं। सही विचार आनंद से भरा होता है। सात मार्ग घटक कभी-कभी आनंद से भरे होते हैं; कभी-कभी आनंद के बिना होते हैं। सही विचार उदासीनता से भरा नहीं होता है। सात मार्ग घटक कभी-कभी उदासीनता से भरे होते हैं; कभी-कभी उदासीनता के बिना होते हैं। [243] (आठ मार्ग घटक) इच्छा के तल की विशेषता नहीं हैं। रूप के तल की विशेषता नहीं हैं। निराकार तल की विशेषता नहीं हैं। शामिल नहीं हैं (अर्थात् अलौकिक हैं)। कभी-कभी मुक्त करने की प्रवृत्ति रखते हैं; कभी-कभी मुक्त करने की प्रवृत्ति नहीं रखते हैं। कभी-कभी निश्चित (परिणामी समय) के होते हैं; कभी-कभी इनका कोई निश्चित (परिणामी समय) नहीं होता। ये पार नहीं किए जा सकते। इन पर शोक करने का कोई कारण नहीं होता।

P = पहले के पैराग्राफ में वर्णित दोषों के समान पूर्ण।

(यहाँ समाप्त होता है) पूछताछ

पथ घटकों का विश्लेषण समाप्त हो गया है।
तिपिटक >> अभिधम्म पिटक >> विभंग >> अध्याय 12 पाठ - झाना

विभंग - विश्लेषण की पुस्तक - गौतम बुद्ध द्वारा वाणी सहित।
पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण।
पाली से अनुवादित: यू. थित्तिला, रंगून, बर्मा, 1969

ओसीआर संस्करण, प्रूफरीडिंग नहीं की गई है, इसमें त्रुटियां हैं
(पाठकों को दिए गए .pdf संस्करण की सहायता से पाठ को सही करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है)

अंतर्वस्तु

1सीएच.12. झाना का विश्लेषण (ट्रान्स/ज़ेन/ध्यान)
1.11. प्रवचनों के अनुसार विश्लेषण
1.21. अभिधम्म के अनुसार विश्लेषण
1.33. पूछताछ

सीएच.12. झाना का विश्लेषण (ट्रान्स/ज़ेन/ध्यान)

(बौद्ध धर्म में ध्यान का अर्थ समाधि अवस्था है)

1. प्रवचनों के अनुसार विश्लेषण

508. [244] यहाँ भिक्षु मूलभूत उपदेशों द्वारा संयमित और नियंत्रित होकर निवास करता है, उचित आचरण और उपयुक्त भिक्षागृह से युक्त होकर, अपने छोटे से छोटे दोषों में भी खतरा देखकर, उपदेशों का पालन करते हुए वह स्वयं को उपदेशों में प्रशिक्षित करता है, इंद्रियों के नियंत्रण के द्वारों के प्रति सतर्क रहता है, भोजन में उचित मात्रा का ज्ञान रखता है, रात्रि के पहले और अंतिम पहर में सतर्कता का अभ्यास करता है, गहन प्रयास और अंतर्मन के साथ ज्ञानोदय की अवस्थाओं के विकास का अभ्यास करता है; वह आने-जाने में सजग रहता है; आगे और पीछे देखने में वह सजग रहता है; झुकने और सीधा होने में वह सजग रहता है; बाहरी वस्त्र, भिक्षापात्र और अंतर्वस्त्र धारण करने में वह सजग रहता है; खाने, पीने, चबाने और चखने में वह सजग रहता है; प्रकृति की पुकारों का पालन करते हुए वह सजगता से कार्य करता है; चलते हुए, खड़े होते हुए, बैठते हुए, सोते हुए, जागते हुए, बोलते हुए, मौन रहते हुए, वह सजगता से कार्य करता है; वह किसी एकांत स्थान, जंगल, वृक्ष की तलहटी, पर्वत, घाटी, पहाड़ी गुफा, कब्रिस्तान, दूरस्थ जंगल, सुनसान जगह, पुआल के ढेर (ऐसे स्थान) की ओर जाता है जहाँ शोर कम हो, हलचल कम हो, मनुष्यों के वातावरण से मुक्त हो, मनुष्यों से गुप्त हो, एकांत के लिए उपयुक्त हो; वह जंगल में जाकर, वृक्ष की तलहटी में जाकर या किसी निर्जन स्थान पर जाकर, पैरों को मोड़कर, शरीर को सीधा रखते हुए, ध्यान को अपने सामने केंद्रित करके बैठता है; वह संसार में किसी भी चीज के प्रति लोभ का त्याग करके लोभ से मुक्त चेतना के साथ निवास करता है; वह अपनी चेतना को लोभ से शुद्ध करता है। द्वेष और घृणा का त्याग करके वह द्वेष रहित चेतना के साथ, सभी जीवित प्राणियों के कल्याण के प्रति करुणामय होकर निवास करता है। वह अपने मन से दुर्भावना को दूर करता है और

शाब्दिक अर्थ √jhe = < जो किसी वस्तु के बारे में गहराई से सोचता है', और 'जो

जो जलाता है' (प्रतिकूल चीजें, अर्थात् बाधाएं)।

ध्यान ऐसी अवस्थाएं हैं जिनमें एकाग्रता पूर्ण रूप से प्राप्त हो जाती है और जिनमें बाधाएं दूर हो जाती हैं।

320 विश्लेषण की पुस्तक

घृणा। आलस्य और सुस्ती का त्याग करके वह आलस्य और सुस्ती से मुक्त होकर, उज्ज्वल बोध से युक्त, सचेत और जागरूक होकर निवास करता है; वह अपनी चेतना को आलस्य और सुस्ती से शुद्ध करता है। व्याकुलता और पश्चाताप का त्याग करके वह आंतरिक रूप से शांत चेतना के साथ, बिना व्याकुलता के निवास करता है; वह अपनी चेतना को व्याकुलता और पश्चाताप से शुद्ध करता है। संदेह का त्याग करके, संदेह पर विजय प्राप्त करके, वह अच्छे भावों के बारे में अनिश्चितता से मुक्त होकर निवास करता है; वह अपनी चेतना को संदेह से शुद्ध करता है। इन पाँच बाधाओं (जो कि) मानसिक विकृतियाँ और बुद्धि का क्षय हैं, का त्याग करके, वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, बुरे भावों से विरक्त होकर, प्रारंभिक अभ्यास और निरंतर अभ्यास के साथ, वैराग्य से उत्पन्न उत्साह और आनंद के साथ प्रथम ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; प्रारंभिक अभ्यास और निरंतर अभ्यास को छोड़कर वह आंतरिक परिष्कार, मन के उन्नत विकास के साथ, प्रारंभिक अभ्यास और निरंतर अभ्यास के बिना, एकाग्रता से उत्पन्न उत्साह और आनंद के साथ द्वितीय ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; वह, अभिलाषा रहित, समभाव, सचेत और जागरूक होकर, शरीर (मानसिक समुच्चयों के समूह) के माध्यम से सुख का अनुभव करता है; इसे श्रेष्ठजनों ने "समभाव, सचेत और सुखमय निवासी" बताया है; वह तृतीय ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; सुख और दुख का त्याग करके, फिर मानसिक सुख और मानसिक दुख को समाप्त करके वह चतुर्थ ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है, जो न दुख है, न सुख, बल्कि समभाव से उत्पन्न चेतना की शुद्धता है; इंद्रिय बोधों को समाप्त करके, विभिन्न बोधों पर ध्यान न देकर, रूप बोधों को पूर्णतः पार कर, इस प्रकार "अंतरात्मा अनंत है" पर ध्यान केंद्रित करके वह अनंतता की अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; अनंतता की अवस्था को पूर्णतः पार करके, इस प्रकार "चेतना अनंत है" पर ध्यान केंद्रित करके वह अनंतता की अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है। चेतना की अनंतता की अवस्था को पूर्णतः पार कर लेने के बाद, (एकाग्र होकर) इस प्रकार, "कुछ भी नहीं है", वह शून्यता की अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; शून्यता की अवस्था को पूर्णतः पार कर लेने के बाद वह न तो बोध और न ही अबोध की अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है।

(यहाँ सारांश समाप्त होता है)

509. 'यहाँ* का अर्थ है: इस दृष्टिकोण का, इस क्षमता (समझने की) का, इस चुनाव का, इस मत (अर्थात्, जो दृष्टिकोण माना जाता है) का, इस सत्य का, इस अनुशासन का, इस सिद्धांत का, इस व्याख्या का,

झाना 321 का विश्लेषण

गुरु की इस शिक्षा में यह सर्वोच्च अभ्यास निहित है। अतः इसे 'इसमें' कहा जाता है।

510. 'भिक्षु' का अर्थ है: पदनाम से भिक्षु; मान्यता से भिक्षु; भिक्षावृत्ति के कारण भिक्षु; भिक्षावृत्ति की आदत से भिक्षु; भिक्षा मांगने की अवस्था तक पहुँचने से भिक्षु; कटे हुए वस्त्र पहनने से भिक्षु; बुरी अवस्थाओं का नाश करने से भिक्षु; बुरी अवस्थाओं का नाश कर चुके भिक्षु; [246] सीमित रूप से विकारों का त्याग करने से भिक्षु; असीमित रूप से विकारों का त्याग करने से भिक्षु; सात अलौकिक अवस्थाओं में से किसी एक अवस्था में होने से भिक्षु; अंतिम अलौकिक अवस्था में होने से भिक्षु; न तो सात अलौकिक अवस्थाओं में से किसी एक अवस्था में होने से और न ही अंतिम अलौकिक अवस्था में होने से भिक्षु; उत्कृष्टता (प्राप्ति) से भिक्षु; अच्छाई से भिक्षु; उत्तम गुणों से भिक्खु; आवश्यक सिद्धांतों से भिक्खु; निर्दोष, तर्कसंगत कर्मों द्वारा संघ द्वारा दीक्षित भिक्खु, जिसमें घोषणा चौथे (बिंदु) के रूप में है।

511. 'मूल उपदेश' का अर्थ है: नैतिकता, आधार, आरंभ, नींव, निपुणता, संयम, सर्वोपरि, अच्छे गुणों की प्राप्ति के लिए प्रमुख। 'संयम' का अर्थ है: शारीरिक उल्लंघन न करना, मौखिक उल्लंघन न करना, शारीरिक और मौखिक दोनों प्रकार से उल्लंघन न करना। 'नियंत्रित' का अर्थ है: मूल उपदेशों द्वारा नियंत्रित होने पर व्यक्ति परिपूर्ण, सिद्ध, परिपूर्ण, गुणवान और सुसज्जित होता है। अतः इसे 'मूल उपदेशों द्वारा नियंत्रित और संयमित' कहा जाता है।

512. 'निवास करता है' का अर्थ है: चारों मुद्राओं को धारण करता है, विद्यमान है,

रक्षा करता है, चलता रहता है, बनाए रखता है, घूमता है, निवास करता है। इसलिए इसे 'निवास करना' कहा जाता है।

513. 'उचित आचरण और उपयुक्त भिक्षा स्रोत से संपन्न' का अर्थ है: उचित आचरण है; अनुचित आचरण है।

इसमें अनुचित व्यवहार क्या है? शारीरिक उल्लंघन, मौखिक उल्लंघन, शारीरिक और मौखिक दोनों उल्लंघन। इसे अनुचित व्यवहार कहते हैं। साथ ही, सभी प्रकार की गलत नैतिकता अनुचित व्यवहार है। इसमें कोई व्यक्ति बांस देकर, पत्ते देकर, फूल देकर, फल देकर, साबुन का पाउडर देकर, दांत साफ करने वाली छड़ी देकर, या चापलूसी करके या अन्य तरीकों से जीविका कमाता है।

फली-सब्जी का सूप बनाना, बच्चों को गोद में लेकर घुमाना-फिराना, संदेशवाहक बनना या बुद्ध द्वारा अस्वीकृत कोई भी अन्य अनुचित आजीविका अपनाना अनुचित आचरण कहलाता है।

इसमें उचित आचरण क्या है? शारीरिक संयम, वाणी संयम, शारीरिक और वाणी दोनों का संयम। इसे उचित आचरण कहते हैं। साथ ही, सभी नैतिक संयम उचित आचरण है। इसमें एक व्यक्ति बांस न देकर, पत्ते न देकर, फूल न देकर, फल न देकर, साबुन का पाउडर न देकर, दांत साफ करने वाली छड़ी न देकर, दासता का व्यवहार न करके, दाना चुगली न करके, दुलार न करके, संदेशवाहक न बनकर और बुद्ध द्वारा अस्वीकृत किसी अन्य अनुचित आजीविका से जीविका नहीं चलाता है। इसे उचित आचरण कहते हैं।

514. 'भिक्षागृह' का अर्थ है: (उपयुक्त) भिक्षागृह है; अनुपयुक्त भिक्षागृह है।

इसमें अनुपयुक्त भिक्षावृत्ति क्या है? [247] इसमें कोई व्यक्ति भिक्षा के लिए वेश्याओं, विधवाओं, कुंवारी कन्याओं, हिजड़ों, भिक्षुणियों या सार्वजनिक स्थानों पर जाता है; वह राजाओं, राजाओं के मंत्रियों, विधर्मियों और उनके अनुयायियों के साथ अनुपयुक्त संबंध रखता है; साथ ही उन परिवारों के साथ भी रहता है जिन पर उसे भरोसा नहीं है, जो अप्रसन्न हैं, जो परोपकार के स्रोत नहीं हैं, जो निंदा और निंदा करते हैं, जो दुश्मन की बुराई करते हैं, जो विपत्ति और असुविधा चाहते हैं, जो भिक्षुओं, भिक्षुणियों, पुरुष भक्तों और स्त्री भक्तों के बंधनों से सुरक्षा नहीं चाहते; वह ऐसे परिवारों पर निर्भर रहता है, उनके पास जाता है, अक्सर उनके साथ समय बिताता है। इसे अनुपयुक्त भिक्षावृत्ति कहा जाता है।

इसमें भिक्षा मांगने का उचित स्थान क्या है? इसमें एक व्यक्ति भिक्षा के लिए वेश्याओं का सहारा नहीं लेता, विधवाओं का सहारा नहीं लेता, कुंवारी कन्याओं का सहारा नहीं लेता, नपुंसकों का सहारा नहीं लेता, भिक्षुणियों का सहारा नहीं लेता, सार्वजनिक स्थानों पर भिक्षा

नहीं मांगता; वह राजाओं, राजाओं के मंत्रियों, विधर्मियों और विधर्मियों के अनुयायियों के साथ अनुचित संबंध नहीं रखता; परन्तु वे परिवार जो विश्वास से भरे हैं, प्रसन्न हैं, परोपकार के स्रोत हैं, जिनके घर पीले वस्त्रों से सुशोभित हैं, जिनके घरों में आने-जाने वाले भिक्षुओं की भीड़ रहती है, जो शुभचिंतक हैं, कल्याणकारी हैं, सुखदायी हैं, भिक्षुओं, भिक्षुणियों, पुरुष भक्तों और स्त्री भक्तों के लिए बंधनों से मुक्ति की कामना करते हैं।

वह ऐसे परिवारों पर निर्भर रहता है, उनसे संपर्क करता है, उनके साथ अक्सर रहता है। इसे (उपयुक्त) भिक्षागृह कहा जाता है। इस प्रकार वह इस (उचित) व्यवहार और इस (उपयुक्त) भिक्षागृह से संपन्न है। इसलिए इसे 'उचित व्यवहार और भिक्षागृह से युक्त' कहा जाता है।

P = अनुच्छेद 357 देखें।

515. 'अपनी छोटी से छोटी गलतियों में भी खतरा देखना' का अर्थ है: छोटी से छोटी गलतियाँ क्या होती हैं? वे गलतियाँ जो तुच्छ, मामूली, हल्की होती हैं, जिन्हें हल्का कहा जाता है और जिनसे नियंत्रण, संयम, चेतना का उदय और ध्यान आकर्षित होना चाहिए। इन्हें छोटी से छोटी गलतियाँ कहा जाता है। इस प्रकार, इन छोटी से छोटी गलतियों में वह गलती देखता है, खतरा देखता है, जोखिम देखता है, और उससे बचने का रास्ता देखता है। इसलिए इसे 'अपनी छोटी से छोटी गलतियों में भी खतरा देखना' कहा जाता है। [248]

516. 'उपदेशों का पालन करते हुए वह स्वयं को उपदेशों में प्रशिक्षित करता है' का अर्थ है: उपदेश क्या हैं? चार प्रकार के उपदेश हैं: भिक्षुओं के लिए भिक्षु उपदेश; भिक्षुणियों के लिए भिक्षुणी उपदेश; पुरुष भक्तों के लिए पुरुष भक्त उपदेश; स्त्री भक्तों के लिए स्त्री भक्त उपदेश। इन्हें उपदेश कहा जाता है। इस प्रकार वह इन उपदेशों का पूर्णतः, बिना किसी अपवाद के, पूरी तरह से पालन करता है। अतः इसे 'उपदेशों का पालन करते हुए वह स्वयं को उपदेशों में प्रशिक्षित करता है' कहा जाता है।

517. 'नियंत्रण संकायों के द्वारों के संबंध में सतर्क'

इसका अर्थ है: नियंत्रण करने वाली शक्तियों के द्वारों की सुरक्षा की जाती है; द्वारों की सुरक्षा की नहीं जाती है।

इसमें 'संयमित इंद्रियों के द्वारों की रक्षा न करना' क्या है? इसमें एक व्यक्ति किसी दृश्य वस्तु को आँख से देखकर उसका सामान्य स्वरूप ग्रहण करता है, उसका विवरण ग्रहण करता है। चाहे जो भी कारण हो, यदि कोई व्यक्ति आँख की संयमित इंद्री को नियंत्रित किए बिना रहता है, तो लोभ और मानसिक पीड़ा, बुरे परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं। वह उस पर संयम नहीं बरतता; वह आँख की संयमित इंद्री की रक्षा नहीं करता; वह आँख की संयमित इंद्री में संयम नहीं रखता। कान से श्रव्य वस्तु सुनना। नाक से सुगंधित वस्तु को सूंघना। जीभ से स्वादिष्ट वस्तु का स्वाद लेना। शरीर से स्पर्शित वस्तु को छूना। मन से काल्पनिक वस्तु को जानना, उसका सामान्य स्वरूप ग्रहण करता है, उसका विवरण ग्रहण करता है।

विस्तार से। चाहे किसी भी कारण से, यदि कोई व्यक्ति मन की नियंत्रण शक्ति को नियंत्रित किए बिना मनन कर रहा है, तो लोभ और मानसिक पीड़ा जैसी बुरी अवस्थाएँ उत्पन्न हो सकती हैं। वह इन पर संयम नहीं बरतता; वह मन की नियंत्रण शक्ति की रक्षा नहीं करता; वह मन की नियंत्रण शक्ति में संयम नहीं रखता। इन छह नियंत्रण शक्तियों में से जो भी शक्ति रक्षा नहीं कर रही है, जिसकी रक्षा नहीं की जा रही है, जो रक्षा नहीं कर रही है, जो संयम नहीं बरत रही है, उसे 'नियंत्रण शक्तियों के द्वारों की रक्षा न करना' कहा जाता है।

P — पहले उदाहरण के सामान्य रूप में प्रत्येक को पूरा करें।

इसमें 'संवेदनाओं के द्वारों की रक्षा करना' क्या है? इसमें कोई व्यक्ति किसी दृश्य वस्तु को आँख से देखते हुए उसके सामान्य स्वरूप पर ध्यान नहीं देता, न ही उसके विवरण पर। चाहे किसी भी कारण से कोई व्यक्ति आँख की संवेदना को नियंत्रित किए बिना रहता हो, लोभ और मानसिक पीड़ा जैसी बुरी अवस्थाएँ उत्पन्न हो सकती हैं। वह इन पर संयम बरतता है; वह आँख की संवेदना की रक्षा करता है; वह

आँख की संवेदना में संयम का पालन करता है। कान से श्रव्य वस्तु सुनना: नाक से सुगंधित वस्तु को सूंघना: जीभ से स्वादिष्ट वस्तु का स्वाद लेना: शरीर से स्पर्श करना: मन से काल्पनिक वस्तु को जानना उसके सामान्य स्वरूप पर ध्यान नहीं देता, न ही उसके विवरण पर। चाहे किसी भी कारण से, यदि कोई व्यक्ति मन की नियंत्रण शक्ति को नियंत्रित किए बिना जीवन व्यतीत कर रहा है, तो लोभ और मानसिक पीड़ा जैसी बुरी अवस्थाएँ उत्पन्न हो सकती हैं। वह इन पर संयम बरते; वह मन की नियंत्रण शक्ति की रक्षा करे; वह मन की नियंत्रण शक्ति में संयम का अभ्यास करे। इन छह नियंत्रण शक्तियों में से जो भी शक्ति रक्षा कर रही है, जिसकी रक्षा की जा रही है, जो रक्षा कर रही है, जो संयम बरत रही है, उसे [249] 'नियंत्रण शक्तियों के द्वारों की रक्षा' कहा जाता है। नियंत्रण शक्तियों के द्वारों की इस रक्षा से वह सुसज्जित है, अच्छी तरह से सुसज्जित है। इसलिए इसे 'नियंत्रण शक्तियों के द्वारों की रक्षा' कहा जाता है।

p! = पहले उदाहरण के सामान्य रूप में प्रत्येक को पूरा करें।

पृष्ठ 2 = पैराग्राफ 357 देखें।

518. 'भोजन में सही मात्रा जानना' का अर्थ है: है,

भोजन में सही मात्रा का ज्ञान होना; भोजन में सही मात्रा का ज्ञान न होना भी एक समस्या है।

सही मात्रा।

इसमें 'भोजन में सही मात्रा का ज्ञान न होना' का क्या अर्थ है?

इसमें एक व्यक्ति बिना सोचे-समझे, अनुचित रूप से सुखदायक गतिविधियों, अभिमान, शारीरिक आकर्षण और सुडौल शरीर के लिए भोजन ग्रहण करता है।

झाना का विश्लेषण

325

उसमें जो असंतोष है, सही मात्रा का ज्ञान न होना, भोजन पर विचार न करना। इसे भोजन में सही मात्रा का ज्ञान न होना कहा जाता है। इसमें 'भोजन में उचित मात्रा का ज्ञान' क्या है? इसमें एक व्यक्ति चिंतन करते हुए, उचित मात्रा में भोजन ग्रहण करता है, सुख-सुविधाओं के लिए नहीं, अभिमान के लिए नहीं, शारीरिक आकर्षण के लिए नहीं, उत्तम शरीर के लिए नहीं, बल्कि केवल उतना ही जितना शरीर को स्थिर और बनाए रखने के लिए, भूख की पीड़ा को शांत करने के लिए, और सर्वोच्च साधना को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक हो; (यह सोचते हुए) कि मैं इस पुरानी अनुभूति (अर्थात् बेचैनी) को नष्ट कर देता हूँ; मैं कोई नई अनुभूति (अर्थात् तृप्ति) उत्पन्न नहीं करूँगा; और मुझे जीविका, दोषरहितता और सुखमय निवास प्राप्त होगा। इसमें जो संतुष्टि निहित है, वह भोजन में उचित मात्रा का ज्ञान होना है, और भोजन पर चिंतन करना है। इसे 'भोजन में उचित मात्रा का ज्ञान' कहा जाता है। भोजन में उचित मात्रा का ज्ञान उसे प्राप्त होता है। इसलिए इसे 'भोजन में उचित मात्रा का ज्ञान' कहा जाता है।

P = अनुच्छेद 357 देखें।

519. और रात्रि के पहले और अंतिम पहर में भिक्षु किस प्रकार सजगता का अभ्यास करता है? इसमें भिक्षु दिन के समय बैठकर इधर-उधर टहलते हुए अपनी चेतना को बाधक अवस्थाओं से शुद्ध करता है; रात्रि के पहले पहर में बैठकर इधर-उधर टहलते हुए वह अपनी चेतना को बाधक अवस्थाओं से शुद्ध करता है; रात्रि के मध्य पहर में वह सिंह मुद्रा में दाहिनी ओर लेटता है, एक पैर को दूसरे पर थोड़ा विस्थापित करके, उठने के विचार के प्रति सचेत, जागरूक और एकाग्र रहता है; रात्रि के अंतिम पहर में, उठने के बाद, बैठकर इधर-उधर टहलते हुए वह अपनी चेतना को बाधक अवस्थाओं से शुद्ध करता है। इस प्रकार भिक्षु रात्रि के पहले और अंतिम पहर में सजगता का अभ्यास करता है।

520. 'तीव्र प्रयास' का अर्थ है: वह जो मानसिक ऊर्जा को जगाता है, : P : सही प्रयास।

P = अनुच्छेद 220 देखें।

521. 'प्रवेश' का अर्थ है: वह जो ज्ञान, समझ, : P : सुस्ती की अनुपस्थिति, सत्य की जांच, सही दृष्टिकोण।

पी — पैराग्राफ 525 देखें।

326

विश्लेषण की पुस्तक

522. 'ज्ञानोदय अवस्थाओं के विकास के अभ्यास का अभ्यास करना' का अर्थ है: इसमें ज्ञानोदय अवस्थाएँ क्या हैं? सात ज्ञानोदय कारक (अर्थात,) सचेतनता-ज्ञानोदय कारक, सत्य अन्वेषण-ज्ञानोदय कारक, ऊर्जा-ज्ञानोदय कारक, उत्साह-ज्ञानोदय कारक, शांति-ज्ञानोदय कारक, एकाग्रता-ज्ञानोदय कारक, [250] समभाव-ज्ञानोदय कारक। इन्हें ज्ञानोदय अवस्थाएँ कहा जाता है। इस प्रकार वह इन ज्ञानोदय अवस्थाओं का अनुसरण करता है, उन्हें विकसित करता है, दोहराता है। अतः इसे 'ज्ञानोदय अवस्थाओं के विकास के अभ्यास का अभ्यास करना' कहा जाता है।
523. और एक भिक्षु आने-जाने में किस प्रकार सजगता से कार्य करता है; आगे देखने और चारों ओर देखने में सजगता से कार्य करता है; झुकने और खिंचाव करने में सजगता से कार्य करता है; बाहरी वस्त्र, भिक्षापात्र और अंतर्वस्त्र धारण करने में सजगता से कार्य करता है; खाने, पीने, चबाने और चखने में सजगता से कार्य करता है; प्राकृतिक क्रिया करते समय सजगता से कार्य करता है; चलने, खड़े होने, बैठने, सोने, जागने, बोलने और चुप रहने में सजगता से कार्य करता है? इसमें एक भिक्षु सचेत और जागरूक होकर आता है; सचेत और जागरूक होकर जाता है; सचेत और जागरूक होकर आगे देखता है; सचेत और जागरूक होकर चारों ओर देखता है; सचेत और जागरूक होकर झुकता है; सचेत और जागरूक होकर खिंचाव करता है; सचेत होकर सजगता से कार्य करता है; बाहरी वस्त्र, भिक्षापात्र और अंतर्वस्त्र धारण करते समय सचेत और जागरूक होकर कार्य करता है; खाने-पीने, चबाने, स्वाद लेने में वह सजग रहता है; प्राकृतिक क्रिया करते समय वह सजग रहता है; चलने-फिरने, खड़े होने, बैठने, सोने, जागने, बोलने, चुप रहने में वह सजग रहता है।
524. इसमें सचेतनता क्या है? वह जो सचेतनता है, निरंतर सचेतनता है, स्मरण है, सचेतनता है, याद रखने की क्रिया है, ध्यान में रखना है, सतहीपन से दूर रहना है, विस्मृति से दूर रहना है, सचेतनता है, सचेतनता को नियंत्रित करने की क्षमता है, सचेतनता की शक्ति है, सही सचेतनता है। इसे ही सचेतनता कहते हैं।
525. 'जागरूक' का अर्थ है: जागरूकता क्या है? वह जो ज्ञान, समझ, अन्वेषण, शोध, सत्य की खोज, विवेक, भेदभाव, भेद, विद्वता, दक्षता, सूक्ष्मता, विश्लेषण, विचार, व्यापकता, बुद्धिमत्ता, मार्गदर्शन, अंतर्दृष्टि, जागरूकता, प्रेरणा, बुद्धि और नियंत्रण क्षमता है।

झाना का विश्लेषण

327

ज्ञान, ज्ञान की शक्ति, ज्ञान की तलवार, ज्ञान का मीनार, ज्ञान का प्रकाश, ज्ञान की चमक, ज्ञान का वैभव, ज्ञान का रत्न, सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टि। इसे ही जागरूकता कहते हैं। इस प्रकार वह इस सजगता और इस जागरूकता से परिपूर्ण होता है। इस प्रकार एक भिक्षु सजग और सचेत होकर आगे बढ़ता है; सजग और सचेत होकर प्रस्थान करता है; सजग और सचेत होकर आगे देखता है; सजग और सचेत होकर चारों ओर देखता है; सजग और सचेत होकर झुकता है; सजग और सचेत होकर खिंचाव करता है; सजग होकर जागरूकता के साथ कार्य करता है; बाहरी वस्त्र, भिक्षापात्र और अंतर्वस्त्र धारण करते समय, वह सजग होकर जागरूकता के साथ कार्य करता है; खाने, पीने, चबाने, चखने में, सजग होकर जागरूकता के साथ कार्य करता है; प्राकृतिक क्रिया करते समय, सजग होकर जागरूकता के साथ कार्य करता है; चलने, खड़े होने, बैठने, सोने, जागने, बोलने, चुप रहने में, वह जागरूकता के साथ कार्य करता है।
P = अनुच्छेद 357 देखें।
526. 'एकांत' का अर्थ है: यदि निवास स्थान निकट है और आम लोगों या भिक्षुओं से भरा नहीं है; तो वह एकांत है। यदि निवास स्थान दूर है और आम लोगों या भिक्षुओं से भरा नहीं है; तो वह एकांत है।
527. 'आवास' का अर्थ है: पलंग निवास है; कुर्सी भी निवास है; तकिया भी निवास है; विहार भी निवास है; पंचछत वाला (घर) भी निवास है; ढलान वाली छत वाला (घर) भी निवास है; पहरेदार मीनार भी निवास है; गोलाकार (घर) भी निवास है; कोठरी भी निवास है; गुफा भी निवास है; पेड़ की तलहटी भी निवास है; बांस का झुरमुट भी निवास है या जहाँ कहीं भी भिक्षु ध्यान करते हैं; यह सब निवास है।

528 'वह एकांत निवास की ओर बढ़ता है* का अर्थ है: वह इस एकांत निवास की ओर बढ़ता है, खुशी से बढ़ता है, इसका उपयोग करता है, इस पर निर्भर करता है, इसका अच्छा उपयोग करता है। इसलिए इसे 'वह एकांत निवास की ओर बढ़ता है' कहा जाता है।
529. 'वन* का अर्थ है: दहलीज से परे प्रस्थान करना; यह सब वन है।
530. 'पेड़ की जड़* का अर्थ है: पेड़ की जड़ केवल पेड़ की जड़ होती है; पहाड़ केवल पहाड़ होता है; घाटी केवल घाटी होती है; पहाड़ी गुफा केवल पहाड़ी गुफा होती है; कब्रिस्तान केवल कब्रिस्तान होता है; सुनसान जगह केवल सुनसान जगह होती है; भूसे का ढेर केवल भूसे का ढेर होता है।

328 विश्लेषण की पुस्तक
531. 'दूरस्थ वन' का अर्थ है: यह दूर स्थित आवासों का नाम है; 'दूरस्थ वन' का अर्थ है: यह घने जंगलों में स्थित आवासों का नाम है; 'दूरस्थ वन' का अर्थ है: यह भयभीत करने वाले आवासों का नाम है; 'दूरस्थ वन' का अर्थ है: यह भयानक आवासों का नाम है; 'दूरस्थ वन' का अर्थ है: यह बाहरी आवासों का नाम है; 'दूरस्थ वन' का अर्थ है: यह मनुष्यों के पड़ोस में स्थित न होने वाले आवासों का नाम है; 'दूरस्थ वन' का अर्थ है: यह असहनीय आवासों का नाम है।
532. 'कम शोर होना' का अर्थ है: यदि निवास स्थान निकट है और उसमें आम लोगों या भिक्षुओं की भीड़ नहीं है; तो उसमें कम शोर होता है। यदि निवास स्थान दूर है और उसमें आम लोगों या भिक्षुओं की भीड़ नहीं है; तो उसमें कम शोर होता है।
533. 'कम शोरगुल वाला' का अर्थ है: जिसमें कम शोर होता है, उसमें कम कोलाहल होता है। जिसमें कम कोलाहल होता है, [252] वह मनुष्यों के वातावरण से मुक्त होता है। जो मनुष्यों के वातावरण से मुक्त होता है, वह मनुष्यों से गुप्त होता है। जो मनुष्यों से गुप्त होता है, वह एकांत के लिए उपयुक्त होता है।
534. 'जंगल में गया है या पेड़ की तलहटी में गया है या किसी सुनसान जगह पर गया है' का अर्थ है: वह जंगल में गया है या वह पेड़ की तलहटी में गया है या वह किसी सुनसान जगह पर गया है।
535. 'पैरों को आड़ा मोड़कर बैठता है' का अर्थ है: वह पैरों को आड़ा मोड़कर बैठता है।
536. 'शरीर को सीधा रखना' का अर्थ है: शरीर सीधा, स्थिर और अच्छी तरह से स्थापित है।
537. 'सामने सचेतनता स्थापित करना' का अर्थ है: इसमें सचेतनता क्या है? वह जो सचेतनता है, निरंतर सचेतनता, स्मरण, सही सचेतनता। इसे सचेतनता कहते हैं। यह सचेतनता नाक की नोक पर या ऊपरी होंठ के मध्य में अच्छी तरह से स्थापित की जाती है। इसलिए इसे 'सामने सचेतनता स्थापित करना' कहते हैं।

P = पैरा 220 देखें,

जेएचडीएनए का विश्लेषण

329

538. 'संसार में लोभ का त्याग करना' का अर्थ है: लोभ क्या है? वह जो वासना, मोह, चेतना का मोह है। इसे लोभ कहते हैं।
पी — पैराग्राफ 249 देखें।
इसमें संसार क्या है? पाँचों आसक्तियाँ (जिनके विषय हैं) संसार हैं। इसे संसार कहते हैं। इस संसार में लोभ शांत हो जाता है, स्थिर हो जाता है, नियंत्रित हो जाता है, समाप्त हो जाता है, नष्ट हो जाता है, पूर्णतः नष्ट हो जाता है, मुरझा जाता है, पूर्णतः समाप्त हो जाता है। अतः इसे 'संसार में लोभ का त्याग' कहते हैं।
539. 'लोभ से मुक्त चेतना' का अर्थ है: इसमें चेतना क्या है? वह जो चेतना, मन, विचार आदि है, और उपरोक्त के आधार पर, मन-चेतना तत्व है। इसे चेतना कहते हैं। यह चेतना लोभ से मुक्त है। इसलिए इसे 'लोभ से मुक्त चेतना' कहा जाता है।
पी — पैराग्राफ 184 देखें।
540. 'निवास करना' का अर्थ है: चारों मुद्राओं को धारण करना, अस्तित्व में रहना, रक्षा करना, चलते रहना, बनाए रखना, घूमना, निवास करना। इसलिए इसे 'निवास करना' कहा जाता है।

541. 'उसकी चेतना को लोभ से शुद्ध करता है' का अर्थ है: लोभ क्या है? वह जो वासना, आसक्ति, चेतना की आसक्ति है। इसे लोभ कहते हैं।
P = अनुच्छेद 249 देखें।
उसमें चेतना क्या है? वह जो चेतना, मन, विचार, आदि है, और उपरोक्त के आधार पर, मन-चेतना-तत्व। इसे चेतना कहते हैं। वह इस चेतना को निर्मल करता है, शुद्ध करता है, साफ करता है, मुक्त करता है, इस लोभ से छुटकारा दिलाता है। इसलिए इसे 'उसकी चेतना को लोभ से शुद्ध करना' कहते हैं। [253]
P = अनुच्छेद 184 देखें।
542. 'दुर्भावना और घृणा का त्याग करना' का अर्थ है: दुर्भावना है; घृणा है।

मैं

330

विश्लेषण की पुस्तक

इसमें दुर्भावना क्या है? चेतना की वह पीड़ा, आक्रोश, घृणा, शत्रुता, चिड़चिड़ापन, झुंझलाहट, क्रोध, अरुचि, मानसिक विकार, नफरत, क्रोध, क्रोधित होना, क्रोधित अवस्था, घृणा, घृणास्पद होना, घृणास्पद अवस्था, अव्यवस्था, अव्यवस्थित अवस्था, विरोध, शत्रुता, उग्रता, अचानकता, चेतना के आनंद का अभाव। इसे दुर्भावना कहते हैं।
इसमें घृणा क्या है? जो दुर्भावना है वही घृणा है; जो घृणा है वही दुर्भावना है; इस प्रकार यह दुर्भावना और यह घृणा शांत, स्थिर, नियंत्रित, समाप्त, लुप्त, नष्ट, पूर्णतः नष्ट, मुरझाई, पूर्णतः मुरझाई हुई, निरस्त हो जाती है। अतः इसे 'दुर्भावना और घृणा का त्याग' कहा जाता है।
543. 'द्वेष रहित चेतना होना' का अर्थ है: इसमें चेतना क्या है? वह जो चेतना, मन, विचार, और उपरोक्त के आधार पर, मन-चेतना-तत्व है। इसे चेतना कहते हैं। यह चेतना द्वेष रहित है। इसलिए इसे 'द्वेष रहित चेतना होना' कहते हैं।
P = अनुच्छेद 184 देखें।
544. 'रहता है * का अर्थ है: :P: इसलिए इसे 'रहता है' कहा जाता है।
P = अनुच्छेद 540 देखें।
545. 'उसके मन से दुर्भावना और घृणा को दूर करता है*
इसका अर्थ है: दुर्भावना है; घृणा है।
इसमें दुर्भावना क्या है? वह जो चेतना को परेशान करती है, यानी उग्रता, अचानकता, चेतना के आनंद का अभाव। इसे ही दुर्भावना कहते हैं।
P = अनुच्छेद 542 देखें।
उसमें घृणा क्या है? जो दुर्भावना है वही घृणा है; जो घृणा है वही दुर्भावना है।
इसमें चेतना क्या है? वह जो चेतना, मन, विचार आदि है, और उपरोक्त के आधार पर, मन-चेतना-तत्व। इसे चेतना कहते हैं। वह इस चेतना को दुर्भावना और घृणा से मुक्त करता है, शुद्ध करता है, साफ करता है, छुटकारा दिलाता है, मुक्त करता है। इसलिए इसे 'अपनी चेतना को दुर्भावना और घृणा से शुद्ध करना' कहते हैं।
P = अनुच्छेद 184 देखें।

झाना 331 का विश्लेषण
546. 'आलस्य और सुस्ती का त्याग करना' का अर्थ है: आलस्य है; सुस्ती है।
आलस्य क्या है? चेतना की अस्वस्थता, शिथिलता, उदासी, सुस्ती, आलस्य की अवस्था, आलस्य, आलस्यपूर्ण चेतना की अवस्था। इसे आलस्य कहते हैं।
उसमें आलस्य क्या है? [254] शरीर (मानसिक समूहों) की अस्वस्थता, बोझिलता, आवरण, घेर लेना, भीतर अवरोध पैदा करना, आलस्य, नींद, उनींदापन, नींद में होना, नींद की अवस्था। इसे आलस्य कहते हैं। इस प्रकार यह आलस्य और यह आलस्य शांत, स्थिर,

अवरुद्ध, समाप्त, लुप्त, नष्ट, पूर्णतः नष्ट, मुरझाया हुआ, पूर्णतः मुरझाया हुआ, निरस्त हो जाता है। अतः इसे 'आलस्य और आलस्य का त्याग' कहते हैं।

547. 'आलस्य और सुस्ती से मुक्त' का अर्थ है: उस आलस्य और सुस्ती को त्याग देना, छोड़ देना, मुक्त कर देना, त्याग देना, अस्वीकार कर देना, दोनों को त्याग देना और अस्वीकार कर देना। इसलिए इसे 'आलस्य और सुस्ती से मुक्त' कहा जाता है।

548. 'रहता है* का अर्थ है: :P: इसलिए इसे 6 निवास कहा जाता है'.

P = अनुच्छेद 540 देखें।

549. 'स्पष्ट बोध होना' का अर्थ है: बोध क्या है? वह जो बोध है, अनुभव करना है, अनुभव करने की अवस्था है। इसे बोध कहते हैं। यह बोध स्पष्ट, निर्मल, अत्यंत शुद्ध और अत्यंत स्पष्ट होता है। अतः इसे 'स्पष्ट बोध होना' कहते हैं।

550. 'सचेत और जागरूक' का अर्थ है: इसमें सचेतनता क्या है? वह जो सचेतनता है, निरंतर सचेतनता, सही सचेतनता। इसे ही सचेतनता कहते हैं।

P = पैरा 220 देखें,

^यहाँ जागरूकता क्या है? वह जो ज्ञान, समझ, सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण है। इसे जागरूकता कहते हैं। अतः वह इस सजगता और इस जागरूकता से परिपूर्ण है। अतः इसे 'सजग और जागरूक' कहा जाता है।

पृष्ठ 1 = पैराग्राफ 525 देखें।

पृष्ठ 2 — पैराग्राफ 357 देखें।

332

विश्लेषण की पुस्तक

551. 'वह अपनी चेतना को आलस्य और सुस्ती से शुद्ध करता है।'

मतलब: आलस्य है; सुस्ती है।

इसमें आलस्य क्या है? :P: इसे ही आलस्य कहते हैं।

P = अनुच्छेद 546 देखें।

इसमें सुस्ती क्या है? :P: इसे सुस्ती कहते हैं।

P = अनुच्छेद 546 देखें।

इसमें चेतना क्या है? :P: इसे चेतना कहते हैं। वह इस चेतना को निर्मल, शुद्ध, साफ करता है, इस आलस्य और सुस्ती से मुक्त करता है। इसलिए इसे 'वह अपनी चेतना को आलस्य और सुस्ती से शुद्ध करता है' कहते हैं।

P = अनुच्छेद 184 देखें।

552. 'विचलित होने और पश्चाताप को त्यागना' का अर्थ है: विचलित होना; पश्चाताप होना। [255]

इसमें व्याकुलता क्या है? चेतना की व्याकुलता, बेचैनी, मानसिक अस्थिरता, चेतना की उथल-पुथल। इसे ही व्याकुलता कहते हैं।

इसमें पश्चाताप क्या है? जो उचित नहीं है उसमें उचित देखना, जो उचित है उसमें अनुचित देखना, जो निर्दोष है उसमें दोष देखना, जो दोषपूर्ण है उसमें दोष न देखना; जो समान है, पश्चाताप, पश्चाताप की अवस्था, पश्चाताप की स्थिति, मानसिक पश्चाताप, मानसिक त्याग। इसे पश्चाताप कहते हैं। इस प्रकार यह विकर्षण और यह पश्चाताप शांत, स्थिर, अवरुद्ध, समाप्त, लुप्त, नष्ट, पूर्णतः नष्ट, मुरझाया हुआ, पूर्णतः मुरझाया हुआ, निरस्त हो जाता है। इसलिए इसे 'विकर्षण और पश्चाताप का त्याग' कहते हैं।

553. 'बिना विचलित हुए' का अर्थ है: विचलित होने और पश्चाताप को त्याग देना, छोड़ देना, मुक्त कर देना, त्याग देना, अस्वीकार कर देना, और दोनों को त्याग देना। इसलिए इसे 'बिना विचलित हुए' कहा जाता है।

554. 'रहता है' का अर्थ है: :P: इसलिए इसे 'रहता है 5' कहा जाता है।

पी — पैराग्राफ 540 देखें।

'आंतरिक रूप से' का अर्थ है: वह जो व्यक्तिगत हो, स्वयं से संबंधित हो।*

इस श्लोक को इस पाठ में छोड़ दिया गया है, लेकिन यह सुधम्मवती 1912 में शामिल है।
बर्मी पाठ, और पीटीएस 1904 में रोमनकृत t*xt.

555. 'शांत चेतना' का अर्थ है: इसमें चेतना क्या है? वह जो चेतना, मन, विचार आदि है, और उपरोक्त के आधार पर, मन-चेतना तत्व है। इसे चेतना कहते हैं। यह चेतना आंतरिक रूप से शांत, स्थिर और संयमित होती है। इसलिए इसे 'आंतरिक रूप से शांत चेतना' कहते हैं।
P = अनुच्छेद 184 देखें।
556. 'वह अपने मन को व्याकुलता और पश्चाताप से शुद्ध करता है' का अर्थ है: व्याकुलता है; पश्चाताप है।
इसमें व्याकुलता क्या है? चेतना की व्याकुलता, बेचैनी, मानसिक अस्थिरता, चेतना की उथल-पुथल। इसे ही व्याकुलता कहते हैं।
इसमें पश्चाताप क्या है? :P: इसे पश्चाताप कहते हैं।
P = अनुच्छेद 552 देखें।
इसमें चेतना क्या है? :P: इसे चेतना कहते हैं। वह इस चेतना को साफ करता है, शुद्ध करता है, साफ करता है, मुक्त करता है, इस भटकाव और पश्चाताप से आज़ाद करता है। इसलिए इसे 'वह अपनी चेतना को भटकाव और पश्चाताप से साफ करता है' कहते हैं।
P = अनुच्छेद 184 देखें।
557. 'संदेह का त्याग' का अर्थ है: इसमें संदेह क्या है? वह जो उलझन, उलझन में होना, उलझन की अवस्था, व्याकुलता, संदेह, दोलन, दोहरा मार्ग, उतार-चढ़ाव, पकड़ की अनिश्चितता, टालमटोल, संकोच, तल्लीन न होना, चेतना की कठोरता, मानसिक बलिदान है। इसे संदेह कहते हैं। [256] यह संदेह शांत हो जाता है, स्थिर हो जाता है, अवरुद्ध हो जाता है, समाप्त हो जाता है, लुप्त हो जाता है, नष्ट हो जाता है, पूर्णतः नष्ट हो जाता है, मुरझा जाता है, पूर्णतः मुरझा जाता है, निरस्त हो जाता है। अतः इसे 'संदेह का त्याग' कहते हैं।
558. 'संदेह पर विजय' का अर्थ है: यह संदेह दूर हो गया है, पार हो गया है, इससे बाहर निकल गया है, (वह) दूसरे किनारे पर चला गया है, दूसरे किनारे पर पहुँच गया है। इसलिए इसे 'संदेह पर विजय' कहा जाता है।
559. 'अच्छी अवस्थाओं के बारे में अनिश्चितता रहित' का अर्थ है: अच्छी अवस्थाओं के बारे में इस संदेह के संबंध में वह भ्रमित नहीं है, संदेह नहीं करता है, अनिश्चितता से मुक्त है, अनिश्चितता से दूर है, अनिश्चितता से मुक्त है। इसलिए इसे 'अच्छी अवस्थाओं के बारे में अनिश्चितता रहित' कहा जाता है।

560. 'वह अपने मन को संदेह से मुक्त करता है' का अर्थ है: उसमें संदेह क्या है? वह जो उलझन है, उलझन में होना, उलझन की अवस्था, चेतना की कठोरता, मानसिक त्याग। इसे ही संदेह कहते हैं।
कुछ टेक्स्ट में :P: शामिल है।
उसमें चेतना क्या है? वह जो चेतना, मन, विचार आदि है, और उपरोक्त के आधार पर, मन-चेतना-तत्व है। इसे चेतना कहते हैं। वह इस चेतना को संदेह से मुक्त करता है, शुद्ध करता है, साफ करता है, बचाता है, मुक्त करता है। इसलिए इसे 'वह अपनी चेतना को संदेह से मुक्त करता है' कहा जाता है।
P = अनुच्छेद 184 देखें।
561. 'इन पाँच बाधाओं का त्याग' का अर्थ है: ये पाँच बाधाएँ शांत, स्थिर, अवरुद्ध, समाप्त, लुप्त, नष्ट, पूर्णतः नष्ट, मुरझाई हुई, पूर्णतः मुरझाई हुई और निरस्त हो जाती हैं। अतः इसे 'इन पाँच बाधाओं का त्याग' कहा जाता है।
562. 'मानसिक विकृतियाँ' का अर्थ है: ये पाँच बाधाएँ चेतना की विकृतियाँ हैं।

563. 'ज्ञान का क्षय' का अर्थ है: इन पाँच बाधाओं के कारण जो ज्ञान उत्पन्न नहीं हुआ है वह उत्पन्न नहीं होता, और जो ज्ञान उत्पन्न हो चुका है वह भी समाप्त हो जाता है। इसलिए इसे 'ज्ञान का क्षय' कहा जाता है।
564. 'इंद्रिय सुखों से विरक्त, बुरी अवस्थाओं से विरक्त 5
इसका अर्थ है: इसमें इंद्रिय सुख क्या हैं? इच्छा इंद्रिय सुख है, कामवासना इंद्रिय सुख है, कामवासनापूर्ण इच्छा इंद्रिय सुख है, विचार इंद्रिय सुख है, कामवासनापूर्ण विचार इंद्रिय सुख है। इन्हें ही इंद्रिय सुख कहा जाता है।
इसमें बुरी अवस्थाएँ क्या हैं? इंद्रिय सुख की इच्छा, द्वेष, आलस्य, सुस्ती, विचलित होना, पश्चाताप, संदेह। इन्हें बुरी अवस्थाएँ कहा जाता है। [257] इस प्रकार वह इन इंद्रिय सुखों और इन बुरी अवस्थाओं से विरक्त है। इसलिए इसे 'इंद्रिय सुखों से विरक्त, बुरी अवस्थाओं से विरक्त' कहा जाता है।

झाना का विश्लेषण

335

565. 'प्रारंभिक आवेदन के साथ, निरंतर आवेदन के साथ' का अर्थ है: प्रारंभिक आवेदन है; निरंतर आवेदन है।
इसमें प्रारंभिक अनुप्रयोग क्या है? वह जो मनन, चिंतन, विचार, एकाग्रता, ध्यान का अनुप्रयोग, सही विचार है। इसे ही प्रारंभिक अनुप्रयोग कहते हैं।
इसमें निरंतर अभ्यास क्या है? वह जो खोज, परीक्षण, निरंतर जांच, गहन छानबीन, चेतना द्वारा निरंतर जुड़ाव और निरीक्षण है। इसे निरंतर अभ्यास कहते हैं। इस प्रकार, वह इस प्रारंभिक अभ्यास और इस निरंतर अभ्यास से परिपूर्ण होता है। अतः इसे 'प्रारंभिक अभ्यास से युक्त, निरंतर अभ्यास से युक्त' कहा जाता है।
P = अनुच्छेद 357 देखें।
566. 'वैराग्य से उत्पन्न' का अर्थ है: प्रारंभिक अभ्यास, निरंतर अभ्यास, उत्साह, आनंद, चेतना की एकाग्रता; ये सभी इसी वैराग्य में उत्पन्न होते हैं, पैदा होते हैं, विद्यमान होते हैं, पूर्ण रूप से विद्यमान होते हैं, प्रत्यक्ष होते हैं। इसलिए इसे 'वैराग्य से उत्पन्न' कहा जाता है।
567. 'उत्साह और आनंद' का अर्थ है: उत्साह है; आनंद है।
उत्साह क्या है? उत्साह, खुशी, उमंग, उमंग, आनंद, प्रसन्नता, उल्लास, चेतना का सुख। यही उत्साह कहलाता है।
इसमें आनंद क्या है? वह जो मानसिक शांति, मानसिक सुख, मानसिक संपर्क से उत्पन्न सुखदायक अनुभूति, मानसिक संपर्क से उत्पन्न सुखदायक अनुभूति है। इसे आनंद कहते हैं। यह आनंद उत्साह के साथ होता है, उससे जुड़ा होता है, उससे संबंधित होता है। इसलिए इसे 'उत्साह और आनंद' कहते हैं।
568. 'प्रथम' का अर्थ है: क्रम में प्रथम; यह प्रथम है क्योंकि इसे प्रथम प्राप्त किया गया है।
569 v 'झान' का अर्थ है: प्रारंभिक अनुप्रयोग, निरंतर अनुप्रयोग, उत्साह, आनंद, चेतना की एकाग्रता।
570. 'प्राप्त करना' का अर्थ है: वह जो प्राप्त करना, बार-बार प्राप्त करना, हासिल करना, अच्छी तरह से प्राप्त करना, संपर्क करना, बोध करना, प्रथम ध्यान की उपलब्धि है।

336

विश्लेषण की पुस्तक

571. 'रहता है' का अर्थ है: :P: इसलिए इसे 'रहता है' कहा जाता है।
P = अनुच्छेद 540 देखें।
572. 'प्रारंभिक अनुप्रयोग और निरंतर अनुप्रयोग को बाधित करना'
इसका अर्थ है: प्रारंभिक अनुप्रयोग होता है; निरंतर अनुप्रयोग होता है।
इसमें प्रारंभिक अनुप्रयोग क्या है? वह जो मानसिक प्रक्रिया है, चिंतन है, सही विचार है। इसे ही प्रारंभिक अनुप्रयोग कहते हैं।
पी — पैराग्राफ 565 देखें।

इसमें सतत अभ्यास क्या है? [258] वह जो खोज, परीक्षण, निरंतर परीक्षण, गहन जांच, चेतना द्वारा निरंतर जुड़ाव और निरंतर निरीक्षण है। इसे सतत अभ्यास कहा जाता है। इस प्रकार यह प्रारंभिक अभ्यास और यह सतत अभ्यास शांत, स्थिर, अवरुद्ध, समाप्त, लुप्त, नष्ट, पूर्णतः नष्ट, मुरझाया हुआ, पूर्णतः मुरझाया हुआ, निरस्त हो जाता है। इसलिए इसे 'अवरोधक प्रारंभिक अभ्यास और सतत अभ्यास' कहा जाता है।

573. 'आंतरिक' का अर्थ है: जो व्यक्तिगत हो, स्वयं से संबंधित हो।

574. 'परिष्करण' का अर्थ है: वह जो विश्वास, आत्मविश्वास, भरोसा, अंतर्निहित आस्था है।

575. 'मन का उन्नत विकास' का अर्थ है: चेतना की स्थिरता, सही एकाग्रता।

P = अनुच्छेद 220 देखें।

576. 'प्रारंभिक आवेदन के बिना, निरंतर आवेदन के बिना' का अर्थ है: प्रारंभिक आवेदन है; निरंतर आवेदन है।

इसमें प्रारंभिक अनुप्रयोग क्या है? वह जो मानसिक प्रक्रिया है, चिंतन है, सही विचार है। इसे ही प्रारंभिक अनुप्रयोग कहते हैं।

P = अनुच्छेद 565 देखें।

इसमें सतत अभ्यास क्या है? वह जो खोज है, निरंतर खोज है,* जांच है, निरंतर जांच है, बारीकी से जांच है, चेतना द्वारा निरंतर जुड़ाव और निरंतर निरीक्षण है। इसे सतत अभ्यास कहते हैं। इस प्रकार यह प्रारंभिक अभ्यास और यह सतत अभ्यास शांत, स्थिर, अवरुद्ध, समाप्त, लुप्त, नष्ट, पूर्णतः नष्ट हो जाते हैं।

झाना का विश्लेषण

337

मुरझाया हुआ, पूरी तरह मुरझाया हुआ, निरस्त। इसलिए इसे 'प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, निरंतर अनुप्रयोग के बिना' कहा जाता है।

कुछ संस्करणों में यह शब्द शामिल नहीं है।

577. 'एकाग्रता से उत्पन्न' का अर्थ है: परिष्कार, उत्साह और आनंद; ये सभी इस एकाग्रता में उत्पन्न होते हैं, पैदा होते हैं, विद्यमान होते हैं, पूर्ण रूप से विद्यमान होते हैं, प्रकट होते हैं। इसलिए इसे 'एकाग्रता से उत्पन्न' कहा जाता है।

578. 'उत्साह और आनंद' का अर्थ है: उत्साह है; आनंद है।

इसमें उत्साह क्या है? :P: इसे ही उत्साह कहते हैं।

पैराग्राफ 567 देखें।

इसमें आनंद क्या है? :P: इसे आनंद कहते हैं। यह आनंद इस उत्साह के साथ जुड़ा हुआ है, इससे सह-उत्पन्न होता है, इससे संबंधित है। इसलिए इसे 'उत्साह और आनंद' कहते हैं।

P = अनुच्छेद 567 देखें।

579. 'द्वितीय' का अर्थ है: क्रम में द्वितीय; यह द्वितीय है क्योंकि इसे द्वितीय स्थान पर प्राप्त किया गया है।

580. 'झान' का अर्थ है: परिष्कार, उत्साह और आनंद, चेतना की एकाग्रता।

581. 'प्राप्त करना' का अर्थ है: वह जो प्राप्ति है, बार-बार प्राप्ति है, अधिग्रहण है, अच्छी तरह से प्राप्ति है, संपर्क है, बोध है, द्वितीय ध्यान की उपलब्धि है। [259]

582. 'रहता है' का अर्थ है: :P: इसलिए इसे 'रहता है' कहा जाता है।

P = अनुच्छेद 540 देखें।

583^ 'इच्छाहीन उत्साह' का अर्थ है: उत्साह क्या है? जो उत्साह, प्रसन्नता, आनंद, उमंग, उल्लास, प्रसन्नता, उमंग, आनंद, उल्लास, चेतना का सुख है, उसे उत्साह कहते हैं। यह उत्साह शांत हो जाता है, स्थिर हो जाता है, अवरुद्ध हो जाता है, समाप्त हो जाता है, लुप्त हो जाता है, पूरी तरह नष्ट हो जाता है, मुरझा जाता है, पूरी तरह मुरझा जाता है, निरस्त हो जाता है। इसलिए इसे 'इच्छाहीन उत्साह' कहा जाता है।

338

विश्लेषण की पुस्तक

584. 'समभाविक' का अर्थ है: समभाव क्या है? जो समभाव है, जिसमें समभाव है, सर्वोच्च समभाव है, चेतना का संतुलन है। इसे समभाव कहते हैं। वह इस समभाव से युक्त है। अतः इसे 'समभाविक' कहते हैं।
P = अनुच्छेद 357 देखें।
585. 'निवास करता है' का अर्थ है: ;P: इसलिए इसे 'निवास करता है' कहा जाता है। P = पैरा 540 देखें।
586. 'सचेत और जागरूक' का अर्थ है: इसमें सचेतनता क्या है? वह जो सचेतनता है, निरंतर सचेतनता, सही सचेतनता। इसे ही सचेतनता कहते हैं।
P = अनुच्छेद 220 देखें।
उसमें जागरूकता क्या है? वह जो ज्ञान, समझ, सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण है। इसे जागरूकता कहते हैं। इस प्रकार वह इस सजगता और इस जागरूकता से परिपूर्ण है। अतः इसे 'सजग और जागरूक' कहा जाता है।
पी^पैरा देखें. 525. पी 2 = पैरा देखें। 357.
587. 'मानसिक समुच्चय के माध्यम से सुख का अनुभव करना' का अर्थ है: इसमें सुख क्या है? वह जो मानसिक शांति, मानसिक सुख, मानसिक संपर्क से उत्पन्न सुखदायक अनुभव, मानसिक संपर्क से उत्पन्न सुखदायक अनुभूति है। इसे ही सुख कहते हैं।
इसमें (मानसिक समूहों का) शरीर क्या है? बोध का समूह, मानसिक सहवर्ती तत्वों का समूह, चेतना का समूह। इसे (मानसिक समूहों का) शरीर कहते हैं। वह इस (मानसिक समूहों के) शरीर के माध्यम से आनंद का अनुभव करता है। इसलिए इसे 'मानसिक समूहों के शरीर के माध्यम से आनंद का अनुभव करना' कहते हैं।
588. 'यह जो श्रेष्ठ जन घोषित करते हैं' का अर्थ है: श्रेष्ठ जन किसे कहते हैं? बुद्ध और बुद्धों के शिष्य श्रेष्ठ जन कहलाते हैं; वे इसका प्रचार, उपदेश, परिभाषा, स्थापना, प्रकटीकरण, विश्लेषण, स्पष्टीकरण और व्याख्या करते हैं। अतः इसे 'यह जो श्रेष्ठ जन घोषित करते हैं' कहा जाता है।

झाना 339 का विश्लेषण
589. 'समभाविक, सजग आनंद में रहने वाला' का अर्थ है: उसमें समभाव क्या है? जो समभाव है, जिसमें समभाव है, सर्वोच्च समभाव है, चेतना का संतुलन है। इसे समभाव कहते हैं। [260]
तो इसमें सचेतनता क्या है? वह जो सचेतनता है, निरंतर सचेतनता, :P: सही सचेतनता। इसे ही सचेतनता कहते हैं।
P = अनुच्छेद 220 देखें।
उसमें सुख क्या है? वह जो मानसिक शांति, मानसिक सुख, मानसिक संपर्क से उत्पन्न सुखदायक अनुभूति, मानसिक संपर्क से उत्पन्न सुखदायक अनुभूति है। यही सुख कहलाता है। इस प्रकार समभाव, इस जागरूकता और इस सुख से परिपूर्ण होकर वह चारों अवस्थाओं में विद्यमान रहता है, रक्षा करता है, चलता रहता है, बनाए रखता है, घूमता है और निवास करता है। अतः इसे 'समभावयुक्त, जागरूक सुख में निवास करने वाला' कहा जाता है।
590. 'तीसरा' का अर्थ है: क्रम में तीसरा; यह तीसरा है क्योंकि इसे तीसरे स्थान पर प्राप्त किया गया है।
591. 'झान' का अर्थ है: समभाव, सजगता, जागरूकता, आनंद, चेतना की एकाग्रता।
592. 'प्राप्त करना' का अर्थ है: वह जो प्राप्त करना, बार-बार प्राप्त करना, हासिल करना, अच्छी तरह से प्राप्त करना, संपर्क करना, बोध करना, तीसरे ध्यान की उपलब्धि है।
593. 'रहता है' का अर्थ है: :P: इसलिए इसे 'रहता है' कहा जाता है।
P = अनुच्छेद 540 देखें।
594. 'सुख का त्याग करके और दुख का त्याग करके' का अर्थ है: सुख है; दुख है।
इसमें सुख क्या है? वह जो शारीरिक आराम, शारीरिक सुख, शारीरिक संपर्क से उत्पन्न सुखद अनुभूति, शारीरिक संपर्क से उत्पन्न सुखद अनुभूति है। इसे सुख कहते हैं। इसमें दुख क्या है? वह जो शारीरिक बेचैनी, शारीरिक पीड़ा है।

मुझे दर्द होता है, शारीरिक संपर्क से उत्पन्न बेचैनी भरी पीड़ादायक अनुभूति होती है, शारीरिक संपर्क से उत्पन्न बेचैनी भरी पीड़ादायक भावना होती है। इसे दर्द कहते हैं। इस प्रकार यह सुख और यह दर्द शांत हो जाते हैं, स्थिर हो जाते हैं, अवरुद्ध हो जाते हैं, समाप्त हो जाते हैं, लुप्त हो जाते हैं, नष्ट हो जाते हैं, अच्छी तरह नष्ट हो जाते हैं, मुरझा जाते हैं, अच्छी तरह मुरझा जाते हैं, 14 +

340

विश्लेषण की पुस्तक

निरस्त कर दिया गया। इसलिए इसे 'सुख और दुख का त्याग' कहा जाता है।

595. 'मानसिक सुख और मानसिक पीड़ा का सर्वप्रथम समापन'

इसका अर्थ है: मानसिक सुख भी होता है; मानसिक पीड़ा भी होती है।

इसमें मानसिक सुख क्या है? वह मानसिक शांति, मानसिक सुख, मानसिक संपर्क से उत्पन्न होने वाला सुखद अनुभव, मानसिक संपर्क से उत्पन्न होने वाली सुखद अनुभूति। इसे ही मानसिक सुख कहते हैं।

इसमें मानसिक पीड़ा क्या है? वह जो मानसिक बेचैनी, मानसिक पीड़ा, मानसिक संपर्क से उत्पन्न बेचैन पीड़ादायक अनुभव, मानसिक संपर्क से उत्पन्न बेचैन पीड़ादायक भावना है। इसे मानसिक पीड़ा कहते हैं। इस प्रकार यह मानसिक सुख और यह मानसिक पीड़ा पहले [261] शांत, स्थिर, अवरुद्ध, समाप्त, लुप्त, नष्ट, पूर्णतः नष्ट, मुरझाया हुआ, पूर्णतः मुरझाया हुआ, निरस्त किया जाता है। इसलिए इसे 'पहले समाप्त होने वाला मानसिक सुख और मानसिक पीड़ा' कहा जाता है।

596. 'न दर्द न सुख' का अर्थ है: वह जो न मानसिक शांति प्रदान करता है और न बेचैनी, मानसिक संपर्क से उत्पन्न न दर्दपूर्ण और न सुखदायक अनुभव, मानसिक संपर्क से उत्पन्न न दर्दपूर्ण और न सुखदायक भावना। अतः इसे 'न दर्द न सुख' कहा जाता है।

597. 'समभाव से उत्पन्न मन की शुद्धता' का अर्थ है: उसमें समभाव क्या है? जो समभाव है, जिसमें समभाव है, सर्वोच्च समभाव है, चेतना का संतुलन है। इसे समभाव कहते हैं।

इसमें सचेतनता क्या है? वह जो सचेतनता है, निरंतर सचेतनता, सही सचेतनता। इसे ही सचेतनता कहते हैं। यह सचेतनता, समभाव के कारण, अबाधित, अत्यंत शुद्ध और स्पष्ट होती है। इसलिए इसे 'समभाव से उत्पन्न सचेतनता की शुद्धता' कहते हैं।

P = अनुच्छेद 220 देखें।

598. 'चौथा' का अर्थ है: क्रम में चौथा; यह चौथा है क्योंकि इसे चौथे स्थान पर प्राप्त किया गया है।

599. 'झान' का अर्थ है: समभाव, सजगता, चेतना की एकाग्रता।

झाना का विश्लेषण

341

600. 'प्राप्त करना' का अर्थ है: वह जो प्राप्ति है, बार-बार प्राप्ति है, अधिग्रहण है, अच्छी तरह से प्राप्ति है, संपर्क है, बोध है, चौथे ध्यान की उपलब्धि है।

601. 'रहना' का अर्थ है: :P: इसलिए इसे 'रहना' कहा जाता है*

P =s पैराग्राफ 540 देखें।

602. 'रूप की अनुभूतियों से पूर्णतः मुक्त होना' का अर्थ है: इसमें रूप की अनुभूतियाँ क्या हैं? उस व्यक्ति की अनुभूति, अनुभूति की अवस्था, अनुभूति की स्थिति जिसने रूप के तल की विशेषता वाली अवस्था की प्राप्ति के सुख में निवास किया हो। इन्हें रूप की अनुभूतियाँ कहा जाता है। इन रूप की अनुभूतियों को उसने पार कर लिया है, उनसे परे चला गया है, उन्हें पार कर लिया है। अतः इसे 'रूप की अनुभूतियों से पूर्णतः मुक्त होना' कहा जाता है।

603. 'इंद्रिय-प्रभाव की अनुभूतियों का समापन' का अर्थ है: इसमें इंद्रिय-प्रभाव की अनुभूतियाँ क्या हैं? दृश्य (वस्तु) अनुभूति, श्रव्य (वस्तु) अनुभूति, स्पर्शनीय (वस्तु) अनुभूति। इन्हें इंद्रिय-प्रभाव की अनुभूतियाँ कहा जाता है। ये इंद्रिय-प्रभाव की अनुभूतियाँ शांत, स्थिर,

अवरुद्ध, समाप्त, लुप्त, नष्ट, पूर्णतः नष्ट, मुरझाई, पूर्णतः मुरझाई और निरस्त हो जाती हैं। अतः इसे 'इंद्रिय-प्रभाव की अनुभूतियों का समापन' कहा जाता है।

P = मध्यवर्ती इंद्रिय बोध।

604. 'धारणाओं की विविधता पर ध्यान न देना* का अर्थ है: इसमें धारणाओं की विविधता क्या है? वह धारणा, बोध, बोध की अवस्था जो उस व्यक्ति की है जिसने (ध्यान) प्राप्त नहीं किया है, परन्तु जिसमें मन तत्व और [262] मन-चेतना तत्व मौजूद हैं। इन्हें धारणाओं की विविधता कहा जाता है। वह इस धारणाओं की विविधता पर ध्यान नहीं देता। इसलिए इसे 'धारणाओं की विविधता पर ध्यान न देना' कहा जाता है।

605. 'अनंत अंतरिक्ष है' का अर्थ है: उसमें अंतरिक्ष क्या है? वह जो अंतरिक्ष है, स्थानिक है, शून्य है, खालीपन है, अंतराल है, जो चार महान मूल तत्वों के संपर्क में नहीं है। इसे अंतरिक्ष कहते हैं। इस अंतरिक्ष में वह चेतना को अनंत रूप से स्थापित, संस्थापित और विस्तारित करता है। इसलिए इसे 'अनंत अंतरिक्ष है' कहा जाता है।

606. 'अंतरिक्ष की अनंतता की अवस्था' का अर्थ है: उस व्यक्ति की चेतना और मानसिक सहवर्ती अवस्थाएँ जिसने अनंतता की अवस्था को प्राप्त कर लिया है, जो इस संसार में अनंतता की अवस्था के आनंद में निवास करता है।

607. 'प्राप्त करना' का अर्थ है: वह जो प्राप्त करना, बार-बार प्राप्त करना, हासिल करना, अच्छी तरह से प्राप्त करना, संपर्क करना, अहसास करना, अनंत अंतरिक्ष की स्थिति की उपलब्धि है।

608. 'रहता है' का अर्थ है: :P: इसलिए इसे 'रहता है' कहा जाता है।

P = अनुच्छेद 540 देखें।

609. 'अंतरिक्ष की अनंतता की अवस्था को पूरी तरह से पार कर लेने के बाद'

इसका अर्थ है: उसने अनंत अंतरिक्ष की इस अवस्था को पार कर लिया है, उससे आगे बढ़ गया है, उसे पार कर लिया है। इसलिए इसे 'अनंत अंतरिक्ष की अवस्था को पूरी तरह से पार कर लेना' कहा जाता है।

6 1 0. 'अनंत चेतना है' का अर्थ है: वह उस चेतना पर ध्यान देता है और उसे अनंत रूप से विस्तारित करता है जिसने उसी स्थान को स्पर्श किया था। इसलिए इसे 'अनंत चेतना है' कहा जाता है।

• यहां चेतना को कर्म कारक में दिया गया है, न कि मूल पाठ की तरह कर्ता कारक में। विशुद्धिमग्ग, अनुच्छेद 282 देखें।

611. 'चेतना की अनंत अवस्था' का अर्थ है: उस व्यक्ति की चेतना और मानसिक सहवर्ती अवस्थाएँ जिसने अनंत चेतना की अवस्था को प्राप्त कर लिया है, जो उस अवस्था से युक्त है, जो इस संसार में अनंत चेतना की अवस्था के आनंद में निवास करता है।

612. 'प्राप्त करना' का अर्थ है: वह जो प्राप्ति है, बार-बार प्राप्ति है, अधिग्रहण है, अच्छी तरह से अधिग्रहण है, संपर्क है, अहसास है, चेतना की अनंत अवस्था की उपलब्धि है।

613. 'रहता है' का अर्थ है: :P: इसलिए इसे 'रहता है' कहा जाता है।

P = अनुच्छेद 540 देखें।

614. 'अनंत चेतना की अवस्था को पूर्णतः पार कर लेना' का अर्थ है: वह अनंत चेतना की इस अवस्था को पार कर चुका है, उससे आगे बढ़ चुका है, उसे पार कर चुका है। अतः इसे 'अनंत चेतना की अवस्था को पूर्णतः पार कर लेना' कहा जाता है।

615. 'कुछ भी नहीं है' का अर्थ है: वह जिस चेतना को विकसित (अर्थात् परिष्कृत) करता है, उसे समाप्त करता है, उसे लुप्त कर देता है, (अंततः) वह 'कुछ भी नहीं है' देखता है। इसलिए इसे 'कुछ भी नहीं है' कहा जाता है।

616. 'शून्यता की अवस्था' का अर्थ है: चेतना और मानसिक सहवर्ती अवस्थाएँ उस व्यक्ति की जो शून्यता की अवस्था को प्राप्त कर चुका है, जो शून्यता की अवस्था से युक्त है, जो इस संसार में शून्यता की अवस्था के आनंद में निवास करता है। [263]
617. 'प्राप्त करना' का अर्थ है: वह जो प्राप्त करना, बार-बार प्राप्त करना, हासिल करना, अच्छी तरह से प्राप्त करना, संपर्क करना, अहसास करना, शून्यता की अवस्था की उपलब्धि है।
618. 'रहता है' का अर्थ है: :P: इसलिए इसे 'रहता है*' कहा जाता है।
पी — पैराग्राफ 540 देखें।
619. 'शून्यता की अवस्था को पूर्णतः पार कर लेना' का अर्थ है: वह शून्यता की इस अवस्था को पार कर चुका है, उससे आगे बढ़ चुका है, उसे पार कर चुका है। अतः इसे 'शून्यता की अवस्था को पूर्णतः पार कर लेना' कहा जाता है।
न तो बोध और न ही अबोध का अर्थ है: वह जिस शून्यता की अवस्था को शांति के रूप में देखता है, उसी में वह अवशिष्ट मानसिक अवस्थाओं की प्राप्ति को विकसित (परिष्कृत) करता है। अतः इसे न तो बोध और न ही अबोध कहा जाता है।
620. 'न तो अनुभूति और न ही अअनुभूति की अवस्था'
इसका अर्थ है: उस व्यक्ति की चेतना और मानसिक संबंधित अवस्थाएँ जिसने इस संसार में न तो प्रत्यक्ष और न ही अप्रत्यक्ष अवस्था को प्राप्त कर लिया है, जो उस अवस्था से परिपूर्ण है, और जो इस संसार में उस अवस्था के सुख में निवास करता है।
621. 'प्राप्त करना' का अर्थ है: वह जो प्राप्त करना, बार-बार प्राप्त करना, हासिल करना, अच्छी तरह से प्राप्त करना, संपर्क करना, अहसास करना, उस अवस्था की उपलब्धि प्राप्त करना जो न तो प्रत्यक्ष है और न ही अप्रत्यक्ष।
622; 'निवास करता है' का अर्थ है: चारों मुद्राओं को धारण करना, अस्तित्व में रहना, रक्षा करना, चलते रहना, बनाए रखना, घूमना, निवास करना। इसलिए इसे 'निवास करता है*' कहा जाता है।
(यहाँ समाप्त होता है) प्रवचनों के अनुसार विश्लेषण

344

विश्लेषण की पुस्तक

1. अभिधम्म के अनुसार विश्लेषण
1. आकार के तल की विशेषता वाले अच्छे राज्य
623. चार झन हैं: पहला झन, दूसरा झन, तीसरा झन, चौथा झन।
624. इसमें प्रथम ध्यान क्या है? इसमें, जब कोई भिक्षु शारीरिक लोक में पुनर्जन्म के मार्ग का विकास करता है, तब वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर पृथ्वी लोक में प्रथम ध्यान की अवस्था में निवास करता है; उस समय पाँच प्रकार के ध्यान होते हैं, अर्थात्, आरंभिक अभ्यास, निरंतर अभ्यास, उत्साह, सुख और एकाग्रता। इसे प्रथम ध्यान कहते हैं। (साथ ही) शेष अवस्थाएँ भी इस ध्यान से संबंधित हैं।
(1)
P = अनुच्छेद 205 देखें।
इसमें द्वितीय ध्यान क्या है? इसमें जब कोई भिक्षु रूप-तल में पुनर्जन्म के मार्ग का विकास करता है, तो वह प्रारंभिक अभ्यास और निरंतर अभ्यास को रोककर, पृथ्वी-आधारित द्वितीय ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय तीन घटक ध्यान होते हैं (अर्थात्) उत्साह, आनंद, चेतना की एकाग्रता। इसे द्वितीय ध्यान कहा जाता है। (साथ ही) शेष अवस्थाएँ भी ध्यान से जुड़ी होती हैं। (2) [264]
पी — पैराग्राफ 205 देखें।
इसमें तीसरा ध्यान क्या है? इसमें जब कोई भिक्षु शारीरिक लोक में पुनर्जन्म का मार्ग विकसित करता है, तब वह इच्छा रहित होकर पृथ्वी लोक में तीसरे ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय दो घटक ध्यान होते हैं, अर्थात् सुख और चेतना की एकाग्रता। इसे तीसरा ध्यान कहा जाता है। (साथ ही) शेष अवस्थाएँ भी इस ध्यान से संबंधित हैं। (3)
P = अनुच्छेद 205 देखें।

इसमें चौथा ध्यान क्या है? इसमें जब कोई भिक्षु शारीरिक लोक में पुनर्जन्म का मार्ग विकसित करता है, तब वह सुख का त्याग करके पृथ्वी लोक में चौथे ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय दो घटक ध्यान होते हैं (अर्थात्) समभाव और चेतना की एकाग्रता। इसे कहा जाता है

झाना 345 का विश्लेषण

चौथा ध्यान। (इसी प्रकार) शेष अवस्थाएँ जो ध्यान से संबंधित हैं। (4)

P = अनुच्छेद 205 देखें।

(यहाँ झैनिक समाप्त होता है) टेट्राड

625. यहाँ जब कोई भिक्षु रूप-तल में पुनर्जन्म का मार्ग विकसित करता है, तब वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर पृथ्वी पर प्रथम ध्यान की अवस्था में निवास करता है; उस समय पाँच प्रकार के ध्यान होते हैं, अर्थात्, आरंभिक अभ्यास, निरंतर अभ्यास, उत्साह, सुख, चेतना की एकाग्रता। इसे प्रथम ध्यान कहते हैं। (साथ ही) शेष अवस्थाएँ भी इस ध्यान से संबंधित हैं। (1)

P = अनुच्छेद 205 देखें।

जब कोई भिक्षु शारीरिक लोक में पुनर्जन्म का मार्ग विकसित करता है, तब वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, बुरी अवस्थाओं से विरक्त होकर, प्रारंभिक परिश्रम के बिना, केवल निरंतर परिश्रम से, वैराग्य से उत्पन्न उत्साह और आनंद के साथ, पृथ्वी पर स्थित द्वितीय ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय चार घटक ध्यान अवस्थाएँ होती हैं (अर्थात्), निरंतर परिश्रम, उत्साह, आनंद, चेतना की एकाग्रता। इसे द्वितीय ध्यान कहा जाता है। (इसी प्रकार) शेष अवस्थाएँ भी इस ध्यान से संबंधित हैं। (2)

जब कोई भिक्षु शारीरिक लोक में पुनर्जन्म का मार्ग विकसित करता है, तब वह प्रारंभिक अभ्यास और निरंतर अभ्यास को रोककर, पृथ्वी लोक में स्थित तृतीय ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय तीन घटक ध्यान अवस्थाएँ होती हैं, अर्थात् उत्साह, आनंद और चेतना की एकाग्रता। इसे तृतीय ध्यान कहा जाता है। (साथ ही) शेष अवस्थाएँ भी इस ध्यान अवस्था से संबंधित हैं। (3)

P = अनुच्छेद 205 देखें।

जब कोई भिक्षु शारीरिक लोक में पुनर्जन्म का मार्ग विकसित करता है, तब वह इच्छा रहित होकर पृथ्वी लोक में स्थित चौथे ध्यान में लीन हो जाता है; उस समय दो प्रकार के ध्यान होते हैं, अर्थात् सुख और एकाग्रता। इसे चौथा ध्यान कहते हैं। (साथ ही) शेष अवस्थाएँ भी इसी ध्यान से संबंधित हैं। (4)

P = अनुच्छेद 205 देखें।

जब कोई भिक्षु शारीरिक लोक में पुनर्जन्म का मार्ग विकसित करता है, तब वह सुख का त्याग करके प्राप्त करता है:

346

विश्लेषण की पुस्तक

और पृथ्वी युक्त पाँचवें ध्यान में निवास करता है; उस समय दो घटक ध्यान होते हैं (अर्थात,) समभाव, चेतना की एकाग्रता। इसे पाँचवाँ ध्यान कहा जाता है। (इसी प्रकार) शेष अवस्थाएँ भी इस ध्यान से संबंधित हैं। (5)

(यहाँ झानिक समाप्त होता है) पेंटाड

2. निराकार समतल की विशेषता वाली अच्छी अवस्थाएँ

626. जब कोई भिक्षु निराकार लोक में पुनर्जन्म का मार्ग विकसित करता है, तब वह सुख का त्याग करके पूर्णतः शून्यता की अवस्था को पार कर लेता है और चौथे ध्यान में लीन हो जाता है, जिसमें उसे ऐसी अवस्था का अनुभव होता है जो न तो प्रत्यक्ष है और न ही अप्रत्यक्ष; उस समय दो प्रकार के ध्यान होते हैं, अर्थात् समभाव और एकाग्रता। इसे चौथा ध्यान कहा जाता है, (साथ ही) शेष अवस्थाएँ भी इसी ध्यान से संबंधित हैं।

पी — पैराग्राफ 205 देखें।

3. अलौकिक अच्छी अवस्थाएँ

627. चार झन हैं: पहला झन, दूसरा झन, तीसरा झन, चौथा झन।

628. इसमें प्रथम ध्यान क्या है? इसमें उस समय जब भिक्षु जन्म-मृत्यु के निरंतर चक्र से मुक्ति पाने की ओर अग्रसर अलौकिक ध्यान विकसित करता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर प्रथम अवस्था में प्रवेश करता है; वह कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान से प्राप्त प्रथम ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय पाँच घटक ध्यान होते हैं (अर्थात्), आरंभिक अभ्यास, निरंतर अभ्यास, उत्साह, सुख और चेतना की एकाग्रता। इसे प्रथम ध्यान कहा जाता है। (साथ ही) शेष अवस्थाएँ भी इस ध्यान से संबंधित हैं।

P = अनुच्छेद 205 देखें।

इसमें द्वितीय ध्यान क्या है? इसमें वह समय आता है जब एक भिक्षु अलौकिक ध्यान विकसित करता है, जो निरंतर पुनर्जन्म और मृत्यु के चक्र को तोड़ते हुए मुक्ति की ओर अग्रसर होता है; वह गलत दृष्टिकोण को त्यागकर, प्रथम अवस्था में प्रवेश करता है, और प्रारंभिक अवरोधों को रोकता है।

अभ्यास और निरंतर अभ्यास से द्वितीय ध्यान अवस्था प्राप्त होती है और उसमें निवास किया जाता है, जो कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान का परिणाम है; उस समय तीन घटक ध्यान अवस्थाएँ होती हैं, अर्थात् उत्साह, आनंद और चेतना की एकाग्रता। इसे द्वितीय ध्यान कहा जाता है। (साथ ही) शेष अवस्थाएँ भी ध्यान से संबंधित होती हैं।

P = अनुच्छेद 205 देखें।

इसमें तीसरा ध्यान क्या है? इसमें उस समय जब भिक्षु पुनर्जन्म और मृत्यु के निरंतर चक्र से मुक्ति पाने की ओर अग्रसर अलौकिक ध्यान विकसित करता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, पहली अवस्था में प्रवेश करने के लिए, इच्छाहीन होकर, तीसरे ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है, जो कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान है; उस समय दो घटक ध्यान होते हैं, अर्थात्, सुख और चेतना की एकाग्रता। इसे तीसरा ध्यान कहा जाता है। (साथ ही) शेष अवस्थाएँ भी इस ध्यान से जुड़ी होती हैं।

P = अनुच्छेद 205 देखें।

इसमें चौथा ध्यान क्या है? इसमें उस समय जब एक भिक्षु जन्म-मृत्यु के निरंतर चक्र से मुक्ति पाने की ओर अग्रसर अलौकिक ध्यान विकसित करता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, सुख का त्याग करके प्रथम अवस्था में प्रवेश करता है; वह कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान के चौथे ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय दो घटक ध्यान होते हैं, अर्थात् समभाव और चेतना की एकाग्रता। इसे चौथा ध्यान कहा जाता है। (साथ ही) शेष अवस्थाएँ भी इस ध्यान से जुड़ी होती हैं।

P = अनुच्छेद 205 देखें।

(यहाँ झैनिक समाप्त होता है) टेट्राड

629. यहाँ उस समय जब एक भिक्षु पुनर्जन्म और मृत्यु के निरंतर चक्र से मुक्ति पाने की ओर अग्रसर अलौकिक ध्यान विकसित करता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, [266] इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर प्रथम अवस्था में प्रवेश करता है, और उस प्रथम ध्यान में निवास करता है जो कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान है; उस समय पाँच घटक ध्यान होते हैं (अर्थात्), आरंभिक अभ्यास, निरंतर अभ्यास, उत्साह, सुख, चेतना की एकाग्रता। इसे प्रथम ध्यान कहा जाता है। (साथ ही) शेष अवस्थाएँ भी इस ध्यान से संबंधित हैं।

P = अनुच्छेद 205 देखें।

जब कोई भिक्षु जन्म-मृत्यु के निरंतर चक्र से मुक्ति पाने की दिशा में अग्रसर अलौकिक ध्यान अवस्था में प्रवेश करता है, तब वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, बुरी अवस्थाओं से मुक्त होकर, बिना प्रारंभिक परिश्रम के, केवल निरंतर अभ्यास से, वैराग्य से उत्पन्न उत्साह और आनंद के साथ द्वितीय ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय चार घटक ध्यान अवस्थाएँ होती हैं: निरंतर अभ्यास, उत्साह, आनंद और एकाग्रता। इसे द्वितीय ध्यान कहा जाता है। (साथ ही) शेष अवस्थाएँ भी इस ध्यान अवस्था से संबंधित हैं।

इस समय जब एक भिक्षु अलौकिक ध्यान विकसित करता है, जो निरंतर पुनर्जन्म और मृत्यु के चक्र को तोड़ते हुए मुक्ति की ओर अग्रसर होता है; वह गलत दृष्टिकोण को त्यागने, प्रथम चरण में प्रवेश करने, प्रारंभिक अभ्यास और निरंतर अभ्यास को रोकने के लिए, पी: तीसरे ध्यान में प्राप्त होता है और उसमें निवास करता है, जो कठोर अभ्यास है और

धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान; उस समय ध्यान के तीन घटक होते हैं, अर्थात् उत्साह, आनंद और चेतना की एकाग्रता। इसे तीसरा ध्यान कहते हैं। (इसी प्रकार) शेष अवस्थाएँ भी ध्यान से जुड़ी होती हैं।

P = अनुच्छेद 205 देखें।

जब भिक्षु जन्म-मृत्यु के निरंतर चक्र से मुक्ति पाने की दिशा में अग्रसर अलौकिक ध्यान की अवस्था में प्रवेश करता है, तब वह गलत दृष्टिकोण को त्यागकर, इच्छाहीन होकर प्रथम अवस्था में प्रवेश करता है और चौथे ध्यान में स्थिर हो जाता है, जो कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान का परिणाम है। उस समय दो प्रकार के ध्यान होते हैं: सुख और एकाग्रता। इसे चौथा ध्यान कहते हैं। इसी प्रकार, शेष अवस्थाएँ भी इस ध्यान से संबंधित हैं।

पैरा 205 देखें।

जब कोई भिक्षु जन्म-मृत्यु के निरंतर चक्र से मुक्ति पाने की दिशा में अग्रगामी ध्यान विकसित करता है, तब वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, सुख का त्याग करके प्रथम अवस्था में प्रवेश करता है और पाँचवें ध्यान में लीन हो जाता है, जो कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान का परिणाम है। उस समय दो घटक ध्यान अवस्थाएँ होती हैं: समता और एकाग्रता। इसे पाँचवाँ ध्यान कहा जाता है। इसी प्रकार, शेष अवस्थाएँ भी इस ध्यान से संबंधित हैं।

P = अनुच्छेद 205 देखें।

(यहाँ झानिक समाप्त होता है) पेंटाड

झाना का विश्लेषण

349

4. परिणामी आकृति के समतल की विशेषताएँ

630. चार झन हैं: पहला झन, दूसरा झन, तीसरा झन, चौथा झन।

631. इसमें प्रथम ध्यान क्या है? इसमें, जब कोई भिक्षु रूपलोक में पुनर्जन्म का मार्ग विकसित करता है, तब वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, पृथ्वी-संबंधी प्रथम ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय संपर्क होता है, अविचल होता है। ये अवस्थाएँ अच्छी हैं। रूपलोक के समान अच्छे कर्मों को करने और संचित करने के बाद, वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, पृथ्वी-संबंधी प्रथम ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय पाँच घटक ध्यान होते हैं (अर्थात्), प्रारंभिक अभ्यास, निरंतर अभ्यास, उत्साह, सुख, चेतना की एकाग्रता। इसे प्रथम ध्यान कहा जाता है। (इसी प्रकार) शेष अवस्थाएँ भी ध्यान से संबंधित हैं।

पी 1 - पैरा देखें। 205. पी 2 = ध्स देखें। पैरा. 1.

इसमें द्वितीय ध्यान क्या है? इसमें जब कोई भिक्षु शारीरिक लोक में पुनर्जन्म का मार्ग विकसित करता है, तो वह प्रारंभिक और निरंतर अभ्यास को रोककर, पृथ्वी-आधारित द्वितीय ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय संपर्क होता है, (P 2) अविचल अवस्था होती है। ये अवस्थाएँ अच्छी हैं। शारीरिक लोक की विशेषता वाले उसी अच्छे कर्म को करने और संचित करने के बाद, वह प्रारंभिक और निरंतर अभ्यास को रोककर, परिणामी द्वितीय ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है। (P 3) तृतीय ध्यान अवस्था। (P 3) चतुर्थ ध्यान अवस्था। (P 3) प्रथम ध्यान अवस्था। (P 3) पृथ्वी-आधारित पंचम ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय दो घटक ध्यान अवस्थाएँ होती हैं, अर्थात्, समता और चेतना की एकाग्रता। इसे पंचम ध्यान कहा जाता है। (इसी प्रकार) शेष अवस्थाएँ भी इस ध्यान से संबंधित हैं।

पी 1 - पैरा देखें। 205. पी 2 = ध्स देखें। पैरा. 1.
पृष्ठ 3 = प्रत्येक को प्रथम ध्यान, अनुच्छेद 631 के सामान्य रूप में पूरा करें, लेकिन उचित संशोधनों के साथ।

5. परिणामी विशेषताएँ
आकारहीन समतल
632. यहाँ जब कोई भिक्षु निराकार लोक में पुनर्जन्म का मार्ग विकसित करता है, तब वह सुख का त्याग करके पूर्णतः शून्यता की अवस्था से पार होकर, ; पृ. 1 : प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है।

350

विश्लेषण की पुस्तक

चौथे ध्यान में, उस अवस्था की अनुभूति होती है जो न तो अनुभूति है और न ही अनुभूति; उस समय संपर्क होता है, अविचल होता है। ये अवस्थाएँ अच्छी हैं। निराकार तल के समान अच्छे कर्म को करने और संचित करने के बाद, वह सुख का त्याग करके पूर्णतः शून्यता की अवस्था को पार कर जाता है; परिणामस्वरूप चौथे ध्यान में निवास करता है, उस अवस्था की अनुभूति होती है जो न तो अनुभूति है और न ही अनुभूति; उस समय दो घटक ध्यान होते हैं, अर्थात् समता और चेतना की एकाग्रता। इसे चौथा ध्यान कहते हैं। (इसी प्रकार) शेष अवस्थाएँ भी इस ध्यान से संबंधित हैं।
पी* = पैरा देखें। 205. पी 2 = ध्स देखें। पैरा. 1.
6. अलौकिक परिणाम
633. चार झन हैं: पहला झन, दूसरा झन, तीसरा झन, चौथा झन।
634. इसमें प्रथम ध्यान क्या है? इसमें उस समय जब एक भिक्षु निरंतर पुनर्जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति पाने की प्रवृत्ति वाला अलौकिक ध्यान विकसित करता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, प्रथम अवस्था में प्रवेश करने के लिए, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, rP 1 : उस प्रथम ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है जो कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान है; उस समय संपर्क होता है, [P 2 : [268] अविचल होता है। ये अवस्थाएँ अच्छी हैं। ऐसा करने के बाद, उसी अच्छे अलौकिक ध्यान को विकसित करने के बाद, वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, : P 1 : परिणामी प्रथम ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है जो कठिन अभ्यास, धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान है और निःसंतान है; उस समय पाँच घटक ध्यान होते हैं (अर्थात्), प्रारंभिक अभ्यास, निरंतर अभ्यास, उत्साह, सुख, चेतना की एकाग्रता। इसे प्रथम ध्यान कहा जाता है। (साथ ही) शेष अवस्थाएँ भी इस ध्यान से संबंधित हैं।
पी 1 ^: पैरा देखें। 205. पी 2 - ध्स देखें। पैरा. 277.
इसमें द्वितीय ध्यान क्या है? इसमें उस समय जब एक भिक्षु अलौकिक ध्यान विकसित करता है जो निरंतर पुनर्जन्म और मृत्यु के चक्र को तोड़ते हुए मुक्ति की ओर अग्रसर होता है; वह गलत दृष्टिकोण को त्यागकर, प्रथम चरण में प्रवेश करके, प्रारंभिक अभ्यास और निरंतर अभ्यास को रोककर, द्वितीय ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है, जो कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान है; उस समय संपर्क होता है, अविचलितता होती है।

झाना का विश्लेषण

351

अवस्थाएँ अच्छी हैं। ऐसा करने के बाद, उसी उत्तम अलौकिक ध्यान को विकसित करने के बाद, वह प्रारंभिक अभ्यास और निरंतर अभ्यास को रोकते हुए, परिणामी द्वितीय ध्यान में प्रवेश करता है। :P 3: तृतीय ध्यान। :P 3: चतुर्थ ध्यान। :P 3: प्रथम ध्यान, :P 3: पंचम ध्यान में निवास करता है, जो कठिन अभ्यास, धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान और शून्यता है; उस समय दो घटक ध्यान होते हैं (अर्थात्), समता और चेतना की एकाग्रता। इसे पंचम ध्यान कहा जाता है। (इसी प्रकार) शेष अवस्थाएँ भी इस ध्यान से जुड़ी होती हैं।
पी 1=: पैरा देखें। 205. पी 2 = ध्स देखें। पैरा. 277.

पृष्ठ 3 = प्रत्येक को प्रथम ध्यान, अनुच्छेद 634 के सामान्य रूप में पूरा करें, लेकिन उचित संशोधनों के साथ।

7. आकार के तल और आकारहीन तल की विशेषता वाली निष्क्रिय अवस्थाएँ

635. चार झन हैं: पहला झन, दूसरा झन, तीसरा झन, चौथा झन।

636. इसमें प्रथम ध्यान क्या है? इसमें उस समय जब कोई भिक्षु रूप के तल के विशिष्ट ध्यान को विकसित करता है, जो निष्क्रिय है, न अच्छा है, न बुरा है, न ही कर्म का परिणाम है, (और) वर्तमान जीवन में सुखद जीवन का कारण है, तब वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर पृथ्वी पर स्थित प्रथम ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय पाँच घटक ध्यान होते हैं (अर्थात्), प्रारंभिक अभ्यास, निरंतर अभ्यास, उत्साह, सुख, चेतना की एकाग्रता। इसे प्रथम ध्यान कहा जाता है। (साथ ही) शेष अवस्थाएँ भी इस ध्यान से संबंधित हैं।

P = अनुच्छेद 205 देखें।

इसमें द्वितीय ध्यान क्या है? इसमें उस समय जब एक भिक्षु रूप के तल की विशेषता वाले ध्यान को विकसित करता है, जो निष्क्रिय है, न अच्छा है, न बुरा है, न ही कर्म का परिणाम है, (वर्तमान अस्तित्व में सुखद जीवन का कारण है), वह प्रारंभिक अभ्यास और निरंतर अभ्यास को रोकते हुए, : पृष्ठ 1 : द्वितीय ध्यान।

पृष्ठ 2: तीसरा ध्यान। पृष्ठ 2: चौथा ध्यान। पृष्ठ 2: पहला ध्यान। पृष्ठ 2: प्राप्त करता है

और पृथ्वी युक्त पाँचवें ध्यान में निवास करता है; उस समय दो घटक ध्यान होते हैं (अर्थात,) समता, चेतना की एकाग्रता। इसे [269] पाँचवाँ ध्यान कहा जाता है। (साथ ही) शेष अवस्थाएँ भी ध्यान से जुड़ी होती हैं।

पृष्ठ 1 = = पैराग्राफ 205 देखें।

पृष्ठ 2 = प्रत्येक को प्रथम ध्यान, अनुच्छेद 636 के सामान्य रूप में पूरा करें, लेकिन उचित संशोधनों के साथ।

352

विश्लेषण की पुस्तक

637. जब कोई भिक्षु निराकार तल के विशिष्ट ध्यान को विकसित करता है, जो निष्क्रिय है, न अच्छा है, न बुरा है, न ही कर्म का परिणाम है, (और) वर्तमान जीवन में सुखद जीवन का कारण है, तब वह सुख का त्याग करके शून्यता की अवस्था को पूर्णतः पार कर लेता है और चौथे ध्यान में निवास करता है, जो उस अवस्था की अनुभूति से युक्त है जो न तो अनुभूति है और न ही अअनुभूति; उस समय दो घटक ध्यान होते हैं, अर्थात् समभाव और चेतना की एकाग्रता। इसे चौथा ध्यान कहा जाता है। (इसी प्रकार) शेष अवस्थाएँ भी इस ध्यान से संबंधित हैं।

P = अनुच्छेद 205 देखें।

(यहाँ समाप्त होता है) अभिधम्म के अनुसार विश्लेषण

3. पूछताछ

638. चार ध्यान अवस्थाएँ — इसमें एक भिक्षु इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, बुरी अवस्थाओं से विरक्त होकर, आरंभिक परिश्रम और निरंतर परिश्रम के साथ, वैराग्य से उत्पन्न उत्साह और आनंद से युक्त प्रथम ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है। आरंभिक परिश्रम और निरंतर परिश्रम को त्यागकर, वह आंतरिक परिष्कार और मन के उन्नत विकास के साथ, आरंभिक परिश्रम और निरंतर परिश्रम के बिना, एकाग्रता से उत्पन्न उत्साह और आनंद से युक्त द्वितीय ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है। इच्छा रहित होकर वह समभाव, सचेत और जागरूक अवस्था में निवास करता है और मानसिक अवस्थाओं के माध्यम से आनंद का अनुभव करता है; इसे भगवान "समभाव, सचेत और आनंद में रहने वाला" कहते हैं; वह तृतीय ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है। : पी : सुख और दुख का त्याग करके, पहले मानसिक सुख और मानसिक दुख को समाप्त करके वह चौथे ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है (जो) न दुख है न सुख (बल्कि) समभाव से उत्पन्न मन की शुद्धता है।

P = ये c P, PTS रोमनकृत पाठ में नहीं दिखाए गए हैं।

639. चारों ध्यानों में से कितने अच्छे हैं; कितने बुरे हैं; कितने न अच्छे हैं न बुरे? : P : कितने शोक का कारण रखते हैं; कितने शोक का कारण नहीं रखते?

P = शेष उपयुक्त त्रिक और युग्मक।

1. त्रिक

640. (चारों ध्यान) कभी अच्छे होते हैं; कभी न अच्छे होते हैं, न बुरे। तीन ध्यान सुखद अनुभूति से जुड़े होते हैं, सिवाय उस सुखद अनुभूति के जो स्वयं उनमें उत्पन्न होती है। चौथा ध्यान न कष्टदायक अनुभूति से जुड़ा होता है, सिवाय उस कष्टदायक अनुभूति के जो स्वयं उनमें उत्पन्न होती है। चारों ध्यान कभी परिणाम उत्पन्न करते हैं; कभी परिणाम उत्पन्न करते हैं; कभी न परिणाम उत्पन्न करते हैं और न परिणाम उत्पन्न करते हैं। कभी लालसा और भ्रामक दृष्टि से ग्रस्त होते हैं, आसक्ति के विषय होते हैं; कभी ग्रस्त नहीं होते, आसक्ति के विषय होते हैं; कभी ग्रस्त नहीं होते, आसक्ति के विषय नहीं होते। कभी अविभाज्य होते हैं, विकृतियों के विषय होते हैं; कभी अविभाज्य होते हैं, विकृतियों के विषय नहीं होते। [270] पहला ध्यान प्रारंभिक अभ्यास के साथ होता है, निरंतर अभ्यास के साथ होता है, सिवाय उस प्रारंभिक अभ्यास और निरंतर अभ्यास के जो स्वयं उनमें उत्पन्न होते हैं। तीन ध्यान प्रारंभिक अभ्यास के बिना होते हैं, निरंतर अभ्यास के बिना होते हैं। दो ध्यानों में उत्साह होता है, सिवाय उस उत्साह के जो स्वयं उनमें उत्पन्न होता है। तीन ध्यानों में आनंद होता है, सिवाय उस आनंद के जो स्वयं उनमें उत्पन्न होता है। चौथे ध्यान में समभाव होता है, सिवाय उस समभाव के जो स्वयं उसमें उत्पन्न होता है। (चार ध्यान) न तो प्रथम मार्ग से और न ही पश्चात मार्गों से छोड़े जाने चाहिए। इनकी कोई जड़ नहीं है जिसे प्रथम मार्ग से या पश्चात मार्गों से छोड़ा जा सके। कभी ये संचयी (पुनर्जन्म और मृत्यु के निरंतर चक्र में) होते हैं; कभी विक्षेपी; कभी न तो संचयी और न ही विक्षेपी। कभी ये सात अलौकिक अवस्थाओं के होते हैं; कभी अंतिम अलौकिक अवस्था के; कभी न तो सात अलौकिक अवस्थाओं के और न ही अंतिम अलौकिक अवस्था के। कभी ये उदात्त होते हैं; कभी अगणनीय। तीन ध्यानों को निम्न या उदात्त विषय नहीं कहा जाना चाहिए; कभी-कभी इनका विषय अगणनीय होता है। कभी-कभी इसे असीम उद्देश्य वाला नहीं कहा जा सकता। चौथा ध्यान कभी निम्न उद्देश्य वाला होता है; कभी उच्च उद्देश्य वाला होता है; कभी असीम उद्देश्य वाला होता है; कभी-कभी इसे निम्न, उच्च या असीम उद्देश्य वाला नहीं कहा जा सकता। (चार ध्यान) कभी मध्यवर्ती होते हैं; कभी श्रेष्ठ होते हैं। कभी निश्चित (परिणामी समय) वाली सही (अवस्थाएँ) होती हैं; कभी निश्चित (परिणामी समय) नहीं होती हैं। तीन ध्यानों में ऐसा नहीं होता है।

पथ को कभी-कभी उनका कर्ता मानकर; कभी-कभी पथ को उनका कारण मानकर; कभी-कभी पथ को उनका प्रमुख कारक मानकर; कभी-कभी पथ को उनका कारण या उनका प्रमुख कारक न कहना उचित होगा। चौथे ध्यान में कभी-कभी पथ उसका कर्ता होता है; कभी-कभी पथ उसका कारण होता है; कभी-कभी पथ उसका प्रमुख कारक होता है; कभी-कभी पथ को उसका कर्ता, पथ उसका कारण या पथ को उसका प्रमुख कारक न कहना उचित होगा। (चार ध्यान) कभी उत्पन्न होते हैं; कभी उत्पन्न नहीं होते; कभी उत्पन्न होने ही वाले होते हैं। कभी भूतकाल के होते हैं; कभी भविष्यकाल के होते हैं; कभी वर्तमानकाल के होते हैं। तीनों ध्यानों को भूतकाल, भविष्यकाल या वर्तमानकाल का कर्ता नहीं कहना उचित होगा। चौथे ध्यान में कभी भूतकाल का कर्ता होता है; कभी भविष्यकाल का कर्ता होता है; कभी वर्तमानकाल का कर्ता होता है; कभी-कभी भूतकाल, भविष्यकाल या वर्तमानकाल का कर्ता नहीं कहना उचित होगा। (चार ध्यान) कभी आंतरिक होते हैं; कभी बाह्य होते हैं; कभी आंतरिक और बाह्य दोनों होते हैं। तीनों ध्यान बाह्य कर्ता होते हैं। चौथे ध्यान में कभी आंतरिक कर्ता होता है; कभी बाह्य कर्ता होता है; कभी-कभी इसमें आंतरिक और बाह्य दोनों वस्तुएँ होती हैं; कभी-कभी यह कहना उचित नहीं होगा कि इसमें न तो आंतरिक वस्तु है, न बाह्य वस्तु है, और न ही आंतरिक और बाह्य दोनों वस्तुएँ हैं। (चार ध्यान) अदृश्य हैं, न ही प्रभावकारी हैं।

2. दोहे

641. (चार ध्यान) मूल नहीं हैं। मूलों के साथ हैं। मूलों से जुड़े हैं। इन्हें यह नहीं कहना चाहिए कि ये भी मूलों के साथ हैं; (ये) मूलों के साथ हैं लेकिन मूल नहीं हैं। इन्हें यह नहीं कहना चाहिए कि ये भी मूलों के साथ हैं; (ये) मूलों से जुड़े हैं लेकिन मूल नहीं हैं। ये मूल नहीं हैं, मूलों के साथ हैं।

(चार ध्यान) कारण सहित हैं। बद्ध हैं। अदृश्य हैं। अप्रभावित हैं। भौतिक नहीं हैं। [271] कभी सांसारिक होते हैं; कभी अलौकिक होते हैं। एक मार्ग से ज्ञात होते हैं; दूसरे मार्ग से ज्ञात नहीं होते।

(चार ध्यान) दोष नहीं हैं। कभी-कभी दोषों के विषय होते हैं; कभी-कभी दोषों के विषय नहीं होते। दोषों से संबद्ध नहीं हैं। इन्हें दोष और दोषों के विषय नहीं कहा जाना चाहिए; (वे) कभी-कभी दोषों के विषय होते हैं लेकिन दोष नहीं होते; कभी-कभी इन्हें दोषों के विषय नहीं कहा जाना चाहिए लेकिन दोष नहीं होते।

झाना का विश्लेषण

355

यह नहीं कहा जा सकता कि कुछ दोष अन्य दोषों से जुड़े हुए हैं या उनसे जुड़े हुए हैं लेकिन स्वयं दोष नहीं हैं। कभी-कभी वे दोषों से जुड़े नहीं होते, फिर भी दोष के विषय होते हैं; कभी-कभी वे दोषों से जुड़े नहीं होते, फिर भी दोष के विषय नहीं होते।

(चार ध्यान) बंधन नहीं हैं। :P; बंधन नहीं हैं। ;P; बाढ़ नहीं हैं।

पी : बंधन नहीं हैं। पी : बाधाएँ नहीं हैं। पी : विकृतियाँ नहीं हैं।

P : इनके पास वस्तुएँ होती हैं। ये चेतना नहीं हैं। ये मानसिक सहवर्ती हैं।

चेतना से जुड़े हैं। चेतना से जुड़े हुए हैं। चेतना द्वारा उत्पन्न होते हैं। चेतना के साथ सह-अस्तित्व में हैं। चेतना के साथ रहते हैं। चेतना से जुड़े हुए हैं, चेतना द्वारा उत्पन्न होते हैं। चेतना से जुड़े हुए हैं, चेतना द्वारा उत्पन्न होते हैं और चेतना के साथ सह-अस्तित्व में हैं। चेतना से जुड़े हुए हैं, चेतना द्वारा उत्पन्न होते हैं और चेतना के साथ रहते हैं। बाह्य हैं। व्युत्पन्न नहीं हैं। कभी-कभी ग्रहण किए जा सकते हैं; कभी-कभी ग्रहण नहीं किए जा सकते।

P = पिछले पैराग्राफ में वर्णित अपवित्रताओं के अनुसार पूर्ण।

(चार ध्यान) आसक्ति नहीं हैं। :P: ये विकृतियाँ नहीं हैं।

पी: पहले रास्ते से नहीं छोड़ा जाना चाहिए। छोड़ा नहीं जाना चाहिए-

बाद के मार्गों द्वारा किए गए। प्रथम मार्ग द्वारा त्यागे जाने के लिए कोई मूल नहीं हैं। बाद के मार्गों द्वारा त्यागे जाने के लिए कोई मूल नहीं हैं। प्रथम ध्यान प्रारंभिक अभ्यास के साथ होता है, सिवाय उस प्रारंभिक अभ्यास के जो स्वयं उसमें उत्पन्न हुआ है। तीन ध्यान प्रारंभिक अभ्यास के बिना होते हैं। प्रथम ध्यान निरंतर अभ्यास के साथ होता है, सिवाय उस निरंतर अभ्यास के जो स्वयं उसमें उत्पन्न हुआ है। तीन ध्यान निरंतर अभ्यास के बिना होते हैं। दो ध्यान उत्साह के साथ होते हैं, सिवाय उस उत्साह के जो स्वयं उसमें उत्पन्न हुआ है। दो ध्यान उत्साह रहित होते हैं। दो ध्यान उत्साह के साथ होते हैं, सिवाय उस उत्साह के जो स्वयं उसमें उत्पन्न हुआ है। दो ध्यान उत्साह के साथ नहीं होते हैं। तीन ध्यान आनंद के साथ होते हैं, सिवाय उस आनंद के जो स्वयं उसमें उत्पन्न हुआ है। चौथा ध्यान आनंद के साथ नहीं होता है। चौथा ध्यान समभाव के साथ होता है, सिवाय उस समभाव के जो स्वयं उसमें उत्पन्न हुआ है। तीन ध्यान समभाव के साथ नहीं होते हैं। (चार ध्यान) इच्छा के तल की विशेषता नहीं हैं। कभी-कभी ये रूप के तल की विशेषता होते हैं; कभी-कभी रूप के तल की विशेषता नहीं होते। तीन ध्यान निराकार तल की विशेषता नहीं हैं। चौथा ध्यान कभी-कभी निराकार तल की विशेषता होता है; कभी-कभी निराकार तल की विशेषता नहीं होता। (चार ध्यान) कभी-कभी सांसारिक में शामिल होते हैं; कभी-कभी नहीं होते।

356

विश्लेषण की पुस्तक

इनमें शामिल हैं (अर्थात् ये अलौकिक हैं)। कभी-कभी ये मुक्त होने की प्रवृत्ति रखते हैं; कभी-कभी मुक्त होने की प्रवृत्ति नहीं रखते। कभी-कभी इनका (परिणामस्वरूप समय) निश्चित होता है; कभी-कभी इनका (परिणामस्वरूप समय) निश्चित नहीं होता। कभी-कभी इन्हें पार किया जा सकता है; कभी-कभी इन्हें पार नहीं किया जा सकता। इनके लिए शोक का कोई कारण नहीं है।
P = पहले के पैराग्राफ में वर्णित दोषों के समान पूर्ण।
(यहाँ समाप्त होता है) पूछताछ
झाना का विश्लेषण समाप्त हुआ।
टिपिटक >> अभिधम्म पिटक >> विभंग >> अध्याय 13 पाठ - अप्पमन्ना
विभंग-विश्लेषण की पुस्तक-गोतम बुद्ध द्वारा बोली गई
पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण
पाली से अनुवादित यू. थिटिला, रंगून, बर्मा, 1969 द्वारा

ओसीआर संस्करण, प्रूफरीडिंग नहीं की गई है, इसमें त्रुटियां हैं
(पाठकों को दिए गए .pdf संस्करण की सहायता से पाठ को सही करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है)

सीएच.13. अपरिमेय का विश्लेषण (अप्पमन्ना सं. अप्रमण्य) (या अनंत)

1. प्रवचनों के अनुसार विश्लेषण

642. [272] चारों असीम — यहाँ एक भिक्षु प्रेममयी मन से एक दिशा में व्याप्त होकर निवास करता है। दूसरी दिशा में भी। तीसरी दिशा में भी। चौथी दिशा में भी। इस प्रकार, ऊपर, नीचे, चारों ओर, हर जगह, स्वयं को सभी के साथ एकाग्र करके, वह प्रेममयी, व्यापक, उदात्त, असीम, शत्रुता रहित, द्वेष रहित मन से समस्त (प्राणियों) के जगत को व्याप्त करता है। वह करुणामयी मन से एक दिशा में व्याप्त होकर निवास करता है। दूसरी दिशा में भी। तीसरी दिशा में भी। चौथी दिशा में भी। इस प्रकार, ऊपर, नीचे, चारों ओर, हर जगह, स्वयं को सभी के साथ एकाग्र करके, वह करुणामयी, व्यापक, उदात्त, असीम, शत्रुता रहित, द्वेष रहित मन से समस्त (प्राणियों) के जगत को व्याप्त करता है। वह सहानुभूतिपूर्ण आनंद से परिपूर्ण मन से एक दिशा में व्याप्त होकर निवास करता है। दूसरी दिशा में भी। तीसरी दिशा में भी। चौथी दिशा में भी। इस प्रकार, ऊपर, नीचे, चारों ओर, हर जगह, सभी के साथ स्वयं को एकसमान करते हुए, वे सभी प्राणियों के संसार को सहानुभूतिपूर्ण आनंद से परिपूर्ण, व्यापक, उदात्त, असीमित, शत्रुता रहित, द्वेष रहित मन से भरते हुए निवास करते हैं। वे समभाव से परिपूर्ण मन से एक दिशा को भरते हुए निवास करते हैं। दूसरी दिशा को भी, तीसरी दिशा को भी, चौथी दिशा को भी। इस प्रकार, ऊपर, नीचे, चारों ओर, हर जगह, सभी के साथ स्वयं को एकसमान करते हुए, वे सभी प्राणियों के संसार को समभाव से परिपूर्ण, व्यापक, उदात्त, असीमित, शत्रुता रहित, द्वेष रहित मन से भरते हुए निवास करते हैं।

1. प्रेमपूर्ण दयालुता (मेट्टा माइंड)

643. और एक भिक्षु प्रेममयी भाव से युक्त मन से कैसे निवास करता है, जो एक दिशा में व्याप्त होता है? जैसे (वह), देखकर, एक सुंदर, मनभावन व्यक्ति से प्रेम करता है; उसी प्रकार वह सभी प्राणियों को प्रेममयी भाव से व्याप्त करता है।

358 विश्लेषण की पुस्तक

इसमें प्रेममयी भावना क्या है? प्राणियों में जो प्रेम है, प्रेममयी भावना का कार्य, प्रेममयी भावना की अवस्था, और वह प्रेममयी भावना जो (द्वेष से) मानसिक मुक्ति है। इसे ही प्रेममयी भावना कहते हैं।

उसमें चेतना क्या है? वह जो चेतना, मन, विचार, हृदय, प्रकाश, मन, मन का आधार, मन की नियंत्रक शक्ति, चेतना, चेतना का समूह, [273] और, उपरोक्त पर निर्भर, मन-चेतना-तत्व है। इसे चेतना कहा जाता है। यह चेतना प्रेम-कृपा के साथ होती है, उससे सह-उत्पन्न होती है, उससे जुड़ी होती है, उससे संबद्ध होती है। इसलिए इसे 'प्रेम-कृपा से ग्रस्त मन' कहा जाता है।

644. 'एक दिशा * का अर्थ है: पूर्वी दिशा या पश्चिमी दिशा या उत्तरी दिशा या दक्षिणी दिशा या ऊपर या नीचे या चारों ओर या मध्यवर्ती दिशा।

645. 'सफ्यूज़िंग* का अर्थ है: पूरी तरह से फैलाना, मुक्त करना।

646. 'निवास करता है* का अर्थ है: चारों मुद्राओं को धारण करता है, अस्तित्व में रहता है, रक्षा करता है, चलता रहता है, बनाए रखता है, घूमता है, निवास करता है। इसलिए इसे 'निवास करता है 3' कहा जाता है।

647. 'दूसरी दिशा* का अर्थ है: एक दिशा के समान दूसरी दिशा; तीसरी दिशा के समान; चौथी दिशा के समान; ऊपर के समान; नीचे के समान; चारों ओर के समान; और एक मध्यवर्ती दिशा के समान।

648. 'सर्वत्र, स्वयं को सभी के साथ पहचानते हुए, सभी (प्राणियों) का संसार* का अर्थ है: अनन्य रूप से, पूरी तरह से, बिना किसी शेष के, पूरी तरह से; यह एक सर्वव्यापी अभिव्यक्ति है 'सर्वत्र, स्वयं को सभी के साथ पहचानते हुए, सभी (प्राणियों) का संसार 3 ।

649. 'मन में प्रेम और करुणा का भाव* का अर्थ है: उसमें प्रेम क्या है? जो प्राणियों में प्रेम है, प्रेम का कार्य है, प्रेम की अवस्था है, प्रेम जो मानसिक स्वतंत्रता है। इसे ही प्रेम कहा जाता है।

उसमें चेतना क्या है? वह जो चेतना, मन, विचार, आदि है, और उपरोक्त के आधार पर, मन-चेतना-तत्व है। इसे चेतना कहते हैं। यह चेतना इसके साथ होती है, इसके साथ सह-उत्पन्न होती है, इसके साथ जुड़ी होती है।

असीमित का विश्लेषण

359

यह प्रेम और करुणा से जुड़ा हुआ है। इसलिए इसे 'प्रेम और करुणा से युक्त मन' कहा जाता है।

P = अनुच्छेद 184 देखें।

650. 'विस्तृत' का अर्थ है: जो विस्तृत है वह उदात्त है; जो उदात्त है वह असीमित है; जो असीमित है वह द्वेष रहित है; जो द्वेष रहित है वह दुर्भावना रहित है।

651. 'सफ्यूजिंग' का अर्थ है: पूरी तरह से फैलाना, मुक्त करना।

652. 'रहता है' का अर्थ है: :P: इसलिए इसे 'रहता है' कहा जाता है।

P = अनुच्छेद 646 देखें।

2. करुणा

653. और एक भिक्षु करुणा से परिपूर्ण मन से कैसे निवास करता है, जो एक दिशा में व्याप्त होता है? जैसे (वह), देखकर, किसी दुखी, दुष्ट व्यक्ति के प्रति करुणा रखता है; उसी प्रकार वह सभी प्राणियों को करुणा से भर देता है।

उसमें करुणा क्या है? प्राणियों में जो करुणा है, करुणामयी होना, करुणामयी अवस्था, करुणा जो (क्रूरता से) मानसिक मुक्ति है। यही करुणा कहलाती है।

उसमें चेतना क्या है? [274] वह जो चेतना, मन, विचार, आदि है, और उपरोक्त पर निर्भर मन-चेतना तत्व है। इसे चेतना कहते हैं। यह चेतना करुणा के साथ होती है, करुणा से जुड़ी होती है, करुणा से संबद्ध होती है। इसलिए इसे 'करुणा से ग्रसित मन' कहा जाता है।

पी देखें पैरा 184.

654. 'एक दिशा' का अर्थ है: पूर्वी दिशा या पश्चिमी दिशा या उत्तरी दिशा या दक्षिणी दिशा या ऊपर या नीचे या चारों ओर या मध्यवर्ती दिशा।

655. 'सफ्यूज़िंग' का अर्थ है: पूरी तरह से फैलाना, मुक्त करना।

656. 'निवास करना' का अर्थ है: चारों मुद्राओं को धारण करना, अस्तित्व में रहना, रक्षा करना, निरंतर चलना, बनाए रखना, घूमना, निवास करना। अतः इसे 'निवास करना' कहा जाता है।

आर

657. 'दूसरी दिशा भी' का अर्थ है: एक दिशा की तरह दूसरी दिशा; तीसरी दिशा की तरह; चौथी दिशा की तरह; ऊपर की ओर; नीचे की ओर; चारों ओर; और एक मध्यवर्ती दिशा में।

658. 'सर्वत्र, स्वयं को सभी के साथ एकसमान करते हुए, समस्त (प्राणियों) का संसार 9 का अर्थ है; अनन्य रूप से, पूर्णतः, बिना किसी शेष के, संपूर्ण रूप से; यह एक सर्वव्यापी अभिव्यक्ति है' सर्वत्र, स्वयं को सभी के साथ एकसमान करते हुए, समस्त (प्राणियों) का संसार

659. 'करुणा से युक्त मन' का अर्थ है: उसमें करुणा क्या है? प्राणियों में जो करुणा है, करुणामयी होना, करुणामयी अवस्था, वह करुणा जो मानसिक स्वतंत्रता है। इसे करुणा कहते हैं।

उसमें चेतना क्या है? वह जो चेतना, मन, विचार आदि है; और उपरोक्त के आधार पर, मन-चेतना तत्व। इसे चेतना कहते हैं। यह चेतना करुणा से जुड़ी हुई है, उससे सह-उत्पन्न है, उससे संबद्ध है। इसलिए इसे 'करुणा से युक्त मन' कहा जाता है।

P = अनुच्छेद 184 देखें।

660. 'विस्तृत' का अर्थ है: जो विस्तृत है वह उदात्त है; जो उदात्त है वह असीमित है; जो असीमित है वह द्वेष रहित है; जो द्वेष रहित है वह दुर्भावना रहित है।

661. 'सफ्यूजिंग' का अर्थ है: पूरी तरह से फैलाना, मुक्त करना।

662. 'रहता है' का अर्थ है: :P: इसलिए इसे 'रहता है' कहा जाता है।

P = अनुच्छेद 656 देखें।

3. सहानुभूतिपूर्ण आनंद

663. और भिक्षु किस प्रकार सहानुभूतिपूर्ण आनंद से परिपूर्ण मन से एक ही दिशा में निवास करता है? जैसे वह किसी सुंदर, मनभावन व्यक्ति को देखकर सहानुभूतिपूर्ण आनंद का अनुभव करता है, उसी प्रकार वह सभी प्राणियों को सहानुभूतिपूर्ण आनंद से भर देता है।

उसमें सहानुभूतिपूर्ण आनंद क्या है? प्राणियों में जो सहानुभूतिपूर्ण आनंद है, सहानुभूतिपूर्ण आनंद की क्रिया है, सहानुभूतिपूर्ण आनंद की अवस्था है, सहानुभूतिपूर्ण आनंद जो मानसिक स्वतंत्रता (ईर्ष्या से मुक्ति) है। इसे सहानुभूतिपूर्ण आनंद कहा जाता है। [275]

असीमित का विश्लेषण

361

इसमें चेतना क्या है? वह जो चेतना, मन, विचार आदि है, और उपरोक्त के आधार पर, मन-चेतना तत्व है। इसे चेतना कहते हैं। यह चेतना इस सहानुभूतिपूर्ण आनंद के साथ होती है, इसके साथ सह-उत्पन्न होती है, इससे जुड़ी होती है, इससे संबद्ध होती है। इसलिए इसे 'सहानुभूतिपूर्ण आनंद से युक्त मन' कहा जाता है।

P = अनुच्छेद 184 देखें।

664. 'एक दिशा' का अर्थ है: पूर्वी दिशा या पश्चिमी दिशा या उत्तरी दिशा या दक्षिणी दिशा या ऊपर या नीचे या चारों ओर या एक मध्यवर्ती दिशा।

665. 'सफ्यूजिंग' का अर्थ है: पूरी तरह से फैलाना, मुक्त करना।

666. 'रहता है' का अर्थ है: :P: इसलिए इसे 'रहता है*' कहा जाता है।

P = अनुच्छेद 656 देखें।

667. 'दूसरी दिशा भी' का अर्थ है: एक दिशा की तरह दूसरी दिशा; तीसरी दिशा; चौथी दिशा; ऊपर; नीचे; चारों ओर; और एक मध्यवर्ती दिशा।

668. 'सर्वत्र, स्वयं को सभी के साथ पहचानते हुए, सभी (प्राणियों) का संसार' का अर्थ है: अनन्य रूप से, पूर्णतः, बिना किसी शेष के, पूरी तरह से; यह एक सर्वव्यापी अभिव्यक्ति है 'सर्वत्र, स्वयं को सभी के साथ पहचानते हुए, सभी (प्राणियों) का संसार*।

669. 'सहानुभूतिपूर्ण आनंद से युक्त मन' का अर्थ है: उसमें सहानुभूतिपूर्ण आनंद क्या है? जो प्राणियों में सहानुभूतिपूर्ण आनंद है, सहानुभूतिपूर्ण आनंद की क्रिया है, सहानुभूतिपूर्ण आनंद की अवस्था है, सहानुभूतिपूर्ण आनंद जो मानसिक स्वतंत्रता है। इसे सहानुभूतिपूर्ण आनंद कहा जाता है।

j°y-

इसमें चेतना क्या है? वह जो चेतना, मन, विचार आदि है, और उपरोक्त के आधार पर, मन-चेतना-तत्व है। इसे चेतना कहते हैं। यह चेतना इस सहानुभूतिपूर्ण आनंद के साथ होती है, इसके साथ सह-उत्पन्न होती है, इससे जुड़ी होती है, इससे संबद्ध होती है। इसलिए इसे 'सहानुभूतिपूर्ण आनंद से ग्रस्त मन' कहा जाता है।

P = अनुच्छेद 184 देखें।

362

विश्लेषण की पुस्तक

670. 'विस्तृत* का अर्थ है: जो विस्तृत है वह उदात्त है; जो उदात्त है वह असीमित है; जो असीमित है वह शत्रुता से रहित है; जो शत्रुता से रहित है वह दुर्भावना से रहित है।

671. 'सफ्यूज़िंग* का अर्थ है: पूरी तरह से फैलाना, मुक्त करना।

672. 'Dwells* का अर्थ है :P: इसलिए इसे 'dwells* कहा जाता है।

P = अनुच्छेद 656 देखें।

4. समभाव

673. और एक भिक्षु समभाव से युक्त मन के साथ कैसे निवास करता है, जो एक ही दिशा में व्याप्त होता है? जैसे वह देखकर किसी ऐसे व्यक्ति के प्रति समभाव रखता है जो न तो सुखद है और न ही अप्रिय; उसी प्रकार वह सभी प्राणियों को समभाव से व्याप्त करता है।

उसमें समभाव क्या है? [276] जो प्राणियों में समभाव है, समभाव का कार्य है, समभाव की अवस्था है, समभाव जो मानसिक स्वतंत्रता (विचलितता से) है। इसे समभाव कहते हैं।

उसमें चेतना क्या है? वह जो चेतना, मन, विचार आदि है, और उपरोक्त के आधार पर, मन-चेतना-तत्व है। इसे चेतना कहते हैं। यह चेतना समभाव के साथ होती है, उससे सह-उत्पन्न होती है, उससे जुड़ी होती है, उससे संबद्ध होती है। इसलिए इसे 'समभाव से ग्रस्त मन' कहा जाता है।

P = अनुच्छेद 184 देखें।

674. 'एक दिशा' का अर्थ है: पूर्वी दिशा या पश्चिमी दिशा या उत्तरी दिशा या दक्षिणी दिशा या ऊपर या नीचे या चारों ओर या मध्यवर्ती दिशा।

675. 'सफ्यूज़िंग* का अर्थ है: पूरी तरह से फैलाना, मुक्त करना।

676. 'रहता है * का अर्थ है : : पी : इसलिए इसे 'रहता है' कहा जाता है।

पी — पैराग्राफ 656 देखें।

677. 'दूसरी दिशा भी' का अर्थ है: एक दिशा की तरह दूसरी दिशा; तीसरी दिशा; चौथी दिशा; ऊपर; नीचे; चारों ओर; और एक मध्यवर्ती दिशा।

असीमितताओं का विश्लेषण

363

678. 'सर्वत्र, स्वयं को सभी के साथ पहचानते हुए, सभी (प्राणियों) का संसार* का अर्थ है: अनन्य रूप से, पूर्णतः, बिना किसी शेष के, पूरी तरह से; यह एक सर्वव्यापी अभिव्यक्ति है 'सर्वत्र, स्वयं को सभी के साथ पहचानते हुए, सभी (प्राणियों) का संसार*।

679. 'समभाव से युक्त मन' का अर्थ है: उसमें समभाव क्या है? जो प्राणियों में समभाव है, समभाव की क्रिया है, समभाव की अवस्था है, वह समभाव है जो मानसिक स्वतंत्रता है। इसे समभाव कहते हैं।

इसमें चेतना क्या है? वह जो चेतना, मन, विचार आदि है, और उपरोक्त के आधार पर, मन-चेतना-तत्व है। इसे चेतना कहते हैं। यह चेतना समभाव के साथ होती है, उससे सह-उत्पन्न होती है, उससे जुड़ी होती है, उससे संबद्ध होती है। इसलिए इसे 'समभाव से युक्त मन' कहा जाता है।

P = अनुच्छेद 184 देखें।

680. 'विस्तृत' का अर्थ है: जो विस्तृत है वह उदात्त है; जो उदात्त है वह असीमित है; जो असीमित है वह शत्रुता रहित है; जो शत्रुता रहित है वह दुर्भावना रहित है।

681. 'सफ्यूज़िंग' का अर्थ है: पूरी तरह से फैलाना, मुक्त करना।

682. 'रहता है' का अर्थ है: ;पी: इसलिए इसे 'रहता है 5' कहा जाता है।

P = अनुच्छेद 656 देखें।

(यहाँ समाप्त होता है) प्रवचनों के अनुसार विश्लेषण।

2. अब्राहम के अनुसार विश्लेषण

683. चार असीम गुण हैं: प्रेम, करुणा, सहानुभूतिपूर्ण आनंद, समभाव।

684. उसमें प्रेम-कृपा क्या है? [277] उसमें, जब कोई भिक्षु रूप-तल में पुनर्जन्म का मार्ग विकसित करता है, तब वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, प्रेम-कृपा से युक्त प्रथम ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय जो कुछ भी है

1

364 विश्लेषण की पुस्तक

प्रेम, दयालुता का कार्य, दयालुता की अवस्था, वह दयालुता जो (द्वेष से) मानसिक मुक्ति है। इसे ही दयालुता कहते हैं। (साथ ही) अन्य अवस्थाएँ भी दयालुता से संबंधित हैं। (1)

P = अनुच्छेद 205 देखें।

इसमें प्रेम-कृपा क्या है? इसमें जब कोई भिक्षु रूप-तल में पुनर्जन्म के मार्ग का विकास करता है, तब वह प्रारंभिक अभ्यास और निरंतर अभ्यास को रोककर, प्रेम-कृपा से युक्त द्वितीय ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय जो प्रेममय होता है, प्रेम-कृपा का कार्य होता है, प्रेम-कृपा की अवस्था होती है, वह प्रेम-कृपा मानसिक स्वतंत्रता होती है। इसे प्रेम-कृपा कहा जाता है। (इसी प्रकार) प्रेम-कृपा से संबंधित शेष अवस्थाएँ भी प्रेम-कृपा कहलाती हैं। (2)

P = अनुच्छेद 205 देखें।

इसमें प्रेम-करुणा क्या है? इसमें जब कोई भिक्षु रूप-तल में पुनर्जन्म के मार्ग का विकास करता है, तब वह इच्छा रहित होकर, प्रेम-करुणा से युक्त तृतीय ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय जो प्रेममय होता है, प्रेम-करुणा का कार्य होता है, प्रेम-करुणा की अवस्था होती है, वह प्रेम-करुणा मानसिक स्वतंत्रता होती है। इसे प्रेम-करुणा कहा जाता है। (इसी प्रकार) प्रेम-करुणा से संबंधित शेष अवस्थाएँ भी प्रेम-करुणा कहलाती हैं। (3)

P = अनुच्छेद 205 देखें।

685. यहाँ जब कोई भिक्षु रूप-तल में पुनर्जन्म के मार्ग का विकास करता है, तब वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, प्रेममयी भाव से युक्त प्रथम ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय जो प्रेममयी होता है, प्रेममयी कर्म होता है, प्रेममयी अवस्था होती है, और जो मानसिक स्वतंत्रता है, उसे प्रेममयी भाव कहते हैं। (इसी प्रकार) प्रेममयी भाव से संबंधित शेष अवस्थाएँ भी प्रेममयी भाव कहलाती हैं। (1) (4)

P = अनुच्छेद 205 देखें।

जब कोई भिक्षु शारीरिक लोक में पुनर्जन्म का मार्ग विकसित करता है, तब वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, बुरी अवस्थाओं से विरक्त होकर, प्रारंभिक साधना के बिना ही, निरंतर साधना से, वैराग्य से उत्पन्न उत्साह और आनंद के साथ, प्रेममयी भाव से प्रेरित होकर, द्वितीय ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय जो प्रेममयी होता है, प्रेममयी कर्म होता है, प्रेममयी अवस्था होती है, प्रेममयी भाव ही मानसिक स्वतंत्रता है। इसे ही कहा जाता है।

असीमित का विश्लेषण

365

प्रेमपूर्ण दया। (साथ ही) प्रेमपूर्ण दया से जुड़ी शेष अवस्थाएँ। (2) (5)

यहाँ जब कोई भिक्षु रूप-तल में पुनर्जन्म के मार्ग का विकास करता है, तब वह प्रारंभिक अभ्यास और निरंतर अभ्यास को रोककर, प्रेममयी तल्लीनता से युक्त तृतीय ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय जो प्रेममयी होता है, प्रेममयी क्रिया होती है, प्रेममयी अवस्था होती है, और जो मानसिक स्वतंत्रता है, उसे प्रेममयी तल्लीनता कहते हैं। (इसी प्रकार) प्रेममयी तल्लीनता से संबंधित शेष अवस्थाएँ भी प्रेममयी तल्लीनता कहलाती हैं। (3) (6)

P = अनुच्छेद 205 देखें।

यहाँ जब कोई भिक्षु रूप के तल में पुनर्जन्म का मार्ग विकसित करता है, तब वह इच्छा रहित होकर, प्रेममयी भाव से युक्त चौथे ध्यान में लीन हो जाता है; उस समय जो प्रेममयी होता है, प्रेममयी कर्म होता है, प्रेममयी अवस्था होती है, और जो मानसिक स्वतंत्रता है, उसे प्रेममयी भाव कहते हैं। (इसी प्रकार) प्रेममयी भाव से संबंधित शेष अवस्थाएँ भी प्रेममयी भाव कहलाती हैं। (4) (7) [278]

P = अनुच्छेद 205 देखें।

686. इसमें करुणा क्या है? इसमें, जब कोई भिक्षु शारीरिक लोक में पुनर्जन्म के मार्ग का विकास करता है, तब वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, करुणा से युक्त प्रथम ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय जो करुणा है, करुणामयी होना है, करुणामयी अवस्था है, करुणा जो मानसिक मुक्ति (क्रूरता से) है। इसे करुणा कहते हैं। (इसी प्रकार) करुणा से संबंधित शेष अवस्थाएँ भी हैं। (1)

P = अनुच्छेद 205 देखें।

इसमें करुणा क्या है? इसमें, जब कोई भिक्षु रूप-तल में पुनर्जन्म के मार्ग का विकास करता है, तब वह प्रारंभिक अभ्यास और निरंतर अभ्यास को रोककर, करुणा से युक्त द्वितीय ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय जो करुणा है, करुणामय होना है, करुणामय अवस्था है, करुणा जो मानसिक स्वतंत्रता है। इसे करुणा कहते हैं। (इसी प्रकार) करुणा से संबंधित शेष अवस्थाएँ भी हैं। (2)

P = अनुच्छेद 205 देखें।

उसमें करुणा क्या है? उसमें, जब एक भिक्षु शारीरिक रूप में पुनर्जन्म का मार्ग विकसित करता है, तब वह...

366

विश्लेषण की पुस्तक

इच्छा रहित, उत्साह से रहित, : पी : करुणा से युक्त तीसरे ध्यान में प्राप्त होता है और निवास करता है; उस समय जो करुणा है, करुणामयी अवस्था है, करुणामयी अवस्था है, वह मानसिक स्वतंत्रता है। इसे करुणा कहते हैं। (इसी प्रकार) करुणा से संबंधित शेष अवस्थाएँ भी हैं। (3)

P = अनुच्छेद 205 देखें।

687. यहाँ जब कोई भिक्षु रूप-तल में पुनर्जन्म के मार्ग का विकास करता है, तब वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, करुणा से युक्त प्रथम ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय जो करुणा है, करुणामयी होना है, करुणामयी अवस्था है, करुणा जो मानसिक स्वतंत्रता है। इसे करुणा कहते हैं। (इसी प्रकार) करुणा से संबंधित शेष अवस्थाएँ भी हैं। (1) (4)

P = अनुच्छेद 205 देखें।

जब कोई भिक्षु शारीरिक लोक में पुनर्जन्म का मार्ग विकसित करता है, तब वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, बुरी अवस्थाओं से विरक्त होकर, प्रारंभिक प्रयास के बिना, केवल निरंतर अभ्यास से, वैराग्य से उत्पन्न उत्साह और आनंद के साथ, करुणा से परिपूर्ण द्वितीय ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय जो करुणा है, करुणामयी होना है, करुणामयी अवस्था है, करुणा है जो मानसिक स्वतंत्रता है। इसे करुणा कहते हैं। (और इसी प्रकार) करुणा से संबंधित अन्य अवस्थाएँ भी करुणा कहलाती हैं।

(2)(5)

यहाँ जब कोई भिक्षु रूप के तल में पुनर्जन्म का मार्ग विकसित करता है, तब वह प्रारंभिक अभ्यास और निरंतर अभ्यास को रोकते हुए, करुणा से युक्त तृतीय ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय जो करुणा है, करुणामय होना है, करुणामय अवस्था है, करुणा जो मानसिक स्वतंत्रता है। इसे करुणा कहा जाता है। (इसी प्रकार) करुणा से संबंधित शेष अवस्थाएँ भी हैं। (3) (6)

P = अनुच्छेद 205 देखें।

जब कोई भिक्षु शारीरिक लोक में पुनर्जन्म का मार्ग विकसित करता है, तब वह इच्छा रहित होकर, करुणा से परिपूर्ण चौथे ध्यान में लीन हो जाता है; उस समय जो करुणा है, करुणामयी होना है, करुणामयी अवस्था है, वह मानसिक स्वतंत्रता है। इसे ही कहा जाता है।

IUimitables 367 का विश्लेषण

करुणा। (साथ ही) करुणा से संबंधित शेष अवस्थाएँ। (4) (7)

P = अनुच्छेद 205 देखें।

688. इसमें सहानुभूतिपूर्ण आनंद क्या है? इसमें, जब कोई भिक्षु रूप-तल में पुनर्जन्म के मार्ग का विकास करता है, तब वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, सहानुभूतिपूर्ण आनंद से युक्त प्रथम ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय जो सहानुभूतिपूर्ण आनंद है, सहानुभूतिपूर्ण आनंद की क्रिया है, सहानुभूतिपूर्ण आनंद की अवस्था है, सहानुभूतिपूर्ण आनंद जो मानसिक मुक्ति (ईर्ष्या से मुक्ति) है। इसे सहानुभूतिपूर्ण आनंद कहा जाता है। (इसी प्रकार) शेष अवस्थाएँ भी सहानुभूतिपूर्ण आनंद से संबंधित हैं। (1)

P = अनुच्छेद 205 देखें।

इसमें सहानुभूतिपूर्ण आनंद क्या है? इसमें, जब कोई भिक्षु रूप-तल में पुनर्जन्म के मार्ग का विकास करता है, तो वह प्रारंभिक अभ्यास और निरंतर अभ्यास को रोककर, सहानुभूतिपूर्ण आनंद से युक्त द्वितीय ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय जो सहानुभूतिपूर्ण आनंद है, सहानुभूतिपूर्ण आनंद की क्रिया है, सहानुभूतिपूर्ण आनंद की अवस्था है, वह मानसिक स्वतंत्रता है। इसे सहानुभूतिपूर्ण आनंद कहा जाता है। (इसी प्रकार) शेष अवस्थाएँ भी सहानुभूतिपूर्ण आनंद से संबंधित हैं। (2)

P = अनुच्छेद 205 देखें।

इसमें सहानुभूतिपूर्ण आनंद क्या है? इसमें, जब कोई भिक्षु रूप-तल में पुनर्जन्म के मार्ग का विकास करता है, तब वह इच्छा रहित होकर, सहानुभूतिपूर्ण आनंद से युक्त तृतीय ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय जो सहानुभूतिपूर्ण आनंद है, सहानुभूतिपूर्ण आनंद की क्रिया है, सहानुभूतिपूर्ण आनंद की अवस्था है, वह मानसिक स्वतंत्रता है। इसे सहानुभूतिपूर्ण आनंद कहा जाता है। (इसी प्रकार) शेष अवस्थाएँ भी सहानुभूतिपूर्ण आनंद से संबंधित हैं। (3)

P = अनुच्छेद 205 देखें।

689. यहाँ जब कोई भिक्षु रूप-तल में पुनर्जन्म के मार्ग का विकास करता है, तब वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, सहानुभूतिपूर्ण आनंद से युक्त प्रथम ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय जो सहानुभूतिपूर्ण आनंद होता है, सहानुभूतिपूर्ण आनंद की क्रिया होती है, सहानुभूतिपूर्ण आनंद की अवस्था होती है, वह सहानुभूतिपूर्ण आनंद है जो मानसिक स्वतंत्रता है। इसे सहानुभूतिपूर्ण आनंद कहा जाता है। (इसी प्रकार) शेष अवस्थाएँ भी सहानुभूतिपूर्ण आनंद से संबंधित हैं। (1) (4)

P = अनुच्छेद 205 देखें।

368

यहाँ जब कोई भिक्षु रूपलोक में पुनर्जन्म का मार्ग विकसित करता है, तब वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, बुरी अवस्थाओं से विरक्त होकर, प्रारंभिक परिश्रम के बिना, केवल निरंतर परिश्रम से, वैराग्य से उत्पन्न उत्साह और आनंद के साथ, सहानुभूतिपूर्ण आनंद से युक्त द्वितीय ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय जो सहानुभूतिपूर्ण आनंद होता है, सहानुभूतिपूर्ण आनंद का कार्य होता है, सहानुभूतिपूर्ण आनंद की अवस्था होती है, वह मानसिक स्वतंत्रता है। इसे सहानुभूतिपूर्ण आनंद कहा जाता है। (इसी प्रकार) सहानुभूतिपूर्ण आनंद से संबंधित शेष अवस्थाएँ भी सहानुभूतिपूर्ण आनंद कहलाती हैं। (2) (5)

यहाँ जब कोई भिक्षु रूप के तल में पुनर्जन्म का मार्ग विकसित करता है, तो वह प्रारंभिक अभ्यास और निरंतर अभ्यास को रोककर, तीसरे ध्यान में समभाविक आनंद के साथ निवास करता है; उस समय जो समभाविक आनंद होता है, समभाविक आनंद की क्रिया होती है, समभाविक आनंद की अवस्था होती है, वह मानसिक स्वतंत्रता है। इसे समभाविक आनंद कहा जाता है। (इसी प्रकार) शेष अवस्थाएँ भी समभाविक आनंद से संबंधित हैं। (3) (6)

P = अनुच्छेद 205 देखें।

यहाँ जब कोई भिक्षु रूप-तल में पुनर्जन्म का मार्ग विकसित करता है, तब वह इच्छा रहित होकर, चौथे ध्यान में समभाविक आनंद के साथ निवास करता है; उस समय जो समभाविक आनंद होता है, समभाविक आनंद की क्रिया होती है, समभाविक आनंद की अवस्था होती है, वही मानसिक स्वतंत्रता है। इसे समभाविक आनंद कहते हैं। (इसी प्रकार) शेष अवस्थाएँ भी समभाविक आनंद से संबंधित हैं। (4) (7)

P = अनुच्छेद 205 देखें।

690. इसमें समभाव क्या है? इसमें, जब कोई भिक्षु रूप-तल में पुनर्जन्म के मार्ग का विकास करता है, तब वह सुख का त्याग करके चौथे ध्यान में समभाव से युक्त अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय जो समभाव है, समभाव की क्रिया है, समभाव की अवस्था है, वह मानसिक स्वतंत्रता (विचलितता से मुक्ति) है। इसे समभाव कहते हैं। (इसी प्रकार) समभाव से संबंधित शेष अवस्थाएँ भी हैं।

P = अनुच्छेद 205 देखें।

691. चार असीम गुण हैं: प्रेम, करुणा, सहानुभूतिपूर्ण आनंद, समभाव।

692. इसमें प्रेम और दया क्या है? इसमें उस समय जब एक

369

भिक्षु रूप के तल में पुनर्जन्म का मार्ग विकसित करता है, वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, प्रेममयी भाव से युक्त प्रथम ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय संपर्क होता है।

पृष्ठ 2: स्थिरता है। ये अवस्थाएँ अच्छी हैं। ऐसा करने के बाद,
रूपिक तल के समान अच्छे कर्मों का संचय करके, वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, प्रेममयी भाव से युक्त प्रथम ध्यान में लीन हो जाता है; उस समय जो प्रेममयी होता है, प्रेममयी कर्म होता है, प्रेममयी अवस्था होती है, और जो प्रेममयी भाव दुर्भावना से मुक्त होता है, उसे ही प्रेममयी भाव कहते हैं। (इसी प्रकार) प्रेममयी भाव से संबंधित अन्य अवस्थाएँ भी प्रेममयी भाव कहलाती हैं।

पीजे = पैरा देखें। 205. पी 2 = ध्स देखें। पैरा. 1.

इसमें प्रेम-कृपा क्या है? इसमें जब कोई भिक्षु रूप-तल में पुनर्जन्म का मार्ग विकसित करता है, तो वह प्रारंभिक और निरंतर अभ्यास को रोकते हुए, प्रेम-कृपा से युक्त द्वितीय [280] ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय संपर्क होता है, अविचल होता है। ये अवस्थाएँ अच्छी हैं। रूप-तल के समान अच्छे कर्म को करने और संचित करने के बाद, वह प्रारंभिक और निरंतर अभ्यास को रोकते हुए, परिणामी द्वितीय ध्यान अवस्था प्राप्त करता है। तृतीय ध्यान अवस्था प्राप्त करता है। प्रथम ध्यान अवस्था प्राप्त करता है। द्वितीय ध्यान अवस्था प्राप्त करता है। तृतीय ध्यान अवस्था प्राप्त करता है। प्रेम-कृपा से युक्त चतुर्थ ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; जो उस समय प्रेममय होता है, प्रेम-कृपा का कार्य होता है, प्रेम-कृपा की अवस्था होती है, प्रेम-कृपा वह मानसिक स्वतंत्रता होती है। इसे प्रेममय दया कहा जाता है। (साथ ही) प्रेममय दया से जुड़ी अन्य अवस्थाएँ भी इसी प्रकार हैं।

पी एल = पैरा देखें। 205. पी 2 = ध्स देखें। पैरा. 1.

पृष्ठ 3 = प्रत्येक को प्रथम ध्यान, अनुच्छेद 692 के सामान्य रूप में पूरा करें, लेकिन उचित संशोधनों के साथ।

693. उसमें करुणा क्या है? उसमें, जब कोई भिक्षु रूप-तल में पुनर्जन्म का मार्ग विकसित करता है, तब वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, करुणा से युक्त प्रथम ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय संपर्क होता है।

पृष्ठ 2: स्थिरता है। ये अवस्थाएँ अच्छी हैं। ऐसा करने के बाद,
रूप के तल के अनुरूप उसी अच्छे कर्म को संचित करके, वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, करुणा से युक्त परिणामी प्रथम ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय जो करुणा है, करुणामय होकर, वह उस अवस्था में पहुँच जाता है।

370

विश्लेषण की पुस्तक

करुणामय होना, वह करुणा जो (क्रूरता से) मानसिक मुक्ति है। इसे करुणा कहते हैं। (साथ ही) करुणा से जुड़ी अन्य अवस्थाएँ भी करुणा कहलाती हैं।

पी 1 - पैरा देखें। 205. पी 2 = ध्स देखें। पैरा. 1.

इसमें करुणा क्या है? इसमें जब कोई भिक्षु रूप-तल में पुनर्जन्म का मार्ग विकसित करता है, तो वह प्रारंभिक और निरंतर अभ्यास को रोकते हुए, करुणा से युक्त द्वितीय ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय संपर्क होता है, अविचल अवस्था होती है। ये अवस्थाएँ अच्छी हैं। रूप-तल के समान अच्छे कर्मों को करने और संचित करने के बाद, वह प्रारंभिक और निरंतर अभ्यास को रोकते हुए, परिणामी द्वितीय ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है। तृतीय ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है। प्रथम ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है। द्वितीय ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है। तृतीय ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और करुणा से युक्त चतुर्थ ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है; जो उस समय करुणा है, करुणामयी अवस्था है, करुणामयी अवस्था है, करुणा जो मानसिक स्वतंत्रता है। इसे करुणा कहते हैं। (इसी प्रकार) करुणा से संबंधित शेष अवस्थाएँ भी हैं। [281]

पी 1 = पैरा देखें। 205. पी 2 = ध्स देखें। पैरा. 1.

पृष्ठ 3 = प्रत्येक को प्रथम ध्यान, अनुच्छेद 693 के सामान्य रूप में पूरा करें, लेकिन उचित संशोधनों के साथ।

694. इसमें सहानुभूतिपूर्ण आनंद क्या है? इसमें जब कोई भिक्षु रूपलोक में पुनर्जन्म का मार्ग विकसित करता है, तब वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, सहानुभूतिपूर्ण आनंद से युक्त प्रथम ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय संपर्क होता है, अविचल होता है। ये अवस्थाएँ अच्छी हैं। रूपलोक के समान अच्छे कर्म को करने और संचित करने के बाद, वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, सहानुभूतिपूर्ण आनंद से युक्त परिणामी प्रथम ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय जो सहानुभूतिपूर्ण आनंद है, सहानुभूतिपूर्ण आनंद का कर्म है, सहानुभूतिपूर्ण आनंद की अवस्था है, वह सहानुभूतिपूर्ण आनंद है जो मानसिक मुक्ति (ईर्ष्या से) है। इसे सहानुभूतिपूर्ण आनंद कहा जाता है। (इसी प्रकार) शेष अवस्थाएँ भी सहानुभूतिपूर्ण आनंद से संबंधित हैं।

पी^पैरा देखें. 205. पी 2 = ध्स देखें। पैरा. 1.

इसमें सहानुभूतिपूर्ण आनंद क्या है? इसमें जब कोई भिक्षु रूप के तल पर पुनर्जन्म का मार्ग विकसित करता है, तब वह प्रारंभिक अभ्यास और निरंतर अभ्यास को रोकते हुए, सहानुभूतिपूर्ण आनंद से युक्त द्वितीय ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय संपर्क होता है, और अविचलितता होती है।

असीमित का विश्लेषण

371

अवस्थाएँ अच्छी हैं। उसी अच्छे कर्म को करने और संचित करने के बाद, जो रूप के तल की विशेषता है, वह प्रारंभिक और निरंतर अभ्यास को रोकते हुए, परिणामी द्वितीय ध्यान में प्रवेश करता है। फिर तृतीय ध्यान में प्रवेश करता है। प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है। द्वितीय ध्यान में प्रवेश करता है। तृतीय ध्यान में प्रवेश करता है। चौथे ध्यान में सहानुभूतिपूर्ण आनंद के साथ निवास करता है; उस समय जो सहानुभूतिपूर्ण आनंद है, सहानुभूतिपूर्ण आनंद का कार्य है, सहानुभूतिपूर्ण आनंद की अवस्था है, वह सहानुभूतिपूर्ण आनंद है जो मानसिक स्वतंत्रता है। इसे सहानुभूतिपूर्ण आनंद कहा जाता है। (इसी प्रकार) शेष अवस्थाएँ भी सहानुभूतिपूर्ण आनंद से जुड़ी हैं।

पी^पैरा देखें. 205. पी 2 = ध्स देखें। पैरा. 1.

पृष्ठ 3 — प्रत्येक को प्रथम ध्यान, अनुच्छेद 694 के सामान्य रूप में पूरा करें, लेकिन उचित संशोधनों के साथ।

695. इसमें समभाव क्या है? इसमें जब कोई भिक्षु रूपलोक में पुनर्जन्म का मार्ग विकसित करता है, तब वह सुख का त्याग करके समभाव से युक्त चौथे ध्यान में लीन होता है; उस समय समभाव होता है; उस समय स्थिरता होती है; ये अवस्थाएँ अच्छी हैं। रूपलोक के समान अच्छे कर्म करने और संचित करने के बाद, वह सुख और दुख का त्याग करके समभाव से युक्त परिणामी चौथे ध्यान में लीन होता है; उस समय जो समभाव होता है, समभाव का कर्म होता है, समभाव की अवस्था होती है, वह मानसिक स्वतंत्रता है। इसे समभाव कहते हैं। (इसी प्रकार) समभाव से संबंधित शेष अवस्थाएँ भी हैं।

पी^पैरा देखें. 205. पी 2 = ध्स देखें। पैरा. 1.

696. चार असीम गुण हैं: प्रेम, करुणा, सहानुभूतिपूर्ण आनंद, समभाव।

697. इसमें प्रेम-कृपा क्या है? इसमें उस समय जब कोई भिक्षु रूप के तल के विशिष्ट ध्यान को विकसित करता है, जो निष्क्रिय है, न अच्छा है, न बुरा है, न ही कर्म का परिणाम है, (जो) वर्तमान जीवन में सुखद जीवन का कारण है, वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, प्रेम-कृपा से युक्त प्रथम ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; [282] उस समय जो प्रेमपूर्ण है, प्रेम-कृपा का कार्य है, प्रेम-कृपा की अवस्था है, प्रेम-कृपा जो (द्वेष से) मानसिक मुक्ति है। इसे प्रेम-कृपा कहा जाता है। (इसी प्रकार) प्रेम-कृपा से संबंधित शेष अवस्थाएँ भी हैं।

P = अनुच्छेद 205 देखें।

i5 +

372

विश्लेषण की पुस्तक

इसमें प्रेम-कृपा क्या है? इसमें उस समय जब एक भिक्षु रूप के तल की विशेषता वाले ध्यान को विकसित करता है, जो निष्क्रिय है, न अच्छा है, न बुरा है, न ही कर्म का परिणाम है, (यह) वर्तमान अस्तित्व में सुखद जीवन का कारण है, वह प्रारंभिक अभ्यास और निरंतर अभ्यास को रोकते हुए, द्वितीय ध्यान।

पृष्ठ 2: तीसरा ध्यान। पृष्ठ 2: पहला ध्यान। पृष्ठ 2: दूसरा ध्यान। पृष्ठ 2: तीसरा
ध्यान: पृष्ठ 2: प्रेममयी भाव से युक्त चौथे ध्यान में प्राप्त होकर निवास करता है; उस समय जो प्रेममयी हो, प्रेममयी भाव, प्रेममयी अवस्था, वह प्रेममयी भाव जो मानसिक स्वतंत्रता है। इसे प्रेममयी भाव कहते हैं। (साथ ही) प्रेममयी भाव से जुड़ी शेष अवस्थाएँ भी इसी प्रकार हैं।

पृष्ठ 1 = पैराग्राफ 205 देखें।

पृष्ठ 2 = प्रत्येक को प्रथम ध्यान, अनुच्छेद 697 के सामान्य रूप में पूरा करें, लेकिन उचित संशोधनों के साथ।

698. इसमें करुणा क्या है? इसमें सहानुभूतिपूर्ण आनंद क्या है? इसमें समभाव क्या है? जब कोई भिक्षु रूप के तल से संबंधित ध्यान विकसित करता है, जो निष्क्रिय है, न अच्छा है, न बुरा है, न ही कर्म का परिणाम है, (और यही) वर्तमान जीवन में सुखद जीवन का कारण है, तब वह सुख और दुख का त्याग करके, समभाव से युक्त चौथे ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय जो समभाव है, समभाव का कार्य है, समभाव की अवस्था है, वह मानसिक स्वतंत्रता है। इसे समभाव कहते हैं। (इसी प्रकार) समभाव से संबंधित शेष अवस्थाएँ भी हैं।

पृष्ठ 1 — अनुच्छेद 697 के समान, उचित संशोधनों के साथ।

पृष्ठ 2 = पैराग्राफ 205 देखें।

(यहाँ समाप्त होता है) अभिधम्म के अनुसार विश्लेषण

2. पूछताछ

699. चार असीम तत्व इस प्रकार हैं: यहाँ एक भिक्षु प्रेममयी मन से निवास करता है, एक दिशा में व्याप्त रहता है। दूसरी दिशा में भी। तीसरी दिशा में भी। चौथी दिशा में भी। इस प्रकार, ऊपर, नीचे, चारों ओर, हर जगह, स्वयं को सभी के साथ एकाग्र करते हुए, वह प्रेममयी, विस्तृत, उदात्त, असीम मन से समस्त (प्राणियों) के संसार को व्याप्त करता है।

असीमितताओं का विश्लेषण

373

वह द्वेष और दुर्भावना से मुक्त हैं। वे करुणा से परिपूर्ण मन से निवास करते हैं, एक दिशा में व्याप्त रहते हैं। दूसरी दिशा में भी, तीसरी दिशा में भी, चौथी दिशा में भी। इस प्रकार, ऊपर, नीचे, चारों ओर, हर जगह, सभी के साथ स्वयं को एकरूप करते हुए, वे करुणा से परिपूर्ण, व्यापक, उदात्त, असीमित, द्वेष और दुर्भावना से मुक्त मन से समस्त प्राणियों के जगत को व्याप्त करते हुए निवास करते हैं। वे सहानुभूतिपूर्ण आनंद से परिपूर्ण मन से निवास करते हैं, एक दिशा में व्याप्त रहते हैं। दूसरी दिशा में भी, तीसरी दिशा में भी, चौथी दिशा में भी। इस प्रकार, ऊपर, नीचे, चारों ओर, हर जगह, सभी के साथ स्वयं को एकरूप करते हुए, वे सहानुभूतिपूर्ण आनंद से परिपूर्ण, व्यापक, उदात्त, असीमित, द्वेष और दुर्भावना से मुक्त मन से समस्त प्राणियों के जगत को व्याप्त करते हुए निवास करते हैं। वे समभाव से परिपूर्ण मन से निवास करते हैं, एक दिशा में व्याप्त रहते हैं। दूसरी दिशा में भी, तीसरी दिशा में भी, चौथी दिशा में भी। इस प्रकार, ऊपर, नीचे, चारों ओर, हर जगह, स्वयं को सभी के साथ एकरूप करते हुए, वह समभाव से परिपूर्ण, व्यापक, उदात्त, असीमित, द्वेष रहित, दुर्भावना रहित मन से समस्त (प्राणियों) के संसार को व्याप्त करते हुए निवास करता है।

700. चार असीम तत्वों में से कितने अच्छे हैं; कितने बुरे हैं; कितने न अच्छे हैं न बुरे? ;P: कितने विलाप करने योग्य हैं; कितने विलाप न करने योग्य हैं? [283]

P = शेष उपयुक्त त्रिक और युग्मक।

1. त्रिक

701. (चार असीम) कभी अच्छे होते हैं; कभी न अच्छे होते हैं न बुरे। तीन असीम सुखद भावों से जुड़े होते हैं। समभाव न कष्टदायक होता है न सुखद। (चार असीम) कभी परिणाम होते हैं; कभी परिणाम उत्पन्न करते हैं; कभी न परिणाम होते हैं और न परिणाम उत्पन्न करते हैं। कभी (लालसा और भ्रामक दृष्टि से) बोधित होते हैं, आसक्तियों के विषय होते हैं; कभी बोधित नहीं होते, आसक्तियों के विषय होते हैं। न तो भ्रष्ट होते हैं, न भ्रष्टियों के विषय होते हैं। तीन असीम कभी प्रारंभिक अभ्यास के साथ होते हैं, कभी निरंतर अभ्यास के साथ; कभी प्रारंभिक अभ्यास के बिना, केवल निरंतर अभ्यास के साथ; कभी प्रारंभिक अभ्यास के बिना, निरंतर अभ्यास के बिना। समभाव प्रारंभिक अभ्यास के बिना, निरंतर अभ्यास के बिना होता है। तीन असीम कभी होते हैं

374

विश्लेषण की पुस्तक

उत्साह से परिपूर्ण; कभी-कभी आनंद से परिपूर्ण; समभाव से परिपूर्ण नहीं; कभी-कभी उत्साह से परिपूर्ण नहीं कहा जा सकता। समभाव समभाव से परिपूर्ण होता है। (चार असीम) न तो प्रथम मार्ग से और न ही पश्चात मार्गों से परित्याग किए जा सकते हैं। प्रथम मार्ग या पश्चात मार्गों से परित्याग किए जाने योग्य कोई मूल नहीं हैं। कभी-कभी संचयी (पुनर्जन्म और मृत्यु के निरंतर चक्र में) होते हैं; कभी-कभी न तो संचयी और न ही विक्षेपी। न तो सात अलौकिक अवस्थाओं में से हैं और न ही अंतिम अलौकिक अवस्था में। उदात्त हैं। निम्न, उदात्त या असीम वस्तुओं से परिपूर्ण नहीं कहा जा सकता। मध्यवर्ती हैं। कोई निश्चित (परिणामी समय) नहीं है। पथ को अपना लक्ष्य, पथ को अपना कारण या पथ को अपना प्रमुख कारक नहीं कहा जा सकता। कभी-कभी उदय होते हैं; कभी-कभी उदय नहीं होते; कभी-कभी उदय होना अनिवार्य है। कभी-कभी भूतकाल होते हैं; कभी-कभी भविष्यकाल होते हैं; कभी-कभी वर्तमानकाल होते हैं। भूतकाल वस्तुओं से परिपूर्ण नहीं कहा जा सकता; भविष्य की वस्तुएँ या वर्तमान वस्तुएँ। कभी आंतरिक होती हैं; कभी बाह्य होती हैं; कभी आंतरिक और बाह्य दोनों होती हैं। बाह्य वस्तुएँ होती हैं। अदृश्य होती हैं, प्रभाव नहीं डालतीं।

2. दोहे

702. प्रेम और करुणा मूल है। तीन असीम तत्व मूल नहीं हैं। (चार असीम तत्व) मूलों के साथ होते हैं। मूलों से जुड़े होते हैं। प्रेम और करुणा मूल हैं और मूलों के साथ भी होते हैं। तीन असीम तत्वों को मूल नहीं कहा जाना चाहिए; वे मूलों के साथ होते हैं लेकिन मूल नहीं हैं। प्रेम और करुणा मूल हैं और मूलों से भी जुड़े होते हैं। तीन असीम तत्वों को मूल नहीं कहा जाना चाहिए; वे मूलों से जुड़े होते हैं लेकिन मूल नहीं हैं। तीन असीम तत्व मूल नहीं हैं, लेकिन मूलों के साथ होते हैं। प्रेम और करुणा को मूल नहीं कहा जाना चाहिए, जो मूलों के साथ होता है या मूल नहीं है, जो मूलों के साथ नहीं होता है।

(चार असीम तत्व) कारण सहित हैं। बद्ध हैं। अदृश्य हैं। अप्रभावित हैं। भौतिक नहीं हैं। सांसारिक हैं। एक मार्ग से ज्ञात किए जा सकते हैं; दूसरे मार्ग से ज्ञात नहीं किए जा सकते। अशुद्धियाँ नहीं हैं। अशुद्धियों के विषय हैं। अशुद्धियों से संबद्ध नहीं हैं। यह नहीं कहा जाना चाहिए कि अशुद्धियाँ भी अशुद्धियों के विषय हैं; (वे) अशुद्धियों के विषय हैं।

असीमित का विश्लेषण

375

अशुद्धियाँ हैं, पर अशुद्धियाँ नहीं हैं। ऐसा नहीं कहा जाना चाहिए, [284] अशुद्धियाँ भी अशुद्धियों से जुड़ी हैं या अशुद्धियों से जुड़ी हैं, पर अशुद्धियाँ नहीं हैं। अशुद्धियों से जुड़ी नहीं हैं, अशुद्धियों की वस्तुएँ हैं।

(चार असीम) बंधन नहीं हैं। बंधन नहीं हैं। बाढ़ नहीं हैं। बंधन नहीं हैं। बाधाएँ नहीं हैं। विकृतियाँ नहीं हैं। इनके विषय होते हैं। ये चेतना नहीं हैं। ये मानसिक सहवर्ती हैं। ये चेतना से जुड़े हैं। ये चेतना से मिश्रित हैं। ये चेतना द्वारा उत्पन्न होते हैं। ये चेतना के साथ सह-अस्तित्व में हैं। ये चेतना के साथ रहते हैं। ये चेतना से मिश्रित हैं, चेतना द्वारा उत्पन्न हैं। ये चेतना से मिश्रित हैं, चेतना द्वारा उत्पन्न हैं और चेतना के साथ सह-अस्तित्व में हैं। ये चेतना से मिश्रित हैं, चेतना द्वारा उत्पन्न हैं और चेतना के साथ रहते हैं। ये बाह्य हैं। ये व्युत्पन्न नहीं हैं। कभी-कभी इन्हें समझा जा सकता है; कभी-कभी नहीं समझा जा सकता।

P = पिछले पैराग्राफ में वर्णित अपवित्रताओं के अनुसार पूर्ण।

(चार असीम) आसक्ति नहीं हैं। :P: भ्रष्टता नहीं हैं। :P: प्रथम मार्ग द्वारा त्यागे जाने योग्य नहीं हैं। अनुवर्ती मार्गों द्वारा त्यागे जाने योग्य नहीं हैं। प्रथम मार्ग द्वारा त्यागे जाने योग्य कोई मूल नहीं हैं। अनुवर्ती मार्गों द्वारा त्यागे जाने योग्य कोई मूल नहीं हैं। तीन असीम कभी-कभी प्रारंभिक अभ्यास के साथ होते हैं; कभी-कभी प्रारंभिक अभ्यास के बिना होते हैं। समभाव प्रारंभिक अभ्यास के बिना है। तीन असीम कभी-कभी निरंतर अभ्यास के साथ होते हैं; कभी-कभी निरंतर अभ्यास के बिना होते हैं। समभाव निरंतर अभ्यास के बिना है। तीन असीम कभी-कभी उत्साह के साथ होते हैं; कभी-कभी उत्साह के बिना होते हैं। समभाव उत्साह के बिना है। तीन असीम कभी-कभी उत्साह के साथ होते हैं; कभी-कभी उत्साह के साथ नहीं होते हैं। समभाव उत्साह के साथ नहीं है। तीन असीम आनंद के साथ होते हैं। समभाव आनंद के साथ नहीं है। समभाव समभाव के साथ है। तीन असीम तत्व समभाव के साथ नहीं होते। (चार असीम तत्व) इच्छा के तल के लक्षण नहीं हैं। वे रूप के तल के लक्षण हैं। वे निराकार तल के लक्षण नहीं हैं। वे समाहित हैं (अर्थात सांसारिक हैं)। वे मुक्ति की प्रवृत्ति नहीं रखते। उनका कोई निश्चित (परिणामस्वरूप) समय नहीं है। वे पार किए जा सकते हैं। वे शोक का कारण नहीं हैं।

P = पहले के पैराग्राफ में वर्णित दोषों के समान पूर्ण।

(यहाँ समाप्त होता है) पूछताछ

असीमितताओं का विश्लेषण समाप्त हुआ।
टिपिटक >> अभिधम्म पिटक >> विभंग >> अध्याय 14 पाठ - सिक्खपाद
विभंग-विश्लेषण की पुस्तक-गोतम बुद्ध द्वारा बोली गई
पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण
पाली से यू. थिटिला, रंगून, बर्मा, 1969 द्वारा अनुवादित

ओसीआर संस्करण, प्रूफरीडिंग नहीं की गई है, इसमें त्रुटियां हैं
(पाठकों को दिए गए .pdf संस्करण की सहायता से पाठ को सही करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है)

सीएच.14. उपदेशों का विश्लेषण (सिक्खपाद सं. शैक्ष्यपाद या शिष्य-)

1. अभिधम्म के अनुसार विश्लेषण

703. [285] पाँच नियम ये हैं: — प्राणियों की हत्या से परहेज़ करने का नियम; जो नहीं दिया गया है उसे लेने से परहेज़ करने का नियम; यौन दुराचार से परहेज़ करने का नियम; झूठी वाणी से परहेज़ करने का नियम; मादक बियर, शराब और स्पिरिट से परहेज़ करने का नियम जो असावधानी पैदा करते हैं।

704. इसमें प्राणियों की हत्या से परहेज करने का उपदेश क्या है? जब प्राणियों की हत्या से परहेज करने वाले व्यक्ति में, ज्ञान से युक्त मानसिक सुख के साथ, इच्छा के तल की विशेषता वाली अच्छी चेतना उत्पन्न होती है; उस समय जो प्राणियों की हत्या से बचना, उससे दूर रहना, उससे परहेज करना, उसे न करना, उससे निर्दोष होना, उसकी सीमा का उल्लंघन न करना और प्राणियों की हत्या के कारण को नष्ट करना है। इसे प्राणियों की हत्या से परहेज करने का उपदेश कहा जाता है। (इसी प्रकार) परहेज से संबंधित शेष अवस्थाएँ भी हैं।

उसमें प्राणियों की हत्या न करने का उपदेश क्या है? जब प्राणियों की हत्या न करने वाले व्यक्ति में इच्छा के तल की विशेषता वाली अच्छी चेतना, ज्ञान से युक्त मानसिक सुख के साथ उत्पन्न होती है; उस समय जो इच्छाशक्ति होती है, इच्छाशक्ति की अवस्था होती है, वही प्राणियों की हत्या न करने का उपदेश कहलाता है। (और इसी प्रकार) इच्छाशक्ति से संबंधित शेष अवस्थाएँ भी हैं।

उसमें प्राणियों की हत्या न करने का उपदेश क्या है? जब प्राणियों की हत्या न करने वाले व्यक्ति में, इच्छा के तल के अनुरूप उत्तम चेतना, ज्ञान से युक्त मानसिक सुख उत्पन्न होती है; उस समय जो सन्निकटन, प्रयास और अविचल होता है, वही प्राणियों की हत्या न करने का उपदेश कहलाता है।

P = देखें Dhs. पैरा 1.

उसमें वह कौन सा नियम है जो प्राणियों की हत्या से परहेज़ करने का उपदेश है? उस समय जब प्राणियों की हत्या से परहेज़ करने वाले व्यक्ति में, इच्छा के तल की विशेषता वाली अच्छी चेतना, ज्ञान से जुड़े मानसिक सुख और प्रेरणा के साथ उत्पन्न होती है। :P: ज्ञान से रहित मानसिक सुख के साथ। :P: [286] ज्ञान से रहित मानसिक सुख और प्रेरणा के साथ। :P: ज्ञान से जुड़ी उदासीनता के साथ। :P: ज्ञान से जुड़ी उदासीनता के साथ। :P: ज्ञान से रहित उदासीनता के साथ। :P: ज्ञान से रहित उदासीनता के साथ; प्रेरणा के साथ; जो उस समय प्राणियों की हत्या से बचना, उससे दूर रहना, उससे परहेज़ करना, उससे परहेज़ करना, उसे न करना, उससे निर्दोष होना, उसकी सीमा का उल्लंघन न करना और प्राणियों की हत्या के कारण को नष्ट करना है। इसे प्राणियों की हत्या न करने का नियम कहा जाता है। (और इसी प्रकार) शेष अवस्थाएँ भी इसी नियम से संबंधित हैं।

P = प्रत्येक को इस पैराग्राफ के समान परिचयात्मक और समापन अनुभागों के साथ पढ़ा जाना चाहिए।

705. उसमें प्राणियों की हत्या न करने का उपदेश क्या है? जब प्राणियों की हत्या न करने वाले व्यक्ति में इच्छा के तल की विशेषता वाली अच्छी चेतना, उदासीनता के साथ, ज्ञान या प्रेरणा से रहित अवस्था में उत्पन्न होती है; उस समय जो इच्छाशक्ति होती है, इच्छाशक्ति की अवस्था होती है, वही प्राणियों की हत्या न करने का उपदेश कहलाता है। (इसी प्रकार) इच्छाशक्ति से संबंधित शेष अवस्थाएँ भी हैं।

इसमें प्राणियों की हत्या न करने का उपदेश क्या है? जब प्राणियों की हत्या न करने वाले व्यक्ति में, इच्छा के तल के अनुरूप उत्तम चेतना उत्पन्न होती है, जो ज्ञान और उत्तेजना से रहित, उदासीनता से परिपूर्ण होती है; तब संपर्क, प्रयास और अविचलितता का भाव उत्पन्न होता है। इसी को प्राणियों की हत्या न करने का उपदेश कहते हैं।

P = देखें Dhs. पैरा 1.

706. उसमें वह नियम क्या है जो अनधिकृत वस्तु लेने से परहेज करने का है? : P : वह नियम जो यौन दुराचार से परहेज करने का है। :P : वह नियम जो परहेज करने का है

378 विश्लेषण की पुस्तक

झूठी बात। :P: क्या वह नियम जो मादक बियर, वाइन और स्पिरिट से परहेज करने को लापरवाही का कारण बताता है?

वह समय जब मादक बियर, मदिरा और अचेतना उत्पन्न करने वाली शराब से परहेज करने वाले व्यक्ति में इच्छा के तल की विशेषता वाली अच्छी चेतना उत्पन्न होती है, जो ज्ञान से जुड़े मानसिक आनंद के साथ होती है; उस समय मादक बियर, मदिरा और अचेतना उत्पन्न करने वाली शराब से बचना, परहेज करना, परहेज करना, न करना, न करना, निर्दोष होना, सीमा पार न करना, और अचेतना उत्पन्न करने वाली शराब, मदिरा और अचेतना के मार्ग को नष्ट करना ही वह नियम है जो अचेतना उत्पन्न करने वाली शराब, मदिरा और अचेतना से परहेज करने का नियम है। (इसी प्रकार) परहेज से जुड़ी शेष अवस्थाएँ भी हैं।

पी = प्रत्येक नियम को अंतिम नियम के समान ही माना जाना चाहिए।

इसमें वह कौन सा नियम है जो मादक बीयर, शराब और स्पिरिट से परहेज करने की सलाह देता है जिससे लापरवाही होती है?

वह समय जब मादक बियर, मदिरा और अचेतना उत्पन्न करने वाली शराब से परहेज करने वाले व्यक्ति में इच्छा के तल की विशेषता वाली अच्छी चेतना उत्पन्न होती है, [287] जो ज्ञान से जुड़े मानसिक आनंद के साथ होती है; उस समय जो इच्छाशक्ति होती है, इच्छाशक्ति होने की अवस्था होती है। इसे मादक बियर, मदिरा और अचेतना उत्पन्न करने वाली शराब से परहेज करने का नियम कहा जाता है। (इसी प्रकार) शेष अवस्थाएँ भी इच्छाशक्ति से जुड़ी होती हैं।

इसमें वह कौन सा नियम है जो मादक बीयर, शराब और स्पिरिट से परहेज करने की सलाह देता है जिससे लापरवाही होती है?

वह समय जब मादक बियर, मदिरा और अचेतना उत्पन्न करने वाली शराब से परहेज करने वाले व्यक्ति में इच्छा के तल की विशेषता वाली अच्छी चेतना उत्पन्न होती है, जो ज्ञान से जुड़े मानसिक आनंद के साथ होती है; उस समय जो संपर्क, प्रयास और अविचल होता है। इसे मादक बियर, मदिरा और अचेतना उत्पन्न करने वाली शराब से परहेज का उपदेश कहा जाता है।

P = देखें Dhs. पैरा 1.

इसमें वह कौन सा नियम है जो मादक बीयर, शराब और स्पिरिट से परहेज करने की सलाह देता है जिससे लापरवाही होती है?

वह समय जब मादक बियर, शराब और अन्य मादक पेय पदार्थों से परहेज करने वाले व्यक्ति में, जो लापरवाही का कारण बनते हैं, इच्छा के तल की विशेषता वाली अच्छी चेतना उत्पन्न होती है, जो मानसिक आनंद, ज्ञान और उत्तेजना से जुड़ी होती है। :P: मानसिक सुख से युक्त

आनंद, ज्ञान से संबंधित नहीं। :P: मानसिक आनंद के साथ, ज्ञान से संबंधित नहीं, उकसावे के साथ।

पी: उदासीनता के साथ, ज्ञान से जुड़ा हुआ। :पी:
उदासीनता के साथ, ज्ञान से जुड़ा हुआ, उकसावे के साथ। :P: उदासीनता के साथ, ज्ञान से नहीं जुड़ा हुआ। ;P: उदासीनता के साथ, ज्ञान से नहीं जुड़ा हुआ, उकसावे के साथ; जो उस समय मादक बियर, शराब और स्पिरिट से बचने, परहेज करने, परहेज करने, न करने, न करने, निर्दोष होने, सीमा पार न करने, लापरवाही पैदा करने वाले मादक पेय पदार्थों के मार्ग को नष्ट करने से संबंधित है। इसे लापरवाही पैदा करने वाले मादक बियर, शराब और स्पिरिट से परहेज करने का नियम कहा जाता है। (इसी प्रकार) परहेज से जुड़ी शेष अवस्थाएँ भी हैं।

P = प्रत्येक को इस पैराग्राफ के समान परिचयात्मक और समापन अनुभागों के साथ पढ़ा जाना चाहिए।

707. इसमें वह कौन सा नियम है जो मादक बियर, शराब और स्पिरिट से परहेज करने का निर्देश देता है, जिससे लापरवाही होती है?

वह समय जब मादक बियर, मदिरा और अचेतना उत्पन्न करने वाली शराब से परहेज करने वाले व्यक्ति में इच्छा के तल से संबंधित उत्तम चेतना उत्पन्न होती है, जो उदासीनता से युक्त होती है, ज्ञान या उत्तेजना से असंबद्ध होती है; उस समय जो इच्छाशक्ति होती है, इच्छाशक्ति की अवस्था होती है। इसे मादक बियर, मदिरा और अचेतना उत्पन्न करने वाली शराब से परहेज करने का नियम कहा जाता है। (इसी प्रकार) इच्छाशक्ति से संबंधित शेष अवस्थाएँ भी इसी प्रकार हैं।

इसमें वह कौन सा नियम है जो मादक बीयर, शराब और स्पिरिट से परहेज करने की सलाह देता है जिससे लापरवाही होती है?

वह समय जब मादक बियर, शराब और अचेतना उत्पन्न करने वाली आत्माओं से परहेज करने वाले व्यक्ति में इच्छा के तल की विशेषता वाली अच्छी चेतना उत्पन्न होती है, जो उदासीनता के साथ होती है, ज्ञान से असंबद्ध होती है, उकसावे से असंबद्ध होती है; [288] जो उस समय संपर्क, प्रयास, अविचल होता है। इसे मादक बियर, शराब और अचेतना उत्पन्न करने वाली आत्माओं से परहेज करने का नियम कहा जाता है।

P = देखें Dhs. पैरा 1.

708. पाँच नियम ये हैं: — प्राणियों की हत्या से परहेज़ करने का नियम; बिना दी गई वस्तु न लेने का नियम; यौन दुराचार से परहेज़ करने का नियम;

380

विश्लेषण की पुस्तक

वह नियम जो झूठी बातों से परहेज करने का है; वह नियम जो मादक बियर, शराब और ऐसी शराब से परहेज करने का है जो लापरवाही का कारण बनती है।

709. उसमें प्राणियों की हत्या से परहेज करने का उपदेश क्या है? जब प्राणियों की हत्या से परहेज करने वाले व्यक्ति में इच्छा के तल की विशेषता वाली अच्छी चेतना उत्पन्न होती है, जो ज्ञान से संबंधित मानसिक सुख के साथ उत्पन्न होती है, चाहे वह निम्न, मध्य या उच्चतर हो; इच्छा प्रधान हो; ऊर्जा प्रधान हो; चेतना प्रधान हो; तर्क प्रधान हो; इच्छा प्रधान हो; निम्न, मध्य या उच्चतर हो; ऊर्जा प्रधान हो; निम्न, मध्य या उच्चतर हो; चेतना प्रधान हो; निम्न, मध्य या उच्चतर हो; तर्क प्रधान हो; जो उस समय प्राणियों की हत्या से बचता है, उससे दूर रहता है, उससे परहेज करता है, उससे परहेज करता है, उसे नहीं करता है, उससे निर्दोष होता है, उसकी सीमा का उल्लंघन नहीं करता है, और प्राणियों की हत्या के कारण को नष्ट करता है। इसे प्राणियों की हत्या से परहेज करने का उपदेश कहा जाता है। (और इसी प्रकार) परहेज से संबंधित शेष अवस्थाएँ भी हैं।

उसमें प्राणियों की हत्या न करने का नियम क्या है? जब प्राणियों की हत्या न करने वाले व्यक्ति में इच्छा के तल की विशेषता वाली अच्छी चेतना उत्पन्न होती है, जो ज्ञान से संबंधित मानसिक सुख के साथ होती है, निम्न, मध्य या उच्चतर; जिसमें इच्छा प्रधान होती है; जिसमें ऊर्जा प्रधान होती है; जिसमें चेतना प्रधान होती है; जिसमें तर्क प्रधान होता है; जिसमें इच्छा प्रधान होती है, निम्न, मध्य या उच्चतर; जिसमें ऊर्जा प्रधान होती है, निम्न, मध्य या उच्चतर; जिसमें चेतना प्रधान होती है, निम्न, मध्य या उच्चतर; जिसमें तर्क प्रधान होता है, निम्न, मध्य या उच्चतर; जो उस समय इच्छाशक्ति होती है, इच्छाशक्ति की अवस्था होती है। इसे प्राणियों की हत्या न करने का नियम कहा जाता है। (इसी प्रकार) इच्छाशक्ति से संबंधित शेष अवस्थाएँ भी हैं।

उसमें प्राणियों की हत्या से परहेज करने का नियम क्या है? [289] जब प्राणियों की हत्या से परहेज करने वाले व्यक्ति में, इच्छा के तल की विशेषता वाली अच्छी चेतना उत्पन्न होती है, जो मानसिक सुख से युक्त होती है, ज्ञान से जुड़ी होती है, निम्न, मध्यवर्ती (या) उच्चतर; इच्छा प्रधान होती है; ऊर्जा प्रधान होती है; चेतना प्रधान होती है; तर्क शक्ति होती है।

उपदेशों का विश्लेषण

381

प्रमुख: इच्छाशक्ति का प्रभुत्व होना; निम्न, मध्यवर्ती या श्रेष्ठ ऊर्जा का प्रभुत्व होना; चेतना का प्रभुत्व होना; तर्कशक्ति का प्रभुत्व होना; उस समय जो संपर्क में हो, प्रयास, अविचल। इसे प्राणियों की हत्या न करने का नियम कहा जाता है।

P = देखें Dhs. पैरा 1.

उसमें वह कौन सा नियम है जो प्राणियों की हत्या से परहेज़ करने का है? उस समय जब प्राणियों की हत्या से परहेज़ करने वाले व्यक्ति में, इच्छा के तल की विशेषता वाली अच्छी चेतना उत्पन्न होती है, जो मानसिक सुख के साथ, ज्ञान से जुड़ी हुई, उत्तेजना के साथ होती है। : P 1 : मानसिक सुख के साथ, ज्ञान से नहीं। rP 1 : मानसिक सुख के साथ, ज्ञान से नहीं, उत्तेजना के साथ। : P 1 : उदासीनता के साथ, ज्ञान से जुड़ा हुआ। : P 1 : उदासीनता के साथ, ज्ञान से नहीं। : P 1 : उदासीनता के साथ, ज्ञान से नहीं, उत्तेजना के साथ, निम्न, मध्यवर्ती (या) उच्चतर; इच्छा प्रधान; ऊर्जा प्रधान; चेतना प्रधान: इच्छा प्रधान, निम्न, मध्यवर्ती (या) उच्चतर; ऊर्जा प्रधान, निम्न, मध्यवर्ती (या) श्रेष्ठ; चेतना प्रधान, निम्न, मध्यवर्ती (या) श्रेष्ठ; जो उस समय प्राणियों की हत्या से बच रहा हो, उससे विमुख हो रहा हो, उससे परहेज कर रहा हो, उससे दूर रह रहा हो, उसे न कर रहा हो, उससे निर्दोष हो, सीमा का उल्लंघन न कर रहा हो, प्राणियों की हत्या के मार्ग को नष्ट कर रहा हो। इसे प्राणियों की हत्या से परहेज का नियम कहा जाता है। (इसी प्रकार) परहेज से संबंधित शेष अवस्थाएँ हैं। : पृष्ठ 2 : (इसी प्रकार) संकल्प से संबंधित शेष अवस्थाएँ हैं। : पृष्ठ 3 : संपर्क, : पृष्ठ 4 : प्रयास, अविचल। इसे प्राणियों की हत्या से परहेज का नियम कहा जाता है।

P x = प्रत्येक को इस पैराग्राफ के समान परिचयात्मक और उपयुक्त समापन अनुभागों के साथ पढ़ा जाना चाहिए।

पृष्ठ 2 = यह पूरा पैराग्राफ दोहराया गया है, लेकिन अंत में इच्छाशक्ति के साथ।

पृष्ठ 3 = यह पूरा पैराग्राफ दोहराया गया है, लेकिन अंत में संपर्क आदि के साथ।

पृष्ठ 4 = डीएचएस पैराग्राफ 1 देखें।

710. उसमें वह नियम क्या है जो अवांछित वस्तुएँ लेने से परहेज करने का है? : पृष्ठ 1 : वह नियम जो परहेज करने का है

382

विश्लेषण की पुस्तक

यौन दुराचार। : पृष्ठ 1 : वह नियम जो झूठे भाषण से परहेज करने से संबंधित है। पृष्ठ 1 वह नियम जो मादक बियर, शराब और स्पिरिट से परहेज करने से संबंधित है जो लापरवाही का कारण बनती हैं?

वह समय जब मादक बियर, शराब और अचेतना उत्पन्न करने वाली आत्माओं से परहेज करने वाले व्यक्ति में इच्छा के तल की विशेषता वाली अच्छी चेतना उत्पन्न होती है, जो मानसिक सुख के साथ होती है, जो निम्न, मध्यवर्ती (या) उच्चतर ज्ञान से जुड़ी होती है; जिसमें इच्छा प्रबल होती है; ऊर्जा प्रबल होती है; चेतना प्रबल होती है; तर्क प्रबल होता है: इच्छा प्रबल होती है, निम्नतर, मध्यवर्ती (या) उच्चतर; [290] ऊर्जा प्रबल होती है, निम्नतर, मध्यवर्ती (या) उच्चतर; चेतना प्रबल होती है, निम्नतर, मध्यवर्ती (या) उच्चतर; तर्क प्रबल होता है, निम्नतर, मध्यवर्ती (या) उच्चतर; जो उस समय मादक बियर, शराब और अचेतना उत्पन्न करने वाली आत्माओं से बच रहा है, उनसे परहेज कर रहा है, उनसे दूर रह रहा है, उनसे परहेज कर रहा है, उनसे नहीं कर रहा है, उनसे नहीं कर रहा है, उनसे निर्दोष है, सीमा का उल्लंघन नहीं कर रहा है, और अचेतना उत्पन्न करने वाली आत्माओं के मार्ग को नष्ट कर रहा है। इसे अचेतना उत्पन्न करने वाली बियर, शराब और अचेतना से परहेज करने का नियम कहा जाता है। (साथ ही) परहेज से जुड़ी शेष अवस्थाएँ भी। :P 2 : (जैसा कि) इच्छाशक्ति से संबंधित शेष अवस्थाएँ। :P 3 : संपर्क, :P 4 : प्रयास, अविचल। इसे मादक बियर, शराब और स्पिरिट से परहेज करने का नियम कहा जाता है जो लापरवाही का कारण बनते हैं।

P 1 = व्यक्तिगत उपदेशों के साथ अंतिम उपदेश के समान ही व्यवहार किया जाना चाहिए।

पृष्ठ 2 = यह पूरा पैराग्राफ दोहराया गया है, लेकिन अंत में इच्छाशक्ति के साथ।

पृष्ठ 3 — यह पूरा पैराग्राफ दोहराया गया है, लेकिन अंत में संपर्क आदि के साथ।

पृष्ठ 4 — डीएचएस पैराग्राफ 1 देखें।

711. इसमें वह कौन सा नियम है जो मादक बियर, शराब और स्पिरिट से परहेज करने का निर्देश देता है जिससे लापरवाही होती है?

वह समय जब मादक बियर, शराब और अचेतना उत्पन्न करने वाली शराब से परहेज करने वाले व्यक्ति में, इच्छा के तल की विशेषता वाली अच्छी चेतना उत्पन्न होती है, जो मानसिक आनंद के साथ, ज्ञान से जुड़ी होती है, और उत्तेजना से प्रेरित होती है। : पृष्ठ 1 : मानसिक आनंद के साथ, ज्ञान से नहीं जुड़ी। : पृष्ठ 1 : मानसिक आनंद के साथ, ज्ञान से नहीं जुड़ी, उत्तेजना से जुड़ी।

पी 1 : उदासीनता के साथ, ज्ञान से जुड़ा हुआ। : पी 1 :
उदासीनता के साथ, ज्ञान से जुड़ा हुआ, उकसावे से जुड़ा हुआ। : पृष्ठ 1 : उदासीनता के साथ, इससे जुड़ा हुआ नहीं

उपदेशों का विश्लेषण

383

ज्ञान। :P 2 : उदासीनता के साथ, ज्ञान से असंबद्ध, उकसावे से, निम्न, मध्यवर्ती (या) श्रेष्ठ; इच्छा प्रधान; ऊर्जा प्रधान; चेतना प्रधान: इच्छा प्रधान, निम्न, मध्यवर्ती (या) श्रेष्ठ; ऊर्जा प्रधान, निम्न, मध्यवर्ती (या) श्रेष्ठ; चेतना प्रधान, निम्न, मध्यवर्ती (या) श्रेष्ठ; जो उस समय मादक बियर, शराब और स्पिरिट से बचने, परहेज करने, परहेज करने, न करने, न करने, निर्दोष होने, सीमा पार न करने, लापरवाही पैदा करने वाले मार्ग को नष्ट करने का कार्य करता है। इसे मादक बियर, शराब और स्पिरिट से परहेज करने का नियम कहा जाता है जो लापरवाही पैदा करते हैं। (इसी प्रकार) परहेज से संबंधित शेष अवस्थाएँ। :P 2 : (इसी प्रकार) इच्छाशक्ति से संबंधित शेष अवस्थाएँ। :P 3 : संपर्क, :P 4 : प्रयास, अविचल। इसे मादक बियर, शराब और स्पिरिट से परहेज करने का सिद्धांत कहा जाता है जो लापरवाही का कारण बनते हैं।

प्रत्येक भाग को इस पैराग्राफ के समान परिचयात्मक और उपयुक्त समापन भागों के साथ पढ़ा जाना चाहिए।

पृष्ठ 2 = यह पूरा पैराग्राफ दोहराया गया है, लेकिन इच्छाशक्ति के अंत के साथ।

पृष्ठ 3 = यह पूरा पैराग्राफ दोहराया गया है, लेकिन अंत में संपर्क आदि के साथ।

पृष्ठ 4 = डीएचएस पैराग्राफ 1 देखें।

712. कौन सी अवस्थाएँ बोधगम्य होती हैं? उस समय जब इच्छा के तल की विशेषता वाली अच्छी चेतना उत्पन्न होती है, जो मानसिक सुख से युक्त होती है, ज्ञान से जुड़ी होती है, और जिसका दृश्य विषय होता है,

P 1 : वैचारिक वस्तु या जो भी (वस्तु) से संबंधित है; पर
उस समय संपर्क होता है, : पी 2 : अविचल होता है। ये अवस्थाएँ बोधगम्य हैं। [291]

P 1 = मध्यवर्ती इंद्रिय वस्तुएँ। P 2 — देखें Dhs. पैरा 1.

कौन सी अवस्थाएँ बोधगम्य होती हैं? जब इच्छा के तल की विशेषता वाली अच्छी चेतना उत्पन्न होती है, जो मानसिक सुख के साथ ज्ञान से जुड़ी होती है, और जिसमें प्रेरणा होती है। :PA : मानसिक सुख के साथ, ज्ञान से जुड़ी नहीं।

पृष्ठ 1: मानसिक आनंद से युक्त, ज्ञान से संबंधित नहीं।
उकसावे के साथ। : P 1 : उदासीनता के साथ, ज्ञान से जुड़ा हुआ। : P 1 : उदासीनता के साथ, ज्ञान से जुड़ा हुआ, उकसावे के साथ। rP 1 : उदासीनता के साथ, ज्ञान से जुड़ा हुआ नहीं। : P 1 : उदासीनता के साथ, ज्ञान से जुड़ा हुआ नहीं, उकसावे के साथ,

आर

दृश्य वस्तु, :P 2 : वैचारिक वस्तु या जो भी (वस्तु) से संबंधित है; उस समय संपर्क होता है, :P 3 : अविचलितता होती है। ये अवस्थाएँ बोधगम्य हैं।

पृष्ठ 1 = = प्रत्येक को इस पैराग्राफ के समान परिचयात्मक और समापन अनुभागों के साथ पढ़ा जाना चाहिए।

पृष्ठ 2 = मध्यवर्ती इंद्रिय वस्तुएँ। पृष्ठ 3 = डीएचएस पैराग्राफ 1 देखें।

713. कौन सी अवस्थाएँ उपदेशात्मक हैं? जब वह रूप के तल पर पुनर्जन्म का मार्ग विकसित करता है: पृष्ठ 1: निराकार तल पर पुनर्जन्म का मार्ग विकसित करता है। पृष्ठ 2: निरंतर पुनर्जन्म और मृत्यु से मुक्ति दिलाने वाली अलौकिक ध्यान अवस्था विकसित करता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, पहली अवस्था में प्रवेश करने के लिए, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, पृष्ठ 3: कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान की पहली ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; उस समय संपर्क होता है, पृष्ठ 4: अविचलितता होती है। ये अवस्थाएँ उपदेशात्मक हैं।

पृष्ठ 1 = अनुच्छेद 624 के उपयुक्त अनुभाग देखें।

पृष्ठ 2 = अनुच्छेद 626 के उपयुक्त अनुभाग देखें।

पी 3 = पैरा देखें। 205. पी 4 = डीएचएस देखें। पैरा. 277.

(यहाँ समाप्त होता है) अभिधम्म के अनुसार विश्लेषण

2. पूछताछ

714. पाँच नियम ये हैं: प्राणियों की हत्या न करने का नियम; बिना माँगी वस्तु न लेने का नियम; यौन दुराचार से परहेज़ करने का नियम; झूठी वाणी से परहेज़ करने का नियम; और असावधानी पैदा करने वाले मादक पेय, शराब और स्पिरिट से परहेज़ करने का नियम।

715. पाँच उपदेशों में से कितने अच्छे हैं; कितने बुरे हैं; कितने न अच्छे हैं न बुरे? :P: कितने उपदेश शोक का कारण हैं; कितने उपदेश शोक का कारण नहीं हैं?

P = शेष उपयुक्त त्रिक और युग्मक।

1. त्रिक

716. (पाँच नियम) केवल अच्छे हैं। कभी-कभी सुखद भावना से जुड़े होते हैं; कभी-कभी न तो सुखद भावना से और न ही सुखद भावना से जुड़े होते हैं।

ये पीड़ादायक और सुखदायक दोनों प्रकार की भावनाएँ नहीं हैं। इनसे परिणाम उत्पन्न होते हैं। ये लालसा और भ्रामक दृष्टि से वश में नहीं होते, बल्कि आसक्ति के विषय होते हैं। ये अविनाशी होते हैं, फिर भी विकृतियों के विषय होते हैं। ये आरंभिक परिश्रम और निरंतर परिश्रम दोनों के साथ होते हैं। कभी उत्साह के साथ, कभी आनंद के साथ, और कभी उदासीनता के साथ होते हैं।

(पाँच उपदेश) न तो प्रथम मार्ग से और न ही पश्चात मार्गों से त्यागे जाने योग्य हैं। इनकी कोई जड़ नहीं है जिसे प्रथम मार्ग से या पश्चात मार्गों से त्यागा जा सके। [292] ये संचयी हैं (पुनर्जन्म और मृत्यु के निरंतर चक्र में पिरोए हुए)। ये सात अलौकिक अवस्थाओं में से नहीं हैं और न ही अंतिम अलौकिक अवस्था में। ये निम्न हैं। इनके उद्देश्य निम्न हैं। ये मध्यवर्ती हैं। इनका कोई निश्चित (परिणामस्वरूप समय) नहीं है। इन्हें न तो पथ को अपना उद्देश्य, पथ को अपना कारण या पथ को अपना प्रमुख कारक कहना चाहिए। कभी उत्पन्न होते हैं; कभी उत्पन्न नहीं होते; इन्हें उत्पन्न होने के लिए बाध्य नहीं कहना चाहिए। कभी भूतकाल में होते हैं; कभी भविष्य में होते हैं; कभी वर्तमान में होते हैं। इनके उद्देश्य वर्तमान में होते हैं। कभी आंतरिक होते हैं; कभी बाह्य होते हैं; कभी आंतरिक और बाह्य दोनों होते हैं। इनके उद्देश्य बाह्य होते हैं। ये दृश्यमान नहीं हैं, इनका कोई प्रभाव नहीं है।

2. दोहे

717. (पाँच उपदेश) मूल नहीं हैं। मूलों के साथ हैं। मूलों से जुड़े हैं। इन्हें यह नहीं कहना चाहिए कि ये भी मूलों के साथ हैं; (ये) मूलों के साथ हैं लेकिन मूल नहीं हैं। इन्हें यह नहीं कहना चाहिए कि ये भी मूलों के साथ हैं; (ये) मूलों से जुड़े हैं लेकिन मूल नहीं हैं। ये मूल नहीं हैं, मूलों के साथ हैं। कारण से हैं। शर्त से जुड़े हैं। अदृश्य हैं। प्रभावहीन हैं। भौतिक नहीं हैं। सांसारिक हैं। एक मार्ग से ज्ञात हैं; दूसरे मार्ग से ज्ञात नहीं हैं।

(पांच नियम) दोष नहीं हैं। दोषों के विषय हैं। दोषों से संबंधित नहीं हैं। यह नहीं कहा जाना चाहिए कि दोष भी दोषों के विषय हैं; (वे) दोषों के विषय हैं लेकिन दोष नहीं हैं। यह नहीं कहा जाना चाहिए कि दोष भी दोषों से संबंधित हैं या दोषों से संबंधित हैं लेकिन दोष नहीं हैं। दोषों से संबंधित नहीं हैं, दोषों के विषय हैं। बंधन नहीं हैं। बंधन नहीं हैं। बाढ़ नहीं हैं। बंधन नहीं हैं।

P : बाधाएँ नहीं हैं। : P : विकृतियाँ नहीं हैं। : P : इनके उद्देश्य हैं।
ये चेतना नहीं हैं। ये मानसिक सहवर्ती हैं। ये संबद्ध हैं।

386

विश्लेषण की पुस्तक

चेतना से जुड़े हुए हैं। चेतना से संबंधित हैं। चेतना द्वारा उत्पन्न होते हैं। चेतना के साथ सह-अस्तित्व में हैं। चेतना के साथ रहते हैं। चेतना से जुड़े हुए हैं, चेतना द्वारा उत्पन्न होते हैं। चेतना से जुड़े हुए हैं, चेतना द्वारा उत्पन्न होते हैं, चेतना के साथ सह-अस्तित्व में हैं। चेतना से जुड़े हुए हैं, चेतना द्वारा उत्पन्न होते हैं, चेतना के साथ रहते हैं। बाह्य हैं। व्युत्पन्न नहीं हैं। बोध से परे हैं। आसक्ति नहीं हैं। विकृतियाँ नहीं हैं।

P = इस पैराग्राफ में वर्णित दोषों के लिए पूर्ण।

(पांच उपदेश) प्रथम मार्ग से नहीं छोड़े जाने चाहिए। पश्चात मार्गों से भी नहीं छोड़े जाने चाहिए। प्रथम मार्ग से छोड़े जाने योग्य कोई जड़ नहीं है। पश्चात मार्गों से छोड़े जाने योग्य कोई जड़ नहीं है। आरंभिक अभ्यास के साथ हैं। निरंतर अभ्यास के साथ हैं। कभी उत्साह के साथ होते हैं; कभी उत्साहहीन होते हैं। कभी उत्साह के साथ होते हैं; कभी उत्साहहीन होते हैं। कभी आनंद के साथ होते हैं; कभी आनंदहीन होते हैं। कभी उदासीनता के साथ होते हैं; कभी उदासीनता के साथ नहीं होते। इच्छा के तल के लक्षण हैं। रूप के तल के लक्षण नहीं हैं। निराकार तल के लक्षण नहीं हैं। समाहित हैं (अर्थात सांसारिक हैं)। मुक्ति की ओर प्रवृत्त नहीं होते। कोई निश्चित (परिणामस्वरूप) समय नहीं है। पार किए जा सकते हैं। शोक का कोई कारण नहीं है।

(यहाँ समाप्त होता है) पूछताछ

सिद्धांतों का विश्लेषण समाप्त हुआ।
टिपिटक >> अभिधम्म पिटक >> विभंग >> अध्याय 15 पाठ - पतिसंभिदा
विभंग-विश्लेषण की पुस्तक-गोतम बुद्ध द्वारा बोली गई
पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण
पाली से अनुवादित यू. थित्तिला, रंगून, बर्मा, 1969 द्वारा

ओसीआर संस्करण, प्रूफरीडिंग नहीं की गई है, इसमें त्रुटियां हैं
(पाठकों को दिए गए .pdf संस्करण की सहायता से पाठ को सही करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है)

अध्याय 15. विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि का विश्लेषण (पतिसंभिदा)

1. प्रवचनों के अनुसार विश्लेषण

1. सारांश अनुभाग

718. [293] चार विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ हैं: परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, उत्पत्ति की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि। परिणाम का ज्ञान परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; उत्पत्ति का ज्ञान उत्पत्ति की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; इन (अर्थात, 1 और 2) की वास्तविक भाषावैज्ञानिक परिभाषा का ज्ञान भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; (इन) ज्ञानों का ज्ञान ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है। यह सारांश खंड है।

2. सत्य अनुभाग

719. चार विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ इस प्रकार हैं: विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि

परिणाम, उत्पत्ति की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि। पीड़ा का ज्ञान परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; पीड़ा के कारण का ज्ञान उत्पत्ति की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; पीड़ा के निवारण का ज्ञान []

परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि; पीड़ा के निवारण की ओर ले जाने वाले मार्ग का ज्ञान उत्पत्ति की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; इनकी वास्तविक भाषाशास्त्रीय परिभाषा का ज्ञान भाषाशास्त्र की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; (इन) ज्ञानों का ज्ञान ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है।

यह सत्य अनुभाग है।

3. कारण अनुभाग

720. चार विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ हैं: परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, उत्पत्ति की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि और ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि। कारण का ज्ञान उत्पत्ति की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; कारण के प्रभाव का ज्ञान परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; वास्तविक भाषावैज्ञानिक परिभाषा का ज्ञान

ये भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; इन ज्ञानों का ज्ञान, ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है। यह कारण खंड है।

4. अवस्थाएँ (मन और पदार्थ) अनुभाग

721. चार विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ हैं: परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, उत्पत्ति की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि। वे अवस्थाएँ जो जन्म लेती हैं, बनती हैं, उत्पन्न होती हैं, विद्यमान होती हैं, पूर्णतः विद्यमान होती हैं, प्रत्यक्ष होती हैं; इन अवस्थाओं का ज्ञान परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; वे अवस्थाएँ जिनसे ये

अवस्थाएँ जन्म लेती हैं, बनती हैं, उत्पन्न होती हैं, विद्यमान होती हैं, पूर्णतः विद्यमान होती हैं, प्रत्यक्ष होती हैं; उन अवस्थाओं का ज्ञान उत्पत्ति की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; इनकी वास्तविक भाषावैज्ञानिक परिभाषा का ज्ञान भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; (इन) ज्ञानों का ज्ञान ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है। [294] यह अवस्थाओं का खंड है।

5. आश्रित उत्पत्ति अनुभाग

722. चार विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ इस प्रकार हैं: परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, उत्पत्ति की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि और ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि। वृद्धावस्था और मृत्यु का ज्ञान परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; वृद्धावस्था और मृत्यु के कारण का ज्ञान उत्पत्ति की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; वृद्धावस्था और मृत्यु के रुकने का ज्ञान परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; वृद्धावस्था और मृत्यु के रुकने की ओर ले जाने वाले मार्ग का ज्ञान उत्पत्ति की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; इनकी वास्तविक भाषावैज्ञानिक परिभाषा का ज्ञान भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; इन ज्ञानों का ज्ञान ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है।

723. चार विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ हैं: परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, उत्पत्ति की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि। जन्म का ज्ञान। : P : बनने का ज्ञान। : P : आसक्ति का ज्ञान। : P : लालसा का ज्ञान। : P : भावना का ज्ञान। : P : संपर्क का ज्ञान। : P : छह आधारों का ज्ञान। : P : मन और पदार्थ का ज्ञान। : P : चेतना का ज्ञान। : P : कर्मों का ज्ञान परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; कर्मों के कारण का ज्ञान उत्पत्ति की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; कर्मों के रुकने का ज्ञान परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; कर्मों के रुकने की ओर ले जाने वाले मार्ग का ज्ञान उत्पत्ति की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है;

विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि का विश्लेषण

389

इनकी वास्तविक भाषाशास्त्रीय परिभाषा भाषाशास्त्र की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; इन ज्ञानों का ज्ञान, ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है। यह आश्रित उत्पत्ति खंड है।

P = प्रत्येक गतिविधि को उसी प्रकार पूरा करें।

6. सिद्धांत अनुभाग

724. चार विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ हैं: परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, उत्पत्ति की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि।

इसमें उत्पत्ति का विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि क्या है? इसमें एक भिक्षु शिक्षा को जानता है; गद्य में प्रवचन; गद्य और पद्य में प्रवचन; व्याख्याएँ; श्लोक; आनंदमय उच्चारण के श्लोक; (उद्धरण जो इस प्रकार शुरू होते हैं) "इस प्रकार कहा गया था... जन्म कथाएँ; अद्वितीय घटनाओं से संबंधित कथन; विविध विषय। इसे उत्पत्ति का विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि कहा जाता है। वह इस प्रकार कही गई बात का अर्थ जानता है, "यह उस बात का अर्थ है जो कही गई है; यह उस बात का अर्थ है जो कही गई है"। इसे परिणाम का विश्लेषणात्मक

अंतर्दृष्टि कहा जाता है। इनकी वास्तविक भाषाशास्त्रीय परिभाषा का ज्ञान भाषाशास्त्र का विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; (इन) ज्ञानों का ज्ञान ज्ञान का विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है। यह सिद्धांत खंड है।

(यहाँ समाप्त होता है) प्रवचनों के अनुसार विश्लेषण

2. अभिधम्म के अनुसार विश्लेषण

1. अच्छा अनुभाग

725. चार विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ हैं: परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, उत्पत्ति की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि।

कौन सी अवस्थाएँ अच्छी हैं? जब इच्छा के तल की विशेषता वाली अच्छी चेतना उत्पन्न होती है, जो मानसिक सुख से युक्त होती है, ज्ञान से जुड़ी होती है, दृश्य वस्तु होती है, : P 1 : वैचारिक वस्तु या जो भी (वस्तु) से संबंधित होती है; [295] उस समय संपर्क होता है, :P 2 : अविचल होता है। ये अवस्थाएँ अच्छी हैं। इन अवस्थाओं का ज्ञान उत्पत्ति की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; उन (अवस्थाओं) के परिणामों का ज्ञान परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; वह भाषाशास्त्र जिसके द्वारा उन अवस्थाओं को नामित किया जाता है;

▪

आर

390 विश्लेषण की पुस्तक

उस (पदनाम) की वास्तविक भाषाशास्त्रीय परिभाषा का ज्ञान भाषाशास्त्र की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; वह ज्ञान जिसके द्वारा वह उन ज्ञानों को इस प्रकार जानता है, "ये ज्ञान इस अर्थ को स्पष्ट करते हैं", (इन) ज्ञानों का ज्ञान ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है।

P 1 = मध्यवर्ती इंद्रिय वस्तुएँ। P 2 = Dhs. पैरा 1 देखें।

726. चार विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ हैं: परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, उत्पत्ति की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि।

कौन सी अवस्थाएँ अच्छी हैं? जब इच्छा के तल की विशेषता वाली अच्छी चेतना उत्पन्न होती है, जो मानसिक सुख के साथ ज्ञान और प्रेरणा से जुड़ी होती है। : P 1 : मानसिक सुख के साथ, ज्ञान से नहीं जुड़ी। :PX : मानसिक सुख के साथ, ज्ञान से नहीं जुड़ी, प्रेरणा के साथ। : P 1 : उदासीनता के साथ, ज्ञान से जुड़ी। :P 1 : उदासीनता के साथ, ज्ञान और प्रेरणा से जुड़ी। rP 1 : उदासीनता के साथ, ज्ञान से नहीं जुड़ी। : P 1 : उदासीनता के साथ, ज्ञान से नहीं जुड़ी, प्रेरणा के साथ, दृश्य वस्तु के साथ, : P 2 : वैचारिक वस्तु या जो भी (वस्तु) से संबंधित है; उस समय संपर्क होता है, :P 3 : अविचल होता है। ये अवस्थाएँ अच्छी हैं। इन अवस्थाओं का ज्ञान उत्पत्ति की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; उन (अवस्थाओं) के परिणामों का ज्ञान परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; वह भाषाविज्ञान जिसके द्वारा उन अवस्थाओं को नामित किया जाता है; उस (नामकरण) की वास्तविक भाषावैज्ञानिक परिभाषा का ज्ञान भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; वह ज्ञान जिसके द्वारा वह उन ज्ञानों को इस प्रकार जानता है, "ये ज्ञान इस अर्थ को स्पष्ट करते हैं", (इन) ज्ञानों का ज्ञान ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है।

प्रत्येक को इस पैराग्राफ के समान परिचयात्मक और समापन अनुभागों के साथ पढ़ा जाना चाहिए।

पृष्ठ 2 — मध्यवर्ती इंद्रिय वस्तुएँ। पृष्ठ 3 = डीएचएस पैराग्राफ 1 देखें।

727. चार विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ हैं: परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, उत्पत्ति की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि।

कौन सी अवस्थाएँ अच्छी हैं? जब वह रूप के तल में पुनर्जन्म का मार्ग विकसित करता है, तब वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, पृथ्वी के प्रथम ध्यान में लीन हो जाता है; उस समय

विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि का विश्लेषण

391

संपर्क, :P 2 : अविचल है। ये अवस्थाएँ अच्छी हैं। इन अवस्थाओं का ज्ञान उत्पत्ति की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; उन (अवस्थाओं) के परिणामों का ज्ञान परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; वह भाषाशास्त्र जिसके द्वारा उन अवस्थाओं को नामित किया जाता है; उस (नामकरण) की वास्तविक भाषाशास्त्रीय परिभाषा का ज्ञान भाषाशास्त्र की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; वह ज्ञान जिसके द्वारा वह उन ज्ञानों को इस प्रकार जानता है, "ये ज्ञान इस अर्थ को स्पष्ट करते हैं", (इन) ज्ञानों का ज्ञान ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है। [296]

पी^पैरा देखें. 205. पी 2 = ध्स देखें। पैरा. 1.

728. चार विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ हैं: परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, उत्पत्ति की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि।

कौन सी अवस्थाएँ अच्छी हैं? जब वह निराकार तल पर पुनर्जन्म का मार्ग विकसित करता है, तब वह सुख का त्याग करके पूर्णतः शून्यता की अवस्था से पार हो जाता है और चौथे ध्यान में लीन हो जाता है, जहाँ उसे उस अवस्था का बोध होता है जो न तो बोध है और न ही अबोध; उस समय सन्त्व होता है और अविचलितता होती है। ये अवस्थाएँ अच्छी हैं। इन अवस्थाओं का ज्ञान उत्पत्ति का विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; इन अवस्थाओं के परिणामों का ज्ञान परिणाम का विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; वह भाषाशास्त्र जिससे इन अवस्थाओं को नाम दिया जाता है; उस (नामकरण) की वास्तविक भाषाशास्त्रीय परिभाषा का ज्ञान भाषाशास्त्र का विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; वह ज्ञान जिससे वह इन ज्ञानों को इस प्रकार जानता है, "ये ज्ञान इस अर्थ को स्पष्ट करते हैं", इन ज्ञानों का ज्ञान ज्ञान का विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है।

पी^पैरा देखें. 205. पी 2 = ध्स देखें। पैरा. 1.

729. चार विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ हैं: परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, उत्पत्ति की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि।

कौन सी अवस्थाएँ अच्छी हैं? जब वह निरंतर जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्ति दिलाने वाली अलौकिक ध्यान अवस्था विकसित करता है; वह गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, पहली अवस्था में प्रवेश करके, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, उस प्रथम ध्यान अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है जो कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान है; उस समय संपर्क होता है, अविचलितता होती है। ये अवस्थाएँ अच्छी हैं। इन अवस्थाओं का ज्ञान उत्पत्ति की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; इन (अवस्थाओं) के परिणामों का ज्ञान विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है।

392

विश्लेषण की पुस्तक

परिणाम की अंतर्दृष्टि; वह भाषाविज्ञान जिसके द्वारा उन राज्यों को नामित किया जाता है; उस (नामकरण) की वास्तविक भाषावैज्ञानिक परिभाषा का ज्ञान भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; वह ज्ञान जिसके द्वारा वह उन ज्ञानों को इस प्रकार जानता है, "ये ज्ञान इस अर्थ को स्पष्ट करते हैं", (इन) ज्ञानों का ज्ञान ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है।

पी^पैरा देखें. 205. पी 2 = ध्स देखें। पैरा. 277.

2. खराब अनुभाग

730. चार विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ हैं: परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, उत्पत्ति की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि।

कौन सी अवस्थाएँ बुरी हैं? जब बुरी चेतना उत्पन्न होती है, जो मानसिक सुख के साथ होती है, गलत दृष्टिकोण से जुड़ी होती है, जिसका दृश्य विषय होता है, : P 1 : वैचारिक विषय या जो भी (विषय) से संबंधित होता है; उस समय संपर्क होता है, : P 2 : अविचल होता है। ये अवस्थाएँ बुरी हैं। इन अवस्थाओं का ज्ञान उत्पत्ति की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; उन (अवस्थाओं) के परिणामों का ज्ञान परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; वह भाषाशास्त्र जिसके द्वारा उन अवस्थाओं को नामित किया जाता है; उस (नामकरण) की वास्तविक भाषाशास्त्रीय परिभाषा का ज्ञान भाषाशास्त्र की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; वह ज्ञान जिसके द्वारा वह उन ज्ञानों को इस प्रकार जानता है, "ये ज्ञान इस अर्थ को स्पष्ट करते हैं", (इन) ज्ञानों का ज्ञान ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है। [297]

P l = मध्यवर्ती इंद्रिय वस्तुएँ। P 2 = Dhs. पैरा 365 देखें।

731. चार विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ हैं: परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, उत्पत्ति की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि।

कौन सी अवस्थाएँ बुरी हैं? जब बुरी चेतना उत्पन्न होती है, मानसिक सुख के साथ, गलत दृष्टिकोण से जुड़ी हुई, उकसावे के साथ। rP 1: मानसिक सुख के साथ, गलत दृष्टिकोण से नहीं। : P 1: मानसिक सुख के साथ, गलत दृष्टिकोण से नहीं, उकसावे के साथ। : P 1: उदासीनता के साथ, गलत दृष्टिकोण से जुड़ी हुई। : P 1: उदासीनता के साथ, गलत दृष्टिकोण से जुड़ी हुई, उकसावे के साथ। :P 1: उदासीनता के साथ, गलत दृष्टिकोण से नहीं जुड़ी हुई। : P 1: उदासीनता के साथ, गलत दृष्टिकोण से नहीं जुड़ी हुई, उकसावे के साथ। :P !: मानसिक पीड़ा के साथ,

घृणा। : P 1 : मानसिक पीड़ा के साथ, घृणा से जुड़ा हुआ, उकसावे के साथ। :PX : उदासीनता के साथ, संदेह से जुड़ा हुआ। :P* : उदासीनता के साथ, व्याकुलता से जुड़ा हुआ, दृश्य वस्तु के साथ, :P 2 : वैचारिक वस्तु या जो भी (वस्तु) से संबंधित है; उस समय संपर्क होता है, :P 3 : अविचल होता है। ये अवस्थाएँ बुरी हैं। इन अवस्थाओं का ज्ञान उत्पत्ति की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; उन (अवस्थाओं) के परिणामों का ज्ञान परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; वह भाषाशास्त्र जिसके द्वारा उन अवस्थाओं को नामित किया जाता है; उस (नामकरण) की वास्तविक भाषाशास्त्रीय परिभाषा का ज्ञान भाषाशास्त्र की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; वह ज्ञान जिसके द्वारा वह उन ज्ञानों को इस प्रकार जानता है, "ये ज्ञान इस अर्थ को स्पष्ट करते हैं", (इन) ज्ञानों का ज्ञान ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है।

P x = प्रत्येक को इस पैराग्राफ के समान परिचयात्मक और समापन अनुभागों के साथ पढ़ा जाना चाहिए।

पृष्ठ 2 = मध्यवर्ती इंद्रिय वस्तुएँ। पृष्ठ 3 = डीएचएस, अनुच्छेद 365 देखें।

3. परिणामी अनुभाग

732. तीन विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ हैं: परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि।

कौन सी अवस्थाएँ न अच्छी हैं और न बुरी? जब इच्छा तल के अनुरूप अच्छे कर्म करने और उन्हें संचित करने के बाद, दृष्टिगत दृष्टि उत्पन्न होती है, जिसमें उदासीनता और प्रत्यक्ष वस्तु होती है; उस समय संपर्क होता है; भावना होती है; बोध होता है; इच्छाशक्ति होती है; चेतना होती है; उदासीनता होती है; चेतना की एकाग्रता होती है; मन की नियंत्रक शक्ति होती है; उदासीनता की नियंत्रक शक्ति होती है; प्राण शक्ति की नियंत्रक शक्ति होती है; या उस समय उत्पन्न होने वाली अन्य कोई भी अभौतिक अवस्थाएँ होती हैं। ये अवस्थाएँ न अच्छी हैं और न बुरी। इन अवस्थाओं का ज्ञान परिणाम का विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; वह भाषाशास्त्र जिसके द्वारा इन अवस्थाओं को परिभाषित किया जाता है; उस (नामकरण) की वास्तविक भाषाशास्त्रीय परिभाषा का ज्ञान भाषाशास्त्र का विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; वह ज्ञान जिसके द्वारा व्यक्ति इन ज्ञानों को इस प्रकार जानता है, "ये ज्ञान इस अर्थ को स्पष्ट करते हैं", (इन) ज्ञानों का ज्ञान ज्ञान का विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है।

733. तीन विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ हैं: परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि।

कौन सी अवस्थाएँ न अच्छी हैं और न बुरी? जब इच्छा के तल पर अभिलाषाओं के अनुरूप अच्छे कर्म करने और उन्हें संचित करने के बाद, परिणामस्वरूप कान की चेतना उत्पन्न होती है, [298] जो उदासीनता से युक्त होती है और श्रव्य वस्तु को धारण करती है; नाक की चेतना उत्पन्न होती है, जो उदासीनता से युक्त होती है और सुगंधित वस्तु को धारण करती है; जीभ की चेतना उत्पन्न होती है, जो उदासीनता से युक्त होती है और स्वादयुक्त वस्तु को धारण करती है; शरीर की चेतना उत्पन्न होती है, जो सुख से युक्त होती है और स्पर्शनीय वस्तु को धारण करती है; उस समय संपर्क होता है; भावना होती है; बोध होता है; इच्छाशक्ति होती है; चेतना होती है; सुख होता है; चेतना की एकाग्रता होती है; मन की नियंत्रक शक्ति होती है; सुख की नियंत्रक शक्ति होती है; प्राण शक्ति की नियंत्रक शक्ति होती है; या उस समय जो भी अन्य आश्रित रूप से उत्पन्न अभौतिक अवस्थाएँ होती हैं। ये अवस्थाएँ न अच्छी हैं और न बुरी। इन अवस्थाओं का ज्ञान परिणाम का विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; वह भाषाशास्त्र जिसके द्वारा इन अवस्थाओं को नामित किया जाता है; उस (पदनाम) की वास्तविक भाषाशास्त्रीय परिभाषा का ज्ञान भाषाशास्त्र की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; वह ज्ञान जिसके द्वारा वह उन ज्ञानों को इस प्रकार जानता है, "ये ज्ञान इस अर्थ को स्पष्ट करते हैं", (इन) ज्ञानों का ज्ञान ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है।

पी — प्रत्येक को इस पैराग्राफ के समान परिचयात्मक और समापन अनुभागों के साथ, उचित संशोधनों के साथ पढ़ा जाना चाहिए।

734. तीन विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ हैं: :PX : ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि। कौन सी अवस्थाएँ न अच्छी हैं और न बुरी? जब इच्छा के तल के अनुरूप अच्छे कर्म करने और उन्हें संचित करने के बाद, परिणामी मन तत्व उत्पन्न होता है, जो उदासीनता से युक्त होता है, जिसमें दृश्य वस्तु होती है, :P 2 : मूर्त वस्तु होती है या जो भी (वस्तु) से संबंधित होता है; उस समय संपर्क होता है; भावना होती है; बोध होता है; इच्छाशक्ति होती है; चेतना होती है; प्रारंभिक अनुप्रयोग होता है; निरंतर अनुप्रयोग होता है; उदासीनता होती है; चेतना की एकाग्रता होती है; मन की नियंत्रक क्षमता होती है; उदासीनता की नियंत्रक क्षमता होती है; प्राणिक सिद्धांत की नियंत्रक क्षमता होती है; या उस समय जो भी अन्य आश्रित रूप से उत्पन्न गैर-भौतिक अवस्थाएँ होती हैं। ये अवस्थाएँ न अच्छी हैं और न बुरी। इन अवस्थाओं का ज्ञान परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; वह भाषाशास्त्र जिसके द्वारा उन अवस्थाओं को नामित किया जाता है; उस (पदनाम) की वास्तविक भाषाशास्त्रीय परिभाषा का ज्ञान भाषाशास्त्र की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; वह ज्ञान जिसके द्वारा वह उन्हें जानता है

इस प्रकार, "ये ज्ञान इस अर्थ को स्पष्ट करते हैं", इन ज्ञानों का ज्ञान, ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है।

पी 1 = परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि।

पृष्ठ 2 — मध्यवर्ती इंद्रिय वस्तुएँ।

735. तीन विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ हैं: परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि।

कौन सी अवस्थाएँ न अच्छी हैं और न बुरी? जब इच्छा के तल पर अभिलाषाओं के अनुरूप अच्छे कर्म करने और उन्हें संचित करने के बाद, मानसिक आनंद से युक्त, दृश्य वस्तु, वैचारिक वस्तु या किसी भी (वस्तु) से संबंधित परिणामी मन-चेतना-तत्व उत्पन्न होता है; उस समय संपर्क होता है; भावना होती है; बोध होता है; इच्छाशक्ति होती है; चेतना होती है; प्रारंभिक क्रिया होती है; निरंतर क्रिया होती है; उत्साह होता है; आनंद होता है; चेतना की एकाग्रता होती है; मन की नियंत्रक शक्ति होती है; मानसिक आनंद की नियंत्रक शक्ति होती है; प्राणिक सिद्धांत की नियंत्रक शक्ति होती है; या उस समय जो भी अन्य आश्रित रूप से उत्पन्न अभौतिक अवस्थाएँ हों; [299] ये अवस्थाएँ न अच्छी हैं और न बुरी। इन अवस्थाओं का ज्ञान परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; वह भाषाशास्त्र जिसके द्वारा उन अवस्थाओं को नामित किया जाता है; उस (नामकरण) की वास्तविक भाषाशास्त्रीय परिभाषा का ज्ञान भाषाशास्त्र की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; वह ज्ञान जिसके द्वारा वह उन ज्ञानों को जानता है, इस प्रकार, "ये ज्ञान इस अर्थ को स्पष्ट करते हैं", (इन) ज्ञानों का ज्ञान, ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है।

P = मध्यवर्ती इंद्रिय वस्तुएँ।

736. तीन विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ हैं: परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि।

कौन सी अवस्थाएँ न अच्छी हैं और न बुरी? जब इच्छा तल के अनुरूप अच्छे कर्म करने और उन्हें संचित करने के बाद, परिणामस्वरूप मन-चेतना-तत्व उत्पन्न होता है, जो उदासीनता से युक्त होता है, जिसका प्रत्यक्ष विषय होता है, वैचारिक विषय होता है या जो भी (विषय) से संबंधित होता है; उस समय संपर्क होता है; भावना होती है; बोध होता है; इच्छाशक्ति होती है; चेतना होती है; प्रारंभिक क्रिया होती है; निरंतर क्रिया होती है; उदासीनता होती है; चेतना की एकाग्रता होती है; मन की नियंत्रक शक्ति होती है; उदासीनता की नियंत्रक शक्ति होती है; या उस समय जो भी अन्य आश्रित रूप से उत्पन्न अभौतिक अवस्थाएँ होती हैं। ये अवस्थाएँ हैं

396

विश्लेषण की पुस्तक

न अच्छा न बुरा। इन अवस्थाओं का ज्ञान परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; वह भाषाविज्ञान जिसके द्वारा उन अवस्थाओं को नामित किया जाता है; उस (नामकरण) की वास्तविक भाषावैज्ञानिक परिभाषा का ज्ञान भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; वह ज्ञान जिसके द्वारा वह उन ज्ञानों को इस प्रकार जानता है, "ये ज्ञान इस अर्थ को स्पष्ट करते हैं" 5, (इन) ज्ञानों का ज्ञान ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है।

P — मध्यवर्ती इंद्रिय वस्तुएँ।

737. तीन विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ हैं: परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि।

कौन सी अवस्थाएँ न अच्छी हैं और न बुरी? जब इच्छा तल के अनुरूप अच्छे कर्म करने और उन्हें संचित करने के बाद, ज्ञान से संबंधित मानसिक सुख के साथ परिणामी मन-चेतना-तत्व उत्पन्न होता है। rP 1: ज्ञान से संबंधित मानसिक सुख के साथ, उत्तेजना सहित। : P 1: ज्ञान से असंबद्ध मानसिक सुख के साथ। :PX: ज्ञान से असंबद्ध मानसिक सुख के साथ, उत्तेजना सहित। : P 1: ज्ञान से संबंधित

उदासीनता के साथ। : P 1: ज्ञान से संबंधित उदासीनता के साथ, उत्तेजना सहित। :P*: ज्ञान से असंबद्ध उदासीनता के साथ। : P 1: ज्ञान से असंबद्ध उदासीनता के साथ, उत्तेजना सहित, दृश्य वस्तु के साथ। :P 2: वैचारिक वस्तु या किसी भी (वस्तु) से संबंधित; उस समय संपर्क होता है।

पृष्ठ 3: इसमें अविचलता है। ये अवस्थाएँ न तो अच्छी हैं और न ही बुरी।
इन अवस्थाओं का ज्ञान परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; वह भाषाविज्ञान जिसके द्वारा उन अवस्थाओं को नामित किया जाता है; उस (नामकरण) की वास्तविक भाषावैज्ञानिक परिभाषा का ज्ञान भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; वह ज्ञान जिसके द्वारा वह उन ज्ञानों को इस प्रकार जानता है, "ये ज्ञान इस अर्थ को स्पष्ट करते हैं 55, (इन) ज्ञानों का ज्ञान ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है।

प्रत्येक को इस पैराग्राफ के समान परिचयात्मक और समापन अनुभागों के साथ पढ़ा जाना चाहिए।

पृष्ठ 2 = मध्यवर्ती इंद्रिय वस्तुएँ। पृष्ठ 3 — देखें धस. पैरा 1।

738. तीन विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ हैं: परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि।

कौन सी अवस्थाएँ न अच्छी हैं न बुरी? जिस समय वह रूप के तल में पुनर्जन्म का मार्ग विकसित करता है, वह, इससे विरक्त होकर

विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि का विश्लेषण

397

इंद्रिय सुखों से मुक्त होकर, वह पृथ्वी तत्व के प्रथम ध्यान में लीन होकर उसमें निवास करता है; उस समय संपर्क होता है; :P 2 : अविचलितता होती है। ये अवस्थाएँ अच्छी हैं। उसी अच्छे कर्म को करने और संचित करने के बाद, जो रूप के तल की विशेषता है, वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, :P 1 : परिणामी पृथ्वी तत्व के प्रथम ध्यान में लीन होकर उसमें निवास करता है; उस समय संपर्क होता है; :P 2 : अविचलितता होती है। ये अवस्थाएँ न तो अच्छी हैं और न ही बुरी। इन अवस्थाओं का ज्ञान परिणाम का विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; वह भाषाशास्त्र जिसके द्वारा इन अवस्थाओं को नामित किया जाता है; उस (नामकरण) की वास्तविक भाषाशास्त्रीय परिभाषा का ज्ञान भाषाशास्त्र का विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; [300] वह ज्ञान जिसके द्वारा वह इन ज्ञानों को इस प्रकार जानता है, "ये ज्ञान इस अर्थ को स्पष्ट करते हैं", (इन) ज्ञानों का ज्ञान ज्ञान का विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है।

पी^पैरा देखें. 205. पी 2 = ध्स देखें। पैरा. 1.

739. तीन विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ हैं: परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि।

कौन सी अवस्थाएँ न तो अच्छी हैं और न ही बुरी? जब वह निराकार तल पर पुनर्जन्म का मार्ग विकसित करता है, तो सुख का त्याग करके पूर्णतः शून्यता की अवस्था को पार कर लेता है, :P 1: वह चौथे ध्यान में प्राप्त होता है और उसमें निवास करता है, साथ ही उस अवस्था का बोध भी करता है जो न तो बोध है और न ही अबोध; उस समय संपर्क होता है, :P 2: अविचल होता है। ये अवस्थाएँ अच्छी

हैं। निराकार तल के समान अच्छे कर्मों को करने और संचित करने के बाद, वह सुख का त्याग करके पूर्णतः शून्यता की अवस्था को पार कर लेता है, :P 1: परिणामी चौथे ध्यान में प्राप्त होता है और उसमें निवास करता है, साथ ही उस अवस्था का बोध भी करता है जो न तो बोध है और न ही अबोध; उस समय संपर्क होता है, :P 2: अविचल होता है। ये अवस्थाएँ न तो अच्छी हैं और न ही बुरी। इन अवस्थाओं का ज्ञान परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; वह भाषाशास्त्र जिसके द्वारा इन अवस्थाओं को नामित किया जाता है; उस (पदनाम) की वास्तविक भाषाशास्त्रीय परिभाषा का ज्ञान भाषाशास्त्र की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; वह ज्ञान जिसके द्वारा वह उन ज्ञानों को इस प्रकार जानता है, "ये ज्ञान इस अर्थ को स्पष्ट करते हैं", (इन) ज्ञानों का ज्ञान ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है।

पी^पैरा देखें. 205, पी 2 = डीएचएस देखें। पैरा. 1.

740. तीन विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ हैं: परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि।

कौन से राज्य न अच्छे हैं और न बुरे? उस समय जब वह

398

विश्लेषण की पुस्तक

वह आध्यात्मिक ध्यान विकसित करता है जो मुक्ति की ओर अग्रसर होता है, निरंतर पुनर्जन्म और मृत्यु के चक्र को विदारक करता है; वह, गलत दृष्टिकोण का त्याग करके, प्रथम अवस्था में प्रवेश करने के लिए, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, प्रथम ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है, जो कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान है; उस समय संपर्क होता है, और अविचलितता होती है। ये अवस्थाएँ अच्छी हैं। ऐसा करने के बाद, उसी अच्छे आध्यात्मिक ध्यान को विकसित करने के बाद, वह, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, परिणामी प्रथम ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है, जो कठिन अभ्यास, धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान है और निःसंकोच है; उस समय संपर्क होता है, और अविचलितता होती है। ये अवस्थाएँ न तो अच्छी हैं और न ही बुरी। इन अवस्थाओं का ज्ञान परिणाम का विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; वह भाषाशास्त्र जिसके द्वारा इन अवस्थाओं को नामित किया जाता है; उस (पदनाम) की वास्तविक भाषाशास्त्रीय परिभाषा का ज्ञान भाषाशास्त्र की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; वह ज्ञान जिसके द्वारा वह उन ज्ञानों को इस प्रकार जानता है, "ये ज्ञान इस अर्थ को स्पष्ट करते हैं", (इन) ज्ञानों का ज्ञान ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है।

पी एक्स = पैरा देखें। 205. पी 2 = ध्स देखें। पैरा. 277.

741. तीन विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ हैं: परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि। [301]

कौन सी अवस्थाएँ न अच्छी हैं और न बुरी? जब बुरे कर्म करने और उनका संचय करने के बाद, दृष्टिहीनता के साथ दृश्य वस्तु को देखते हुए नेत्र चेतना उत्पन्न होती है; श्रवण वस्तु को देखते हुए उदासीन कान चेतना उत्पन्न होती है; गंधयुक्त वस्तु को देखते हुए उदासीन नाक चेतना उत्पन्न होती है; स्वादयुक्त वस्तु को देखते हुए उदासीन जीभ चेतना उत्पन्न होती है; स्पर्शनीय वस्तु को देखते हुए पीड़ादायक शरीर चेतना उत्पन्न होती है; उस समय संपर्क होता है; संवेदना होती है; बोध होता है; इच्छाशक्ति होती है; चेतना होती है; पीड़ा होती है; चेतना की एकाग्रता होती है; मन का नियंत्रक बल होता है; पीड़ा का नियंत्रक बल होता है; प्राण का नियंत्रक बल होता है; या उस समय उत्पन्न होने वाली अन्य कोई भी अभौतिक अवस्थाएँ होती हैं। ये अवस्थाएँ न अच्छी हैं और न बुरी। इन अवस्थाओं का ज्ञान परिणाम का

विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है। वह भाषाशास्त्र जिसके द्वारा उन राज्यों को नामित किया जाता है; उस (नामकरण) की वास्तविक भाषाशास्त्रीय परिभाषा का ज्ञान भाषाशास्त्र की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; वह ज्ञान जिसके द्वारा वह उन ज्ञानों को जानता है।

विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि का विश्लेषण

399

अतः, "ये ज्ञान इस अर्थ को स्पष्ट करते हैं", इन ज्ञानों का ज्ञान, ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है।

P = प्रत्येक को इस पैराग्राफ के समान परिचयात्मक और समापन अनुभागों के साथ, उचित संशोधनों के साथ पढ़ा जाना चाहिए।

742. तीन विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ हैं: परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि।

कौन सी अवस्थाएँ न अच्छी हैं और न बुरी? जब बुरे कर्म करने और उनका संचय करने के बाद, परिणामस्वरूप मन का तत्व उत्पन्न होता है, जो उदासीनता से युक्त होता है, और जिसका दृश्य वस्तु होता है (PJ): मूर्त वस्तु; P2: मन-चेतना का तत्व उत्पन्न होता है, जो उदासीनता से युक्त होता है, और जिसका दृश्य वस्तु होता है (P1): वैचारिक वस्तु या जो भी (वस्तु) से संबंधित होता है; उस समय संपर्क होता है; भावना होती है; बोध होता है; इच्छाशक्ति होती है; चेतना होती है; प्रारंभिक क्रिया होती है; निरंतर क्रिया होती है; उदासीनता होती है; चेतना की एकाग्रता होती है; मन की नियंत्रक शक्ति होती है; उदासीनता की नियंत्रक शक्ति होती है; प्राणिक शक्ति की नियंत्रक शक्ति होती है; या उस समय जो भी अन्य आश्रित रूप से उत्पन्न अभौतिक अवस्थाएँ होती हैं। ये अवस्थाएँ न अच्छी हैं और न बुरी। इन अवस्थाओं का ज्ञान परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है। वह भाषाविज्ञान जिसके द्वारा उन राज्यों को नामित किया जाता है; उस (नामकरण) की वास्तविक भाषावैज्ञानिक परिभाषा का ज्ञान भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; वह ज्ञान जिसके द्वारा वह उन ज्ञानों को इस प्रकार जानता है, "ये ज्ञान इस अर्थ को स्पष्ट करते हैं", (इन) ज्ञानों का ज्ञान ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है।

P x = मध्यवर्ती इंद्रिय वस्तुएँ।

P 2 = दोनों तत्वों को एक ही परिचयात्मक और समापन अनुभागों के साथ पढ़ा जाना चाहिए।

4. निष्क्रिय अनुभाग

743. तीन विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ हैं: परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि।

कौन सी अवस्थाएँ न अच्छी हैं न बुरी? उस समय जब मन का वह तत्व उत्पन्न होता है जो निष्क्रिय होता है, न अच्छा, न बुरा, न ही किसी क्रिया का परिणाम, उदासीनता के साथ, [302] दृश्य वस्तु के साथ, :P: मूर्त वस्तु या जो भी (वस्तु) से संबंधित हो; उस समय संपर्क होता है; भावना होती है; बोध होता है; इच्छाशक्ति होती है; चेतना होती है; प्रारंभिक अवस्था होती है।

400

विश्लेषण की पुस्तक

अनुप्रयोग; निरंतर अनुप्रयोग; उदासीनता; चेतना की एकाग्रता; मन की नियंत्रक शक्ति; उदासीनता की नियंत्रक शक्ति; प्राणिक शक्ति की नियंत्रक शक्ति; या उस समय उत्पन्न होने वाली अन्य कोई भी अभौतिक अवस्थाएँ। ये अवस्थाएँ न तो अच्छी हैं और न ही बुरी। इन अवस्थाओं का ज्ञान परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; वह भाषाशास्त्र जिसके द्वारा इन अवस्थाओं को परिभाषित किया जाता है; उस (नामकरण) की वास्तविक भाषाशास्त्रीय परिभाषा का ज्ञान भाषाशास्त्र की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; वह ज्ञान जिसके द्वारा वह इन ज्ञानों को इस प्रकार जानता है, "ये ज्ञान इस अर्थ को स्पष्ट करते हैं", (इन) ज्ञानों का ज्ञान ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है।

P = मध्यवर्ती इंद्रिय वस्तुएँ।

744. तीन विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ हैं: परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि।

कौन सी अवस्थाएँ न अच्छी हैं और न बुरी? उस समय जब निष्क्रिय, न अच्छी, न बुरी और न ही किसी क्रिया का परिणाम, मानसिक सुख से युक्त, दृश्य वस्तु वाली, iP 1: वैचारिक वस्तु, :P 2: निष्क्रिय, न अच्छी, न बुरी और न ही किसी क्रिया का परिणाम, उदासीनता से युक्त, दृश्य वस्तु वाली, :PX: वैचारिक वस्तु या किसी भी (वस्तु) से संबंधित अवस्था उत्पन्न होती है; उस समय संपर्क होता है; भावना होती है; बोध होता है; इच्छाशक्ति होती है; चेतना होती है; प्रारंभिक क्रिया होती है; निरंतर क्रिया होती है; उदासीनता होती है; चेतना की एकाग्रता होती है; ऊर्जा का नियंत्रक बल होता है; एकाग्रता का नियंत्रक बल होता है; मन का नियंत्रक बल होता है; उदासीनता का नियंत्रक बल होता है; प्राणिक सिद्धांत का नियंत्रक बल होता है; या उस समय उत्पन्न होने वाली कोई अन्य अभौतिक अवस्थाएँ होती हैं। ये अवस्थाएँ न तो अच्छी हैं और न ही बुरी। इन अवस्थाओं का ज्ञान परिणाम का विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; वह भाषाविज्ञान जिसके द्वारा इन अवस्थाओं को नामित किया जाता है; उस (नामकरण) की वास्तविक भाषावैज्ञानिक परिभाषा का ज्ञान भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; वह ज्ञान जिसके द्वारा वह इन ज्ञानों को इस प्रकार जानता है, "ये ज्ञान इस अर्थ को स्पष्ट करते हैं", (इन) ज्ञानों का ज्ञान ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है।

P 1 = मध्यवर्ती इंद्रिय वस्तुएँ।

P 2 = दोनों तत्वों को समान परिचयात्मक और समापन खंडों के साथ पढ़ा जाना चाहिए, लेकिन मानसिक आनंद के लिए उपयुक्त संशोधनों के साथ।

विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि का विश्लेषण

401

745. तीन विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ हैं: परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि।

कौन सी अवस्थाएँ न अच्छी हैं न बुरी? जब मन-चेतना-तत्व उत्पन्न होता है जो निष्क्रिय होता है, न अच्छा है, न बुरा है, न ही किसी क्रिया का परिणाम है, और मानसिक सुख से युक्त होता है, तथा ज्ञान से जुड़ा होता है। :PX : मानसिक सुख से युक्त, ज्ञान से संबंधित, और उत्तेजना से युक्त। ; P 1 : मानसिक सुख से युक्त, ज्ञान से रहित। : P 1 : मानसिक सुख से युक्त, ज्ञान से रहित, और उत्तेजना से युक्त।

पी 1 : उदासीनता के साथ, ज्ञान से जुड़ा हुआ। : पी 1 :
उदासीनता के साथ, ज्ञान से जुड़ा हुआ, उत्तेजना के साथ। : P 1 : उदासीनता के साथ, ज्ञान से जुड़ा हुआ नहीं। : P 1 : उदासीनता के साथ, ज्ञान से जुड़ा हुआ नहीं, उत्तेजना के साथ। : P 1 : रूप तल के विशिष्ट ध्यान का विकास करता है। : P 1 : निराकार तल के विशिष्ट ध्यान का विकास करता है जो निष्क्रिय है, न अच्छा है, न बुरा है, न ही कर्म का परिणाम है, (वर्तमान अस्तित्व में) सुखद जीवन का कारण है, वह, सुख का त्याग करके, शून्यता की अवस्था को पूर्णतः पार कर चुका है, : P 2 : चौथे ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है, उस अवस्था की अनुभूति के साथ जो न तो अनुभूति है और न ही अअनुभूति; उस समय संपर्क होता है, : P 3 : अविचल होता है। ये अवस्थाएँ न अच्छी हैं, न बुरी। इन अवस्थाओं का ज्ञान परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; [303] वह भाषाविज्ञान जिसके द्वारा उन राज्यों को नामित किया जाता है; उस (नामकरण) की वास्तविक भाषावैज्ञानिक परिभाषा का ज्ञान भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; वह ज्ञान जिसके द्वारा वह उन ज्ञानों को इस प्रकार जानता है, "ये ज्ञान इस अर्थ को स्पष्ट करते हैं", (इन) ज्ञानों का ज्ञान ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है।

प्रत्येक भाग को उसके उपयुक्त परिचयात्मक और समापन भागों के साथ पढ़ा जाना चाहिए। भाग 2 = पैराग्राफ 205 देखें। भाग 3 == डीएचएस पैराग्राफ 1 देखें।

746. चार विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ हैं: परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, उत्पत्ति की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि और ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि। तीन विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ चेतना के चार प्रकारों में उत्पन्न होती हैं, जो इच्छा के तल की विशेषता वाली अच्छी अवस्थाओं से प्राप्त ज्ञान से संबंधित हैं, और साथ ही निष्क्रिय अवस्थाओं से प्राप्त ज्ञान से संबंधित चेतना के चार प्रकारों में भी। परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि भी इनमें और चारों मार्गों और चारों फलों में उत्पन्न होती है।

(यहाँ समाप्त होता है) अभिधम्म के अनुसार विश्लेषण

402

विश्लेषण की पुस्तक

3. पूछताछ

747. चार विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ हैं: परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, उत्पत्ति की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि।

748. चार विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियों में से कितनी अच्छी हैं; कितनी बुरी हैं; और कितनी न अच्छी हैं न बुरी? :P: कितनी ऐसी हैं जिन पर शोक करने का कारण है; और कितनी ऐसी हैं जिन पर शोक करने का कोई कारण नहीं है?

P = शेष उपयुक्त त्रिक और युग्मक।

1. त्रिक

749. (चार विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ) कभी अच्छी होती हैं; कभी न अच्छी होती हैं, न बुरी। कभी सुखद अनुभूति से जुड़ी होती हैं; कभी पीड़ादायक, न सुखद अनुभूति से जुड़ी होती हैं। तीन विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ कभी परिणाम उत्पन्न करती हैं; कभी न परिणाम उत्पन्न करती हैं, न परिणाम उत्पन्न करती हैं। परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि कभी परिणाम उत्पन्न करती है; कभी परिणाम उत्पन्न करती है; कभी न परिणाम उत्पन्न करती है, न परिणाम उत्पन्न करती है। तीन विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ (लालसा और भ्रामक दृष्टि से) ग्रहण नहीं की जा सकतीं, वे आसक्ति का विषय होती हैं। परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि कभी ग्रहण नहीं की जा सकती, वह आसक्ति का विषय होती है; कभी ग्रहण नहीं की जा सकती, वह आसक्ति का विषय नहीं होती। तीन विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ न तो भ्रष्ट होती हैं, न ही भ्रष्टता का विषय होती हैं। परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि कभी भ्रष्ट नहीं होती, वह भ्रष्टता का विषय होती है; कभी भ्रष्ट नहीं होती, वह भ्रष्टता का विषय नहीं होती।

तीन विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ प्रारंभिक अनुप्रयोग और निरंतर अनुप्रयोग के साथ आती हैं। परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग और निरंतर अनुप्रयोग के साथ आती है; कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, केवल निरंतर अनुप्रयोग के साथ आती है; कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, निरंतर अनुप्रयोग के बिना आती है। (चार विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ) कभी-कभी उत्साह के साथ आती हैं; कभी-कभी आनंद के साथ आती हैं; कभी-कभी उदासीनता के साथ आती हैं। इन्हें न तो पहले मार्ग से और न ही बाद के मार्गों से छोड़ा जाना चाहिए। इनकी कोई जड़ नहीं है जिसे पहले मार्ग से या बाद के मार्गों से छोड़ा जा सके।

विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि का विश्लेषण

403

तीन विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ कभी-कभी संचयी होती हैं (लगातार पुनर्जन्म और मृत्यु की); कभी-कभी न तो संचयी होती हैं और न ही विक्षेपी। परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि [304] कभी-कभी संचयी होती है; कभी-कभी विक्षेपी होती है; कभी-कभी न तो संचयी होती है और न ही विक्षेपी।

तीन विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ न तो सात अलौकिक अवस्थाओं की हैं और न ही अंतिम अलौकिक अवस्था की। परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि कभी-कभी सात अलौकिक अवस्थाओं की होती है; कभी-कभी अंतिम अलौकिक अवस्था की होती है; कभी-कभी न तो सात अलौकिक अवस्थाओं की होती है और न ही अंतिम अलौकिक अवस्था की। तीन विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ निम्न स्तर की हैं। परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि कभी-कभी निम्न स्तर की होती है; कभी-कभी असीम होती है। भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि का उद्देश्य निम्न होता है। तीन विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियों का उद्देश्य कभी-कभी निम्न स्तर का होता है; कभी-कभी उदात्त होता है; कभी-कभी असीम होता है।

तीन विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ मध्यवर्ती हैं। परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि कभी मध्यवर्ती होती है; कभी श्रेष्ठ होती है। तीन विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियों का कोई निश्चित (परिणामी समय) नहीं होता। परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि कभी निश्चित

(परिणामी समय) के साथ सही (अवस्था) होती है; कभी निश्चित (परिणामी समय) नहीं होती। भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि के बारे में यह नहीं कहा जा सकता कि पथ उसका उद्देश्य है, पथ उसका कारण है या पथ उसका प्रमुख कारक है। परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि का पथ उसका उद्देश्य नहीं है; कभी पथ उसका कारण है; कभी पथ उसका प्रमुख कारक है; कभी-कभी यह नहीं कहा जा सकता कि पथ उसका कारण है या पथ उसका प्रमुख कारक है। दो विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियों का पथ कभी-कभी उनका उद्देश्य होता है; पथ उनका कारण नहीं होता; कभी-कभी पथ उनका प्रमुख कारक होता है; कभी-कभी यह नहीं कहा जा सकता कि पथ उनका उद्देश्य है या पथ उनका प्रमुख कारक है।

तीन विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ कभी उत्पन्न होती हैं; कभी उत्पन्न नहीं होतीं; इन्हें उत्पन्न होना अनिवार्य नहीं कहा जाना चाहिए। परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि कभी उत्पन्न होती है; कभी उत्पन्न नहीं होती; कभी उत्पन्न होना अनिवार्य है। (चार विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ) कभी भूतकाल होती हैं; कभी भविष्यकाल होती हैं; कभी वर्तमानकाल होती हैं। भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि का वर्तमान कर्म होता है। दो विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियों का कभी भूतकाल कर्म होता है; कभी भविष्यकाल कर्म होता है; कभी वर्तमान कर्म होता है। परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि का कभी भूतकाल कर्म होता है; कभी भविष्यकाल कर्म होता है; कभी वर्तमान कर्म होता है; कभी-कभी इन्हें भूतकाल, भविष्यकाल या वर्तमान कर्म होना अनिवार्य नहीं कहा जाना चाहिए। (चार विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ) कभी-कभी 16+

आंतरिक; कभी-कभी बाह्य; कभी-कभी आंतरिक और बाह्य दोनों। भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि का बाह्य उद्देश्य होता है। तीन विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियों का कभी-कभी आंतरिक उद्देश्य होता है; कभी-कभी बाह्य उद्देश्य होता है; कभी-कभी आंतरिक और बाह्य दोनों उद्देश्य होते हैं। (चार विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ) दृश्यमान नहीं हैं, आक्षेपकारी नहीं हैं।

2. दोहे

750. (चार विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ) मूल हैं। मूलों के साथ हैं। मूलों से जुड़े हैं। क्या मूल भी मूलों के साथ हैं। क्या मूल भी मूलों से जुड़े हैं। यह नहीं कहा जाना चाहिए कि वे मूल नहीं हैं, मूलों के साथ हैं या मूल नहीं हैं, मूलों के साथ नहीं हैं।

(चार विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ) कारण सहित होती हैं। परिस्थितिजन्य होती हैं। अदृश्य होती हैं। आकस्मिक होती हैं। भौतिक नहीं होतीं। तीन विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ सांसारिक होती हैं। परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि कभी सांसारिक होती है; कभी अलौकिक होती है। (चार विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ) एक तरीके से बोधगम्य होती हैं; दूसरे तरीके से बोधगम्य नहीं होतीं।

(चार विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ) दोष नहीं हैं। तीन विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ दोषों के विषय हैं। परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि कभी-कभी दोष का विषय होती है; कभी-कभी दोष का विषय नहीं होती। (चार विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ) दोषों से संबंधित नहीं हैं। [305] तीन विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियों को दोष और दोषों का विषय नहीं कहा जाना चाहिए; (वे) दोषों का विषय हैं लेकिन दोष नहीं हैं। परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि को दोष और दोषों का विषय नहीं कहा जाना चाहिए; (यह) दोषों का विषय है लेकिन दोष नहीं है; कभी-कभी इसे दोषों का विषय नहीं कहा जाना चाहिए लेकिन दोष नहीं है। (चार विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ) दोषों से संबंधित नहीं कही जानी चाहिए या दोषों से संबंधित लेकिन दोष नहीं हैं। तीन विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ अपवित्रताओं से संबंधित नहीं हैं, बल्कि

अपवित्रताओं का विषय हैं। परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि कभी-कभी अपवित्रताओं से संबंधित नहीं होती, बल्कि अपवित्रताओं का विषय होती है; कभी-कभी अपवित्रताओं से संबंधित नहीं होती, बल्कि अपवित्रताओं का विषय नहीं होती।

(चार विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ) बंधन नहीं हैं। : P : बंधन नहीं हैं।

पी: बाढ़ नहीं हैं। पी: बंधन नहीं हैं। पी: बाधाएँ नहीं हैं। पी:

विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि का विश्लेषण

405

विकृतियाँ नहीं हैं। इनके उद्देश्य होते हैं। ये चेतना नहीं हैं। ये मानसिक सहवर्ती हैं। ये चेतना से संबद्ध हैं। ये चेतना से जुड़े हुए हैं। ये चेतना द्वारा उत्पन्न होते हैं। ये चेतना के साथ सह-अस्तित्व में हैं। ये चेतना के साथ रहते हैं। ये चेतना से जुड़े हुए हैं, चेतना द्वारा उत्पन्न होते हैं। ये चेतना से जुड़े हुए हैं, चेतना द्वारा उत्पन्न होते हैं, चेतना के साथ सह-अस्तित्व में हैं। ये चेतना से जुड़े हुए हैं, चेतना द्वारा उत्पन्न होते हैं, चेतना के साथ रहते हैं। ये बाह्य हैं। ये व्युत्पन्न नहीं हैं। इन्हें समझा नहीं जा सकता।

P = पिछले पैराग्राफ में वर्णित अपवित्रताओं के अनुसार पूर्ण।

(चार विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ) आसक्ति नहीं हैं। :P: विकृतियाँ नहीं हैं। :P: प्रथम मार्ग द्वारा त्यागी नहीं जानी चाहिए। अनुवर्ती मार्गों द्वारा त्यागी नहीं जानी चाहिए। प्रथम मार्ग द्वारा त्यागी जाने वाली कोई जड़ नहीं है। अनुवर्ती मार्गों द्वारा त्यागी जाने वाली कोई जड़ नहीं है। तीन विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ प्रारंभिक अनुप्रयोग के साथ होती हैं। परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के साथ होती है; कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना होती है। तीन विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ निरंतर अनुप्रयोग के साथ होती हैं। परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि कभी-कभी निरंतर अनुप्रयोग के साथ होती है; कभी-कभी निरंतर अनुप्रयोग के बिना होती है। (चार विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ) कभी उत्साह के साथ होती हैं; कभी-कभी उत्साह के बिना होती हैं; कभी-कभी उत्साह के साथ होती हैं; कभी-कभी उत्साह के बिना होती हैं। कभी-कभी आनंद के साथ होती हैं; कभी-कभी आनंद के बिना होती हैं। कभी-कभी उदासीनता के साथ होती हैं; कभी-कभी उदासीनता के बिना होती हैं। तीन विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ इच्छा के तल की विशेषता हैं। परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि कभी-कभी इच्छा के तल की विशेषता होती है; कभी-कभी यह इच्छा के तल की विशेषता नहीं होती। (चार विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ) रूप के तल की विशेषता नहीं होतीं। निराकार तल की विशेषता नहीं होतीं। तीन विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ शामिल हैं (अर्थात सांसारिक हैं)। परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि कभी-कभी शामिल होती है (अर्थात सांसारिक होती है); कभी-कभी शामिल नहीं होती (अर्थात अलौकिक होती है)। तीन विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ मुक्ति की ओर प्रवृत्त नहीं होतीं। परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि कभी-कभी मुक्ति की ओर प्रवृत्त होती है; कभी-कभी मुक्ति की ओर प्रवृत्त नहीं होती। तीन विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियों का कोई निश्चित (परिणामी समय) नहीं होता। परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि कभी-कभी निश्चित (परिणामी समय) की होती है; कभी-कभी निश्चित (परिणामी समय) की नहीं होती। तीन विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ पार की जा सकती हैं। परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि कभी-कभी

406

कभी-कभी इसे पार किया जा सकता है; कभी-कभी इसे पार नहीं किया जा सकता। (चार विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ) शोक का कोई कारण नहीं हैं।

P = पहले के पैराग्राफ में वर्णित दोषों के समान पूर्ण।

(यहाँ समाप्त होता है) पूछताछ

विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि का विश्लेषण समाप्त हो गया है।
तिपिटक >> अभिधम्म पिटक >> विभंग >> अध्याय 16 पाठ - नाना सं. ज्ञान
विभंग-विश्लेषण की पुस्तक-गोतम बुद्ध द्वारा बोली गई
पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण
पाली से अनुवादित यू. थिटिला, रंगून, बर्मा, 1969 द्वारा

ओसीआर संस्करण, प्रूफरीडिंग नहीं की गई है, इसमें त्रुटियां हैं
(पाठकों को दिए गए .pdf संस्करण की सहायता से पाठ को सही करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है)

अध्याय 16. ज्ञान का विश्लेषण (नाना संस्कृत ज्ञान)

1. एकल-पृष्ठ सारांश

751. [306] एकल विभाजन द्वारा ज्ञान का आधार: पाँच प्रकार की इंद्रिय चेतनाएँ मूल नहीं हैं; मूलों के साथ नहीं हैं; मूलों से संबद्ध नहीं हैं; कारण के साथ हैं; वातानुकूलित हैं; भौतिक नहीं हैं; सांसारिक हैं; दोषों की वस्तुएँ हैं; बंधनों की वस्तुएँ हैं; बाढ़ की वस्तुएँ हैं; बंधनों की वस्तुएँ हैं; बाधाओं की वस्तुएँ हैं; विकृतियों की वस्तुएँ हैं; आसक्ति की वस्तुएँ हैं; भ्रष्टाचार की वस्तुएँ हैं; न-अच्छी-न-बुरी हैं; वस्तुएँ हैं; मानसिक सहवर्ती नहीं हैं; परिणाम हैं; (लालसा और भ्रामक दृष्टि से) पकड़ी जाती हैं, आसक्ति की वस्तुएँ हैं; भ्रष्ट नहीं हैं, भ्रष्टाचार की वस्तुएँ हैं; * प्रारंभिक अनुप्रयोग के साथ नहीं हैं, निरंतर अनुप्रयोग के साथ हैं 9; 'प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, केवल निरंतर अनुप्रयोग' नहीं हैं; प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, निरंतर अनुप्रयोग के बिना हैं; उत्साह के साथ नहीं हैं; न तो प्रथम मार्ग से और न ही पश्चात मार्गों से त्यागे जाने योग्य; न तो प्रथम मार्ग से और न ही पश्चात मार्गों से त्यागे जाने योग्य कोई जड़; न तो संचयी और न ही विक्षेपी (सतत पुनर्जन्म और मृत्यु के); [307] न तो सात अलौकिक अवस्थाओं के हैं और न ही अंतिम अलौकिक अवस्था के; निम्न हैं; इच्छा के तल की विशेषता हैं; रूप के तल की विशेषता नहीं हैं; निराकार तल की विशेषता नहीं हैं; समाहित हैं (अर्थात सांसारिक हैं); 'समाहित नहीं' हैं (अर्थात अलौकिक नहीं हैं); कोई निश्चित (परिणामी समय) नहीं है; मुक्त करने की प्रवृत्ति नहीं रखते।

(इंद्रिय चेतना के पाँच प्रकार) इनके आधार उत्पन्न होते हैं; इनके विषय उत्पन्न होते हैं; इनके पूर्व-अस्तित्व वाले आधार होते हैं; इनके पूर्व-अस्तित्व वाले विषय होते हैं; इनके आंतरिक आधार होते हैं; इनके बाहरी विषय होते हैं; इनके अविघटित आधार होते हैं; इनके अविघटित विषय होते हैं; इनके विभिन्न आधार होते हैं; इनके विभिन्न विषय होते हैं; ये एक दूसरे के विषय का अनुभव नहीं करते; ये बिना ध्यान दिए उत्पन्न नहीं होते; ये बिना ध्यान दिए उत्पन्न नहीं होते; ये क्रमिक रूप से उत्पन्न नहीं होते, ये एक साथ उत्पन्न नहीं होते; ये एक दूसरे के तुरंत बाद उत्पन्न नहीं होते।

408

विश्लेषण की पुस्तक

पांच प्रकार की इंद्रिय चेतना संज्ञानात्मक नहीं है; पांच प्रकार की इंद्रिय चेतना से व्यक्ति केवल वस्तु के प्रवेश (अर्थात, प्रवेश) के अलावा किसी भी अवस्था में भेद नहीं कर पाता; पांच प्रकार की इंद्रिय चेतना के तुरंत बाद भी व्यक्ति किसी भी अवस्था में भेद नहीं कर पाता; पांच प्रकार की इंद्रिय चेतना से व्यक्ति कोई भी मुद्रा नहीं बनाता; पांच प्रकार की इंद्रिय चेतना के तुरंत बाद भी व्यक्ति कोई भी मुद्रा नहीं बनाता; पांच प्रकार की इंद्रिय चेतना से व्यक्ति कोई भी शारीरिक क्रिया या मौखिक क्रिया स्थापित नहीं करता; पांच प्रकार की इंद्रिय चेतना के तुरंत बाद भी व्यक्ति कोई भी शारीरिक क्रिया या मौखिक क्रिया स्थापित नहीं करता; पांच प्रकार की इंद्रिय चेतना से व्यक्ति कोई भी अच्छी या बुरी अवस्था नहीं करता; पांच प्रकार की इंद्रिय चेतना के तुरंत बाद भी व्यक्ति कोई भी अच्छी या बुरी अवस्था नहीं करता; [308] पांच प्रकार की इंद्रिय चेतना से व्यक्ति एकाग्रता से प्राप्त नहीं होता, उत्पन्न नहीं होता; पांच प्रकार की इंद्रिय चेतना से व्यक्ति का नाश नहीं होता, वह उत्पन्न नहीं होता (अर्थात, उसका पुनर्जन्म नहीं होता); पांच प्रकार की इंद्रिय चेतना के तुरंत बाद भी व्यक्ति न तो मरता है, न ही जन्म लेता है; पांच प्रकार की इंद्रिय चेतना से न तो नींद आती है, न जागता है, न ही सपने आते हैं; पांच प्रकार की इंद्रिय चेतना के तुरंत बाद भी व्यक्ति न तो सोता है, न जागता है, न ही सपने देखता है; ज्ञान के आधार की सच्ची प्रकृति की व्याख्या ही ज्ञान है। इस प्रकार एक प्रकार के विभाजन द्वारा ज्ञान का आधार बनता है।

2. दो भागों में सारांश

752. ज्ञान का दो भागों में विभाजन: सांसारिक ज्ञान; अलौकिक ज्ञान। एक मार्ग से बोधगम्य ज्ञान; दूसरे मार्ग से बोधगम्य न होने वाला ज्ञान। दोषों से संबंधित ज्ञान; दोषों से असंबंधित ज्ञान। दोषों से असंबद्ध ज्ञान, दोषों का विषय है; दोषों से असंबद्ध ज्ञान, दोषों का विषय नहीं है। बंधनों से संबंधित ज्ञान; बंधनों से असंबद्ध ज्ञान। बंधनों से असंबद्ध ज्ञान, बंधनों का विषय है; बंधनों से असंबद्ध ज्ञान, बंधनों का विषय नहीं है। बंधनों से संबंधित ज्ञान; बंधनों से असंबद्ध ज्ञान।

ज्ञान का विश्लेषण

409

जो ज्ञान संबंधों से जुड़ा होता है, वही संबंधों का विषय होता है; जो ज्ञान संबंधों से जुड़ा नहीं होता, वह संबंधों का विषय नहीं होता।

वह ज्ञान जो बाढ़ का विषय है; वह ज्ञान जो बाढ़ का विषय नहीं है। वह ज्ञान जो बाढ़ से संबंधित नहीं है, बाढ़ का विषय है; वह ज्ञान जो बाढ़ से संबंधित नहीं है, बाढ़ का विषय नहीं है। वह ज्ञान जो बंधनों का विषय है; वह ज्ञान जो बंधनों का विषय नहीं है। वह ज्ञान जो बंधनों से संबंधित नहीं है, बंधनों का विषय है; वह ज्ञान जो बंधनों से संबंधित नहीं है, बंधनों का विषय नहीं है। वह ज्ञान जो बाधाओं का विषय है; वह ज्ञान जो बाधाओं का विषय नहीं है। वह ज्ञान जो बाधाओं से संबंधित नहीं है, बाधाओं का विषय है; वह ज्ञान जो बाधाओं से संबंधित नहीं है, बाधाओं का विषय नहीं है। [309] वह ज्ञान जो विकृतियों का विषय है; वह ज्ञान जो विकृतियों का विषय नहीं है। वह ज्ञान जो विकृतियों से संबंधित नहीं है, विकृतियों का विषय है; वह ज्ञान जो विकृतियों से जुड़ा नहीं है, विकृतियों का विषय नहीं होता। वह ज्ञान जो ग्रहण किया जा सकता है; वह ज्ञान जो ग्रहण नहीं किया जा सकता। वह ज्ञान जो आसक्ति का विषय है; वह ज्ञान जो आसक्ति

का विषय नहीं है। वह ज्ञान जो आसक्ति से जुड़ा नहीं है, आसक्ति का विषय है; वह ज्ञान जो आसक्ति से जुड़ा नहीं है, आसक्ति का विषय नहीं है।

वह ज्ञान जो विकारों का विषय है; वह ज्ञान जो विकारों का विषय नहीं है। वह ज्ञान जो विकारों से संबद्ध नहीं है, विकारों का विषय है; वह ज्ञान जो विकारों से संबद्ध नहीं है, विकारों का विषय नहीं है। वह ज्ञान जो प्रारंभिक अभ्यास से युक्त है; वह ज्ञान जो प्रारंभिक अभ्यास से रहित है। वह ज्ञान जो निरंतर अभ्यास से युक्त है; वह ज्ञान जो निरंतर अभ्यास से रहित है। वह ज्ञान जो उत्साह से युक्त है; वह ज्ञान जो उत्साह से रहित है। वह ज्ञान जो उत्साह से युक्त है; वह ज्ञान जो उत्साह से युक्त नहीं है। वह ज्ञान जो आनंद से युक्त है; वह ज्ञान जो आनंद से युक्त नहीं है। वह ज्ञान जो उदासीनता से युक्त है; वह ज्ञान जो उदासीनता से युक्त नहीं है। वह ज्ञान जो इच्छा के तल की विशेषता है; वह ज्ञान जो इच्छा के तल की विशेषता नहीं है। वह ज्ञान जो रूप के तल की विशेषता है; वह ज्ञान जो रूप के तल की विशेषता नहीं है। वह ज्ञान जो निराकार तल की विशेषता है; वह ज्ञान जो निराकार जगत की विशेषता नहीं है।

वह ज्ञान जो समाहित है (अर्थात सांसारिक है); वह ज्ञान जो समाहित नहीं है (अर्थात अलौकिक है)। वह ज्ञान जो मुक्ति की ओर प्रवृत्त है; वह ज्ञान जो मुक्ति की ओर प्रवृत्त नहीं है। वह ज्ञान जिसका (परिणामी समय) निश्चित है; वह ज्ञान जिसका (परिणामी समय) निश्चित नहीं है। वह ज्ञान जो पार किया जा सकता है; वह ज्ञान जो पार नहीं किया जा सकता है। वह ज्ञान जो परिणाम का कारण है; वह ज्ञान जो कारण का परिणाम है। इस प्रकार दोहरे विभाजन के माध्यम से ज्ञान का आधार है। [310]

3. त्रिगुणात्मक सारांश

753. ज्ञान का त्रिविध विभाजन: चिंतन द्वारा प्राप्त ज्ञान; श्रवण द्वारा प्राप्त ज्ञान; विकास द्वारा प्राप्त ज्ञान; दान द्वारा प्राप्त ज्ञान; नैतिकता द्वारा प्राप्त ज्ञान; विकास द्वारा प्राप्त ज्ञान; उच्चतर नैतिकता में निहित ज्ञान; उच्चतर चेतना में निहित ज्ञान; उच्चतर ज्ञान में निहित ज्ञान। (ज्ञान में) निपुणता से लाभ; (ज्ञान में) निपुणता से हानि; विधि की निपुणता। परिणाम उत्पन्न करने वाला ज्ञान; परिणाम उत्पन्न न करने वाला ज्ञान; परिणाम उत्पन्न न करने वाला ज्ञान। ग्रहण किया गया ज्ञान आसक्तियों का विषय है; ग्रहण न किया गया ज्ञान आसक्तियों का विषय है; ग्रहण न किया गया ज्ञान आसक्तियों का विषय नहीं है। प्रारंभिक अभ्यास से प्राप्त ज्ञान, निरंतर अभ्यास से प्राप्त ज्ञान; प्रारंभिक अभ्यास के बिना केवल निरंतर अभ्यास से प्राप्त ज्ञान; प्रारंभिक अभ्यास के बिना निरंतर अभ्यास के बिना ज्ञान।

उत्साह से युक्त ज्ञान; आनंद से युक्त ज्ञान; उदासीनता से युक्त ज्ञान। संचयी ज्ञान; विक्षेपी ज्ञान; न संचयी और न विक्षेपी ज्ञान। सात अलौकिक अवस्थाओं का ज्ञान; अंतिम अलौकिक अवस्था का ज्ञान; न तो सात अलौकिक अवस्थाओं का और न ही अंतिम अलौकिक अवस्था का ज्ञान। निम्न स्तर का ज्ञान; उदात्त ज्ञान; असीम ज्ञान। निम्न विषय वाला ज्ञान; उदात्त विषय वाला ज्ञान; असीम विषय वाला ज्ञान। पथ को विषय मानकर चलने वाला ज्ञान; पथ को कारण मानकर चलने वाला ज्ञान; पथ को प्रमुख कारक मानकर चलने वाला ज्ञान। उत्पन्न ज्ञान; उत्पन्न न होने वाला ज्ञान; उत्पन्न होने के लिए बाध्य ज्ञान। भूतकाल का ज्ञान; भविष्यकाल का ज्ञान; वर्तमान काल का ज्ञान। [311] भूतकाल विषय वाला ज्ञान;

411

वह ज्ञान जिसका भविष्य काल निर्धारित है; वह ज्ञान जिसका वर्तमान काल निर्धारित है। वह ज्ञान जो आंतरिक है; वह ज्ञान जो बाह्य है; वह ज्ञान जो आंतरिक और बाह्य दोनों है। वह ज्ञान जिसका आंतरिक कर्म निर्धारित है; वह ज्ञान जिसका बाह्य कर्म निर्धारित है; वह ज्ञान जिसका आंतरिक और बाह्य दोनों कर्म निर्धारित हैं।

प्रारंभिक अभ्यास से प्राप्त ज्ञान, निरंतर अभ्यास से प्राप्त परिणामदायी ज्ञान; परिणाम उत्पन्न करने वाला ज्ञान; या न तो परिणाम उत्पन्न करने वाला ज्ञान। जो ज्ञान ग्रहण किया जाता है, वह आसक्तियों का विषय होता है; जो ज्ञान ग्रहण नहीं किया जाता, वह आसक्तियों का विषय होता है; जो ज्ञान ग्रहण नहीं किया जाता, वह आसक्तियों का विषय नहीं होता। उत्साह से प्राप्त ज्ञान; आनंद से प्राप्त ज्ञान; उदासीनता से प्राप्त ज्ञान। संचयी ज्ञान; विक्षेपी ज्ञान; न संचयी ज्ञान और न ही विक्षेपी ज्ञान। सात अलौकिक अवस्थाओं का ज्ञान; अंतिम अलौकिक अवस्था का ज्ञान; न तो सात अलौकिक अवस्थाओं का ज्ञान और न ही अंतिम अलौकिक अवस्था का ज्ञान। निम्न स्तर का ज्ञान; उदात्त स्तर का ज्ञान; असीम स्तर का ज्ञान। मार्ग को अपना विषय बनाना; मार्ग को अपना कारण बनाना; मार्ग को अपना प्रमुख कारक बनाना। उत्थान प्राप्त ज्ञान। जो उत्पन्न नहीं हुआ है; जो उत्पन्न होना ही है। [312] वह भूतकाल है; वह भविष्यकाल है; वह वर्तमानकाल है। उसका भूतकाल कर्म है; उसका भविष्यकाल कर्म है; उसका वर्तमान कर्म है। वह आंतरिक है; वह बाह्य है; वह आंतरिक और बाह्य दोनों है। उसका आंतरिक कर्म है; उसका बाह्य कर्म है; उसका आंतरिक और बाह्य दोनों कर्म हैं।

बिना आरंभिक अभ्यास के, केवल निरंतर अभ्यास से प्राप्त ज्ञान ही परिणामदायी होता है; जो परिणाम उत्पन्न करता है; जो न तो परिणाम उत्पन्न करता है और न ही परिणाम उत्पन्न करता है। जो ग्रहण किया जाता है, वह आसक्तियों का विषय होता है; जो ग्रहण नहीं किया जाता, वह आसक्तियों का विषय होता है; जो ग्रहण नहीं किया जाता, वह आसक्तियों का विषय नहीं होता। जो संचयी होता है; जो विक्षेपी होता है; जो न तो संचयी होता है और न ही विक्षेपी। जो सात अलौकिक अवस्थाओं का होता है; जो अंतिम अलौकिक अवस्था का होता है; जो न तो सात अलौकिक अवस्थाओं का होता है और न ही अंतिम अलौकिक अवस्था का। जो उदय हुआ है; जो उदय नहीं हुआ है; जो उदय होने के लिए बाध्य है। जो भूतकाल है; जो भविष्यकाल है; जो वर्तमान है। जो आंतरिक है; जो बाह्य है; जो आंतरिक और बाह्य दोनों है।

बिना आरंभिक अभ्यास के, बिना निरंतर अभ्यास के, जो ज्ञान परिणामित होता है; जो परिणाम उत्पन्न करता है; जो न तो परिणामित होता है और न ही परिणाम उत्पन्न करता है। जो ज्ञान ग्रहण किया जाता है, वह आसक्तियों का विषय होता है; जो ज्ञान ग्रहण नहीं किया जाता, वह भी आसक्तियों का विषय होता है; जो ज्ञान ग्रहण नहीं किया जाता, वह भी आसक्तियों का विषय नहीं होता।

412

विश्लेषण की पुस्तक

आर

उत्साह से युक्त; आनंद से युक्त; उदासीनता से युक्त। संचयी; विक्षेपी; न संचयी और न विक्षेपी। [313] सात अलौकिक अवस्थाओं में से एक; अंतिम अलौकिक अवस्था में से एक; न तो सात अलौकिक अवस्थाओं में से एक और न ही अंतिम अलौकिक अवस्था में से

एक। निम्न विषय है; उदात्त विषय है; असीम विषय है। पथ को अपना विषय बनाना; पथ को अपना कारण बनाना; पथ को अपना प्रमुख कारक बनाना। उदय हुआ है; उदय नहीं हुआ है; उदय होना ही है। भूतकाल है; भविष्यकाल है; वर्तमान काल है। भूतकाल का विषय है; भविष्यकाल का विषय है; वर्तमान काल का विषय है। आंतरिक है; बाह्य है; आंतरिक और बाह्य दोनों है। आंतरिक विषय है; बाह्य विषय है; आंतरिक और बाह्य दोनों विषय हैं।

उत्साह से युक्त ज्ञान, परिणामी आनंद से युक्त ज्ञान; जो परिणाम उत्पन्न करता है; जो न तो परिणाम उत्पन्न करता है और न ही परिणाम उत्पन्न करता है। जो ग्रहण किया जाता है, वह आसक्तियों का विषय है; जो ग्रहण नहीं किया जाता, वह आसक्तियों का विषय है; जो ग्रहण नहीं किया जाता, वह आसक्तियों का विषय नहीं है। जो प्रारंभिक अभ्यास से युक्त है, जो निरंतर अभ्यास से युक्त है; जो प्रारंभिक अभ्यास के बिना, केवल निरंतर अभ्यास से युक्त है; जो प्रारंभिक अभ्यास के बिना, निरंतर अभ्यास के बिना है। जो संचयी है; जो विक्षेपी है; जो न तो संचयी है और न ही विक्षेपी है। जो सात अलौकिक अवस्थाओं का है; जो अंतिम अलौकिक अवस्था का है; जो न तो सात अलौकिक अवस्थाओं का है और न ही अंतिम अलौकिक अवस्था का है। जो निम्न है; जो उदात्त है; जो अतुलनीय है। [314] जिसका निम्न विषय है; जिसका उदात्त विषय है; जिसका अतुलनीय विषय है। जिसका विषय पथ है; जिसका कारण पथ है; जिसमें पथ प्रमुख कारक है। जो उत्पन्न हुआ है; जो उत्पन्न नहीं हुआ है; जो उत्पन्न होना ही है। जो भूतकाल है; जो भविष्यकाल है; जो वर्तमान काल है। जिसका भूतकाल कर्म है; जिसका भविष्यकाल कर्म है; जिसका वर्तमान कर्म है। जो आंतरिक है; जो बाह्य है; जो आंतरिक और बाह्य दोनों है। जिसका आंतरिक कर्म है; जिसका बाह्य कर्म है; जिसका आंतरिक और बाह्य दोनों कर्म हैं।

वह ज्ञान जो उदासीनता से युक्त है, जो परिणाम उत्पन्न करता है; जो परिणाम उत्पन्न करता है; जो न तो परिणाम उत्पन्न करता है और न ही परिणाम उत्पन्न करता है। जो ग्रहण किया जा सकता है, वह आसक्तियों का विषय है; जो ग्रहण नहीं किया जा सकता, वह आसक्तियों का विषय है; जो ग्रहण नहीं किया जा सकता, वह आसक्तियों का विषय नहीं है। जो संचयी है; जो विक्षेपी है; जो न तो संचयी है और न ही विक्षेपी है।

ज्ञान का विश्लेषण

413

सात अलौकिक अवस्थाओं में से; वह अंतिम अलौकिक अवस्था है; वह न तो सात अलौकिक अवस्थाओं में से है और न ही अंतिम अलौकिक अवस्था में। वह निम्न है; वह उदात्त है; वह असीम है। उसका निम्न उद्देश्य है; उसका उदात्त उद्देश्य है; उसका असीम उद्देश्य है। उसका मार्ग उद्देश्य है; उसका मार्ग कारण है; उसका मार्ग प्रमुख कारक है। [315] वह उत्पन्न हुआ है; वह उत्पन्न नहीं हुआ है; वह उत्पन्न होने के लिए बाध्य है। वह भूतकाल है; वह भविष्यकाल है; वह वर्तमान है। उसका भूतकाल उद्देश्य है; उसका भविष्यकाल उद्देश्य है; उसका वर्तमान उद्देश्य है। वह आंतरिक है; वह बाह्य है; वह आंतरिक और बाह्य दोनों है। उसका आंतरिक उद्देश्य है; उसका बाह्य उद्देश्य है; उसका आंतरिक और बाह्य दोनों उद्देश्य हैं। इस प्रकार तीन प्रकार के विभाजन द्वारा ज्ञान का आधार है।

4. चार गुना सारांश

754. ज्ञान का आधार चार भागों में विभाजित है: यह ज्ञान कि कर्म स्वयं का अधिकार है; सत्य के अनुरूप ज्ञान; मार्ग का ज्ञान; फल का ज्ञान। दुख का ज्ञान; दुख के कारण का ज्ञान; दुख के निवारण का ज्ञान; दुख के निवारण की ओर ले जाने वाले मार्ग का ज्ञान। इच्छा के तल का विशिष्ट ज्ञान; रूप के तल का विशिष्ट ज्ञान; निराकार तल का विशिष्ट ज्ञान; असंबद्ध ज्ञान (अर्थात् अलौकिक)। (अलौकिक) अवस्थाओं का ज्ञान; (उससे) प्राप्त होने वाला ज्ञान; भेदक ज्ञान; पारंपरिक ज्ञान। संचय के लिए ज्ञान है, फैलाव के लिए नहीं; फैलाव के लिए ज्ञान है, संचय के लिए नहीं; संचय और फैलाव दोनों के लिए ज्ञान है; ऐसा ज्ञान है जो न तो संचय के लिए है और न ही फैलाव के

लिए। घृणा के लिए ज्ञान है, बोध के लिए नहीं; [316] बोध के लिए ज्ञान है, घृणा के लिए नहीं; घृणा और ज्ञान प्राप्ति दोनों के लिए ज्ञान है; न तो घृणा के लिए ज्ञान है और न ही ज्ञान प्राप्ति के लिए। क्षय से संबंधित ज्ञान; स्थिरता से संबंधित ज्ञान; विशिष्टता से संबंधित ज्ञान; गहन ज्ञान।

चार विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ। चार अभ्यास। चार उद्देश्य। वृद्धावस्था और मृत्यु का ज्ञान; वृद्धावस्था और मृत्यु के कारण का ज्ञान; वृद्धावस्था और मृत्यु के निवारण का ज्ञान; वृद्धावस्था और मृत्यु के निवारण की ओर ले जाने वाले मार्ग का ज्ञान। जन्म का ज्ञान। :P: विकास का ज्ञान। :P: ज्ञान

414

विश्लेषण की पुस्तक

आसक्ति का ज्ञान। :P: लालसा का ज्ञान। :P: संवेदना का ज्ञान। :P: संपर्क का ज्ञान। :P: छह आधारों का ज्ञान। :P: मन और पदार्थ का ज्ञान। :P: चेतना का ज्ञान। :P: कर्मों का ज्ञान; कर्मों के कारण का ज्ञान; कर्मों के निवारण का ज्ञान; कर्मों के निवारण की ओर ले जाने वाले मार्ग का ज्ञान। इस प्रकार ज्ञान का आधार चार भागों में विभाजित है।

P = अंतिम उदाहरण के सामान्य रूप में प्रत्येक को पूरा करें।

5. पंचस्तरीय सारांश

755. ज्ञान का आधार पंचांगों में विभाजित है: सही एकाग्रता जिसमें पंचांग तत्व होते हैं; सही एकाग्रता जिसमें पंचांग ज्ञान होते हैं। इस प्रकार ज्ञान का आधार पंचांगों में विभाजित है।

6. छह गुना सारांश

756. छह प्रकार के विभाजन द्वारा ज्ञान का आधार: छह उच्च ज्ञानों में ज्ञान। इस प्रकार छह प्रकार के विभाजन द्वारा ज्ञान का आधार है। [317]

7. सात गुना सारांश

757. ज्ञान का आधार सात भागों में विभाजित: ज्ञान के सतहत्तर आधार। इस प्रकार ज्ञान का आधार सात भागों में विभाजित है।

8. आठ गुना सारांश

758. ज्ञान का आधार अष्टांग विभाजन द्वारा: चारों मार्गों और चारों फलों में ज्ञान। इस प्रकार अष्टांग विभाजन द्वारा ज्ञान का आधार है।

9. नौ गुना सारांश

759. नौ भागों में विभाजित ज्ञान का आधार: उपलब्धियों में नौ क्रमिक निवासों में ज्ञान। इस प्रकार नौ भागों में विभाजित ज्ञान का आधार है।

ज्ञान का विश्लेषण

415

10. दस गुना सारांश

760. ज्ञान का आधार दस भागों में विभाजित है; तथागत की दस 'तथागत शक्तियाँ'; इन शक्तियों से युक्त तथागत अग्रणी स्थान का दावा करते हैं; सभाओं में सिंह के समान गर्जना करते हैं; (शिक्षा के) सर्वोच्च चक्र को गतिमान करते हैं। ये दस शक्तियाँ क्या हैं? इसमें तथागत कारण को कारण के रूप में, कारण के अभाव को कारण के अभाव के रूप में समझते हैं; यह तथागत की एक 'तथागत शक्ति' है। इसी शक्ति के कारण तथागत अग्रणी स्थान का दावा करते हैं; सभाओं में सिंह के समान गर्जना करते हैं; सर्वोच्च चक्र को गतिमान करते हैं। (1)

तथागत फिर से, कारण और मूल के रूप में, भूतकाल, भविष्यकाल और वर्तमान में किए गए कर्मों के परिणाम को यथावत समझते हैं; जिस शक्ति से तथागत कारण और मूल के रूप में, भूतकाल, भविष्यकाल और वर्तमान में किए गए कर्मों के परिणाम को यथावत समझते हैं; यही तथागत की 'तथागत शक्ति' है। इसी शक्ति के कारण तथागत अग्रणी स्थान का दावा करते हैं; सभाओं में सिंह की गर्जना करते हैं; सर्वोच्च चक्र को गति प्रदान करते हैं। (2)

तथागत फिर से, जैसा कि वह वास्तव में है, सभी (भाग्य) की ओर ले जाने वाले मार्ग को समझते हैं; जिसके द्वारा तथागत जैसा कि वह वास्तव में है, सभी (भाग्य) की ओर ले जाने वाले मार्ग को समझते हैं; यही तथागत की 'तथागत शक्ति' है। इसी शक्ति के कारण तथागत अग्रणी स्थान का दावा करते हैं; सभाओं में सिंह की गर्जना करते हैं; सर्वोच्च चक्र को घुमाते हैं। (3)

तथागत फिर से उस संसार को, जैसा वह वास्तव में है, अनेक तत्वों से युक्त, विभिन्न तत्वों से युक्त, भलीभांति समझते हैं; जिस शक्ति से तथागत उस संसार को, जैसा वह वास्तव में है, अनेक तत्वों से युक्त, विभिन्न तत्वों से युक्त, भलीभांति समझते हैं; यही तथागत की 'तथागत शक्ति' है। इसी शक्ति के कारण तथागत अग्रणी स्थान का दावा करते हैं; सभाओं में सिंह के समान गर्जना करते हैं; सर्वोच्च चक्र को गतिमान करते हैं। (4)

तथागत प्राणियों के विभिन्न स्वभावों को यथावत रूप में समझते हैं; जिस शक्ति से तथागत प्राणियों के विभिन्न स्वभावों को यथावत रूप में समझते हैं; [318] यही तथागत की 'तथागत शक्ति' है। इसी शक्ति के कारण तथागत अग्रणी स्थान का दावा करते हैं; सभाओं में सिंह की गर्जना करते हैं; सर्वोच्च चक्र को गतिमान करते हैं। (5)

तथागत फिर से दूसरों की नियंत्रण क्षमताओं में होने वाले सुधार और गिरावट को यथावत समझते हैं।

416

विश्लेषण की पुस्तक

अन्य प्राणियों, अन्य व्यक्तियों की नियंत्रण शक्तियों में होने वाले सुधार और गिरावट को तथागत जिस प्रकार से समझते हैं, वह तथागत की 'तथागत शक्ति' है। इसी शक्ति के कारण तथागत अग्रणी स्थान का दावा करते हैं; सभाओं में सिंह की गर्जना करते हैं, सर्वोच्च चक्र को गति प्रदान करते हैं। (6)

तथागत फिर से, जैसा कि वास्तव में है, भ्रष्टाचार, शुद्धिकरण, ध्यान से उद्भव, मुक्ति, एकाग्रता और प्राप्ति को समझते हैं; जिसके द्वारा तथागत भ्रष्टाचार, शुद्धिकरण, ध्यान से उद्भव, मुक्ति, एकाग्रता और प्राप्ति को समझते हैं; यही तथागत की 'तथागत शक्ति' है। इसी शक्ति के कारण तथागत अग्रणी स्थान का दावा करते हैं; सभाओं में सिंह की गर्जना करते हैं; सर्वोच्च चक्र को गति प्रदान करते हैं। (7)

तथागत फिर से पूर्व जन्म की स्मृति को यथावत रूप में समझते हैं; जिस शक्ति से तथागत पूर्व जन्म की स्मृति को यथावत रूप में समझते हैं, वही तथागत की 'तथागत शक्ति' है। इसी शक्ति के कारण तथागत अग्रणी स्थान का दावा करते हैं; सभाओं में सिंह के समान गर्जना करते हैं; सर्वोच्च चक्र को गति प्रदान करते हैं। (8)

तथागत प्राणियों के नश्वर जन्म और पुनर्जन्म को यथावत समझते हैं; जिस शक्ति से तथागत प्राणियों के नश्वर जन्म और पुनर्जन्म को यथावत समझते हैं, वही तथागत की 'तथागत शक्ति' है। इसी शक्ति के कारण तथागत अग्रणी स्थान का दावा करते हैं; सभाओं में सिंह के समान गर्जना करते हैं; और सर्वोच्च चक्र को गतिमान करते हैं। (9)

तथागत अशुद्धियों के नाश को यथावत रूप से समझते हैं; जिस शक्ति से तथागत अशुद्धियों के नाश को यथावत रूप से समझते हैं, वही तथागत की 'तथागत शक्ति' है। इसी शक्ति के कारण तथागत अग्रणी स्थान का दावा करते हैं; सभाओं में सिंह के समान गर्जना करते हैं; सर्वोच्च चक्र को गति प्रदान करते हैं। ये तथागत की दस 'तथागत शक्तियाँ' हैं। इन्हीं शक्तियों से संपन्न होकर तथागत अग्रणी स्थान का दावा करते हैं; सभाओं में सिंह के समान गर्जना करते हैं; सर्वोच्च चक्र को गति प्रदान करते हैं। (10)

इस प्रकार दस गुना विभाजन द्वारा ज्ञान का आधार बनता है।

(यहाँ सारांश समाप्त होता है)

[319]

ज्ञान का विश्लेषण

417

1. एकल-गुना प्रदर्शनी

761. पाँच प्रकार की इंद्रिय चेतनाएँ हमेशा मूल नहीं होतीं; हमेशा मूलों के साथ नहीं होतीं; हमेशा मूलों से संबद्ध नहीं होतीं; हमेशा कारण से जुड़ी होती हैं; हमेशा वातानुकूलित होती हैं; हमेशा भौतिक नहीं होतीं; हमेशा सांसारिक होती हैं; हमेशा दोषों की वस्तुएँ होती हैं; हमेशा बंधनों की वस्तुएँ होती हैं; हमेशा बाढ़ की वस्तुएँ होती हैं; हमेशा बंधनों की वस्तुएँ होती हैं; हमेशा बाधाओं की वस्तुएँ होती हैं; हमेशा विकृतियों की वस्तुएँ होती हैं; हमेशा आसक्ति की वस्तुएँ होती हैं; हमेशा भ्रष्टाचार की वस्तुएँ होती हैं; हमेशा न तो अच्छी होती हैं और न ही बुरी; हमेशा वस्तुओं से युक्त होती हैं; हमेशा मानसिक सहवर्ती नहीं होतीं; हमेशा परिणाम होती हैं; हमेशा पकड़ी जाती हैं, आसक्ति की वस्तुएँ होती हैं; हमेशा भ्रष्ट नहीं होतीं, भ्रष्टाचार की वस्तुएँ होती हैं; हमेशा 'प्रारंभिक प्रयोग के साथ नहीं होतीं, निरंतर प्रयोग के साथ होती हैं'; हमेशा 'प्रारंभिक प्रयोग के बिना, केवल निरंतर प्रयोग' नहीं होतीं; हमेशा 'प्रारंभिक प्रयोग के बिना, निरंतर प्रयोग के बिना' नहीं होतीं; हमेशा 'उत्साह के साथ नहीं होतीं'; वे न तो प्रथम मार्ग से और न ही पश्चात के मार्गों से परित्याग किए जा सकते हैं; वे न तो संचयी हैं और न ही विक्षेपणशील; वे न तो सात अलौकिक अवस्थाओं के हैं और न ही अंतिम अलौकिक अवस्था के; वे निम्न हैं; वे इच्छा के तल के विशिष्ट हैं; वे रूप के तल के विशिष्ट नहीं हैं; वे निराकार तल के विशिष्ट नहीं हैं; वे समाहित हैं (अर्थात सांसारिक हैं); वे समाहित नहीं हैं (अर्थात अलौकिक नहीं हैं); उनका कोई निश्चित (परिणामी समय) नहीं है; वे मुक्त होने की प्रवृत्ति नहीं रखते; उनका उद्‌भव मन चेतना द्वारा ज्ञात है; वे अनित्य हैं; वे वृद्धावस्था के अधीन हैं।

762. पाँच प्रकार की इंद्रिय चेतना 'के आधार उत्पन्न हुए हैं, उसके विषय उत्पन्न हुए हैं' का अर्थ है: वे (प्रत्येक) एक उत्पन्न आधार पर, एक उत्पन्न विषय पर उत्पन्न होते हैं।

'पूर्व-मौजूद आधार हैं, पूर्व-मौजूद वस्तुएं हैं 5

इसका अर्थ है: वे (प्रत्येक) एक पूर्व-मौजूद आधार पर, एक पूर्व-मौजूद वस्तु पर उत्पन्न होते हैं।

'आंतरिक आधार हैं, बाह्य वस्तुएँ हैं' का अर्थ है: पाँच प्रकार की इंद्रिय चेतना के आधार आंतरिक हैं, वस्तुएँ बाह्य हैं।

'अविघटित आधार हैं, अविघटित हैं'

418

विश्लेषण की पुस्तक

'वस्तुओं' का अर्थ है: वे (प्रत्येक) एक अविघटित आधार पर, एक अविघटित वस्तु पर उत्पन्न होती हैं।

'अलग-अलग आधार हैं, अलग-अलग लक्ष्य हैं' का अर्थ है: नेत्र चेतना का आधार और लक्ष्य (एक चीज) है; कान चेतना का आधार और लक्ष्य दूसरी चीज है; नाक चेतना का आधार और लक्ष्य दूसरी चीज है; जीभ चेतना का आधार और लक्ष्य दूसरी चीज है; शरीर चेतना का आधार और लक्ष्य तीसरी चीज है।

763. 'एक दूसरे के विषय का अनुभव न करना' का अर्थ है: कान चेतना, आँख चेतना के विषय का अनुभव नहीं करती; आँख चेतना भी कान चेतना के विषय का अनुभव नहीं करती। नाक चेतना, आँख चेतना के विषय का अनुभव नहीं करती; आँख चेतना भी नाक चेतना के विषय का अनुभव नहीं करती। जीभ चेतना, आँख चेतना के विषय का अनुभव नहीं करती; [320] आँख चेतना भी जीभ

चेतना के विषय का अनुभव नहीं करती। शरीर चेतना, आँख चेतना के विषय का अनुभव नहीं करती; आँख चेतना भी शरीर चेतना के विषय का अनुभव नहीं करती। कान चेतना का: P: नाक चेतना का: P: जीभ चेतना का: P: आँख चेतना, शरीर चेतना के विषय का अनुभव नहीं करती; शरीर चेतना भी आँख चेतना के विषय का अनुभव नहीं करती। कान चेतना, शरीर चेतना के विषय का अनुभव नहीं करती; शरीर चेतना भी कान चेतना के विषय का अनुभव नहीं करती। नाक चेतना, शरीर चेतना के विषय का अनुभव नहीं करती; शरीर चेतना भी नाक चेतना के विषय का अनुभव नहीं करती। जीभ चेतना, शरीर चेतना के विषय का अनुभव नहीं करती; शरीर चेतना जीभ चेतना के विषय का भी अनुभव नहीं करती है।

P = प्रत्येक को अंतिम उदाहरण के समान सामान्य रूप में निपटाया जाना चाहिए।

764. 'बिना ध्यान दिए उत्पन्न नहीं होते' का अर्थ है: वे उसी व्यक्ति में उत्पन्न होते हैं जिसे ध्यान होता है।

'बिना ध्यान दिए उत्पन्न नहीं होते' का अर्थ है: वे उसी में उत्पन्न होते हैं जो ध्यान देता है।

'लगातार उत्पन्न नहीं होते' का अर्थ है: वे क्रमानुसार उत्पन्न नहीं होते।

'एक साथ उत्पन्न नहीं होते' का अर्थ है: वे एक ही क्षण में उत्पन्न नहीं होते।

ज्ञान का विश्लेषण

419

765. 'एक दूसरे के तुरंत बाद उत्पन्न न हों'

इसका अर्थ है: नेत्र चेतना के उत्पन्न होते ही, कान चेतना उत्पन्न नहीं होती; कान चेतना के उत्पन्न होते ही, नेत्र चेतना भी उत्पन्न नहीं होती। नेत्र चेतना के उत्पन्न होते ही, नाक चेतना उत्पन्न नहीं होती; नाक चेतना के उत्पन्न होते ही, नेत्र चेतना भी उत्पन्न नहीं होती। नेत्र चेतना के उत्पन्न होते ही, जीभ चेतना उत्पन्न नहीं होती; जीभ चेतना के उत्पन्न होते ही, नेत्र चेतना भी उत्पन्न नहीं होती। नेत्र चेतना के उत्पन्न होते ही, शरीर चेतना उत्पन्न नहीं होती; शरीर चेतना के उत्पन्न होते ही, नेत्र चेतना भी उत्पन्न नहीं होती। कान चेतना के बारे में: P : नाक चेतना के बारे में: P : जीभ चेतना के बारे में: P : शरीर चेतना के उत्पन्न होते ही, नेत्र चेतना उत्पन्न नहीं होती; नेत्र चेतना के उत्पन्न होते ही, शरीर चेतना भी उत्पन्न नहीं होती। शरीर चेतना के उत्पन्न होते ही, कान चेतना उत्पन्न नहीं होती; कान चेतना के उत्पन्न होते ही, शरीर चेतना भी उत्पन्न नहीं होती। शरीर चेतना के उत्पन्न होने के तुरंत बाद, नाक चेतना उत्पन्न नहीं होती; नाक चेतना के उत्पन्न होने के तुरंत बाद, [321] शरीर चेतना भी उत्पन्न नहीं होती। शरीर चेतना के उत्पन्न होने के तुरंत बाद, जीभ चेतना उत्पन्न नहीं होती; जीभ चेतना के उत्पन्न होने के तुरंत बाद, शरीर चेतना भी उत्पन्न नहीं होती।

P = प्रत्येक को अंतिम उदाहरण के समान सामान्य रूप में निपटाया जाना चाहिए।

766. 'इंद्रिय चेतना के पाँच प्रकार संज्ञानात्मक नहीं हैं' का अर्थ है: इंद्रिय चेतना के पाँच प्रकारों के लिए (वस्तु की ओर) मुड़ना, संज्ञान, ध्यान या एकाग्रता नहीं होती है।

'पांच प्रकार की इंद्रिय चेतना से कोई भी अवस्था भेद नहीं कर सकता' का अर्थ है: पांच प्रकार की इंद्रिय चेतना से कोई भी अवस्था भेद नहीं कर सकता।

'केवल गिरने के अलावा' का अर्थ है: केवल गिरने के अलावा (अर्थात वस्तु का प्रवेश)।

'इंद्रिय चेतना के पाँच प्रकारों के तुरंत बाद भी कोई अवस्था भेद नहीं कर पाता' का अर्थ है: इंद्रिय चेतना के पाँच प्रकारों के तुरंत बाद भी मन के तत्व से भी कोई अवस्था भेद नहीं कर पाता।

420

विश्लेषण की पुस्तक

(7

'पांच प्रकार की इंद्रिय चेतना से व्यक्ति कोई भी मुद्रा नहीं बनाता है' का अर्थ है: पांच प्रकार की इंद्रिय चेतना से व्यक्ति कोई भी मुद्रा नहीं बनाता है, चाहे वह चलना हो, खड़ा होना हो, बैठना हो या लेटना हो।

'पांचों प्रकार की इंद्रिय चेतना के तुरंत बाद भी व्यक्ति किसी भी प्रकार की मुद्रा नहीं अपनाता है' का अर्थ है: पांचों प्रकार की इंद्रिय चेतना के तुरंत बाद व्यक्ति किसी भी प्रकार की मुद्रा नहीं अपनाता है, चाहे वह चलना हो, खड़ा होना हो, बैठना हो या लेटना हो, यहां तक कि मन से भी नहीं।

'पांच प्रकार की इंद्रिय चेतना द्वारा कोई शारीरिक क्रिया या मौखिक क्रिया स्थापित नहीं होती' का अर्थ है: पांच प्रकार की इंद्रिय चेतना द्वारा कोई शारीरिक क्रिया या मौखिक क्रिया स्थापित नहीं होती।

'पांच प्रकार की इंद्रिय चेतना के तुरंत बाद भी व्यक्ति न तो शारीरिक क्रिया करता है, न ही मौखिक क्रिया करता है' का अर्थ है: पांच प्रकार की इंद्रिय चेतना के तुरंत बाद व्यक्ति न तो शारीरिक क्रिया करता है, न ही मौखिक क्रिया करता है, यहां तक कि मन के तत्व से भी नहीं।

'पांच प्रकार की इंद्रिय चेतना से व्यक्ति किसी भी प्रकार की अच्छी या बुरी अवस्था का प्रदर्शन नहीं करता है' का अर्थ है: पांच प्रकार की इंद्रिय चेतना से व्यक्ति किसी भी प्रकार की अच्छी या बुरी अवस्था का प्रदर्शन नहीं करता है।

'पांच प्रकार की इंद्रिय चेतना के तुरंत बाद भी व्यक्ति कोई अच्छी या बुरी अवस्था नहीं कर पाता' का अर्थ है: पांच प्रकार की इंद्रिय चेतना के तुरंत बाद भी व्यक्ति मन के तत्व से भी कोई अच्छी या बुरी अवस्था नहीं कर पाता।

'पांच प्रकार की इंद्रिय चेतना से व्यक्ति न तो प्राप्त होता है और न ही उत्पन्न होता है' का अर्थ है: पांच प्रकार की इंद्रिय चेतना से व्यक्ति न तो प्राप्त होता है और न ही उत्पन्न होता है।

'यद्यपि पाँच प्रकार की इंद्रिय चेतना के तुरंत बाद भी कोई प्राप्त नहीं करता, उत्पन्न नहीं होता' का अर्थ है: [322] पाँच प्रकार की इंद्रिय चेतना के तुरंत बाद भी कोई प्राप्त नहीं करता, उत्पन्न नहीं होता, मन तत्व द्वारा भी नहीं।

'पांच प्रकार की इंद्रिय चेतना से व्यक्ति का नाश नहीं होता, उसका पुनर्जन्म नहीं होता' का अर्थ है: पांच प्रकार की इंद्रिय चेतना से व्यक्ति का नाश नहीं होता, उसका पुनर्जन्म नहीं होता (अर्थात, उसका पुनर्जन्म नहीं होता)।

'पांच प्रकार की इंद्रिय चेतना के तुरंत बाद भी व्यक्ति का नाश नहीं होता, उसका जन्म नहीं होता' का अर्थ है: पांच प्रकार की इंद्रिय चेतना के तुरंत बाद भी व्यक्ति का नाश नहीं होता, उसका जन्म नहीं होता, यहां तक कि मन तत्व से भी नहीं।

'पांच प्रकार की इंद्रिय चेतना से व्यक्ति को यह पता नहीं चलता कि वह क्या कर रहा है।'

ज्ञान का विश्लेषण

421

नींद, जागना नहीं, सपने नहीं देखना* का अर्थ है: पांच प्रकार की इंद्रिय चेतना के कारण व्यक्ति न सोता है, न जागता है, न सपने देखता है।

पांचों प्रकार की इंद्रिय चेतना के तुरंत बाद भी व्यक्ति न सोता है, न जागता है, न सपने देखता है। इसका अर्थ है: पांचों प्रकार की इंद्रिय चेतना के तुरंत बाद मन से भी व्यक्ति न सोता है, न जागता है, न सपने देखता है। इस प्रकार ज्ञान के आधार की वास्तविक प्रकृति की व्याख्या ही ज्ञान है। इस प्रकार एक प्रकार के विभाजन द्वारा ही ज्ञान का आधार बनता है।

(यहाँ समाप्त होता है) एकल-गुना प्रदर्शनी

2. दोहरी व्याख्या

767. तीनों लोकों में, अच्छे और न बुरे (अवस्थाओं) में निहित ज्ञान सांसारिक ज्ञान है; चारों मार्गों और चारों फलों में निहित ज्ञान अलौकिक ज्ञान है। सभी ज्ञान एक ही मार्ग से बोधगम्य है; दूसरे मार्ग से बोधगम्य नहीं है।

तीनों लोकों में, अच्छे और न बुरे (अवस्थाओं) में प्राप्त ज्ञान विकारों का विषय होता है; चारों मार्गों और चारों फलों में प्राप्त ज्ञान विकारों का विषय नहीं होता है। तीनों लोकों में, अच्छे और न बुरे (अवस्थाओं) में प्राप्त ज्ञान विकारों से असंबद्ध होता है, विकारों का विषय होता है; चारों मार्गों और चारों फलों में प्राप्त ज्ञान विकारों से असंबद्ध होता है, विकारों का विषय नहीं होता है।

तीनों लोकों में, अच्छे और न बुरे (अवस्थाओं) में प्राप्त ज्ञान बंधनों से ग्रसित होता है; चारों मार्गों और चारों फलों में प्राप्त ज्ञान बंधनों से अग्रसित होता है। तीनों लोकों में, अच्छे और न बुरे (अवस्थाओं) में प्राप्त ज्ञान बंधनों से असंबद्ध होता है, तथा बंधनों से ग्रसित होता है; चारों मार्गों और चारों फलों में प्राप्त ज्ञान बंधनों से असंबद्ध होता है, तथा बंधनों से ग्रसित नहीं होता है।

तीनों स्तरों में, अच्छे और न बुरे (अवस्थाओं) में पाई जाने वाली बुद्धि बंधनों से बंधी होती है; चारों मार्गों और चारों फलों में पाई जाने वाली बुद्धि बंधनों से बंधी नहीं होती। तीनों स्तरों में, अच्छे और न बुरे (अवस्थाओं) में पाई जाने वाली बुद्धि बंधनों से बंधी नहीं होती, बल्कि बंधनों से बंधी होती है; चारों मार्गों और चारों फलों में पाई जाने वाली बुद्धि बंधनों से बंधी नहीं होती।

[

422 विश्लेषण की पुस्तक

ज्ञान वह है जो बंधनों से जुड़ा नहीं होता, जो बंधनों का विषय नहीं होता।

तीनों स्तरों में, अच्छे और न अच्छे न बुरे (अवस्थाओं) में पाई जाने वाली बुद्धि वह बुद्धि है जो बाढ़ का विषय है; चारों मार्गों और चारों फलों में पाई जाने वाली बुद्धि वह बुद्धि है जो बाढ़ का विषय नहीं है। [323] तीनों स्तरों में, अच्छे और न अच्छे न बुरे (अवस्थाओं) में पाई जाने वाली बुद्धि वह बुद्धि है जो बाढ़ से संबंधित नहीं है, बाढ़ का विषय है; चारों मार्गों और चारों फलों में पाई जाने वाली बुद्धि वह बुद्धि है जो बाढ़ से संबंधित नहीं है, बाढ़ का विषय नहीं है।

तीनों लोकों में, अच्छे और न बुरे (अवस्थाओं) में प्राप्त ज्ञान बंधनों से बंधा होता है; चारों मार्गों और चारों फलों में प्राप्त ज्ञान बंधनों से मुक्त होता है। तीनों लोकों में, अच्छे और न बुरे (अवस्थाओं) में प्राप्त ज्ञान बंधनों से मुक्त होता है और बंधनों से बंधा होता है; चारों मार्गों और चारों फलों में प्राप्त ज्ञान बंधनों से मुक्त होता है और बंधनों से बंधा नहीं होता है।

तीनों लोकों में, अच्छे और न बुरे (अवस्थाओं) में प्राप्त ज्ञान बाधाओं का विषय होता है; चारों मार्गों और चारों फलों में प्राप्त ज्ञान बाधाओं का विषय नहीं होता है। तीनों लोकों में, अच्छे और न बुरे (अवस्थाओं) में प्राप्त ज्ञान बाधाओं से असंबद्ध होता है, और बाधाओं का विषय भी होता है; चारों मार्गों और चारों फलों में प्राप्त ज्ञान बाधाओं से असंबद्ध होता है, और बाधाओं का विषय भी नहीं होता है।

तीनों लोकों में, अच्छे और न बुरे (अवस्थाओं) में प्राप्त ज्ञान विकृतियों का विषय होता है; चारों मार्गों और चारों फलों में प्राप्त ज्ञान विकृतियों का विषय नहीं होता। तीनों लोकों में, अच्छे और न बुरे (अवस्थाओं) में प्राप्त ज्ञान विकृतियों से असंबद्ध होता है, बल्कि विकृतियों का विषय होता है; चारों मार्गों और चारों फलों में प्राप्त ज्ञान विकृतियों से असंबद्ध होता है, बल्कि विकृतियों का विषय नहीं होता।

तीनों स्तरों में परिणामी ज्ञान वह ज्ञान है जिसे लालसा और भ्रामक दृष्टि से ग्रहण किया जाता है; तीनों स्तरों में अच्छाई (अवस्थाओं) का ज्ञान है, तीनों स्तरों में न तो अच्छी और न ही बुरी (अवस्थाओं) का ज्ञान है, और चारों मार्गों और चारों फलों में वह ज्ञान है जिसे ग्रहण नहीं किया जा सकता है।

तीनों स्तरों में अच्छाई और न अच्छाई-न अच्छाई-न अच्छाई में निहित ज्ञान है।

ज्ञान का विश्लेषण

423

बुरी अवस्थाओं में ज्ञान आसक्ति से ग्रस्त होता है; चारों मार्गों और चारों फलों में ज्ञान आसक्ति से मुक्त होता है। तीनों लोकों में, अच्छी और न अच्छी न बुरी अवस्थाओं में ज्ञान आसक्ति से मुक्त होता है; चारों मार्गों और चारों फलों में ज्ञान आसक्ति से मुक्त होता है; आसक्ति से मुक्त होता है।

तीनों लोकों में, अच्छे और न बुरे (अवस्थाओं) में प्राप्त ज्ञान, विकारों का विषय होता है; चारों मार्गों और चारों फलों में प्राप्त ज्ञान, विकारों का विषय नहीं होता है। तीनों लोकों में, अच्छे और न बुरे (अवस्थाओं) में प्राप्त ज्ञान, विकारों से असंबद्ध होता है, विकारों का विषय होता है; चारों मार्गों और चारों फलों में प्राप्त ज्ञान, विकारों से असंबद्ध होता है, विकारों का विषय नहीं होता है।

प्रारंभिक प्रयोग से संबंधित ज्ञान वह ज्ञान है जो प्रारंभिक प्रयोग के साथ होता है; प्रारंभिक प्रयोग से असंबंधित ज्ञान वह ज्ञान है जो प्रारंभिक प्रयोग के बिना होता है। निरंतर प्रयोग से संबंधित ज्ञान वह ज्ञान है जो निरंतर प्रयोग के साथ होता है; निरंतर प्रयोग से असंबंधित ज्ञान वह ज्ञान है जो निरंतर प्रयोग के बिना होता है। उत्साह से संबंधित ज्ञान वह ज्ञान है जो उत्साह से भरा होता है; उत्साह से असंबंधित ज्ञान वह ज्ञान है जो उत्साह से रहित होता है। उत्साह से संबंधित ज्ञान वह ज्ञान है जो उत्साह के साथ होता है; उत्साह से असंबंधित ज्ञान वह ज्ञान है जो उत्साह के साथ नहीं होता है। [324] आनंद से संबंधित ज्ञान वह ज्ञान है जो आनंद के साथ होता है; आनंद से असंबंधित ज्ञान वह ज्ञान है जो आनंद के साथ नहीं होता है। उदासीनता से संबंधित ज्ञान वह ज्ञान है जो उदासीनता के साथ होता है; उदासीनता से असंबंधित ज्ञान वह ज्ञान है जो उदासीनता के साथ नहीं होता है।

इच्छा तल की विशेषता वाले अच्छे और न अच्छे न बुरे (अवस्थाओं) में निहित ज्ञान, इच्छा तल की विशेषता वाला ज्ञान है; रूप तल की विशेषता वाला ज्ञान, निराकार तल की विशेषता वाला ज्ञान, और जो ज्ञान इसमें शामिल नहीं है (अर्थात् अलौकिक), वह ज्ञान इच्छा तल की विशेषता वाला ज्ञान नहीं है। रूप तल की विशेषता वाले अच्छे और न अच्छे न बुरे (अवस्थाओं) में निहित ज्ञान, वह ज्ञान है जो...

रूप के तल की विशेषता; इच्छा के तल की विशेषता वाली बुद्धि, निराकार तल की विशेषता वाली बुद्धि, और जो बुद्धि इसमें शामिल नहीं है (अर्थात् अलौकिक), वह बुद्धि रूप के तल की विशेषता नहीं है। अच्छे और न बुरे (अवस्थाओं) में पाई जाने वाली बुद्धि, जो निराकार तल की विशेषता है, वह बुद्धि भी निराकार तल की विशेषता है; इच्छा के तल की विशेषता वाली बुद्धि, रूप के तल की विशेषता वाली बुद्धि, और जो बुद्धि इसमें शामिल नहीं है (अर्थात् अलौकिक), वह बुद्धि निराकार तल की विशेषता नहीं है।

तीनों लोकों में, अच्छे और न बुरे (अवस्थाओं) में निहित ज्ञान वह ज्ञान है जो समाहित है (अर्थात सांसारिक है); चारों मार्गों और चारों फलों में निहित ज्ञान वह ज्ञान है जो समाहित नहीं है (अर्थात अलौकिक है)। चारों मार्गों में निहित ज्ञान मुक्ति की ओर प्रवृत्त है; तीनों लोकों में, अच्छे (अवस्थाओं) में निहित ज्ञान, चारों लोकों में परिणामी (अवस्थाओं) में निहित ज्ञान, तीनों लोकों में निष्क्रिय न बुरे (अवस्थाओं) में निहित ज्ञान मुक्ति की ओर प्रवृत्त नहीं है। चारों मार्गों में निहित ज्ञान वह ज्ञान है जिसका (परिणामी समय) निश्चित है; तीनों लोकों में, अच्छे (अवस्थाओं) में निहित ज्ञान, चारों लोकों में परिणामी (अवस्थाओं) में निहित ज्ञान, तीनों लोकों में निष्क्रिय न बुरे (अवस्थाओं) में निहित ज्ञान का कोई निश्चित (परिणामी समय) नहीं है। तीनों लोकों में, अच्छे और न बुरे (अवस्थाओं) में निहित ज्ञान वह ज्ञान है जिसे पार किया जा सकता है। चारों मार्गों और चारों फलों में निहित ज्ञान अतुलनीय ज्ञान है।

इसमें वह ज्ञान क्या है जो परिणाम का कारण है? चारों लोकों में, अच्छे (अवस्थाओं) में प्राप्त ज्ञान, उच्च ज्ञान उत्पन्न करने वाले, उच्च उपलब्धि उत्पन्न करने वाले अरहत्त की निष्क्रिय (न अच्छे न बुरे) अवस्था में प्राप्त ज्ञान, परिणाम का कारण है। चारों लोकों में, परिणाम (अवस्थाओं) में प्राप्त ज्ञान, उच्च ज्ञान प्राप्त करने वाले, उच्च उपलब्धि प्राप्त करने वाले अरहत्त की निष्क्रिय (न अच्छे न बुरे) अवस्था में प्राप्त ज्ञान, कारण का परिणाम है। इस प्रकार, ज्ञान का आधार दो भागों में विभाजित है।

(यहाँ समाप्त होता है) दोहरी (व्याख्या)

3. त्रिविध व्याख्या

768. उसमें 'चिंतन के माध्यम से प्राप्त ज्ञान' क्या है? (ज्ञान) वह ज्ञान जो रचनात्मकता द्वारा आविष्कृत कार्य क्षेत्रों में या

ज्ञान का विश्लेषण

425

शिल्प के क्षेत्र जो प्रतिभा से आविष्कृत हैं या विज्ञान की शाखाएँ जो प्रतिभा से आविष्कृत हैं या (यह ज्ञान कि) क्रिया स्वयं की संपत्ति है या (यह ज्ञान कि) सत्य के अनुरूप पदार्थ क्षणभंगुर है; भावना; :P; बोध; :P; मानसिक सहवर्ती; [325] : P : या चेतना क्षणभंगुर है; जो समान है, अनुरूप है, क्षमता (समझने की), दृष्टिकोण, चुनाव, राय, देखना, इन अवस्थाओं को समझने की क्षमता, दूसरों से सुने बिना प्राप्त की जाती है। इसे चिंतन के माध्यम से प्राप्त ज्ञान कहा जाता है।

P = अस्थाई है।

उसमें 'श्रवण द्वारा प्राप्त ज्ञान' क्या है? (ज्ञान) वह ज्ञान जो रचनात्मकता द्वारा आविष्कृत कार्य के क्षेत्रों में, या रचनात्मकता द्वारा आविष्कृत शिल्प के क्षेत्रों में, या रचनात्मकता द्वारा आविष्कृत विज्ञान की शाखाओं में, या (यह ज्ञान कि) कर्म स्वयं की संपत्ति है, या (यह ज्ञान कि) सत्य के अनुरूप पदार्थ क्षणभंगुर है; भावना; बोध; मानसिक सहवर्ती;

पी: या चेतना क्षणभंगुर है; जो समान है, उसमें
अनुरूपता, वह क्षमता (समझने की), दृष्टिकोण, चुनाव, राय, देखना, इन अवस्थाओं को समझने की क्षमता, दूसरों से सुनकर प्राप्त होती है। इसे सुनने के माध्यम से प्राप्त ज्ञान कहा जाता है।

जिसने ज्ञान प्राप्त कर लिया है, उसका सारा ज्ञान विकास के माध्यम से प्राप्त ज्ञान ही होता है।

769. इसमें 'दान के माध्यम से ज्ञान' क्या है? दान के विषय में, दान की प्राप्ति से जो उत्पन्न होता है, वह ज्ञान, समझ, सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण है। इसे दान के माध्यम से ज्ञान कहा जाता है।

पी — पैराग्राफ 525 देखें।

इसमें 'नैतिकता के माध्यम से प्राप्त ज्ञान' क्या है? नैतिकता के संदर्भ में, नैतिकता की प्राप्ति से जो उत्पन्न होता है वह ज्ञान, समझ, सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज और सही दृष्टिकोण है। इसे ही नैतिकता के माध्यम से प्राप्त ज्ञान कहते हैं।

P = अनुच्छेद 525 देखें।

जिसने ज्ञान प्राप्त कर लिया है, उसका सारा ज्ञान विकास के माध्यम से प्राप्त ज्ञान ही होता है।

770. उसमें 'उच्चतर नैतिकता में निहित ज्ञान' क्या है? मूलभूत उपदेशों के संयम से बंधे व्यक्ति में जो उत्पन्न होता है वह ज्ञान, समझ, और सुस्ती का अभाव है।

426 विश्लेषण की पुस्तक

सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण। इसे ही उच्च नैतिक मूल्यों में निहित ज्ञान कहते हैं।

पी — पैराग्राफ 525 देखें।

उसमें 'उच्च चेतना में निहित ज्ञान' क्या है?

जब व्यक्ति रूप और निराकार दोनों स्तरों की अवस्थाओं को प्राप्त कर लेता है, तो उसे ज्ञान, समझ, सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज और सही दृष्टिकोण जैसी अवस्थाएँ प्राप्त होती हैं। इसे ही उच्चतर चेतना का ज्ञान कहते हैं।

P = अनुच्छेद 525 देखें।

उसमें 'उच्चतर ज्ञान में निहित ज्ञान' क्या है?

चारों मार्गों और चारों फलों में निहित ज्ञान। इसे ही उच्चतर ज्ञान कहा जाता है।

771. इसमें 'ज्ञान में निपुणता' का क्या अर्थ है? जो इन अवस्थाओं पर ध्यान देता है, उसमें अविकसित बुरी अवस्थाएँ उत्पन्न नहीं होतीं; और जो बुरी अवस्थाएँ उत्पन्न हो चुकी हैं, वे त्याग दी जाती हैं; इसके अतिरिक्त, जो इन अवस्थाओं पर ध्यान देता है, उसमें अविकसित अच्छी अवस्थाएँ उत्पन्न होती हैं; और जो अच्छी अवस्थाएँ उत्पन्न हो चुकी हैं, वे वृद्धि, परिपक्वता, विकास और पूर्णता के लिए विद्यमान रहती हैं; इसमें जो ज्ञान, समझ, : P : [326] सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज और सही दृष्टिकोण है, उसे ही ज्ञान में निपुणता का अर्थ कहा जाता है।

P = अनुच्छेद 525 देखें।

इसमें 'ज्ञान की दक्षता का नुकसान' क्या है? इन अवस्थाओं पर ध्यान देने वाले व्यक्ति में, जो अच्छी अवस्थाएँ उत्पन्न नहीं हुई हैं वे उत्पन्न नहीं होतीं; और जो अच्छी अवस्थाएँ उत्पन्न हो चुकी हैं वे समाप्त हो जाती हैं; इसके अलावा, इन अवस्थाओं पर ध्यान देने वाले व्यक्ति में, जो बुरी अवस्थाएँ उत्पन्न नहीं हुई हैं वे उत्पन्न होती हैं; और जो बुरी अवस्थाएँ उत्पन्न हो चुकी हैं वे वृद्धि और परिपक्वता के लिए बनी रहती हैं; इसमें जो ज्ञान, समझ, सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज और सही दृष्टिकोण है, उसे ही ज्ञान की दक्षता का नुकसान कहते हैं। उपरोक्त विधि में निहित सारा ज्ञान विधि की दक्षता है।

P = अनुच्छेद 525 देखें।

772. चारों स्तरों में परिणामी (अवस्थाओं) में निहित ज्ञान, परिणामी ज्ञान है; चारों स्तरों में अच्छे (अवस्थाओं) में निहित ज्ञान, परिणामी उत्पन्न करने वाला ज्ञान है; तीनों स्तरों में...

में

निष्क्रिय, न अच्छी न बुरी (अवस्थाओं) में निहित ज्ञान वह ज्ञान है जो न तो परिणामी है और न ही परिणामी को उत्पन्न करता है।

773. तीनों स्तरों में परिणामी अवस्थाओं में प्राप्त ज्ञान वह ज्ञान है जिसे ग्रहण किया जा सकता है, और जो आसक्तियों का विषय है; तीनों स्तरों में अच्छी अवस्थाओं में प्राप्त ज्ञान, तीनों स्तरों में न अच्छी न बुरी अवस्थाओं में प्राप्त ज्ञान वह ज्ञान है जिसे ग्रहण नहीं किया जा सकता, और जो आसक्तियों का विषय है; चारों मार्गों और चारों फलों में प्राप्त ज्ञान वह ज्ञान है जिसे ग्रहण नहीं किया जा सकता, और जो आसक्तियों का विषय नहीं है।

774. प्रारंभिक प्रयोग और निरंतर प्रयोग से संबंधित ज्ञान वह ज्ञान है जो प्रारंभिक प्रयोग और निरंतर प्रयोग दोनों के साथ होता है; प्रारंभिक प्रयोग से असंबद्ध, निरंतर प्रयोग से असंबद्ध ज्ञान वह ज्ञान है जो प्रारंभिक प्रयोग के बिना, केवल निरंतर प्रयोग से प्राप्त होता है; प्रारंभिक प्रयोग या निरंतर प्रयोग से असंबद्ध ज्ञान वह ज्ञान है जो प्रारंभिक प्रयोग के बिना, निरंतर प्रयोग के बिना होता है।

775. उत्साह से जुड़ा ज्ञान उत्साह से युक्त ज्ञान है; आनंद से जुड़ा ज्ञान आनंद से युक्त ज्ञान है; उदासीनता से जुड़ा ज्ञान उदासीनता से युक्त ज्ञान है।

776. तीनों स्तरों में अच्छी (अवस्थाओं) में ज्ञान संचयी ज्ञान है; चारों मार्गों में ज्ञान विक्षेपी ज्ञान है; चारों स्तरों में परिणामी (अवस्थाओं) में ज्ञान, तीनों स्तरों में निष्क्रिय, न अच्छी-न बुरी (अवस्थाओं) में ज्ञान, न संचयी और न विक्षेपी ज्ञान है।

777. चारों मार्गों और तीन फलों में निहित ज्ञान सात अलौकिक अवस्थाओं का ज्ञान है; अरहंतत्व के फल में निहित सर्वोच्च ज्ञान अंतिम अलौकिक अवस्था का ज्ञान है।

_अवस्था; तीनों तलों में अच्छी (अवस्थाओं) में ज्ञान, तीनों तलों में परिणामी (अवस्थाओं) में ज्ञान, तीनों तलों में निष्क्रिय न तो अच्छी-न बुरी (अवस्थाओं) में ज्ञान वह ज्ञान है जो न तो सात अलौकिक अवस्थाओं का है और न ही अंतिम अलौकिक अवस्था का।

778. इच्छा के तल पर पाई जाने वाली अच्छी और न अच्छी न बुरी (अवस्थाओं) में निहित ज्ञान निम्न स्तर का ज्ञान है; रूप और निराकार तल पर पाई जाने वाली अच्छी और न अच्छी न बुरी (अवस्थाओं) में निहित ज्ञान उदात्त ज्ञान है; चारों मार्गों और चारों फलों में निहित ज्ञान असीम ज्ञान है।

779. उसमें 'निम्न विषयों वाली बुद्धि' क्या है? [327] निम्न अवस्थाओं के विषय में जो उत्पन्न होता है वह बुद्धि, समझ है।

पी: सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण। यही है
इसे निम्न उद्देश्य वाली बुद्धिमत्ता कहा जाता है।

P = अनुच्छेद 525 देखें।

780. इसमें 'उत्कृष्ट उद्देश्य वाली बुद्धि' क्या है? उत्कृष्ट अवस्थाओं के विषय में, जो उत्पन्न होती है वह बुद्धि, समझ, सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज और सही दृष्टिकोण है। इसे ही उत्कृष्ट उद्देश्य वाली बुद्धि कहा जाता है।

P = अनुच्छेद 525 देखें।

781. उसमें 'असीमित उद्देश्य वाली बुद्धि' क्या है?

असीम अवस्थाओं के विषय में, जो उत्पन्न होता है वह है ज्ञान, समझ, :P: सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण। इसे असीम उद्देश्य वाला ज्ञान कहते हैं।

P = अनुच्छेद 525 देखें।

782. उसमें 'मार्ग को अपना लक्ष्य बनाने वाली बुद्धि' क्या है?

श्रेष्ठ मार्ग के विषय में, जो उत्पन्न होता है वह ज्ञान, समझ, सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज और सही दृष्टिकोण है। इसे मार्ग को लक्ष्य मानकर प्राप्त होने वाला ज्ञान कहते हैं। चारों मार्गों में निहित ज्ञान वह ज्ञान है जिसका कारण मार्ग है।

P = अनुच्छेद 525 देखें।

783. इसमें 'मार्ग को प्रमुख कारक मानने वाली बुद्धि' क्या है? आर्य मार्ग को प्रमुख बनाकर जो उत्पन्न होता है, वह है बुद्धि, समझ, सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण। इसे ही मार्ग को प्रमुख कारक मानने वाली बुद्धि कहते हैं।

पी = पैराग्राफ 525 देखें।

ज्ञान का विश्लेषण 429

784. चारों स्तरों में परिणामी अवस्थाओं में ज्ञान कभी-कभी उत्पन्न होता है; कभी-कभी उत्पन्न होना अनिवार्य होता है; इसे उत्पन्न न होना नहीं कहा जा सकता। चारों स्तरों में अच्छी अवस्थाओं में ज्ञान, तीन स्तरों में न तो अच्छी और न ही बुरी निष्क्रिय अवस्थाओं में ज्ञान कभी-कभी उत्पन्न होता है; कभी-कभी उत्पन्न नहीं होता; इसे उत्पन्न होना अनिवार्य नहीं कहा जा सकता।

785. सभी ज्ञान कभी अतीत का होता है; कभी भविष्य का होता है; कभी वर्तमान का होता है।

786. इसमें 'भूतकाल सूचक ज्ञान' क्या है? भूतकाल की अवस्थाओं के विषय में जो ज्ञान उत्पन्न होता है, वह है बुद्धि, समझ, :P: सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण। इसे भूतकाल सूचक ज्ञान कहते हैं।

P = अनुच्छेद 525 देखें।

787. उसमें 'भविष्य की वस्तु से संबंधित ज्ञान' क्या है? भविष्य की अवस्थाओं के विषय में, जो उत्पन्न होता है वह ज्ञान, समझ है।

पी: सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण। यही है
इसे भविष्य के लक्ष्य से संबंधित ज्ञान कहा जाता है।

P = अनुच्छेद 525 देखें।

788. उसमें 'वर्तमान उद्देश्य वाली बुद्धि' क्या है?

वर्तमान अवस्थाओं के संदर्भ में, जो उत्पन्न होता है वह है ज्ञान, समझ, सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण। इसे ही वर्तमान विषयवस्तु वाला ज्ञान कहते हैं।

P = अनुच्छेद 525 देखें।

789. सभी ज्ञान कभी आंतरिक होता है; कभी बाह्य होता है; कभी आंतरिक और बाह्य दोनों होता है।

790. उसमें 'आंतरिक विषय वाली बुद्धि' क्या है? आंतरिक अवस्थाओं के विषय में, जो उत्पन्न होता है वह बुद्धि, समझ, : पी : [328] सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण है। इसे आंतरिक विषय वाली बुद्धि कहा जाता है।

, पी = पैरा 525 देखें।

791. उसमें 'बाह्य वस्तु वाली बुद्धि' क्या है?

430

विश्लेषण की पुस्तक

बाह्य अवस्थाओं के संदर्भ में, जो उत्पन्न होता है वह ज्ञान, समझ, सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज और सही दृष्टिकोण है। इसे बाह्य विषयवस्तु वाला ज्ञान कहते हैं।

P = अनुच्छेद 525 देखें।

792. इसमें 'वह ज्ञान जो आंतरिक और बाह्य दोनों विषयों को समाहित करता है' क्या है? आंतरिक और बाह्य दोनों अवस्थाओं के संबंध में जो उत्पन्न होता है वह ज्ञान, समझ, सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज और सही दृष्टिकोण है। इसे ही वह ज्ञान कहा जाता है जो आंतरिक और बाह्य दोनों विषयों को समाहित करता है। इस प्रकार त्रिविध विभाजन द्वारा ज्ञान का आधार बनता है।

P = अनुच्छेद 525 देखें।

(यहाँ समाप्त होता है) त्रिगुणात्मक (प्रस्तावना)

4. चौगुनी व्याख्या

793. इसमें 'यह ज्ञान कि कर्म स्वयं का अधिकार है' क्या है? ‘‘दान है; यज्ञ है; अर्पण है; कर्मों के फल और परिणाम हैं, चाहे वे सही हों या गलत; यह संसार है; परलोक है; माता है; पिता है; स्वाभाविक रूप से जन्म लेने वाले प्राणी हैं; संसार में संन्यासी और ब्राह्मण हैं जो सर्वोच्च स्तर तक पहुँच चुके हैं, जो अच्छी तरह से अभ्यास किए हुए हैं; जिन्होंने स्वयं इस संसार और परलोक को पूर्णतः जान लिया है, अनुभव कर लिया है और दूसरों को भी यही ज्ञान देते हैं, जो कि समान है, ज्ञान है, समझ है, सुस्ती का अभाव है, सत्य की खोज है, सही दृष्टिकोण है। इसे ही यह ज्ञान कहते हैं कि कर्म स्वयं का अधिकार है। सत्य के अनुरूप ज्ञान को छोड़कर, सभी ज्ञान जो अच्छा है और दोषों का विषय है, वह यही ज्ञान है कि कर्म स्वयं का अधिकार है।’’

P = अनुच्छेद 525 देखें।

उसमें 'सत्य के अनुरूप ज्ञान' क्या है?

‘‘पदार्थ क्षणभंगुर है’’; भावना; :P: बोध; :P: मानसिक सहवर्ती; : P: या ‘‘चेतना क्षणभंगुर है’’; जो समरूप, अनुरूप, (समझने की) क्षमता, दृष्टि, चुनाव, मत, अवलोकन, इन अवस्थाओं को समझने की क्षमता रखता है। इसे सत्य के अनुरूप ज्ञान कहते हैं। चारों मार्गों में ज्ञान उस मार्ग का ज्ञान है। चारों फलों में ज्ञान उस फल का ज्ञान है। (1)

P = अस्थाई है।

ज्ञान का विश्लेषण

431

794. मार्ग का ज्ञान रखने वाले व्यक्ति का ज्ञान, यही दुख का ज्ञान है; यही दुख के कारण का ज्ञान है; यही दुख के निवारण का ज्ञान है; यही दुख के निवारण की ओर ले जाने वाले मार्ग का ज्ञान है।

उसमें 'दुख का ज्ञान' क्या है? दुख के विषय में जो उत्पन्न होता है वह है बुद्धि, समझ, rP 1 : सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण। इसे दुख का ज्ञान कहते हैं। दुख के कारण के विषय में: :P 2 : दुख के निवारण के विषय में: :P 2 : दुख के निवारण की ओर ले जाने वाले मार्ग के विषय में, [329] जो उत्पन्न होता है वह है बुद्धि, समझ, : P 1 : सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण। इसे दुख के निवारण की ओर ले जाने वाले मार्ग का ज्ञान कहते हैं। (2)

पीजे = पैरा 525 देखें। पी 2 = अंतिम उदाहरण के रूप में पूरा करें।

795. इच्छा के तल पर पाई जाने वाली अच्छी और न अच्छी न बुरी (अवस्थाओं) की बुद्धि इच्छा के तल की ही बुद्धि है; रूप के तल पर पाई जाने वाली अच्छी और न अच्छी न बुरी (अवस्थाओं) की बुद्धि रूप के तल की ही बुद्धि है; निराकार तल पर पाई जाने वाली अच्छी और न अच्छी न बुरी (अवस्थाओं) की बुद्धि निराकार तल की ही बुद्धि है; चारों मार्गों और चारों फलों में पाई जाने वाली बुद्धि उसमें समाहित नहीं है (अर्थात् वह सांसारिक से परे है)। (3)

796. उसमें '(अलौकिक) अवस्थाओं का ज्ञान' क्या है?

चारों मार्गों और चारों फलों में निहित ज्ञान (अलौकिक) अवस्थाओं का ज्ञान है। इस ज्ञात, देखी, प्राप्त, बोधित और भेदी अवस्था के माध्यम से, वह भूतकाल और भविष्यकाल पर निष्कर्ष निकालता है; वे संन्यासी और ब्राह्मण जिन्होंने भूतकाल में दुख को पूर्णतः जाना; दुख के कारण को पूर्णतः जाना; दुख के निवारण को पूर्णतः जाना; दुख के निवारण के मार्ग को पूर्णतः जाना; उन्होंने इस दुख को पूर्णतः जाना; दुख के इस कारण को पूर्णतः जाना; दुख के निवारण के मार्ग को पूर्णतः जाना; वे संन्यासी और ब्राह्मण जो भविष्य में दुख को पूर्णतः जानेंगे; दुख के कारण को पूर्णतः जानेंगे; दुख के निवारण के मार्ग को पूर्णतः जानेंगे; वे इस दुख को पूर्णतः जानेंगे; दुख के इस कारण को पूर्णतः जानेंगे; दुख के निवारण के मार्ग को पूर्णतः जानेंगे; वे इस मार्ग को पूर्णतः जानेंगे।

जिससे उन्हें दुखों का निवारण होगा, वे उसे पूर्णतः जान लेंगे। उसमें जो ज्ञान, समझ, :P: सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण निहित है। इसे ही उससे प्राप्त ज्ञान कहते हैं।

P = अनुच्छेद 525 देखें।

इसमें 'व्यापक ज्ञान' क्या है? इसमें एक भिक्षु अपनी चेतना से अन्य प्राणियों, अन्य व्यक्तियों की चेतना को स्पष्ट रूप से जानता है; वह कामवासना से ग्रस्त चेतना को जानता है, "चेतना कामवासना से ग्रस्त है"; या, वह कामवासना रहित चेतना को जानता है, "चेतना कामवासना रहित है"; वह घृणा से ग्रस्त चेतना को जानता है, "चेतना घृणा से ग्रस्त है"; या, वह घृणा रहित चेतना को जानता है, "चेतना घृणा रहित है"; वह सुस्ती से ग्रस्त चेतना को जानता है, "चेतना सुस्ती से ग्रस्त है"; या, वह सुस्ती रहित चेतना को जानता है, "चेतना सुस्ती रहित है"; वह संकुचित चेतना को जानता है, "चेतना संकुचित है"; या, वह बिखरी हुई चेतना को जानता है, "चेतना बिखरी हुई है"; वह उदात्त चेतना को जानता है, "चेतना उदात्त है"; या, वह गैर-उदात्त चेतना को जानता है, "चेतना उदात्त नहीं है"; वह पारलौकिक चेतना को जानता है, "चेतना पारलौकिक है"; या, वह अतुलनीय चेतना को जानता है, "चेतना अतुलनीय है"; वह एकाग्र चेतना को जानता है, "चेतना एकाग्र है"; या, वह अनिच्छुक चेतना को जानता है, "चेतना एकाग्र नहीं है"; वह मुक्त चेतना को जानता है, "चेतना मुक्त है"; या, वह गैर-मुक्त चेतना को जानता है, "चेतना मुक्त नहीं है"। [330] उसमें जो ज्ञान, समझ, सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण है, उसे भेदक ज्ञान कहते हैं।

P = अनुच्छेद 525 देखें।

(अलौकिक) अवस्थाओं के ज्ञान, उससे प्राप्त ज्ञान, मर्मस्पर्शी ज्ञान को छोड़कर, शेष ज्ञान पारंपरिक ज्ञान है, (4)

797. इसमें 'संचय के लिए ज्ञान, न कि फैलाव के लिए' क्या है? इच्छा के तल की विशेषता वाले अच्छे (अवस्थाओं) में ज्ञान संचय के लिए है, न कि फैलाव के लिए; चारों मार्गों में ज्ञान फैलाव के लिए है, न कि संचय के लिए; अच्छे (अवस्थाओं) में ज्ञान

(अवस्था) रूप के तल की विशेषताएँ और निराकार तल की विशेषताएँ संचय और फैलाव दोनों के लिए हैं; शेष ज्ञान न तो संचय के लिए है और न ही फैलाव के लिए। (5)

798. इसमें 'साक्षात्कार के लिए नहीं बल्कि विरक्ति के लिए ज्ञान' क्या है? वह ज्ञान जिससे व्यक्ति इंद्रिय सुखों के प्रति वासना से मुक्त हो जाता है, उच्च ज्ञान या सत्यों को प्राप्त नहीं कर पाता। इसे विरक्ति के लिए ज्ञान कहा जाता है, न कि ज्ञान प्राप्ति के लिए। वही व्यक्ति इंद्रिय सुखों के प्रति वासना से मुक्त होकर उच्च ज्ञान को तो प्राप्त कर लेता है, पर सत्यों को नहीं। इसे ज्ञान प्राप्ति के लिए ज्ञान कहा जाता है, न कि विरक्ति के लिए। चारों मार्गों में जो ज्ञान है, वह विरक्ति और ज्ञान प्राप्ति दोनों के लिए है। शेष ज्ञान न तो विरक्ति के लिए है और न ही ज्ञान प्राप्ति के लिए। (6)

799. उसमें 'बुद्धि का क्षय होना' क्या है?

इंद्रिय सुख से युक्त बोध और ध्यान, प्रथम ध्यान प्राप्त कर चुके व्यक्ति को प्रेरित करते हैं; यह क्षय से संबंधित ज्ञान है; उस अवस्था के अनुरूप उसकी जागरूकता स्थिर रहती है; प्रारंभिक क्रिया के बिना बोध और ध्यान, विशिष्टता से संबंधित ज्ञान है; कामवासना के अभाव से जुड़ी घृणा से युक्त बोध और ध्यान, भेद से संबंधित ज्ञान है। प्रारंभिक क्रिया के साथ बोध और ध्यान, द्वितीय ध्यान प्राप्त कर चुके व्यक्ति को प्रेरित करते हैं; यह क्षय से संबंधित ज्ञान है; उस अवस्था के अनुरूप उसकी जागरूकता स्थिर रहती है; (यह) स्थिरता से संबंधित ज्ञान है; द्वितीय ध्यान के प्रति उदासीनता से युक्त बोध और ध्यान, विशिष्टता से संबंधित ज्ञान है; कामवासना के अभाव से जुड़ी घृणा से युक्त बोध और ध्यान, भेद से संबंधित ज्ञान है। उत्साह और आनंद से युक्त बोध और ध्यान, तृतीय ध्यान प्राप्त कर चुके व्यक्ति को प्रेरित करते हैं; यह क्षय से संबंधित ज्ञान है; उस अवस्था के अनुरूप उसकी जागरूकता स्थिर रहती है; न दर्द न सुख से युक्त बोध और ध्यान, उसे प्रेरित करते हैं; यह भेद से संबंधित ज्ञान है; [331] कामवासना के अभाव से जुड़ी घृणा से युक्त बोध और ध्यान, उसे प्रेरित करते हैं; यह भेद से संबंधित ज्ञान है। समभाव से युक्त बोध और ध्यान, तृतीय ध्यान प्राप्त कर चुके व्यक्ति को प्रेरित करते हैं।

चौथा ध्यान, (यह) क्षय से ग्रस्त ज्ञान है; उस अवस्था के अनुरूप उसकी जागरूकता स्थिर रहती है, (यह) स्थिरता से ग्रस्त ज्ञान है; अनंत अंतरिक्ष की अवस्था से युक्त बोध और ध्यान उसे प्रेरित करते हैं, (यह) भेद से ग्रस्त ज्ञान है; कामवासना के अभाव से जुड़े विरक्ति से युक्त बोध और ध्यान उसे प्रेरित करते हैं, (यह) भेद से ग्रस्त ज्ञान है। पदार्थ की अवधारणा से युक्त बोध और ध्यान अनंत अंतरिक्ष की अवस्था प्राप्त करने वाले को प्रेरित करते हैं, (यह) क्षय से ग्रस्त ज्ञान है; उस अवस्था के अनुरूप उसकी जागरूकता स्थिर रहती है; (यह) स्थिरता से ग्रस्त ज्ञान है; अनंत चेतना की अवस्था से युक्त बोध और ध्यान उसे प्रेरित करते हैं, (यह) भेद से ग्रस्त ज्ञान है; कामवासना के अभाव से जुड़े विरक्ति से युक्त बोध और ध्यान उसे प्रेरित करते हैं, (यह) भेद से ग्रस्त ज्ञान है। अनंत अंतरिक्ष की अवस्था से युक्त बोध और ध्यान, अनंत चेतना की अवस्था प्राप्त कर चुके व्यक्ति को प्रेरित करते हैं; यह क्षय से संबंधित ज्ञान है; उस अवस्था के अनुरूप उसकी जागरूकता स्थिर रहती है; यह स्थिरता से युक्त ज्ञान है; शून्यता की अवस्था से युक्त बोध और ध्यान, उसे प्रेरित करते हैं; यह विशिष्टता से युक्त ज्ञान है; कामवासना के अभाव से संबंधित घृणा से युक्त बोध और ध्यान, उसे प्रेरित करते हैं; यह भेदक ज्ञान है। अनंत चेतना की अवस्था से युक्त बोध और ध्यान, शून्यता की अवस्था प्राप्त कर चुके व्यक्ति को प्रेरित करते हैं; यह क्षय से युक्त ज्ञान है; उस अवस्था के अनुरूप उसकी जागरूकता स्थिर रहती है; न बोध और न ही अबोध की अवस्था से युक्त बोध और ध्यान, उसे प्रेरित करते हैं; यह विशिष्टता से युक्त ज्ञान है; कामवासना के अभाव से संबंधित घृणा से युक्त बोध और ध्यान, उसे प्रेरित करते हैं; यह भेदक ज्ञान है। (7)

800. इसमें 'चार विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ' क्या हैं? परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, उत्पत्ति की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि, ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि। परिणाम का ज्ञान परिणाम की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; उत्पत्ति का ज्ञान उत्पत्ति की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है; इन (अर्थात, 1 और 2) की वास्तविक भाषावैज्ञानिक परिभाषा का ज्ञान भाषाविज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है;

ज्ञान का विश्लेषण 435

इन ज्ञानों का ज्ञान, ज्ञान की विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि है। ये चार विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टियाँ हैं। (8)

801. उसमें 'चार अभ्यास' क्या हैं? कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान; कठिन अभ्यास और शीघ्रता से अर्जित ज्ञान; आसान अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान; आसान अभ्यास और शीघ्रता से अर्जित ज्ञान।

इसमें वह ज्ञान क्या है जो कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान है? [332] जो कठिनाई और परिश्रम से एकाग्रता उत्पन्न करता है, और धीरे-धीरे उस स्थिति को भली-भांति जान लेता है, उसमें ज्ञान, समझ, सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज और सही दृष्टिकोण उत्पन्न होता है। इसे ही कठिन अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित ज्ञान कहते हैं।

P = अनुच्छेद 525 देखें।

कठिन अभ्यास और शीघ्रता से प्राप्त होने वाला ज्ञान क्या है? जो व्यक्ति कठिनाई और परिश्रम से एकाग्रता उत्पन्न करता है और उस स्थिति को शीघ्रता से भली-भांति जान लेता है, वही ज्ञान, समझ, सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज और सही दृष्टिकोण है। इसे ही कठिन अभ्यास और शीघ्रता से प्राप्त होने वाला ज्ञान कहते हैं।

P = अनुच्छेद 525 देखें।

इसमें वह ज्ञान क्या है जो सहज अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित होता है? जो व्यक्ति बिना किसी कठिनाई और परिश्रम के एकाग्रता उत्पन्न कर सके और उस स्थिति को धीरे-धीरे भली-भांति जान ले, उसमें ज्ञान, समझ, सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज और सही दृष्टिकोण उत्पन्न होता है। यही वह ज्ञान है जो सहज अभ्यास और धीरे-धीरे अर्जित होता है।

P = अनुच्छेद 525 देखें।

उसमें वह ज्ञान क्या है जो सहज अभ्यास और शीघ्र प्राप्ति से प्राप्त हो जाता है? जो व्यक्ति बिना किसी कठिनाई और परिश्रम के एकाग्रता उत्पन्न कर सके और उस अवस्था को शीघ्र ही भली-भांति जान ले, उसमें ही ज्ञान और समझ उत्पन्न होती है।

पी: सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण। यही है
जिसे सहज अभ्यास और शीघ्रता से प्राप्त होने वाला ज्ञान कहा जाता है। ये चार अभ्यास हैं। (9)

P = अनुच्छेद 525 देखें।

17 +

802. इसमें 'तू' के उद्देश्य क्या हैं? सीमित बुद्धि, सीमित उद्देश्य वाली; सीमित बुद्धि, असीमित उद्देश्य वाली; असीमित बुद्धि, सीमित उद्देश्य वाली; असीमित बुद्धि, असीमित उद्देश्य वाली।

इसमें सीमित उद्देश्य वाली सीमित बुद्धि का क्या अर्थ है?

एकाग्रता प्राप्त करने में कठिनाई होने पर भी, और विषय को थोड़ा ही विस्तृत करने पर, जो उत्पन्न होता है वह ज्ञान और समझ है।

पी: सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण। यही है
इसे सीमित बुद्धि कहा जाता है, जिसका उद्देश्य सीमित होता है।

P = अनुच्छेद 525 देखें।

इसमें सीमित ज्ञान का क्या अर्थ है, जबकि उसका उद्देश्य असीमित है?

एकाग्रता प्राप्त करने और विषय को व्यापक बनाने में कठिनाई होने पर, जो ज्ञान, समझ, सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज और सही दृष्टिकोण उत्पन्न होता है, वही असीमित उद्देश्य वाला सीमित ज्ञान कहलाता है।

P = अनुच्छेद 525 देखें।

उसमें असीमित ज्ञान क्या है, जिसका उद्देश्य सीमित है?

जो व्यक्ति बिना किसी कठिनाई के एकाग्रता प्राप्त कर लेता है और विषय को थोड़ा ही विस्तृत करता है, उसमें ज्ञान और समझ का उद्‌भव होता है।

पी: सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण। यही है
इसे सीमित उद्देश्य वाली असीमित बुद्धि कहा जाता है।

P = अनुच्छेद 525 देखें।

उसमें असीम ज्ञान, असीम उद्देश्य वाला क्या है? जो व्यक्ति बिना कठिनाई के एकाग्रता प्राप्त कर लेता है, और विषय को बहुत विस्तृत करता है, उसमें ज्ञान, समझ, सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज और सही दृष्टिकोण उत्पन्न होता है। इसे ही असीम ज्ञान, असीम उद्देश्य वाला कहा जाता है। ये चार उद्देश्य हैं। (10)

P = पैराग्राफ 525 देखें

मार्ग का ज्ञान रखने वाले व्यक्ति का ज्ञान, यही वृद्धावस्था और मृत्यु का ज्ञान है; यही वृद्धावस्था और मृत्यु के कारण का ज्ञान है; यही वृद्धावस्था और मृत्यु के निवारण का ज्ञान है, यही वृद्धावस्था और मृत्यु के निवारण की ओर ले जाने वाले मार्ग का ज्ञान है।

उसमें 'बुढ़ापे और मृत्यु का ज्ञान' क्या है? बुढ़ापे और मृत्यु के विषय में जो ज्ञान उत्पन्न होता है, वह है बुद्धि, समझ।

पी: सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण। यही है
इसे वृद्धावस्था और मृत्यु का ज्ञान कहा जाता है।

P = अनुच्छेद 525 देखें।

ज्ञान का विश्लेषण

437

वृद्धावस्था और मृत्यु के कारण के विषय में: पृष्ठ 1: वृद्धावस्था और मृत्यु की समाप्ति के विषय में: पृष्ठ 1: वृद्धावस्था और मृत्यु की समाप्ति की ओर ले जाने वाले मार्ग के विषय में, जो उत्पन्न होता है वह है ज्ञान, समझ, :पृष्ठ 2; सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण। इसे वृद्धावस्था और मृत्यु की समाप्ति की ओर ले जाने वाले मार्ग का ज्ञान कहा जाता है। (11)

P* = अंतिम उदाहरण के रूप में पूर्ण करें। P 2 = पैराग्राफ 525 देखें।

803. मार्ग का ज्ञान, यही जन्म का ज्ञान है। यही बनने का ज्ञान है। यही आसक्ति का ज्ञान है। यही लालसा का ज्ञान है। यही संवेदना का ज्ञान है। यही संपर्क का ज्ञान है। यही छह आधारों का ज्ञान है। यही मन और पदार्थ का ज्ञान है। यही चेतना का ज्ञान है। यही कर्मों का ज्ञान है; यही कर्मों के कारण का ज्ञान है; यही कर्मों के निवारण का ज्ञान है; यही कर्मों के निवारण की ओर ले जाने वाले मार्ग का ज्ञान है। (10) (21)

P = अंतिम उदाहरण के सामान्य रूप में प्रत्येक को पूरा करें।

उसमें 'कर्मकांडों का ज्ञान' क्या है? कर्मकांडों के विषय में जो ज्ञान, समझ, आशय का अभाव, सत्य की खोज और सही दृष्टिकोण उत्पन्न होता है, वही कर्मकांडों का ज्ञान कहलाता है।

P = अनुच्छेद 525 देखें।

कर्मों के कारण के विषय में: कर्मों की समाप्ति के विषय में: कर्मों की समाप्ति की ओर ले जाने वाले मार्ग के विषय में, जो उत्पन्न होता है वह है ज्ञान, समझ, मंदता का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण। इसे कर्मों की समाप्ति की ओर ले जाने वाले मार्ग का ज्ञान कहा जाता है। इस प्रकार, चार भागों में विभाजित ज्ञान का आधार है।

P* = अंतिम उदाहरण के रूप में पूर्ण करें। P 2 = पैराग्राफ 525 देखें।

(यहाँ समाप्त होता है) चौगुना (व्याख्या)

[334]

5. पंचस्तरीय व्याख्या

\

804. उसमें 'सही एकाग्रता' क्या है जिसके पाँच घटक हैं? (सही एकाग्रता) उत्साह से भरपूर, आनंद से भरपूर, मन से भरपूर, प्रकाश से भरपूर, की विशेषता है

एफ

चिंतन। दो ध्यान अवस्थाओं में ज्ञान उत्साह से भरपूर होता है; तीन ध्यान अवस्थाओं में ज्ञान आनंद से भरपूर होता है; दूसरों की चेतना का ज्ञान मन को भर देता है; दिव्य दृष्टि प्रकाश से भर देती है; इस या उस एकाग्रता से उत्पन्न होने वाले व्यक्ति के चिंतन का ज्ञान चिंतन का लक्षण है। इसे सही एकाग्रता कहते हैं जिसके पाँच घटक होते हैं।

इसमें 'पांच ज्ञानों से युक्त सही एकाग्रता' क्या है? "इस एकाग्रता में वर्तमान सुख है, भविष्य में भी सुखद परिणाम मिलेंगे", इस प्रकार यह ज्ञान अलग से उत्पन्न होता है; "यह एकाग्रता श्रेष्ठ और सांसारिक नहीं है", इस प्रकार यह ज्ञान अलग से उत्पन्न होता है; "यह एकाग्रता महान (अर्थात, निर्गुण) पुरुषों द्वारा अपनाई जाती है", इस प्रकार यह ज्ञान अलग से उत्पन्न होता है; "यह एकाग्रता शांत, श्रेष्ठ, शांति से प्राप्त, उच्चतर विकास से प्राप्त होती है, यह उकसाए गए दमन और अवरोध से प्राप्त नहीं होती", इस प्रकार यह ज्ञान अलग से उत्पन्न होता है; "मैं स्वयं सचेतन रूप से इस एकाग्रता को प्राप्त करता हूँ, सचेतन रूप से इससे निकलता हूँ", इस प्रकार यह ज्ञान अलग से उत्पन्न होता है। यही पांच ज्ञानों से युक्त सही एकाग्रता है। इस प्रकार पांच भागों में विभाजित ज्ञान का आधार है।

(यहाँ समाप्त होता है) पंचगुना (व्याख्या)

6. छह गुना व्याख्या

805. उसमें 'छह उच्च ज्ञानों में ज्ञान' क्या है?

विभिन्न अलौकिक शक्तियों का ज्ञान; कान तत्व की शुद्धता का ज्ञान; दूसरों की चेतना का ज्ञान; पूर्व जन्म की स्मृति का ज्ञान; प्राणियों के मृत्यु और पुनर्जन्म का ज्ञान; दोषों के नाश का ज्ञान। यही छह उच्च ज्ञानों में निहित ज्ञान है। इस प्रकार छह भागों में विभाजित ज्ञान का आधार बनता है।

7. सात गुना प्रदर्शनी

806. इसमें 'ज्ञान के सतहत्तर आधार' क्या हैं? यह ज्ञान कि जन्म के कारण ही वृद्धावस्था और मृत्यु होती है; यह ज्ञान कि जन्म न होने पर वृद्धावस्था और मृत्यु नहीं होती; यह ज्ञान कि अतीत में भी जन्म के कारण ही वृद्धावस्था और मृत्यु होती थी; यह ज्ञान कि जन्म न होने पर वृद्धावस्था और मृत्यु नहीं होती; यह ज्ञान कि भविष्य में भी, क्योंकि

ज्ञान का विश्लेषण

439

जन्म से ही वृद्धावस्था और मृत्यु होती है; यह ज्ञान कि जन्म न होने पर वृद्धावस्था और मृत्यु नहीं होती; उन (ज्ञानों) का जो (ज्ञान) है, वह अवस्थाओं की स्थापना का ज्ञान है; वह यह ज्ञान भी है कि वे विनाश के अधीन हैं, क्षय के अधीन हैं, कामवासना के अभाव के अधीन हैं, और समाप्ति के अधीन हैं। यह ज्ञान कि होने के कारण ही जन्म होता है। [335] यह ज्ञान कि आसक्ति के कारण ही होना होता है। यह ज्ञान कि तृष्णा के कारण ही आसक्ति होती है। यह ज्ञान कि संवेदना के कारण ही तृष्णा होती है। यह ज्ञान कि संपर्क के कारण ही संवेदना होती है। यह ज्ञान कि छह आधारों के कारण ही संपर्क होता है। यह ज्ञान कि मन और पदार्थ के कारण ही छह आधार होते हैं। यह ज्ञान कि चेतना के कारण ही मन और पदार्थ होते हैं। यह ज्ञान कि कर्मों के कारण ही चेतना होती है। यह ज्ञान कि अज्ञान के कारण कर्म होते हैं; यह ज्ञान कि अज्ञान न होने पर कर्म नहीं होते; यह ज्ञान कि अतीत में भी अज्ञान के कारण कर्म होते हैं; यह ज्ञान कि अज्ञान न होने पर कर्म नहीं होते; यह ज्ञान कि भविष्य में भी अज्ञान के कारण कर्म होते हैं; यह ज्ञान कि अज्ञान न होने पर कर्म नहीं होते; इन सभी ज्ञानों का ज्ञान राज्यों की स्थापना का ज्ञान है; और यह भी ज्ञान है कि वे विनाश के अधीन हैं, क्षय के अधीन हैं, कामवासना के अधीन हैं, और अंत के अधीन हैं। ये ज्ञान के सतहत्तर आधार हैं। इस प्रकार ज्ञान का आधार सात भागों में विभाजित है।

P = अंतिम उदाहरण के सामान्य रूप में प्रत्येक को पूरा करें।

8. अष्टांगिक व्याख्या

807. उसमें 'चार मार्गों और चार फलों में ज्ञान' क्या है? धारा प्रवेश के मार्ग में ज्ञान; धारा प्रवेश के फल में ज्ञान; एक बार लौटने के मार्ग में ज्ञान; एक बार लौटने के फल में ज्ञान; न लौटने के मार्ग में ज्ञान;

अप्रतिम ज्ञान; अरहंतत्व के मार्ग में ज्ञान; अरहंतत्व के फल में ज्ञान। यही चारों मार्गों और चारों फलों में ज्ञान है। इस प्रकार अष्टांग विभाजन द्वारा ज्ञान का आधार प्राप्त होता है।

440

विश्लेषण की पुस्तक

9. नौ गुना व्याख्या

808. इसमें 'नौ क्रमिक अवस्थाओं में प्राप्त ज्ञान' क्या है? प्रथम ध्यान की प्राप्ति में ज्ञान; द्वितीय ध्यान की प्राप्ति में ज्ञान; तृतीय ध्यान की प्राप्ति में ज्ञान; चतुर्थ ध्यान की प्राप्ति में ज्ञान; अनंत अवस्था की प्राप्ति में ज्ञान; अनंत चेतना की प्राप्ति में ज्ञान; शून्यता की अवस्था की

प्राप्ति में ज्ञान; ऐसी अवस्था की प्राप्ति में ज्ञान जो न तो प्रत्यक्ष है और न ही अप्रत्यक्ष; बोध और संवेदना के अंत की प्राप्ति से उत्पन्न होने वाले व्यक्ति के चिंतन का ज्ञान। यही नौ क्रमिक अवस्थाओं में प्राप्त ज्ञान है। इस प्रकार नौ भागों में विभाजित ज्ञान का आधार है।

10. दस गुना व्याख्या

809. उसमें तथागत का ज्ञान, जो वास्तव में कारण के रूप में कारण और कारण के अभाव के रूप में कारण का ज्ञान है, क्या है?

यहाँ तथागत इस प्रकार समझते हैं, "यह संभव नहीं है, तर्कसंगत नहीं है कि सही दृष्टि वाला व्यक्ति किसी भी बद्ध वस्तु को स्थायी माने, [336] ऐसा संभव नहीं है"; वे इस प्रकार समझते हैं, "परन्तु यह संभव है कि सांसारिक व्यक्ति किसी भी बद्ध वस्तु को स्थायी माने, ऐसा संभव है"। वे इस प्रकार समझते हैं, "यह संभव नहीं है, तर्कसंगत नहीं है कि सही दृष्टि वाला व्यक्ति किसी भी बद्ध वस्तु को सुखद माने, ऐसा संभव नहीं है"; वह इस प्रकार समझता है, "पर यह वास्तव में संभव है कि एक सांसारिक व्यक्ति किसी भी सावधिक वस्तु को सुखद समझे, ऐसा संभव है।" वह इस प्रकार समझता है, "यह संभव नहीं है, तर्कसंगत नहीं है, कि सही दृष्टि वाला व्यक्ति किसी भी चीज को आत्मा समझे, ऐसा संभव नहीं है।" वह इस प्रकार समझता है, "पर यह वास्तव में संभव है कि एक सांसारिक व्यक्ति किसी भी चीज को आत्मा समझे, ऐसा संभव है।" वह इस प्रकार समझता है, "यह संभव नहीं है, तर्कसंगत नहीं है, कि सही दृष्टि वाला व्यक्ति अपनी माँ को जीवन से वंचित करे, ऐसा संभव नहीं है।" वह इस प्रकार समझता है, "पर यह वास्तव में संभव है कि एक सांसारिक व्यक्ति अपनी माँ को जीवन से वंचित करे, ऐसा संभव है।" वह इस प्रकार समझता है, "यह संभव नहीं है, तर्कसंगत नहीं है, कि सही दृष्टि वाला व्यक्ति अपने पिता को जीवन से वंचित करे।"

किसी अरहंत को जीवन से वंचित कर देना चाहिए। दुष्ट चेतना से तथागत का रक्त बहा देना चाहिए। संघ को विभाजित कर देना चाहिए। किसी अन्य गुरु की घोषणा कर देनी चाहिए। आठवां अस्तित्व उत्पन्न कर देना चाहिए, ऐसा संभव नहीं है। वह इस प्रकार समझता है, "पर यह वास्तव में संभव है कि एक सांसारिक व्यक्ति आठवां अस्तित्व उत्पन्न कर दे, ऐसा संभव है।"

P = पहले उदाहरण के सामान्य रूप में प्रत्येक को पूरा करें।

वह इस प्रकार समझता है, "यह संभव नहीं है, तर्कसंगत नहीं है, कि एक विश्व व्यवस्था में दो योग्य प्रबुद्ध व्यक्ति एक साथ उत्पन्न हों; ऐसा संभव नहीं है"; वह इस प्रकार समझता है, "परन्तु यह संभव है कि एक विश्व व्यवस्था में एक योग्य प्रबुद्ध व्यक्ति उत्पन्न हो; ऐसा संभव है"। वह इस प्रकार समझता है, "यह संभव नहीं है, तर्कसंगत नहीं है, कि एक विश्व व्यवस्था में दो सार्वभौमिक सम्राट एक साथ उत्पन्न हों; ऐसा संभव नहीं है"; वह इस प्रकार समझता है, "परन्तु यह संभव है कि एक विश्व व्यवस्था में एक सार्वभौमिक सम्राट उत्पन्न हो; ऐसा संभव है"।

वह इस प्रकार समझता है, "यह संभव नहीं है, तर्कसंगत नहीं है कि कोई स्त्री योग्य प्रबुद्ध हो, ऐसा संभव नहीं है"; वह इस प्रकार समझता है, "परन्तु यह वास्तव में संभव है कि कोई पुरुष योग्य प्रबुद्ध हो, ऐसा संभव है"। वह इस प्रकार समझता है, "यह संभव नहीं है, तर्कसंगत नहीं है कि कोई स्त्री सर्वशक्तिमान हो, ऐसा संभव नहीं है"; वह इस प्रकार समझता है, "परन्तु यह वास्तव में संभव है कि कोई पुरुष सर्वशक्तिमान हो, ऐसा संभव है"। वह इस प्रकार समझता है, "यह संभव नहीं है, तर्कसंगत नहीं है कि कोई स्त्री सक्का, [337] मार, ब्रह्मा

बन जाए, ऐसा संभव नहीं है"; वह इस प्रकार समझता है, "परन्तु यह वास्तव में संभव है कि कोई पुरुष सक्का, मार, ब्रह्मा बन जाए, ऐसा संभव है"।

वह इस प्रकार समझता है, "यह संभव नहीं है, तर्कसंगत नहीं है, कि गलत शारीरिक क्रिया का परिणाम वांछनीय, सुखद या आनंददायक हो; ऐसा संभव नहीं है।" वह इस प्रकार समझता है, "लेकिन यह वास्तव में संभव है कि गलत शारीरिक क्रिया का परिणाम वांछनीय, सुखद या आनंददायक न हो; ऐसा संभव है।" वह इस प्रकार समझता है, "यह संभव नहीं है, तर्कसंगत नहीं है, कि गलत मौखिक क्रिया या गलत मानसिक क्रिया का परिणाम वांछनीय, सुखद या आनंददायक हो; ऐसा संभव नहीं है।" वह इस प्रकार समझता है, "लेकिन यह वास्तव में संभव है।"

442

विश्लेषण की पुस्तक

गलत शाब्दिक क्रिया का परिणाम। :P: गलत मानसिक क्रिया वांछनीय नहीं, सुखद नहीं, अप्रिय हो सकती है, ऐसा संभव है।

P = उचित रूप से पूरा करें।

वह इस प्रकार समझता है, "यह संभव नहीं है, तर्कसंगत नहीं है कि सही शारीरिक क्रिया का परिणाम अवांछनीय, अप्रिय, अप्रिय हो; ऐसा संभव ही नहीं है"; वह इस प्रकार समझता है, "परन्तु यह संभव है कि सही शारीरिक क्रिया का परिणाम वांछनीय, सुखद, अप्रिय हो; ऐसा संभव ही है"। वह इस प्रकार समझता है, "यह संभव नहीं है, तर्कसंगत नहीं है कि सही मानसिक क्रिया का परिणाम अवांछनीय, अप्रिय, अप्रिय हो; ऐसा संभव ही नहीं है"; वह इस प्रकार समझता है, "परन्तु यह संभव है कि सही मानसिक क्रिया का परिणाम वांछनीय, सुखद, अप्रिय हो; ऐसा संभव ही है"।

P = उचित रूप से पूरा करें।

वह इस प्रकार समझता है, "यह संभव नहीं है, तर्कसंगत नहीं है कि गलत शारीरिक कर्म करने वाला व्यक्ति, उस कारण से, मृत्यु के बाद शरीर के विघटन के बाद एक सुखी, स्वर्गलोक में जन्म ले"; वह इस प्रकार समझता है, "लेकिन यह वास्तव में संभव है कि गलत शारीरिक कर्म करने वाला व्यक्ति, उस कारण से, मृत्यु के बाद शरीर के विघटन के बाद एक दयनीय, दुखी, विनाशकारी नरकलोक में जन्म ले, ऐसा संभव है।" वह इस प्रकार समझता है, "यह संभव नहीं है, तर्कसंगत नहीं है कि गलत वाणी कर्म करने वाला व्यक्ति, उस कारण से, मृत्यु के बाद शरीर के विघटन के बाद एक सुखी, स्वर्गलोक में जन्म ले, ऐसा संभव नहीं है"; वह इस प्रकार समझता है, "लेकिन यह वास्तव में संभव है कि गलत वाणी कर्म करने वाला व्यक्ति, उस कारण से, मृत्यु के बाद शरीर के विघटन के बाद एक दयनीय, दुखी, विनाशकारी नरकलोक में जन्म ले, ऐसा संभव है।"

P = आवश्यकतानुसार भरें।

वह इस प्रकार समझता है, "यह संभव नहीं है, तर्कसंगत नहीं है, कि सही शारीरिक क्रिया करने वाला व्यक्ति, उस कारण से, जब मृत्यु के बाद शरीर टूट जाता है, तो एक दुखद स्थिति में जन्म ले।"

नरक की दुखी, विनाशकारी अवस्था, ऐसी बात संभव नहीं है"; वह इस प्रकार समझता है, "पर यह वास्तव में संभव है कि सही शारीरिक क्रिया करने वाला व्यक्ति, उस कारण से, जब मृत्यु के बाद शरीर का विघटन होता है, तो एक सुखी, [338] स्वर्गीय लोक में जन्म ले, ऐसी बात संभव है"। वह इस प्रकार समझता है, "यह संभव नहीं है, तर्कसंगत नहीं है, कि सही मौखिक क्रिया करने वाला व्यक्ति। : पृष्ठ 1 : कि सही मानसिक क्रिया करने वाला व्यक्ति, उस कारण से, जब मृत्यु के बाद शरीर का विघटन होता है, तो नरक की दुखद, दुखी, विनाशकारी अवस्था में जन्म ले, ऐसी बात संभव नहीं है"; वह इस प्रकार समझता है, "पर यह वास्तव में संभव है कि सही मौखिक क्रिया करने वाला व्यक्ति।

पीएक्स: सही मानसिक क्रिया करने वाले व्यक्ति को, इसी कारणवश,
इसी कारण, मृत्यु के बाद जब शरीर का विघटन होता है, तो सुखी, स्वर्गीय लोक में जन्म लेना संभव है। ये और वे अवस्थाएँ जो इन और उन (अन्य) अवस्थाओं के मूल और कारण हैं, वे कारण हैं; ये और वे अवस्थाएँ जो इन और उन (अन्य) अवस्थाओं के मूल और कारण नहीं हैं, वे कारणहीनता हैं; इस प्रकार, जो इसमें ज्ञान, समझ, मंदता का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण है। यह तथागत का ज्ञान है, जैसा कि वास्तव में है, कारण के रूप में कारण, कारणहीनता के रूप में कारण। (1) पृष्ठ 1 = उचित रूप से पूर्ण करें। पृष्ठ 2 = अनुच्छेद 525 देखें।

810. इसमें तथागत का ज्ञान, जो वास्तव में कारण, मूल और भूतकाल, भविष्य और वर्तमान में किए गए कर्मों के परिणाम के रूप में है, क्या है? इसमें तथागत इस प्रकार समझते हैं: कुछ बुरे कर्म ऐसे होते हैं जो सौभाग्यशाली पुनर्जन्म से रोके जाने पर भी फलदायी नहीं होते; कुछ बुरे कर्म ऐसे होते हैं जो सौभाग्यशाली शरीर से रोके जाने पर भी फलदायी नहीं होते; कुछ बुरे कर्म ऐसे होते हैं जो सौभाग्यशाली समय से रोके जाने पर भी फलदायी नहीं होते; कुछ बुरे कर्म ऐसे होते हैं जो सौभाग्यशाली प्रयास से रोके जाने पर भी फलदायी नहीं होते।

कुछ बुरे कर्म ऐसे होते हैं, जो दुर्भाग्यपूर्ण पुनर्जन्म के कारण फलदायी होते हैं; कुछ बुरे कर्म ऐसे होते हैं, जो दुर्भाग्यपूर्ण शरीर के कारण फलदायी होते हैं; कुछ बुरे कर्म ऐसे होते हैं, जो दुर्भाग्यपूर्ण दान के कारण फलदायी होते हैं; कुछ बुरे कर्म ऐसे होते हैं, जो दुर्भाग्यपूर्ण प्रयास के कारण फलदायी होते हैं।

कुछ अच्छे कर्म ऐसे होते हैं, जो दुर्भाग्यपूर्ण पुनर्जन्म के कारण पूर्ण नहीं हो पाते; कुछ अच्छे कर्म ऐसे होते हैं, जो दुर्भाग्यपूर्ण शरीर के कारण पूर्ण नहीं हो पाते।

परिपक्व होना; कुछ अच्छे कार्य किए जाते हैं, जो दुर्भाग्यपूर्ण समय के कारण परिपक्व नहीं हो पाते; कुछ अच्छे कार्य किए जाते हैं, जो दुर्भाग्यपूर्ण प्रयास के कारण परिपक्व नहीं हो पाते।

कुछ अच्छे कर्म किए जाते हैं, जो सौभाग्यशाली पुनर्जन्म के कारण फलदायी होते हैं; कुछ अच्छे कर्म किए जाते हैं, जो सौभाग्यशाली शरीर के कारण फलदायी होते हैं; [339] कुछ अच्छे कर्म किए जाते हैं, जो सौभाग्यशाली समय के कारण फलदायी होते हैं; कुछ अच्छे कर्म किए जाते हैं, जो सौभाग्यशाली प्रयास के कारण फलदायी होते हैं; उनमें जो ज्ञान, समझ, सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज, सही

दृष्टिकोण है। यह तथागत का ज्ञान है जैसा कि वास्तव में है, कारण के रूप में, भूतकाल, भविष्य और वर्तमान में किए गए कर्मों के परिणाम के मूल के रूप में। (2)

P = अनुच्छेद 525 देखें।

811. इसमें तथागत का वह ज्ञान क्या है जो वास्तव में सभी (नियति) की ओर ले जाने वाले अभ्यास से संबंधित है? इसमें तथागत इस प्रकार समझते हैं, "यह वह मार्ग है, यह वह अभ्यास है जो नरक की ओर ले जाता है; वे इस प्रकार समझते हैं, "यह वह मार्ग है, यह वह अभ्यास है जो पशु लोक की ओर ले जाता है"; वे इस प्रकार समझते हैं, "यह वह मार्ग है, यह वह अभ्यास है जो प्रेत लोक की ओर ले जाता है"; वे इस प्रकार समझते हैं, "यह वह मार्ग है, यह वह अभ्यास है जो मनुष्य लोक की ओर ले जाता है"; वे इस प्रकार समझते हैं, "यह वह मार्ग है, यह वह अभ्यास है जो देव लोक की ओर ले जाता है"; वे इस प्रकार समझते हैं, "यह वह मार्ग है, यह वह अभ्यास है जो पूर्ण मुक्ति की ओर ले जाता है"; इसमें जो ज्ञान, समझ, मंदता का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण है। यही तथागत का वह ज्ञान है जो वास्तव में सभी (नियति) की ओर ले जाने वाले अभ्यास से संबंधित है। (3)

पी — पैराग्राफ 525 देखें।

812. उसमें तथागत का वह ज्ञान क्या है जो वास्तव में अनेक तत्वों, विभिन्न तत्वों से युक्त संसार का है?

इसमें तथागत विभिन्न स्कंधों को समझते हैं; वे विभिन्न आधारों को समझते हैं; वे विभिन्न तत्वों को समझते हैं; वे अनेक तत्वों से युक्त विभिन्न जगतों को समझते हैं; अतः इसमें जो ज्ञान, समझ, मंदबुद्धि का अभाव, सत्य की खोज और सही दृष्टिकोण निहित है। यही तथागत का उस जगत का वास्तविक ज्ञान है जिसमें अनेक तत्व और विभिन्न तत्व हैं। (4)

P = अनुच्छेद 525 देखें।

ज्ञान का विश्लेषण

445

813. इसमें तथागत का ज्ञान, प्राणियों के विभिन्न स्वभावों के संदर्भ में, वास्तव में क्या है? इसमें तथागत इस प्रकार समझते हैं, "निम्न स्वभाव के प्राणी हैं; श्रेष्ठ स्वभाव के प्राणी हैं। निम्न स्वभाव के प्राणी निम्न स्वभाव के प्राणियों पर निर्भर रहते हैं, उनके पास जाते हैं और उनकी सेवा करते हैं। श्रेष्ठ स्वभाव के प्राणी श्रेष्ठ स्वभाव के प्राणियों पर निर्भर रहते हैं, उनके पास जाते हैं और उनकी सेवा करते हैं।"

अतीत में भी, निम्न स्वभाव वाले प्राणी निम्न स्वभाव वाले प्राणियों पर निर्भर रहते थे, उनके पास जाते थे और उनसे अक्सर मिलते-जुलते थे। इसी प्रकार, श्रेष्ठ स्वभाव वाले प्राणी भी श्रेष्ठ स्वभाव वाले प्राणियों पर निर्भर रहते थे, उनके पास जाते थे और उनसे अक्सर मिलते-जुलते थे।

भविष्य में भी, निम्न स्वभाव के प्राणी निम्न स्वभाव के प्राणियों पर निर्भर रहेंगे, उनके पास जाएंगे और उनसे बार-बार मिलेंगे। श्रेष्ठ स्वभाव के प्राणी भी श्रेष्ठ स्वभाव के प्राणियों पर निर्भर रहेंगे, उनके पास जाएंगे और उनसे बार-बार मिलेंगे। [340] अतः उसमें जो

ज्ञान, समझ, मंदबुद्धि का अभाव, सत्य की खोज और सही दृष्टिकोण है, वही तथागत का प्राणियों के विभिन्न स्वभावों का वास्तविक ज्ञान है। (5)

P = अनुच्छेद 525 देखें।

814. इसमें तथागत का अन्य प्राणियों, अन्य व्यक्तियों की नियंत्रण क्षमता में सुधार और गिरावट का वास्तविक ज्ञान क्या है? इसमें तथागत प्राणियों की प्रवृत्ति को समझते हैं; वे अंतर्निहित प्रवृत्ति को समझते हैं; वे विशिष्ट क्रिया को समझते हैं; वे स्वभाव को समझते हैं; वे कम धूल वाले, अधिक धूल वाले, तीव्र नियंत्रण क्षमता वाले, कमजोर नियंत्रण क्षमता वाले, अच्छे गुणों वाले, बुरे गुणों वाले, आसानी से सिखाए जाने वाले, कठिन सिखाए जाने वाले, योग्य या अयोग्य प्राणियों को समझते हैं।

815. और प्राणियों का झुकाव (विचारों का) क्या है? "संसार शाश्वत है" या "संसार शाश्वत नहीं है", "संसार सीमित है" या "संसार अनंत है", "प्राण और शरीर एक ही हैं" या "प्राण और शरीर भिन्न हैं", "मृत्यु के बाद प्राणी का अस्तित्व रहता है" या "मृत्यु के बाद प्राणी का अस्तित्व नहीं रहता", इस प्रकार, ऐसे प्राणी हैं जो अस्तित्ववादी दृष्टिकोणों पर निर्भर हैं, और जो अस्तित्वहीन दृष्टिकोणों पर निर्भर हैं। इन दोनों चरम सीमाओं का पालन न करके, अनुरूपता और सामंजस्य की क्षमता प्राप्त की जा सकती है।

विशिष्ट कारण-कार्य संबंध और आश्रित उत्पत्ति की अवस्थाओं में वास्तविक ज्ञान प्राप्त होता है। यही प्राणियों की प्रवृत्ति है।

816. प्राणियों की गुप्त प्रवृत्ति क्या है? सात गुप्त प्रवृत्तियाँ हैं: इंद्रिय सुख की गुप्त प्रवृत्ति, घृणा की गुप्त प्रवृत्ति, अहंकार की गुप्त प्रवृत्ति, गलत दृष्टिकोण की गुप्त प्रवृत्ति, संदेह की गुप्त प्रवृत्ति, अस्तित्व की लालसा की गुप्त प्रवृत्ति और अज्ञान की गुप्त प्रवृत्ति। संसार में जो वस्तु सुंदर या सुखद है, उसके प्रति प्राणियों की लालसा की प्रवृत्ति गुप्त रहती है; संसार में जो वस्तु अप्रिय या अप्रिय है, उसके प्रति प्राणियों की घृणा की प्रवृत्ति गुप्त रहती है। अतः इन दोनों अवस्थाओं में यह समझना चाहिए कि अज्ञान निरंतर बना रहता है, और इसके साथ ही अहंकार, गलत दृष्टिकोण और संदेह भी बने रहते हैं। यही प्राणियों की गुप्त प्रवृत्ति है।

817. और प्राणियों की विशेषता क्या है? कर्म जो अच्छा (परिणाम) उत्पन्न करता है, कर्म जो बुरा (परिणाम) उत्पन्न करता है, कर्म जो अविचल (परिणाम) उत्पन्न करता है, निम्न स्तर का या उच्च स्तर का। यही प्राणियों की विशेषता है।

818. और प्राणियों का स्वभाव क्या है? निम्न स्वभाव के प्राणी होते हैं; श्रेष्ठ स्वभाव के प्राणी होते हैं; निम्न स्वभाव के प्राणी निम्न स्वभाव के प्राणियों पर निर्भर होते हैं, उनके पास आते हैं, और उनसे बार-बार संपर्क करते हैं। श्रेष्ठ स्वभाव के प्राणी श्रेष्ठ स्वभाव के प्राणियों पर निर्भर होते हैं, उनके पास आते हैं, और उनसे बार-बार संपर्क करते हैं।

अतीत में भी, निम्न स्वभाव वाले प्राणी निम्न स्वभाव वाले प्राणियों पर निर्भर रहते थे, उनके पास जाते थे और उनसे अक्सर मिलते-जुलते थे। इसी प्रकार, श्रेष्ठ स्वभाव वाले प्राणी भी श्रेष्ठ स्वभाव वाले प्राणियों पर निर्भर रहते थे, उनके पास जाते थे और उनसे अक्सर मिलते-जुलते थे।

भविष्य में भी, निम्न स्वभाव वाले प्राणी निम्न स्वभाव वाले प्राणियों पर निर्भर रहेंगे, उनके निकट आएंगे और उनसे बार-बार मिलेंगे। श्रेष्ठ स्वभाव वाले प्राणी भी श्रेष्ठ स्वभाव वाले प्राणियों पर निर्भर रहेंगे, उनके निकट आएंगे और उनसे बार-बार मिलेंगे। प्राणियों का स्वभाव यही है।

819. वे कौन से प्राणी हैं जिनकी आँखों में बहुत धूल है?

दस प्रकार के भ्रष्टाचार के आधार हैं: लोभ, घृणा, सुस्ती, अहंकार, गलत दृष्टिकोण, संदेह, आलस्य, विचलित होना, लज्जा का अभाव, निंदा के भय का अभाव; जिन प्राणियों में ये दस प्रकार के भ्रष्टाचार पनपते हैं, विकसित होते हैं, बार-बार दोहराए जाते हैं और बढ़ते हैं, वे ही प्राणी हैं जिनकी आँखों में बहुत धूल जमी होती है।

820. वे कौन से प्राणी हैं जिनकी आँखों में कम धूल होती है? वे प्राणी जिनमें ये दस प्रकार के दोष न तो पनपते हैं, न विकसित होते हैं, न दोहराए जाते हैं, न ही बढ़ते हैं। ये वे प्राणी हैं जिनकी आँखों में कम धूल होती है।

821. वे कौन से प्राणी हैं जिनकी नियंत्रण क्षमता कमजोर होती है?

पांच नियंत्रण शक्तियाँ हैं: आत्मविश्वास की नियंत्रण शक्ति, ऊर्जा की नियंत्रण शक्ति, जागरूकता की नियंत्रण शक्ति, एकाग्रता की नियंत्रण शक्ति और ज्ञान की नियंत्रण शक्ति; जिन प्राणियों में इन पांचों नियंत्रण शक्तियों का अभ्यास नहीं किया जाता, उन्हें विकसित नहीं किया जाता, उन्हें दोहराया नहीं जाता या उनका विस्तार नहीं किया जाता, वे कमजोर नियंत्रण शक्तियों वाले प्राणी कहलाते हैं।

822. वे कौन से प्राणी हैं जिनके पास तीव्र नियंत्रण क्षमता है?

जिन प्राणियों में ये पाँचों नियंत्रण क्षमताएँ विकसित, बार-बार दोहराई और विस्तारित की जाती हैं, वे ही तीव्र नियंत्रण क्षमताओं वाले प्राणी कहलाते हैं।

823. वे कौन से प्राणी हैं जिनमें बुरे गुण होते हैं? वे प्राणी जिनमें बुरी प्रवृत्तियाँ होती हैं, जिनमें बुरी गुप्त प्रवृत्तियाँ होती हैं, जिनके कर्मों का स्वरूप बुरा होता है, जिनका स्वभाव बुरा होता है, जिनकी आँखों में बहुत धूल होती है, और जिनकी नियंत्रण क्षमता कमजोर होती है। ये ही बुरे गुणों वाले प्राणी हैं।

824. अच्छे गुणों वाले प्राणी कौन हैं? वे प्राणी जिनके स्वभाव में अच्छी प्रवृत्ति हो, अच्छे कर्म हों, अच्छी प्रवृत्ति हो, जिनकी आंखों में कम धूल हो और जिनकी नियंत्रण क्षमता तेज हो। यही अच्छे गुणों वाले प्राणी हैं।

825. वे कौन से प्राणी हैं जिन्हें सिखाना कठिन है? वे प्राणी जिनमें बुरे गुण होते हैं, वास्तव में वे ही प्राणी हैं जिन्हें सिखाना कठिन है। वे प्राणी जिनमें अच्छे गुण होते हैं, वास्तव में वे ही प्राणी हैं जिन्हें सिखाना आसान है।

826. वे कौन से प्राणी हैं जो योग्य नहीं हैं? वे प्राणी जो (बुरे) कर्मों के अवरोध से युक्त हैं, भ्रष्टाचार के अवरोध से युक्त हैं, बुरे परिणामों के अवरोध से युक्त हैं, जिनमें आत्मविश्वास नहीं है, (अच्छा करने की) इच्छा नहीं है, (पुनर्जन्म चेतना के साथ आने वाली) बुद्धि नहीं है, वे अच्छे अवस्थाओं की अपरिवर्तनीय सत्यता (अर्थात पथ चेतना) में प्रवेश करने के योग्य नहीं हैं। ये वे प्राणी हैं जो योग्य नहीं हैं। [342]

827. वे कौन से प्राणी योग्य हैं? वे प्राणी जो (बुरे) कर्मों के अवरोध से रहित हैं, भ्रष्टाचार के अवरोध से रहित हैं, बुरे परिणामों के अवरोध से रहित हैं, जिनमें विश्वास है, (अच्छा करने की) इच्छा है, और (पुनर्जन्म चेतना के साथ) ज्ञान है, वे अच्छे अवस्थाओं की अपरिवर्तनीय सत्यता (अर्थात पथ चेतना) में प्रवेश करने के योग्य हैं। ये वे प्राणी हैं जो योग्य हैं; इस प्रकार, उनमें जो ज्ञान, समझ, सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण है। यह तथागत का अन्य प्राणियों, अन्य व्यक्तियों की नियंत्रण क्षमता के सुधार और गिरावट का वास्तविक ज्ञान है। (6)

P = अनुच्छेद 525 देखें।

828. इसमें तथागत का वह ज्ञान क्या है जो वास्तव में भ्रष्टाचार, शुद्धि, ध्यान से उद्भव, मुक्ति, एकाग्रता और प्राप्ति से संबंधित है? ध्यानी व्यक्ति से तात्पर्य चार प्रकार के ध्यानी व्यक्तियों से है: एक ध्यानी व्यक्ति ऐसा होता है जो वास्तव में प्राप्ति कर लेता है और फिर कहता है, "असफलता हुई है"; एक ध्यानी व्यक्ति ऐसा होता है जो वास्तव में असफल हो जाता है और फिर कहता है, "प्राप्ति हुई है"; एक ध्यानी व्यक्ति ऐसा होता है जो वास्तव में प्राप्ति कर लेता है और फिर कहता है, "प्राप्ति हुई है"; एक ध्यानी व्यक्ति ऐसा होता है जो वास्तव में असफल हो जाता है और फिर कहता है, "असफलता हुई है"। ये चार प्रकार के ध्यानी व्यक्ति हैं।

ध्यान के चार अन्य प्रकार हैं: एक प्रकार का ध्यानशील व्यक्ति धीरे-धीरे प्राप्ति करता है और शीघ्र ही प्रकट होता है; एक प्रकार का ध्यानशील व्यक्ति शीघ्र ही प्राप्ति करता है और धीरे-धीरे प्रकट होता है; एक प्रकार का ध्यानशील व्यक्ति धीरे-धीरे प्राप्ति करता है और धीरे-धीरे प्रकट होता है; एक प्रकार का ध्यानशील व्यक्ति शीघ्र ही प्राप्ति करता है और शीघ्र ही प्रकट होता है। ये ध्यानशील व्यक्तियों के चार प्रकार हैं।

ध्यान करने वाले व्यक्तियों के चार अन्य प्रकार इस प्रकार हैं: एक प्रकार का ध्यान करने वाला व्यक्ति एकाग्रता में निपुण होता है, परन्तु एकाग्रता बनाए रखने में निपुण नहीं होता; एक प्रकार का ध्यान करने वाला व्यक्ति एकाग्रता में निपुण होता है, परन्तु एकाग्रता बनाए रखने में निपुण नहीं होता; एक प्रकार का ध्यान करने वाला व्यक्ति एकाग्रता में निपुण और एकाग्रता बनाए रखने में निपुण होता है; एक प्रकार का ध्यान करने वाला व्यक्ति एकाग्रता में न तो निपुण होता है और न ही एकाग्रता बनाए रखने में निपुण होता है। ये चार प्रकार के ध्यान करने वाले व्यक्ति हैं।

झन का अर्थ है चार झन: पहला झन, दूसरा झन, तीसरा झन, चौथा झन।

रिलीज का अर्थ है आठ प्रकार की रिलीज: भौतिक गुणों वाला व्यक्ति दृश्यमान (वस्तुओं) को देखता है। यह पहली रिलीज है।

अपने आंतरिक भौतिक गुणों को न समझते हुए, वह बाहरी दृश्यमान वस्तुओं को देखता है। यह दूसरी रिलीज़ है।

वह केवल सुंदर वस्तु (अर्थात् ध्यान की वस्तु) पर ही केंद्रित है। यह तीसरी मुक्ति है।

रूप संबंधी धारणाओं को पूर्णतः त्यागकर, इंद्रिय-प्रभाव की धारणाओं को समाप्त करते हुए, विभिन्न धारणाओं पर ध्यान न देते हुए, "अंतरिक्ष अनंत है" पर एकाग्र होकर, वह अनंत अंतरिक्ष की अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है। यह चौथा अंश है।

अनंत अंतरिक्ष की अवस्था को पूर्णतः पार कर लेने के बाद, "चेतना अनंत है" का ध्यान केंद्रित करते हुए, वह अनंत चेतना की अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है। यही पाँचवीं मुक्ति है।

चेतना की अनंतता की अवस्था को पूर्णतः पार कर लेने के बाद, [343] (एकाग्र होकर) इस प्रकार, "कुछ भी नहीं है", वह शून्यता की अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है। यह छठी मुक्ति है।

शून्यता की अवस्था को पूर्णतः पार कर लेने के बाद, वह उस अवस्था को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है जो न तो प्रत्यक्ष है और न ही अप्रत्यक्ष। यही सातवीं मुक्ति है।

वह उस अवस्था को पूर्णतः पार कर लेता है जो न तो प्रत्यक्ष है और न ही अप्रत्यक्ष, और फिर वह उस अवस्था में निवास करता है जहाँ प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों अवस्थाएँ होती हैं। यही आठवीं मुक्ति है।

सांद्रता से तीन प्रकार की सांद्रता का तात्पर्य है: प्रारंभिक अनुप्रयोग के साथ सांद्रता, निरंतर अनुप्रयोग के साथ सांद्रता; प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना सांद्रता, केवल निरंतर अनुप्रयोग; प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना सांद्रता, निरंतर अनुप्रयोग के बिना सांद्रता।

प्राप्ति का अर्थ है नौ क्रमिक उपलब्धियों में निवास करना: प्रथम ध्यान की प्राप्ति, द्वितीय ध्यान की प्राप्ति, तृतीय ध्यान की प्राप्ति, चतुर्थ ध्यान की प्राप्ति, अनंत अंतरिक्ष की अवस्था की प्राप्ति, अनंत चेतना की अवस्था की प्राप्ति, शून्यता की अवस्था की प्राप्ति, ऐसी अवस्था की प्राप्ति जो न तो प्रत्यक्ष है और न ही अप्रत्यक्ष, और बोध एवं भावना की समाप्ति की प्राप्ति।

भ्रष्टाचार का अर्थ है पतन की अवस्था; परिष्कार का अर्थ है विशिष्टता की अवस्था; उद्भव का अर्थ है परिष्कार उद्भव है; इस और उस एकाग्रता से उद्भव भी उद्भव है; इस प्रकार जो कुछ उसमें निहित है, वह ज्ञान, समझ है, :P:

450

विश्लेषण की पुस्तक

सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण। तथागत का ज्ञान, जैसा कि वास्तव में है, भ्रष्टाचार, परिष्कार, उससे मुक्ति, ध्यान, मुक्ति, एकाग्रता और प्राप्ति का है। (7)

P = अनुच्छेद 525 देखें।

829. इसमें तथागत का ज्ञान, जैसा कि वास्तव में पूर्व जन्मों की स्मृति से संबंधित है, क्या है? इसमें तथागत अनेक पूर्व जन्मों को याद करते हैं। उदाहरण के लिए, एक जन्म, दो जन्म, तीन जन्म, चार जन्म, पाँच जन्म, दस जन्म, बीस जन्म, तीस जन्म, चालीस जन्म, पचास जन्म, सौ जन्म, हज़ार जन्म, एक लाख जन्म, विकास के अनेक युग, पतन के अनेक युग, विकास और पतन दोनों के अनेक युग, इस प्रकार, "मैं ऐसे स्थान पर था, मेरा ऐसा नाम था, मेरा ऐसा कुल था, मेरा ऐसा रंग था, मेरा ऐसा भोजन था, मुझे ऐसा सुख-दुख का अनुभव हुआ, मेरा जीवन काल ऐसा समाप्त हुआ; मैं स्वयं वहाँ से होकर ऐसे स्थान पर पुनर्जीवित हुआ; वहाँ भी मेरा ऐसा नाम था, मेरा ऐसा कुल था, मेरा ऐसा रंग था, मुझे ऐसा भोजन मिला, मुझे ऐसा सुख-दुख का अनुभव हुआ, मेरा जीवन काल ऐसा समाप्त हुआ; मैं स्वयं वहाँ से होकर यहाँ पुनर्जीवित हुआ"; इस प्रकार, सभी गुणों के साथ, सभी विवरणों के साथ, वह अपने अनेक पूर्व जन्मों को याद करता है; अत: इसमें जो ज्ञान, समझ, :P: सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण है। यही तथागत का वास्तविक ज्ञान है, जो पूर्व जन्म की स्मृति से संबंधित है। (8)

पी = पैरा 525 देखें। [344]

830. इसमें तथागत का 'प्राणियों के नश्वर्य और पुनर्जन्म का वास्तविक ज्ञान' क्या है? इसमें तथागत मनुष्य की दृष्टि से परे, शुद्ध दिव्य दृष्टि से प्राणियों को नश्वर्य, आध्यात्मिक्य, निम्न, उच्च, उत्तम, अप्रिय, सुखी, दुखी देखते हैं; वे प्राणियों को उनके कर्मों के फल के अनुसार इस प्रकार समझते हैं, "यद्यपि ये योग्य प्राणी, जो गलत शारीरिक कर्मों, गलत वाणी और गलत मानसिक कर्मों से युक्त हैं, श्रेष्ठों का उपहास करते हैं, गलत दृष्टि से कर्म करते हैं, मृत्यु के बाद शरीर के टूटने पर नरक की दुखद, दुखी और विनाशकारी अवस्था में उठते हैं; वहीं, वे योग्य प्राणी, जो सही शारीरिक कर्मों और सही वाणी कर्मों से युक्त हैं,

सही मानसिक कर्मों से युक्त, श्रेष्ठजनों का उपहास न करने वाले, सही दृष्टि रखने वाले, सही दृष्टि से कर्म करने वाले; वे मृत्यु के बाद शरीर के विखंडन पर एक सुखी स्वर्गीय लोक में आरोहण करते हैं। 5' ; इस प्रकार मनुष्य की दृष्टि से श्रेष्ठ शुद्ध दिव्य दृष्टि से वे प्राणियों के देहान्तरण, आरोहण, निम्न, उच्च, उत्तम, अपरावृति, सुखी, दुःखी को देखते हैं; वे प्राणियों को उनके कर्मों के फल के अनुसार समझते हैं; इस प्रकार, उसमें जो ज्ञान, समझ, मंदता का अभाव, सत्य की खोज और सही दृष्टि निहित है। तथागत का प्राणियों के देहान्तरण और पुनर्जन्म का यही वास्तविक ज्ञान है। (9)

P = अनुच्छेद 525 देखें।

83 1. इसमें तथागत का 'अपराधों के नाश का वास्तविक ज्ञान' क्या है? इसमें तथागत स्वयं को पूर्णतः जानकर, वर्तमान जीवन में ही अपराधों के नाश द्वारा मन की स्वतंत्रता, उस बुद्धि की स्वतंत्रता को प्राप्त करते हैं और उसमें निवास करते हैं जो अपराधों का विषय नहीं है; अतः, इसमें जो बुद्धि, समझ है,

पी: सुस्ती का अभाव, सत्य की खोज, सही दृष्टिकोण। यही है
तथागत को विकारों के नाश के संबंध में जो ज्ञान है, वह यथार्थ है। (10)

पी — पैराग्राफ 525 देखें।

ज्ञान का विश्लेषण समाप्त हुआ।
टिपिटक >> अभिधम्म पिटक >> विभंग >> अध्याय 17 पाठ - खुद्दकवत्थु
विभंग-गौतम बुद्ध द्वारा बोली गई विश्लेषण की पुस्तक
पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण
पाली से अनुवादित यू. थित्तिला, रंगून, बर्मा, 1969 द्वारा

ओसीआर संस्करण, प्रूफरीडिंग नहीं की गई है, इसमें त्रुटियां हैं
(पाठकों को दिए गए .pdf संस्करण की सहायता से पाठ को सही करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है)

सीएच.17. छोटी वस्तुओं का विश्लेषण (खुद्दाकवत्थु सं. क्षुद्र-)

I. एकल-पृष्ठ सारांश
832. [345] जन्म का अभिमान; कुल का अभिमान; स्वास्थ्य का अभिमान; यौवन का अभिमान; जीवन का अभिमान; लाभ का अभिमान; सम्मानित होने का अभिमान; आदरणीय होने का अभिमान; प्रमुखता का अभिमान; अनुयायियों का अभिमान; धन का अभिमान; दिखावे का अभिमान; विद्वता का अभिमान; बुद्धि का अभिमान; ज्ञानवान अधिकारी होने का अभिमान; नियमित भिक्षा संग्रहकर्ता होने का अभिमान; तिरस्कृत न होने का अभिमान; हावभाव का अभिमान; उपलब्धि का अभिमान; लोकप्रियता का अभिमान; नैतिक होने का अभिमान; ध्यान का अभिमान; निपुणता का अभिमान; लंबा होने का अभिमान; शारीरिक अनुपात का अभिमान; रूप का अभिमान; शारीरिक पूर्णता का अभिमान; अभिमान; लापरवाही; (मानसिक) कठोरता; प्रतिद्वंद्विता; सर्वोत्तम की कामना; सबसे अधिक की कामना; बुरी कामना; दिखावा; अनुमान; व्यक्तिगत घमंड; असभ्य जीवन; ऊब; उदासीनता; बेचैनी; भोजन के बाद की उनींदापन; मानसिक सुस्ती; छल; व्यंग्यात्मक बातें; संकेत देना; मानहानि; [346] लाभ से लाभ की तलाश; इस प्रकार का अहंकार, "मैं बेहतर हूँ"; इस प्रकार का अहंकार, "मैं बराबर हूँ"; इस प्रकार का अहंकार, "मैं हीन हूँ"; बेहतर व्यक्ति का अहंकार, "मैं बेहतर हूँ"; बेहतर व्यक्ति का अहंकार, "मैं बराबर हूँ"; बेहतर व्यक्ति का अहंकार, "मैं हीन हूँ"; बराबर व्यक्ति का अहंकार, "मैं बेहतर हूँ"; बराबर व्यक्ति का अहंकार, "मैं बराबर हूँ"; बराबर व्यक्ति का अहंकार, "मैं हीन हूँ"; हीन व्यक्ति का अहंकार, "मैं बेहतर हूँ"; हीन व्यक्ति का अहंकार, "मैं बराबर हूँ"; हीन व्यक्ति का अहंकार, "मैं हीन हूँ"; अहंकार; अत्यधिक अहंकार; अत्यधिक अहंकार; आत्म-अपमान का अहंकार; अति-आकलन का अहंकार; आत्म-अभिमान; झूठा अहंकार; रिश्तेदारों के बारे में सोचना; अपने जिले के बारे में सोचना; मरने से बचने और/या ईल के रेंगने के बारे में सोचना; दूसरों के प्रति सहानुभूति से संबंधित विचार; लाभ, सम्मान, प्रसिद्धि से संबंधित विचार; तिरस्कृत न होने से संबंधित विचार।
(यहाँ समाप्त होता है) एकल तह (सारांश)

छोटी वस्तुओं का विश्लेषण
2. दो भागों में सारांश

453

833. क्रोध और द्वेष। कलंक लगाना और निंदा करना। ईर्ष्या और नीचता। छल और पाखंड। अज्ञानता और बनने की लालसा। बनने का दृष्टिकोण और न बनने का दृष्टिकोण। शाश्वतवादी दृष्टिकोण और विनाशवादी दृष्टिकोण। सीमित दृष्टिकोण और अनंत दृष्टिकोण। परम आरंभिक दृष्टिकोण और परम अंत दृष्टिकोण। लज्जा की भावना का अभाव और निंदा के भय का अभाव। अवज्ञा और बुरे मित्र होना। असत्यता और नम्रता का अभाव। अधीरता और अतिव्ययता। कोमलता का अभाव और आतिथ्यहीनता। [347] नियंत्रण करने वाली इंद्रियों के द्वारों की रक्षा न करना और भोजन में सही मात्रा का ज्ञान न होना। असावधानी और जागरूकता का अभाव। नैतिक विफलता और दोषपूर्ण दृष्टिकोण। आंतरिक बंधन और बाह्य बंधन।

(यहाँ समाप्त होता है) दो गुना (सारांश)

3. त्रिगुणात्मक सारांश

834. तीन बुरी जड़ें; तीन प्रकार की बुरी सोच; तीन प्रकार की बुरी धारणा; तीन बुरे तत्व; तीन प्रकार के गलत कर्म; तीन दोष; तीन बंधन; तीन प्रकार की लालसा; तीन प्रकार की लालसा; तीन प्रकार की खोज; तीन प्रकार का अहंकार; तीन प्रकार का भय; तीन प्रकार का अंधकार; विधर्म के तीन आधार; तीन प्रकार की बाधा; तीन प्रकार का कलंक; तीन प्रकार की अशुद्धता; तीन प्रकार की विसंगति; तीन प्रकार की विसंगति; तीन प्रकार की अग्नि; तीन प्रकार की तीक्ष्णता; तीन प्रकार की तीक्ष्णता।

संतुष्टि का दृष्टिकोण, आत्मिक दृष्टिकोण, गलत दृष्टिकोण। नीरसता, परेशानी, गलत व्यवहार। अवज्ञा, बुरे मित्रों का होना, धारणाओं की विविधता। व्याकुलता, आलस्य, असावधानी। असंतोष, जागरूकता का अभाव, सबसे अधिक की इच्छा। लज्जा का अभाव, निंदा के भय का अभाव, असावधानी। उपेक्षा, अवज्ञा, बुरे मित्रों का होना। आत्मविश्वास का अभाव, विनती न जानना, आलस्य। व्याकुलता, संयम का अभाव, गलत नैतिकता। श्रेष्ठ व्यक्तियों के दर्शन की इच्छा का अभाव, सच्चे धर्मग्रंथ को सुनने की इच्छा का अभाव, निंदात्मक मन की स्थिति। असावधानी, जागरूकता का अभाव, मानसिक अस्थिरता। [348] अनुचित ध्यान, गलत मार्ग पर निर्भरता और मानसिक सुस्ती।

(यहाँ समाप्त होता है) त्रिगुणात्मक (सारांश)

454

विश्लेषण की पुस्तक

4. चार गुना सारांश

835. चार दोष; चार बंधन; चार बाढ़; चार बंधन; चार आसक्ति; लालसा की चार उत्पत्ति; गलत मार्ग के चार अभ्यास; चार उलटफेर; चार प्रकार की नीच वाणी; चार अन्य प्रकार की नीच वाणी; चार प्रकार के गलत कर्म; चार अन्य प्रकार के गलत कर्म; चार प्रकार के भय; चार अन्य प्रकार के भय; चार गलत विचार।

(यहाँ समाप्त होता है) चौगुना (सारांश)

5. पंचस्तरीय सारांश

836. निम्न (अस्तित्व) से संबंधित पाँच बंधन; उच्च (अस्तित्व) से संबंधित पाँच बंधन; पाँच प्रकार की नीचता; पाँच आसंजन; पाँच तीर; पाँच मानसिक काँटे; पाँच प्रकार के मानसिक बंधन; पाँच बाधाएँ; पाँच तात्कालिक परिणाम; पाँच गलत विचार; पाँच शत्रुतापूर्ण क्रियाएँ; पाँच दुर्भाग्य; अधीरता के पाँच नुकसान; पाँच भय; वर्तमान जीवन में निर्वाण के पाँच सिद्धांत। [349]

(यहाँ समाप्त होता है) पंचगुना (सारांश)

6. छह गुना सारांश

837. विवाद के छह मूल; छह प्रकार की कामुक इच्छा; छह आधार; छह प्रकार की लालसा; छह प्रकार का अनादर; छह प्रतिगामी अवस्थाएँ; छह अन्य प्रतिगामी अवस्थाएँ; छह प्रकार की मानसिक सुख से परीक्षा; छह प्रकार की मानसिक पीड़ा से परीक्षा; छह प्रकार की उदासीनता से परीक्षा; छह प्रकार का मानसिक सुख जो इंद्रिय सुख से जुड़ा है; छह प्रकार की मानसिक पीड़ा जो इंद्रिय पीड़ा से जुड़ी है; छह प्रकार की उदासीनता जो इंद्रिय सुख से जुड़ी है; छह गलत विचार।

(यहाँ समाप्त होता है) छह गुना (सारांश)

7. सात गुना सारांश

838. सात गुप्त प्रवृत्तियाँ; सात बंधन; सात विकास; सात दूषित अवस्थाएँ; सात गलत कर्म; सात (प्रकार के) अहंकार; सात गलत विचार।

(यहाँ समाप्त होता है) सात गुना (सारांश)

छोटी वस्तुओं का विश्लेषण

8. आठ गुना सारांश

455

839. भ्रष्टाचार के आठ आधार; आलस्य के आठ आधार; आठ सांसारिक परिस्थितियों में चेतना का विचलन; आठ प्रकार की नीच वाणी; आठ प्रकार का झूठ; मनुष्य के आठ दोष; अबोध होने के आठ सिद्धांत; न बोध और न ही अबोध होने के आठ सिद्धांत।
(यहाँ समाप्त होता है) अष्टांग (सारांश)
9. नौ गुना सारांश
840. व्यथित होने के नौ आधार; मनुष्य की नौ अशुद्धियाँ; नौ प्रकार का अहंकार; लालसा में निहित नौ अवस्थाएँ; नौ प्रकार की विक्षिप्तता; नौ प्रकार की कल्पना; नौ प्रकार की अस्थिरता; नौ प्रकार का जुनून; नौ मानसिक स्थितियाँ।
(यहाँ समाप्त होता है) नौ गुना (सारांश)
10. दस गुना सारांश
841. भ्रष्टाचार के दस आधार; उत्पीड़न के दस आधार; बुरे कर्मों के दस मार्ग; दस बंधन; दस प्रकार की असत्यता; दस आधारों वाला झूठा दृष्टिकोण; दस आधारों वाला चरमपंथी दृष्टिकोण।
(यहाँ समाप्त होता है) दस गुना (सारांश)
842. आंतरिक (समूहों) से संबंधित तृष्णा के अठारह उदाहरण; बाह्य (समूहों) से संबंधित तृष्णा के अठारह उदाहरण; इन सभी को संक्षेप में मिलाकर तृष्णा के छत्तीस उदाहरण हैं; इस प्रकार, तृष्णा के छत्तीस भूतकाल उदाहरण; तृष्णा के छत्तीस भविष्यकाल उदाहरण; तृष्णा के छत्तीस वर्तमान उदाहरण; इन सभी को संक्षेप में मिलाकर तृष्णा के एक सौ आठ उदाहरण हैं; साथ ही वे बासठ गलत विचार जिनका उल्लेख भगव ने ब्रह्मजाल व्याख्या में किया है। [350]
सारांश (समाप्त हो गया है)
1. एकल-गुना प्रदर्शनी
843. इसमें 'जन्म का अभिमान' क्या है? जन्म के आधार पर (इसमें) अभिमान, घमंड, घमंड की अवस्था, अहंकार, अहंकारी होना शामिल है।

456

विश्लेषण की पुस्तक

अहंकार, आत्मसम्मान, घमंड, झंडा लहराना, अभिमान, ध्वज के प्रति सचेत लालसा। इसे जन्म का अभिमान कहते हैं।
844. इसमें 'कुल का गौरव' क्या है? कुल पर निर्भर करता है। :P: स्वास्थ्य पर निर्भर करता है। :P: युवावस्था पर निर्भर करता है। :P: जीवन पर निर्भर करता है। :P: लाभ पर निर्भर करता है। :P: सम्मानित होने पर निर्भर करता है। :P: आदरणीय होने पर निर्भर करता है। :P: प्रमुखता पर निर्भर करता है। :P: अनुयायियों के होने पर निर्भर करता है। :P: धन पर निर्भर करता है।
पी
दिखावट पर निर्भर करता है। :P: ज्ञान पर निर्भर करता है। :P:
बुद्धि पर निर्भर करता है। :P: एक जानकार अधिकारी होने पर निर्भर करता है। :P: (नियमित) भिक्षाग्राही होने पर निर्भर करता है।
पी: तिरस्कृत न होने पर निर्भर करता है। :पी: हावभाव पर निर्भर करता है।
पी: उपलब्धि पर निर्भर करता है। :पी: लोकप्रियता पर निर्भर करता है।
पी: नैतिक होने पर निर्भर करता है। :पी: ध्यान पर निर्भर करता है। :पी:
निपुणता पर निर्भर। : P : लंबाई पर निर्भर। : P : (शारीरिक) अनुपात पर निर्भर। : P : आकार पर निर्भर। : P : (शारीरिक) पूर्णता पर निर्भर। (इसमें) अभिमान, गर्व, अभिमान की अवस्था, साथ ही अहंकार, अहंकारी होना, अहंकारी अवस्था, उदात्तता, घमंड, (झंडा लहराना), धारणा, ध्वज के लिए चेतना की इच्छा शामिल है। इसे (शारीरिक) पूर्णता का अभिमान कहा जाता है।
P — प्रत्येक को अंतिम उदाहरण के रूप में पूरा करें।
845. इसमें 'अभिमान' क्या है? वह जो अभिमान है, अभिमानी होना, अभिमानी अवस्था, घमंड, घमंडी होना, घमंडी अवस्था, अहंकार, हेकड़ी, झंडा लहराना, अनुमान लगाना, ध्वज के प्रति चेतना की लालसा। इसे अभिमान कहते हैं।

846. इसमें 'लापरवाही' क्या है? गलत शारीरिक क्रिया, गलत मौखिक क्रिया, गलत मानसिक क्रिया, चेतना का पाँच इंद्रिय सुखों के वश में बार-बार हो जाना, सावधानीपूर्वक काम न करना, निरंतर काम न करना, रुक-रुक कर काम करना, स्थिर रहना, इच्छा का त्याग करना, कार्य को छोड़ देना, न तो प्रयास करना, न विकास करना, न पुनरावृति करना, न संकल्प लेना, न अभ्यास करना, अच्छे भावों के विकास में लापरवाही; जो इसके समान है, लापरवाही, लापरवाह होना, लापरवाह अवस्था। इसे लापरवाही कहते हैं।

1

मैं

847. इसमें '(मानसिक) कठोरता' क्या है? कठोरता, कठोरता की अवस्था, कठोरता, कठोरता, चेतना की अनम्यता, गैर-लचीलापन। इसे (मानसिक) कठोरता कहते हैं।

848. इसमें 'प्रतिस्पर्धा' क्या है? जो प्रतिस्पर्धा, प्रति-प्रतिस्पर्धा, प्रतिस्पर्धा का कार्य, प्रति-प्रतिस्पर्धा का कार्य, प्रति-प्रतिस्पर्धा की स्थिति है, उसे ही प्रतिस्पर्धा कहते हैं।

849. इसमें 'सर्वोत्तम की कामना' क्या है? वस्त्र, भिक्षा, आवास, बीमारों की सहायता के लिए दवा या पांच प्रकार के इंद्रिय सुखों जैसी आवश्यकताओं से असंतुष्ट व्यक्ति की वह प्रबल इच्छा [351]; जो कामना, कामना करने की क्रिया, सर्वोत्तम की कामना, कामवासना, आसक्ति, चेतना की आसक्ति के समान है। इसे सर्वोत्तम की कामना कहते हैं।

850. इसमें 'सर्वोच्च इच्छा' क्या है? वस्त्र, भिक्षा, आवास, बीमारों की सहायता के लिए दवा या पांच प्रकार के इंद्रिय सुखों जैसी आवश्यकताओं से असंतुष्ट व्यक्ति की वह प्रबल इच्छा; जो इच्छा, इच्छा करने की क्रिया, सर्वोच्च इच्छा, कामवासना, आसक्ति, चेतना की आसक्ति के समान है। इसे सर्वोच्च इच्छा कहते हैं।

851. इसमें 'बुरी इच्छा' क्या है? इसमें कोई व्यक्ति, आत्मविश्वासहीन होकर, ऐसी इच्छा करता है कि लोग उसे आत्मविश्वासी समझें; गलत नैतिकता वाला होकर वह ऐसी इच्छा करता है कि लोग उसे गुणी समझें; अज्ञानी होकर वह ऐसी इच्छा करता है कि लोग उसे बहुत विद्वान समझें; संगति में प्रसन्न होकर वह ऐसी इच्छा करता है कि लोग उसे एकांतप्रिय समझें; आलसी होकर वह ऐसी इच्छा करता है कि लोग उसे ऊर्जावान समझें; लापरवाह होकर वह ऐसी इच्छा करता है कि लोग उसे सजग समझें; एकाग्रताहीन होकर वह ऐसी इच्छा करता है कि लोग उसे एकाग्र समझें; बुद्धिहीन होकर वह ऐसी इच्छा करता है कि लोग उसे बुद्धिमान समझें; दोषों से मुक्त न होकर वह ऐसी इच्छा करता है कि लोग उसे दोषों से मुक्त समझें; जो भी इन सब के समान है, इच्छा, इच्छा करने की क्रिया, बुरी इच्छा, वासना, मोह, चेतना का मोह। इसे बुरी इच्छा कहते हैं।

852. इसमें 'दिखावा' क्या है? दिखावा, शिष्टता, चतुराई, चतुराई की अवस्था, ढोंग, ढोंग की अवस्था। इसे दिखावा कहते हैं।

853. इसमें 'अहंकार' क्या है? अहंकार, अहंकारी होना, अहंकारी अवस्था, आत्म-भोग, आत्म-भोग की अवस्था, आत्म-भोग की अवस्था, बेचैनी, बेहतर की चाह। इसे अहंकार कहते हैं।

854. इसमें 'व्यक्तिगत अभिमान' क्या है? वस्त्रों का अलंकरण, भिक्षापात्र का अलंकरण, निवास का अलंकरण; सजावट, सौंदर्यीकरण, अभिमान करना, संवारना, लोभ, लोभ की अवस्था, व्यक्तिगत अभिमान का कार्य, इस नश्वर शरीर और बाहरी आवश्यकताओं के प्रति व्यक्तिगत अभिमान। इसे ही व्यक्तिगत अभिमान कहते हैं।

855. इसमें 'अशिष्ट जीवन' क्या है? विरोध, नुक्ताचीनी, [352] उपेक्षा, अनादर, माता-पिता, बड़े-बुजुर्ग, भाई, शिक्षक, गुरु, बुद्ध, शिष्य या अन्य आदरणीय व्यक्तियों के प्रति अनादर। इसे अशिष्ट जीवन कहा जाता है।

856. इसमें 'उबाऊपन' क्या है? ऊब, ऊब होना, नाखुशी, असंतुष्टि, दूर के निवासों या कुछ उच्चतर सुख-स्थितियों का भय। इसे ऊब कहते हैं।

857. इसमें 'उदासीनता' क्या है? उदासीनता, उदासीन होना, मानसिक सुस्ती, आलस्य, निष्क्रिय होना, निष्क्रिय अवस्था। इसे उदासीनता कहते हैं।
858. इसमें 'बेचैनी' क्या है? वह जो फड़कना, बेचैनी, आगे झुकना, पीछे झुकना, शरीर को मरोड़ना, ऊपर की ओर खींचना, शरीर को हिलाना-डुलाना है। इसे बेचैनी कहते हैं।
859. इसमें 'भोजन के बाद की सुस्ती' क्या है? भोजन करने वाले व्यक्ति में भोजन के कारण चक्कर आना, थकान, बुखार, शारीरिक अस्वस्थता जैसी स्थिति को भोजन के बाद की सुस्ती कहते हैं।
860. इसमें 'मानसिक सुस्ती' क्या है? चेतना की अस्वस्थता, शिथिलता, उदासी, सुस्ती, सुस्त होना, सुस्त अवस्था, आलस्य, सुस्त होना, चेतना की सुस्त अवस्था। इसे ही मानसिक सुस्ती कहते हैं।

861. इसमें छल क्या है? जो लाभ, मान-सम्मान और प्रसिद्धि पर निर्भर रहता है, जिसकी बुरी इच्छाएँ होती हैं, जो इच्छाओं से व्याकुल रहता है: तथाकथित आवश्यकताओं का उपयोग करके, सांकेतिक बातें करके, हाव-भाव को सही ढंग से व्यवस्थित करके: वह भौंहें सिकोड़ता है, भौंहें सिकोड़ने की क्रिया करता है, छल करता है, छलपूर्ण होता है, छलपूर्ण अवस्था में होता है। इसे छल कहते हैं।
862. इसमें 'संकेतपूर्ण बातें' क्या हैं? लाभ, मान-सम्मान और प्रसिद्धि पर निर्भर रहने वाले, बुरी इच्छा रखने वाले, इच्छाओं से व्याकुल रहने वाले व्यक्ति के लिए: जो बातें दूसरों को लुभावनी, संकेतपूर्ण, मनोरंजक, प्रशंसात्मक, चापलूसीपूर्ण, अनुमानपूर्ण, बार-बार अनुमानपूर्ण, फुसलाने वाली, लगातार मीठी बातें, चापलूसी, खुशामद, दुलारपूर्ण व्यवहार प्रतीत होती हैं। इसे संकेतपूर्ण बातें कहा जाता है।
863. उसमें 'संकेत* क्या है? जो लाभ, मान-सम्मान और प्रसिद्धि पर निर्भर है, जिसकी बुरी इच्छाएँ हैं, [353] जो इच्छाओं से व्याकुल है: वह जो दूसरों के लिए एक संकेत है, अर्थपूर्ण है, संकेतपूर्ण बात है, संकेतपूर्ण क्रिया है, सांकेतिक बात है, घुमावदार बात है। इसे ही अर्थपूर्णता कहते हैं।
864. इसमें 'मानहानि' क्या है? जो व्यक्ति लाभ, मान-सम्मान और प्रसिद्धि पर निर्भर रहता है, जिसकी बुरी इच्छाएँ होती हैं, जो इच्छाओं से व्याकुल रहता है: उसके लिए दूसरों को गाली देना, अपशब्द कहना, निंदा करना, उपहास करना, बार-बार उपहास करना, उपहास करना, बार-बार उपहास करना, बदनामी करना, चुगली करना, पीठ पीछे बुराई करना। इसे मानहानि कहते हैं।
865. इसमें 'लाभ से लाभ की खोज' क्या है? जो लाभ, मान-सम्मान और यश पर निर्भर रहता है, जिसकी बुरी इच्छाएँ होती हैं, जो इच्छाओं से व्याकुल रहता है, वह यहाँ से प्राप्त भौतिक वस्तुओं को वहाँ लाता है; वहाँ से प्राप्त भौतिक वस्तुओं को वहाँ लाता है; जो भी इसी प्रकार है, भौतिक वस्तुओं की इच्छा करना, खोज करना, निरंतर खोज करना, इच्छा करना, खोज करना, निरंतर खोज करना। इसे लाभ से लाभ की खोज कहा जाता है।
0 _
866. इसमें "मैं बेहतर हूँ" वाली धारणा क्या है? इसमें एक
जन्म से, वंश से, अच्छे परिवार से, सुंदर शरीर से, संपत्ति से, अध्ययन से, कार्यक्षेत्र से, शिल्प कौशल से, विज्ञान की शाखा से, ज्ञान से, बुद्धि से या किसी अन्य कारण से कोई व्यक्ति अहंकार उत्पन्न करता है; जो समान हो,

अहंकार, अहंकारी होना, अहंकार की अवस्था, बड़प्पन, अभिमान, झंडा लहराना, धारणा, किसी ध्वज के लिए चेतना की लालसा। इसे ही अहंकार कहते हैं, “मैं श्रेष्ठ हूँ”।

867. इसमें “मैं समतुल्य हूँ” का अभिमान क्या है? इसमें कोई व्यक्ति जन्म से, वंश से, अच्छे परिवार से, सुंदर शरीर से, संपत्ति से, अध्ययन से, कार्यक्षेत्र से, शिल्प कौशल से, विज्ञान की शाखा से, ज्ञान से, बुद्धि से या किसी अन्य कारण से अभिमान उत्पन्न करता है; जो समानता हो, अभिमान, अभिमान, अभिमान की अवस्था, उच्चता, घमंड, ध्वजारोहण, अनुमान, ध्वज के प्रति चेतना की इच्छा। इसे ही “मैं समतुल्य हूँ” का अभिमान कहा जाता है।
868. इसमें “मैं हीन हूँ” का अहंकार क्या है? इसमें कोई व्यक्ति जन्म से, या कुल से, या अच्छे परिवार से, या सुंदर शरीर से, या संपत्ति से, या अध्ययन से, या कार्यक्षेत्र से, या शिल्प क्षेत्र से, या विज्ञान की शाखा से, या ज्ञान से, या बुद्धि से, या किसी अन्य कारण से आत्म-अनादर उत्पन्न करता है; जो आत्म-अनादर, आत्म-अनादरपूर्ण होना, आत्म-अनादरपूर्ण अवस्था, स्वयं का तिरस्कार करना, अत्यधिक तिरस्कारपूर्ण होना, अत्यधिक तिरस्कारपूर्ण अवस्था, आत्म-घृणा, आत्म-घृणा, आत्म-घृणा के समान है। इसे ही “मैं हीन हूँ” का अहंकार कहा जाता है। [354]
869. इसमें श्रेष्ठ व्यक्ति का यह अहंकार, “मैं श्रेष्ठ हूँ”, क्या है? इसमें कोई व्यक्ति जो जन्म से, कुल से, अच्छे परिवार से, सुंदर शरीर से, संपत्ति से, अध्ययन से, कार्यक्षेत्र से, शिल्प से, विज्ञान की शाखा से, ज्ञान से, बुद्धि से या किसी अन्य कारण से श्रेष्ठ है, वह स्वयं को दूसरों से श्रेष्ठ समझता है; वह इसी के आधार पर अहंकार उत्पन्न करता है; अहंकार, अहंकारी होना, अहंकारी अवस्था, उच्चता, घमंड, ध्वजारोहण, अभिमान, ध्वज के प्रति चेतना की लालसा, इन सभी का समानार्थक शब्द है। श्रेष्ठ व्यक्ति के इस अहंकार को ही “मैं श्रेष्ठ हूँ” कहा जाता है।
870. इसमें श्रेष्ठ व्यक्ति का यह अहंकार कि “मैं समतुल्य हूँ” क्या है? इसमें कोई व्यक्ति जो जन्म से, कुल से, अच्छे परिवार से, सुंदर शरीर से, संपत्ति से, अध्ययन से, कार्यक्षेत्र से, शिल्प कौशल से, विज्ञान की शाखा से, ज्ञान से, बुद्धि से या किसी अन्य कारण से श्रेष्ठ है, स्वयं को दूसरों के समतुल्य मानता है; वह इसी आधार पर कारण बनता है

छोटी वस्तुओं का विश्लेषण

461

अहंकार उत्पन्न होना; जो समान है, अहंकार, अहंकारी होना, अहंकारी अवस्था, उच्चता, घमंड, झंडा फहराना, धारणा, ध्वज के लिए चेतना की इच्छा। जो व्यक्ति स्वयं को श्रेष्ठ समझता है, उसके इस अहंकार को "मैं समान हूँ" कहा जाता है।
871. इसमें श्रेष्ठ व्यक्ति का यह अहंकार क्या है, “मैं हीन हूँ”? इसमें कोई व्यक्ति जो जन्म से, कुल से, अच्छे परिवार से, सुंदर शरीर से, संपत्ति से, अध्ययन से, कार्यक्षेत्र से, शिल्प से, विज्ञान की शाखा से, ज्ञान से, बुद्धि से या किसी अन्य कारण से श्रेष्ठ है, वह स्वयं को दूसरों से हीन समझता है; वह इसी के आधार पर आत्म-अपमान उत्पन्न करता है; जो आत्म-अपमान, आत्म-अपमानजनक होना, आत्म-अपमानजनक अवस्था, स्वयं को कोसना, अत्यधिक कोसना, अत्यधिक कोसना, आत्म-तिरस्कार, आत्म-घृणा आदि के समान है। श्रेष्ठ व्यक्ति के इस अहंकार को “मैं हीन हूँ” कहा जाता है।
872. इसमें समतुल्य व्यक्ति के मन में "मैं श्रेष्ठ हूँ" का यह अहंकार क्या है? इसमें कोई व्यक्ति जो जन्म से, कुल से या अच्छे परिवार से समतुल्य है, या किसी अन्य कारण से स्वयं को दूसरों से श्रेष्ठ समझता है; वह इसी आधार पर अहंकार उत्पन्न करता है; जो समतुल्य है, अहंकार, अहंकारी होना, अहंकार की अवस्था, चेतना की एक ध्वज की इच्छा। समतुल्य व्यक्ति के इस अहंकार को "मैं श्रेष्ठ हूँ" कहा जाता है।
P = मध्यवर्ती शब्द, पैराग्राफ 866 देखें।
873. जो व्यक्ति समतुल्य है, उसमें "मैं समतुल्य हूँ" का यह अहंकार क्या है? यहाँ कोई व्यक्ति जो जन्म से, कुल से, या अच्छे परिवार से समतुल्य है, या किसी अन्य कारण से स्वयं को दूसरों के समतुल्य मानता है; वह इसी के आधार पर अहंकार उत्पन्न करता है; जो समान है, वह है अहंकार, अहंकारी होना, अहंकारी अवस्था, अहंकार, घमंड, झंडा फहराना, अभिमान, ध्वज के प्रति चेतना की लालसा। समतुल्य व्यक्ति के इस अहंकार को "मैं समतुल्य हूँ" कहा जाता है।
पी — मध्यवर्ती शब्द, पैराग्राफ 866 देखें।
874. इसमें, जो व्यक्ति समतुल्य है, उसमें "मैं हीन हूँ" जैसी धारणा का क्या अर्थ है? इसमें, कोई व्यक्ति जो जन्म से, कुल से, अच्छे परिवार से, या किसी अन्य कारण से समतुल्य है, उसे स्थान दिया जाता है।

111

462

विश्लेषण की पुस्तक

स्वयं को दूसरों से हीन समझना; इसी के कारण वह आत्म-अपमान का भाव उत्पन्न करता है; आत्म-अपमान, आत्म-अपमानजनक होना, आत्म-अपमानजनक अवस्था, स्वयं को कोसना, अत्यधिक तिरस्कारपूर्ण होना, अत्यधिक तिरस्कारपूर्ण अवस्था, आत्म-घृणा, आत्म-घृणा, आत्म-तिरस्कार। समतुल्य व्यक्ति में इस भाव को "मैं हीन हूँ" का अहंकार कहा जाता है।
P = मध्यवर्ती शब्द, पैराग्राफ 866 देखें।
875. इसमें किसी हीन व्यक्ति का यह अहंकार, "मैं श्रेष्ठ हूँ", क्या कहलाता है? इसमें कोई व्यक्ति जो जन्म से, कुल से या अच्छे परिवार से हीन है, या किसी न किसी कारण से स्वयं को दूसरों से श्रेष्ठ समझता है; वह इसी के आधार पर अहंकार उत्पन्न करता है; जो समान है, अहंकार, अहंकारी होना, अहंकारी अवस्था, उच्चता, घमंड, झंडा फहराना, धारणा, ध्वज के प्रति चेतना की लालसा। हीन व्यक्ति के इस अहंकार को "मैं श्रेष्ठ हूँ" कहा जाता है।
P = मध्यवर्ती शब्द, पैराग्राफ 866 देखें।
876. इसमें किसी हीन व्यक्ति का यह अहंकार, "मैं समतुल्य हूँ", क्या है? इसमें कोई व्यक्ति जो जन्म से, कुल से, या अच्छे परिवार से हीन है, या किसी न किसी कारण से स्वयं को दूसरों के समतुल्य समझता है; वह इसी के आधार पर अहंकार उत्पन्न करता है; जो समानता है, अहंकार, अहंकारी होना, अहंकारी अवस्था, उच्चता, अभिमान, [355] (झंडा फहराना), अनुमान, ध्वज के प्रति चेतना की इच्छा। हीन व्यक्ति के इस अहंकार को, "मैं समतुल्य हूँ", कहा जाता है।
P = मध्यवर्ती शब्द, पैराग्राफ 866 देखें।
877. इसमें, जो हीन है, उसमें "मैं हीन हूँ" का यह अहंकार क्या है? इसमें, जो व्यक्ति जन्म से, कुल से, या अच्छे परिवार से हीन है, या किसी अन्य कारण से स्वयं को दूसरों से हीन समझता है; वह इसी के आधार पर आत्म-अपमान उत्पन्न करता है; जो आत्म-अपमान, आत्म-अपमानजनक होना, आत्म-अपमानजनक अवस्था, स्वयं को कोसना, अत्यधिक कोसना, अत्यधिक कोसना, आत्म-तिरस्कार, आत्म-घृणा आदि के समान है। हीन व्यक्ति के इस अहंकार को "मैं हीन हूँ" कहा जाता है।
P = मध्यवर्ती शब्द, पैराग्राफ 866 देखें।

छोटी वस्तुओं का विश्लेषण

463

878. इसमें 'अभिमान' क्या है? अभिमान, अभिमानी होना, अभिमान की अवस्था, अहंकार, घमंड, झंडा फहराना, अनुमान लगाना, ध्वज के लिए चेतना की लालसा। इसे ही अभिमान कहते हैं।
879. इसमें 'अत्यधिक अहंकार' क्या है? इसमें कोई व्यक्ति जन्म से, कुल से, परिवार से या किसी अन्य कारण से स्वयं को दूसरों से श्रेष्ठ समझता है; इसी प्रकार का अहंकार, अभिमान, अभिमान की अवस्था, उच्चता, घमंड, झंडा लहराना, अहंकार, ध्वज के प्रति अभिमान। इसे ही अत्यधिक अहंकार कहते हैं।
P = मध्यवर्ती शब्द, पैराग्राफ 866 देखें।
880. इसमें 'अत्यधिक अहंकार' क्या है? इसमें कोई व्यक्ति जन्म से, कुल से, परिवार से या किसी अन्य कारण से पहले स्वयं को दूसरों के बराबर समझता है, बाद में स्वयं को श्रेष्ठ समझता है; जो समान है, अहंकार, अहंकारी होना, अहंकार की अवस्था, उच्चता, घमंड, झंडा लहराना, अभिमान, ध्वज के प्रति चेतना की लालसा। इसे अत्यधिक अहंकार कहा जाता है।
P = मध्यवर्ती शब्द, पैराग्राफ 866 देखें।
881. इसमें 'आत्म-अपमान' क्या है? इसमें कोई व्यक्ति जन्म से, कुल से, अच्छे परिवार से, सुंदर शरीर से, संपत्ति से, अध्ययन से, कार्यक्षेत्र से, शिल्प कौशल से, विज्ञान की शाखा से, ज्ञान से, बुद्धि से या किसी अन्य कारण से आत्म-अपमान उत्पन्न करता है; जो भी

इससे मिलता-जुलता है, आत्म-अपमान, आत्म-अपमानजनक होना, आत्म-अपमानजनक अवस्था, स्वयं का तिरस्कार करना, अत्यधिक तिरस्कारपूर्ण होना, अत्यधिक तिरस्कारपूर्ण अवस्था, आत्म-घृणा, आत्म-घृणा, आत्म-घृणा। इसे आत्म-अपमान कहा जाता है।

882. इसमें 'अतिशय अहंकार' क्या है? न पहुँचने में भी पहुँचने का आभास होता है; न करने में भी करने का आभास होता है; न प्राप्त करने में भी प्राप्त करने का आभास होता है; न अनुभव करने में भी अनुभव करने का आभास होता है; जो समान है, अहंकार, अहंकारी होना, अहंकारी अवस्था, उच्चता, घमंड, झंडा फहराना, धारणा, ध्वज के लिए चेतना की इच्छा। इसे अतिशय अहंकार कहते हैं। [356]

883. इसमें 'आत्म-अभिमान' क्या है? अभिमान इस प्रकार है, मैं भौतिक गुण हूँ; इच्छा इस प्रकार है, मैं (भौतिक गुण) हूँ; अंतर्निहित प्रवृत्ति इस प्रकार है, मैं (भौतिक गुण) हूँ; भावना। :P: बोध।

पी: मानसिक सहवर्ती। :पी: इस प्रकार, मैं सचेत हूँ-

यह इच्छा; इस प्रकार, मैं (चेतना) हूँ; यह अंतर्निहित प्रवृत्ति; जो इसके समान है, अहंकार, अहंकारी होना, अहंकारी अवस्था, उच्चता, घमंड, झंडा फहराना, धारणा, चेतना की ध्वज के लिए लालसा। इसे आत्म-अभिमान कहते हैं।

P = अंतिम उदाहरण के सामान्य रूप में पूर्ण।

884. इसमें 'झूठा अभिमान' क्या है? इसमें कोई व्यक्ति बुरे कर्मों, बुरे शिल्प, बुरे विज्ञान, बुरी विद्या, बुरी बुद्धि, बुरे आचरण, बुरी आदतों, बुरे विचारों या किसी अन्य कारण से अभिमान उत्पन्न करता है; अभिमान, अभिमान, अभिमान की अवस्था, अहंकार, घमंड, झंडा फहराना, अनुमान लगाना, ध्वज के प्रति चेतना की लालसा, इन सभी को झूठा अभिमान कहते हैं।

885. इसमें 'रिश्तेदारों के बारे में सोचना' क्या है? रिश्तेदारों से संबंधित सांसारिक मामलों के बारे में सोचना, विचार करना, गलत विचार करना। इसे रिश्तेदारों के बारे में सोचना कहते हैं।

886. इसमें 'अपने जिले के बारे में सोचना' क्या है? अपने जिले से संबंधित सांसारिक मामलों से जुड़ी मानसिकता, सोच, गलत विचार। इसे अपने जिले के बारे में सोचना कहते हैं।

887. इसमें 'मृत्यु से बचने के बारे में सोचना और/या ईल मछली की तरह रेंगना' क्या है? चिंतन, विचार, कठोर अभ्यास से जुड़ा गलत विचार, गलत दृष्टिकोण से जुड़ा विचार, सांसारिक मामलों से संबंधित विचार। इसे ही मृत्यु से बचने के बारे में सोचना और/या ईल मछली की तरह रेंगना कहते हैं।

888. इसमें 'दूसरों के प्रति सहानुभूति से जुड़ा चिंतन' क्या है? इसमें एक व्यक्ति गृहस्थों के साथ रहता है, उनके साथ सुख-दुख में शामिल होता है, उनके सुख में प्रसन्न होता है, उनके दुख में दुखी होता है, जब कोई कार्य करना होता है तो वह स्वयं प्रयास करता है; इसमें जो चिंतन, विचार, सांसारिक विचारों से जुड़ा गलत विचार है, वही इसमें निहित है।

मायने रखता है। इसे दूसरों के प्रति सहानुभूति से जुड़ा चिंतन कहा जाता है।

889. इसमें 'लाभ, सम्मान और प्रसिद्धि से संबंधित विचार' क्या है? सांसारिक मामलों, लाभ, सम्मान और प्रसिद्धि से संबंधित गलत विचार, चिंतन, चिंतन। इसे लाभ, सम्मान और प्रसिद्धि से संबंधित विचार कहा जाता है।

890. इसमें 'अपमानित न होने से संबंधित विचार' क्या है? इसमें कोई व्यक्ति जन्म से, कुल से, अच्छे परिवार से, सुंदर शरीर से, संपत्ति से, अध्ययन से, कार्यक्षेत्र से, शिल्प कौशल से, विज्ञान की शाखा से, ज्ञान से, बुद्धि से या किसी अन्य कारण से इस प्रकार सोचता है, “अन्य लोग [357] मुझे तिरस्कृत न करें”; इसमें जो भी मनोवृत्ति, विचार, सांसारिक मामलों से संबंधित गलत विचार है, उसे ही अपमानित न होने से संबंधित विचार कहा जाता है।

(यहाँ समाप्त होता है) एकल तह (प्रदर्शनी)

2. दोहरी व्याख्या

891. इसमें 'क्रोध' क्या है? क्रोध, क्रोधित होना, क्रोधित अवस्था, घृणा, नफरत करना, घृणा करने की अवस्था, अव्यवस्था, अव्यवस्था की अवस्था, विरोध, शत्रुता, उग्रता, अचानकता, चेतना के आनंद का अभाव। यही क्रोध कहलाता है।
इसमें 'द्वेष' क्या है? पहले क्रोध आता है, फिर द्वेष; जो कुछ भी समान है, द्वेष, द्वेषपूर्ण होना, द्वेषपूर्ण अवस्था, बनाए रखना, निरंतर बनाए रखना, निरंतरता, क्रमिक रूप से एक साथ बंधे रहना, क्रोध का सुदृढ़ होना। इसे द्वेष कहते हैं। (1)
892. इसमें 'स्निचिंग' क्या है? वह जो कलंकित करता है, कलंकित करता है, कलंकित करता है, अपमान करता है, अपमानजनक कार्य करता है। इसे कलंकित करना कहते हैं।
इसमें 'अपमानजनक' क्या है? वह जो अपमानजनक है, अपमानजनक होना, अपमानजनक होने की स्थिति, विवाद उत्पन्न करना, प्रतिस्पर्धा करना, हार न मानना। इसे अपमानजनक कहा जाता है। (2)
893. इसमें 'ईर्ष्या' क्या है? वह जो दूसरों के लाभ, सम्मान, आदर, अभिवादन, आदरपूर्ण भेंट आदि के लिए की जाती है।

ईर्ष्या, ईर्ष्यालु होना, ईर्ष्या की अवस्था, जलन, जलन की अवस्था। इसे ही ईर्ष्या कहते हैं।
इसमें 'कमी' क्या है? पाँच प्रकार की कमी: घर के प्रति कमी, परिवार के प्रति कमी, लाभ के प्रति कमी, प्रतिष्ठा के प्रति कमी, और धर्म के प्रति कमी। जो कमी, कमी होना, कमी की अवस्था, लोभ, नीचता, कंजूसी, संकीर्ण मानसिकता के समान है, उसे कमी कहते हैं। (3)
894. इसमें छल क्या है? इसमें कोई व्यक्ति शरीर से, वाणी से और मन से गलत कर्म करके, उस कर्म को छिपाने के लिए बुरी इच्छा उत्पन्न करता है; वह इस प्रकार सोचता है, "मुझे कोई न जाने"; [358] वह इस प्रकार सोचता है, "मुझे कोई न जाने"; वह इस प्रकार कहता है, "मुझे कोई न जाने"; वह शरीर से इस प्रकार प्रयास करता है, "मुझे कोई न जाने"; जो कुछ भी समान है, छल, कपट, छिपाव, छल, जालसाजी, बात को उलझाना, टालमटोल, छुपाना, गुप्त रखना, छिपाना, ढकना, स्पष्ट न करना, प्रकट न करना, अच्छी तरह छुपाना, कपट। इसे छल कहते हैं।
इसमें 'पाखंड' क्या है? इसमें एक व्यक्ति पाखंडी, धोखेबाज है; इसमें जो कुछ भी पाखंड है, पाखंडी होना, पाखंडी अवस्था, कठोरता, कठोरता, ढोंग, ढोंग। इसे पाखंड कहते हैं। (4)
895. इसमें 'अज्ञान' क्या है? ज्ञान का अभाव, दृष्टि का अभाव, अज्ञान का अवरोध, सुस्ती की बुरी जड़। यही अज्ञान कहलाता है।
P = अनुच्छेद 180 देखें।
उसमें 'बनने की लालसा' क्या है? जो बनने से संबंधित है, वह बनने की इच्छा, बनने की लालसा, बनने का जुनून, बनने की चाहत, बनने का प्रेम, बनने की तीव्र इच्छा, बनने की ललक, बनने से आसक्ति है। इसे बनने की लालसा कहते हैं। (5)
896. इसमें 'अनुरूप दृष्टिकोण' क्या है? "आत्मा और संसार, दोनों (पुनः) होंगे", अतः, जो समान है, वह गलत दृष्टिकोण है, गलत दृष्टिकोण का सहारा लेना है, :P: उलटी पकड़। इसे ही अनुरूप दृष्टिकोण कहते हैं।
P = अनुच्छेद 249 देखें।

इसमें 'अनुचित दृष्टिकोण' क्या है? "आत्मा और संसार दोनों (पुनः) नहीं होंगे", अतः, जो समान है, वह गलत दृष्टिकोण है, गलत दृष्टिकोण का सहारा लेना है, :P: उलटी पकड़। इसे अनुचित दृष्टिकोण कहते हैं। (6)
P = अनुच्छेद 249 देखें।
897. इसमें 'शाश्वतवादी दृष्टिकोण' क्या है? "आत्मा और संसार दोनों ही शाश्वत हैं", अतः, जो समान है, वह गलत दृष्टिकोण है, गलत दृष्टिकोण का सहारा लेना है, यानी उलटा दृष्टिकोण। इसे ही शाश्वतवादी दृष्टिकोण कहते हैं।
P = अनुच्छेद 249 देखें।
इसमें 'विनाशवादी दृष्टिकोण' क्या है? "आत्मा और संसार दोनों का अंत हो जाएगा", अतः, जो समान है, वह गलत दृष्टिकोण है, गलत दृष्टिकोण का सहारा लेना है, :P: उलटा दृष्टिकोण। इसे ही विनाशवादी दृष्टिकोण कहते हैं। (7)
P = अनुच्छेद 249 देखें।

898. इसमें 'सीमित दृष्टिकोण' क्या है? "आत्मा और संसार दोनों ही सीमित हैं", अतः, जो समान है, वह गलत दृष्टिकोण है, गलत दृष्टिकोण का सहारा लेना है, :P: उलटी पकड़। इसे ही सीमित दृष्टिकोण कहते हैं। [359]
P = अनुच्छेद 249 देखें।
इसमें 'अनंत दृष्टि' क्या है? "आत्मा और संसार दोनों अनंत हैं", अतः, जो समान है, वह गलत दृष्टि है, गलत दृष्टि का सहारा लेना है, :P: उलटी पकड़। इसे अनंत दृष्टि कहते हैं। (8)
P = अनुच्छेद 249 देखें।
899. इसमें 'परम आरंभिक दृष्टिकोण' क्या है? प्राणियों के परम आरंभिक दृष्टिकोण के विषय में जो कुछ उत्पन्न होता है, वह गलत दृष्टिकोण है, गलत दृष्टिकोण का सहारा लेना है, यानी उलटी पकड़। इसे परम आरंभिक दृष्टिकोण कहा जाता है।
P^=पैरा 249 देखें।
इसमें 'परम लक्ष्य दृष्टिकोण' क्या है? प्राणियों के परम लक्ष्य के संबंध में जो विचार उत्पन्न होता है, वह गलत दृष्टिकोण है, गलत दृष्टिकोण का सहारा लेना है, यानी उलटी पकड़। इसे ही परम लक्ष्य दृष्टिकोण कहा जाता है। (9)
p = अनुच्छेद 249 देखें।
18+

द्वितीय

468

विश्लेषण की पुस्तक

900. इसमें 'लज्जा की भावना का अभाव' क्या है? वह स्थिति जिसमें लज्जा होनी चाहिए वहाँ लज्जा न होना, बुरे कर्मों को प्राप्त करने पर लज्जा न होना। इसे लज्जा की भावना का अभाव कहते हैं।
इसमें 'दोष के भय का अभाव' क्या है? वह स्थिति जहाँ दोष का भय होना चाहिए, वहाँ दोष का भय न होना, बुरे कर्मों की अवस्थाओं में दोष का भय न होना। इसे दोष के भय का अभाव कहते हैं। (10)
901. इसमें 'अवज्ञा' क्या है? शिक्षा के अनुसार बात किए जाने पर भी अवज्ञा का कार्य, अवज्ञा की स्थिति, अवज्ञा, विरोध, आलोचना, उपेक्षा, अनादर, अनादर, सम्मानहीनता। इसे अवज्ञा कहते हैं।
इसमें 'दुष्ट मित्र रखना' क्या है? कुछ ऐसे व्यक्ति होते हैं जो विश्वासहीन, कुटिल, अज्ञानी, नीच और बुद्धिहीन होते हैं। उन पर निर्भरता, उन पर प्रबल निर्भरता, उन पर पूर्ण निर्भरता, उनके निकट जाना, उनके प्रति समर्पण, उनके प्रति पूर्ण समर्पण, उनके साथ बंधुआपन। इसे ही दुष्ट मित्र रखना कहते हैं। (11)
902. इसमें 'सीधापन नहीं' क्या है? जो सीधापन नहीं है, सीधा न होना, टेढ़ापन, घुमावदारपन, कुटिलता। इसे सीधापन नहीं कहते।
उसमें 'गैर-कोमलता' क्या है? वह जो गैर-लचीलापन, अकोमलता, कठोरता, कठोरता, दृढ़ता, चेतना की अनम्यता (अर्थात्) गैर-लचीलापन है। इसे गैर-कोमलता कहा जाता है। (12) [360]
903. इसमें 'अधीरता' क्या है? अधीरता, धैर्य का अभाव, उग्रता, अचानकता, चेतना के आनंद का अभाव। यही अधीरता कहलाता है।
इसमें 'अति' क्या है? शारीरिक उल्लंघन, मौखिक उल्लंघन, शारीरिक और मौखिक दोनों उल्लंघन। इसे अति कहा जाता है। साथ ही सभी बुरे व्यवहार अति हैं। (13)
904. इसमें 'कोमलता का अभाव' क्या है? वह वाणी जो कर्कश, खुरदरी, दूसरों के प्रति कड़वी, दूसरों को चुभने वाली, क्रोध से भरी और एकाग्रता में बाधक हो; इसी प्रकार की वाणी। वह वाणी जो अपरिष्कृत हो, कोमल न हो, कठोर हो। इसे कोमलता का अभाव कहते हैं।

छोटी वस्तुओं का विश्लेषण

469

इसमें 'अतिशयता' क्या है? दो प्रकार की आतिथ्य सत्कार: सांसारिक आतिथ्य सत्कार और सैद्धांतिक आतिथ्य सत्कार। इसमें कोई व्यक्ति सांसारिक आतिथ्य सत्कार या सैद्धांतिक आतिथ्य सत्कार के संबंध में आतिथ्य सत्कार नहीं करता है। इसे ही आतिथ्य सत्कार कहा जाता है। (14)

905. इसमें 'संवेदनाओं के द्वारों की रक्षा न करना' क्या है? इसमें एक व्यक्ति किसी दृश्य वस्तु को आँख से देखकर उसका सामान्य स्वरूप और विवरण देखता है। चाहे जो भी कारण हो, यदि कोई व्यक्ति आँख की संवेदी शक्ति को नियंत्रित किए बिना रहता है, तो लोभ और मानसिक पीड़ा जैसी बुरी अवस्थाएँ उत्पन्न हो सकती हैं। वह इस पर संयम नहीं बरतता; वह आँख की संवेदी शक्ति की रक्षा नहीं करता; वह आँख की संवेदी शक्ति पर नियंत्रण नहीं रखता। कान से श्रव्य वस्तु सुनना। नाक से सुगंधित वस्तु को सूंघना। जीभ से स्वादिष्ट वस्तु का स्वाद लेना।

P: शरीर से किसी मूर्त वस्तु को छूना। :P: किसी बात को समझना।

मन में विचार करते समय, व्यक्ति सामान्य स्वरूप और बारीकियों को ग्रहण करता है। चाहे किसी भी कारण से, यदि व्यक्ति मन की नियंत्रण शक्ति को नियंत्रित किए बिना मन में विवश रहता है, तो लोभ, मानसिक पीड़ा और बुरी अवस्थाएँ उत्पन्न हो सकती हैं। वह इन पर संयम नहीं बरतता; वह मन की नियंत्रण शक्ति की रक्षा नहीं करता; वह मन की नियंत्रण शक्ति में संयम नहीं रखता। इन छह नियंत्रण शक्तियों में से जो भी शक्ति रक्षा नहीं करती, जिसकी रक्षा नहीं की जाती, जो रक्षा नहीं करती, जो संयम नहीं रखती, उसे ही नियंत्रण शक्तियों के द्वारों की रक्षा न करना कहा जाता है।

P = पहले उदाहरण के सामान्य रूप में प्रत्येक को पूरा करें।

इसमें 'भोजन में सही मात्रा का ज्ञान न होना' का क्या अर्थ है?

इसमें एक व्यक्ति जो विचार नहीं करता, वह अनुचित रूप से भोग-विलास, अभिमान, शारीरिक आकर्षण और सुंदर शरीर के लिए भोजन ग्रहण करता है। इसमें असंतोष निहित है, क्योंकि वह सही मात्रा नहीं जानता, भोजन पर विचार नहीं करता। इसे 'भोजन में सही मात्रा न जानना' कहा जाता है। (15)

906. इसमें 'अनमनापन' क्या है? वह जो सचेतनता का अभाव है, निरंतर सचेतनता का अभाव है, स्मरण का अभाव है, सचेतनता का अभाव है, स्मरण की क्रिया का अभाव है, मन में रखने का अभाव है, सतहीपन है, विस्मरण है। इसे अनमनापन कहते हैं। [361]

उसमें 'जागरूकता का अभाव' क्या है? वह जो है

470

विश्लेषण की पुस्तक

ज्ञान का अभाव, दृष्टि का अभाव, अज्ञान का अवरोध, सुस्ती की बुरी जड़। इसे ही जागरूकता का अभाव कहते हैं। (16)

P = अनुच्छेद 180 देखें।

907. इसमें 'नैतिक विफलता' क्या है? शारीरिक उल्लंघन, शाब्दिक उल्लंघन, शारीरिक और शाब्दिक दोनों उल्लंघन। इसे नैतिक विफलता कहा जाता है। साथ ही, सभी गलत नैतिकता नैतिक विफलता है।

इसमें 'गलत दृष्टिकोण' क्या है? "दान नहीं है; त्याग नहीं है; (वे नहीं हैं) जो स्वयं इस संसार और परलोक को पूर्णतः जानकर, दूसरों को इसका ज्ञान कराते हैं"; जो इसके समान है, गलत दृष्टिकोण है, गलत दृष्टिकोण का सहारा लेना है; उलटी पकड़ है। इसे गलत दृष्टिकोण कहते हैं। सभी गलत दृष्टिकोण भी गलत दृष्टिकोण हैं। (17)

पी एल = पैरा देखें। 971. पी 2 = पैरा देखें। 249.

908. इसमें 'आंतरिक बंधन' क्या हैं? निम्न अस्तित्व से संबंधित पाँच बंधन आंतरिक बंधन हैं; उच्च अस्तित्व से संबंधित पाँच बंधन बाह्य बंधन हैं। (18)

(यहाँ समाप्त होता है) दोहरी (व्याख्या)

3. त्रिविध व्याख्या

909. उसमें 'तीन बुरी जड़ें' क्या हैं? लोभ, घृणा, सुस्ती।

इसमें लालच क्या है? जो भी वासना, मोह, प्रलोभन, आज्ञापालन, जुनून, तीव्र वासना, चेतना का मोह, इच्छा, लालसा, आसक्ति, लोभ, सर्वभक्षी लोभ, विच्छेद, खोखलापन, आकर्षण, छल, जननी, बंधनकारी जननी, व्याकुल स्त्री, फँसाने वाली स्त्री, नदी, विस्तार, (मछली

पकड़ने की) रेखा, फैलाव, आग्रह, साथी, लालसा, बनने का मार्गदर्शक, जंगल, वन, घनिष्ठता, स्नेह, (लोभी) विचारशीलता, रिश्तेदार, चाहत, चाहना, चाहत की अवस्था, दृश्य (वस्तुओं) की चाहत, श्रव्य (वस्तुओं) की चाहत, सुगंधित (वस्तुओं) की चाहत, स्वादिष्ट (वस्तुओं) की चाहत, स्पर्शनीय (वस्तुओं) की चाहत, लाभ की चाहत, धन की चाहत, पुत्रों की चाहत, जीवन की चाहत, बड़बड़ाना, अत्यधिक बड़बड़ाना, बड़बड़ाने की क्रिया, बड़बड़ाने की अवस्था, आत्म-भोग, स्वार्थी होना। भोगी, आत्म-भोग की अवस्था, बेचैनी, बेहतर की इच्छा, व्यभिचारी वासना, अराजक लालच, लालसा, [362] लालसा का कार्य,

छोटी वस्तुओं का विश्लेषण

471

विनती करना, पसंद करना, गिड़गिड़ाना, इंद्रिय सुख की लालसा, बनने की लालसा, न बनने की लालसा, रूप की लालसा, निराकार की लालसा, समाप्ति की लालसा, दृश्य (वस्तुओं) की लालसा,* श्रव्य (वस्तुओं) की लालसा, सुगंधित (वस्तुओं) की लालसा, स्वादयुक्त (वस्तुओं) की लालसा, स्पर्शनीय (वस्तुओं) की लालसा, वैचारिक (वस्तुओं) की लालसा, बाढ़, बंधन, आलंका, अवरोध, रुकावट, आवरण, बंधन, दुराचार, सुप्त प्रवृत्ति, अतिक्रमण, लता, लोभ, दुख का मूल, दुख का स्रोत, दुख का उद्गम, मारा का फंदा, मारा का कांटा, मारा का क्षेत्र, लालसा की नदी, लालसा का जाल, लालसा की लगाम, लालसा का सागर, लोभ की बुरी जड़। इसे लोभ कहते हैं।
पाठ में 'दृश्य (वस्तुओं) के लिए लालसा' वाक्यांश को छोड़ दिया गया है।
इसमें घृणा क्या है? "उसने मुझे हानि पहुँचाई है", इस प्रकार झुंझलाहट उत्पन्न होती है; "वह मुझे हानि पहुँचा रहा है", इस प्रकार झुंझलाहट उत्पन्न होती है; "वह मुझे हानि पहुँचाएगा", इस प्रकार झुंझलाहट उत्पन्न होती है; "उसने मेरे प्रिय और प्रिय व्यक्ति को हानि पहुँचाई है, वह हानि पहुँचा रहा है, वह हानि पहुँचाएगा", इस प्रकार झुंझलाहट उत्पन्न होती है; "उसने मेरे अप्रिय व्यक्ति के साथ भलाई की है, वह भलाई कर रहा है, वह भलाई करेगा", इस प्रकार झुंझलाहट उत्पन्न होती है; या अनुचित रूप से झुंझलाहट उत्पन्न होती है। जो कुछ भी इसके समान है, जैसे चेतना की झुंझलाहट, आक्रोश, घृणा, शत्रुता, चिड़चिड़ापन, झुंझलाहट, क्रोध, अरुचि, घृणा, मानसिक विकार, घृणा, क्रोध, क्रोधित होना, क्रोधित अवस्था, घृणा, घृणा, घृणा की अवस्था, अव्यवस्था, अव्यवस्थितता, विरोध, शत्रुता, उग्रता, अचानकता, चेतना के आनंद का अभाव। इसे घृणा कहते हैं।
P = उचित रूप से पूरा करें।
उसमें सुस्ती क्या है? दुख के ज्ञान का अभाव; दुख के कारण के ज्ञान का अभाव; दुख के निवारण के ज्ञान का अभाव; दुख के निवारण के मार्ग के ज्ञान का अभाव; प्राणियों की उत्पत्ति के अंतिम स्रोत के ज्ञान का अभाव; प्राणियों के अंतिम लक्ष्य के ज्ञान का अभाव; प्राणियों की उत्पत्ति और अंतिम लक्ष्य दोनों के ज्ञान का अभाव; विशिष्ट कारणता और आश्रित उत्पत्ति की अवस्थाओं के ज्ञान का अभाव; जो समान है, ज्ञान का अभाव, दृष्टि का अभाव, अज्ञान का अवरोध, सुस्ती की बुरी जड़। इसे सुस्ती कहते हैं। ये तीन बुरी जड़ें हैं। (1)
पी = पैरा 180 देखें।

472

विश्लेषण की पुस्तक

910. उसमें 'तीन प्रकार की बुरी सोच' क्या हैं? इच्छा से जुड़ी सोच, दुर्भावना से जुड़ी सोच, क्रूरता से जुड़ी सोच।
इसमें इच्छा से जुड़ा चिंतन क्या है? मनो-विचार, चिंतन, इच्छा से जुड़ा गलत विचार। इसे ही इच्छा से जुड़ा चिंतन कहते हैं। [363]
इसमें दुर्भावना से संबंधित विचार क्या है? दुर्भावना से जुड़े विचार, चिंतन, गलत सोच। इसे ही दुर्भावना से संबंधित विचार कहते हैं।
इसमें क्रूरता से संबंधित विचार क्या है? क्रूरता से जुड़े विचार, चिंतन, गलत विचार। इसे क्रूरता से संबंधित चिंतन कहा जाता है। ये तीन प्रकार के बुरे चिंतन हैं। (2)
911. इसमें बुरी धारणा के तीन प्रकार क्या हैं? इच्छा से जुड़ी धारणा, दुर्भावना से जुड़ी धारणा, क्रूरता से जुड़ी धारणा।

इसमें इच्छा से संबंधित बोध क्या है? बोध, बोध करने की क्रिया, बोध की वह अवस्था जो इच्छा से जुड़ी होती है। इसे ही इच्छा से संबंधित बोध कहते हैं।

इसमें दुर्भावना से संबंधित धारणा क्या है? धारणा, देखने की क्रिया, दुर्भावना से जुड़ी देखने की अवस्था। इसे दुर्भावना से संबंधित धारणा कहते हैं।

इसमें क्रूरता से संबंधित धारणा क्या है? धारणा, देखने की क्रिया, क्रूरता से जुड़ी देखने की अवस्था। इसे क्रूरता से संबंधित धारणा कहा जाता है। ये तीन प्रकार की बुरी धारणाएँ हैं। (3)

912. उसमें 'तीन बुरे तत्व' क्या हैं? इच्छा का तत्व, दुर्भावना का तत्व, क्रूरता का तत्व।

इसमें इच्छा का तत्व क्या है? इच्छा से संबंधित विचार इच्छा का तत्व है; दुर्भावना से संबंधित विचार दुर्भावना का तत्व है; क्रूरता से संबंधित विचार क्रूरता का तत्व है।

इसमें इच्छा से संबंधित चिंतन क्या है? मनोवृत्ति, चिंतन, इच्छा से जुड़े गलत विचार। इसे ही इच्छा से संबंधित चिंतन कहते हैं।

इसमें दुर्भावना से संबंधित विचार क्या है? दुर्भावना से जुड़े विचार, चिंतन, गलत सोच। इसे ही दुर्भावना से संबंधित विचार कहते हैं।

उसमें क्रूरता से संबंधित विचार क्या है? मानसिकता, सोच, क्रूरता से जुड़े गलत विचार। इसे क्रूरता से संबंधित सोच कहा जाता है। ये तीन बुरे तत्व हैं। (4)

913. उसमें तीन प्रकार के गलत कर्म क्या हैं? गलत शारीरिक कर्म, गलत मौखिक कर्म, गलत मानसिक कर्म।

इसमें गलत शारीरिक क्रिया क्या है? प्राणियों की हत्या करना, बिना अनुमति के कुछ लेना, यौन दुराचार। इसे गलत शारीरिक क्रिया कहा जाता है।

इसमें गलत वाक्पटुता क्या है? झूठी वाणी, निंदात्मक वाणी, कठोर वाणी, निरर्थक वाणी। इसे ही गलत वाक्पटुता कहते हैं।

उसमें गलत मानसिक क्रिया क्या है? [364] लोभ, दुर्भावना, गलत दृष्टिकोण। इसे गलत मानसिक क्रिया कहते हैं।

इसमें गलत शारीरिक क्रिया क्या है? बुरी शारीरिक क्रिया गलत शारीरिक क्रिया है; बुरी मौखिक क्रिया गलत मौखिक क्रिया है; बुरी मानसिक क्रिया गलत मानसिक क्रिया है।

इसमें बुरी शारीरिक क्रिया क्या है? बुरी शारीरिक इच्छाशक्ति बुरी शारीरिक क्रिया है; बुरी मौखिक इच्छाशक्ति बुरी मौखिक क्रिया है; बुरी मानसिक इच्छाशक्ति बुरी मानसिक क्रिया है। ये तीन प्रकार की गलत क्रियाएँ हैं। (5)

914. उसमें 'तीन दोष' क्या हैं? इच्छा का दोष, बनने का दोष, अज्ञान का दोष।

तो फिर, कामवासना की अशुद्धि क्या है? कामवासना से जुड़ी वह चीज़ जो इंद्रिय सुख की कामना, कामवासना की लालसा, कामवासना की चाहत, कामवासना के प्रति आसक्ति, कामवासना की तीव्र इच्छा, कामवासना की तीव्र लालसा और कामवासना से आसक्ति पैदा करती है, उसे कामवासना की अशुद्धि कहते हैं।

इसमें 'विकास का दोष' क्या है? वह जो विकास से जुड़ा हुआ है, यानी विकास की इच्छा, विकास से आसक्ति। इसे ही विकास का दोष कहते हैं।

P = अनुच्छेद 895 देखें।

आई पी

अज्ञान का दोष क्या है? दुख के ज्ञान का अभाव, अज्ञान का अवरोध, सुस्ती की बुरी जड़। इसे ही अज्ञान का दोष कहते हैं। ये तीन दोष हैं।

P = अनुच्छेद 909 देखें।

915. उसमें 'तीन बंधन' क्या हैं? व्यक्तिवाद का दृष्टिकोण, संदेह, आदतों और प्रथाओं का पालन।
इसमें व्यक्तिवाद का दृष्टिकोण क्या है? इसमें अज्ञानी सांसारिक व्यक्ति, जो श्रेष्ठ पुरुषों को नहीं पहचानता, उनकी शिक्षाओं में पारंगत नहीं है, उनकी शिक्षाओं में अनुशासित नहीं है; अच्छे पुरुषों को नहीं पहचानता, अच्छे पुरुषों की शिक्षाओं में पारंगत नहीं है, अच्छे पुरुषों की शिक्षाओं में अनुशासित नहीं है; भौतिक गुणों को आत्मा मानता है; या आत्मा को भौतिक गुणों से युक्त मानता है; या भौतिक गुणों को आत्मा में विद्यमान मानता है; या आत्मा को भौतिक गुणों में विद्यमान मानता है; :PX : बोध। : P1 : मानसिक सहवर्ती। : P1 : चेतना को आत्मा मानता है; या आत्मा को चेतना से युक्त मानता है; या चेतना को आत्मा में विद्यमान मानता है; या आत्मा को चेतना में विद्यमान मानता है; जो समान है, गलत दृष्टिकोण, गलत दृष्टिकोण का सहारा लेना, :P2 : उलटी पकड़। इसे व्यक्तिवाद का दृष्टिकोण कहते हैं।
P* = अंतिम उदाहरण के सामान्य रूप में प्रत्येक को पूरा करें।
पृष्ठ 2 = पैराग्राफ 249 देखें।
इसमें संदेह क्या है? व्यक्ति भ्रमित होता है, गुरु पर संदेह करता है; व्यक्ति भ्रमित होता है, शिक्षा पर संदेह करता है; व्यक्ति भ्रमित होता है, व्यवस्था पर संदेह करता है; व्यक्ति भ्रमित होता है, उपदेशों पर संदेह करता है; व्यक्ति भ्रमित होता है, प्राणियों की उत्पत्ति पर संदेह करता है; व्यक्ति भ्रमित होता है, प्राणियों के अंत पर संदेह करता है; व्यक्ति भ्रमित होता है, प्राणियों की उत्पत्ति और अंत दोनों पर संदेह करता है; व्यक्ति विशिष्ट कारणता और आश्रितता से उत्पन्न अवस्थाओं पर संदेह करता है; जो कुछ भी समान है, वह भ्रम, भ्रमित होना, भ्रमित अवस्था, चेतना की कठोरता, मानसिक त्याग है। इसे ही संदेह कहते हैं।
इसमें आदतों और प्रथाओं का पालन करना क्या है? (इसमें विश्वास करना) आदत के माध्यम से शुद्धि, अभ्यास के माध्यम से शुद्धि, और इस (शिक्षा) से बाहर के संन्यासियों और ब्राह्मणों की आदत और अभ्यास दोनों के माध्यम से शुद्धि; जो समान है, गलत दृष्टिकोण, गलत दृष्टिकोण का सहारा लेना, वियोजित पकड़। इसे आदतों और प्रथाओं का पालन करना कहते हैं। ये तीन बंधन हैं। (7)
P = अनुच्छेद 249 देखें।
916. उसमें 'तीन प्रकार की भोग-विलास' क्या हैं? इंद्रिय सुख की भोग-विलास, बनने की भोग-विलास, न बनने की भोग-विलास।
उसमें बनने की लालसा क्या है? वासना, मोह,

चेतना का मोह, जो साकार होने की दृष्टि के साथ जुड़ा होता है। इसे साकार होने की लालसा कहते हैं।
इसमें निराकारता की लालसा क्या है? कामवासना, मोह, चेतना का मोह जो विनाशवादी दृष्टिकोण से जुड़ा है। इसे निराकारता की लालसा कहते हैं। शेष लालसा इंद्रिय सुख की लालसा है।
इसमें इंद्रिय सुख की लालसा क्या है? कामवासना, आसक्ति, इच्छा से जुड़ी चेतना की आसक्ति। इसी को इंद्रिय सुख की लालसा कहते हैं।
( )* वासना, मोह, चेतना का मोह जो रूप और निराकार तत्वों से जुड़ा हो। इसे ही बनने की लालसा कहते हैं।
( ) # कुछ ग्रंथों में यह वाक्य शामिल है, "उसमें बनने की लालसा क्या है?"
( )* वासना, मोह, चेतना का मोह जो विनाशवादी दृष्टिकोण से प्रेरित है। इसे निराकार होने की लालसा कहते हैं। ये तीन प्रकार की लालसाएँ हैं। (8)
( )* कुछ ग्रंथों में यह भी शामिल है, "उसमें अव्यवहार की लालसा क्या है?"
917. उसमें 'अन्य तीन प्रकार की लालसा* क्या हैं? इंद्रिय सुख की लालसा, रूप की लालसा, निराकार की लालसा।
इसमें इंद्रिय सुख की लालसा क्या है? कामवासना, आसक्ति, इच्छा से जुड़ी चेतना की आसक्ति। इसी को इंद्रिय सुख की लालसा कहते हैं।
[366] उसमें रूप की लालसा क्या है? कामवासना, मोह, रूप तत्व से जुड़ी चेतना का मोह। इसे रूप की लालसा कहते हैं।

इसमें निराकार के लिए तड़प क्या है? कामवासना, आसक्ति, निराकार तत्व से जुड़ी चेतना की आसक्ति। इसे ही निराकार के लिए तड़प कहते हैं। ये तीन प्रकार की तड़प हैं। (9)

918. इसमें तीन अन्य प्रकार की भोग-विलास क्या हैं? रूप की भोग-विलास, निराकार की भोग-विलास, और समाप्ति की भोग-विलास।

इसमें रूप की लालसा क्या है? वासना, मोह, रूप तत्व से जुड़ी चेतना का मोह। इसी को रूप की लालसा कहते हैं।

इसमें निराकार के प्रति लालसा क्या है? वासना, मोह, निराकार तत्व से जुड़ी चेतना का मोह। इसी को निराकार के प्रति लालसा कहते हैं।

1 8*

आर

476 विश्लेषण की पुस्तक

उसमें समाप्ति की लालसा क्या है? चेतना की वासना, आसक्ति और मोह, जो विनाशवादी दृष्टिकोण से प्रेरित है। इसे ही समाप्ति की लालसा कहते हैं। ये तीन प्रकार की लालसाएँ हैं। (10)

919. उसमें 'तीन प्रकार की खोज' क्या हैं? इंद्रिय सुख की खोज, विकास की खोज, परम साधना की खोज।

इसमें इंद्रिय सुख की खोज क्या है? वह जो इच्छा से जुड़ा हुआ है, यानी इंद्रिय सुख की लालसा, इंद्रिय सुख से आसक्ति। इसे ही इंद्रिय सुख की खोज कहते हैं।

P = अनुच्छेद 914 देखें।

उसमें विकास की खोज क्या है? वह जो विकास से जुड़ा हुआ है, यानी विकास की चाहत, :P: विकास से आसक्ति। इसे ही विकास की खोज कहते हैं।

P = अनुच्छेद 895 देखें।

इसमें सर्वोच्च साधना की खोज क्या है? "संसार शाश्वत है" या "संसार शाश्वत नहीं है" या, rP 1: "मृत्यु के बाद कोई प्राणी न तो विद्यमान रहता है और न ही विद्यमान रहता है"; जो समान है, गलत दृष्टिकोण है, गलत दृष्टिकोण का सहारा लेना है, :P 2: उलटी पकड़ है। इसे ही सर्वोच्च साधना की खोज कहते हैं।

पी 1 = पैरा देखें। 815. पी 2 = पैरा देखें। 249.

इसमें इंद्रिय सुख की खोज क्या है? इंद्रिय सुख की लालसा और उससे जुड़ी बुरी शारीरिक, मौखिक और मानसिक क्रियाएँ। इसी को इंद्रिय सुख की खोज कहते हैं।

उसमें बनने की चाह क्या है? बनने की वासना और उससे उत्पन्न होने वाली बुरी शारीरिक क्रिया, मौखिक क्रिया और मानसिक क्रिया। इसे ही बनने की चाह कहा जाता है। [367]

इसमें सर्वोच्च साधना की खोज क्या है? अतिवादी दृष्टिकोण और उससे उत्पन्न होने वाली बुरी शारीरिक क्रिया, मौखिक क्रिया और मानसिक क्रिया। इसे ही सर्वोच्च साधना की खोज कहा जाता है। ये तीन प्रकार की खोज हैं। (11)

920. इसमें 'तीन प्रकार के अहंकार' क्या हैं? अहंकार इस प्रकार है, "मैं श्रेष्ठ हूँ"; अहंकार इस प्रकार है, "मैं बराबर हूँ"; अहंकार इस प्रकार है, "मैं हीन हूँ"। ये तीन प्रकार के अहंकार हैं। (12)

921. उसमें तीन प्रकार के भय क्या हैं? जन्म का भय, बुढ़ापे का भय, मृत्यु का भय।

छोटी वस्तुओं का विश्लेषण

477

तो जन्म का भय क्या है? डर, भयभीत होना, कांपना, कंपकंपी, जन्म से जुड़ा मानसिक आतंक। इसे ही जन्म का भय कहते हैं।

तो बुढ़ापे का डर क्या है? डर, भयभीत होना, कांपना, कंपकंपी, बुढ़ापे से जुड़ा मानसिक आतंक। इसे ही बुढ़ापे का डर कहते हैं।

इसमें मृत्यु का भय क्या है? डर, भयभीत होना, कांपना, सिसकना, मृत्यु पर आधारित मानसिक आतंक। इसे ही मृत्यु का भय कहते हैं। ये तीन प्रकार के भय हैं। (13)

922. इसमें 'तीन प्रकार के अंधकार' क्या हैं? अतीत के विषय में व्यक्ति उलझन में रहता है, संदेह करता है, अनिश्चित रहता है, स्पष्टता नहीं होती; या भविष्य के विषय में व्यक्ति उलझन में रहता है, संदेह करता है, अनिश्चित रहता है, स्पष्टता नहीं होती; या वर्तमान समय के विषय में व्यक्ति उलझन में रहता है, संदेह करता है, अनिश्चित रहता है, स्पष्टता नहीं होती। ये तीन प्रकार के अंधकार हैं।
(14)

923. इसमें 'विधर्म के तीन आधार' क्या हैं? इसमें कोई संन्यासी या ब्राह्मण इस प्रकार कहता है, इस प्रकार विचार करता है, "मनुष्य को जो भी सुख, दुख या न दुख-सुख का अनुभव होता है, वह सब पिछले कर्मों के कारण है"; इसमें कोई संन्यासी या ब्राह्मण इस प्रकार कहता है, इस प्रकार विचार करता है, "मनुष्य को जो भी सुख, दुख या न दुख-सुख का अनुभव होता है, वह सब एक सर्वोच्च देवता की रचना के कारण है"; इसमें कोई संन्यासी या ब्राह्मण इस प्रकार कहता है, इस प्रकार विचार करता है, "मनुष्य को जो भी सुख, दुख या न दुख-सुख का अनुभव होता है, [368] वह सब बिना कारण, बिना तर्क के है"। ये विधर्म के तीन आधार हैं।
(15)

924. उसमें 'तीन प्रकार की बाधाएँ' क्या हैं? कामवासना की बाधा; घृणा की बाधा; सुस्ती की बाधा। ये तीन प्रकार की बाधाएँ हैं। (161)

उसमें 'तीन प्रकार के दोष' क्या हैं? कामवासना का दोष; घृणा का दोष; सुस्ती का दोष। ये तीन प्रकार के दोष हैं। (17)

[इसमें 'तीन प्रकार की अशुद्धता' क्या हैं? कामवासना की अशुद्धता; घृणा की अशुद्धता; सुस्ती की अशुद्धता। ये तीन प्रकार की अशुद्धता हैं। (18)]

उसमें 'तीन प्रकार की विसंगतियाँ' क्या हैं? कामवासना की विसंगति; घृणा की विसंगति; सुस्ती की विसंगति। ये तीन प्रकार की विसंगतियाँ हैं। (19)

478

विश्लेषण की पुस्तक

इसमें 'अन्य तीन प्रकार की विसंगतियां' क्या हैं?

शारीरिक (क्रिया) में विसंगति; मौखिक (क्रिया) में विसंगति; मानसिक (क्रिया) में विसंगति। ये तीन प्रकार की विसंगतियाँ हैं। (20)

उसमें 'तीन प्रकार की अग्नि' क्या हैं? कामवासना की अग्नि; घृणा की अग्नि; सुस्ती की अग्नि। ये तीन प्रकार की अग्नि हैं। (21)

उसमें 'तीन प्रकार की कटुता' क्या हैं? कामवासना की कटुता; घृणा की कटुता; सुस्ती की कटुता। ये तीन प्रकार की कटुता हैं। (22)

इसमें अन्य तीन प्रकार की कटुता क्या हैं? शारीरिक क्रिया की कटुता; मौखिक क्रिया की कटुता; मानसिक क्रिया की कटुता। ये तीन प्रकार की कटुता हैं। (23)

925. इसमें 'सत्त्व संबंधी दृष्टिकोण' क्या है? इसमें एक संन्यासी या ब्राह्मण कहता है, "इंद्रिय सुखों में कोई दोष नहीं है"; वह इंद्रिय सुखों में लिप्त हो जाता है। इसे ही संतोष संबंधी दृष्टिकोण कहते हैं।

इसमें 'आत्मा का दृष्टिकोण' क्या है? इसमें अज्ञानी सांसारिक व्यक्ति, जो श्रेष्ठ पुरुषों को नहीं पहचानता, उनकी शिक्षाओं में पारंगत नहीं है, उनकी शिक्षाओं में अनुशासित नहीं है; अच्छे पुरुषों को नहीं पहचानता, अच्छे पुरुषों की शिक्षाओं में पारंगत नहीं है, अच्छे पुरुषों की शिक्षाओं में अनुशासित नहीं है; भौतिक गुणों को आत्मा मानता है; या आत्मा को भौतिक गुणों से युक्त मानता है; या भौतिक गुणों को आत्मा में विद्यमान मानता है; या आत्मा को भौतिक गुणों में विद्यमान मानता है; : पृष्ठ 1 : बोध। : पृष्ठ X : मानसिक सहवर्ती। : पृष्ठ 1 ; चेतना को आत्मा मानता है; या आत्मा को चेतना से युक्त मानता है; या चेतना को आत्मा में विद्यमान मानता है; या आत्मा को चेतना में विद्यमान मानता है; जो समान है, गलत दृष्टिकोण, गलत दृष्टिकोण का सहारा लेना, : पृष्ठ 2 : उलटी पकड़। इसे आत्मा का दृष्टिकोण कहते हैं। [369]

P 1 = अंतिम उदाहरण के सामान्य रूप में प्रत्येक को पूरा करें।

पृष्ठ 2 = पैराग्राफ 249 देखें।

इसमें 'गलत दृष्टिकोण' क्या है? "दान-पुण्य नहीं है; त्याग नहीं है; (वे नहीं हैं) जो स्वयं इस संसार और परलोक को पूर्णतः जानकर, उसे (दूसरों को) ज्ञात कराते हैं"; जो इसके समान है, गलत दृष्टिकोण है, गलत दृष्टिकोण का सहारा लेना है; (वे) विपरीत पकड़ है। इसे

गलत दृष्टिकोण, शाश्वतवादी दृष्टिकोण, संतुष्टिवादी दृष्टिकोण, वैयक्तिक दृष्टिकोण, आत्मावादी दृष्टिकोण, विनाशवादी दृष्टिकोण, गलत दृष्टिकोण कहा जाता है।

पैरा 971 देखें।

पृष्ठ 2 = पैराग्राफ 249 देखें।

926. इसमें 'उबाऊपन' क्या है? उबाऊपन, उबाऊपन होना, नाखुश होना, असंतोष, दूर के निवासों या कुछ उच्चतर सुखमय अवस्थाओं का भय। इसे उबाऊपन कहते हैं।
इसमें 'परेशानी' क्या है? इसमें कोई व्यक्ति हाथ से, मिट्टी के ढेले से, लाठी से, तलवार से, रस्सी से या किसी अन्य वस्तु से दूसरों को चोट पहुँचाता है; जो भी इसी प्रकार का हो, दूसरों को परेशान करना, चोट पहुँचाना, तंग करना, घायल करना, उकसाना, क्रोधित करना, मारना। इसे परेशानी कहा जाता है।
इसमें 'गलत व्यवहार' क्या है? गलत व्यवहार, शरीर द्वारा किया गया अधार्मिक व्यवहार; गलत व्यवहार, वाणी द्वारा किया गया अधार्मिक व्यवहार; गलत व्यवहार, मन द्वारा किया गया अधार्मिक व्यवहार। इसे गलत व्यवहार कहते हैं। (25)
927. इसमें 'अवज्ञा' क्या है? शिक्षा के अनुसार बात किए जाने पर अवज्ञा का कार्य, अवज्ञा की स्थिति, अवज्ञा, विरोध, नुक्ताचीनी, उपेक्षा, अनादर, अनादर का कार्य होता है। इसे अवज्ञा कहते हैं।
इसमें 'दुष्ट मित्र रखना' क्या है? इसमें ऐसे लोग शामिल हैं जो अविश्वासी, कुरीतिक, अज्ञानी, नीच और बुद्धिहीन होते हैं; उन पर निर्भरता, उन पर पूर्ण निर्भरता, उनके निकट जाना, उनके प्रति पूर्ण निष्ठा, उनके साथ उलझाव। इसे ही दुष्ट मित्र रखना कहते हैं।
इसमें 'धारणाओं की विविधता' क्या है? इच्छा से जुड़ी धारणा, दुर्भावना से जुड़ी धारणा, क्रूरता से जुड़ी धारणा। इसे ही धारणाओं की विविधता कहते हैं। सभी बुरी धारणाएँ धारणाओं की विविधता हैं। (26)
928. इसमें 'विचलित होना' क्या है? चेतना का विचलित होना, बेचैनी, मानसिक अस्थिरता, चेतना की उथल-पुथल। यही चेड विचलित होना है।
इसमें 'आलस्य' क्या है? गलत शारीरिक क्रिया, गलत मौखिक क्रिया, गलत मानसिक क्रिया [370] या चेतना का पाँच प्रकार के इंद्रिय सुखों के वश में बार-बार हो जाना, या सावधानीपूर्वक काम न करना, निरंतर काम न करना, रुक-रुक कर काम करना, स्थिर रहना, इच्छा का त्याग करना, कार्य का त्याग करना, अनुनय न करना, विकास न करना, पुनरावृत्ति न करना, संकल्प न लेना, अभ्यास न करना, अच्छे भावों के विकास में लापरवाही बरतना। यही आलस्य कहलाता है।
इसमें 'लापरवाही' क्या है? गलत शारीरिक क्रिया या गलत

मौखिक क्रिया, गलत मानसिक क्रिया, चेतना का पाँच इंद्रिय सुखों के वश में बार-बार हो जाना, सावधानीपूर्वक काम न करना, निरंतर काम न करना, रुक-रुक कर काम करना, स्थिर रहना, इच्छा का त्याग करना, कार्य को छोड़ देना, अनुनय न करना, विकास न करना, पुनरावृत्ति न करना, संकल्प न लेना, अभ्यास न करना, अच्छे भावों के विकास में असावधानी बरतना; जो असावधानी, असावधान होना, असावधानी की अवस्था के समान है, उसे असावधानी कहते हैं। (27)

929. इसमें 'असंतोष' क्या है? वस्त्र, भिक्षा, आवास, बीमारों की सहायता के लिए दवा या पांच प्रकार के इंद्रिय सुखों जैसी आवश्यकताओं से असंतुष्ट व्यक्ति की वह बड़ी इच्छा; जो समान हो, इच्छा, इच्छा करने की क्रिया, असंतोष, कामवासना, आसक्ति, चेतना की आसक्ति। इसे ही असंतोष कहते हैं।
तो फिर 'जागरूकता का अभाव' क्या है? ज्ञान का अभाव, दृष्टि का अभाव, अज्ञान का अवरोध, सुस्ती की बुरी जड़। इसी को जागरूकता का अभाव कहते हैं।
P= पैराग्राफ 180 देखें।
इसमें 'सर्वोच्च इच्छा' क्या है? वस्त्र, भिक्षा, आवास, बीमारों की सहायता के लिए दवा या पांच प्रकार के इंद्रिय सुखों जैसी आवश्यकताओं से असंतुष्ट व्यक्ति की वह प्रबल इच्छा; जो इच्छा, इच्छा करने की क्रिया, सर्वोच्च इच्छा, कामवासना, आसक्ति, चेतना की आसक्ति के समान है। इसे सर्वोच्च इच्छा कहा जाता है। (28)
930. इसमें 'लज्जा की भावना का अभाव' क्या है? वह स्थिति जिसमें लज्जा होनी चाहिए वहाँ लज्जा न होना, बुरे कर्मों को प्राप्त करने पर लज्जा न होना। इसे लज्जा की भावना का अभाव कहते हैं।
इसमें 'दोष के भय का अभाव' क्या है? वह स्थिति जहाँ दोष का भय होना चाहिए, वहाँ दोष का भय न होना, बुरे कर्मों की अवस्थाओं में भी दोष का भय न होना। इसी को दोष के भय का अभाव कहते हैं।
उसमें 'असावधानी' क्या है? गलत शारीरिक क्रिया या गलत मौखिक क्रिया या गलत मानसिक क्रिया या चेतना का पांच इंद्रिय सुखों के वश में बार-बार झुक जाना, या सावधानीपूर्वक काम न करना, [371] निरंतर काम न करना, रुक-रुक कर काम करना, स्थिर रहना, इच्छा का त्याग करना।

छोटी वस्तुओं का विश्लेषण

481

कार्य का त्याग, अनुनय न करना, विकास न करना, पुनरावृत्ति न करना, संकल्प न लेना, अभ्यास न करना, अच्छे गुणों के विकास में असावधानी; जो इसके समान है, असावधानी, असावधान होना, असावधानी की अवस्था। इसे असावधानी कहते हैं। (29)
931. इसमें 'अवहेलना' क्या है? वह जो उपेक्षा, अनादर, बेअदबी, अभद्रता, अशोभनीयता, अभद्रता की अवस्था, असभ्यता, आदर का अभाव है। इसे ही उपेक्षा कहते हैं।
इसमें 'अवज्ञा' क्या है? शिक्षा के अनुसार बात किए जाने पर भी अवज्ञा का कार्य, अवज्ञा की स्थिति, अवज्ञा, विरोधाभास, नुक्ताचीनी, अवहेलना, अनादर, बेअदबी, अनादर करना, यही अवज्ञा कहलाता है।
इसमें 'दुष्ट मित्र रखना' क्या है? ऐसे व्यक्ति होते हैं जो विश्वासहीन, कुरीतिक, अज्ञानी, नीच और बुद्धिहीन होते हैं; उन पर निर्भरता, उन पर प्रबल निर्भरता, उन पर पूर्ण निर्भरता, उनके निकट जाना, उनके प्रति समर्पण, उनके प्रति पूर्ण समर्पण, उनके साथ उलझाव। इसे ही दुष्ट मित्र रखना कहते हैं। (30)

932. इसमें 'अविश्वास' क्या है? इसमें एक व्यक्ति आत्मविश्वासहीन है, बुद्ध या शिक्षा या संघ में विश्वास नहीं रखता; जो इसके समान है, अविश्वास, आत्मविश्वासहीन होना, भरोसा न रखना, अधिक आस्था न रखना। इसे ही अविश्वास कहते हैं।
इसमें 'अनजान विनती' क्या है? पाँच प्रकार की नीचताएँ: घर के प्रति नीचता, परिवार के प्रति नीचता, लाभ के प्रति नीचता, प्रतिष्ठा के प्रति नीचता, धर्म के प्रति नीचता; और इसी प्रकार की नीचता, नीच होना, नीच अवस्था, लोभ, नीचता, कंजूसी, संकीर्ण मानसिकता। इसे ही अनजान विनती कहा जाता है।
इसमें 'आलस्य' क्या है? गलत शारीरिक क्रिया, गलत मौखिक क्रिया, गलत मानसिक क्रिया, या चेतना का पाँच प्रकार के इंद्रिय सुखों के आगे बार-बार झुक जाना, या सावधानीपूर्वक काम न करना, निरंतर काम न करना, रुक-रुक कर काम करना, स्थिर रहना, [372] इच्छा का त्याग करना, कार्य का त्याग करना, पीछा न करना, विकास न करना, पुनरावृत्ति न करना-

मैं

अच्छे राज्यों के विकास में निष्क्रियता, संकल्प न लेना, अभ्यास न करना, लापरवाही बरतना। इसे आलस्य कहते हैं। (31)
933. इसमें 'विचलित होना' क्या है? चेतना का विचलित होना, बेचैनी, मानसिक अस्थिरता, चेतना की उथल-पुथल। इसे विचलित होना कहते हैं।
इसमें 'संयम का अभाव' क्या है? इसमें कोई व्यक्ति किसी दृश्य वस्तु को आँख से देखकर उसका सामान्य स्वरूप और विवरण दोनों देखता है। चाहे किसी भी कारण से, यदि कोई व्यक्ति अपनी दृष्टि को नियंत्रित नहीं कर रहा है, तो लोभ और मानसिक पीड़ा जैसी बुरी अवस्थाएँ उत्पन्न हो सकती हैं। वह अपनी दृष्टि को नियंत्रित नहीं करता; वह अपनी दृष्टि को सुरक्षित नहीं रखता; वह अपनी दृष्टि को नियंत्रित करने का प्रयास नहीं करता। कान से किसी ध्वनि को सुनना। नाक से किसी सुगंधित वस्तु को सूंघना। जीभ से किसी स्वादिष्ट वस्तु का स्वाद लेना।
P: शरीर से किसी मूर्त वस्तु को छूना। :P: किसी बात को समझना।
मन में किसी वस्तु का जो आशय होता है, वह उसके सामान्य स्वरूप और बारीकियों को भी ग्रहण करता है। चाहे जो भी कारण हो, यदि व्यक्ति मन की नियंत्रण शक्ति को नियंत्रित किए बिना उसमें लीन रहता है, तो लोभ, मानसिक पीड़ा और बुरे मानसिक विकार उत्पन्न हो सकते हैं। वह इन पर संयम नहीं बरतता; वह मन की नियंत्रण शक्ति की रक्षा नहीं करता; वह मन की नियंत्रण शक्ति पर नियंत्रण नहीं रखता। इसे ही संयम का अभाव कहते हैं।
P = पहले उदाहरण के सामान्य रूप में प्रत्येक को पूरा करें।
उसमें 'गलत नैतिकता' क्या है? शारीरिक उल्लंघन, शाब्दिक उल्लंघन, शारीरिक और शाब्दिक दोनों उल्लंघन। इसे गलत नैतिकता कहा जाता है, (32)

934. इसमें 'महान पुरुषों को देखने की इच्छा का अभाव' क्या है? इसमें महान पुरुष कौन हैं? बुद्ध और बुद्धों के शिष्य महान पुरुष कहलाते हैं; इन महान पुरुषों को देखने की इच्छा का अभाव, इन्हें निहारने की इच्छा का अभाव, इनके निकट जाने की इच्छा का अभाव, इनके साथ मिलने की इच्छा का अभाव, यही महान पुरुषों को देखने की इच्छा का अभाव कहलाता है।
उसमें 'सच्चे सिद्धांत को सुनने की इच्छा का अभाव' क्या है? उसमें सच्चा सिद्धांत क्या है? ध्यान के चार आधार, चार सही प्रयास, सिद्धि के चार आधार, पाँच नियंत्रक शक्तियाँ, पाँच सामर्थ्य, सात

ज्ञान के कारक, आर्य अष्टांग मार्ग; इसे ही सच्चा सिद्धांत कहा जाता है। वह अवस्था जिसमें सुनने की इच्छा का अभाव हो, ध्यान से सुनने की इच्छा का अभाव हो, प्रचार करने की इच्छा का अभाव हो, और इस सच्चे सिद्धांत को बनाए रखने की इच्छा का अभाव हो। इसे ही सच्चे सिद्धांत को सुनने की इच्छा का अभाव कहा जाता है।
उसमें 'निंदापूर्ण मन की अवस्था' क्या है? [373] उसमें निंदा क्या है? वह जो निंदा है, बार-बार निंदा करना, निंदाशील होना, बार-बार निंदाशील होने की अवस्था, तिरस्कार, घृणा, गाली देना, दोष निकालना। इसे निंदाशील मन की अवस्था कहा जाता है। (33)
935. इसमें असावधानी क्या है? वह जो सजगता का अभाव है, निरंतर सजगता का अभाव है, स्मरण का अभाव है, सजगता का अभाव है, स्मरण की क्रिया का अभाव है, मन में रखने का अभाव है, सतहीपन है, विस्मरण है। इसे असावधानी कहते हैं।
इसमें 'जागरूकता का अभाव' क्या है? ज्ञान का अभाव, दृष्टि का अभाव, अज्ञान का अवरोध, सुस्ती की बुरी जड़। इसी को जागरूकता का अभाव कहते हैं।
P = अनुच्छेद 180 देखें।

इसमें 'मानसिक अस्थिरता' क्या है? चेतना का विकर्षण, बेचैनी, मानसिक अस्थिरता, चेतना की उथल-पुथल। इसे ही मानसिक अस्थिरता कहते हैं। (34)

936. इसमें 'अनुचित ध्यान' क्या है? अनुचित ध्यान इस प्रकार है, "अस्थिरता में स्थायित्व है"; अनुचित ध्यान इस प्रकार है, "दुख में सुख है"; अनुचित ध्यान इस प्रकार है, "आत्मा के अभाव में आत्मा है"; अनुचित ध्यान इस प्रकार है, "सौंदर्य के अभाव में सौंदर्य है"; या, मन का भटकना, बार-बार भटकना, ज्ञान, ध्यान, सत्य के विपरीत बातों पर ध्यान देना। इसे अनुचित ध्यान कहते हैं।

इसमें 'गलत मार्ग पर निर्भरता' क्या है? इसमें गलत मार्ग क्या है? गलत दृष्टिकोण, गलत विचार, गलत वाणी, गलत कर्म, गलत आजीविका, गलत प्रयास, गलत जागरूकता, गलत एकाग्रता; यही गलत मार्ग कहलाता है। जो निर्भरता है, प्रबल निर्भरता है, पूर्ण निर्भरता है, निकट आना है, घनिष्ठ रूप से निकट आना है, समर्पण है, पूर्ण

इस गलत रास्ते के प्रति निष्ठा, इस पर आसक्ति। इसे ही गलत रास्ते पर निर्भरता कहते हैं।

उसमें 'मानसिक सुस्ती' क्या है? चेतना की अस्वस्थता, बोझिलता, शिथिलता, ढीलापन, सुस्ती, सुस्त होना, सुस्त अवस्था, आलस्य, आलस्यपूर्ण होना, चेतना की आलस्यपूर्ण अवस्था। इसे ही मानसिक सुस्ती कहते हैं। (35)

(यहाँ समाप्त होता है) त्रिगुणात्मक (प्रस्तावना)

4. चौगुनी व्याख्या

937. उसमें 'चार दोष' क्या हैं? इच्छा का दोष, बनने का दोष, गलत दृष्टिकोण का दोष, अज्ञान का दोष।

उसमें इच्छा का दोष क्या है? [374] वह जो इच्छा से संबंधित है, इंद्रिय सुख की कामना, इंद्रिय सुख की वासना, इंद्रिय सुख की लालसा, इंद्रिय सुख के प्रति लगाव, इंद्रिय सुख की तीव्र इच्छा, इंद्रिय सुख की तीव्र लालसा, इंद्रिय सुख से आसक्ति। इसे ही इच्छा का दोष कहते हैं।

इसमें घटने का दोष क्या है? जो घटने के साथ-साथ घटने की इच्छा रखता है, यानी घटने से आसक्ति रखता है। इसे घटने का दोष कहते हैं।

P = अनुच्छेद 895 देखें।

गलत दृष्टिकोण का दोष क्या है? "संसार शाश्वत है" या "संसार शाश्वत नहीं है", "संसार सीमित है" या "संसार अनंत है", "प्राण और शरीर एक ही हैं" या "प्राण और शरीर भिन्न हैं", "मृत्यु के बाद किसी प्राणी का अस्तित्व होता है" या "मृत्यु के बाद किसी प्राणी का अस्तित्व नहीं होता" या "मृत्यु के बाद किसी प्राणी का अस्तित्व होता भी है और नहीं भी होता" या "मृत्यु के बाद किसी प्राणी का अस्तित्व न तो होता है और न ही नहीं होता"; जो भी समान है, वह गलत दृष्टिकोण है, गलत दृष्टिकोण का सहारा लेना है, :P: उल्टा विश्वास। इसे ही गलत दृष्टिकोण का दोष कहते हैं। साथ ही, सभी गलत विचार गलत दृष्टिकोण का दोष हैं।

P = अनुच्छेद 249 देखें।

अज्ञानता का दोष क्या है? दुख के ज्ञान का अभाव; दुख के कारण के ज्ञान का अभाव; दुख के निवारण के ज्ञान का अभाव;

दु:ख के निवारण के मार्ग का ज्ञान न होना; प्राणियों की उत्पत्ति का ज्ञान न होना; प्राणियों के अंत का ज्ञान न होना; प्राणियों की उत्पत्ति और अंत दोनों का ज्ञान न होना; विशिष्ट कारण और निर्भरता से उत्पन्न अवस्थाओं का ज्ञान न होना; जो समान है, ज्ञान का अभाव, दृष्टि का अभाव; अज्ञान का अवरोध, सुस्ती की बुरी जड़। इसे अज्ञान का दोष कहते हैं। ये चार दोष हैं। (1)

P = अनुच्छेद 180 देखें।

938. उसमें 'टूर टाइज़' क्या हैं? :P: 'टूर फ्लड्स'। :P: [375] 'टूर बॉन्ड्स'। :P: 'टूर अटैचमेंट्स'? इच्छा का आसंजन, गलत दृष्टिकोण का आसंजन, (गलत) आदतों और प्रथाओं का आसंजन, आत्मा सिद्धांत का आसंजन।

P = Dhs. पैरा 1140 इत्यादि देखें।

इसमें इच्छा का आसक्ति क्या है? वह जो इच्छा से जुड़ा हुआ है, यानी इंद्रिय सुख की लालसा, इंद्रिय सुख से आसक्ति। इसे ही इच्छा का आसक्ति कहते हैं।

पी — पैराग्राफ 914 देखें।

इसमें गलत दृष्टिकोण का आसक्ति क्या है? "दान-पुण्य नहीं है; त्याग नहीं है; (वे नहीं हैं) जो स्वयं इस संसार और परलोक को पूर्णतः जानकर, दूसरों को इसका ज्ञान कराते हैं"; जो इसके समान है, वह गलत दृष्टिकोण है; गलत दृष्टिकोण का सहारा लेना; (उल्टा आलिंगन)। इसे गलत दृष्टिकोण की आसक्ति कहते हैं। (गलत) आदतों और प्रथाओं की आसक्ति और आत्म-सिद्धांत की आसक्ति को छोड़कर, सभी गलत दृष्टिकोण गलत दृष्टिकोण की आसक्ति है।

पी एल = पैरा देखें। 971. पी 2 = पैरा देखें। 249.

इसमें (गलत) आदतों और प्रथाओं का आसक्ति क्या है? (इस बात में विश्वास करना कि) आदत के नियम से शुद्धि, अभ्यास से शुद्धि, इस (शिक्षा) से बाहर के संन्यासियों और ब्राह्मणों की आदत और अभ्यास दोनों से शुद्धि; जो समान है, गलत दृष्टिकोण, गलत दृष्टिकोण का सहारा लेना, :P: उलटी पकड़। इसे (गलत) आदतों और प्रथाओं की आसक्ति कहते हैं।

P = अनुच्छेद 249 देखें।

486

विश्लेषण की पुस्तक

इसमें आत्मा के आसक्ति सिद्धांत को क्या कहा गया है? इसमें अज्ञानी सांसारिक व्यक्ति, जो श्रेष्ठ पुरुषों को नहीं पहचानता, उनकी शिक्षाओं में पारंगत नहीं है, उनकी शिक्षाओं में अनुशासित नहीं है; अच्छे पुरुषों को नहीं पहचानता, अच्छे पुरुषों की शिक्षाओं में पारंगत नहीं है, अच्छे पुरुषों की शिक्षाओं में अनुशासित नहीं है; भौतिक गुणों को आत्मा मानता है; या आत्मा को भौतिक गुणों से युक्त मानता है; या भौतिक गुणों को आत्मा में विद्यमान मानता है; या आत्मा को भौतिक गुणों में विद्यमान मानता है; : पृष्ठ 1 : बोध। : पृष्ठ 1 : मानसिक सहवर्ती। : पृष्ठ 1 : चेतना को आत्मा मानता है; या आत्मा को चेतना से युक्त मानता है; या चेतना को आत्मा में विद्यमान मानता है; या आत्मा को चेतना में विद्यमान मानता है; जो समान है, गलत दृष्टिकोण, गलत दृष्टिकोण का सहारा लेना, : पृष्ठ 2 : उलटी पकड़। इसे आत्मा के आसक्ति सिद्धांत कहा जाता है। ये चार आसक्तियाँ हैं। (5)

PJ = अंतिम उदाहरण के सामान्य रूप में प्रत्येक को पूरा करें।

पृष्ठ 2 = पैराग्राफ 249 देखें।

939. उसमें 'इच्छा के चार उद्गम' क्या हैं? जब किसी भिक्षु में वस्त्र के कारण लालसा उत्पन्न होती है; जब किसी भिक्षु में भोजन के कारण लालसा उत्पन्न होती है; जब किसी भिक्षु में निवास के कारण लालसा उत्पन्न होती है; जब किसी भिक्षु में उत्तम और उससे भी उत्तम वस्तुओं के कारण लालसा उत्पन्न होती है। ये लालसा के चार उद्गम हैं। (6)

इसमें 'गलत मार्ग के चार अभ्यास' क्या हैं? एक पक्षपात का गलत मार्ग अपनाता है; एक घृणा का गलत मार्ग अपनाता है; एक सुस्ती का गलत मार्ग अपनाता है; एक भय का गलत मार्ग अपनाता है; जो समान है, गलत मार्ग, पक्षपात का अभ्यास, वर्गीकरण का अभ्यास, जल अभ्यास। ये गलत मार्ग के चार अभ्यास हैं। (7)

इसमें 'चार व्युत्क्रम' क्या हैं? व्युत्क्रमित धारणा, व्युत्क्रमित चेतना, व्युत्क्रमित दृष्टिकोण इस प्रकार है, "अस्थिरता में स्थायित्व है"; व्युत्क्रमित धारणा, व्युत्क्रमित चेतना, व्युत्क्रमित दृष्टिकोण इस प्रकार है, "दुख में सुख है"; व्युत्क्रमित धारणा, व्युत्क्रमित चेतना, व्युत्क्रमित दृष्टिकोण इस प्रकार है, "आत्मा के अभाव में आत्मा है"; व्युत्क्रमित धारणा, आविष्कृत चेतना, व्युत्क्रमित दृष्टिकोण इस प्रकार है, "सौंदर्य के अभाव में सौंदर्य है"। ये चार व्युत्क्रम हैं। (8)

उसमें 'चार प्रकार की नीच वाणी' क्या हैं? बिना देखे वह कहता है कि उसने देखा है; बिना सुने वह कहता है कि उसने सुना है; अन्यथा अनुभव न करते हुए वह कहता है कि उसने अन्यथा अनुभव किया है;

न जानते हुए भी वह कहता है कि वह जानता है। ये चार प्रकार के नीच भाषण हैं। (9)

उसमें 'अन्य चार प्रकार के अभद्र भाषण' क्या हैं?

देखकर भी वह कहता है कि उसने नहीं देखा; सुनकर भी वह कहता है कि उसने नहीं सुना; अन्यथा अनुभव करके भी वह कहता है कि उसने अन्यथा अनुभव नहीं किया; जानकर भी वह कहता है कि वह नहीं जानता। ये चार प्रकार के नीच वाणी हैं। (10)

उसमें 'चार प्रकार के गलत कर्म' क्या हैं? प्राणियों की हत्या करना, बिना माँगी वस्तु लेना, यौन दुराचार, झूठी वाणी। ये चार प्रकार के गलत कर्म हैं। (11)

उसमें 'अन्य चार प्रकार के गलत कर्म' क्या हैं? झूठा वाणी, निंदात्मक वाणी, कठोर वाणी, तुच्छ वाणी। ये चार प्रकार के गलत कर्म हैं। (12)

उसमें 'चार प्रकार के भय' क्या हैं? जन्म का भय, बुढ़ापे का भय, क्षय का भय, मृत्यु का भय। ये चार प्रकार के भय हैं। (13)

उसमें 'अन्य चार प्रकार के भय' क्या हैं? राजाओं का भय, चोरों का भय, आग का भय, पानी का भय। ये चार प्रकार के भय हैं। (14)

उसमें 'अन्य चार प्रकार के भय' क्या हैं? लहरों का भय, मगरमच्छों का भय, भंवरों का भय, भयंकर मछलियों का भय। ये चार प्रकार के भय हैं। (15)

इसमें 'अन्य चार प्रकार के भय' क्या हैं? आत्म-निंदा का भय, दूसरों द्वारा निंदा का भय, दंड का भय, दुखद अवस्थाओं का भय। ये चार प्रकार के भय हैं। (16)

इसमें 'चार गलत मत' क्या हैं? एक गलत मत सत्य के रूप में दृढ़ता से उभरता है, जैसे कि "सुख और दुख स्वयं द्वारा उत्पन्न होते हैं"; एक गलत मत सत्य के रूप में दृढ़ता से उभरता है, जैसे कि "सुख और दुख किसी अन्य (कारण) द्वारा उत्पन्न होते हैं"; एक गलत मत सत्य के रूप में दृढ़ता से उभरता है, जैसे कि "सुख और दुख स्वयं द्वारा उत्पन्न होते हैं और किसी अन्य (कारण) द्वारा भी उत्पन्न होते हैं"; एक गलत मत सत्य के रूप में दृढ़ता से उभरता है, जैसे कि "सुख और दुख स्वयं द्वारा उत्पन्न नहीं होते, किसी अन्य (कारण) द्वारा भी उत्पन्न नहीं होते, बल्कि बिना कारण के उत्पन्न होते हैं"। ये चार गलत मत हैं। (17)

(यहाँ समाप्त होता है) चौगुना (व्याख्या)

5. पंचस्तरीय व्याख्या

940. इसमें 'निम्न (अस्तित्व) से संबंधित पाँच बंधन' क्या हैं? व्यक्तिवाद का दृष्टिकोण, संदेह, (गलत) आदतों का पालन।

और कर्मकांड, इंद्रिय सुख की इच्छा, द्वेष। ये पाँच बंधन निम्न (अस्तित्व) से संबंधित हैं। (1)

उसमें 'उच्च (अस्तित्व) से संबंधित पाँच बंधन' क्या हैं? रूप के प्रति आसक्ति, निराकार के प्रति आसक्ति, अहंकार, ध्यान भटकना, अज्ञान। ये पाँच बंधन उच्च (अस्तित्व) से संबंधित हैं। (2)

उसमें 'पाँच प्रकार की नीचता' क्या हैं? घर से संबंधित नीचता, परिवार से संबंधित नीचता, लाभ से संबंधित नीचता, प्रतिष्ठा से संबंधित नीचता, और धर्म से संबंधित नीचता। ये पाँच प्रकार की नीचता हैं। (3) उसमें 'पाँच आसक्ति' क्या हैं? कामवासना की आसक्ति, घृणा की आसक्ति, सुस्ती की आसक्ति, अहंकार की आसक्ति, और गलत दृष्टिकोण की आसक्ति। ये पाँच आसक्ति हैं। (4) उसमें 'पाँच तीर' क्या हैं? कामवासना का तीर, घृणा का तीर, सुस्ती का तीर, अहंकार का तीर, और गलत दृष्टिकोण का तीर। ये पाँच तीर हैं। (5)

941. इसमें 'पाँच मानसिक काँटे' क्या हैं? व्यक्ति गुरु के बारे में उलझन में रहता है, संदेह करता है, अनिश्चित रहता है, स्पष्ट नहीं होता; शिक्षा के बारे में उलझन में रहता है, संदेह करता है, अनिश्चित रहता है, स्पष्ट नहीं होता; संप्रदाय के बारे में उलझन में रहता है, संदेह करता है, अनिश्चित रहता है, स्पष्ट नहीं होता; उपदेशों के बारे में उलझन में रहता है, संदेह करता है, अनिश्चित रहता है, स्पष्ट नहीं होता; साथी शिष्यों को ठेस पहुँचाता है, अप्रसन्न करता है, मानसिक रूप से पीड़ा देता है, और उनके लिए काँटा बन जाता है। ये पाँच मानसिक काँटे हैं। (6)

उसमें 'पांच प्रकार के मानसिक बंधन' क्या हैं? मनुष्य कामवासना, इच्छा, प्रेम, प्यास, बुखार और इंद्रिय सुख की लालसा से मुक्त नहीं होता; वह शरीर के प्रति वासना से मुक्त नहीं होता; वह दूसरों के रूप के प्रति वासना से मुक्त नहीं होता। [378] पेट भरकर भोजन करने

के बाद मनुष्य बिस्तर के सुख, आलस्य और नींद के सुख में लिप्त रहता है। वह किसी देवत्व की प्रार्थना करते हुए धार्मिक जीवन का अभ्यास करता है, "इस आदत से, इस अभ्यास से, इस तपस्या से या इस धार्मिक जीवन से मैं (उच्च) देव या किसी अन्य प्रकार का देव बन जाऊं।" ये पांच प्रकार के मानसिक बंधन हैं। (7) उसमें 'पांच अवरोध' क्या हैं? इंद्रिय सुख की इच्छा का अवरोध, द्वेष का अवरोध, आलस्य और सुस्ती का अवरोध, विचलित होने और पश्चाताप का अवरोध, संदेह का अवरोध। ये पाँच बाधाएँ हैं। (8)
उसमें 'पांच तात्कालिक परिणाम' क्या हैं? माता का प्राण त्याग दिया जाता है, पिता का प्राण त्याग दिया जाता है, अरहंत का प्राण त्याग दिया जाता है, दुष्ट चेतना से रक्त बह निकलता है।

तथागत का निष्कासन हुआ, संघ का विभाजन हुआ। ये पाँच तात्कालिक परिणामी क्रियाएँ हैं। (9)
इसमें 'पांच गलत मत' क्या हैं? कुछ लोग कहते हैं, "आत्मा में चेतना होती है और मृत्यु के बाद उसका नाश नहीं होता"; कुछ लोग कहते हैं, "आत्मा में चेतना नहीं होती और मृत्यु के बाद उसका नाश नहीं होता"; कुछ लोग कहते हैं, "आत्मा में न तो चेतना होती है और न ही नहीं होती और मृत्यु के बाद उसका नाश नहीं होता"; कुछ लोग (मृत्यु के बाद) विद्यमान प्राणी के विनाश, नाश और निरर्थकता का प्रचार करते हैं; कुछ लोग वर्तमान जीवन में ही निर्वाण की घोषणा करते हैं। ये पांच गलत मत हैं। (10)
942. उसमें 'पाँच शत्रुतापूर्ण कर्म' क्या हैं? प्राणियों की हत्या करना, बिना माँगी वस्तु लेना, यौन दुराचार, झूठी वाणी, मादक बियर, मदिरा और शराब का सेवन करना जिससे लापरवाही होती है। ये पाँच शत्रुतापूर्ण कर्म हैं। (11)
इसमें 'पांच विपत्तियाँ' क्या हैं? रिश्तेदारों के कारण विपत्ति, धन के कारण विपत्ति, बीमारी के कारण विपत्ति, (भ्रष्ट) नैतिकता के कारण विपत्ति, गलत दृष्टिकोण के कारण विपत्ति। ये पाँच विपत्तियाँ हैं। (12)
तो अधीरता के पाँच नुकसान क्या हैं? व्यक्ति अनेक लोगों का प्रिय नहीं होता, अनेक लोगों को प्रसन्न नहीं करता; अनेकों का शत्रु होता है और अनेक दोष रखता है; भ्रमित अवस्था में मरता है; मृत्यु के बाद शरीर के विखंडन [379] पर नरक की दयनीय, दुखी और विनाशकारी अवस्था में पुनर्जन्म लेता है। ये अधीरता के पाँच नुकसान हैं।
(13)
इसमें 'पांच भय' क्या हैं? जीविका का भय, अस्वीकृति का भय, सभाओं में संकोच का भय, मृत्यु का भय, और दुखद पुनर्जन्म का भय। ये पांच भय हैं। (14)
\
943. इसमें 'वर्तमान जीवन में निर्वाण के पाँच सिद्धांत' क्या हैं? इसमें एक संन्यासी या ब्राह्मण कहता है, "हे मित्र, क्योंकि यह आत्मा पाँच प्रकार के इंद्रिय सुखों से प्रभावित होकर आनंदित होती है; अतः, हे मित्र, यह आत्मा वर्तमान जीवन में सर्वोच्च निर्वाण प्राप्त करती है"; इस प्रकार कुछ लोग वर्तमान जीवन में विद्यमान प्राणी के सर्वोच्च निर्वाण का वर्णन करते हैं।
दूसरे ने उस व्यक्ति से कहा, "मित्र, यह आत्मा वास्तव में विद्यमान है, तुम ऐसा कहते हो, मैं यह नहीं कहता कि यह विद्यमान नहीं है। वास्तव में, मित्र, यह आत्मा इतना भी होने पर भी सर्वोच्च निर्वाण को प्राप्त नहीं करती।"

मैं

वर्तमान अस्तित्व, ऐसा क्यों है? मित्र, इंद्रिय सुख वास्तव में क्षणभंगुर, दुखदायी और परिवर्तनशील हैं; उनमें विभिन्न अवस्थाएँ उत्पन्न होती हैं, (साथ ही) दुःख, विलाप, पीड़ा (शारीरिक), मानसिक पीड़ा, निराशा। क्योंकि, मित्र, यह आत्मा, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर,
पी: प्रथम ध्यान को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है, इसलिए, मित्र, यह आत्मा
"यद्यपि वर्तमान जीवन में ही सर्वोच्च निर्वाण प्राप्त होता है"; इस प्रकार कुछ लोग वर्तमान जीवन में विद्यमान प्राणी के सर्वोच्च निर्वाण का वर्णन करते हैं।
P = अनुच्छेद 205 देखें।

दूसरे ने उस व्यक्ति से कहा, “मित्र, यह आत्मा वास्तव में विद्यमान है, तुम ऐसा कहते हो, मैं यह नहीं कहता कि यह विद्यमान नहीं है। वास्तव में, मित्र, यह आत्मा इस मात्र से भी वर्तमान जीवन में सर्वोच्च निर्वाण प्राप्त नहीं कर पाती, ऐसा क्यों है? इसमें जो आरंभिक साधना और निरंतर साधना है, वह इतनी स्थूल प्रतीत होती है। क्योंकि, मित्र, यह आत्मा आरंभिक साधना और निरंतर साधना को रोककर द्वितीय ध्यान में निवास करती है, अतः मित्र, यह आत्मा वास्तव में वर्तमान जीवन में सर्वोच्च निर्वाण प्राप्त करती है”; इस प्रकार कुछ लोग वर्तमान जीवन में विद्यमान प्राणी के सर्वोच्च निर्वाण का ज्ञान कराते हैं।

P = अनुच्छेद 205 देखें।

दूसरे ने उस व्यक्ति से कहा, “मित्र, यह आत्मा वास्तव में विद्यमान है, तुम ऐसा कहते हो, मैं यह नहीं कहता कि यह विद्यमान नहीं है। वास्तव में, मित्र, यह आत्मा इस स्थिति में भी सर्वोच्च निर्वाण प्राप्त नहीं करती, ऐसा क्यों है? इसमें मन की जो उमंग भरी उत्तेजना है, वह इस हद तक स्थूल प्रतीत होती है। क्योंकि, मित्र, यह आत्मा, इच्छा रहित होकर, तृतीय ध्यान में निवास करती है, अतः मित्र, यह आत्मा वास्तव में इस स्थिति में सर्वोच्च निर्वाण प्राप्त करती है”; इस प्रकार कुछ लोग वर्तमान जीवन में विद्यमान प्राणी के सर्वोच्च निर्वाण का ज्ञान कराते हैं।

पी — पैराग्राफ 205 देखें।

दूसरे ने उस (व्यक्ति) जेफचस से कहा, “मित्र, यह आत्मा वास्तव में विद्यमान है, तुम ऐसा कहते हो, मैं यह नहीं कहता कि यह विद्यमान नहीं है। वास्तव में, मित्र, यह आत्मा इस मात्र से भी वर्तमान जीवन में सर्वोच्च निर्वाण प्राप्त नहीं करती, ऐसा क्यों है? इसमें जो सुखदायक उत्साह है, जिसे मानसिक रूप से जाना जाता है, वह इस हद तक स्थूल प्रतीत होता है। क्योंकि, मित्र, यह आत्मा सुख का त्याग करके चौथे ध्यान में प्राप्त होती है और उसमें निवास करती है, इसलिए, मित्र, यह आत्मा वास्तव में वर्तमान जीवन में सर्वोच्च निर्वाण प्राप्त करती है”; इस प्रकार

कुछ लोग वर्तमान जीवन में विद्यमान प्राणी के सर्वोच्च निर्वाण का वर्णन करते हैं। वर्तमान जीवन में निर्वाण के ये पाँच सिद्धांत हैं। (आईएस)

P = अनुच्छेद 205 देखें।

(यहाँ समाप्त होता है) पंचगुना (व्याख्या)

6. छह गुना व्याख्या

944. उसमें 'विवाद के छह मूल' क्या हैं? क्रोध, निंदा, ईर्ष्या, पाखंड, बुरी इच्छा, हठ। ये विवाद के छह मूल हैं। (1)

इसमें 'छह प्रकार की कामुक इच्छा' क्या हैं? कामुक इच्छा की वे अवस्थाएँ जो इंद्रियों से जुड़ी हैं, जैसे: कामुक, आसक्ति, चेतना की आसक्ति जो सुखद दृश्य वस्तुओं के प्रति, सुखद श्रव्य वस्तुओं के प्रति, सुखद सुगंधित वस्तुओं के प्रति, सुखद स्वाद वाली वस्तुओं के प्रति, सुखद स्पर्शनीय वस्तुओं के प्रति, कामुक, आसक्ति, चेतना की आसक्ति जो सुखद वैचारिक वस्तुओं के प्रति है। ये छह प्रकार की कामुक इच्छाएँ हैं। (2)

P = अंतिम उदाहरण के सामान्य रूप में प्रत्येक को पूरा करें।

इसमें 'शत्रुता के छह आधार' क्या हैं? चेतना की पीड़ा, आक्रोश, शत्रुता, अचानकता, अप्रिय दृश्य वस्तुओं के प्रति चेतना के आनंद का अभाव; अप्रिय श्रव्य वस्तुओं के प्रति; अप्रिय गंध वाली वस्तुओं के प्रति; अप्रिय स्वाद वाली वस्तुओं के प्रति; अप्रिय स्पर्शनीय वस्तुओं के प्रति।

P: अंतरात्मा की पीड़ा, आक्रोश, शत्रुता, अचानकता,

अप्रिय वैचारिक (वस्तुओं) के प्रति चेतना के आनंद का अभाव। ये शत्रुता के छह आधार हैं। (3)

P = अंतिम उदाहरण के सामान्य रूप में प्रत्येक को पूरा करें।

तो यहाँ 'इच्छाओं के छह समूह' क्या हैं? दृश्य वस्तुओं की लालसा, श्रव्य वस्तुओं की लालसा, सुगंधित वस्तुओं की लालसा, स्वादयुक्त वस्तुओं की लालसा, स्पर्शनीय वस्तुओं की लालसा और वैचारिक वस्तुओं की लालसा। ये लालसाओं के छह समूह हैं।

(4) [381]

945 उसमें 'अनादर के छह प्रकार' क्या हैं? एक है शिक्षक के प्रति अनादर और सम्मानहीनता; एक है शिक्षा के प्रति अनादर और सम्मानहीनता; एक है...

संघ के प्रति अनादर और सम्मान के बिना; नियमों के प्रति अनादर और सम्मान के बिना; सावधानी के प्रति अनादर और सम्मान के बिना; आतिथ्य सत्कार के प्रति अनादर और सम्मान के बिना। ये छह प्रकार के अनादर हैं। (5)
इसमें 'छह प्रतिगामी अवस्थाएँ' क्या हैं? कर्म का आनंद लेना, बातचीत का आनंद लेना, नींद का आनंद लेना, संगति का आनंद लेना, मेलजोल का आनंद लेना, जुनून का आनंद लेना। ये छह प्रतिगामी अवस्थाएँ हैं, (6)
946. उसमें 'अन्य छह प्रतिगामी राज्य' क्या हैं?
कर्म का आनंद लेना, बातचीत का आनंद लेना, नींद का आनंद लेना, संगति का आनंद लेना, अवज्ञा करना, बुरे मित्र रखना। ये छह प्रतिगामी अवस्थाएँ हैं। (7)
इसमें 'मानसिक आनंद के साथ छह प्रकार की जांच' क्या हैं? किसी दृश्य वस्तु को आँख से देखना, जो मानसिक आनंद का कारण है; किसी श्रव्य वस्तु को कान से सुनना; किसी सुगंधित वस्तु को नाक से सूंघना; किसी स्वादिष्ट वस्तु का स्वाद जीभ से चखना; किसी मूर्त वस्तु को शरीर से स्पर्श करना; किसी वैचारिक वस्तु को मन से जानना, जो मानसिक आनंद का कारण है। ये छह प्रकार की मानसिक आनंद के साथ जांच हैं। (8)
P = अंतिम उदाहरण के सामान्य रूप में प्रत्येक को पूरा करें।
इसमें 'मानसिक पीड़ा के साथ जांच के छह प्रकार' क्या हैं? किसी दृश्य वस्तु को आँख से देखकर व्यक्ति उस दृश्य वस्तु की जांच करता है जो मानसिक पीड़ा का कारण है; किसी श्रव्य वस्तु को कान से सुनकर; किसी सुगंधित वस्तु को नाक से सूंघकर; किसी स्वादिष्ट वस्तु का स्वाद जीभ से चखकर; किसी मूर्त वस्तु को शरीर से स्पर्श करके; किसी वैचारिक वस्तु को मन से जानकर व्यक्ति उस वैचारिक वस्तु की जांच करता है जो मानसिक पीड़ा का कारण है। ये मानसिक पीड़ा के साथ जांच के छह प्रकार हैं। (9)
P = अंतिम उदाहरण के सामान्य रूप में प्रत्येक को पूरा करें।
इसमें 'उदासीनता से जाँच करने के छह प्रकार' क्या हैं? किसी दृश्य वस्तु को आँख से देखना, उसकी जाँच करना जो उदासीनता का कारण है; किसी श्रव्य वस्तु को कान से सुनना; किसी सुगंधित वस्तु को नाक से सूंघना; किसी स्वादिष्ट वस्तु का स्वाद जीभ से चखना; किसी मूर्त वस्तु को शरीर से छूना; किसी वैचारिक वस्तु को जानना।

(वस्तु) मन से व्यक्ति वैचारिक (वस्तु) की जांच करता है जो उदासीनता का कारण है। उदासीनता से जांच करने के ये छह (प्रकार) हैं। (10)
P = अंतिम उदाहरण के सामान्य रूप में प्रत्येक को पूरा करें।

947. इसमें 'इंद्रियबोध से जुड़े छह प्रकार के मानसिक सुख' क्या हैं? मानसिक सहजता, मानसिक सुख, मानसिक संपर्क से उत्पन्न सुखदायक अनुभव, सुखद दृश्य वस्तुओं के लिए इंद्रियबोध से जुड़े मानसिक संपर्क से उत्पन्न सुखदायक भावना; सुखद श्रव्य वस्तुओं के लिए। :P: सुखद सुगंधित वस्तुओं के लिए। :P: सुखद स्वाद वाली वस्तुओं के लिए। :P: सुखद स्पर्शनीय वस्तुओं के लिए। :P: मानसिक सहजता, मानसिक सुख, मानसिक संपर्क से उत्पन्न सुखदायक अनुभव, सुखद वैचारिक वस्तुओं के लिए इंद्रियबोध से जुड़े मानसिक संपर्क से उत्पन्न सुखदायक भावना। ये इंद्रियबोध से जुड़े छह प्रकार के मानसिक सुख हैं। (11)
P = अंतिम उदाहरण के सामान्य रूप में प्रत्येक को पूरा करें।

इसमें 'इंद्रियबोध से जुड़े छह प्रकार के मानसिक दर्द' क्या हैं? अप्रिय दृश्य वस्तुओं के लिए मानसिक बेचैनी, मानसिक दर्द, मानसिक संपर्क से उत्पन्न बेचैन पीड़ादायक अनुभव, इंद्रियबोध से जुड़े मानसिक संपर्क से उत्पन्न बेचैन पीड़ादायक भावना; अप्रिय श्रव्य वस्तुओं के लिए। अप्रिय गंध वाली वस्तुओं के लिए। अप्रिय स्वाद वाली वस्तुओं के लिए। अप्रिय स्पर्शनीय वस्तुओं के लिए। अप्रिय वैचारिक वस्तुओं के लिए मानसिक बेचैनी, मानसिक दर्द, मानसिक संपर्क से उत्पन्न बेचैन पीड़ादायक अनुभव, इंद्रियबोध से जुड़े मानसिक संपर्क से उत्पन्न बेचैन पीड़ादायक भावना। ये इंद्रियबोध से जुड़े छह प्रकार के मानसिक दर्द हैं। (12)

}

P = अंतिम उदाहरण के सामान्य रूप में प्रत्येक को पूरा करें।

इसमें इंद्रियों से जुड़ी उदासीनता के छह प्रकार क्या हैं? न तो मानसिक शांति और न ही बेचैनी, न ही मानसिक संपर्क से उत्पन्न कोई पीड़ादायक और न ही सुखद अनुभव, न ही दृश्य वस्तुओं के लिए जो उदासीनता का कारण हैं; श्रव्य वस्तुओं के लिए जो उदासीनता का कारण हैं; गंधयुक्त वस्तुओं के लिए जो उदासीनता का कारण हैं; स्वादयुक्त वस्तुओं के लिए जो उदासीनता का कारण हैं; स्पर्शनीय वस्तुओं के लिए जो उदासीनता का कारण हैं। न ही मानसिक

494

विश्लेषण की पुस्तक

मानसिक संपर्क से उत्पन्न सुख-दुख, न पीड़ादायक न सुखदायक अनुभव, संवेदी संवेदना से जुड़े मानसिक संपर्क से उत्पन्न संवेदना, जो उदासीनता के कारण हैं। ये छह प्रकार की उदासीनता हैं जो संवेदी संवेदना से जुड़ी हैं। (13)

P = अंतिम उदाहरण के सामान्य रूप में प्रत्येक को पूरा करें।

948. इसमें 'छह गलत मत' क्या हैं? गलत मत उसके मन में दृढ़ता से सत्य के रूप में इस प्रकार उत्पन्न होता है, “मुझमें आत्मा है”; या गलत मत उसके मन में दृढ़ता से सत्य के रूप में इस प्रकार उत्पन्न होता है, “मुझमें आत्मा नहीं है”; या गलत मत उसके मन में दृढ़ता से सत्य के रूप में इस प्रकार उत्पन्न होता है, “मैं, आत्मा, आत्मा को पहचानता हूँ”; या गलत मत उसके मन में दृढ़ता से सत्य के रूप में इस प्रकार उत्पन्न होता है, “मैं, आत्माहीन, आत्मा को पहचानता हूँ”; या वास्तव में, गलत मत उसके मन में इस प्रकार उत्पन्न होता है, “मुझमें यह आत्मा बोलती और महसूस करती है; इस और उस (अस्तित्व) में यह लंबे समय तक अच्छे और बुरे कर्मों के फल का अनुभव करती है; यह (आत्मा) न तो जन्मी है और न कभी थी; यह (आत्मा) न तो जन्मी है और न कभी होगी; यह (आत्मा) स्थायी, टिकाऊ, शाश्वत है, परिवर्तन के अधीन नहीं है”; इस प्रकार गलत मत उसके मन में दृढ़ता से सत्य के रूप में उत्पन्न होता है। ये छह गलत मत हैं। (14) [383]

(यहाँ समाप्त होता है) छह गुना (व्याख्या)

7. सात गुना प्रदर्शनी

949. इसमें 'सात गुप्त प्रवृत्तियाँ' क्या हैं? इंद्रिय सुख की गुप्त प्रवृत्ति, घृणा की गुप्त प्रवृत्ति, अहंकार की गुप्त प्रवृत्ति, गलत दृष्टिकोण की गुप्त प्रवृत्ति, संदेह की गुप्त प्रवृत्ति, बनने की गुप्त प्रवृत्ति, अज्ञान की गुप्त प्रवृत्ति। ये सात गुप्त प्रवृत्तियाँ हैं। (1)

इसमें 'सात बंधन' क्या हैं? इंद्रिय सुख की लालसा का बंधन, घृणा का बंधन, अहंकार का बंधन, गलत दृष्टिकोण का बंधन, संदेह का बंधन, बनने की लालसा का बंधन, अज्ञान का बंधन। ये सात बंधन हैं। (2)

इसमें 'सात विकास' क्या हैं? इंद्रिय सुख की लालसा का विकास, घृणा का विकास, अहंकार का विकास, गलत दृष्टिकोण का विकास, संदेह का विकास, बनने की लालसा का विकास, अज्ञान का विकास। ये सात विकास हैं। (3)

छोटी वस्तुओं का विश्लेषण

495

950. इसमें ‘सात दूषित अवस्थाएँ’ क्या हैं? व्यक्ति में आत्मविश्वास की कमी होती है; व्यक्ति में लज्जा का अभाव होता है; व्यक्ति में निंदा का भय नहीं होता; व्यक्ति में ज्ञान की कमी होती है; व्यक्ति आलसी होता है; व्यक्ति लापरवाह होता है; व्यक्ति में बुद्धि का अभाव होता है। ये सात दूषित अवस्थाएँ हैं। (4)

इसमें 'सात कुकर्म' क्या हैं? प्राणियों की हत्या करना, बिना माँगी वस्तुएँ लेना, यौन दुराचार, झूठी बातें, निंदात्मक बातें, कठोर बातें, तुच्छ बातें। ये सात कुकर्म हैं। (5)

उसमें ‘सात प्रकार के अहंकार*’ क्या हैं? अहंकार, अत्यधिक अहंकार, असंतुलित अहंकार, आत्म-अपमान का अहंकार, अति-आकलन का अहंकार, आत्म-अभिमान, झूठा अहंकार। ये सात प्रकार के अहंकार हैं। (6)

951. इसमें 'सात गलत मत' क्या हैं? इसमें एक संन्यासी या ब्राह्मण कहता है, “क्योंकि, मित्र, इस आत्मा का स्वरूप है, यह चार महान तत्वों से जुड़ी है, माता-पिता के अंडाणु और वीर्य से उत्पन्न होती है, शरीर के विखंडन पर नष्ट हो जाती है, मृत्यु के बाद अस्तित्व में नहीं रहती; इसलिए, मित्र, यह आत्मा वास्तव में पूर्णतः नष्ट हो जाती है”; इस प्रकार कुछ लोग विद्यमान प्राणी के विनाश, विखंडन और निराकार होने का वर्णन करते हैं। (7) (1)

दूसरे ने उस (व्यक्ति) से कहा, “मित्र, यह आत्मा वास्तव में विद्यमान है, तुम ऐसा कहते हो, मैं यह नहीं कहता कि यह विद्यमान नहीं है। वास्तव में, मित्र, यह आत्मा इतनी सी बात से भी पूर्णतः नष्ट नहीं होती। वास्तव में, मित्र, एक और आत्मा है जो देवताओं से संबंधित है, जिसका रूप है, जो इच्छा के तल की विशेषता रखती है, जो पोषक तत्व (भोजन) ग्रहण करती है; [384] यह तुम नहीं जानते, नहीं देखते; यह मैं जानता हूँ, मैं देखता हूँ; क्योंकि, मित्र, वह आत्मा शरीर के विखंडन पर नष्ट हो जाती है, नाश हो जाती है, मृत्यु के बाद विद्यमान नहीं रहती; इसलिए, मित्र, यह आत्मा वास्तव में पूर्णतः नष्ट हो जाती है; इस प्रकार कुछ लोग विद्यमान प्राणी के विनाश, नाश, निरर्थकता का वर्णन करते हैं।”

(7) (2)

दूसरे ने उस (व्यक्ति) से कहा, “मित्र, यह आत्मा वास्तव में विद्यमान है, तुम ऐसा कहते हो, मैं यह नहीं कहता कि यह विद्यमान नहीं है। वास्तव में, मित्र, यह आत्मा इतनी भी पूर्णतः नष्ट नहीं होती। वास्तव में, मित्र, एक और आत्मा है जो देवताओं से संबंधित है, जिसका रूप है, जो मन से निर्मित है, जिसके सभी अंग बड़े और छोटे हैं, और जिसमें नियंत्रण शक्तियों की कोई कमी नहीं है; यह तुम नहीं जानते, नहीं देखते; यह मैं जानता हूँ, मैं देखता हूँ; क्योंकि, मित्र, वह आत्मा शरीर के विखंडन पर नष्ट हो जाती है, मृत्यु के बाद विद्यमान नहीं रहती; इसलिए,

मित्र, यह आत्मा वास्तव में पूर्णतः नष्ट हो जाती है”; इस प्रकार कुछ लोग विद्यमान प्राणी के विनाश, संहार और निरर्थकता को प्रकट करते हैं। (7) (3)

दूसरे ने उस व्यक्ति से कहा, “मित्र, यह आत्मा वास्तव में विद्यमान है, तुम ऐसा कहते हो, मैं यह नहीं कहता कि यह विद्यमान नहीं है। वास्तव में, मित्र, यह आत्मा इतनी सी बात से भी पूर्णतः नष्ट नहीं होती। वास्तव में, मित्र, एक और आत्मा है जो इंद्रियों के प्रभाव की अनुभूतियों को समाप्त करके, विभिन्न अनुभूतियों पर ध्यान न देकर, रूप की अनुभूतियों को पूर्णतः पार कर जाती है, और इस प्रकार ‘अंतरिक्ष अनंत है’ पर ध्यान केंद्रित करती है; यह तुम नहीं जानते, नहीं देखते; यह मैं जानता हूँ, मैं देखता हूँ; क्योंकि, मित्र, वह आत्मा शरीर के विखंडन पर नष्ट हो जाती है, मृत्यु के बाद विद्यमान नहीं रहती; इसलिए, मित्र, यह आत्मा वास्तव में पूर्णतः नष्ट हो जाती है; इस प्रकार कुछ लोग विद्यमान प्राणी के विनाश, नाश और निराकार होने का वर्णन करते हैं।”

(7) (4)

दूसरे ने उस (व्यक्ति) से इस प्रकार कहा, “मित्र, यह आत्मा वास्तव में विद्यमान है, तुम ऐसा कहते हो, मैं यह नहीं कहता कि यह विद्यमान नहीं है। वास्तव में, मित्र, यह आत्मा इतनी भी पूर्णतः नष्ट नहीं होती। वास्तव में, मित्र, एक और आत्मा है जो अनंत अंतरिक्ष की अवस्था को पूर्णतः पार कर (एकाग्र होकर) इस प्रकार, 'अनंत चेतना है', चेतना की अनंत अवस्था को प्राप्त कर लेती है; यह तुम नहीं जानते, नहीं देखते; यह मैं जानता हूँ, मैं देखता हूँ; क्योंकि, मित्र, वह आत्मा शरीर के विखंडन पर नष्ट हो जाती है, नाश हो जाती है,

मृत्यु के बाद विद्यमान नहीं रहती; इसलिए, मित्र, यह आत्मा वास्तव में पूर्णतः नष्ट हो जाती है 55; इस प्रकार कुछ लोग विद्यमान प्राणी के विनाश, नाश, निरन्ण को प्रकट करते हैं। (7) (5)

दूसरे ने उस (व्यक्ति) से इस प्रकार कहा, "मित्र, यह आत्मा वास्तव में विद्यमान है, तुम ऐसा कहते हो, मैं यह नहीं कहता कि यह विद्यमान नहीं है। वास्तव में, मित्र, यह आत्मा इतनी भी पूर्णतः नष्ट नहीं होती। वास्तव में, मित्र, एक और आत्मा है जो चेतना की अनंतता की अवस्था को पूर्णतः पार कर, इस प्रकार (एकाग्र होकर), 'कुछ भी नहीं है', शून्यता की अवस्था तक पहुँच जाती है; यह तुम नहीं जानते, नहीं देखते; [385] यह मैं जानता हूँ, मैं देखता हूँ; क्योंकि, मित्र, वह आत्मा शरीर के विखंडन पर नष्ट हो जाती है, नष्ट हो जाती है, मृत्यु के बाद विद्यमान नहीं रहती; इसलिए, मित्र, यह आत्मा वास्तव में पूर्णतः नष्ट हो जाती है 55; इस प्रकार कुछ लोग विद्यमान प्राणी के विनाश, विखंडन, निरर्थकता को प्रकट करते हैं। (7) (6)

दूसरे ने उस (व्यक्ति) से कहा, "यह आत्मा वास्तव में विद्यमान है, तुम ऐसा कहते हो, मैं यह नहीं कहता कि यह विद्यमान नहीं है। वास्तव में, मित्र, यह

इतना होने पर भी आत्मा पूरी तरह नष्ट नहीं होती। वास्तव में, मित्र, एक और आत्मा है जो पूर्णतः शून्यता की अवस्था को पार करके उस अवस्था में पहुँच जाती है जो न तो प्रत्यक्ष है और न ही अप्रत्यक्ष; यह तुम नहीं जानते, नहीं देखते; यह मैं जानता हूँ, मैं देखता हूँ; क्योंकि, मित्र, शरीर के विखंडन पर वह आत्मा नष्ट हो जाती है, नाश हो जाती है, मृत्यु के बाद उसका अस्तित्व नहीं रहता; अतः, मित्र, वह आत्मा वास्तव में पूर्णतः नष्ट हो जाती है"; इस प्रकार कुछ लोग विद्यमान प्राणी के विनाश, नाश और अस्तित्वहीनता का वर्णन करते हैं। ये सात गलत मत हैं। (7) (7)

(यहाँ समाप्त होता है) सात गुना (प्रस्तावना)

8. अष्टांगिक व्याख्या

952. इसमें 'भ्रष्टाचार के आठ आधार' क्या हैं? लोभ, घृणा, सुस्ती, अहंकार, गलत दृष्टिकोण, संदेह, आलस्य, विचलित होना। ये भ्रष्टाचार के आठ आधार हैं।

953. इसमें 'आलस्य के आठ आधार' क्या हैं? इसमें एक भिक्षु को कार्य करना होता है; उसका विचार इस प्रकार होता है, "मुझे कार्य करना तो होगा, परन्तु कार्य करते-करते मेरा शरीर थक जाएगा; अच्छा, मैं लेट जाता हूँ।" वह लेट जाता है, अप्राप्त को प्राप्त करने, अप्राप्त को जानने और असाहित को जानने के लिए ऊर्जा उत्पन्न नहीं करता। यही आलस्य का पहला आधार है।

और फिर, भिक्षु काम करता है, उसका विचार कुछ इस प्रकार होता है, "मैंने काम तो किया, पर काम करते-करते मेरा शरीर थक गया; चलो, लेट जाता हूँ।" वह लेट जाता है, और जो अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है, उसे प्राप्त करने के लिए, जो अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है, उसे प्राप्त करने के लिए, जो अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है, उसे जानने के लिए ऊर्जा उत्पन्न नहीं करता। यही आलस्य का दूसरा आधार है।

और फिर, भिक्षु को एक यात्रा करनी है, [386] उसका (विचार) इस प्रकार है, "मुझे यात्रा करनी ही है, परन्तु यात्रा करते-करते मेरा शरीर थक जाएगा; अच्छा, मैं लेट जाता हूँ।" वह लेट जाता है, अप्राप्त को प्राप्त करने के लिए, अप्राप्त को प्राप्त करने के लिए, अप्राप्त को प्राप्त करने के लिए ऊर्जा उत्पन्न नहीं करता। यही आलस्य का तीसरा आधार है।

और फिर, भिक्षु द्वारा एक यात्रा की जाती है, उसका (विचार) इस प्रकार होता है, "मैंने यात्रा तो की, लेकिन यात्रा करते समय

मेरा शरीर थक गया है; चलो लेट जाता हूँ। वह लेट जाता है, अप्राप्त को पाने, अप्राप्त को जानने, अप्राप्त को जानने के लिए ऊर्जा उत्पन्न नहीं करता। यही आलस्य का चौथा आधार है।

और फिर, भिक्षा मांगने के लिए गांव या शहर में भटकने वाले भिक्षु को जब पर्याप्त या उचित मोटा या उत्तम भोजन नहीं मिलता, तो उसका विचार होता है, "सचमुच, मैं गांव या शहर में भटकते-भटकते पर्याप्त या उचित मोटा या उत्तम भोजन नहीं पा सका, मेरा शरीर

थक गया है, काम करने लायक नहीं; अच्छा, मैं लेट जाऊं।" वह लेट जाता है, अप्राप्य को प्राप्त करने, अप्राप्त को जानने के लिए ऊर्जा उत्पन्न नहीं करता। यही आलस्य का पांचवा आधार है।

और फिर, जब कोई भिक्षु भिक्षा मांगने के लिए गांव या शहर में घूमता है और उसे पर्याप्त मात्रा में मोटा या उत्तम भोजन मिल जाता है, तो उसका विचार होता है, "जी हां, मैंने भिक्षा मांगने के लिए गांव या शहर में घूमते हुए पर्याप्त मात्रा में मोटा या उत्तम भोजन प्राप्त किया, मेरा शरीर थक गया है, काम करने के लिए अनुपयुक्त हो गया है, जैसे भीगी हुई फली; अच्छा, मैं लेट जाता हूं।" वह लेट जाता है, अप्राप्य को प्राप्त करने, अप्राप्त को प्राप्त करने, असाध्य को जानने के लिए ऊर्जा उत्पन्न नहीं करता। यही आलस्य का छठा आधार है।

और फिर भिक्षु को कोई मामूली बीमारी हो जाती है, उसका विचार होता है, "मुझे यह मामूली बीमारी हो गई है, लेट जाना ही ठीक है; मैं लेट जाता हूँ।" वह लेट जाता है, अप्राप्य को प्राप्त करने, अप्राप्त को जानने और असाध्य को जानने के लिए ऊर्जा नहीं लगाता। यही आलस्य का सातवाँ आधार है।

और फिर, भिक्षु रोग से ठीक हो गया है, हाल ही में रोग से ठीक हुआ है, उसका (विचार) इस प्रकार है, "हाँ, मैं रोग से ठीक हो गया हूँ, हाल ही में रोग से ठीक हुआ हूँ, मेरा यह शरीर कमजोर है, काम के लिए अनुपयुक्त है; अच्छा, मैं लेट जाऊँगा"। वह लेट जाता है, अप्राप्त को प्राप्त करने के लिए, अप्राप्त को प्राप्त करने के लिए, अप्राप्त को प्राप्त करने के लिए ऊर्जा उत्पन्न नहीं करता; यह आलस्य का आठवाँ आधार है। ये आलस्य के आठ आधार हैं। [387]

954. किन आठ सांसारिक स्थितियों में चेतना का विचलन होता है? लाभ के प्रति आसक्ति, लाभ की कमी के प्रति शत्रुता, लोकप्रियता के प्रति आसक्ति, लोकप्रियता की कमी के प्रति शत्रुता, प्रशंसा के प्रति आसक्ति, निंदा के प्रति शत्रुता, सुख के प्रति आसक्ति, दुख के प्रति शत्रुता। इन्हीं आठ सांसारिक स्थितियों में चेतना का विचलन होता है।

95 5 . इसमें 'आठ प्रकार के नीच वाणी' क्या हैं? न देखकर भी वह कहता है कि उसने देखा है; न सुनकर भी वह कहता है कि उसने सुना है; अन्यथा अनुभव न करके भी वह कहता है कि उसने अन्यथा अनुभव किया है; न जानकर भी वह कहता है कि वह जानता है; देखकर भी वह कहता है कि उसने नहीं देखा; सुनकर भी वह कहता है कि उसने नहीं सुना; अन्यथा अनुभव करके भी वह कहता है कि उसने अन्यथा अनुभव नहीं किया; जानकर भी वह कहता है कि वह नहीं जानता। ये आठ प्रकार के नीच वाणी हैं।

956. उसमें 'आठ प्रकार के असत्य' क्या हैं? गलत दृष्टिकोण, गलत विचार, गलत वाणी, गलत कर्म, गलत आजीविका, गलत प्रयास, गलत ध्यान, गलत एकाग्रता। ये आठ प्रकार के असत्य हैं।

957, इसमें मनुष्य के आठ दोष क्या हैं? इसमें भिक्षु एक भिक्षु पर अपराध का आरोप लगाते हैं; भिक्षुओं द्वारा अपराध का आरोप लगाए जाने पर, वह भिक्षु अचेतन होकर इस प्रकार टालमटोल करता है, "मुझे याद नहीं है, मुझे याद नहीं है"। यह मनुष्य का पहला दोष है।

और फिर भिक्षु एक भिक्षु पर दोषारोपण करते हैं; जब दूसरे भिक्षु उन पर दोषारोपण करते हैं तो वह भिक्षु दोषारोपण करने वाले को ही उत्तर देता है, "तुम्हारे जैसे मूर्ख और अयोग्य से बात करने का क्या लाभ? क्या तुम्हें लगता है कि तुम जैसे व्यक्ति को मुझसे बात करनी चाहिए?" यह मनुष्य का दूसरा दोष है।

और फिर भिक्षु एक भिक्षु पर अपराध का आरोप लगाते हैं; जब भिक्षु उन पर अपराध का आरोप लगाते हैं, तो वह भिक्षु स्वयं आरोप लगाने वाले पर ही पलटवार करते हुए कहता है, "तुम भी इसी तरह के अपराध में पड़ गए हो, पहले तो प्रायश्चित करो।" यह मनुष्य का तीसरा दोष है।

और फिर भिक्षु एक भिक्षु पर दोषारोपण करते हैं; दोषारोपण किए जाने पर वह भिक्षु किसी न किसी तरह से बात टाल देता है, विषय से भटक जाता है, क्रोध, घृणा और रूठता दिखाता है। यह मनुष्य का चौथा दोष है।

और फिर भिक्षु एक भिक्षु पर अपराध का आरोप लगाते हैं; [388] भिक्षुओं द्वारा अपराध का आरोप लगाए जाने पर वह भिक्षु भिक्षुओं की सभा के बीच में निरर्थक हावभाव करते हुए बोलता है। यह मनुष्य का पाँचवाँ दोष है।

और फिर भिक्षु एक भिक्षु पर अपराध का आरोप लगाते हैं; भिक्षुओं द्वारा अपराध का आरोप लगाए जाने पर वह भिक्षु इस प्रकार कहता है, "मैं न तो अपराध में पड़ा हूँ और न ही अपराध में नहीं पड़ा हूँ", और 19+ को नाराज़ करता है।

500 विश्लेषण की पुस्तक

भिक्षुओं का मौन रहकर एकत्र होना। यह मनुष्य का छठा दोष है।

और फिर भिक्षु एक भिक्षु पर दोषारोपण करते हैं; वह भिक्षु अन्य भिक्षुओं द्वारा दोषारोपित किए जाने पर, भिक्षुओं की सभा और दोषारोपण करने वाले की अवहेलना करते हुए, दोष का दोषी होते हुए भी, अपनी इच्छा से चला जाता है। यह मनुष्य का सातवाँ दोष है।

फिर भिक्षु एक भिक्षु पर दोषारोपण करते हैं; दोषारोपण किए जाने पर वह भिक्षु कहता है, "हे पूज्यवर, अब जब मैं प्रवचन छोड़कर सांसारिक जीवन में लौट रहा हूँ, तो आप मेरे बारे में इतनी चिंता क्यों कर रहे हैं?" प्रवचन छोड़कर सांसारिक जीवन में लौटते हुए वह कहता है, "हे पूज्यवर, प्रसन्न हो जाइए।" यह मनुष्य का आठवाँ दोष है। ये मनुष्य के आठ दोष हैं।

958. उसमें 'अबोधन के आठ सिद्धांत' क्या हैं? आत्मा का रूप होता है, मृत्यु के बाद उसका अस्तित्व समाप्त नहीं होता, इसलिए कुछ लोग इसे "अबोधन" कहते हैं; आत्मा का कोई रूप नहीं होता।

P : इसका रूप है और इसका रूप नहीं है। : P : इसका न तो रूप है और न ही कोई रूप नहीं है। : P :

आत्मा परिमित है, मृत्यु के बाद भी मृत नहीं होती, इसलिए कुछ लोग इसे "अबोध" कहते हैं; आत्मा अनंत है, मृत्यु के बाद भी मृत नहीं होती, इसलिए कुछ लोग इसे "अबोध" कहते हैं; [389] आत्मा परिमित और अनंत दोनों है, मृत्यु के बाद भी मृत नहीं होती, इसलिए कुछ लोग इसे "अबोध" कहते हैं; आत्मा न तो परिमित है और न ही अनंत, मृत्यु के बाद भी मृत नहीं होती, इसलिए कुछ लोग इसे "अबोध" कहते हैं। ये अबोध के आठ सिद्धांत हैं।

P = अंतिम उदाहरण के सामान्य रूप में प्रत्येक को पूरा करें।

959. उसमें 'न तो बोध और न ही अबोध होने के आठ सिद्धांत' क्या हैं? आत्मा का रूप है, मृत्यु के बाद उसका क्षय नहीं होता, इसलिए कुछ लोग इसे "न तो बोध और न ही अबोध होना" कहते हैं; आत्मा का कोई रूप नहीं है, मृत्यु के बाद उसका क्षय नहीं होता, इसलिए कुछ लोग इसे "न तो बोध और न ही अबोध होना" कहते हैं; आत्मा का रूप भी है और कोई रूप नहीं भी, मृत्यु के बाद उसका क्षय नहीं होता, इसलिए कुछ लोग इसे "न तो बोध और न ही अबोध होना" कहते हैं; आत्मा का न तो रूप है और न ही कोई रूप नहीं, मृत्यु के बाद उसका क्षय नहीं होता, इसलिए कुछ लोग इसे "न तो बोध और न ही अबोध होना" कहते हैं; आत्मा सीमित है, मृत्यु के बाद उसका क्षय नहीं होता, इसलिए कुछ लोग इसे "न तो बोध और न ही अबोध होना" कहते हैं;

मैं

छोटी वस्तुओं का विश्लेषण

501

आत्मा अनंत है, मृत्यु के बाद भी नष्ट नहीं होती, इसलिए कुछ लोग इसे "न तो बोध और न ही अबोध" कहते हैं; आत्मा सीमित और अनंत दोनों है, मृत्यु के बाद भी नष्ट नहीं होती, इसलिए कुछ लोग इसे "न तो बोध और न ही अबोध" कहते हैं; आत्मा न तो सीमित है और न ही अनंत, मृत्यु के बाद भी नष्ट नहीं होती, इसलिए कुछ लोग इसे "न तो बोध और न ही अबोध" कहते हैं। ये न तो बोध और न ही अबोध होने के आठ सिद्धांत हैं।

(यहाँ समाप्त होता है) आठ गुना (व्याख्या)

9. नौ गुना व्याख्या

960. इसमें 'पीड़ा के नौ आधार' क्या हैं? "उसने मुझे हानि पहुँचाई है", इस प्रकार पीड़ा उत्पन्न होती है; "वह मुझे हानि पहुँचा रहा है", इस प्रकार पीड़ा उत्पन्न होती है; "वह मुझे हानि पहुँचाएगा", इस प्रकार पीड़ा उत्पन्न होती है; "उसने मेरे प्रिय और प्यारे व्यक्ति को हानि पहुँचाई है, वह हानि पहुँचा रहा है।"

पी: वह नुकसान करेगा", इस प्रकार झुंझलाहट उत्पन्न होती है; "उसने अच्छा किया है"

"जो मुझे प्रिय नहीं है और पसंद भी नहीं है, वो अच्छा कर रहा है, वो अच्छा करेगा", इस प्रकार झुंझलाहट उत्पन्न होती है। ये झुंझलाहट के नौ आधार हैं।

P = उचित रूप से पूरा करें।

961. मनुष्य की नौ अशुद्धियाँ क्या हैं? क्रोध, निंदा, ईर्ष्या, नीचता, छल, पाखंड, झूठी वाणी, बुरी इच्छा, गलत विचार। ये मनुष्य की नौ अशुद्धियाँ हैं।
962. इसमें 'नौ गुना अहंकार' क्या है? जो श्रेष्ठ है उसमें ऐसा अहंकार होता है, "मैं श्रेष्ठ हूँ"; [390] जो श्रेष्ठ है उसमें ऐसा अहंकार होता है, "मैं बराबर हूँ"; जो श्रेष्ठ है उसमें ऐसा अहंकार होता है, "मैं हीन हूँ"; जो बराबर है उसमें ऐसा अहंकार होता है, "मैं श्रेष्ठ हूँ"; जो बराबर है उसमें ऐसा अहंकार होता है, "मैं बराबर हूँ"; जो बराबर है उसमें ऐसा अहंकार होता है, "मैं हीन हूँ"; जो हीन है उसमें ऐसा अहंकार होता है, "मैं श्रेष्ठ हूँ"; जो हीन है उसमें ऐसा अहंकार होता है, "मैं बराबर हूँ"; जो हीन है उसमें ऐसा अहंकार होता है, "मैं हीन हूँ"। यही नौ गुना अहंकार है।
963. इसमें 'लालसा पर आधारित नौ अवस्थाएँ' क्या हैं? लालसा पर निर्भर निरंतर खोज है; निरंतर खोज पर निर्भर लाभ है; लाभ पर निर्भर निर्णय है; निर्णय पर निर्भर कामुक इच्छा है; कामुक इच्छा पर निर्भर

इच्छा से आसक्ति उत्पन्न होती है; आसक्ति के कारण अधिकार की भावना उत्पन्न होती है; अधिकार की भावना के कारण नीचता उत्पन्न होती है; नीचता के कारण संशय उत्पन्न होता है; संशय के कारण लाठी उठाना, शस्त्र धारण करना, झगड़ा करना, विवाद करना, कलह करना, "तुम, तुम" कहकर पुकारना, निंदा करना, झूठी बातें बोलना और अनेक प्रकार की बुरी अवस्थाएँ उत्पन्न होती हैं। ये नौ अवस्थाएँ लालसा में निहित हैं।
964. इसमें 'नौ प्रकार की विक्षोभ' क्या हैं? "मैं हूँ", यह एक विक्षोभ है; "मैं हूँ", यह एक विक्षोभ है; "मैं यह (व्यक्ति) हूँ", यह एक विक्षोभ है; "मैं होऊँगा", यह एक विक्षोभ है; "मेरा रूप होगा", यह एक विक्षोभ है; "मेरा कोई रूप नहीं होगा", यह एक विक्षोभ है; "मुझे बोध होगा", यह एक विक्षोभ है; "मुझे बोध नहीं होगा", यह एक विक्षोभ है; "मुझे न तो बोध होगा और न ही बोध", यह एक विक्षोभ है। ये नौ प्रकार की विक्षोभ हैं।
965. इसमें 'नौ प्रकार की कल्पना, नौ प्रकार की अस्थिरता, नौ प्रकार के जुनून, नौ मानसिक अवस्थाएँ' क्या हैं? "मैं हूँ", यह एक मानसिक अवस्था है; "मैं हूँ", यह एक मानसिक अवस्था है; "मैं यह (व्यक्ति) हूँ", यह एक मानसिक अवस्था है; [391] "मैं होऊँगा", यह एक मानसिक अवस्था है; "मेरा रूप होगा", यह एक मानसिक अवस्था है; "मेरा कोई रूप नहीं होगा", यह एक मानसिक अवस्था है; "मुझे बोध होगा", यह एक मानसिक अवस्था है; "मुझे अबोध होगा", यह एक मानसिक अवस्था है; "मुझे न तो बोध होगा और न ही अबोध", यह एक मानसिक अवस्था है। ये नौ मानसिक अवस्थाएँ हैं।
(यहाँ समाप्त होता है) नौ गुना (प्रस्तावना)
\
10. दस गुना व्याख्या
966. इसमें 'भ्रष्टाचार के दस आधार' क्या हैं? लोभ, घृणा, सुस्ती, अहंकार, गलत धारणा, संदेह, आलस्य, विचलित होना, लज्जा का अभाव, निंदा के भय का अभाव। ये भ्रष्टाचार के दस आधार हैं।
967. इसमें 'पीड़ा के दस आधार' क्या हैं? "उसने मुझे हानि पहुँचाई है", इस प्रकार पीड़ा उत्पन्न होती है; "वह मुझे हानि पहुँचा रहा है", इस प्रकार पीड़ा उत्पन्न होती है; "वह मुझे हानि पहुँचाएगा", इस प्रकार पीड़ा उत्पन्न होती है; "उसने किया है"

"किसी प्रिय और प्रिय व्यक्ति को हानि पहुँचाना, वह हानि पहुँचा रहा है, वह हानि पहुँचाएगा", इस प्रकार झुंझलाहट उत्पन्न होती है; "उसने किसी ऐसे व्यक्ति के साथ भलाई की है जो मुझे प्रिय और प्रिय नहीं है, वह भलाई कर रहा है, वह भलाई करेगा", इस प्रकार झुंझलाहट उत्पन्न होती है; या झुंझलाहट अनुचित रूप से उत्पन्न होती है। ये झुंझलाहट के दस आधार हैं।

P = उचित रूप से पूरा करें।

968. इसमें 'दस प्रकार के बुरे कर्म' क्या हैं? प्राणियों की हत्या करना, बिना माँगी वस्तुएँ लेना, यौन दुराचार, झूठी बातें, निंदात्मक बातें, कठोर बातें, तुच्छ बातें, लोभ, द्वेष, गलत मत। ये दस प्रकार के बुरे कर्म हैं।

969. इसमें 'दस बंधन' क्या हैं? इंद्रिय सुख की लालसा का बंधन, घृणा का बंधन, अहंकार का बंधन, गलत दृष्टिकोण का बंधन, संदेह का बंधन, आदतों और प्रथाओं के प्रति आसक्ति का बंधन, अभिमान का बंधन, ईर्ष्या का बंधन, नीचता का बंधन, अज्ञान का बंधन। ये दस बंधन हैं।

970. उसमें 'दस प्रकार की असत्यता' क्या हैं? गलत दृष्टिकोण, गलत विचार, गलत वाणी, गलत कर्म, गलत आजीविका, गलत प्रयास, गलत जागरूकता, [392] गलत एकाग्रता, गलत ज्ञान, झूठी स्वतंत्रता। ये दस प्रकार की असत्यता हैं।

97 1. इसमें 'दस आधारों वाला भ्रामक मत' क्या है? "इसमें न तो भिक्षा है, न यज्ञ है, न भेंट है, न कर्मों का कोई फल या परिणाम है, न यह संसार है, न परलोक है, न माता है, न पिता है, न स्वतः उत्पन्न होने वाले प्राणी हैं, न संसार में ऐसे संन्यासी और ब्राह्मण हैं जो सर्वोच्च स्तर पर पहुँच चुके हों, जो सिद्ध साधक हों; जो स्वयं इस संसार और परलोक को पूर्णतः जानकर, उसका ज्ञान दूसरों को भी प्रदान करते हों।" यही दस आधारों वाला भ्रामक मत है।

972. इसमें 'दस आधारों वाला अतिवादी दृष्टिकोण' क्या है? "संसार शाश्वत है" या "संसार शाश्वत नहीं है", "संसार सीमित है" या "संसार अनंत है", "प्राण और शरीर एक ही हैं" या "प्राण और शरीर भिन्न हैं", "मृत्यु के बाद किसी प्राणी का अस्तित्व रहता है" या "मृत्यु के बाद किसी प्राणी का अस्तित्व नहीं रहता" या "मृत्यु के बाद किसी प्राणी का अस्तित्व भी होता है और नहीं भी" या "मृत्यु के बाद किसी प्राणी का अस्तित्व न तो होता है और न ही नहीं होता"। यही दस आधारों वाला अतिवादी दृष्टिकोण है।

(यहाँ समाप्त होता है) दस गुना (प्रस्तावना)

504 विश्लेषण की पुस्तक
लालसा की घटनाओं का विवरण

973. उसमें 'आंतरिक (समूहों) के संबंध में लालसा की अठारह घटनाएँ' क्या हैं? वहाँ है, "मैं हूँ"; वहाँ है, "मैं ऐसा हूँ"; वहाँ है, "मैं भी हूँ"; वहाँ है, "मैं अन्यथा हूँ"; वहाँ है, "मैं होऊँगा"; वहाँ है, "मैं ऐसा होऊँगा"; वहाँ है, "मैं भी होऊँगा"; वहाँ है, "मैं अन्यथा होऊँगा"; वहाँ है, "मैं शाश्वत हूँ"; वहाँ है, "मैं शाश्वत नहीं हूँ"; वहाँ है, "मैं हो सकता हूँ"; वहाँ है, "मैं ऐसा हो सकता हूँ"; वहाँ है, "मैं भी हो सकता हूँ"; वहाँ है, "मैं अन्यथा हो सकता हूँ"; वहाँ है, "काश मैं होऊँगा"; वहाँ है, "काश मैं ऐसा होऊँगा"; वहाँ है, "काश मैं भी होऊँगा"; वहाँ है, "काश मैं अन्यथा होऊँगा"। [393]

974. और "मैं हूँ" कैसे है? किसी भी अवस्था (चाहे) भौतिक गुण, भावना, बोध, मानसिक सहवर्ती (या) चेतना के संबंध में कोई भेद किए बिना, व्यक्ति को यह इच्छा होती है, "मैं हूँ"; व्यक्ति को यह अहंकार होता है, "मैं हूँ"; व्यक्ति को यह गलत धारणा होती है, "मैं हूँ"; जब ऐसा होता है तो ये आसक्तियाँ उत्पन्न होती हैं, "मैं ऐसा हूँ" या "मैं भी हूँ" या "मैं कुछ और हूँ"। (1)

और "मैं ऐसा हूँ" यह कैसे है? "मैं शासक हूँ" या "मैं ब्राह्मण हूँ" या "मैं व्यापारी हूँ" या "मैं कारीगर हूँ" या "मैं गृहस्थ हूँ" या "मैं तपस्वी हूँ" या "मैं देव हूँ" या "मैं मनुष्य हूँ" या "मेरा भौतिक रूप है" या "मेरा भौतिक रूप नहीं है" या "मेरी चेतना है" या "मेरी अचेतना है" या "मेरी न तो चेतना है और न ही अचेतना है", इस प्रकार "मैं ऐसा हूँ" है। (2)

और "मैं भी हूँ" कैसे आया? किसी दूसरे व्यक्ति की तुलना स्वयं से करते हुए, "जैसे वह शासक है, वैसे ही मैं भी शासक हूँ", या "जैसे वह ब्राह्मण है, वैसे ही मैं भी ब्राह्मण हूँ", या "जैसे वह व्यापारी है, वैसे ही मैं भी व्यापारी हूँ", या "जैसे वह कारीगर है, वैसे ही मैं भी कारीगर हूँ", या "जैसे वह गृहस्थ है, वैसे ही मैं भी गृहस्थ हूँ", या "जैसे वह तपस्वी है, वैसे ही मैं भी तपस्वी हूँ", या "जैसे वह देवता है, वैसे ही मैं भी देवता हूँ", या "जैसे वह मनुष्य है, वैसे ही मैं भी मनुष्य हूँ", या "जैसे उसका भौतिक रूप है, वैसे ही मेरा भी भौतिक रूप है", या "जैसे उसका कोई भौतिक रूप नहीं है, वैसे ही मेरा भी कोई भौतिक रूप नहीं है", या "जैसे उसकी चेतना है, वैसे ही मेरी भी चेतना है", या "जैसे उसकी अचेतना है, वैसे ही मेरी भी अचेतना है", या "जैसे उसकी न तो चेतना है और न ही अचेतना है", वैसे ही मेरी भी कोई चेतना नहीं है और न ही अचेतना है"। इस प्रकार, "मैं भी हूँ"। (3)

और "मैं अन्यथा हूँ" जैसी बात कैसे हुई? किसी दूसरे व्यक्ति की तुलना करना

(स्वयं से), "चूंकि वह शासक है, मैं उसी प्रकार शासक नहीं हूँ" या "चूंकि वह ब्राह्मण है, मैं उसी प्रकार ब्राह्मण नहीं हूँ" या "चूंकि वह व्यापारी है, मैं उसी प्रकार व्यापारी नहीं हूँ" या "चूंकि वह कारीगर है, मैं उसी प्रकार कारीगर नहीं हूँ" या "चूंकि वह गृहस्थ है, मैं उसी प्रकार गृहस्थ नहीं हूँ" या "चूंकि वह तपस्वी है, मैं उसी प्रकार तपस्वी नहीं हूँ" या "चूंकि वह देव है, मैं उसी प्रकार देव नहीं हूँ" या "चूंकि वह मनुष्य है, मैं उसी प्रकार मनुष्य नहीं हूँ" या [394] "चूंकि उसका भौतिक रूप है, मेरा भौतिक रूप नहीं है" या "चूंकि उसका 'कोई भौतिक रूप नहीं' है, मेरा 'कोई भौतिक रूप नहीं' है" या "चूंकि उसके पास बोध है, मेरे पास बोध नहीं है" या "चूंकि उसके पास अबोध है, मेरे पास अबोध नहीं है" "चूंकि उसके पास 'न तो बोध है और न ही अबोध', उसी प्रकार मेरे पास 'न तो बोध है और न ही अबोध' नहीं है।" अतः, "मैं भिन्न हूँ।" (4)

और "मैं बनूँगा" यह कैसे संभव है? किसी भी अवस्था (चाहे) भौतिक गुण, भावना, बोध, मानसिक सहवर्ती (या) चेतना के संबंध में कोई भेद किए बिना, व्यक्ति को यह इच्छा होती है, "मैं बनूँगा"; व्यक्ति को यह अहंकार होता है, "मैं बनूँगा"; व्यक्ति को यह गलत धारणा होती है, "मैं बनूँगा"; जब ऐसा होता है तो ये आसक्तियाँ उत्पन्न होती हैं, "मैं ऐसा बनूँगा" या "मैं भी बनूँगा" या "मैं कुछ और बनूँगा"। (5)

और यह कैसे हो सकता है, "मैं ऐसा होऊंगा"? "मैं शासक होऊंगा" या "मैं ब्राह्मण होऊंगा" या "मैं व्यापारी होऊंगा" या "मैं कारीगर होऊंगा" या "मैं गृहस्थ होऊंगा" या "मैं तपस्वी होऊंगा" या "मैं देव होऊंगा" या "मैं मनुष्य होऊंगा" या "मेरा भौतिक रूप होगा" या "मेरा भौतिक रूप नहीं होगा" या "मेरी चेतना होगी" या "मेरी अचेतना होगी" या "मेरी न तो चेतना होगी और न ही अचेतना होगी"। इस प्रकार यह है, "मैं अलग होऊंगा"। (6)

और फिर "मैं भी वही होऊंगा" कैसे आया? किसी दूसरे व्यक्ति की तुलना स्वयं से करते हुए, "जैसे वह शासक होगा, वैसे ही मैं भी शासक होऊंगा" या "जैसे वह ब्राह्मण होगा, वैसे ही मैं भी ब्राह्मण होऊंगा" या "जैसे उसमें 'न तो बोध होगा और न ही अबोध', वैसे ही मुझमें भी 'न तो बोध होगा और न ही अबोध'"। इस प्रकार "मैं भी वही होऊंगा" का विचार आया। (7)

P = मध्यवर्ती मदें पहले की तरह ही।

और फिर यह बात कैसे आती है, "मैं अलग होऊंगा"? किसी दूसरे व्यक्ति की तुलना स्वयं से करते हुए, "जैसे वह शासक बनेगा, मैं उसी तरह शासक नहीं बनूंगा" या "जैसे वह ब्राह्मण बनेगा, मैं ब्राह्मण नहीं बनूंगा"

ब्राह्मण उसी प्रकार" या :P: "जैसे उसके पास 'न तो बोध होगा और न ही अबोध', वैसे ही मेरे पास भी 'न तो बोध होगा और न ही अबोध' उसी प्रकार नहीं होगा"। इस प्रकार, "मैं भिन्न होऊंगा"। (8)

P = मध्यवर्ती मदें, जैसा कि पहले बताया गया है।

और यह कैसे है, "मैं शाश्वत हूँ"? किसी भी अवस्था (चाहे) भौतिक गुण, भावना, बोध, मानसिक सहवर्ती (या) चेतना के संबंध में कोई भेद किए बिना, (यह है), "मैं स्थायी हूँ, मैं टिकाऊ हूँ, मैं शाश्वत हूँ, मैं परिवर्तन के अधीन नहीं हूँ"। इस प्रकार यह है, "मैं शाश्वत हूँ"। (9) [395]

और यह कैसे हो सकता है, "मैं शाश्वत नहीं हूँ"? किसी भी अवस्था (चाहे) भौतिक गुण, भावना, बोध, मानसिक सहवर्ती (या) चेतना के संबंध में कोई भेद किए बिना, यह है, "मैं नष्ट हो जाऊँगा, मैं नष्ट हो जाऊँगा, मेरा अस्तित्व नहीं रहेगा"। इस प्रकार यह है, "मैं शाश्वत नहीं हूँ"। (10)

और "मैं हो सकता हूँ" यह विचार कैसे आया? किसी भी अवस्था (चाहे) भौतिक गुण, भावना, बोध, मानसिक सहवर्ती (या) चेतना के संबंध में कोई भेद किए बिना, व्यक्ति के मन में यह इच्छा उत्पन्न होती है, "मैं हो सकता हूँ"; व्यक्ति के मन में यह अहंकार उत्पन्न होता है, "मैं हो सकता हूँ"; व्यक्ति के मन में यह गलत धारणा उत्पन्न होती है, "मैं ऐसा हो सकता हूँ" या "मैं भी हो सकता हूँ" या "मैं कुछ और हो सकता हूँ"। (11)

और यह कैसे आया, “मैं ऐसा हो सकता हूँ”? “मैं शासक हो सकता हूँ” या “मैं ब्राह्मण हो सकता हूँ” या “मैं व्यापारी हो सकता हूँ” या “मैं कारीगर हो सकता हूँ” या “मैं गृहस्थ हो सकता हूँ” या “मैं तपस्वी हो सकता हूँ” या “मैं देवता हो सकता हूँ” या “मैं मनुष्य हो सकता हूँ” या “मेरा भौतिक रूप हो सकता है” या “मेरा भौतिक रूप नहीं हो सकता है” या “मेरी चेतना हो सकती है” या “मेरी अचेतना हो सकती है” या “मेरी न तो चेतना है और न ही अचेतना”। इस प्रकार, “मैं ऐसा हो सकता हूँ” आता है। (12) J
और यह कैसे आया, “मैं भी हो सकता हूँ”? किसी दूसरे व्यक्ति की तुलना स्वयं से करते हुए, “जैसे वह शासक बन सकता है, वैसे ही मैं भी शासक बन सकता हूँ” या “जैसे वह ब्राह्मण बन सकता है, वैसे ही मैं भी ब्राह्मण बन सकता हूँ” या “जैसे उसके पास ‘न तो बोध है और न ही अबोध’, वैसे ही मेरे पास भी ‘न तो बोध है और न ही अबोध’”। इस प्रकार, “मैं भी हो सकता हूँ” का विचार आया। (13)
P = मध्यवर्ती मदें पहले की तरह ही।
और फिर यह बात कैसे आई कि, “मैं अलग हो सकता हूँ”? किसी दूसरे व्यक्ति की तुलना (स्वयं से) करते हुए, “यदि वह शासक हो, तो शायद मैं शासक न बनूँ।”

उसी प्रकार” या 4 'यदि वह ब्राह्मण हो, तो मैं उसी प्रकार ब्राह्मण न हो सकूँ' या : पी : “यदि उसके पास 'न तो बोध हो और न ही अबोध', तो मेरे पास उसी प्रकार 'न तो बोध हो और न ही अबोध' न हो”। इस प्रकार, “मैं भिन्न हो सकता हूँ”। (14)
P = मध्यवर्ती मदें पहले की तरह ही।
और यह विचार कैसे आया, "काश मैं ऐसा होता"? किसी भी अवस्था (चाहे भौतिक गुण हो, भावना हो, बोध हो, मानसिक सहवर्ती हो या चेतना) के संबंध में कोई भेद किए बिना, व्यक्ति के मन में यह इच्छा उत्पन्न होती है, "काश मैं ऐसा होता"; व्यक्ति के मन में यह अहंकार उत्पन्न होता है, "काश मैं ऐसा होता"; व्यक्ति के मन में यह गलत धारणा उत्पन्न होती है, "काश मैं ऐसा होता" या "काश मैं वह भी होता" या "काश मैं कुछ और होता"। (15)
और यह विचार कैसे आया, “काश मैं ऐसा होता”? “काश मैं शासक होता” या “काश मैं ब्राह्मण होता” या “काश मैं व्यापारी होता” या “काश मैं कारीगर होता” या “काश मैं गृहस्थ होता” या “काश मैं तपस्वी होता” [396] या “काश मैं देव होता” या “काश मैं मनुष्य होता” या “काश मेरा भौतिक रूप होता” या “काश मेरा कोई भौतिक रूप न होता” या “काश मुझे बोध होता” या “काश मुझे अबोध होता” या “काश मुझे न तो बोध होता और न ही अबोध”। इस प्रकार यह विचार आया, “काश मैं ऐसा होता”। (16)
और "काश मैं भी ऐसा हो सकूँ" यह विचार कैसे आया? किसी दूसरे व्यक्ति की तुलना स्वयं से करते हुए, "जैसे वह शासक बन सकता है, काश मैं भी शासक बन जाऊँ" या "जैसे वह ब्राह्मण बन सकता है, काश मैं भी ब्राह्मण बन जाऊँ" या "जैसे उसके पास 'न तो बोध है और न ही अबोध', काश मेरे पास भी 'न तो बोध है और न ही अबोध'"। इस प्रकार "काश मैं भी ऐसा हो सकूँ" का विचार आया। (17)
P = मध्यवर्ती मदें पहले की तरह ही।
और "काश मैं कुछ और होता" जैसी बात कैसे आती है? तुलना करते हुए
किसी दूसरे व्यक्ति से (स्वयं से), “जैसे वह शासक बन सकता है, काश मैं उसी तरह शासक न बनूँ” या “जैसे वह ब्राह्मण बन सकता है, काश मैं उसी तरह ब्राह्मण न बनूँ” या :P: “जैसे उसके पास ‘न तो बोध है और न ही अबोध’, काश मेरे पास भी ‘न तो बोध है और न ही’”
19*

इसी प्रकार 'अबोधन'। इस प्रकार है, "काश मैं कुछ और होता"। (18)
P = मध्यवर्ती मदें पहले की तरह ही।
आंतरिक (समूहों) के संबंध में लालसा की ये अठारह घटनाएं हैं।

975. उसमें 'बाह्य (समूहों) के संबंध में लालसा की अठारह घटनाएँ' क्या हैं? वहाँ है, "इसके माध्यम से मैं हूँ"; वहाँ है, "इसके माध्यम से मैं ऐसा हूँ"; वहाँ है, "इसके माध्यम से मैं भी हूँ"; वहाँ है, "इसके माध्यम से मैं अन्यथा हूँ"; वहाँ है, "इसके माध्यम से मैं होऊँगा"; वहाँ है, "इसके माध्यम से मैं ऐसा होऊँगा"; वहाँ है, "इसके माध्यम से मैं भी होऊँगा"; वहाँ है, "इसके माध्यम से मैं अन्यथा होऊँगा"; वहाँ है, "इसके माध्यम से मैं शाश्वत हूँ"; वहाँ है, "इसके माध्यम से मैं शाश्वत नहीं हूँ"; वहाँ है, "इसके माध्यम से मैं हो सकता हूँ"; वहाँ है, "इसके माध्यम से मैं ऐसा हो सकता हूँ"; वहाँ है, "इसके माध्यम से मैं भी हो सकता हूँ"; वहाँ है, "इसके माध्यम से मैं अन्यथा हो सकता हूँ"; वहाँ है, "काश मैं होऊँ"; "इसके माध्यम से, काश मैं ऐसा हो सकूँ"; "इसके माध्यम से, काश मैं भी हो सकूँ"; "इसके माध्यम से, काश मैं कुछ और हो सकूँ"।

976. और यह कैसे है, "इसके माध्यम से मैं हूँ"? [397] किसी निश्चित अवस्था (चाहे) भौतिक गुण, भावना, बोध, मानसिक सहवर्ती (या) चेतना के संबंध में भेद करने पर, व्यक्ति को यह इच्छा होती है, "इसके माध्यम से मैं हूँ"; व्यक्ति को यह अहंकार होता है, "इसके माध्यम से मैं हूँ"; व्यक्ति को यह गलत धारणा होती है, "इसके माध्यम से मैं हूँ"; जब ऐसा होता है तो ये आसक्तियाँ उत्पन्न होती हैं, "इसके माध्यम से मैं ऐसा हूँ" या "इसके माध्यम से मैं भी हूँ" या "इसके माध्यम से मैं अन्यथा हूँ"। (1)

और यह कैसे संभव है, "इसके द्वारा मैं ऐसा हूँ"? "इसके द्वारा मैं शासक हूँ" या "इसके द्वारा मैं ब्राह्मण हूँ" या "इसके द्वारा मैं व्यापारी हूँ" या "इसके द्वारा मैं कारीगर हूँ" या "इसके द्वारा मैं गृहस्थ हूँ" या "इसके द्वारा मैं तपस्वी हूँ" या "इसके द्वारा मैं देवता हूँ" या "इसके द्वारा मैं मनुष्य हूँ" या "इसके द्वारा मेरा भौतिक रूप है" या "इसके द्वारा मेरा कोई भौतिक रूप नहीं है" या "इसके द्वारा मुझे बोध है" या "इसके द्वारा मुझे अबोध है" या "इसके द्वारा मेरे पास न तो है और न ही कुछ और है"?

छोटी वस्तुओं का विश्लेषण

509

न तो बोध और न ही अबोध। अतः यह है, "इसके माध्यम से मैं ऐसा हूँ।" (2)

और फिर यह कैसे आया, "इसके द्वारा मैं भी हूँ"? किसी दूसरे व्यक्ति की तुलना स्वयं से करते हुए, "जैसे वह शासक है, वैसे ही इसके द्वारा मैं भी शासक हूँ" या "जैसे वह ब्राह्मण है, वैसे ही इसके द्वारा मैं भी ब्राह्मण हूँ" या "जैसे उसके पास 'न तो बोध है और न ही अबोध', वैसे ही इसके द्वारा मेरे पास भी 'न तो बोध है और न ही अबोध'"। इस प्रकार यह आता है, "इसके द्वारा मैं भी हूँ"। (3)

P = मध्यवर्ती मदें पहले की तरह ही।

और यह कैसे आया, "इसके द्वारा मैं भिन्न हूँ"? किसी दूसरे व्यक्ति की तुलना स्वयं से करते हुए, "चूँकि वह शासक है, इसके द्वारा मैं उसी प्रकार शासक नहीं हूँ" या "चूँकि वह ब्राह्मण है, इसके द्वारा मैं उसी प्रकार ब्राह्मण नहीं हूँ" या "चूँकि उसके पास 'न तो बोध है और न ही अबोध', इसके द्वारा मेरे पास 'न तो बोध है और न ही अबोध'"। इस प्रकार यह आया, "इसके द्वारा मैं भिन्न हूँ"। (4)

P = मध्यवर्ती मदें पहले की तरह ही।

और यह विचार कैसे आया, "इसके द्वारा मैं ऐसा बनूँगा"? किसी विशेष अवस्था (चाहे वह भौतिक गुण हो, भावना हो, बोध हो, मानसिक सहवर्ती हो या चेतना) के संबंध में भेद करने पर, यह इच्छा उत्पन्न होती है, "इसके द्वारा मैं ऐसा बनूँगा"; यह अहंकार उत्पन्न होता है, "इसके द्वारा मैं ऐसा बनूँगा"; यह गलत धारणा उत्पन्न होती है, "इसके द्वारा मैं ऐसा बनूँगा"; जब ऐसा होता है तो ये आसक्तियाँ उत्पन्न होती हैं, "इसके द्वारा मैं ऐसा बनूँगा" या "इसके द्वारा मैं भी बनूँगा" या "इसके द्वारा मैं कुछ और बनूँगा"। (5)

और यह वाक्य कैसे आया, "इसके द्वारा मैं ऐसा बनूँगा"? "इसके द्वारा मैं शासक बनूँगा" या :P: [398] "इसके द्वारा मेरा कोई भौतिक रूप नहीं होगा" या "इसके द्वारा मुझे बोध होगा" या "इसके द्वारा मुझे अबोध होगा" या "इसके द्वारा मुझे 'न बोध होगा और न अबोध'"। इस प्रकार यह वाक्य आया, "इसके द्वारा मैं ऐसा बनूँगा"। (6)

P = मध्यवर्ती मदें पहले की तरह ही।

और फिर यह वाक्य कैसे आया, "इसके द्वारा मैं भी ऐसा ही बनूँगा"? किसी दूसरे व्यक्ति की तुलना स्वयं से करते हुए, "जैसे वह शासक बनेगा, वैसे ही इसके द्वारा मैं भी शासक बनूँगा" या "जैसे वह ब्राह्मण बनेगा, वैसे ही इसके द्वारा मैं भी ब्राह्मण बनूँगा" या "जैसे उसमें 'न तो बोध होगा और न ही अबोध', वैसे ही इसके द्वारा मैं भी ऐसा ही बनूँगा"

510

उसे 'न तो बोध होगा और न ही अबोध'। अतः, “इसके द्वारा मैं भी अस्तित्व में आऊंगा”। (7)
P = मध्यवर्ती मदें पहले की तरह ही।
और फिर यह वाक्य कैसे आया, “इसके द्वारा मैं भिन्न हो जाऊँगा”? किसी दूसरे व्यक्ति की तुलना स्वयं से करते हुए, “जैसे वह शासक होगा, वैसे ही मैं इसके द्वारा शासक नहीं हो पाऊँगा” या “जैसे वह ब्राह्मण होगा, वैसे ही मैं इसके द्वारा ब्राह्मण नहीं हो पाऊँगा” या “जैसे उसमें ‘न तो बोध होगा और न ही अबोध’, वैसे ही मुझमें ‘न तो बोध होगा और न ही अबोध’”। इस प्रकार यह वाक्य आया, “इसके द्वारा मैं भिन्न हो जाऊँगा”। (8)
P — मध्यवर्ती आइटम पहले की तरह ही।
और यह कैसे है, “इसके द्वारा मैं शाश्वत हूँ”? किसी निश्चित अवस्था (चाहे) भौतिक गुण, भावना, बोध, मानसिक सहवर्ती (या) चेतना के संबंध में भेद करते हुए, (यह है), “इसके द्वारा मैं स्थायी हूँ, मैं टिकाऊ हूँ, मैं शाश्वत हूँ, मैं परिवर्तन के अधीन नहीं हूँ”। इस प्रकार यह है, “इसके द्वारा मैं शाश्वत हूँ”। (9)
और यह कैसे है, “इसके द्वारा मैं शाश्वत नहीं हूँ”? किसी विशेष अवस्था (चाहे) भौतिक गुण, भावना, बोध, मानसिक सहवर्ती (या) चेतना के संबंध में भेद करने पर, यह है, “इसके द्वारा मैं नष्ट हो जाऊँगा, मैं मिटा दिया जाऊँगा, मेरा अस्तित्व नहीं रहेगा”। इस प्रकार यह है, “इसके द्वारा मैं शाश्वत नहीं हूँ”। (io)
और यह कैसे संभव है, “इसके माध्यम से मैं हो सकता हूँ”? किसी निश्चित अवस्था (चाहे) भौतिक गुण, भावना, बोध, मानसिक सहवर्ती (या) चेतना के संबंध में भेद करने पर, यह इच्छा उत्पन्न होती है, “इसके माध्यम से मैं हो सकता हूँ”; यह अहंकार उत्पन्न होता है, “इसके माध्यम से मैं हो सकता हूँ”; यह गलत धारणा उत्पन्न होती है, “इसके माध्यम से मैं हो सकता हूँ”; जब ऐसा होता है तो ये आसक्तियाँ उत्पन्न होती हैं, “इसके माध्यम से मैं ऐसा हो सकता हूँ” या “इसके माध्यम से मैं भी हो सकता हूँ” या “इसके माध्यम से मैं अन्यथा हो सकता हूँ”। (11)
और यह वाक्य कैसे आया, “इसके द्वारा मैं ऐसा बन सकता हूँ”? “इसके द्वारा मैं शासक बन सकता हूँ” या “इसके द्वारा मैं ब्राह्मण बन सकता हूँ” या “इसके द्वारा मैं व्यापारी बन सकता हूँ” या “इसके द्वारा मैं कारीगर बन सकता हूँ” या “इसके द्वारा मैं गृहस्थ बन सकता हूँ” या “इसके द्वारा मैं तपस्वी बन सकता हूँ” या “इसके द्वारा मैं देवता बन सकता हूँ” या “इसके द्वारा मैं

■

“मनुष्य होना” या “इसके माध्यम से मेरा भौतिक रूप हो सकता है” या “इसके माध्यम से मेरा भौतिक रूप न हो सकता है” या “इसके माध्यम से [399] मुझे बोध हो सकता है” या “इसके माध्यम से मुझे अबोध हो सकता है” या “इसके माध्यम से मुझे 'न तो बोध और न ही अबोध' हो सकता है”। इस प्रकार, “इसके माध्यम से मैं ऐसा हो सकता हूँ”। (12)
और फिर यह वाक्य कैसे आया, “इसके द्वारा मैं भी बन सकता हूँ”? किसी दूसरे व्यक्ति की तुलना स्वयं से करते हुए, “जैसे वह शासक बन सकता है, वैसे ही इसके द्वारा मैं भी शासक बन सकता हूँ” या “जैसे वह ब्राह्मण बन सकता है, वैसे ही इसके द्वारा मैं भी ब्राह्मण बन सकता हूँ”?
पी: "क्योंकि उसके पास 'न तो बोध है और न ही अबोध', इसलिए
इसके माध्यम से मुझे भी 'न तो बोध हो सकता है और न ही अबोध'। इस प्रकार, "इसके माध्यम से मैं भी हो सकता हूँ"। (13)
P = मध्यवर्ती मदें पहले की तरह ही।
और यह वाक्य कैसे आया, “इसके माध्यम से मैं भिन्न हो सकता हूँ”? किसी दूसरे व्यक्ति की तुलना स्वयं से करते हुए, “यदि वह शासक हो, तो इसके माध्यम से मैं उसी प्रकार शासक न हो सकूँ” या “यदि वह ब्राह्मण हो, तो इसके माध्यम से मैं उसी प्रकार ब्राह्मण न हो सकूँ” या :P: “चूँकि उसके पास ‘न तो बोध है और न ही अबोध’, इसके माध्यम से मेरे पास भी उसी प्रकार ‘न तो बोध है और न ही अबोध’”। इस प्रकार यह वाक्य आया, “इसके माध्यम से मैं भिन्न हो सकता हूँ”। (14)
P = मध्यवर्ती मदें पहले की तरह ही।

और यह विचार कैसे आया, "काश मैं ऐसा हो जाऊँ"? किसी निश्चित अवस्था (चाहे वह भौतिक गुण हो, भावना हो, बोध हो, मानसिक सहवर्ती हो या चेतना) के संबंध में भेद करने पर, यह इच्छा उत्पन्न होती है, "काश मैं ऐसा हो जाऊँ"; यह अहंकार उत्पन्न होता है, "काश मैं ऐसा हो जाऊँ"; यह गलत धारणा उत्पन्न होती है, "काश मैं ऐसा हो जाऊँ"; जब ऐसा होता है तो ये आसक्तियाँ उत्पन्न होती हैं, "काश मैं ऐसा हो जाऊँ" या "काश मैं भी हो जाऊँ" या "काश मैं कुछ और हो जाऊँ"। (15)
और फिर ये वाक्य कैसे आते हैं, "इसके द्वारा, काश मैं ऐसा बन जाऊँ"? "इसके द्वारा, काश मैं शासक बन जाऊँ" या "इसके द्वारा, काश मैं ब्राह्मण बन जाऊँ" या "इसके द्वारा, काश मैं व्यापारी बन जाऊँ" या "इसके द्वारा, काश मैं कारीगर बन जाऊँ" या "इसके द्वारा, काश मैं ऐसा बन जाऊँ"

मैं गृहस्थ हो सकता हूँ" या "इसके माध्यम से, काश मैं तपस्वी हो सकता हूँ" या "इसके माध्यम से, काश मैं देव हो सकता हूँ" या "इसके माध्यम से, काश मैं मनुष्य हो सकता हूँ" या "इसके माध्यम से, काश मेरा भौतिक रूप हो सकता है" या "इसके माध्यम से, काश मेरा कोई भौतिक रूप न हो" या "इसके माध्यम से, काश मुझे बोध हो सकता है" या "इसके माध्यम से, काश मुझे अबोध हो सकता है" या "इसके माध्यम से, काश मुझे न तो बोध हो और न ही अबोध हो" 5 । इस प्रकार, "इसके माध्यम से, काश मैं ऐसा हो सकता हूँ" (16) है।
और यह वाक्य कैसे आया, "इसके द्वारा, काश मैं भी 55 वर्ष का हो जाऊँ?" दूसरे व्यक्ति की तुलना स्वयं से करते हुए, "जैसे वह शासक बन सकता है, वैसे ही इसके द्वारा, काश मैं भी शासक बन जाऊँ" या "जैसे वह ब्राह्मण बन सकता है, वैसे ही इसके द्वारा, काश मैं भी ब्राह्मण बन जाऊँ" या "जैसे उसके पास 'न तो बोध है और न ही अबोध', वैसे ही इसके द्वारा, काश मेरे पास भी 'न तो बोध है और न ही अबोध' ।" इस प्रकार यह वाक्य आया, "इसके द्वारा, काश मैं भी 55 वर्ष का हो जाऊँ।" (17)
P = मध्यवर्ती मदें, जैसा कि पहले बताया गया है।
और यह कैसे है, "इसके माध्यम से, काश मैं कुछ और होता 55? [400] किसी दूसरे व्यक्ति की (स्वयं से) तुलना करते हुए, "जैसे वह शासक बन सकता है, इसके माध्यम से, काश मैं उसी तरह शासक न बनूँ" या "जैसे वह ब्राह्मण बन सकता है, इसके माध्यम से, काश मैं उसी तरह ब्राह्मण न बनूँ 55 या :P: "जैसे उसके पास 'न तो बोध है और न ही अबोध 5, इसके माध्यम से, काश मेरे पास 'न तो बोध है और न ही अबोध 5 उसी तरह न हो 55। इस प्रकार यह है, "इसके माध्यम से, काश मैं कुछ और होता"। (18)
ये बाह्य (समूहों) के संबंध में लालसा की अठारह घटनाएं हैं।
इस प्रकार आंतरिक (समूहों) से संबंधित लालसा की ये अठारह घटनाएँ; बाह्य (समूहों) से संबंधित लालसा की ये अठारह घटनाएँ; इन सबको मिलाकर संक्षेप में लालसा की छत्तीस घटनाएँ होती हैं। इसी प्रकार अतीत में लालसा की छत्तीस घटनाएँ; भविष्य में लालसा की छत्तीस घटनाएँ; वर्तमान में लालसा की छत्तीस घटनाएँ; इन सबको मिलाकर संक्षेप में लालसा की एक सौ आठ घटनाएँ होती हैं।

977. उसमें वे 'बासठ गलत विचार' क्या हैं जिनका उल्लेख भगवान ने ब्रह्मजाल व्याख्या में किया है?
चार शाश्वतवादी सिद्धांत; चार आंशिक शाश्वतवादी सिद्धांत; चार परिमित और अनंत सिद्धांत; चार ईल-रेंगने वाले सिद्धांत; दो सिद्धांत (बिना कारण के घटित होने वाली घटनाओं के); सोलह सिद्धांत बोध होने के; आठ सिद्धांत अबोध होने के; आठ सिद्धांत 'न बोध न अबोध' होने के; सात सिद्धांत विनाशवादी; पाँच सिद्धांत वर्तमान अस्तित्व में निर्वाण होने के। ये बासठ गलत धारणाएँ हैं जिनका उल्लेख भगवान ने ब्रह्मजाल व्याख्या में किया है।
छोटी वस्तुओं का विश्लेषण समाप्त हो गया है।

18. शिक्षण के मूल तत्व का विश्लेषण

1. सभी (राज्यों) को शामिल करने वाला अनुभाग

978. [401] कितने समुच्चय; कितने आधार; कितने तत्व; कितने सत्य; कितनी नियंत्रण शक्तियाँ; कितने मूल; कितने पोषक तत्व; कितने (प्रकार के) संपर्क; कितने (प्रकार की) भावनाएँ; कितने (प्रकार की) धारणाएँ; कितने (प्रकार की) इच्छाशक्ति; कितने (प्रकार की) चेतना?

पांच समुच्चय; बारह आधार; अठारह तत्व; चार सत्य; बाईस नियंत्रक क्षमताएँ; नौ मूल; चार पोषक तत्व; सात प्रकार के संपर्क; सात प्रकार की भावनाएँ; सात प्रकार की बोधगम्यताएँ; सात प्रकार की इच्छाशक्ति; सात प्रकार की चेतना।

979. उसमें पाँच समुच्चय क्या हैं? भौतिक गुणों का समुच्चय, भावनाओं का समुच्चय, बोध का समुच्चय, मानसिक सहवर्ती भावों का समुच्चय, चेतना का समुच्चय। इन्हें पाँच समुच्चय कहा जाता है। (1)

980. इसमें बारह आधार क्या हैं? आँख का आधार, दृश्य आधार, कान का आधार, श्रव्य आधार, नाक का आधार, गंध का आधार, जीभ का आधार, स्वाद का आधार, शरीर का आधार, स्पर्श का आधार, मन का आधार, वैचारिक आधार। इन्हें बारह आधार कहा जाता है। (2)

981. उसमें अठारह तत्व क्या हैं? आँख तत्व, दृश्य तत्व, आँख-चेतना तत्व, कान तत्व, श्रव्य तत्व, कान-चेतना तत्व, [402] नाक तत्व, गंध तत्व, नाक-चेतना तत्व, जीभ तत्व, स्वाद तत्व, जीभ-चेतना तत्व, शरीर तत्व, स्पर्शनीय तत्व, शरीर-चेतना तत्व, मन तत्व, वैचारिक तत्व, मन-चेतना तत्व। इन्हें अठारह तत्व कहा जाता है। (3)

982. उसमें चार सत्य क्या हैं? दुख का सत्य।

टिपिटक >> अभिधम्म पिटक >> विभंग >> अध्याय 18 पाठ - धम्म-हदय

विभंग-गौतम बुद्ध द्वारा बोली गई विश्लेषण की पुस्तक

पाली संस्करण: पाली-अंग्रेजी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

पाली से अनुवादित यू. थित्तिला, रंगून, बर्मा, 1969 द्वारा

ओसीआर संस्करण, प्रूफरीडिंग नहीं की गई है, इसमें त्रुटियां हैं

(पाठकों को दिए गए .pdf संस्करण की सहायता से पाठ को सही करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है)

अध्याय 18 शिक्षण के मूल तत्व का विश्लेषण

(धम्म-हदया संस्कृत -हृदय)

515

982. उसमें चार सत्य क्या हैं? दुख का सत्य, कारण का सत्य, निवारण का सत्य, मार्ग का सत्य। इन्हें चार सत्य कहा जाता है। (4)

983. उसमें बाईस नियंत्रक शक्तियाँ कौन-कौन सी हैं?

आँख की नियंत्रण शक्ति, कान की नियंत्रण शक्ति, नाक की नियंत्रण शक्ति, जीभ की नियंत्रण शक्ति, शरीर की नियंत्रण शक्ति, मन की नियंत्रण शक्ति, स्त्रीत्व की नियंत्रण शक्ति, पुरुषत्व की नियंत्रण शक्ति, प्राण शक्ति, सुख (शारीरिक) की नियंत्रण शक्ति, दर्द (शारीरिक) की नियंत्रण शक्ति, मानसिक सुख की नियंत्रण शक्ति, मानसिक दर्द की नियंत्रण शक्ति, उदासीनता की नियंत्रण शक्ति, आत्मविश्वास की नियंत्रण शक्ति, ऊर्जा की नियंत्रण शक्ति, जागरूकता की नियंत्रण शक्ति, एकाग्रता की नियंत्रण शक्ति, ज्ञान की नियंत्रण शक्ति, प्रारंभिक ज्ञान की नियंत्रण शक्ति, मध्यवर्ती ज्ञान की नियंत्रण शक्ति, अंतिम ज्ञान की नियंत्रण शक्ति। इन्हें बाईस नियंत्रण शक्तियाँ कहा जाता है। (5)

984. उसमें नौ मूल क्या हैं? तीन अच्छे मूल; तीन बुरे मूल; तीन न अच्छे न बुरे मूल।

इसमें तीन अच्छे मूल क्या हैं? लोभ का अभाव, घृणा का अभाव और सुस्ती का अभाव। यही तीन अच्छे मूल हैं।

इनमें से तीन बुरी जड़ें क्या हैं? लोभ की बुरी जड़, घृणा की बुरी जड़ और सुस्ती की बुरी जड़। ये तीन बुरी जड़ें हैं।

इसमें वे तीन मूल शब्द कौन से हैं जो न अच्छे हैं न बुरे?

अच्छे गुणों की अवस्थाओं और न अच्छे न बुरे गुणों की निष्क्रिय अवस्थाओं के परिणामों में लोभ का अभाव, घृणा का अभाव और सुस्ती का अभाव। ये तीन न अच्छे न बुरे मूल गुण हैं। इन्हें नौ मूल गुण कहा जाता है। (6)

985. उसमें चार पोषक तत्व क्या हैं? भोजन का पोषक तत्व, संपर्क का पोषक तत्व, [403] इच्छाशक्ति का पोषक तत्व, चेतना का पोषक तत्व। इन्हें चार पोषक तत्व कहा जाता है। (7)
986. उसमें संपर्क के सात प्रकार क्या हैं? आँख का संपर्क, कान का संपर्क, नाक का संपर्क, जीभ का संपर्क, शरीर का संपर्क, मन तत्व का संपर्क, मन-चेतना-तत्व का संपर्क। इन्हें संपर्क के सात प्रकार कहा जाता है। (8)

516 विश्लेषण की पुस्तक

987. इसमें सात प्रकार की भावनाएँ क्या हैं? आँख के संपर्क से उत्पन्न भावना, कान के संपर्क से उत्पन्न भावना, नाक के संपर्क से उत्पन्न भावना, जीभ के संपर्क से उत्पन्न भावना, शरीर के संपर्क से उत्पन्न भावना, मन के तत्व के संपर्क से उत्पन्न भावना, मन-चेतना-तत्व के संपर्क से उत्पन्न भावना। इन्हें सात प्रकार की भावनाएँ कहा जाता है। (9)
988. इसमें सात प्रकार की धारणाएँ क्या हैं? आँख के संपर्क से उत्पन्न धारणा, कान के संपर्क से उत्पन्न धारणा, नाक के संपर्क से उत्पन्न धारणा, जीभ के संपर्क से उत्पन्न धारणा, शरीर के संपर्क से उत्पन्न धारणा, मन के तत्वों के संपर्क से उत्पन्न धारणा, मन-चेतना-तत्व के संपर्क से उत्पन्न धारणा। इन्हें सात प्रकार की धारणाएँ कहा जाता है। (10)
989. उसमें सात प्रकार की इच्छाशक्ति क्या हैं? नेत्र संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति, कान संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति, नाक संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति, जीभ संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति, शरीर संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति, मन तत्व संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति, मन-चेतना-तत्व संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति। इन्हें सात प्रकार की इच्छाशक्ति कहा जाता है। (11)
990. उसमें चेतना के सात (प्रकार) क्या हैं? आँख चेतना, कान चेतना, नाक चेतना, [404] जीभ चेतना, शरीर चेतना, मन तत्व, मन-चेतना-तत्व। इन्हें चेतना के सात (प्रकार) कहा जाता है। (12)
2. उत्पत्ति और गैर-उत्पत्ति से संबंधित अनुभाग
1. इच्छा के तल का तत्व
991. इच्छा के तत्व में कितने समुच्चय; कितने आधार; कितने तत्व; कितने सत्य; कितनी नियंत्रक शक्तियाँ; कितने मूल; कितने पोषक तत्व; कितने प्रकार के संपर्क; कितने प्रकार की भावनाएँ; कितने प्रकार की धारणाएँ; कितने प्रकार की इच्छाशक्ति; कितने प्रकार की चेतनाएँ होती हैं?
इच्छा के तत्व में पाँच समुच्चय, बारह आधार, अठारह तत्व, तीन सत्य और बाईस नियंत्रण शक्तियाँ होती हैं।

शिक्षण के मूल तत्व का विश्लेषण

517

नौ जड़ें; चार पोषक तत्व; सात प्रकार के संपर्क; सात प्रकार की भावनाएँ; सात प्रकार की धारणाएँ; सात प्रकार की इच्छाशक्ति; सात प्रकार की चेतना।
992. इच्छा तत्व में पाँच समुच्चय क्या हैं? भौतिक गुण का समुच्चय, भावना का समुच्चय, बोध का समुच्चय, मानसिक सहवर्ती का समुच्चय, चेतना का समुच्चय। इन्हें ही इच्छा तत्व के पाँच समुच्चय कहा जाता है। (1)
इच्छा के तत्व में बारह आधार क्या हैं?
आँख का आधार, दृश्य आधार, कान का आधार, श्रव्य आधार, नाक का आधार, गंध का आधार, जीभ का आधार, स्वाद का आधार, शरीर का आधार, स्पर्शनीय आधार, मन का आधार, वैचारिक आधार। इन्हें इच्छा तत्व के बारह आधार कहा जाता है। (2)
इच्छा तत्व में अठारह तत्व कौन-कौन से हैं? आँख तत्व, दृश्य तत्व, आँख-चेतना तत्व, कान तत्व, श्रव्य तत्व, कान-चेतना तत्व, नाक तत्व, गंध तत्व, नाक-चेतना तत्व, जीभ तत्व, स्वाद तत्व, जीभ-चेतना तत्व, शरीर तत्व, स्पर्शनीय तत्व, शरीर-चेतना तत्व, मन तत्व, वैचारिक तत्व, मन-चेतना तत्व। इन्हें ही इच्छा तत्व के अठारह तत्व कहा जाता है। (3)
इच्छा के तत्व में तीन सत्य क्या हैं? दुख का सत्य, कारण का सत्य, मार्ग का सत्य। इन्हें ही इच्छा के तत्व में तीन सत्य कहा जाता है। (4)
इसमें इच्छा तत्व में निहित बाईस नियंत्रक शक्तियाँ कौन-कौन सी हैं? आँख की नियंत्रक शक्ति, कान की नियंत्रक शक्ति, आदि: अंतिम ज्ञान की नियंत्रक शक्ति। इन्हें ही इच्छा तत्व में निहित बाईस नियंत्रक शक्तियाँ कहा जाता है। (5)
P = मध्यवर्ती नियंत्रण क्षमताएँ।

इच्छा तत्व में नौ मूल क्या हैं? तीन अच्छे मूल; तीन बुरे मूल; तीन न अच्छे न बुरे मूल। :P: इन्हें इच्छा तत्व के नौ मूल कहा जाता है। (6) [405]
P = अनुच्छेद 984 देखें।
इच्छा के तत्व में कौन-कौन से चार पोषक तत्व होते हैं?
भोजन का पोषक तत्व, संपर्क का पोषक तत्व, का पोषक तत्व

518

विश्लेषण की पुस्तक

इच्छाशक्ति, चेतना का पोषक तत्व। इन्हें इच्छा के तत्व में चार पोषक तत्व कहा जाता है। (7)
इच्छा तत्व में संपर्क के सात प्रकार क्या हैं? नेत्र संपर्क, कान संपर्क, नाक संपर्क, जीभ संपर्क, शारीरिक संपर्क, मन तत्व संपर्क, मन-चेतना-तत्व संपर्क। इन्हें इच्छा तत्व में संपर्क के सात प्रकार कहा जाता है। (8)
इच्छा तत्व में सात प्रकार की भावनाएँ क्या हैं? आँख के संपर्क से उत्पन्न भावना, कान के संपर्क से उत्पन्न भावना, नाक के संपर्क से उत्पन्न भावना, जीभ के संपर्क से उत्पन्न भावना, शरीर के संपर्क से उत्पन्न भावना, मन तत्व के संपर्क से उत्पन्न भावना, मन-चेतना तत्व के संपर्क से उत्पन्न भावना। इन्हें इच्छा तत्व में सात प्रकार की भावनाएँ कहा जाता है। (9)
इच्छा तत्व में सात प्रकार की धारणाएँ क्या हैं? आँख के संपर्क से उत्पन्न धारणा, कान के संपर्क से उत्पन्न धारणा, नाक के संपर्क से उत्पन्न धारणा, जीभ के संपर्क से उत्पन्न धारणा, शरीर के संपर्क से उत्पन्न धारणा, मन तत्व के संपर्क से उत्पन्न धारणा, मन-चेतना तत्व के संपर्क से उत्पन्न धारणा। इन्हें इच्छा तत्व में सात प्रकार की धारणाएँ कहा जाता है। (10)
इच्छा तत्व में सात प्रकार की इच्छाशक्ति क्या हैं? नेत्र संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति, कान संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति, नाक संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति, जीभ संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति, शरीर संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति, मन तत्व संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति, मन-चेतना तत्व संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति। इन्हें इच्छा तत्व में सात प्रकार की इच्छाशक्ति कहा जाता है। (11)
उसमें चेतना के सात प्रकार क्या हैं?
इच्छा के तत्व? आँख चेतना, कान चेतना, नाक चेतना, जीभ चेतना, शरीर चेतना, मन तत्व, मन-चेतना-तत्व। इन्हें इच्छा के तत्व में सात प्रकार की चेतना कहा जाता है। (12)
2. आकार के (तल के) तत्व
993. रूप के तत्व में कितने समुच्चय; कितने आधार; कितने तत्व; कितने सत्य; कितनी नियंत्रक शक्तियाँ; :P: चेतना के कितने (प्रकार) हैं?

P = पैरा 991 देखें।

शिक्षण के मूल तत्व का विश्लेषण

519

रूप के तत्व में पाँच समुच्चय; छह आधार; नौ तत्व; तीन सत्य; चौदह नियंत्रक क्षमताएँ; आठ मूल; तीन पोषक तत्व; चार प्रकार के संपर्क; चार प्रकार की भावनाएँ; चार प्रकार की धारणाएँ; चार प्रकार की इच्छाशक्ति; चार प्रकार की चेतना शामिल हैं।

994. रूप तत्व में पाँच समुच्चय क्या हैं? भौतिक गुण का समुच्चय, भावना का समुच्चय, बोध का समुच्चय, मानसिक सहवर्ती का समुच्चय, चेतना का समुच्चय। इन्हें रूप तत्व में पाँच समुच्चय कहा जाता है। (1)
रूप तत्व में छह आधार क्या हैं? आँख

आधार, दृश्य आधार, कान आधार, श्रव्य आधार, मन आधार, वैचारिक आधार। इन्हें रूप तत्व के छह आधार कहा जाता है। (2) इसमें रूप तत्व के नौ तत्व क्या हैं? नेत्र तत्व, दृश्य तत्व, नेत्र-चेतना तत्व, कान तत्व, श्रव्य तत्व, कान-चेतना तत्व, मन तत्व, वैचारिक तत्व, मन-चेतना तत्व। इन्हें रूप तत्व के नौ तत्व कहा जाता है। (3)
रूप तत्व में तीन सत्य क्या हैं? दुख का सत्य, कारण का सत्य, मार्ग का सत्य। इन्हें रूप तत्व के तीन सत्य कहा जाता है। (4) रूप तत्व में चौदह नियंत्रक शक्तियाँ क्या हैं? आँख की नियंत्रक शक्ति, कान की नियंत्रक शक्ति, मन की नियंत्रक शक्ति, प्राण शक्ति, [406] मानसिक सुख की नियंत्रक शक्ति, उदासीनता की नियंत्रक शक्ति, विश्वास की नियंत्रक शक्ति, ऊर्जा की नियंत्रक शक्ति, जागरूकता की नियंत्रक शक्ति, एकाग्रता की नियंत्रक शक्ति, ज्ञान की नियंत्रक शक्ति, प्रारंभिक ज्ञान की नियंत्रक शक्ति, मध्यवर्ती ज्ञान की नियंत्रक शक्ति, अंतिम ज्ञान की नियंत्रक शक्ति। इन्हें रूप तत्व की चौदह नियंत्रक शक्तियाँ कहा जाता है। (5)
इसमें रूप तत्व के आठ मूल कौन से हैं?
तीन अच्छे मूल; दो बुरे मूल; तीन ऐसे मूल जो न अच्छे हैं न बुरे।
इसमें तीन अच्छे मूल क्या हैं? लोभ का अभाव, घृणा का अभाव और सुस्ती का अभाव। यही तीन अच्छे मूल हैं।

इसमें दो बुरी जड़ें कौन सी हैं? लोभ की बुरी जड़, सुस्ती की बुरी जड़। यही दो बुरी जड़ें हैं।
इसमें वे तीन मूल तत्व कौन से हैं जो न अच्छे हैं न बुरे? अच्छे अवस्थाओं के परिणामों में और निष्क्रिय न अच्छे न बुरे अवस्थाओं में लोभ का अभाव, घृणा का अभाव और सुस्ती का अभाव। ये तीन मूल तत्व हैं जो न अच्छे हैं न बुरे। इन्हें रूप तत्व में आठ मूल तत्व कहा जाता है। (6)
उसमें रूप तत्व के तीन पोषक तत्व क्या हैं? संपर्क का पोषक तत्व, इच्छाशक्ति का पोषक तत्व, चेतना का पोषक तत्व। इन्हें रूप तत्व के तीन पोषक तत्व कहा जाता है। (7)
उसमें रूप तत्व में संपर्क के चार प्रकार क्या हैं? नेत्र संपर्क, कान संपर्क, मन तत्व संपर्क, मन-चेतना-तत्व संपर्क। इन्हें रूप तत्व में संपर्क के चार प्रकार कहा जाता है। (8)
उसमें चार प्रकार की भावनाएँ, चार प्रकार की धारणाएँ, चार प्रकार की इच्छाशक्ति और चार प्रकार की चेतनाएँ क्या हैं? आँख की चेतना, कान की चेतना, मन तत्व और मन-चेतना तत्व। इन्हें ही रूप तत्व में चार प्रकार की चेतनाएँ कहा जाता है। (12)
P = पैराग्राफ 987, 988, 989 के अनुसार उचित रूप से पूरा करें।
3. (रूपहीन तत्व का तल)
995. निराकार तत्व में कितने समूह हैं; :P: चेतना के कितने प्रकार हैं?
P = पैरा 991 देखें।
निराकार तत्व में चार समुच्चय; दो आधार; दो तत्व; तीन सत्य; ग्यारह नियंत्रक शक्तियाँ; आठ मूल; तीन पोषक तत्व; एक (प्रकार का) संपर्क; एक (प्रकार का) भाव; एक (प्रकार का) बोध; एक (प्रकार का) संकल्प; एक (प्रकार का) चेतना होती है। [407]
996. निराकार तत्व में वे चार समूह कौन से हैं? संवेदना का समूह, बोध का समूह, मानसिक सहवर्ती का समूह, चेतना का समूह। इन्हें निराकार तल में चार समूह कहा जाता है। (1)
उस निराकार तत्व में दो आधार क्या हैं?

मन का आधार, वैचारिक आधार। इन्हें निराकार तत्व में दो आधार कहा जाता है। (2)
उस निराकार तत्व में वे दो तत्व कौन से हैं?

मन-चेतना-तत्व, वैचारिक तत्व। इन्हें निराकार तत्व के दो तत्व कहा जाता है। (3)
उसमें निराकार तत्व में तीन सत्य क्या हैं? दुख का सत्य, कारण का सत्य, मार्ग का सत्य। इन्हें निराकार तत्व के तीन सत्य कहा जाता है। (4) उसमें निराकार तत्व में ग्यारह नियंत्रक शक्तियाँ क्या हैं? मन की नियंत्रक शक्ति, प्राण की नियंत्रक शक्ति, मानसिक सुख की नियंत्रक शक्ति, उदासीनता की नियंत्रक शक्ति, विश्वास की नियंत्रक शक्ति, ऊर्जा की नियंत्रक शक्ति, जागरूकता की नियंत्रक शक्ति, एकाग्रता की नियंत्रक शक्ति, ज्ञान की नियंत्रक शक्ति, मध्यवर्ती ज्ञान की नियंत्रक शक्ति, अंतिम ज्ञान की नियंत्रक शक्ति। इन्हें निराकार तत्व की ग्यारह नियंत्रक शक्तियाँ कहा जाता है। (5)
उसमें निराकार तत्व के आठ मूल क्या हैं? तीन अच्छे मूल; दो बुरे मूल; तीन न अच्छे न बुरे मूल। : P : इन्हें निराकार तत्व के आठ मूल कहा जाता है। (6) P = पैरा 994 देखें।
उसमें निराकार तत्व के तीन पोषक तत्व क्या हैं? संपर्क का पोषक तत्व, इच्छाशक्ति का पोषक तत्व, चेतना का पोषक तत्व। इन्हें निराकार तत्व के तीन पोषक तत्व कहा जाता है। (7)
उसमें निराकार तत्व में एक (प्रकार का) संपर्क क्या है? मन-चेतना-तत्व संपर्क। इसे ही निराकार तत्व में एक (प्रकार का) संपर्क कहा जाता है। (8)
उसमें एक (प्रकार की) भावना, एक (प्रकार की) धारणा, एक (प्रकार की) इच्छाशक्ति, एक (प्रकार की) चेतना क्या है जो निराकार तत्व में विद्यमान है? मन-चेतना-तत्व। इसे ही निराकार तत्व में एक (प्रकार की) चेतना कहा जाता है। (12)
P = पैरा 992 के अनुसार उचित रूप से पूरा करें।
4. (राज्य) सांसारिक में शामिल नहीं हैं
997. '(राज्यों) में शामिल नहीं', कितने समुच्चय; :P: चेतना के कितने (प्रकार) हैं?
P = पैरा 991 देखें।

522

विश्लेषण की पुस्तक

'(अवस्थाओं) में शामिल नहीं हैं* चार समुच्चय; दो आधार; दो तत्व; दो सत्य; बारह नियंत्रक क्षमताएँ; छह मूल; तीन पोषक तत्व; [408] एक (प्रकार का) संपर्क; एक (प्रकार की) भावना; एक (प्रकार की) धारणा; एक (प्रकार की) इच्छाशक्ति; एक (प्रकार की) चेतना।
998. उसमें (अवस्थाओं में) जो शामिल नहीं हैं* वे चार समुच्चय क्या हैं? भावना का समुच्चय, बोध का समुच्चय, मानसिक सहवर्ती का समुच्चय, चेतना का समुच्चय। ये (अवस्थाओं में) जो शामिल नहीं हैं* उन्हें चार समुच्चय कहा जाता है। (1) उसमें (अवस्थाओं में) जो शामिल नहीं हैं* वे दो आधार क्या हैं? मन का आधार, वैचारिक आधार। ये (अवस्थाओं में) जो शामिल नहीं हैं* उन्हें दो आधार कहा जाता है। (2)
उसमें '(अवस्थाओं) में शामिल नहीं* दो तत्व क्या हैं? मन-चेतना-तत्व, वैचारिक तत्व। इन्हें '(अवस्थाओं) में शामिल नहीं' दो तत्व कहा जाता है। (3)
उसमें उन (अवस्थाओं) में, जिनमें शामिल नहीं हैं, दो सत्य क्या हैं? मार्ग का सत्य, निश्चिंतता का सत्य। इनमें से, जिनमें शामिल नहीं हैं, दो सत्य कहलाते हैं। (4)
उसमें '(अवस्थाओं) में शामिल नहीं' बारह नियंत्रक शक्तियाँ कौन सी हैं? मन की नियंत्रक शक्ति, प्राणिक शक्ति की नियंत्रक शक्ति, मानसिक सुख की नियंत्रक शक्ति, उदासीनता की नियंत्रक शक्ति, विश्वास की नियंत्रक शक्ति, ऊर्जा की नियंत्रक शक्ति, जागरूकता की नियंत्रक शक्ति, एकाग्रता की नियंत्रक शक्ति, ज्ञान की नियंत्रक शक्ति, प्रारंभिक ज्ञान की नियंत्रक शक्ति, मध्यवर्ती ज्ञान की नियंत्रक शक्ति, अंतिम ज्ञान की नियंत्रक शक्ति। ये '(अवस्थाओं) में शामिल नहीं' बारह नियंत्रक शक्तियाँ कहलाती हैं। (5)
उसमें '(राज्यों) में शामिल नहीं* छह मूल कौन से हैं? तीन अच्छे मूल, तीन न अच्छे न बुरे मूल।
इसमें तीन अच्छे मूल क्या हैं? लोभ का अभाव, घृणा का अभाव और सुस्ती का अभाव। यही तीन अच्छे मूल हैं।

उसमें वे तीन मूल तत्व कौन से हैं जो न अच्छे हैं न बुरे? अच्छे गुणों के फलस्वरूप लोभ का अभाव, घृणा का अभाव और सुस्ती का अभाव। ये तीन मूल तत्व हैं जो न अच्छे हैं न बुरे। इनमें से जो '(अवस्थाओं) में शामिल नहीं हैं, उन्हें छह मूल तत्व कहा जाता है। (6) उसमें से जो '(अवस्थाओं) में शामिल नहीं हैं, उनमें तीन पोषक तत्व कौन से हैं? संपर्क का पोषक तत्व, इच्छाशक्ति का पोषक तत्व,

चेतना का पोषक तत्व। ये (अवस्थाएँ) जो शामिल नहीं हैं, उन्हें तीन पोषक तत्व कहा जाता है। (7)
उसमें '(अवस्थाओं) में शामिल नहीं' में एक (प्रकार का) संपर्क क्या है? मन-चेतना-तत्व संपर्क। '(अवस्थाओं) में शामिल नहीं' में इसे ही एक (प्रकार का) संपर्क कहा जाता है। (8)
उसमें '(अवस्थाओं) में शामिल नहीं' 9 में एक (प्रकार की) भावना क्या है, :P: एक (प्रकार की) धारणा क्या है, :P: एक (प्रकार की) इच्छाशक्ति क्या है, :P: एक (प्रकार की) चेतना क्या है? [409] मन- चेतना-तत्व। '(अवस्थाओं) में शामिल नहीं' में इसे एक (प्रकार की) चेतना कहा जाता है। (12)
P = पैरा 992 के अनुसार उचित रूप से पूरा करें।

3. शामिल और गैर-शामिल राज्यों से संबंधित अनुभाग
1. इच्छा के तल का तत्व
999. पाँच स्कंधों में से कितने इच्छा तत्व में शामिल हैं; कितने इच्छा तत्व में शामिल नहीं हैं? :P: चेतना के सात प्रकारों में से कितने इच्छा तत्व में शामिल हैं; कितने इच्छा तत्व में शामिल नहीं हैं?
पी — पैराग्राफ 991 देखें।
1000. भौतिक गुणों का समुच्चय इच्छा के तत्व में समाहित है। चार समुच्चय कभी-कभी इच्छा के तत्व में समाहित होते हैं; कभी-कभी नहीं होते।
इच्छा के तत्व में दस आधार शामिल हैं। कभी-कभी दो आधार इच्छा के तत्व में शामिल होते हैं; कभी-कभी नहीं होते हैं।
इच्छा के तत्व में सोलह तत्व शामिल हैं। कभी-कभी दो तत्व इच्छा के तत्व में शामिल होते हैं; कभी-कभी दो तत्व इच्छा के तत्व में शामिल नहीं होते हैं।
कारण का सत्य इच्छा के तत्व में समाहित है। दो सत्य इच्छा के तत्व में समाहित नहीं हैं। दुख का सत्य कभी-कभी इच्छा के तत्व में समाहित होता है; कभी-कभी नहीं होता।
इच्छा के तत्व में दस नियंत्रक शक्तियाँ शामिल हैं। तीन नियंत्रक शक्तियाँ इच्छा के तत्व में शामिल नहीं हैं। नौ नियंत्रक शक्तियाँ कभी-कभी इच्छा के तत्व में शामिल होती हैं।

इच्छा का तत्व; कभी-कभी इच्छा के तत्व में शामिल नहीं होते हैं।
इच्छा तत्व में तीन अशुभ मूल तत्व शामिल हैं। कभी-कभी छह मूल तत्व इच्छा तत्व में शामिल होते हैं; कभी-कभी नहीं होते।
भोजन का पोषक तत्व इच्छा के तत्व में शामिल होता है। कभी-कभी तीन पोषक तत्व इच्छा के तत्व में शामिल होते हैं; कभी-कभी नहीं होते।
इच्छा के तत्व में छह प्रकार के संपर्क शामिल हैं। मन-चेतना-तत्व का संपर्क कभी-कभी इच्छा के तत्व में शामिल होता है; कभी-कभी नहीं होता है।
इच्छा के तत्व में छह प्रकार की भावनाएँ, छह प्रकार की धारणाएँ, छह प्रकार की इच्छाशक्ति और छह प्रकार की चेतना शामिल हैं। कभी-कभी मन-चेतना का तत्व इच्छा के तत्व में शामिल होता है, कभी-कभी नहीं होता।
P = पैरा 992 के अनुसार उचित रूप से पूरा करें।

2. आकार के (तल के) तत्व

1001. पाँच स्कंधों में से कितने रूप तत्व में समाहित हैं; कितने रूप तत्व में समाहित नहीं हैं? :P: चेतना के सात प्रकारों में से कितने रूप तत्व में समाहित हैं; कितने रूप तत्व में समाहित नहीं हैं?

P = पैरा 991 देखें।

1002. भौतिक गुणवत्ता का समुच्चय रूप के तत्व में शामिल नहीं है*। चार [410] समुच्चय कभी-कभी रूप के तत्व में शामिल होते हैं; कभी-कभी रूप के तत्व में शामिल नहीं होते हैं।

दस आधार रूप तत्व में शामिल नहीं होते हैं। दो आधार कभी-कभी रूप तत्व में शामिल होते हैं; कभी-कभी नहीं होते हैं।

रूप तत्व में सोलह तत्व शामिल नहीं हैं। दो तत्व कभी-कभी रूप तत्व में शामिल होते हैं; कभी-कभी रूप तत्व में शामिल नहीं होते हैं।

तीन सत्य रूप के तत्व में शामिल नहीं हैं। सत्य

पीड़ा का तत्व कभी-कभी रूप के तत्व में शामिल होता है; कभी-कभी रूप के तत्व में शामिल नहीं होता है।

तेरह नियंत्रक शक्तियाँ रूप तत्व में शामिल नहीं हैं। नौ नियंत्रक शक्तियाँ कभी-कभी रूप तत्व में शामिल होती हैं; कभी-कभी शामिल नहीं होती हैं।

तीन अपवित्र मूलों को रूप तत्व में शामिल नहीं किया जाता है। छह मूलों को कभी-कभी रूप तत्व में शामिल किया जाता है; कभी-कभी नहीं किया जाता है।

भोजन का पोषक तत्व, रूप तत्व में शामिल नहीं होता है। तीन पोषक तत्व कभी-कभी रूप तत्व में शामिल होते हैं; कभी-कभी नहीं होते हैं।

रूप तत्व में छह प्रकार के संपर्क शामिल नहीं हैं। मन-चेतना-तत्व संपर्क कभी-कभी रूप तत्व में शामिल होता है; कभी-कभी नहीं होता है।

छह प्रकार की भावनाएँ, छह प्रकार की धारणाएँ, छह प्रकार की इच्छाशक्ति और छह प्रकार की चेतना, ये सभी रूप तत्व में शामिल नहीं हैं। मन-चेतना तत्व कभी-कभी रूप तत्व में शामिल होता है, कभी-कभी नहीं होता।

P = पैरा 992 के अनुसार उचित रूप से पूरा करें।

इस संदर्भ में "शामिल" (परियपन्ना) का अर्थ केवल वे गुण हैं

जो संबंधित तल की विशिष्ट विशेषताएँ हैं, उनसे भिन्न जो उसमें उत्पन्न हो सकती हैं। उदाहरण के लिए, यद्यपि (पैरा 994) भौतिक गुणों का समूह रूप तल में उत्पन्न होता है, फिर भी वे विशिष्ट मानसिक अवस्थाएँ ही उसकी विशिष्ट विशेषताएँ हैं जिनके द्वारा उस तल को परिभाषित किया जाता है। अतः भौतिक गुणों के समूह को (पैरा 1002) उसमें "शामिल" नहीं कहा जा सकता।

3. (रूपहीन तत्व का तल)

1003. पाँच स्कंधों में से कितने निराकार तत्व में समाहित हैं; कितने निराकार तत्व में समाहित नहीं हैं? :P: सात प्रकार की चेतनाओं में से कितनी निराकार तत्व में समाहित हैं; कितनी निराकार तत्व में समाहित नहीं हैं?

P = पैरा 991 देखें।

1004. भौतिक गुणों का समुच्चय निराकार तत्व में शामिल नहीं है। चार समुच्चय कभी-कभी निराकार तत्व में शामिल होते हैं; कभी-कभी निराकार तत्व में शामिल नहीं होते।

निराकार तत्व में दस आधार शामिल नहीं होते हैं। कभी-कभी दो आधार निराकार तत्व में शामिल होते हैं; कभी-कभी नहीं होते हैं।
सोलह तत्व निराकार तत्व में शामिल नहीं हैं। दो तत्व कभी-कभी निराकार तत्व में शामिल होते हैं; कभी-कभी निराकार तत्व में शामिल नहीं होते हैं।
तीन सत्य निराकार तत्व में समाहित नहीं हैं। दुख का सत्य कभी-कभी निराकार तत्व में समाहित होता है; कभी-कभी नहीं होता।
चौदह नियंत्रक शक्तियाँ निराकार तत्व में शामिल नहीं हैं। आठ नियंत्रक शक्तियाँ [411] कभी-कभी निराकार तत्व में शामिल होती हैं; कभी-कभी निराकार तत्व में शामिल नहीं होती हैं।
तीन असंपूर्ण मूलों को निराकार तत्व में शामिल नहीं किया जाता है। छह मूलों को कभी-कभी निराकार तत्व में शामिल किया जाता है; कभी-कभी नहीं किया जाता है।
भोजन का पोषक तत्व निराकार तत्व में शामिल नहीं होता है। तीन पोषक तत्व कभी-कभी निराकार तत्व में शामिल होते हैं; कभी-कभी नहीं होते हैं।
छह प्रकार के संपर्क निराकार तत्व में शामिल नहीं हैं। मन-चेतना-तत्व का संपर्क कभी-कभी निराकार तत्व में शामिल होता है; कभी-कभी नहीं होता।
छह प्रकार की भावनाएँ, छह प्रकार की धारणाएँ, छह प्रकार की इच्छाशक्ति और छह प्रकार की चेतना निराकार तत्व में शामिल नहीं हैं। मन-चेतना तत्व कभी-कभी निराकार तत्व में शामिल होता है; कभी-कभी नहीं होता।
P = पैरा 992 के अनुसार उचित रूप से पूरा करें। J
4. (राज्यों) को सांसारिक जीवन में शामिल किया गया है और नहीं किया गया है।
1005. पाँच स्कंधों में से कितने शामिल हैं; कितने शामिल नहीं हैं? :P: चेतना के सात प्रकारों में से कितने शामिल हैं; कितने शामिल नहीं हैं?
P = पैरा 991 देखें।
1006. सामग्री की गुणवत्ता का कुल योग शामिल है। चार योग कभी-कभी शामिल होते हैं; कभी-कभी शामिल नहीं होते।

शिक्षण के मूल तत्व का विश्लेषण

527

इसमें दस बेस शामिल हैं। कभी-कभी दो बेस शामिल होते हैं; कभी-कभी नहीं होते।
इसमें सोलह तत्व शामिल हैं। कभी-कभी दो तत्व शामिल होते हैं; कभी-कभी शामिल नहीं होते।
दो सत्य शामिल हैं। दो सत्य शामिल नहीं हैं।
दस नियंत्रक संकाय शामिल हैं। तीन नियंत्रक संकाय शामिल नहीं हैं। नौ नियंत्रक संकाय कभी-कभी शामिल होते हैं; कभी-कभी शामिल नहीं होते।
तीन गलत मूल शामिल हैं। कभी-कभी छह मूल शामिल होते हैं; कभी-कभी शामिल नहीं होते।
भोजन के पोषक तत्व कारक को शामिल किया गया है। कभी-कभी तीन पोषक तत्व शामिल होते हैं; कभी-कभी शामिल नहीं होते हैं।
इसमें छह प्रकार के संपर्क शामिल हैं। मन-चेतना-तत्व संपर्क कभी-कभी शामिल होता है; कभी-कभी शामिल नहीं होता है।
इसमें छह प्रकार की भावनाएँ, छह प्रकार की धारणाएँ, छह प्रकार की इच्छाशक्ति और छह प्रकार की चेतनाएँ शामिल हैं। मन-चेतना तत्व कभी शामिल होता है, कभी नहीं।
P = पैरा 992 के अनुसार उचित रूप से पूरा करें।

4. राज्यों को दर्शाने वाला अनुभाग
1. इच्छा के तल का तत्व
1007. इच्छा के तत्व में गर्भाधान के क्षण में कितने समूह प्रकट होते हैं; :P: चेतना के कितने प्रकार प्रकट होते हैं?
P = पैरा 991 देखें।

गर्भाधान के समय, इच्छा तत्व में सभी प्राणियों में पाँचों तत्व प्रकट होते हैं। [412] कुछ में ग्यारह आधार प्रकट होते हैं; कुछ में दस आधार प्रकट होते हैं; कुछ में दस और आधार प्रकट होते हैं; कुछ में नौ आधार प्रकट होते हैं; कुछ में सात आधार प्रकट होते हैं; कुछ में ग्यारह तत्व प्रकट होते हैं; कुछ में दस तत्व प्रकट होते हैं; कुछ में दस और तत्व प्रकट होते हैं; कुछ में नौ तत्व प्रकट होते हैं; कुछ में सात तत्व प्रकट होते हैं। सभी प्राणियों में एक सत्य प्रकट होता है। कुछ में चौदह नियंत्रण शक्तियाँ प्रकट होती हैं; कुछ में तेरह नियंत्रण शक्तियाँ प्रकट होती हैं; कुछ में तेरह और नियंत्रण शक्तियाँ प्रकट होती हैं।

528

विश्लेषण की पुस्तक

नियंत्रण करने की क्षमताएँ स्पष्ट हैं; कुछ में बारह नियंत्रण करने की क्षमताएँ स्पष्ट हैं; कुछ में दस नियंत्रण करने की क्षमताएँ स्पष्ट हैं; कुछ में नौ नियंत्रण करने की क्षमताएँ स्पष्ट हैं; कुछ में नौ और नियंत्रण करने की क्षमताएँ स्पष्ट हैं; कुछ में आठ नियंत्रण करने की क्षमताएँ स्पष्ट हैं; कुछ में आठ और नियंत्रण करने की क्षमताएँ स्पष्ट हैं; कुछ में सात नियंत्रण करने की क्षमताएँ स्पष्ट हैं; कुछ में पाँच नियंत्रण करने की क्षमताएँ स्पष्ट हैं; कुछ में चार नियंत्रण करने की क्षमताएँ स्पष्ट हैं। कुछ में तीन मूल स्पष्ट हैं; कुछ में दो मूल स्पष्ट हैं; कुछ में कोई मूल स्पष्ट नहीं है। सभी प्राणियों में चार पोषक तत्व स्पष्ट हैं। सभी प्राणियों में एक प्रकार का संपर्क स्पष्ट है। सभी प्राणियों में एक प्रकार की भावना; एक प्रकार की धारणा; एक प्रकार की इच्छाशक्ति; एक प्रकार की चेतना स्पष्ट है।
1008. गर्भाधान के समय, इच्छा तत्व में, सभी (प्राणियों) में कौन से पाँच समुच्चय प्रकट होते हैं? भौतिक गुण का समुच्चय; चेतना का समुच्चय। गर्भाधान के समय, इच्छा तत्व में, ये पाँच समुच्चय सभी (प्राणियों) में प्रकट होते हैं। (1)
P = मध्यवर्ती समुच्चय।
1009. गर्भाधान के समय, इच्छा तत्व में, किनमें ग्यारह आधार प्रकट होते हैं? इच्छा लोक के देवताओं में; विश्व चक्र में प्रथम मनुष्य में; स्वतः उत्पन्न प्रेतों में; स्वतः उत्पन्न असुरों में; स्वतः उत्पन्न पशुओं में; नरक में रहने वालों में; गर्भाधान के समय सभी आधारों वाले प्राणियों में ग्यारह आधार प्रकट होते हैं, (अर्थात्) नेत्र आधार, दृश्य आधार, कान आधार, नाक आधार, गंध आधार, जीभ आधार, स्वाद आधार, शरीर आधार, स्पर्श आधार, मन आधार, वैचारिक आधार। गर्भाधान के समय, इच्छा तत्व में, इन (प्राणियों) में ये ग्यारह आधार प्रकट होते हैं।
गर्भाधान के समय, इच्छा तत्व में, किनमें दस आधार प्रकट होते हैं? स्वतः उत्पन्न प्रेतों में; स्वतः उत्पन्न असुरों में; स्वतः उत्पन्न पशुओं में; नरक में रहने वालों में; जन्म से अंधे लोगों में गर्भाधान के समय दस आधार प्रकट होते हैं, (अर्थात्) दृश्य आधार, कान आधार, नाक आधार, गंध आधार, जीभ आधार, [413] स्वाद आधार, शरीर आधार, स्पर्श आधार, मन आधार, वैचारिक आधार। गर्भाधान के समय, इच्छा तत्व में, इन (प्राणियों) में ये दस आधार प्रकट होते हैं।

शिक्षण के मूल तत्व का विश्लेषण

529

गर्भाधान के समय, इच्छा तत्व में, किनमें अन्य दस आधार प्रकट होते हैं? स्वतः उत्पन्न भूतों में; स्वतः उत्पन्न असुरों में; स्वतः उत्पन्न पशुओं में; नरक में रहने वालों में; जन्म से बहरे लोगों में गर्भाधान के समय दस आधार प्रकट होते हैं, (अर्थात्) नेत्र आधार, दृश्य आधार, नाक आधार, गंध आधार, जीभ आधार, स्वाद आधार, शरीर आधार, स्पर्श आधार, मन आधार, वैचारिक आधार। गर्भाधान के समय, इच्छा तत्व में, इन (प्राणियों) में ये दस आधार प्रकट होते हैं।
गर्भाधान के समय, इच्छा तत्व में, किन प्राणियों में नौ आधार प्रकट होते हैं? स्वतः उत्पन्न प्रेतों में; स्वतः उत्पन्न असुरों में; स्वतः उत्पन्न पशुओं में; नरक में रहने वालों में; जन्म से अंधे और बहरे प्राणियों में गर्भाधान के समय नौ आधार प्रकट होते हैं, (अर्थात्) दृश्य आधार, नाक आधार, गंध आधार, जीभ आधार, स्वाद आधार, शरीर आधार, स्पर्श आधार, मन आधार, वैचारिक आधार। गर्भाधान के समय, इच्छा तत्व में, इन प्राणियों में ये नौ आधार प्रकट होते हैं।

गर्भाधान के समय, इच्छा तत्व में, किनमें सात आधार प्रकट होते हैं? गर्भ में पल रहे प्राणियों में, गर्भाधान के समय सात आधार प्रकट होते हैं, (अर्थात्) दृश्य आधार, गंध आधार, स्वाद आधार, शरीर आधार, स्पर्श आधार, मन आधार, वैचारिक आधार। गर्भाधान के समय, इच्छा तत्व में, ये सात आधार इन (प्राणियों) में प्रकट होते हैं। (2)

1010. गर्भाधान के समय, इच्छा तत्व में, किन प्राणियों में ग्यारह तत्व प्रकट होते हैं? इच्छा लोक के देवताओं में; विश्व चक्र में प्रथम स्थान पर रहने वाले मनुष्यों में; स्वतः उत्पन्न प्रेतों में; स्वतः उत्पन्न असुरों में; स्वतः उत्पन्न पशुओं में; नरक में रहने वालों में; गर्भाधान के समय सभी आधारों वाले प्राणियों में ग्यारह तत्व प्रकट होते हैं, (अर्थात्) नेत्र तत्व, दृश्य तत्व, कान तत्व, नाक तत्व, गंध तत्व, जीभ तत्व, स्वाद तत्व, शरीर तत्व, स्पर्श तत्व, मन-चेतना तत्व, विचार तत्व। गर्भाधान के समय, इच्छा तत्व में, इन (प्राणियों) में ये ग्यारह तत्व प्रकट होते हैं।

गर्भाधान के समय, इच्छा तत्व में, किनमें दस तत्व प्रकट होते हैं? स्वतः उत्पन्न भूतों में; स्वतः उत्पन्न असुरों में; [414] स्वतः उत्पन्न पशुओं में; नरक में रहने वालों में; जन्म से अंधे लोगों में। गर्भाधान के समय दस तत्व प्रकट होते हैं, (अर्थात्) दृश्य तत्व, कान तत्व, नाक तत्व, गंध तत्व, जीभ तत्व, स्वाद तत्व।

तत्व, देह तत्व, मूर्त तत्व, मन-चेतना तत्व, वैचारिक तत्व। गर्भाधान के क्षण में, इच्छा तत्व में ये दस तत्व इन (प्राणियों) में प्रकट होते हैं।

गर्भाधान के समय, इच्छा तत्व में, किनमें अन्य दस तत्व प्रकट होते हैं? स्वतः उत्पन्न प्रेतों में; स्वतः उत्पन्न असुरों में; स्वतः उत्पन्न पशुओं में; नरक में रहने वालों में; जन्म से बहरे लोगों में गर्भाधान के समय दस तत्व प्रकट होते हैं, (अर्थात) नेत्र तत्व, दृश्य तत्व, नाक तत्व, गंध तत्व, जीभ तत्व, स्वाद तत्व, शरीर तत्व, स्पर्श तत्व, मन-चेतना तत्व, वैचारिक तत्व। गर्भाधान के समय, इच्छा तत्व में, इन (प्राणियों) में ये दस तत्व प्रकट होते हैं।

गर्भाधान के समय, इच्छा तत्व में, किनमें नौ तत्व प्रकट होते हैं? स्वतः उत्पन्न प्रेतों में; स्वतः उत्पन्न असुरों में; स्वतः उत्पन्न पशुओं में; नरक में रहने वालों में; जन्म से अंधे और बहरे लोगों में गर्भाधान के समय नौ तत्व प्रकट होते हैं, (अर्थात्) दृश्य तत्व, नाक तत्व, गंध तत्व, जीभ तत्व, स्वाद तत्व, शरीर तत्व, स्पर्श तत्व, मन-चेतना तत्व और विचार तत्व। गर्भाधान के समय, इच्छा तत्व में, ये नौ तत्व इन (प्राणियों) में प्रकट होते हैं।

गर्भाधान के समय, इच्छा तत्व में, किनमें सात तत्व प्रकट होते हैं? गर्भ में पल रहे प्राणियों में, गर्भाधान के समय सात तत्व प्रकट होते हैं, (अर्थात) दृश्य तत्व, गंध तत्व, स्वाद तत्व, शरीर तत्व, स्पर्शनीय तत्व, मन-चेतना तत्व, वैचारिक तत्व। गर्भाधान के समय, इच्छा तत्व में, ये सात तत्व इन (प्राणियों) में प्रकट होते हैं। (3)

1011. इच्छा के तत्व में गर्भाधान के क्षण में, सभी (प्राणियों) में कौन सा एकमात्र सत्य प्रकट होता है? दुख का सत्य। इच्छा के तत्व में गर्भाधान के क्षण में यह एकमात्र सत्य सभी (प्राणियों) में प्रकट होता है। (4)

1012. इच्छा तत्व में गर्भाधान के समय, किनमें चौदह नियंत्रक शक्तियाँ प्रकट होती हैं? ज्ञान से संबंधित जड़ों से युक्त इच्छा तल के देवताओं में, गर्भाधान के समय चौदह नियंत्रक शक्तियाँ प्रकट होती हैं, (अर्थात्) आँख की नियंत्रक शक्ति, कान की नियंत्रक शक्ति, नाक की नियंत्रक शक्ति, जीभ की नियंत्रक शक्ति, [415]

शरीर को नियंत्रित करने वाली शक्ति, मन को नियंत्रित करने वाली शक्ति, स्त्रीत्व को नियंत्रित करने वाली शक्ति या पुरुषत्व को नियंत्रित करने वाली शक्ति, प्राण शक्ति को नियंत्रित करने वाली शक्ति, मानसिक सुख को नियंत्रित करने वाली शक्ति या उदासीनता को नियंत्रित करने वाली शक्ति, आत्मविश्वास को नियंत्रित करने वाली शक्ति, ऊर्जा को नियंत्रित करने वाली शक्ति, जागरूकता को

नियंत्रित करने वाली शक्ति, एकाग्रता को नियंत्रित करने वाली शक्ति, ज्ञान को नियंत्रित करने वाली शक्ति। गर्भाधान के क्षण में, इच्छा के तत्व में ये चौदह नियंत्रण शक्तियां इन (प्राणियों) में प्रकट होती हैं।

गर्भाधान के समय, इच्छा तत्व में, किन प्राणियों में तेरह नियंत्रण शक्तियाँ प्रकट होती हैं? ज्ञान से असंबद्ध जड़ों वाले इच्छा लोक के देवताओं में, गर्भाधान के समय तेरह नियंत्रण शक्तियाँ प्रकट होती हैं, (अर्थात्) आँख की नियंत्रण शक्ति, कान की नियंत्रण शक्ति, नाक की नियंत्रण शक्ति, जीभ की नियंत्रण शक्ति, शरीर की नियंत्रण शक्ति, मन की नियंत्रण शक्ति, स्त्रीत्व या पुरुषत्व की नियंत्रण शक्ति, प्राण शक्ति, मानसिक सुख या उदासीनता की नियंत्रण शक्ति, विश्वास शक्ति, ऊर्जा शक्ति, जागरूकता शक्ति और एकाग्रता शक्ति। गर्भाधान के समय, इच्छा तत्व में, इन प्राणियों में ये तेरह नियंत्रण शक्तियाँ प्रकट होती हैं।

गर्भाधान के समय, इच्छा तत्व में, किन प्राणियों में तेरह अन्य नियंत्रक शक्तियाँ प्रकट होती हैं? ज्ञान से संबंधित जड़ों से युक्त विश्व चक्र में प्रथम प्राणी मनुष्यों में, गर्भाधान के समय तेरह नियंत्रक शक्तियाँ प्रकट होती हैं, (अर्थात्) आँख की नियंत्रक शक्ति, कान की नियंत्रक शक्ति, नाक की नियंत्रक शक्ति, जीभ की नियंत्रक शक्ति, शरीर की नियंत्रक शक्ति, मन की नियंत्रक शक्ति, प्राण शक्ति, मानसिक सुख की नियंत्रक शक्ति या उदासीनता की नियंत्रक शक्ति, विश्वास की नियंत्रक शक्ति, ऊर्जा की नियंत्रक शक्ति, जागरूकता की नियंत्रक शक्ति, एकाग्रता की नियंत्रक शक्ति और ज्ञान की नियंत्रक शक्ति। गर्भाधान के समय, इच्छा तत्व में, इन प्राणियों में ये तेरह नियंत्रक शक्तियाँ प्रकट होती हैं।

गर्भाधान के क्षण में, इच्छा के तत्व में, किसमें बारह नियंत्रक शक्तियाँ प्रकट होती हैं? ज्ञान से असंबंधित जड़ों के साथ विश्व चक्र में प्रथम मनुष्य में, गर्भाधान के क्षण में बारह नियंत्रक शक्तियाँ प्रकट होती हैं।

20 +

ये बारह शक्तियाँ प्रत्यक्ष रूप से प्रकट होती हैं, जैसे आँख की शक्ति, कान की शक्ति, नाक की शक्ति, जीभ की शक्ति, शरीर की शक्ति, मन की शक्ति, प्राण शक्ति, मानसिक सुख की शक्ति, उदासीनता की शक्ति, विश्वास की शक्ति, ऊर्जा की शक्ति, जागरूकता की शक्ति और एकाग्रता की शक्ति। गर्भाधान के समय, इच्छा तत्व में, ये बारह शक्तियाँ इन प्राणियों में प्रकट होती हैं।

गर्भाधान के समय, इच्छा तत्व में, किन प्राणियों में दस नियंत्रक शक्तियाँ प्रकट होती हैं? गर्भ में पल रहे प्राणियों में, ज्ञान से संबंधित जड़ों के साथ, गर्भाधान के समय दस नियंत्रक शक्तियाँ प्रकट होती हैं, (अर्थात्) शरीर की नियंत्रक शक्ति, मन की नियंत्रक शक्ति, स्त्रीत्व या पुरुषत्व की नियंत्रक शक्ति, प्राण शक्ति, मानसिक सुख या उदासीनता की नियंत्रक शक्ति, विश्वास की नियंत्रक शक्ति, ऊर्जा की नियंत्रक शक्ति, जागरूकता की नियंत्रक शक्ति, एकाग्रता की नियंत्रक शक्ति, ज्ञान की नियंत्रक शक्ति। गर्भाधान के समय, इच्छा तत्व में, इन प्राणियों में ये दस नियंत्रक शक्तियाँ प्रकट होती हैं।

[416] गर्भाधान के समय, इच्छा तत्व में, किनमें नौ नियंत्रक शक्तियाँ प्रकट होती हैं? गर्भ में पल रहे उन प्राणियों में, जिनमें ज्ञान से असंबद्ध जड़ें होती हैं, गर्भाधान के समय नौ नियंत्रक शक्तियाँ प्रकट होती हैं, (अर्थात्) शरीर की नियंत्रक शक्ति, मन की नियंत्रक शक्ति, स्त्रीत्व या पुरुषत्व की नियंत्रक शक्ति, प्राण शक्ति की नियंत्रक शक्ति, मानसिक सुख या उदासीनता की नियंत्रक शक्ति, विश्वास की नियंत्रक शक्ति, ऊर्जा की नियंत्रक शक्ति, जागरूकता की नियंत्रक शक्ति, एकाग्रता की नियंत्रक शक्ति। गर्भाधान के समय, इच्छा तत्व में ये नौ नियंत्रक शक्तियाँ प्रकट होती हैं।

गर्भाधान के समय, इच्छा तत्व में, किनमें अन्य नौ नियंत्रण शक्तियाँ प्रकट होती हैं? स्वतः उत्पन्न प्रेतों में; स्वतः उत्पन्न असुरों में; स्वतः उत्पन्न पशुओं में; नरक में रहने वालों में; गर्भाधान के समय सभी आधारों वाले प्राणियों में नौ नियंत्रण शक्तियाँ प्रकट होती हैं, (अर्थात्) आँख की नियंत्रण शक्ति, कान की नियंत्रण शक्ति, नाक की नियंत्रण शक्ति, जीभ की नियंत्रण शक्ति, और...

शरीर, मन की नियंत्रक शक्ति, स्त्रीत्व की नियंत्रक शक्ति या पुरुषत्व की नियंत्रक शक्ति, प्राण शक्ति की नियंत्रक शक्ति, उदासीनता की नियंत्रक शक्ति। गर्भाधान के क्षण में, इच्छा के तत्व में ये नौ नियंत्रक शक्तियाँ इन (प्राणियों) में प्रकट होती हैं।

गर्भाधान के समय, इच्छा तत्व में, किन प्राणियों में आठ नियंत्रण शक्तियाँ प्रकट होती हैं? स्वतः उत्पन्न प्रेतों में; स्वतः उत्पन्न असुरों में; स्वतः उत्पन्न पशुओं में; नरक में रहने वालों में; जन्म से अंधे प्राणियों में गर्भाधान के समय आठ नियंत्रण शक्तियाँ प्रकट होती हैं, (अर्थात्) कान की नियंत्रण शक्ति, नाक की नियंत्रण शक्ति, जीभ की नियंत्रण शक्ति, शरीर की नियंत्रण शक्ति, मन की नियंत्रण शक्ति, स्त्रीत्व की नियंत्रण शक्ति या पुरुषत्व की नियंत्रण शक्ति, प्राण शक्ति और उदासीनता शक्ति। गर्भाधान के समय, इच्छा तत्व में, इन प्राणियों में ये आठ नियंत्रण शक्तियाँ प्रकट होती हैं।

गर्भाधान के समय, इच्छा तत्व में, किन प्राणियों में अन्य आठ नियंत्रण शक्तियाँ प्रकट होती हैं? स्वतः उत्पन्न प्रेतों में; स्वतः उत्पन्न असुरों में; स्वतः उत्पन्न पशुओं में; नरक में रहने वालों में; जन्म से बहरे प्राणियों में गर्भाधान के समय आठ नियंत्रण शक्तियाँ प्रकट होती हैं, (अर्थात्) आँख की नियंत्रण शक्ति, नाक की नियंत्रण शक्ति, जीभ की नियंत्रण शक्ति, शरीर की नियंत्रण शक्ति, मन की नियंत्रण शक्ति, स्त्रीत्व की नियंत्रण शक्ति या पुरुषत्व की नियंत्रण शक्ति, प्राण शक्ति की नियंत्रण शक्ति और उदासीनता शक्ति। गर्भाधान के समय, इच्छा तत्व में, इन प्राणियों में ये आठ नियंत्रण शक्तियाँ प्रकट होती हैं।

गर्भाधान के समय, इच्छा तत्व में, किनमें सात नियंत्रक शक्तियाँ प्रकट होती हैं? स्वतः उत्पन्न भूतों में; स्वतः उत्पन्न असुरों में; स्वतः उत्पन्न पशुओं में; नरक में रहने वालों में; जन्म से अंधे और बहरे प्राणियों में गर्भाधान के समय सात नियंत्रक शक्तियाँ प्रकट होती हैं, (अर्थात्) नाक की नियंत्रक शक्ति, [417] जीभ की नियंत्रक शक्ति, शरीर की नियंत्रक शक्ति, मन की नियंत्रक शक्ति, स्त्रीत्व की नियंत्रक शक्ति या पुरुषत्व की नियंत्रक शक्ति, प्राण शक्ति की नियंत्रक शक्ति, उदासीनता शक्ति की नियंत्रक शक्ति। गर्भाधान के समय, इच्छा तत्व में, इन (प्राणियों) में ये सात नियंत्रक शक्तियाँ प्रकट होती हैं।

गर्भाधान के क्षण में, इच्छा के तत्व में, जिसमें

534

विश्लेषण की पुस्तक

क्या पाँच नियंत्रण शक्तियाँ प्रकट होती हैं? गर्भ में गर्भित प्राणियों में, लिंगहीन प्राणियों को छोड़कर, पाँच नियंत्रण शक्तियाँ प्रकट होती हैं: शरीर की नियंत्रण शक्ति, मन की नियंत्रण शक्ति, स्त्रीत्व या पुरुषत्व की नियंत्रण शक्ति, प्राण शक्ति और उदासीनता शक्ति। गर्भाधान के समय, इच्छा तत्व में ये पाँच नियंत्रण शक्तियाँ इन प्राणियों में प्रकट होती हैं।

गर्भाधान के समय, इच्छा तत्व में, किनमें चार नियंत्रक शक्तियाँ प्रकट होती हैं? गर्भ में पल रहे निराकार और लिंगहीन प्राणियों में, गर्भाधान के समय चार नियंत्रक शक्तियाँ प्रकट होती हैं, (अर्थात्) शरीर की नियंत्रक शक्ति, मन की नियंत्रक शक्ति, प्राण शक्ति की नियंत्रक शक्ति और उदासीनता शक्ति की नियंत्रक शक्ति। गर्भाधान के समय, इच्छा तत्व में, इन प्राणियों में ये चार नियंत्रक शक्तियाँ प्रकट होती हैं। (5)

1013. गर्भाधान के समय, इच्छा तत्व में, किनमें तीन मूल प्रकट होते हैं? इच्छा लोक के देवताओं में; विश्व चक्र में प्रथम मनुष्य में; गर्भ में पल रहे उन प्राणियों में जिनमें ज्ञान से संबंधित मूल होते हैं, गर्भाधान के समय तीन मूल प्रकट होते हैं, (अर्थात्) लोभ के अभाव का परिणामी मूल, घृणा के अभाव का परिणामी मूल, और सुस्ती के अभाव का परिणामी मूल। गर्भाधान के समय, इच्छा तत्व में, इन (प्राणियों) में ये तीन मूल प्रकट होते हैं।

गर्भाधान के समय, इच्छा तत्व में, किनमें दो मूल प्रकट होते हैं? इच्छा के तल के देवताओं में; विश्व चक्र में प्रथम मनुष्य में; गर्भ में पल रहे उन प्राणियों में जिनमें ज्ञान से असंबद्ध मूल होते हैं, गर्भाधान के समय दो मूल प्रकट होते हैं, (अर्थात्) लोभ के अभाव का परिणामी मूल, घृणा के अभाव का परिणामी मूल। गर्भाधान के समय, इच्छा तत्व में, इन (प्राणियों) में ये दो मूल प्रकट होते हैं। शेष प्राणियों में कोई मूल प्रकट नहीं होता। (6)

1014. गर्भाधान के समय, इच्छा तत्व में, सभी (प्राणियों) में कौन से चार पोषक तत्व प्रकट होते हैं? भोजन का पोषक तत्व, संपर्क का पोषक तत्व, इच्छाशक्ति का पोषक तत्व, और...

शिक्षण के मूल तत्व का विश्लेषण

535

चेतना। गर्भाधान के क्षण में, इच्छा के तत्व में ये चार पोषक तत्व सभी (प्राणियों) में प्रकट होते हैं। (7)
इच्छा के तत्व में गर्भाधान के क्षण में, सभी (प्राणियों) में कौन सा एकल (प्रकार का) संपर्क प्रकट होता है? मन-चेतना-तत्व संपर्क। इच्छा के तत्व में गर्भाधान के क्षण में यह एकल (प्रकार का) संपर्क सभी (प्राणियों) में प्रकट होता है। (8) इच्छा के तत्व में गर्भाधान के क्षण में, सभी (प्राणियों) में कौन सी एकल (प्रकार की) भावना, [418] एकल (प्रकार की) धारणा, एकल (प्रकार की) इच्छाशक्ति, एकल (प्रकार की) चेतना प्रकट होती है? मन-चेतना-तत्व। इच्छा के तत्व में गर्भाधान के क्षण में यह एकल (प्रकार की) चेतना सभी (प्राणियों) में प्रकट होती है। (12)
2. आकार के (तल के) तत्व
1015. रूप के तत्व में गर्भाधान के क्षण में, कितने समुच्चय प्रकट होते हैं? : P : कितने (प्रकार की) चेतना प्रकट होती है?
P = पैरा 991 देखें।
रूप तत्व में गर्भाधान के क्षण में, बोधहीन देव प्राणियों को छोड़कर, पाँच समुच्चय प्रकट होते हैं; पाँच आधार प्रकट होते हैं; पाँच तत्व प्रकट होते हैं; एक सत्य प्रकट होता है; दस नियंत्रक शक्तियाँ प्रकट होती हैं; तीन मूल प्रकट होते हैं; तीन पोषक तत्व प्रकट होते हैं; एक (प्रकार का) संपर्क प्रकट होता है; एक (प्रकार का) भाव प्रकट होता है; एक (प्रकार की) बोध शक्ति प्रकट होती है; एक (प्रकार की) इच्छाशक्ति प्रकट होती है; एक (प्रकार की) चेतना प्रकट होती है।
1016. गर्भाधान के समय, रूप तत्व में कौन से पाँच समुच्चय प्रकट होते हैं? भौतिक गुण का समुच्चय, भावना का समुच्चय, बोध का समुच्चय, मानसिक सहवर्ती का समुच्चय, चेतना का समुच्चय। गर्भाधान के समय, रूप तल में ये पाँच समुच्चय प्रकट होते हैं।
(मैं)
रूप तत्व में गर्भाधान के समय, कौन से पाँच आधार प्रकट होते हैं? आँख का आधार, दृश्य आधार, कान का आधार, मन का आधार, वैचारिक आधार। रूप तत्व में गर्भाधान के समय ये पाँच आधार प्रकट होते हैं। (2)
रूप के तत्व में गर्भाधान के क्षण में, कौन से पाँच तत्व प्रकट होते हैं? आँख तत्व, दृश्य तत्व, कान तत्व, मन-चेतना तत्व, वैचारिक तत्व। 20 *

536 विश्लेषण की पुस्तक
रूप के तत्व में गर्भाधान के क्षण में ये पाँच तत्व स्पष्ट होते हैं। (3)
रूप तत्व में गर्भाधान के क्षण में, कौन सा एकमात्र सत्य प्रकट होता है? दुख का सत्य। रूप तत्व में गर्भाधान के क्षण में यही एकमात्र सत्य प्रकट होता है। (4)
रूप तत्व में गर्भाधान के क्षण में, कौन सी दस नियंत्रक शक्तियाँ प्रकट होती हैं? आँख की नियंत्रक शक्ति, कान की नियंत्रक शक्ति, मन की नियंत्रक शक्ति, प्राण शक्ति, मानसिक सुख की नियंत्रक शक्ति या उदासीनता की नियंत्रक शक्ति, विश्वास की नियंत्रक शक्ति, [419] ऊर्जा की नियंत्रक शक्ति, जागरूकता की नियंत्रक शक्ति, एकाग्रता की नियंत्रक शक्ति, ज्ञान की नियंत्रक शक्ति। रूप तत्व में गर्भाधान के क्षण में ये दस नियंत्रक शक्तियाँ प्रकट होती हैं। (5)
रूप तत्व में गर्भाधान के समय, कौन से तीन मूल प्रकट होते हैं? लोभ के अभाव का परिणामी मूल, घृणा के अभाव का परिणामी मूल, और सुस्ती के अभाव का परिणामी मूल। रूप तत्व में गर्भाधान के समय ये तीनों मूल प्रकट होते हैं। (6)
रूप तत्व में गर्भाधान के क्षण में, कौन से तीन पोषक तत्व प्रकट होते हैं? संपर्क का पोषक तत्व, इच्छाशक्ति का पोषक तत्व, चेतना का पोषक तत्व। रूप तत्व में गर्भाधान के क्षण में ये तीनों पोषक तत्व प्रकट होते हैं। (7)
रूप तत्व में गर्भाधान के क्षण में, कौन सा एकल (प्रकार का) संपर्क प्रकट होता है? मन-चेतना-तत्व संपर्क। रूप तत्व में गर्भाधान के क्षण में यह एकल (प्रकार का) संपर्क प्रकट होता है। (8)
रूप के तत्व में गर्भाधान के क्षण में, कौन सी एकल (प्रकार की) भावना, एकल (प्रकार की) धारणा, एकल (प्रकार की) इच्छाशक्ति, एकल (प्रकार की) चेतना प्रकट होती है? (12)
3. बोधहीन प्राणी

1017. जब देव प्राणियों की गर्भाधान की अवस्था में, बोधहीन, कितने समूह प्रकट होते हैं; :P: कितनी (प्रकार की) चेतना प्रकट होती है?

P = पैरा 991 देखें।

मैं

जब देवों की चेतना प्रकट होती है, तब एक तत्व प्रकट होता है, अर्थात् भौतिक गुणों का तत्व। दो आधार प्रकट होते हैं, अर्थात् दृश्य आधार और वैचारिक आधार। दो तत्व प्रकट होते हैं, अर्थात् दृश्य तत्व और वैचारिक तत्व। एक सत्य प्रकट होता है, अर्थात् दुख का सत्य। एक नियंत्रक शक्ति प्रकट होती है, अर्थात् भौतिक प्राणिक शक्ति। देवों को जड़हीन, पोषक तत्वों से रहित, स्पर्शहीन, संवेदनाहीन, बोधहीन, इच्छाशक्तिहीन और चेतनाहीन के रूप में देखा जाता है।

4. (निराकार तत्व का तल)

1018. निराकार तत्व में गर्भाधान के क्षण में, कितने समूह प्रकट होते हैं; :P: चेतना के कितने प्रकार प्रकट होते हैं?

पी = पैरा 991 देखें।

निराकार तत्व में गर्भाधान के क्षण में चार समुच्चय प्रकट होते हैं; दो आधार प्रकट होते हैं; दो तत्व प्रकट होते हैं; एक सत्य प्रकट होता है; आठ नियंत्रक शक्तियाँ प्रकट होती हैं; तीन मूल प्रकट होते हैं; तीन पोषक तत्व प्रकट होते हैं; एक (प्रकार का) संपर्क प्रकट होता है; एक (प्रकार की) भावना, एक (प्रकार की) धारणा, [420] एक (प्रकार की) इच्छाशक्ति, एक (प्रकार की) चेतना प्रकट होती है।

1019. निराकार तत्व में गर्भाधान के समय कौन से चार समुच्चय प्रकट होते हैं? संवेदना का समुच्चय, बोध का समुच्चय, मानसिक सहवर्ती समुच्चय, चेतना का समुच्चय। निराकार तत्व में गर्भाधान के समय ये चार समुच्चय प्रकट होते हैं। (1)

निराकार तत्व में गर्भाधान के समय कौन से दो आधार प्रकट होते हैं? मन का आधार, विचार का आधार। निराकार तत्व में गर्भाधान के समय ये दो आधार प्रकट होते हैं। (2)

निराकार तत्व में गर्भाधान के समय कौन से दो तत्व प्रकट होते हैं? मन-चेतना-तत्व, वैचारिक तत्व। निराकार तत्व में गर्भाधान के समय ये दो तत्व प्रकट होते हैं। (3)

निराकार तत्व में गर्भाधान के क्षण में, कौन सा एकमात्र सत्य प्रकट होता है? दुख का सत्य। निराकार तत्व में गर्भाधान के क्षण में यही एकमात्र सत्य प्रकट होता है। (4)

मैं

निराकार तत्व में गर्भाधान के समय, कौन सी आठ नियंत्रक शक्तियाँ प्रकट होती हैं? मन की नियंत्रक शक्ति, प्राण शक्ति की नियंत्रक शक्ति, उदासीनता की नियंत्रक शक्ति, विश्वास की नियंत्रक शक्ति, ऊर्जा की नियंत्रक शक्ति, जागरूकता की नियंत्रक शक्ति, एकाग्रता की नियंत्रक शक्ति, ज्ञान की नियंत्रक शक्ति। निराकार तत्व में गर्भाधान के समय ये आठ नियंत्रक शक्तियाँ प्रकट होती हैं। (5)

निराकार तत्व में गर्भाधान के समय कौन-से तीन मूल प्रकट होते हैं? लोभ के अभाव का परिणामी मूल, घृणा के अभाव का परिणामी मूल, और सुस्ती के अभाव का परिणामी मूल। निराकार तत्व में गर्भाधान के समय ये तीनों मूल प्रकट होते हैं। (6)

निराकार तत्व में गर्भाधान के समय, कौन से तीन पोषक तत्व प्रकट होते हैं? संपर्क का पोषक तत्व, इच्छाशक्ति का पोषक तत्व, चेतना का पोषक तत्व। निराकार तत्व में गर्भाधान के समय ये तीनों पोषक तत्व प्रकट होते हैं। (7) निराकार तत्व में गर्भाधान के समय, कौन सा एक (प्रकार का) संपर्क प्रकट होता है? मन-चेतना-तत्व संपर्क। निराकार तत्व में गर्भाधान के समय यह एक (प्रकार का) संपर्क प्रकट होता है। (8)

निराकार तत्व में गर्भाधान के क्षण में, कौन सी एकल (प्रकार की) भावना, एकल (प्रकार की) धारणा, एकल (प्रकार की) इच्छाशक्ति, एकल (प्रकार की) चेतना प्रकट होती है? मन-चेतना-तत्व। निराकार तत्व में गर्भाधान के क्षण में यह एकल (प्रकार की) चेतना प्रकट होती है। (12) [421]

5. अनुभाग जो तल J के दायरे को दर्शाता है

1020. इच्छा के तल की विशेषता वाली अवस्थाएँ; इच्छा के तल की विशेषता न होने वाली अवस्थाएँ। रूप के तल की विशेषता वाली अवस्थाएँ; रूप के तल की विशेषता न होने वाली अवस्थाएँ। निराकार तल की विशेषता वाली अवस्थाएँ; निराकार तल की विशेषता न होने वाली अवस्थाएँ। सांसारिक में शामिल अवस्थाएँ; सांसारिक में शामिल न होने वाली अवस्थाएँ।
इच्छा के तल की विशेषताएँ कौन सी हैं? भीड़भाड़ वाले नरक को निचली सीमा मानकर, परानिम्मितवासवत्ती (तल) के देवताओं को ऊपरी सीमा मानकर, इस समावेशन में जो कुछ भी है, जो इसमें घटित होता है, वह इसमें समाहित होता है।

समूह, तत्व, आधार, भौतिक गुण, भावनाएँ, बोध, मानसिक सहवर्ती, चेतना। ये अवस्थाएँ इच्छा के तल की विशेषताएँ हैं।
कौन सी अवस्थाएँ इच्छा के तल की विशेषताएँ नहीं हैं? (अवस्थाएँ) रूप के तल की विशेषताएँ, निराकार तल की विशेषताएँ, जो सांसारिक में शामिल नहीं हैं। ये अवस्थाएँ इच्छा के तल की विशेषताएँ नहीं हैं।
रूप-तल की विशेषताएँ कौन सी हैं? ब्रह्म-तल को निचली सीमा मानकर, अकनित्त (तल) के देवताओं को ऊपरी सीमा मानकर, इस समाहित में जो कुछ भी है, जो कुछ भी घटित होता है, जो कुछ भी इसमें समाहित है, तथा इस जीवन में सुख प्राप्त कर चुके, जन्म ले चुके या सुख में निवास कर रहे व्यक्ति की चेतना और मानसिक अवस्थाएँ, ये सभी रूप-तल की विशेषताएँ हैं।
कौन सी अवस्थाएँ रूप के तल की विशेषताएँ नहीं हैं? (अवस्थाएँ) इच्छा के तल की विशेषताएँ, निराकार तल की विशेषताएँ, सांसारिक में शामिल नहीं। ये अवस्थाएँ रूप के तल की विशेषताएँ नहीं हैं।
निराकार जगत की विशेषताएँ कौन सी हैं? अनंत अंतरिक्ष की अवस्था प्राप्त करने वाले देवताओं को निचली सीमा मानकर, न तो प्रत्यक्ष और न ही अप्रत्यक्ष अवस्था प्राप्त करने वाले देवताओं को ऊपरी सीमा मानकर, इस समाहित में जो कुछ भी है, जो कुछ भी घटित होता है, जो कुछ भी इसमें समाहित है, वह सब इसमें शामिल है, उस व्यक्ति की चेतना और मानसिक अवस्थाएँ जो इस अस्तित्व में सुख प्राप्त कर चुका है, जो इसमें जन्म ले चुका है या जो इसमें निवास कर रहा है। ये अवस्थाएँ निराकार जगत की विशेषताएँ हैं।
कौन सी अवस्थाएँ निराकार तल की विशेषताएँ नहीं हैं? (अवस्थाएँ) इच्छा तल की विशेषताएँ, रूप तल की विशेषताएँ, सांसारिक में शामिल नहीं हैं। ये अवस्थाएँ निराकार तल की विशेषताएँ नहीं हैं।
सांसारिक अवस्थाओं में कौन-कौन सी अवस्थाएँ शामिल हैं? अच्छी, बुरी और न अच्छी न बुरी अवस्थाएँ, जो विकारों के विषय हैं, जो इच्छा के तल की विशेषताएँ हैं, रूप के तल की विशेषताएँ हैं, निराकार के तल की विशेषताएँ हैं; भौतिक गुणों का समूह, भावनाओं का समूह, बोध का समूह, मानसिक अभिक्रियाओं का समूह, चेतना का समूह। ये सभी अवस्थाएँ सांसारिक अवस्थाओं में शामिल हैं।
कौन सी अवस्थाएँ (सांसारिक में) शामिल नहीं हैं? मार्ग, मार्गों के फल और अप्रतिबंधित तत्व। ये अवस्थाएँ (सांसारिक में) शामिल नहीं हैं। [422]

6. उत्पादक क्रिया और आयु सीमा से संबंधित अनुभाग
1. उत्पादक कार्रवाई
1021. देवों का अर्थ है तीन प्रकार के देव, (अर्थात) पारंपरिक देव, जन्म से देव, शुद्धि से देव।
परंपरागत रूप से देवों का अर्थ राजा, रानी (और उनके) बच्चे होते हैं।
जन्म से देव का अर्थ है, चतुमहाराजिका देवों से शुरू होकर, उनसे ऊपर के सभी देव।
शुद्धिकरण के संदर्भ में देवों का अर्थ है श्रेष्ठ जन।
दान देने, नैतिकता का पालन करने और (आठ घटकों) के नियमानुसार आचरण करने के बाद, प्राणी कहाँ जन्म लेते हैं? दान देने, नैतिकता का पालन करने और (आठ घटकों) के नियमानुसार आचरण करने के बाद, कुछ प्राणी धनवान शासकों की संगति में जन्म

लेते हैं; कुछ धनवान ब्राह्मणों की संगति में जन्म लेते हैं; कुछ धनवान गृहस्थों की संगति में जन्म लेते हैं; कुछ चतुमहाराजिक देवताओं की संगति में जन्म लेते हैं; कुछ तावतिंसा देवताओं की संगति में जन्म लेते हैं; कुछ यम देवताओं की संगति में जन्म लेते हैं; कुछ तुषिता देवताओं की संगति में जन्म लेते हैं; कुछ निम्मनारति देवताओं की संगति में जन्म लेते हैं; कुछ परनिम्मितवासवत्ती देवताओं की संगति में जन्म लेते हैं।

2. आयु सीमा

1022. मनुष्य की आयु सीमा क्या है? सौ वर्ष या उससे कम या अधिक। (1)

1023. चतुमहाराजिका देवताओं की आयु सीमा क्या है? पचास मनुष्य वर्ष चतुमहाराजिका देवताओं की एक रात और एक दिन के बराबर होते हैं; ऐसी एक रात में तीस रातें एक महीना होती हैं; ऐसे एक महीने में बारह महीने एक वर्ष होते हैं; ऐसे एक वर्ष में पाँच सौ देव वर्ष चतुमहाराजिका देवताओं की आयु सीमा होती है; मनुष्य गणना के अनुसार यह कितना होता है? 9,000,000 वर्ष। (2)

तावतिंसा देवों की आयु सीमा क्या है? जो सौ मनुष्य वर्ष के बराबर है, वह तावतिंसा देवों की एक रात और एक दिन के बराबर है; ऐसी एक रात में तीस रातें मिलकर एक महीना बनाती हैं; ऐसे एक महीने में बारह महीने मिलकर एक वर्ष बनाते हैं; ऐसे एक वर्ष में एक हजार देव वर्ष तावतिंसा देवों की आयु सीमा है; मनुष्य गणना के अनुसार यह कितना है? 36,000,000 वर्ष। (3)

शिक्षण के मूल तत्व का विश्लेषण

541

यमदेवों की आयु सीमा क्या है? जो दो सौ मनुष्य वर्ष के बराबर है, वह यमदेवों की एक रात और एक दिन के बराबर है; [423] ऐसी एक रात में तीस रातें एक महीना होती हैं; ऐसे एक महीने में बारह महीने एक वर्ष होते हैं; ऐसे एक वर्ष में दो हजार देव वर्ष यमदेवों की आयु सीमा होती है; मनुष्य की गणना के अनुसार यह कितना है? 144,000,000 वर्ष। (4)

तुषिता देवों की आयु सीमा क्या है? जो चार सौ मनुष्य वर्ष के बराबर है, वह तुषिता देवों की एक रात और एक दिन के बराबर है; ऐसी एक रात में तीस रातें होती हैं, एक महीना होता है; ऐसे एक महीने में बारह महीने होते हैं, एक वर्ष में चार हजार देव वर्ष होते हैं; मनुष्य गणना के अनुसार यह कितना होता है? 576,000,000 वर्ष। (5)

निम्मनारती देवताओं की आयु सीमा क्या है? आठ सौ मनुष्य वर्ष निम्मनारती देवताओं की एक रात और एक दिन के बराबर होते हैं; ऐसी एक रात में तीस रातें एक महीना होती हैं; ऐसे एक महीने में बारह महीने एक वर्ष होते हैं; ऐसे एक वर्ष में आठ हजार देव वर्ष निम्मनारती देवताओं की आयु सीमा होती है; मनुष्य गणना के अनुसार यह कितना होता है? 2,304,000,000 वर्ष। (6)

परनिम्मितवासवत्ती देवताओं की आयु सीमा क्या है? सोलह सौ मनुष्य वर्ष परनिम्मितवासवत्ती देवताओं के लिए एक रात और एक दिन के बराबर होते हैं; ऐसी एक रात में तीस रातें एक महीना होती हैं; ऐसे एक महीने में बारह महीने एक वर्ष होते हैं; ऐसे एक वर्ष में सोलह हजार देव वर्ष परनिम्मितवासवत्ती देवताओं की आयु सीमा होती है; मनुष्य गणना के अनुसार यह कितना होता है? 9,216,000,000 वर्ष।

(7)

इच्छा के ये छह स्तर समृद्ध हैं
सभी इंद्रिय सुख,
सभी की कुल आयु कितनी है?
(ये देवता)?
इनमें से (देव) 1,200 कोटि (प्लस) 28 कोटि
(साथ ही) 50 लाख को दर्शाया गया है
कुल वर्षों की संख्या। [424]
(=12,285,000,000 वर्ष)।
(नोट: 1 कोटि = 10,000,000)।

10^4. प्रथम ध्यान को निम्न स्तर तक विकसित करने के बाद, (प्राणियों का) जन्म कहाँ होता है? प्रथम ध्यान को निम्न स्तर तक विकसित करने के बाद, उनका जन्म ब्रह्मपरिषज्ज देवों की संगति में होता है। उनकी आयु सीमा क्या है? कल्प का एक तिहाई भाग। (8)

प्रथम ध्यान को मध्यवर्ती स्तर तक विकसित करने के बाद, जहाँ

क्या (प्राणी) जन्म लेते हैं? प्रथम ध्यान को मध्यवर्ती स्तर तक विकसित करने के बाद वे ब्रह्मपुरोहित देवताओं की संगति में जन्म लेते हैं। उनकी आयु सीमा क्या है? आधा कल्प। (9)

प्रथम ध्यान को श्रेष्ठ स्तर तक विकसित करने के बाद, (प्राणियों का) जन्म कहाँ होता है? प्रथम ध्यान को श्रेष्ठ स्तर तक विकसित करने के बाद, उनका जन्म महाब्रह्म देवों की संगति में होता है। उनकी आयु सीमा क्या है? (एक) कल्प। (10)

1025. निम्न स्तर तक द्वितीय ध्यान विकसित करने के बाद, (प्राणी) कहाँ जन्म लेते हैं? निम्न स्तर तक द्वितीय ध्यान विकसित करने के बाद वे परित्तभ देवताओं की संगति में जन्म लेते हैं। उनकी आयु सीमा क्या है? दो कल्प। (11)

दूसरे ध्यान को मध्यवर्ती स्तर तक विकसित करने के बाद, (प्राणियों का) जन्म कहाँ होता है? दूसरे ध्यान को मध्यवर्ती स्तर तक विकसित करने के बाद, उनका जन्म अप्पमनाभ देवों की संगति में होता है। उनकी आयु सीमा क्या है? चार कल्प। (12)

दूसरे ध्यान को श्रेष्ठ स्तर तक विकसित करने के बाद, (प्राणियों का) जन्म कहाँ होता है? दूसरे ध्यान को श्रेष्ठ स्तर तक विकसित करने के बाद, उनका जन्म आभासर देवों की संगति में होता है। उनकी आयु सीमा क्या है? आठ कल्प। (13)

1026. तीसरे ध्यान को निम्न स्तर तक विकसित करने के बाद, (प्राणियों का) जन्म कहाँ होता है? तीसरे ध्यान को निम्न स्तर तक विकसित करने के बाद, उनका जन्म परित्तसुभा देवों की संगति में होता है। उनकी आयु सीमा क्या है? सोलह कल्प। (14)

तीसरे ध्यान को मध्यवर्ती स्तर तक विकसित करने के बाद, (प्राणियों का) जन्म कहाँ होता है? तीसरे ध्यान को मध्यवर्ती स्तर तक विकसित करने के बाद वे अप्पम-नासुभा देवों की संगति में जन्म लेते हैं। [425] उनकी आयु सीमा क्या है? बत्तीस कल्प।
(15) . मैं '

तीसरे ध्यान को श्रेष्ठ स्तर तक विकसित करने के बाद, (प्राणियों का) जन्म कहाँ होता है? तीसरे ध्यान को श्रेष्ठ स्तर तक विकसित करने के बाद, उनका जन्म सुभकिन्हा देवताओं की संगति में होता है। उनकी आयु सीमा क्या है? चौंसठ कल्प। (16)

1027. चौथे ध्यान का विकास होने पर, विषयों की विविधता, ध्यान की विविधता, इच्छाओं की विविधता, उद्देश्यों की विविधता, निर्णयों की विविधता, आकांक्षाओं की विविधता और ज्ञान की विविधता के कारण, कुछ असन्नासत्त देवताओं की संगति में जन्म लेते हैं, कुछ वेहप्फला देवताओं की संगति में जन्म लेते हैं, कुछ...

कुछ लोग अविहा देवताओं की संगति में जन्म लेते हैं, कुछ अताप्पा देवताओं की संगति में, कुछ सुदस्सा देवताओं की संगति में, कुछ सुदस्सी देवताओं की संगति में, कुछ अकनित्थ देवताओं की संगति में। कुछ लोग अनंत अंतरिक्ष की अवस्था तक पहुँचने वाले देवताओं की संगति में जन्म लेते हैं, कुछ चेतना की अनंत अवस्था तक पहुँचने वाले देवताओं की संगति में, कुछ शून्यता की अवस्था तक पहुँचने वाले देवताओं की संगति में, और कुछ ऐसे देवताओं की संगति में जन्म लेते हैं जो न तो प्रत्यक्ष हैं और न ही अप्रत्यक्त।

असन्नासत्त और वेहप्पला देवों की आयु सीमा क्या है? पाँच सौ कल्प। (18)

अविहा देवों की आयु सीमा क्या है? एक हजार कल्प। (19) अतप्पा देवों की आयु सीमा क्या है? दो हजार कल्प। (20)

सुदस्सा देवों की आयु सीमा क्या है? चार हजार कल्प।
(21)

सुदस्सी देवों की आयु सीमा क्या है? आठ हजार कल्प।
(22)

अकनित्था देवों की आयु सीमा क्या है? सोलह हजार कल्प। (23)

1028. अनंत अंतरिक्ष की अवस्था प्राप्त करने वाले देवों की आयु सीमा क्या है? बीस हजार कल्प। (24)

अनंत चेतना की अवस्था प्राप्त करने वाले देवों की आयु सीमा क्या है? चालीस हजार कल्प। (25) [426] शून्यता की अवस्था प्राप्त करने वाले देवों की आयु सीमा क्या है? साठ हजार कल्प। (26)
जो देवता ऐसी अवस्था को प्राप्त कर लेते हैं जो न तो प्रत्यक्ष है और न ही अप्रत्यक्ष, उनकी आयु सीमा क्या है? चौरासी हजार कल्प। (27)
1029. पुण्य की शक्ति से उत्पन्न (प्राणी)
इच्छा और रूप के स्तरों में अस्तित्व में जाओ,
(यद्यपि) उच्चतम अस्तित्व तक भी पहुँचना
वे फिर से एक अप्रिय जीवन में लौट आते हैं।
(यहाँ तक कि) इतने लंबे जीवन वाले प्राणी भी जीवन की थकान से मर जाते हैं।
कोई भी अस्तित्व स्थायी नहीं है।
महान ऋषि ने यही कहा था।
21 +

544 विश्लेषण की पुस्तक
अत: वास्तव में बुद्धिमान वे हैं जो विवेकशील, कुशल और बेहतरी के विचारक हैं।
वृद्धावस्था और मृत्यु से मुक्ति पाने के लिए सर्वोच्च मार्ग का विकास करें।
शुद्ध मार्ग विकसित करने के बाद
निर्वाण में विलीन होना, निर्वाण की ओर ले जाना,
सभी अशुद्धियों को समझना
वे दोषों से मुक्त होकर अंतिम मोक्ष प्राप्त करते हैं।

'पूरी तरह से ज्ञात होने वाला' खंड, इत्यादि।

1030. पाँच स्कंधों में से कितनों को पूर्णतः जानना है; कितनों को समझना है; कितनों का त्याग करना है; कितनों का विकास करना है; कितनों को अनुभव करना है; कितनों का न तो त्याग करना है, न ही विकास करना है, न ही अनुभव करना है? सात प्रकार की चेतनाओं में से कितनों को पूर्णतः जानना है; कितनों को समझना है; कितनों का त्याग करना है; कितनों का विकास करना है; कितनों को अनुभव करना है; कितनों का न तो त्याग करना है, न ही विकास करना है, न ही अनुभव करना है?

P = मध्यवर्ती मदें, पैराग्राफ 991 देखें।

1031. भौतिक गुणों के समूह को पूर्णतः जानना है, समझना है; उसे न त्यागना है, न विकसित करना है, न साकार करना है। चार समूहों को पूर्णतः जानना है, समझना है; कभी-कभी उन्हें त्यागना है; कभी-कभी उन्हें विकसित करना है; कभी-कभी उन्हें साकार करना है; कभी-कभी उन्हें न त्यागना है, न विकसित करना है, न साकार करना है। (1)
दस आधारों को पूर्णतः जानना है, समझना है; उन्हें न त्यागना है, न विकसित करना है, न साकार करना है। दो आधारों को पूर्णतः जानना है, समझना है; कभी-कभी उन्हें त्यागना है; कभी-कभी उन्हें विकसित करना है; कभी-कभी उन्हें साकार करना है; कभी-कभी उन्हें न त्यागना है, न विकसित करना है, न साकार करना है। (2)
सोलह तत्वों को पूर्णतः जानना है, उन्हें समझना है; उन्हें त्यागना नहीं है, उनका विकास नहीं करना है, उन्हें साकार नहीं करना है। दो तत्वों को पूर्णतः जानना है, उन्हें समझना है;

शिक्षण के मूल तत्व का विश्लेषण

545

कभी-कभी इन्हें त्यागना पड़ता है; कभी-कभी इनका विकास करना पड़ता है; कभी-कभी इन्हें साकार करना पड़ता है; कभी-कभी इन्हें न तो त्यागना पड़ता है, न ही विकसित करना पड़ता है, न ही साकार करना पड़ता है। (3)

कारण का सत्य पूर्णतः जानना है, समझना है, त्याग देना है; विकसित नहीं करना है, अनुभव नहीं करना है। मार्ग का सत्य पूर्णतः जानना है, समझना है; त्याग नहीं देना है; विकसित करना है; [427] अनुभव नहीं करना है। समाप्ति का सत्य पूर्णतः जानना है, समझना है; त्याग नहीं देना है, विकसित नहीं करना है; अनुभव करना है। दुख का सत्य पूर्णतः जानना है, समझना है; कभी-कभी त्याग देना है; विकसित नहीं करना है, अनुभव नहीं करना है; कभी-कभी त्याग नहीं देना है। (4)

नौ नियंत्रणकारी शक्तियों का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए, उन्हें समझना चाहिए; उनका त्याग नहीं करना चाहिए, उन्हें विकसित नहीं करना चाहिए, उन्हें प्राप्त नहीं करना चाहिए। मानसिक पीड़ा की नियंत्रणकारी शक्ति का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए, उसे समझना चाहिए, उसका त्याग करना चाहिए; उसे विकसित नहीं करना चाहिए, उसे प्राप्त नहीं करना चाहिए। प्रारंभिक ज्ञान की नियंत्रणकारी शक्ति का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए, उसे समझना चाहिए; उसका त्याग नहीं करना चाहिए; उसे विकसित करना चाहिए; उसे प्राप्त नहीं करना चाहिए। मध्यवर्ती ज्ञान की नियंत्रणकारी शक्ति का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए, उसे समझना चाहिए; उसका त्याग नहीं करना चाहिए; कभी-कभी उसे विकसित करना चाहिए; कभी-कभी उसे प्राप्त करना चाहिए। अंतिम ज्ञान की नियंत्रणकारी शक्ति का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए, उसे समझना चाहिए; उसका त्याग नहीं करना चाहिए, उसे विकसित नहीं करना चाहिए; उसे प्राप्त करना चाहिए। तीन नियंत्रणकारी शक्तियों का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए, उन्हें समझना चाहिए; उनका त्याग नहीं करना चाहिए; कभी-कभी उन्हें विकसित करना चाहिए; कभी-कभी उन्हें प्राप्त करना चाहिए; कभी-कभी उन्हें विकसित नहीं करना चाहिए, उन्हें प्राप्त नहीं करना चाहिए। छह नियंत्रक शक्तियों को पूर्णतः जानना है, समझना है; कभी-कभी उन्हें त्यागना है; कभी-कभी उन्हें विकसित करना है; कभी-कभी उन्हें साकार करना है; कभी-कभी उन्हें न तो त्यागना है, न विकसित करना है, न साकार करना है। (5)

तीन बुरे मूलों को पूर्णतः जानना, समझना और त्याग देना चाहिए; उनका विकास नहीं करना चाहिए, उन्हें साकार नहीं करना चाहिए। तीन अच्छे मूलों को पूर्णतः जानना, समझना और त्याग नहीं देना चाहिए; कभी-कभी उनका विकास करना चाहिए; उन्हें साकार नहीं करना चाहिए; कभी-कभी उनका विकास नहीं करना चाहिए। तीन न अच्छे न बुरे मूलों को पूर्णतः जानना, समझना और त्याग नहीं देना चाहिए; उनका विकास नहीं करना चाहिए; कभी-कभी उन्हें साकार करना चाहिए; कभी-कभी उन्हें साकार नहीं करना चाहिए। (6)

546 विश्लेषण की पुस्तक

भोजन के पोषक तत्व को पूर्णतः जानना और समझना आवश्यक है; इसे न तो त्यागना चाहिए, न विकसित करना चाहिए, न साकार करना चाहिए। तीन पोषक तत्वों को पूर्णतः जानना और समझना आवश्यक है; कभी-कभी इन्हें त्यागना पड़ता है; कभी-कभी विकसित करना पड़ता है; कभी-कभी साकार करना पड़ता है; कभी-कभी इन्हें नहीं त्यागना चाहिए, न विकसित करना चाहिए, न साकार करना चाहिए। (7)

छह प्रकार के संपर्कों को पूर्णतः जानना और समझना है; इन्हें न त्यागना है, न विकसित करना है, न अनुभव करना है। मन-चेतना-तत्व संपर्क को पूर्णतः जानना और समझना है; कभी-कभी इसे त्यागना पड़ता है; कभी-कभी इसे विकसित करना पड़ता है; कभी-कभी अनुभव करना पड़ता है; कभी-कभी इसे न त्यागना है, न विकसित करना है, न अनुभव करना है। (8)

छह प्रकार की भावनाएँ, छह प्रकार की धारणाएँ, छह प्रकार की इच्छाशक्ति, छह प्रकार की चेतना को पूर्णतः जानना है, समझना है; उन्हें त्यागना नहीं है, विकसित करना नहीं है, प्राप्त करना नहीं है। मन-चेतना-तत्व को पूर्णतः जानना है, समझना है; कभी-कभी उसे त्यागना है; कभी-कभी उसे विकसित करना है; कभी-कभी [428] प्राप्त करना है; कभी-कभी उसे त्यागना नहीं है, विकसित करना नहीं है, प्राप्त करना नहीं है। (12)

8. खंड (राज्यों से संबंधित) जिनके उद्देश्य हैं, जिनके उद्देश्य नहीं हैं

1032. पाँचों स्कंधों में से कितनों के विषय हैं; कितनों के विषय नहीं हैं? :P: चेतना के सात प्रकारों में से कितनों के विषय हैं; कितनों के विषय नहीं हैं?

P = पैरा 991 देखें।

1033. भौतिक गुणों के कुल योग का कोई उद्देश्य नहीं है। चार
समुच्चय में वस्तुएँ होती हैं। (1) जे

दस आधारों का कोई वस्तु नहीं है। मन के आधार का एक वस्तु है। वैचारिक आधार का कभी-कभी एक वस्तु होती है; कभी-कभी कोई वस्तु नहीं होती। (2)
दस तत्वों का कोई कर्म नहीं है। सात तत्वों का कर्म है। वैचारिक तत्व का कभी कर्म होता है; कभी कर्म नहीं होता। (3)
दो सत्यों के कर्म होते हैं। समाप्ति के सत्य का कोई कर्म नहीं होता। दुख के सत्य का कभी कर्म होता है, कभी नहीं होता। (4)
सात नियंत्रक शक्तियों का कोई उद्देश्य नहीं है। चौदह नियंत्रक शक्तियों का उद्देश्य है। जीवन सिद्धांत की नियंत्रक शक्ति।

शिक्षण के मूल तत्व का विश्लेषण

547

कभी-कभी इसका कोई कर्म होता है; कभी-कभी कोई कर्म नहीं होता। नौ मूलों के कर्म होते हैं। भोजन के पोषक तत्व का कोई कर्म नहीं होता। तीन पोषक तत्वों के कर्म होते हैं। सात प्रकार के संपर्क, सात प्रकार की भावनाएँ, सात प्रकार की धारणाएँ, सात प्रकार की इच्छाशक्ति, सात प्रकार की चेतना के कर्म होते हैं। (12)
1034. पाँचों स्कंधों में से कितनों में कर्म-ग्रहण करने वाली वस्तुएँ हैं; कितनों में कर्म-ग्रहण न करने वाली वस्तुएँ हैं? :P: चेतना के सात प्रकारों में से कितनों में कर्म-ग्रहण करने वाली वस्तुएँ हैं; कितनों में कर्म-ग्रहण न करने वाली वस्तुएँ हैं?
P = मध्यवर्ती मदें, पैराग्राफ 991 देखें।

1035. भौतिक गुणों के समूह का कोई वस्तु नहीं होता। चार समूहों के कभी-कभी वस्तु-ग्रहण करने वाले वस्तु होते हैं; कभी-कभी वस्तु-ग्रहण न करने वाले वस्तु होते हैं। (1)
दस आधारों में कोई वस्तु नहीं होती। मन के आधार में कभी-कभी वस्तु-ग्रहण करने वाली वस्तुएँ होती हैं; कभी-कभी वस्तु-रहित वस्तुएँ होती हैं। वैचारिक आधार में कभी-कभी वस्तु-ग्रहण करने वाली वस्तुएँ होती हैं; कभी-कभी वस्तु-रहित वस्तुएँ होती हैं; कभी-कभी कोई वस्तु नहीं होती। (2)
दस तत्वों का कोई वस्तु नहीं है। छह तत्वों में वस्तुहीन वस्तुएँ हैं। मन-चेतना तत्व में कभी-कभी वस्तुहीन वस्तुएँ होती हैं; कभी-कभी वस्तुहीन वस्तुएँ होती हैं। वैचारिक तत्व में कभी-कभी वस्तुहीन वस्तुएँ होती हैं; कभी-कभी वस्तुहीन वस्तुएँ होती हैं; कभी-कभी कोई वस्तु नहीं होती। (3)
समाप्ति के सत्य का कोई उद्देश्य नहीं है। मार्ग के सत्य का एक उद्देश्यहीन उद्देश्य है। कारण के सत्य का कभी-कभी उद्देश्यपूर्ण उद्देश्य होता है; कभी-कभी उद्देश्यहीन उद्देश्य होता है। दुख के सत्य का कभी-कभी उद्देश्यपूर्ण उद्देश्य होता है; कभी-कभी उद्देश्यहीन उद्देश्य होता है; कभी-कभी कोई उद्देश्य नहीं होता। (4) [429] सात नियंत्रक शक्तियों का कोई उद्देश्य नहीं है। पाँच नियंत्रक शक्तियों का उद्देश्यहीन उद्देश्य है। नौ नियंत्रक शक्तियों का कभी-कभी उद्देश्यपूर्ण उद्देश्य होता है; कभी-कभी उद्देश्यहीन उद्देश्य होता है। प्राणिक शक्ति की नियंत्रक शक्ति का कभी-कभी उद्देश्यपूर्ण उद्देश्य होता है; कभी-कभी उद्देश्यहीन उद्देश्य होता है; कभी-कभी कोई उद्देश्य नहीं होता। (5)
नौ मूलों में कभी-कभी कर्म-ग्रहण करने वाले कर्म होते हैं; कभी-कभी कर्म-ग्रहण न करने वाले कर्म होते हैं। भोजन के पोषक तत्व का कोई कर्म नहीं होता। तीन पोषक तत्वों में कभी-कभी कर्म-ग्रहण करने वाले कर्म होते हैं; कभी-कभी कर्म-ग्रहण न करने वाले कर्म होते हैं। छह (प्रकार के) संपर्क

548 विश्लेषण की पुस्तक
इनमें गैर-वस्तु-ग्रहण करने वाली वस्तुएँ होती हैं। मन-चेतना-तत्व संपर्क में कभी-कभी वस्तु-ग्रहण करने वाली वस्तु होती है; कभी-कभी गैर-वस्तु-ग्रहण करने वाली वस्तु होती है। छह प्रकार की भावनाएँ, छह प्रकार की धारणाएँ, छह प्रकार की इच्छाशक्ति, छह प्रकार की चेतना में गैर-वस्तु-ग्रहण करने वाली वस्तुएँ होती हैं। मन-चेतना-तत्व में कभी-कभी वस्तु-ग्रहण करने वाली वस्तु होती है; कभी-कभी गैर-वस्तु-ग्रहण करने वाली वस्तु होती है। (12)

9. अनुभाग जिसमें (राज्यों द्वारा) देखा, सुना आदि दर्शाया गया है।

1036. पाँचों स्कंधों में से कितने दृश्य हैं; कितने श्रवणित हैं; कितने अन्य इंद्रियों द्वारा अनुभव किए जाते हैं; कितने ज्ञात हैं? कितने दृश्य नहीं हैं, कितने श्रवणित नहीं हैं, कितने अन्य इंद्रियों द्वारा अनुभव किए जाते हैं और कितने ज्ञात नहीं हैं? सात प्रकार की चेतनाओं में से कितने दृश्य हैं; कितने श्रवणित हैं; कितने अन्य इंद्रियों द्वारा अनुभव किए जाते हैं; कितने ज्ञात हैं? कितने दृश्य नहीं हैं, कितने श्रवणित नहीं हैं, कितने अन्य इंद्रियों द्वारा अनुभव किए जाते हैं और कितने ज्ञात नहीं हैं?

P = मध्यवर्ती मदें, पैराग्राफ 991 देखें।

1037. भौतिक गुणों का समूह कभी दिखाई देता है; कभी सुनाई देता है; कभी अन्य प्रकार से अनुभव किया जाता है; कभी जाना जाता है। कभी दिखाई नहीं देता, कभी सुनाई नहीं देता, कभी अन्य प्रकार से अनुभव नहीं किया जाता, तब जाना जाता है। चारों समूह दिखाई नहीं देते, सुनाई नहीं देते, कभी अन्य प्रकार से अनुभव नहीं किए जाते, तब भी जाने जाते हैं।

दृश्य आधार को देखा जा सकता है, सुना नहीं जा सकता, अन्यथा महसूस नहीं किया जा सकता, फिर भी उसका संज्ञान होता है। श्रव्य आधार को देखा नहीं जा सकता, सुना जा सकता है, अन्यथा महसूस नहीं किया जा सकता, फिर भी उसका संज्ञान होता है। गंध आधार, स्वाद आधार और स्पर्शनीय आधार को देखा नहीं जा सकता, सुना नहीं जा सकता, अन्यथा महसूस किया जा सकता है, फिर भी उनका संज्ञान होता है। सात आधारों को देखा नहीं जा सकता, सुना नहीं जा सकता, अन्यथा महसूस नहीं किया जा सकता, फिर भी उनका संज्ञान होता है।

दृश्य तत्व दिखाई देता है, सुनाई नहीं देता, किसी अन्य प्रकार से महसूस नहीं होता, फिर भी उसका संज्ञान होता है। श्रव्य तत्व दिखाई नहीं देता, सुनाई देता है, किसी अन्य प्रकार से महसूस नहीं होता, फिर भी उसका संज्ञान होता है। गंध, स्वाद और स्पर्शनीय तत्व दिखाई नहीं देते, सुनाई नहीं देते, किसी अन्य प्रकार से महसूस होते हैं, फिर भी उनका संज्ञान होता है। तेरह तत्व दिखाई नहीं देते, सुनाई नहीं देते, किसी अन्य प्रकार से महसूस नहीं होते, फिर भी उनका संज्ञान होता है।

तीन सत्य न तो दिखाई देते हैं, न सुनाई देते हैं, न ही किसी अन्य तरीके से अनुभव किए जाते हैं; केवल उनका बोध होता है। दुख का सत्य कभी दिखाई देता है; कभी सुनाई देता है; कभी किसी अन्य तरीके से अनुभव किया जाता है; कभी बोध किया जाता है;

कभी-कभी जो दिखाई नहीं देता, सुनाई नहीं देता, महसूस नहीं होता, उसे अन्यथा पहचाना जाता है।

बाईस नियंत्रण शक्तियाँ न दिखाई देती हैं, न सुनाई देती हैं, न ही किसी अन्य प्रकार से महसूस की जाती हैं, फिर भी वे ज्ञात होती हैं। नौ मूल तत्व न दिखाई देते हैं, न सुनाई देते हैं, न ही किसी अन्य प्रकार से महसूस किए जाते हैं, फिर भी वे ज्ञात होते हैं। चार पोषक तत्व न दिखाई देते हैं, न सुनाई देते हैं, न ही किसी अन्य प्रकार से महसूस किए जाते हैं, फिर भी वे ज्ञात होते हैं। [430] सात प्रकार के संपर्क न दिखाई देते हैं, न सुनाई देते हैं, न ही किसी अन्य प्रकार से महसूस किए जाते हैं, फिर भी वे ज्ञात होते हैं। सात प्रकार की भावनाएँ, सात प्रकार की धारणाएँ, सात प्रकार की इच्छाशक्ति, सात प्रकार की चेतनाएँ न दिखाई देती हैं, न सुनाई देती हैं, न ही किसी अन्य प्रकार से महसूस की जाती हैं, फिर भी वे ज्ञात होती हैं।

10. खंड जिसमें त्रिक आदि दिखाए गए हैं।

1. अच्छा त्रिक

1038. पाँचों स्कंधों में से कितने अच्छे हैं; कितने बुरे हैं; कितने न अच्छे हैं न बुरे हैं? :P: चेतना के सात प्रकारों में से कितने अच्छे हैं; कितने बुरे हैं; कितने न अच्छे हैं न बुरे हैं?

P = मध्यवर्ती मदें, पैराग्राफ 991 देखें।

भौतिक गुणों का समूह न तो अच्छा है और न ही बुरा। चार समूह कभी अच्छे होते हैं, कभी बुरे होते हैं, और कभी न अच्छे होते हैं और न बुरे। दस आधार न तो अच्छे हैं और न बुरे। दो आधार कभी अच्छे होते हैं, कभी बुरे होते हैं, और कभी न अच्छे होते हैं और न बुरे। सोलह तत्व न तो अच्छे हैं और न बुरे। दो तत्व कभी अच्छे होते हैं, कभी बुरे होते हैं, और कभी न अच्छे होते हैं और न बुरे। कारण का सत्य बुरा है। मार्ग का सत्य अच्छा है। समाप्ति का सत्य न तो अच्छा है और न बुरे। दुख का सत्य कभी अच्छा होता है, कभी बुरा होता है, और कभी न अच्छे होते हैं और न बुरे।

दस नियंत्रण शक्तियाँ न तो अच्छी हैं और न ही बुरी। मानसिक पीड़ा की नियंत्रण शक्ति बुरी है। प्रारंभिक ज्ञान की नियंत्रण शक्ति अच्छी है। चार नियंत्रण शक्तियाँ कभी अच्छी होती हैं, कभी न अच्छी होती हैं और न बुरी। छह नियंत्रण शक्तियाँ कभी अच्छी होती हैं, कभी बुरी होती हैं और कभी न अच्छी होती हैं और न बुरी।
तीनों अच्छी जड़ें अच्छी होती हैं। तीनों खराब जड़ें खराब होती हैं। तीनों न अच्छी न बुरी जड़ें न अच्छी होती हैं। भोजन का पोषक तत्व न अच्छा होता है न बुरा। तीन पोषक तत्व

आर

कभी-कभी अच्छा होता है; कभी-कभी बुरा होता है; कभी-कभी न अच्छा न बुरा होता है। छह प्रकार के संपर्क न तो अच्छे होते हैं और न ही बुरे। मन-चेतना-तत्व का संपर्क कभी अच्छा होता है; कभी-कभी बुरा होता है; कभी-कभी न अच्छा न बुरा होता है। छह प्रकार की भावनाएँ, छह प्रकार की धारणाएँ, छह प्रकार की इच्छाशक्ति, छह प्रकार की चेतना न तो अच्छी होती हैं और न ही बुरी। मन-चेतना-तत्व कभी अच्छा होता है; कभी-कभी बुरा होता है; कभी-कभी न अच्छा न बुरा होता है।

2. भावनाओं की त्रिक

1039. पाँचों स्कंधों में से कितने सुखदायक अनुभूति से जुड़े हैं; कितने दुखदायक अनुभूति से जुड़े हैं; कितने न दुखदायक और न सुखदायक अनुभूति से जुड़े हैं? :P: चेतना के सात प्रकारों में से कितने सुखदायक अनुभूति से जुड़े हैं; कितने दुखदायक अनुभूति से जुड़े हैं; कितने दुखदायक और न सुखदायक अनुभूति से जुड़े हैं?

P = मध्यवर्ती मदें, पैराग्राफ 991 देखें।

दो समूहों को न तो सुखद भावना से जुड़ा हुआ कहा जा सकता है; न ही पीड़ादायक भावना से जुड़ा हुआ; और न ही पीड़ादायक और न ही सुखद भावना से जुड़ा हुआ। तीन समूह कभी-कभी सुखद भावना से जुड़े होते हैं; कभी-कभी पीड़ादायक भावना से जुड़े होते हैं; कभी-कभी न तो पीड़ादायक और न ही सुखद भावना से जुड़े होते हैं। (1) [431]

दस आधारों को न तो सुखद भावना से जुड़ा हुआ कहा जा सकता है; न ही पीड़ादायक भावना से जुड़ा हुआ; और न ही पीड़ादायक और न ही सुखद भावना से जुड़ा हुआ। मन का आधार कभी-कभी सुखद भावना से जुड़ा होता है; कभी-कभी पीड़ादायक भावना से जुड़ा होता है; और कभी-कभी न तो पीड़ादायक और न ही सुखद भावना से जुड़ा होता है। वैचारिक आधार कभी-कभी सुखद भावना से जुड़ा होता है; कभी-कभी पीड़ादायक भावना से जुड़ा होता है; और कभी-कभी न तो पीड़ादायक और न ही सुखद भावना से जुड़ा होता है; कभी-कभी इसे न तो सुखद भावना से जुड़ा हुआ कहा जा सकता है; न ही पीड़ादायक भावना से जुड़ा हुआ; और न ही पीड़ादायक और न ही सुखद भावना से जुड़ा हुआ। (2)

दस तत्वों को न तो सुखद भावना से, न ही पीड़ादायक भावना से, और न ही न पीड़ादायक और न ही सुखद भावना से जुड़ा हुआ कहा जा सकता है। पाँच तत्व न तो पीड़ादायक और न ही सुखद भावना से जुड़े हैं। शरीर-चेतना-

कभी-कभी यह तत्व सुखद भावना से जुड़ा होता है; कभी-कभी यह पीड़ादायक भावना से जुड़ा होता है। कभी-कभी यह मन-चेतना-तत्व सुखद भावना से जुड़ा होता है; कभी-कभी यह पीड़ादायक भावना से जुड़ा होता है; कभी-कभी यह न तो पीड़ादायक और न ही सुखद भावना से जुड़ा होता है। कभी-कभी यह सुखद भावना से जुड़ा होता है; कभी-कभी यह पीड़ादायक भावना से जुड़ा होता है; कभी-कभी यह न तो पीड़ादायक और न ही सुखद भावना से जुड़ा होता है; कभी-कभी इसे न तो सुखद भावना से जुड़ा हुआ, न पीड़ादायक और न ही न पीड़ादायक और न ही सुखद भावना से जुड़ा हुआ कहा जा सकता है। (3)

दो सत्य कभी-कभी सुखद अनुभूति से जुड़े होते हैं; कभी-कभी न तो पीड़ादायक और न ही सुखद अनुभूति से जुड़े होते हैं। समाप्ति के सत्य को न तो सुखद अनुभूति से जुड़ा हुआ कहा जा सकता है; न पीड़ादायक अनुभूति से जुड़ा हुआ और न ही न पीड़ादायक और न ही सुखद अनुभूति से जुड़ा हुआ। पीड़ा का सत्य कभी-कभी सुखद अनुभूति से जुड़ा होता है; कभी-कभी पीड़ादायक अनुभूति से जुड़ा होता

है; कभी-कभी न तो पीड़ादायक और न ही सुखद अनुभूति से जुड़ा होता है; कभी-कभी इसे न तो सुखद अनुभूति से जुड़ा हुआ कहा जा सकता है; न पीड़ादायक अनुभूति से जुड़ा हुआ और न ही न पीड़ादायक और न ही सुखद अनुभूति से जुड़ा हुआ। (4) बारह नियंत्रण शक्तियों को न तो सुखद अनुभूति से जुड़ा हुआ कहा जा सकता है; न पीड़ादायक अनुभूति से जुड़ा हुआ और न ही न पीड़ादायक और न ही सुखद अनुभूति से जुड़ा हुआ। छह नियंत्रण शक्तियां कभी-कभी सुखद अनुभूति से जुड़ी होती हैं; कभी-कभी न तो पीड़ादायक और न ही सुखद अनुभूति से जुड़ी होती हैं। तीन नियंत्रण शक्तियां कभी-कभी सुखद अनुभूति से जुड़ी होती हैं; कभी-कभी पीड़ादायक अनुभूति से जुड़ी होती हैं; [432] कभी-कभी न तो पीड़ादायक और न ही सुखद भावना से जुड़े होते हैं। प्राणिक सिद्धांत की नियंत्रक क्षमता कभी-कभी सुखद भावना से जुड़ी होती है; कभी-कभी पीड़ादायक भावना से जुड़ी होती है; कभी-कभी न तो पीड़ादायक और न ही सुखद भावना से जुड़ी होती है; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि यह सुखद भावना से जुड़ी है; पीड़ादायक भावना से जुड़ी है या न तो पीड़ादायक और न ही सुखद भावना से जुड़ी है। (5)

घृणा की बुरी जड़ पीड़ादायक भावना से जुड़ी होती है। सात जड़ें कभी-कभी सुखद भावना से जुड़ी होती हैं; कभी-कभी न तो पीड़ादायक और न ही सुखद भावना से जुड़ी होती हैं। सुस्ती की बुरी जड़ कभी-कभी सुखद भावना से जुड़ी होती है; कभी-कभी पीड़ादायक भावना से जुड़ी होती है; कभी-कभी न तो पीड़ादायक और न ही सुखद भावना से जुड़ी होती है। (6)

21

552

विश्लेषण की पुस्तक

भोजन के पोषक तत्व को न तो सुखद अनुभूति से, न ही पीड़ादायक अनुभूति से, और न ही न पीड़ादायक और न ही सुखद अनुभूति से जुड़ा हुआ कहा जाना चाहिए। तीन पोषक तत्व कभी-कभी सुखद अनुभूति से जुड़े होते हैं; कभी-कभी पीड़ादायक अनुभूति से जुड़े होते हैं; और कभी-कभी न तो पीड़ादायक और न ही सुखद अनुभूति से जुड़े होते हैं। (7)

पांच प्रकार के संपर्क ऐसे हैं जो न तो पीड़ादायक और न ही सुखद अनुभूति से जुड़े होते हैं। देह-चेतना-तत्व संपर्क कभी-कभी सुखद अनुभूति से जुड़ा होता है; कभी-कभी पीड़ादायक अनुभूति से जुड़ा होता है। मन-चेतना-तत्व संपर्क कभी-कभी सुखद अनुभूति से जुड़ा होता है; कभी-कभी पीड़ादायक अनुभूति से जुड़ा होता है; कभी-कभी न तो पीड़ादायक और न ही सुखद अनुभूति से जुड़ा होता है। (8)

सात प्रकार की भावनाओं को न तो सुखद भावना से, न ही पीड़ादायक भावना से, और न ही न पीड़ादायक और न ही सुखद भावना से संबंधित कहा जा सकता है। पाँच प्रकार की धारणाएँ, पाँच प्रकार की इच्छाशक्ति और पाँच प्रकार की चेतनाएँ न तो पीड़ादायक और न ही सुखद भावना से संबंधित हैं। देह-चेतना तत्व कभी-कभी सुखद भावना से, कभी-कभी पीड़ादायक भावना से संबंधित होता है। मन-चेतना तत्व कभी-कभी सुखद भावना से, कभी-कभी पीड़ादायक भावना से, और कभी-कभी न तो पीड़ादायक और न ही सुखद भावना से संबंधित होता है। (12)

3. परिणामी त्रिक

1040. पाँचों स्कंधों में से कितने परिणाम हैं; कितने परिणाम उत्पन्न करने वाले हैं; कितने न तो परिणाम हैं और न ही परिणाम उत्पन्न करने वाले हैं? :P: सात प्रकार की चेतनाओं में से कितने परिणाम हैं; कितने परिणाम उत्पन्न करने वाले हैं; कितने न तो परिणाम हैं और न ही परिणाम उत्पन्न करने वाले हैं?

P = मध्यवर्ती मदें, पैराग्राफ 991 देखें।

भौतिक गुणों का समुच्चय न तो परिणामी है और न ही परिणामी का उत्पादक है। चार समुच्चय कभी-कभी परिणामी होते हैं; कभी-कभी परिणामी के उत्पादक होते हैं; कभी-कभी न तो परिणामी होते हैं और न ही परिणामी के उत्पादक होते हैं। (1) [433]

दस आधार न तो परिणामी हैं और न ही परिणामी उत्पन्न करते हैं। दो आधार कभी-कभी परिणामी होते हैं; कभी-कभी परिणामी उत्पन्न करते हैं; कभी-कभी न तो परिणामी होते हैं और न ही परिणामी उत्पन्न करते हैं। (2)

शिक्षण के मूल तत्व का विश्लेषण

553

दस तत्व न तो परिणाम हैं और न ही परिणाम उत्पन्न करते हैं। पाँच तत्व परिणाम हैं। मन तत्व कभी-कभी परिणाम होता है; कभी-कभी न तो परिणाम होता है और न ही परिणाम उत्पन्न करता है। दो तत्व कभी-कभी परिणाम होते हैं; कभी-कभी परिणाम उत्पन्न करते हैं; कभी-कभी न तो परिणाम होते हैं और न ही परिणाम उत्पन्न करते हैं। (3)

दो सत्य परिणाम उत्पन्न करते हैं। निर्वाह का सत्य न तो परिणाम उत्पन्न करता है और न ही परिणाम उत्पन्न करता है। दुख का सत्य कभी परिणाम उत्पन्न करता है; कभी परिणाम उत्पन्न करता है; कभी-कभी परिणाम उत्पन्न नहीं करता और न ही परिणाम उत्पन्न करता है। (4)

सात नियंत्रण शक्तियाँ न तो परिणाम उत्पन्न करती हैं और न ही परिणाम उत्पन्न करती हैं। तीन नियंत्रण शक्तियाँ परिणाम उत्पन्न करती हैं। दो नियंत्रण शक्तियाँ परिणाम उत्पन्न करती हैं। मध्यवर्ती ज्ञान की नियंत्रण शक्ति कभी परिणाम उत्पन्न करती है; कभी-कभी परिणाम उत्पन्न करती है। नौ नियंत्रण शक्तियाँ कभी परिणाम उत्पन्न करती हैं; कभी-कभी परिणाम उत्पन्न करती हैं; कभी-कभी परिणाम उत्पन्न करती हैं। (5) छह मूल परिणाम उत्पन्न करते हैं। तीन न तो अच्छे और न ही बुरे मूल कभी परिणाम उत्पन्न करते हैं; कभी-कभी परिणाम उत्पन्न नहीं करते और न ही परिणाम उत्पन्न करते हैं। (6)

भोजन का पोषक तत्व न तो परिणामी है और न ही परिणामी का उत्पादक है। तीन पोषक तत्व कभी-कभी परिणामी होते हैं; कभी-कभी परिणामी का उत्पादक होते हैं; कभी-कभी न तो परिणामी होते हैं और न ही परिणामी का उत्पादक होते हैं। पाँच प्रकार के संपर्क परिणामी होते हैं। मन-तत्व-संपर्क कभी-कभी परिणामी होता है; कभी-कभी न तो परिणामी होता है और न ही परिणामी का उत्पादक होता है। मन-चेतना-तत्व-संपर्क कभी-कभी परिणामी होता है; कभी-कभी परिणामी का उत्पादक होता है; कभी-कभी न तो परिणामी होता है और न ही परिणामी का उत्पादक होता है। पाँच प्रकार की भावनाएँ, पाँच प्रकार की धारणाएँ, पाँच प्रकार की इच्छाशक्ति, पाँच प्रकार की चेतना परिणामी होती हैं। मन तत्व कभी-कभी परिणामी होता है; कभी-कभी न तो परिणामी होता है और न ही परिणामी का उत्पादक होता है। मन-चेतना-तत्व कभी-कभी परिणामी होता है; कभी-कभी परिणामी का उत्पादक होता है; कभी-कभी न तो परिणामी होता है और न ही परिणामी का उत्पादक होता है। (12)

4. ग्रास्पिंग ट्रिपलेट

1041. पाँचों स्कंधों में से कितने (लालसा और भ्रामक दृष्टि से) जकड़े हुए हैं, आसक्ति के विषय हैं; कितने जकड़े हुए नहीं हैं, आसक्ति के विषय हैं; कितने जकड़े हुए नहीं हैं?

वे आसक्ति के विषय नहीं हैं। :P: चेतना के सात प्रकारों में से कितने बोधगम्य हैं, जो आसक्ति के विषय हैं; कितने बोधगम्य नहीं हैं, जो आसक्ति के विषय हैं; कितने बोधगम्य नहीं हैं, जो आसक्ति के विषय नहीं हैं?

P = मध्यवर्ती मदें, पैराग्राफ 991 देखें।

भौतिक गुणों का समूह कभी-कभी ग्रहण किया जाता है, आसक्ति का विषय होता है; कभी-कभी ग्रहण नहीं किया जाता, आसक्ति का विषय होता है। चार समूह कभी-कभी ग्रहण किए जाते हैं, आसक्ति के विषय होते हैं; कभी-कभी ग्रहण नहीं किए जाते, आसक्ति के विषय होते हैं; कभी-कभी ग्रहण नहीं किए जाते, आसक्ति के विषय नहीं होते। (1) [434]

पाँच आधार ग्रहण किए जाते हैं, वे आसक्तियों के विषय होते हैं। श्रव्य आधार ग्रहण नहीं किया जाता, वह आसक्तियों का विषय होता है। चार आधार कभी-कभी ग्रहण किए जाते हैं, वे आसक्तियों के विषय होते हैं; कभी-कभी ग्रहण नहीं किए जाते, वे भी आसक्तियों के विषय होते हैं। दो आधार कभी-कभी ग्रहण किए जाते हैं, वे आसक्तियों के विषय होते हैं; कभी-कभी ग्रहण नहीं किए जाते, वे भी आसक्तियों के विषय होते हैं; कभी-कभी ग्रहण नहीं किए जाते, वे भी आसक्तियों के विषय नहीं होते। (2)

दस तत्व ग्रहण किए जाते हैं, वे आसक्तियों के विषय होते हैं। श्रव्य तत्व ग्रहण नहीं किया जाता, वह आसक्तियों का विषय होता है। पाँच तत्व कभी ग्रहण किए जाते हैं, वे आसक्तियों के विषय होते हैं; कभी ग्रहण नहीं किए जाते, वे भी आसक्तियों के विषय होते हैं। दो तत्व कभी ग्रहण किए जाते हैं, वे आसक्तियों के विषय होते हैं; कभी ग्रहण नहीं किए जाते, वे भी आसक्तियों के विषय होते हैं; कभी ग्रहण नहीं किए जाते, वे भी आसक्तियों के विषय नहीं होते। (3)

कारण का सत्य जो समझ में नहीं आता, वह आसक्ति का विषय है। दो सत्य जो समझ में नहीं आते, वे आसक्ति के विषय नहीं हैं। दुख का सत्य कभी समझ में आता है, वह आसक्ति का विषय है; कभी समझ में नहीं आता, वह भी आसक्ति का विषय है। (4)
नौ नियंत्रणकारी शक्तियाँ बोधगम्य होती हैं, वे आसक्ति के विषय होती हैं। मानसिक पीड़ा की नियंत्रणकारी शक्ति बोधगम्य नहीं होती, वह आसक्ति का विषय होती है। तीन नियंत्रणकारी शक्तियाँ बोधगम्य नहीं होतीं, वे आसक्ति के विषय नहीं होतीं। नौ नियंत्रणकारी शक्तियाँ कभी-कभी बोधगम्य होती हैं, वे आसक्ति के विषय होती हैं; कभी-कभी बोधगम्य नहीं होतीं, वे आसक्ति के विषय होती हैं; कभी-कभी बोधगम्य नहीं होतीं, वे आसक्ति के विषय नहीं होतीं। तीन बुरी जड़ें बोधगम्य नहीं होतीं, वे आसक्ति के विषय होती हैं। तीन अच्छी जड़ें कभी-कभी बोधगम्य नहीं होतीं, वे आसक्ति के विषय होती हैं।

कभी-कभी समझ में नहीं आते, आसक्ति के विषय नहीं होते। तीन न अच्छे न बुरे मूल कभी समझ में आते हैं, आसक्ति के विषय होते हैं; कभी समझ में नहीं आते, आसक्ति के विषय होते हैं; कभी समझ में नहीं आते, आसक्ति के विषय नहीं होते। (5)
भोजन का पोषक तत्व कभी-कभी समझ में आता है, आसक्ति का विषय होता है; कभी-कभी समझ में नहीं आता, फिर भी आसक्ति का विषय होता है। तीन पोषक तत्व कभी-कभी समझ में आते हैं, आसक्ति का विषय होते हैं; कभी-कभी समझ में नहीं आते, फिर भी आसक्ति का विषय होते हैं; कभी-कभी समझ में नहीं आते, फिर भी आसक्ति का विषय नहीं होते। (6)
पांच प्रकार के संपर्क ग्रहण किए जाते हैं, जो आसक्ति के विषय होते हैं। मन-तत्व-संपर्क कभी ग्रहण किया जाता है, जो आसक्ति का विषय होता है; कभी ग्रहण नहीं किया जाता, फिर भी आसक्ति का विषय होता है। मन-चेतना-तत्व-संपर्क कभी ग्रहण किया जाता है, जो आसक्ति का विषय होता है; कभी ग्रहण नहीं किया जाता, फिर भी आसक्ति का विषय होता है; कभी ग्रहण नहीं किया जाता, फिर भी आसक्ति का विषय नहीं होता। पांच प्रकार की भावनाएँ, पांच प्रकार की धारणाएँ, पांच प्रकार की इच्छाशक्ति, पांच प्रकार की चेतना ग्रहण की जाती हैं, जो आसक्ति के विषय होते हैं। मन-तत्व कभी ग्रहण किया जाता है, जो आसक्ति का विषय होता है; कभी ग्रहण नहीं किया जाता, फिर भी आसक्ति का विषय होता है। मन-चेतना-तत्व कभी ग्रहण किया जाता है, जो आसक्ति का विषय होता है; कभी ग्रहण नहीं किया जाता, फिर भी आसक्ति का विषय होता है; कभी ग्रहण नहीं किया जाता, फिर भी आसक्ति का विषय नहीं होता। (12)
5. प्रारंभिक आवेदन त्रिक
1042. पाँच स्कंधों में से कितने आरंभिक अनुप्रयोग के साथ होते हैं, कितने निरंतर अनुप्रयोग के साथ होते हैं; कितने आरंभिक अनुप्रयोग के बिना होते हैं, कितने निरंतर अनुप्रयोग के साथ होते हैं; कितने आरंभिक अनुप्रयोग के बिना होते हैं, कितने निरंतर अनुप्रयोग के बिना होते हैं? :P: चेतना के सात प्रकारों में से कितने आरंभिक अनुप्रयोग के साथ होते हैं, कितने निरंतर अनुप्रयोग के साथ होते हैं; कितने आरंभिक अनुप्रयोग के बिना होते हैं, कितने निरंतर अनुप्रयोग के साथ होते हैं; कितने आरंभिक अनुप्रयोग के बिना होते हैं, कितने निरंतर अनुप्रयोग के बिना होते हैं?
पी — मध्यवर्ती मदों के लिए पैरा 991 देखें।
सामग्री की गुणवत्ता का कुल योग प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, निरंतर अनुप्रयोग के बिना होता है। कभी-कभी तीन योग होते हैं।

प्रारंभिक अनुप्रयोग के साथ, निरंतर अनुप्रयोग के साथ; कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, केवल निरंतर अनुप्रयोग; कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, निरंतर अनुप्रयोग के बिना। मानसिक सहवर्ती का समूह कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के साथ, निरंतर अनुप्रयोग के साथ होता है; कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, केवल निरंतर अनुप्रयोग; कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, निरंतर अनुप्रयोग के बिना; कभी-कभी यह नहीं कहा जाना चाहिए कि यह प्रारंभिक अनुप्रयोग के साथ, निरंतर अनुप्रयोग के साथ; प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, केवल निरंतर अनुप्रयोग या प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, निरंतर अनुप्रयोग के बिना है। (1)

दस आधार प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, निरंतर अनुप्रयोग के बिना हैं। मन का आधार कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के साथ होता है, कभी-कभी निरंतर अनुप्रयोग के साथ होता है; कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, केवल निरंतर अनुप्रयोग के साथ होता है; कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, निरंतर अनुप्रयोग के बिना होता है। वैचारिक आधार कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के साथ होता है, कभी-कभी निरंतर अनुप्रयोग के साथ होता है; कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, केवल निरंतर अनुप्रयोग के साथ होता है; कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, निरंतर अनुप्रयोग के बिना होता है; कभी-कभी इसे न तो प्रारंभिक अनुप्रयोग के साथ, न ही निरंतर अनुप्रयोग के साथ, न ही प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, न ही निरंतर अनुप्रयोग के साथ कहा जा सकता है। (2)
पंद्रह तत्व प्रारंभिक अनुप्रयोग और सतत अनुप्रयोग दोनों से रहित हैं। मन तत्व प्रारंभिक अनुप्रयोग और सतत अनुप्रयोग दोनों से युक्त है। मन-चेतना तत्व कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग और सतत अनुप्रयोग दोनों से युक्त होता है; कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, केवल सतत अनुप्रयोग के साथ होता है; कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, सतत अनुप्रयोग के बिना होता है। वैचारिक तत्व कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग और सतत अनुप्रयोग दोनों से युक्त होता है; कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, केवल सतत अनुप्रयोग के साथ होता है; कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, सतत अनुप्रयोग के बिना होता है; कभी-कभी इसे न तो प्रारंभिक अनुप्रयोग और सतत अनुप्रयोग दोनों से युक्त, न ही प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, न ही सतत अनुप्रयोग के साथ युक्त कहा जा सकता है। (3)

कारण का सत्य प्रारंभिक अभ्यास और निरंतर अभ्यास दोनों के साथ होता है। समाप्ति का सत्य प्रारंभिक अभ्यास और निरंतर अभ्यास के बिना होता है। मार्ग का सत्य कभी-कभी प्रारंभिक अभ्यास और निरंतर अभ्यास के साथ होता है; कभी-कभी प्रारंभिक अभ्यास के बिना, केवल निरंतर अभ्यास के साथ होता है; कभी-कभी प्रारंभिक अभ्यास के बिना, निरंतर अभ्यास के बिना होता है। दुख का सत्य कभी-कभी प्रारंभिक अभ्यास और निरंतर अभ्यास के साथ होता है; कभी-कभी प्रारंभिक अभ्यास के बिना, केवल निरंतर अभ्यास के साथ होता है; कभी-कभी प्रारंभिक अभ्यास के बिना, निरंतर अभ्यास के बिना होता है; कभी-कभी यह कहना उचित नहीं होगा कि यह न तो प्रारंभिक अभ्यास और निरंतर अभ्यास के साथ होता है; न ही प्रारंभिक अभ्यास और निरंतर अभ्यास के बिना होता है; न ही प्रारंभिक अभ्यास और निरंतर अभ्यास के बिना होता है। (4)
नौ नियंत्रक शक्तियाँ आरंभिक और सतत अनुप्रयोग रहित होती हैं। मानसिक पीड़ा की नियंत्रक शक्ति आरंभिक और सतत अनुप्रयोग दोनों के साथ होती है। उदासीनता की नियंत्रक शक्ति कभी आरंभिक और सतत अनुप्रयोग के साथ होती है; कभी आरंभिक और सतत अनुप्रयोग रहित होती है। ग्यारह नियंत्रक शक्तियाँ कभी आरंभिक और सतत अनुप्रयोग के साथ होती हैं; कभी आरंभिक और सतत अनुप्रयोग रहित होती हैं; कभी आरंभिक और सतत अनुप्रयोग रहित होती हैं। (5)
तीन हानिकारक मूल तत्व प्रारंभिक प्रयोग और निरंतर प्रयोग के साथ होते हैं। छह मूल तत्व कभी-कभी प्रारंभिक प्रयोग और निरंतर प्रयोग के साथ होते हैं; कभी-कभी प्रारंभिक प्रयोग के बिना, केवल निरंतर प्रयोग के साथ होते हैं; कभी-कभी प्रारंभिक प्रयोग के बिना, निरंतर प्रयोग के बिना होते हैं। भोजन का पोषक तत्व प्रारंभिक प्रयोग और निरंतर प्रयोग के बिना होता है। तीन पोषक तत्व कभी-कभी प्रारंभिक प्रयोग और निरंतर प्रयोग के साथ होते हैं; कभी-कभी प्रारंभिक प्रयोग के बिना, केवल निरंतर प्रयोग के साथ होते हैं; कभी-कभी प्रारंभिक प्रयोग के बिना, निरंतर प्रयोग के बिना होते हैं। पाँच प्रकार के संपर्क प्रारंभिक प्रयोग और निरंतर प्रयोग के बिना होते हैं। मन-तत्व-संपर्क प्रारंभिक प्रयोग और निरंतर प्रयोग के साथ होता है। मन-चेतना-तत्व-संपर्क

कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के साथ होता है, कभी निरंतर अनुप्रयोग के साथ; कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, केवल निरंतर अनुप्रयोग के साथ; कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, निरंतर अनुप्रयोग के बिना। पाँच प्रकार की भावनाएँ, पाँच प्रकार की

धारणाएँ, पाँच प्रकार की इच्छाशक्ति, पाँच प्रकार की चेतनाएँ प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, निरंतर अनुप्रयोग के बिना होती हैं। मन तत्व प्रारंभिक अनुप्रयोग के साथ होता है, निरंतर अनुप्रयोग के साथ। मन-चेतना तत्व कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के साथ होता है, कभी निरंतर अनुप्रयोग के साथ; कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, केवल निरंतर अनुप्रयोग के साथ; कभी-कभी प्रारंभिक अनुप्रयोग के बिना, निरंतर अनुप्रयोग के बिना। (12)

1. विषयगत दोहा

1043. पाँच स्कंधों में से कितने भौतिक हैं; कितने अभौतिक हैं? :P: सात प्रकार की चेतनाओं में से कितने भौतिक हैं; कितने अभौतिक हैं?

P = मध्यवर्ती मदें, पैराग्राफ 991 देखें।

भौतिक गुणों का समुच्चय भौतिक है। चार समुच्चय भौतिक नहीं हैं। [436] दस आधार भौतिक हैं। मन का आधार भौतिक नहीं है। वैचारिक आधार कभी भौतिक होता है, कभी नहीं। दस तत्व भौतिक हैं। सात तत्व भौतिक नहीं हैं। वैचारिक तत्व कभी भौतिक होता है, कभी नहीं। तीन सत्य भौतिक नहीं हैं। दुख का सत्य कभी भौतिक होता है, कभी नहीं। सात नियंत्रण शक्तियाँ भौतिक हैं। चौदह नियंत्रण शक्तियाँ भौतिक नहीं हैं। प्राणिक शक्ति कभी भौतिक होती है, कभी नहीं। नौ मूल तत्व भौतिक नहीं हैं। भोजन का पोषक तत्व भौतिक है। तीन पोषक तत्व भौतिक नहीं हैं। सात प्रकार के संपर्क भौतिक नहीं हैं। सात प्रकार की भावनाएँ, सात प्रकार की धारणाएँ, सात प्रकार की इच्छाशक्ति और सात प्रकार की चेतना भौतिक नहीं हैं।

2. साधारण दोहा

1044. पाँच स्कंधों में से कितने सांसारिक हैं; कितने अलौकिक हैं? बारह आधारों में से कितने सांसारिक हैं; कितने अलौकिक हैं? अठारह तत्वों में से कितने अलौकिक हैं?

सांसारिक सत्यों में से कितने सांसारिक हैं; कितने अलौकिक हैं? चार सत्यों में से कितने सांसारिक हैं; कितने अलौकिक हैं? :P: चेतना के सात प्रकारों में से कितने सांसारिक हैं; कितने अलौकिक हैं?

P = मध्यवर्ती मदें, पैराग्राफ 991 देखें।

भौतिक गुणों का समूह सांसारिक है। चार समूह कभी सांसारिक होते हैं, कभी अलौकिक। दस आधार सांसारिक हैं। दो आधार कभी सांसारिक होते हैं, कभी अलौकिक। सोलह तत्व सांसारिक हैं। दो तत्व कभी सांसारिक होते हैं, कभी अलौकिक। दो सत्य सांसारिक हैं, दो सत्य अलौकिक।

दस नियंत्रण शक्तियाँ सांसारिक हैं। तीन नियंत्रण शक्तियाँ अलौकिक हैं। नौ नियंत्रण शक्तियाँ कभी सांसारिक होती हैं, कभी अलौकिक। तीन बुरे मूल सांसारिक हैं। छह मूल कभी सांसारिक होते हैं, कभी अलौकिक। भोजन का पोषक तत्व सांसारिक है। तीन पोषक तत्व कभी सांसारिक होते हैं, कभी अलौकिक। छह प्रकार के संपर्क सांसारिक हैं। मन-चेतना-तत्व का संपर्क कभी सांसारिक होता है, कभी अलौकिक। छह प्रकार की भावनाएँ सांसारिक हैं। मन-चेतना-तत्व के संपर्क से उत्पन्न भावना कभी सांसारिक होती है, कभी अलौकिक। छह प्रकार की धारणाएँ सांसारिक हैं। मन-चेतना-तत्व के संपर्क से उत्पन्न धारणा कभी सांसारिक होती है, कभी अलौकिक। छह प्रकार की इच्छाशक्ति सांसारिक हैं। मन-चेतना-तत्व के संपर्क से उत्पन्न इच्छाशक्ति कभी सांसारिक होती है; कभी-कभी यह अलौकिक होता है। चेतना के छह प्रकार सांसारिक होते हैं। मन-चेतना-तत्व कभी-कभी सांसारिक होता है; कभी-कभी अलौकिक होता है।

विशेष ज्ञान, दो (अवस्थाएँ) जिनमें वस्तुएँ होती हैं;
देखा, अच्छा, महसूस किया; परिणामी और समझा (अवस्थाएँ);
प्रारंभिक आवेदन, सामग्री की गुणवत्ता, सामान्य।
इस प्रकार (यह विशेष से संबंधित अनुभाग का सारांश है)
ज्ञान, इत्यादि)।

शिक्षण के मूल तत्व का विश्लेषण समाप्त हुआ।

विश्लेषण की पुस्तक समाप्त हो गई है।